अमीरहमज़ाकीदास्तान

داستان امیر حمزہ

जिसमें

आलाजदलकीसी शूरता वीरता विख्यात है यह प्रसिद्ध दास्तान
ईरान के बादशाह नौशेरवां के समय की है,
यद्यपि यह प्रसिद्ध क़िस्सा उर्दू भाषा में फ़ारसी से उल्था
होय नवलकिशोर प्रेसमें बहुतबार छपकर संसार में
प्रसिद्ध हुआ है
तथापि नागरी के रसिकों और क़िस्से के अभिलाषियों को
ऐसी अपूर्व दास्तानसे ज्ञान और लौकिक रीति में उपयोग के
हेतु
सकल गुण अलंकृत सभय के आचार्य्य पण्डित कालीचरण
और महेशदत्त के द्वारा सरल हिन्दी बोल चालमें बहु परिश्रम से
नागरी में रचता होय
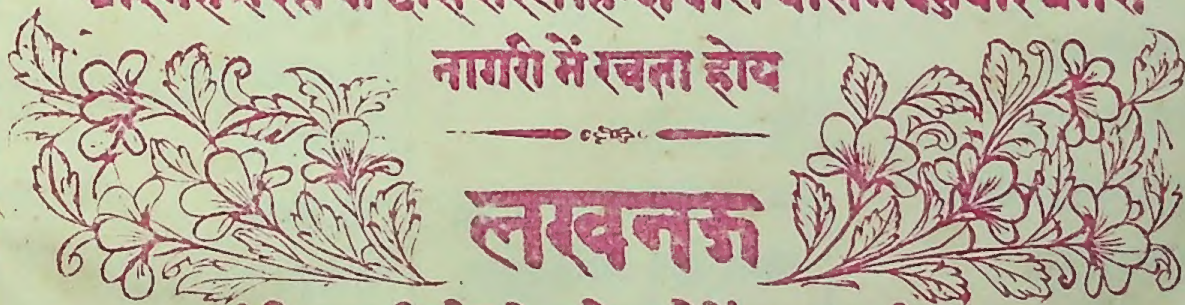
लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापे ख़ाने में शुद्धता पूर्वक छपा
जूलाईसन १८७९ ई०

विज्ञप्ति
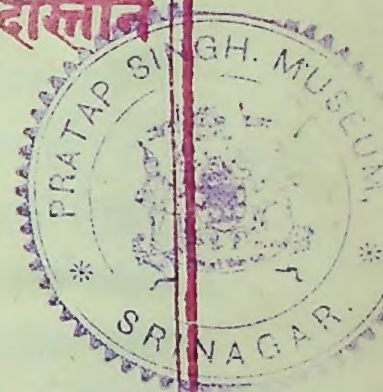
इस महीने अर्थात् जूलाई सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवा परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापे के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	वैद्यमनोत्सव	दुर्गापाठ सटीक
	अमृतसागर	दुर्गापाठ मूल
सिद्धान्तचन्द्रिका	अमृतसागर बड़ी	अपराधभञ्जन स्तोत्र
लघुकौमदी	अमर विनोद	महिम्न स्तोत्र
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	जगद्विनोद	श्री गोपाल सहस्रनाम
शीघ्रबोध	वैद्यजीवन	शिवार्चन
पाराशरी सटीक	औषधिसङ्ग्रहकल्पवल्ली	गंगालहरी
मुहूर्त्तगणपति	निघण्टभाषा	भगवद्गीता
सङ्ग्रह शिरोमणि	वैद्यदर्पण	भगवती गीता
जातकचन्द्रिका	रामविनोद	श्री मद्भागवत सटीक
लघुजातक भाषाटीकासहित	कोष और इतिहास ॥	तथा दशमस्कन्ध
भाषाजातकालंकार	शिवसिंहसरोज	हनुमानबाहुक
संस्कृतजातकालंकार	सामुद्रिक	सुखसागर
जातकाभरण	गणितकामधेनु	ब्रह्मसार
मुहूर्त्तदीपक	कमीशन बड़ौदा	परमार्थसार
होरामकरन्द	शब्दार्थकोष	प्रेमसागर
मुहूर्त्तचिन्तामणि	अमरकोष प्रथम काण्ड	सूरसागर
मुहूर्त्त मार्तंड	अमरकोष तीनों काण्ड	रागप्रकाश
वैद्यक	भाषाटीका सहित	भक्तमाल
शार्ङ्गधर सटीक	अनेकार्थ कोष	अवधयात्रा
वैद्य जीवन	व्रजविलास	कथा मञ्जरी

॥ भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्द घन परमेश्वर का धन्यवाद है कि जिसने इस संसार में उपकारकेलिये हजारोंप्रकारकी उत्तम २ चीजें पैदाकी हैं और उसी प्रकार अपूर्व २ बातें क़िस्से आतकी किताबों में जिनको देखने से मनुष्यका मन प्रसन्न और अनेक प्रकारकी चातुर्य्यता प्राप्त होती है रचना कीहैं अगले समयमें ऐसे बुद्धिमान और विद्वान् मनुष्य हुयेहैं जिन्होंने अपनेचित्त के उद्गारसे नवीननवीन उत्तम २ पुस्तक निर्माणकीं जिनसे इनदिनोंके लोगोंको प्रतिसमय लौकिक कार्य्यकी प्रवीणता कुशलता विद्याकीवृद्धि प्राप्तहोतीहै उसीतरह यह अमीरहमजाकी दास्तानहै यहऐसा मनो-हर उत्तम औ मनोरम क़िस्सह है कि जिसके अवलोकनसे बहुधा मनुष्य प्रसन्न होतेहैं और इसकेदृष्टान्त ऐसे उत्तमहैं कि ज्योंज्यों पढ़ते जाइये त्योंत्यों और पढ़नेकोमनचाहताहै इसमें अमीरहमजानामी बड़ेसाहसी और शूरवीर का बर्णनहै जिसने सम्पूर्ण संसार के लोगों और मुख्यकर बादशाहनौशेरवां और काफ़के देवों और जिन्नोंको पराजय किया इसमें ऐसी शूरता का वर्णन है जैसे पिछले राजाओं पृथ्वीराज आलाऊदल आदिने बड़े २ बिजयके काम किये औरभी बहुतसी पुस्तकें क़िस्सों की जैसे अलिफलैला अर्थात् सहस्ररजनीचरित्र गुलबकावली बाग़बहार आदि उल्था होकरछपीं जिससे हिंदुस्तान भरके सम्पूर्ण मनुष्योंने अलभ्य लाभ उठाया ॥

इस अमीरहमजाके क़िस्सेकोपढ़कर लोगोंको अधिकतर इसबातकी इच्छा हुई यदि यहपुस्तक देवनागरी भाषा में उल्था कीजावे तो बड़े उपकारकीहो तथाच श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगण मण्डली मण्डन पांडित्याद्यनेक गुणमण्डित गुणग्राहक गुणियन सुखदायक श्रीयुतमुन्शी नवलकिशोर जीबीरेश्अवधसमाचार सम्पादक जिनकायशसकलसंसार में प्रसिद्धहै उनमहाशयने अपने मित्रवर्गोंकी सम्मतिसे नागरी रसिकों के उपकारके लिये सकलगुण अलंकृतसमयके आचार्य्य पण्डितकालीचरण जी महाराजसे बोलचालकी सरल हिन्दी भाषा में प्रीति पूर्वक उल्था कराकर निजयंत्रालयमें छपवाई ईश्वर ऐसेमुन्शी साहबकीआयुरारोग्य बढ़नकरे नित्य प्रसन्न रहें इसके पढनेवालोंको इस अपूर्व अलभ्य पुस्तक का फलहो और इससे लौकिककार्य्यमें लाभउठावें और हमकोदुबारा छपवानेका अवसरमिले ॥

प्यारेलाल शर्म्मा ॥

सूचीपत्र॥

श्रीगणेशायनमः ॥

दास्तान अमीरहमजा भाषा ॥

दोहा ॥

गौरी शेष गणेश को विनयकरौं करजोरि । गुरुचरणन शिरनायके उल्था करौं बहोरि ॥
मुनशी नवलकिशोर को आज्ञा पाय पवित्र । हमजा के इतिहास को उल्था कियो विचित्र ॥

इसइतिहास को लेखकलोग विचित्रचरित्र मधुर वृत्तान्त शुभ कल्यान्त प्राचीनआचारी अतिविचारी संसारके निमित्तसुचित्त हो योंवर्णनकरते हैं कि ईरान बैकुण्ठसमानभूमिमें मदायनदेशका बादशाहसुखमें प्रवाह जिस का नामक़बाद कामरां दीन दयालसदा प्रजा के पालन में आरूढ़ और न्यायकरने में अतिगूढ़ सुखआनन्दउसदेशमें जागतादुख कष्ट और उपद्रव मृत्युस्थानमें सोताथा और उसकेदेशमें दीन अरुयती उनक़ा के समान बे निशानथे धनवान पुण्य के कारणभिखारी व दीनमनुष्यको खोजनेमें अति तङ्गबेरङ्ग थे परन्तुकोई उचितपदको पुण्यलेने वालानपाते थे और बलवान दीनको नहींसताते थे सिंहगायएकघाटमें पानीपीते थे तीतरअरुबाजएकसाथ रहते थे छोटे बड़े एक दूसरेसे प्रीतिकरते थे एकदूसरे परकोई बोझनधरता था निशदिन केवाड़द्वारवालों के नेत्रसमान बे रक्षकखुले रहते थे चोरका कभीकोई नामनलेता था और जोमनुष्य मार्गमें परीहुई वस्तुपावै उसके मालिककोढूंढकरदेदेताथा इससेभीअधिकन्यायउस देशमेंथा और वहबल वानबादशाहजिसकाचित्तसिंहकेसमान और ऐसापरक्रमीकिजिसके बलको देखकररुस्तमदृष्टहस्तीकेसमान कांपताथाऔर इसबादशाहतेजस्वीकेचालीस मंत्री जो ज्ञानवान बुद्धिमान और अतितंत्रीथे और सातसौ वैद्य अफलातून जिनके आगे अरस्तू पाठशालाके लड़केसमानथे सबज्ञानी और समुझदारी में अपनेसामनेदूसरेकोन हीरखते थे और सब विद्यापढ़ हुयेथेपदार्थसारी औरगणितविचारी और रमल, औरज्योतिष, मेंअमल जालीतथा, रेखागणित और सातसौपण्डित ज्ञानीसुशीलउसकीन्यायशालामें वर्त्तमानथे औरचार-सहस्रपहलवान अतिबलवान जोसाभनरीमाऔर रुस्तमको अपना चेला

गिनतेथे और तीनसौबादशाह उसके दरवाजे पर दुन्दभीबजाते थे और सब शाघजोड़कर करदेतेथे और दसलाखसवार बड़ेशूरकी और चालीसदस्ता शिवकोंके सोनहलोरुपहलेके जड़ाऊभूषण वस्त्रहीरामोतीसे सजेहुये थे उस बादशाहकी सभानन्दन को डाहदेनेवाली फिर दोसको सुशोभित करने वालीमें रहतेथे सेवाकरने मे अति चालाक जी निछावर करने में चाक सांस भरतेथे और उसी नगर में एक बैद्य खाजेबख्त नामी पैग़म्बर अली नबिया अलैह उस्सलामके द्वारपरटिकाथा बैद्यता और पदार्थ विद्या और रमल, वा पण्डिताव में बड़ा चतुर आगे के बुद्धिमानों से अव्यन्त स्नान-बानथा अलक्ष्य बादशाह के मंत्री ने वहथा उसकी चतुरता की परीक्षालीथी और अपनीइच्छापूर्ण उससे प्राप्तकी थी और उहकीओरसे अपने हृदयमेंइसभांतिसे प्रमाण कियाथाकिजोवह कहताथा उसेसत्यमानलेता था और एकपल भी उससेअलग न रहताथा थोड़ेदिन के पीछे अलकस ने रमलकी विद्यामेंऐसी चतुरताप्राप्त की कि ख़ाजेका विद्यार्थीप्रसिद्ध हुआ और प्रकाशउसका दूरदूरतक हुआ एकदिनउसने ख़ाजेसेकहाकिनिसि के समयमेरा जो चित्तघबरायातो मैंनेतुम्हारे निमित्तपांसा फेंकाउससे जाना गयाकि आपकाग्रह मन्दस्थानमेंहै.कुछदिन कष्टपानातुम्हारेकर्म मेंहै और चालीसदिन तकवह ग्रहउसी स्थानमें रहेगा इसकारण से इतनेदिनआप घरसेबाहर कहीन जाइयेगा और किसीकाएतिबार न कीजियेगा और मैंभीधीरजका पत्थर इतनेदिनतक अपनीछातीपर धरेरहूंगा आपसेमिलाप न करूंगा.ख़ाजे ने अलक्षके कहनेके अनुसारअपने हृदयमें विचार घरके केवांरसंवार करएककिनारेबैठिरहाऔर अपनेमित्र औरस्नेहियोंसे मिलाप छोड़दिया और उसीकोने में बैठे २ जबउन्तालीस दिवसव्यतीत होगये उसकेमन्ददिन दरिद्रताके सिरसेउतर गयेचालीसवें दिनख़ाजेमें बैठेहुये न रहागया बैठे २ उस में घबराया और हाथ में अपना अस्त्र लेकर घर से बाहरकोचला और मनमेंविचाराकि चलकर अलक्षराजमंत्रीसे मिलाप करिये और उसकेचित्त का सन्देहहरिये अपने शुभ समाचार उसे जनाइये औरइससेउसे आनन्दप्राप्तकराइये औरकोईहमारामित्रइसनगर मेंनहीं है मित्र और मिलापी सच्चेमनसे वहीहै दैवयोगसे सुमार्गछूटकर कुमार्ग में फंसगया और एकउजड़ स्थानके निकट जो नदी पर था निकला उस समयसूर्य्य के किरणोंसे घबराकर एकपेड़के तलेछाया में बैठि रहा एका-एकी एकबड़ीदीवार उसकीदृष्टिमें आई परचार दीवारी उसकी गिरगईथी जो उसइउसके मनमेंआई टहलते २ आगेको राहलीआगे चलकर देखा कि बहुथाघर उसमेंगिर गयेहैंदालान टूटेहुये पड़ेहैं परन्तु दालानगिरने से टूटेनहीं हैं सबउसीके भीतरगड़े हैं और उस दालान में एककोठरीका दरवाजा जोईंटोंसेढालागयाथावह बचा हुआहै ख़ाजे नेज्योंहीं ईंटों का

हटायातो उसमें एक छोटा दरवाजा देखने में आया वह ताले से बन्द था खाजे ने चाहा कि इसको किसी भांति से खोलें और इस में कुछ बल भी करें इस मनोरथ से उसमें हाथ लगाया ताला छूतेही गिर पड़ा खाजे ने उसके भीतर पांव रक्खा जाकर देखा तो मालूम हुआ कि एक तहखाना उसमें है जिसमें अत्यन्त द्रव्य और हीरा मोती बड़े २ मोलके भरे हुये हैं और शहाद के एक टूक कराये हुये हैं खाजे ने डर के कारण उसमें से कुछ लेन सका और उलटे पैरों वहां से फिरा और मन में विचारा यह समाचार आनन्दकारक अलकश संचीको सुनाने के हेत गया अलकश ने जो खाजे को देखा अति प्रसन्न हुवा उसे देखकर और मसनन्द पर बैठा कर हृदयका भेद खोलने के पीछे बोला कि आज चालीसवां दिन था आपने क्यों कष्ट सहा कल मैं आपके निकट उपस्थित होता खाजे ने दो चार बातें करके उस द्रव्य की बाहुल्यका वृत्तान्त कहा और सम्पति अनपावनी का समाचार वर्णन किया और कहा कि अब मेरा गृह आनन्दमय प्रकाश हुआ जिसे इतनी द्रव्य दृष्टि पड़ी परन्तु यह सम्पत्ति बादशाह के देश में है मुझ दीनको कब पच सक्ती है इसके लेने को मेरा देह कांपता है इस कारण मैं ने अपने चित्त में यह विचार किया है कि आप संची हैं और मुझ दीन के अत्यन्त मित्र हैं इस बहुत धन का पता आपको दूं और जो मुझे हाथ उठाकर आप देवें उसमें भी लूं अलकश ने सात ढेर द्रव्य के उसके मुंह से सुनकर अत्यन्त हो कर रोमावलि फूलकर अपने शरीर में न समाया और शीघ्र दो बाजी साजके एक पर खाजे दूसरे पर आप गाजके चढ़ा और खाजे के साथ होकर उसी मार्ग में बढ़ा चलते २ उसी स्थान में उपस्थित हुआ और ऐसी सम्पत्ति देखकर घबरा गया इस प्रकार का आनन्द प्राप्त हुआ कि जिसे जीभ वांवे कि मेरे ईश्वर ने मुझे यह द्रव्य अलभ्य कृपा की है उसकी उदारता से मुझे मिली है परन्तु इस भेद को खाजे बख्लजमाल जानता है ऐसा नहो कि यह वृत्तान्त अपनी प्रतिष्ठा के निमित्त बादशाह से कहदे तो उस समय और का और हो जावे सहज ही सङ्कट में जान फंसे यह द्रव्य ईश्वर की दी भी हाथ से जाय और बादशाह मुझे अत्यन्त कपटी जान बहुत कष्ट देके संची पदवी से दूर करदेवे और कुछ आश्चर्य भी नहीं है कि मेरा घर भी छीन लेवे और मुझे बंदीस्थान में डाल कर लड़के बालों समेत सब घर बार को धूर में मिला दे और मेरा नाश करदे इससे अच्छा है कि खाजे को मारकर इसी स्थान में डाल दूं और इस धन को अपने बश करलूं जिसे इसका भेद न प्रसिद्ध हो यह जानकर अति शीघ्र उसे पछाड़कर छाती पर चढ़ बैठा और छूरी उसकी गरदन पर मारी खाजे इस चरित्र को देखकर अति आश्चर्य में होकर कहने लगा कि ये अलकश तुझे क्या होगया मैंने तेरे साथ मित्रता की है न कि शत्रुता इस यश का बदला यही है मैंने तेरे साथ क्या अपराध किया है जिसके कारण मुझे ऐसा फल देता है यह कह अत्यन्त रोया पीटा चिल्लाया और उसकी अधीनता और दीनता की पर कुछ भी दया उसके चित्त में न आई

उस वृद्धमनुष्यने दुसदुष्टके हाथसे छूटना कठिन जानकर अपनी मृत्यु का होनाअवश्य जाना और जीनेसे निरासहोकर यह दोहापढ़ा ॥

दोहा ॥

वधिकमृतक मोहिकरतहै प्रकटअवशकरुलाश। प्रीतिन असपुनिकोउकरै जेहितनहोयबिनाश ॥

अलकश सुनसुभे तू अब मारताहै और मुझको मारकर तू अपने ऊपर अपराध लेताहै परन्तु मैंदोबातें तुझेसमझताहूं इसकोजोमानै तो मैं तुझसे वर्णनकरूं क्योंकि मेराजीना केवल इस संसार में इतनाही था तेरे मरते समय यहखून अपने ऊपरलूं वहबोलाकि तेरीमृत्युनिकटहै उसेभी कहिदे अबकटारी तेरा लोहूपीना चाहती है उसनेकहा और मीरहसनकी भांति सेइस चौपाईको पढ़ा ॥ चौपाई ॥

मित्र रहापर बैरी भयेऊ। मग पूछेउ सोई ठग रहेऊ ॥

परन्तुमेरेघरकेवल आजही भरका अन्नखानेको था अबठिकाना नहींहै इससे आपको उचितहैकि कुछखर्चमेरेघरमें कृपाकरके भेजदीजिये और उन दुखियोंका निर्वाहकरना दूसरीबात यहहैकि मेरीस्त्री गर्भवतीहै उसे इतना कहिदेना कि जोपुत्रहो उसकानाम बुजुरुचमेहर धरना और जोदुहिता होतो जो तुझेसमुझिपरै सोनामधरलेना यहकहिकर आंखेंबन्दकरली और परमेश्वरका स्मरणकरनेलगा इतनेहीबेरमें उसने उसको और उसकेघोड़े को मारकर उसीकोठरीमें गाड़दिया ॥

—०—

अलकश के हाथ से ख़्वाजे का माराजाना ॥

और उसके केवाड़ उसी प्रकार से मूंदकर नदीपर गया कटारी और अपनेहाथका लोहूधोया और उसचलसम्पत्तिके हेतअपना धर्मखोया फिर तुरंगपरचढ़कर अपनेधामकोपधारा चित्तअति प्रसन्नहुआ दूसरेदिनसवार होकर सामानसमेत फिर उसीस्थानपरगया और उसेदेख भालकर अपने प्रधान दारोगाको आज्ञादीकि हमारेनिमित्त एकफुलवारी यहांपरलगाई जावे और सामानभारी मोलके उसधामरचनाके निमित्त भेजेजावें उसकी आज्ञा पाकर दारोगाने थवई और मजूर और संकतराश बोलाकर धाम बनाने में आरूढ़ करदिया और थोड़ेकाल में चारदीवारी बाग समेत बनगई अलकश ने उसेदेखकर अतिप्रसन्न हुआ उसफुलवारीका नाम अन्यायीबाग रक्खा और ख़्वाजेबुलनमालके घरमेंजाकर संदेसाख़्वाजेका वर्णनकिया और अत्यन्त धीरजदिया और बहुतसारुपया देकर कहाकि अपनेखाने पहिरनेमें उठावो और जब आवश्यकता होगी तब तुमारी सहायता और भी करूंगा तुमकोकष्ट न होनेपावेगा ख़्वाजेको मैंने व्यापारके निमित्त चीनकीओर भेजा है अतिशीघ वहांसेधन उत्पन्न करके आवेगा यह समझाकर अपने घरको गया और सत्य समाचारनिज चित्तमेंरचा ॥

कवित्त ॥

जोनेकेसमय सबबीति गये जनु वायु विपिन के मध्यचली ।
कडुआ व अनन्द अकारथ ले बीतो सब भांति बुरीव भली ॥
कहिना कुछवाको कियोहीनहीं मैंनेअन्यायकि लीन्ही गली ।
उस की ग्रीवा पर फेर रही बीतो मोपे सब अंग शली ॥

इतिहास बुजुरुचमहरके उत्पन्नहोनेका औरविदितहोना हत्तान्तपुस्तक का——कहनेवाले आनन्दमय होकर इसभांतिसे प्रकाश करते हैं किईश्वर अपनी उदारतासे वहसुदिन समीपलाया किगर्भकेदिवसबीतनेकेपीछे शुक्रवार के दिन सुसायतिमें खाजे बख़्तजमालका भाग्यवान् पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

सोरठा ॥

रविसम प्रगट्योआय । निजगृह तमहिन दीपज्यों ॥
सभी परस्पर आय । जुरे पतंगा के सरिस ॥

प्रथमतोउसकीमाता खाजेका स्मर्णकरके नानाविलापसेअपनीविकलाई पर सोकग्रसित हुई और नयन नीरबरसाया उसके पीछे अपने पुत्रका सुख निरखके उसकेप्रतापके प्रकाशसेआपपतंगाके समाननिछावरहुईऔर ईश्वर का धन्यवाद करकेकहेहुये संदेसा के अनुसार बुजुरुचमेहर नाम धरावह अपनीमाताके गोदमेंसेवा पानेलगा और परमेश्वरने सबप्रकारके कष्टोंसेउस की रक्षाकी मानोअपनेनिजहाथसे उसके शरीरकी रचना की थी सुन्दरता संसारकी उसकोदेखकर अतिलजाय घबराय छिपरही और उसके मस्तक के प्रकाशसे प्रतापका चिह्नविदित होताथा और चेहरेकी चमकसे उसकेशुल-क्षण प्रकटथे जबपांचवर्षका हुआ उससमय उसकीमाता गुरूकेसमीपविद्या पढ़नेके निमित्तलेगई और वहपण्डित खाजेका चेलाथाऔर उसकेसमीपो लड़केउसीके समीपपढ़ने को जातेथे उससे कहने लगी कि तुमपर खाजेका अति उपकारहै इससेतुमभी इसलड़केको पढ़ादो क्योंकि यह उसका पुत्रहै तुम्हारा नामहोगा उसनेसिरनेत्रसे यहस्वीकारकिया और उसके पढ़ाने में अति चित्त लगाया ॥

चौपाई ॥

जोजो वर्ष बीतिजग जाई । अधिक भलो उपजे अरुनाई ॥

उसका यहस्वभावथा कि दिनभरतक वहअपने गुरूकेसमीप पढ़नेलिखने में ध्यानलगाता और जबचारघड़ी दिनरहता उससमय अपनेघरको जाता उसकीमाताजो श्रमकरके पातीउसे बनारखती सोखालेतथा दैवयोगसे एक दिवस कुछखानेको नहींमिला बुजुरुचमेरने अपनीमातासे कहाकि अबतो क्षुधाके कारण अति व्याकुलहैं जोकोई वस्तुदीजिये उसे बेचलाऊं खानेका उपायकरूं उसकीमाताने कहाकि बेटातुम्हारे पिताघरमें कुछ नहीं लाये औरनछोड़गयेहैं जोतुमको बेचनेके निमित्तदूं और खानेपीनेकी अवश्यकता

मिटाऊं किन्तु एककिताब तुम्हारे नानाकी धरीहै बहुत पुरानी न लिखीहै बारम्बार तुम्हारे पिताने चाहाथा कि उसे बेचकर अपनेखर्चमें लावें पर जबवह किताबलेनेके निमित्तताक के निकट जाते तो उसमेंसे एकभुजंगफुंनकारें मारता हुआ निकलताथा वहडरके कारणसे हटआते थे देखो जोतुमको वहांमलेतो लेआवो और उसेबेचकर खावो केवल उसके सेवाय और नोको ई वस्तुघर में नहींहै जोतुमकोदूं और उसेबेचकर लाऊं माताके सुखसे यह सुनकर किताब उठालाया और वहसांप जोसदैव देखपड़ता था दृष्टि नआया और उस के चारपत्र पढ़कर प्रथम तो अतिरोया पीछे उसके एकस्थान देखकर अत्यन्त आनन्द में होहंसा और प्रसन्नता से सुखप्रसन्न होगया देखने वालेने जो उस समय वहां पर उपस्थित हुये थे यह समाचार देख अति आश्चर्य किया ईश्वर यहकिसकारणसे प्रथमतोरोया तदनन्तर अति हंसा समाचार नहीं जानाजाताहै उसकीमाताको सिड़ी होजानेकासन्देह हुआ और सबसेकहनेलगी कि ईश्वरके निमित्त कृपाकरके गुणीको बोला दोतो इसकी नसकटाकर रक्त निकलवा डालूं और किसीसे बोली कि यंत्रलिखा दोकि इसकेगलेमेंबांधिदूं क्योंकि मुझदुखिया कोकेवलइसीका आसराहै कदाचियह विक्षिप्तहुवा तोमुझ अनाथका कहींठिकानान लगैगाबुजुरुचमेहरने अपनी माताको संकटमें देखकर कहने लगाकि आपनघबरायें ईश्वर चाहेंगा तो यहकष्ट वे बिपत्तिके दिवसशीघ्र दूरहोजावेगे और इसके बदले अतिआनन्द पावोगी अबभाग्य उदयहोने वालाहै औरसब सन्द व कष्टता कासमयदूर होताहै ॥

॥ दोहा ॥

भोर दिवसहै ईदका बेगि आइयो देइ । प्यालापी आनन्दहो रवि जनि उदय करेइ ॥

चौपाई ॥

देत उसे नहिं लागत देरी । जनि निरास हो होय निबेरी ॥
अतिउदारहै कृपानिधाना । समुझि देखु निजउर बिधिनाना ॥

मैं विक्षिप्त नहीं हुवा रोने और हंसनेका यहमनोर्थ है कि किताब केपढ़नेसे सबवृत्तान्त अगलापिछला जानाजाताहै इसकारण मैंनेजानाकि मेरेपिता कोअलकुश मंत्रीनेबेअपराध माराहै औरउसकीलाशअब कवरां परपड़ीहुईहै ऊपर पृथ्वीके धरीहुई और हंसा इस बातपरहै किमैंभी अपने बापका बदला उससे लूंगा और यहांके बादशाहकामंत्रीहूंगा अवखाने का लोगन होगा अपनेचित्तमेंशोक नकरो खानाबहुत है और दशकोड़ीजये यहकहकर एकदासीको अपनेसाथलेकर एकवणियेकी दूकानपर गया और उससेकहाकि इसलोंड़ी को इतने दिनमेंदा और कंद और घृत आदि को मांगाकर दिनप्रतिदिया कर और उसकामोल नमांगाकर उसने कहा कि अच्छाउसका मोल कबतक मिलैगा बेहिसाबकिये कैसेबनैगा बुजुरुचमेहर

बोला कि मोल मुझसे मांगता है अपना कहा क्या भूलगया चांदनामी गंवारने कईसहस्र मनगेहूं लेकर उसको विष देकर पुत्रसमेत गल्लाकेकारणवे अपराध मारडाला है यहभेद राजसभा में विदितकरूं तोतेरा क्या हालहो और किसभांति तुम्हारा मालहो बंधियायह पतासुनकर चुपहोगया और पगड़ीउतार करउसके चरणोंपर रखदीघबराकर कहनेलगाकि मियांजी यह दूकानआपकी है जिससमयजो इच्छाहुवा वहमंगवा लिया करोपरन्तु यह चरित्रदूसरे से नजनावो अपनेमन में रखियेवुजुरुचमेहर वहांसेलौंडीको साथलेकर चिकवा की दुकानपर गयाउससे कहाकि एक मनमांस उत्तमइस स्त्रीकोदिन प्रतिदिया कर उसने कहाकि मोलकालेखा कबसमझावोगे रुपयाकिस समयदोगे वुजुरुचमेहर नेकहा किजोतूनेकोसगिलावानसेकईसहस्र मेंढलेकरमोलमांगनेके समयउसकोमारकरअपनी दूकानकी कोठरीमें गाड़दियाहै उसबिचारेका सहस्रोंरुपयेका धनसहजहीमारलिया है तूजानतानहीं हैकिजो उसकीसन्तान कोराजसभामेंभेजदूं तुझे उसअपराध कारङ्गदेखलादूं मांसकी द्रव्यतुझेदिलादूं मोलमुझसे मांगताहै ऐसाअयान बैठाहैयह समाचारसुन करगायके भांतिकांपनेलगा और अतिशीघ्र उसकेचरणों परगिरा और अतिनम्रतासे गिड़गिड़ा करकहनेलगा किमांसतो क्यामेरीजानभी आपपर निछावर है जितना सरकार की दासी आज्ञा करैगी उतना मांस करैलीको दिनप्रतिदूंगा और धोखेसे उसकेमोलका अक्षरजीभ परन लाऊंगा परन्तु मेरी जानवप्रतिष्ठा परकृपा दृष्टकिये रहियेगा फिरकिसीसे ऐसीबातन कहियेगा इसीभांति से सराफ का भी कुछ कुसमाचारसुना करघबरादियाथा और उससे पांचमोहर दिनवा खर्चकेनिमित्तठीक करलियाथाआनन्दमयहो अपनेघरमें बैठकरसमयका भोजनकरने लगामित्र सेहीनथे२ एकट्ठाहोने लगेसुख व आनन्दकरनेलगा ॥

सोरठा ॥

अशुभ सगुन ह्वैजात जब उदारता प्रभुकरे। काह मूढ़ पछितात भजन करैअति मगनह्वै ॥

———

अजकशके स्वर्गसमान अन्यायी नामबागमें बादशाहके जानेका इतिहास ॥

वृक्षबांधने वालेबाग वृत्तान्त के और फुलवारी सुशोभित करनेवाले बाग विदित करना स्वच्छ कागद मे इस प्रकार पेड़ शब्दों के उचित खचित करते अर्थात् वर्णन करते हैं कि जबबाग अन्यायी बनकर तैय्यार होगया जैत बैकुण्ठकी भांति सुशोभित व प्रफुल्लित हुआ उस समय अलकाश अति प्रसन्नतासे फूलगया सन्देहदोनों स्थानका भूलगया अत्यन्त आनन्दसेफूला नसमाता तनसे बाहरहुआ जाता बादशाह के समीप जाकर अतिदीनता से प्रार्थना की कि इससेवकने आपके प्रताप से एक बाग बनाया है उसमें भांति२के वृक्षफलदार और फूलबूटे के लगायाहै और दूर२से भारीमोल

के सुन्दर वृक्ष मगाये हैं और अति तीव्र माली पेड़बांधने के हेत नियत हैं सहस्रों रुपया खर्च करके इसकाम के कारीगर मगाये हैं प्रत्येक मनुष्य अपने २ काममें अति चालाकहैं और बेलिबूटे इस प्रकार से लगायेहैं कि जिनको देखकर बिश्वकर्मा अपनी रचनासे लज्जितहोजावे परन्तु इस अनुचरकी दृष्टिमें समाता नहीं है पतिझारका रंगदीख पड़ताहै जबतक आप सवारहो उसमें अपनाचरण सुलक्षण नहीं धरतेहैं ॥

दोहा ॥

चरण रावरे के परे सकल बाग खिलिजाय। जहां तनिकमा ठहरिये सूखवृत्त हरियाय ॥

इस आधीन की बिनय यह है कि कभी आपजगत् प्रताप उसओर सैर के बहाने चरण लेजांय तो इसआधीनको अत्यन्तबड़ाई प्राप्तहो आपकेचरणोंकी कृपासे उसबागमें वसंतऋतु आजाय हरफूल व कलीमें नयारंगप्रकाशितहोजाय और अपनीकृपासे जोदोएकफलखालीजिये तो अनुचरको अत्यन्त आनन्दमिलै और आशारूपवृक्षकाफलपाये बादशाहने उसकीविनतीस्वीकार किया और उसकेमनोर्थ पूर्णकरनेको कहा अल्कशने प्रणामकरके नज़रदी और वहांसे आज्ञालेकर बागमें आयासामग्री जिवनारकी करनेलगाअति शीघ्रसब इकट्ठाकिया और भांति २ के खाने बननेलगे और विविधप्रकारके मेवा नावों में धरीगई बजानेवालों को बजानेकी आज्ञादीगई खेलौने वाले खेलानाछोड़ने का समयदेखनेलगेप्रकाश और चमतकारीकी सामग्रीहोने लगीसहस्रों गिलासचढ़गये झाड़फानूस दीवारोंपर सजनेलगे थोड़े कालके पीछेबादशाहतेजस्वी महाप्रतापी नीति प्रकाशीन्याय विलासी लवकों समेत अन्यायी वागमेंआया अल्कशकामनोर्थ पूराहुआ और बादशाहके बैठनेके निमित्तअति रुचिरगद्दीसजी उसपरफूलबूटे हीरामोतीके बनायेहुयेथे और चारोंकोनोंपर चारमोरपंनेकेवने हुयेलगाये गयेथे और सबप्रकारसेसजेहुये थे हीरेकेपत्ते और पन्नोंके फूलबने हुयेथे अतिरचनाकरके वहचौकी सुशोभितथी जबबादशाहकी सवारीबागके निकटपहुंची अल्कशनेतोभावन और सवारवृत्तान्तजाननेके निमित्तनियत कररक्खेथे उन्होंनेबादशाहके आनेका समाचारसुनाया सबजगह आनन्दछागया ॥

दोहा ॥

बादशाह जब बाग में आये प्रेम समेत। फूल प्रफुल्लित अति भये आनन्दितकर हेत ॥

अल्कशअपने लड़कोंसमेत औरमित्रोंको साथले अगवानीको राहपै उपस्थितहुआवहचौकी और चालीस हाथीजिनपर सुनहरीझूलें पड़ीहुई और अम्बारी सोनेरूपे हीरामोतीके गंगाजमुनी कामपीठोंपर खिचींहुई जजीरें सुनहली रूपहली गर्दनमेंपड़ी औरदांतोंपर चांदीमढ़ीपीलवानोंने लहसुनिया की डंडियां हाथ में लिये बनारसी पगड़ियां चुडीदार सरपरकवायें सोनेहली पहने हुये रूपहली कमर बंद कमर में और कमख्वाब की

मिर्जाइयां सजेहुये बनारसीपट्टी कमरमें कसेहुये सोनहलेफेटे शिरपरल-पेटेहुये बरछे और दंडेजड़ेहुए हाथोंमे लियेहुये आसपास सम्पूर्ण सामान वायु समान चाल तुरङ्गों पर चढ़ेहुये घोड़ोंको नचाते उड़ाते अपना गुण दिखाते पंक्तिबांधे चलेजाते थे दोसौ घोड़े ताजी, इराकी, अरबी, बिलायती, काठी, बारबची, जोकोसिया, भावरायली, तुरकी, तातारी आदिटेढ़ीकस केटाप वायुसमान बजाते चलेजातेथे परीके आकार देवसुभाव अयाल टके हुये जीनसोनहलेचढ़ेहुये अतरकीसुगन्धसे भरेहुये सोनहले चारजामापड़े हुये कलंगीपट्टा दुमची आगेअगवन्द हैकल जड़ाऊ गजगाये सड़कैसुरक्षल लगेहुये लालकलाबत्तूनके पीठोंपर उसपर पाखरें नवाहिरोंसे बनी हुई पञ्चनसोनहले हाथोंमें जेरबन्द पसमीनेकेबनेहुये बालातङ्ग जेरतङ्ग से खिचे हुये कलाबत्तूनकी लगामें सहीसोंकेहाथमें प्रतिबाजी दो२ सहीस सोन-हलेकड़े उनके हाथमेंपड़े लालबत्तियांतूलकी शिरपरबांधेगुजराती सुसके घुटन्नेपांवमें पहने मिर्जाइयांसजे भारी२ चौरियां गङ्गाजमुनी डंडियोंकी जिनमें मोतीगुहेहुयेथे आगेपीछे दायेंबायें जीवोंकेहत्तान्तको देखतेरहते थे कईसहस्र ऊंट अरबी, बुगदादी, आदि जिनपै, जराऊ, झूलेपड़ीहुई क-लंगियां सोनहली रुपहली मुखोंपर चढ़ीहुई नाकमें नकेले रेसमी प्रति ऊंटकेनजोहुई साड़िनी सवार अतिचालाकीसे चलातेथे साड़िनीभीभागी गर्वोमेंपगी तनीजातीथी कभी अतिलाड़ व सनेहसे उनकेसवार गोदीमेंशर रखतेथे अतिचालाकव गर्वनाकसे पृथ्वीकीओरग्रीवानझुकातीथी औरकई सहस्रनाव व रूपेव सोनेवहीरा, लाल, पन्ना, नीलम, माणिक, लहसुनि यां, पुखराज, गोमेद, आदिसे भरीहुई और गहना जड़ाऊ के अत्यन्त भरे और कईसहस्र नावमें भांति२ केअस्त्र तलवार, व छुरी, व कटारी, व बांक व भुजयल, व सिरोही, वतमञ्चा, व बन्दूक, आदिसे चुनेहुये थे इसी प्रकार कपड़ोंकेथान सहस्रभांति कमखाब, व मुशुरू, व गुलबदन, व रूमाल, व डु-पट्टे, पटुकेबनारसी, गुजराती, जामदानी, कामदानी, महमूदी, चटेली सबनम, चिकन, तारसिमार, तारांदाम, मलमल, नैनू, नैनसुख, तनजेब, आदिके नावोंमें ढबेलगेहुये वस्त्र बिविधप्रकारके शुरमई, दुशाला, रूमाल पटके, गुलूबन्द, जामा, सदरी, लबादा, अचकन इत्यादि अतिचतुरता के साथ चांदीकेपात्र और नाओंमें धरेहुये सायलके वाहिरके आनन्दधाममें नजरदेके चौकीकापाया पकड़ेसाथहुआ तबबादशाह बागमेंआये देखातो सत्यबाग उचितसैर आनन्ददाताहै अच्छीभांति सजाहुआहै दरवाजा बाग का बहुतऊंचाहै बड़ीभारी चौखट बाजूचन्दनकी बनीहै उसपर चांदी पो-लादकी खूंटीगड़ीहैं और मजबूतहैं ॥

अन्याई बाग में बदशाह का जाना और बारादरी के तख्त पर बैठकर अलकश को पारतोषिक देना और नाच होना ॥

अत्युत्तम दीवार संगमरमरकी बनीहुई थी और उसके दरजोंमें नावा हिरसे काम बना हुआ था और स्थान स्थान प्रति दीवार में जवाहिर के वृक्षबने हुयेथे डाली और पत्तेपन्ना से सजेथे और फूल व कली लह-सुनियां आदिक पत्थरों से काम बना था और उन डालियों पर बुल-बुल तोता मैना आदि पक्षीबने हुये थे और उसके नीचे टट्टियां रचना कृत रची हुईं थीं और मोतियों के गुच्छे के बदले अंगूर के गुच्छे लगेहुये थे और जो वृक्षों में फललगे हुये थे उन पर रंग विरंगी थैली चढ़ी हुई थी और रेशम व कलाबतूनकी डोरीसे कसीहुईं थीं और मालमें एकसे एक बढ़ीहुई थी और फुलवारीके वाधनेमें और स्वच्छ करने में इसप्रकार कीशोभाथी कि जिनपरदृष्टिका पांवफिसलताथा और तमाशादेखने वाले अति आश्चर्यमें होतेथे कियारियों में सब भांतिके फूललगे हुयेथे लाला, गुलाब, दाउदी, नाफरमानी, पिस्तई, मूगरा, गुलअब्बो, दुपहरिया, कुंदी आदिसबप्रकारकेफूल खिलेहुयेथे और किसीस्थानमें मूलसरीकावृक्ष मनुष्य के बराबर छटेंछटाये लगेथे और किसीफुलवारीके के नोंपर सरोसनोवर के वृक्ष सिंगारमय आकाशतक चलेगयेथे सुगन्धित वायुउनसे चलरहीथी और फूलोंकीडाली अतिस्नेह से एकदूसरी कलीका मुखचूम रहीथीं औ मेवालगे हुयेवृक्ष अति सुन्दरताईसे झूमरहेथे बुलबुल आदिपक्षी चहकि रहेथे और प्रतिएक कियारियों पर दरवाजे महराबदार लगेहुयेथे और उनके किनारोंपर खम्भारचितखचितथे और उनपर चांदी के पत्तचढ़े मढ़े अतिशोभादे रहेथे और कहीं२ सुरलेनाच रहेथे और नौयोवन मालिनें सोनहले आभूषण सहित वस्त्रजड़ाऊ लहंगेपहिने उसपर चूनरीसुवर्णकेतारों की ओढ़े मांगनिकाले हुये अंगुलियोंमें छल्ला छापपहिने हुनवट बिछुये चांदीके पहिने टीकाबेंदी मस्तकमें दियेहुये सबप्रकार का गहनापहनेहुये हाथों और अंगुलियों में मेहंदीकी अरुणाई सजीसजाई हाथोंमें सोनेके बेलचेलिये हुयेरविश परकी घासकाटरहीथीं औरसूखीलकड़ी टूटी फूटी को निकाल रहींथीं कियारियोंको अतिसुन्दरता से सुधाररहीं थीदेखने वालोंकेचित्त आनन्दित करके हरलेतीं थीं और उनकी नर्म २ कला. यां चन्दनकी डलीको लज्जित करतींथी नान्ही २ अंगुलियों में मेहदीशोभा देरहीथी और जिनकी छातियां अति स्वच्छओ कोमलथीं नीमूंके समान कुच और गोरागोरा मुखअति शोभादेताथा और अंगुलियोंमें सोनहली मुदरी पहनेहुयेथीं प्रतिस्थानचमनोंमें पानीबहातीथीं और आपसमें हसी ठठोलीदिल्लगी करतींथीं और कोकिलासमानमृदुबैन बोलरहीथीं किसी रौशकीघास सूखीउखारकर दूसरेस्थानमें लगातीं और कहींसेहरीकोमल दूबउखारकेबेलचेसेजमातीं और किसीकियारीमें थालेलगातीं और टट्टियों पर अंगूरकी बेलदौड़ाने लगीं और नलियापानी बहनेके निमित्त चमनोंमें

लगीं बिबिधिभांतिके वगहंसआदि चिड़ियां आनन्दकर रहीथी और जो बड़े २ हत्तथे उनपर रेशम की डोरियौंसे डालियां बन्धीथीं और कहीं २ चबूतरे बिल्लोर व संगमरमरके बनेथे और अतिचबूतरे के आगेहौज बनेथे उनमें अतर व गुलाब वकस्तूरीआदि भरीहुईथी और मध्यमे फौवारे हीरे के बनेहुयेथे और चांदीसोनेका ढेरउन फौवारोंके हौज़ोमे गलेहुयेथे और जबउनफौवारोंसे फुहाराछूटता तो सहस्रों भांति की क्रीड़ा देखाती थी देखनेवालोंकी दृष्टिमें आश्चर्य्य आताथा चित्त प्रफुल्लित होजाता था और बागके मध्यमें एकऐसा घरबनाथाकि जिसकेसमान संसारमें कोईभी नबना होगा और उसके आसपास साइवांन गंगाजमुनी सोनहरा काम किया हुआथा और दरवाजों में सोनेरूपे से थैलियों की कलाबत्तूनसे गुन्धी हुई पडीथीं और सोनहलेपरदा अर्थात् भारी और हीरालालकी फिरकियों में डोरीलगीहुईथी और चौखटपर सातलाख मोहरोंका चबूतराथा और भीतर उसबंगलेके एकचौकी जवाहिरसे बनीथी बादशाह उस चबूतरे से बगलेको सुशोभित करके वहांगये नज़रेंदी गईं अलकश को प्रतिष्ठा का प्रातःकाल प्राप्तहुआ बागअन्याईकी शोभादेखकरअपने बागन्यायकापति कोदेखा और अतिशीघ्र मुखसे वचन कहाकि सत्यहै यहबाग अतिरमणीयहै और सुस्वादफल लगेहैं उसकोशोभा और प्रसंशा जोकानोंसे सुनते थे उसेआंखोंसे देखलिया कि अत्यन्त मनोहर और सुशोभित यहबागहै॥

चौपाई॥

जो प्रसिद्ध है स्वर अमराई। ताते अति है सुन्दरताई॥
स्वरमाली देखेउ जब आई। भोचकरहेउ हृदय अधिकाई॥
स्वर पुरकी सुधिनहिं पुनिकरई। नहिं बैकुण्ठ चित्त कछुधरई॥
रविश रविश पर चमन सोहाई। खिलेफूल तामें अधिकाई॥
सेवती जूही कीन्ह प्रकाशा। कवनिउओर केतकी हुलाशा॥
नरगिसफूल आंखसम करई। सुमननिरखि बुलबुलचितहरई॥
पचीकतहु अनन्दित अहई। हसतचकोर सुख्य अति लहई॥
अदवसमेत सरो फुलवारी। घेराकीन्ह सनोवर भारी॥
डाल सरोपर पेडुकी सोहैं। कूकूशब्द करत मनमोहैं॥
वृक्ष फलित फल बिबिध प्रकारा। नाशपाति लयसेव अनारा।
मेवालगे मधुर तेहिमाहीं। सोसब रुचि समेत लेखाहीं॥
रविशमध्य नांचतहैं मोरा। करत मधुर मण्डित प्रतिशोरा॥

अलकश बादशाह की प्रसंशासुनकर अतिकृतकृत्यहोकर फूलेन समाता था अति आनन्दके कारण तनसे बाहरहुआ जाताथा बिनयकरने लगाकि यहसब आपहीके प्रतापसे रचना बनी है और सेवकका क्यासक्रदूरथा जो ऐसास्थान बनाता आपके आनेसे और अत्यन्त बड़प्पन इसे प्राप्तहुआ और

ताबेदारकी प्रतिष्ठा आकाश तकपहुंची और समानों में अति प्रतिष्ठामिली इसके पीछेबादशाहने भोजनको अति रुचिसे खाया अलक्षमने सामलाख राग का मगाया और नाचनेवाली वेश्यापरी समान और बारमुखी अतिम-नोहर नाचने गानेलगीं आनन्दरूपी वारुणी का प्याला भरनेलगीं मापक का घूमन देखकर प्याला आसमान का चक्करसे आया उस समय ने कछु औरही रङ्ग देखाया आतशबाजीके खेलोंने छूटनेलगे देखने वालोंकी दृष्टि सुखसे आनन्द पानेलगी संक्षिप्तहै कि २१दिन तक निशिदिन बादशाहने प्रसन्नता की बाईसवें दिन अलकमको पारितोषिक यमशैदी छपा हुआ तत्पश्चात् वाहन शाही उपस्थित किये गये बादशाह उसपर आनन्दित सवार हुये राजस्थान में आये और न्यायनीति करलगे ॥

अल्काश करके निरपराध वुजुरुच मेहरका पकड़ना और उस्का छूटना और स्वप्न परीक्षार्थ व दशाह करके गुणि एकत्र करना ॥

दोहा ॥

एक दिसव गो शेर को फुलवारी की ओर।
जायदीख इकफूल को भराडाल कर शोर ॥
कहा किया क्या तैंने है जलता कौने हेत।
कहा कि मैं इस बागमें हंसाथा चैन समेत ॥

माया कृत माली रचना से संसाररूप फुलवारी में प्रतिसमय नयाफल फुलाता है चतुरताकी दृष्टि उसकी रचना देखकर संसार में अपना मनोर्थ भूलजातीहै जोहंसा यहीकांटा शोकका उसकेकलेजेमें चुभाजिस डालीमें दीनता से गर्दनझुकाई शीघ्र मनोर्थका फलहाथ में लाई जिसठिङ्गनी ने अपनी सीवांसे सिरउठाया उसे दृखबांधने वालेने काटडाला ॥

सोरठा ॥

करै बिचार विवेक। बिना गयान छ्याय लियना।
समुझि धरै डर टेक। जो सर बुल्ला तक गहैं॥

देखिये उसबाग में नयाफूलफूला और औरही रंगका गुच्छा चिटका बुजुरुच मेहर का वृत्तान्त लेखकलोग अब यों बर्णन करते हैं कि बुजुरुच मेहर अति धर्म में आरूढ़ चतुर और अतिगुणज्ञ था एककोनेमें परमेश्वर का स्मर्ण करनेलगा एकदिन उसकी माताने कहा कि अब मेरा चित्त सागखाने को चाहता है बेटा जो कष्ट सह करमा को सागलेआ देते तो मेरी नियति भरती बुजुरुच मेहर ने माका कहना स्वीकार किया और अन्वारे बागके ओर चला जबबागके दरवाजेपर पहुंचातो बागका दरवाजा बन्द पाकर माली को हांकदी आवाज सुनकर मालीचला आया ताला खोलने का मनोर्थ किया खाजे ने कहा कि तालेमें हाथ नलगाना तूने नौ कल्ह सांपमारा था उसकी स्त्री ताले की भड़में तेरे डसने के निमित्त

आई है अपने जोड़ेका बदला लेनेको बैठी है बागवानने जोदेखा तो सत्य एक नागिन तालेके भरमें बैठी है मालीने उसे मारकर दरवाजा खोला और चरणोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आपनेमेरीजान बचाई मुझे पहिलेसे जतादिया नहोतोमेरे मरनेमेंक्याशेषरहाथा इत्याअनुचर काप्रा- णगयाथायह कहकर बोलाकि आपकी क्या आज्ञा होतीहै उसने उत्तर दियाकि मुझेथोड़ासाग चाहिये जोदामहोंगे दूंगा अपने घरकामार्गलूंगा बागवानने कहाकि सागआपके निमित्त लाताहूं मोल उसकाआपऐसेपरो- पकारीसे क्यालूंगा योंही दूंगामाली ज्यों सागलानेगया तोक्यादेखताहै किबकरी केसरमेंखाती है मालीनेभुंझलाकर एकबेलचा उसकेमारा वह तड़प कर मरगई बुजुरुचमेहर ने कहा कि तुमने नाहकमे यह तीन अप- राध किया उसने मुस्करा कर कहा कि साहब जादे अच्छी भांतिसे एक जीवकेतीन बतलातेहो यह क्या बात कहते हो बुजुरुचमेहर नेकहा कि सुनवेसमझ इसबकरीके पेटमेंअमुक २ रङ्गके दोबच्चेहैं वहभी इसीके साथ मरगये इनदोनोंमें यहबातें होतीथीं अलकशभी बैठासुनरहाथा उसओर ध्यानलगाये था मालीको बुलाकर सबवृत्तान्त पूछाकि क्या बातें करते थे उसनेसब समाचार सच्चाविचारके कहिदिया अलकशने बकरीका पेटफार करदेखातो उसीरङ्गके दोबच्चेबकरी केपेटमें देखे यह वृत्तान्त देखकर अति आश्चर्यमाना और बुजुरुचमेहर कोबुला करअपने समीपबैठा लिया और पूछाकि तूकौनहै और तेरेपिताका क्यानामहै और कहाहै बुजुरुचमेह- रनेकहा किबाजिवखं जमाल का पुत्र और हकीम कानवासी हूं तङ्गी के अन्यायकासतायाहूं मेरेबापको किसीक्रूरने मारडालाहैउसेबदलालेनेको फिरताहूं कोनेमें बैठना स्वीकार किया कुछ दिन और धीरज धरे बैठा ईश्वरकास्मरण करताहूं सदाअपने पिताकेसोक मेंहूं अलकशने कहा कि तुमनेअपने पिताकेमारने वालेकाखोज पायाहै बुजुरुचमेहरने उत्तरदिया कि ईश्वरबड़ा अन्तर्यामी है उसके निकट सब सहज है कभी न कभी पता मिलही जायगाउस दुखिया बेअपराधी मारेहुयेका सकल समाचार रङ्ग देखायेगा अल्कशनेकहाकि भलातूउसबातकोमेराक्या मनोर्थथाबोला कि तूनेगड़ा हुआमाल पायाहै सहजही हाथआया है चाहताथा किअपनी स्त्रीसे कहै परन्तु नहीं कहाकुछ समुझकर चुपहोरहा यहबात सुनतेही अलकशके होशउड़गये और चित्तघबरा गया सन्देहमय होगयाकुछ और का औरही ढङ्गबनगया बेदके समान कांपने लगा चित्तमें विचार किया कदापियह भेदविदितहो जायमाल जाय और सङ्कट ऊपरआवैयहलड़का अन्तरगति जानेवाला है ऐसे मनुष्यका चित्त और कलेजाखाने सेवह भी अन्तरजामी होजाताहै इसकोमारना चाहिये और इसका कलेजा खाया चाहियेसब उपद्रवभी जातारहै और मुखसे कोईअक्षरभी ननिकालसकेगा

शीघ्रहीबख्यार हवशीको बोलाकर कहाकितूमेरा सेवकहै इससमय चुप केसेतूइस लड़केको मारकर इसकेकलेजे काकवाब बनाकर मुझकोखिलादे इसकेबदले में तेरा मनोर्थ पूर्णकरूंगा उससेवक ने वुजुरचमेहर को एक अन्धीकोठरी में लेजाकर पछाड़ा चाहताथा किछुरी गलेपरफेरै तोअत्यन्त खिल खिला कर मेहर हंसा और कहा कि जिस आशा पर यह पातक लेताहै वहतेरो ईश्वरसे झूठहोगी वल्कियह प्रतिष्टाभी तेरीभङ्ग होवेगी जोतूइस कार्यसे वचारहैगातो ईश्वरचाहैगातूमुझसे अपनीमनो कामना पूर्णकरैगा उसनेकहा किभलामेरा क्यामनोर्थहै जोतुम वतादोगे तोहम तुमको अभीछोड़देवेंगे वुजुरुचमेहरने कहा कि तूनेअलकशकीबेटोसेप्रीति कीहै और उसे अलकश तुझेकधीनहीं देगापरन्त मैंतेराउससे निश्चय कर केविवाहकरादूंगावल्कि तेरेविवाह कीसामग्री भोमैंकर दूंगा इससमय तूमुझे छोड़ देआजके दशवें दिन वादशाह एक स्वप्नदेख करभूल जायगा और अपने मंत्रियों को वह स्वप्न सुनावैगा सबसे उसका अभिप्राय पूछैगा सबकीपरिक्षा लेगाजब कोईबतानसकैगातो वादशाहक्रोधवान्होगा तिस समय यही तुझसे मुझे वुलावेगा खबरदार जबतक तीन तमांचे तुझको न मारैतबतक मुझे न बताना यह अक्षर अपनी जीभपर न लाना हवशीने कहा कि उसने तेरे कलेजे के कवाव मांगेहैं जोमैं किसी जीव का कलेजा निकाल कर कवाब बनालेजाऊं तोवह हकीम है निश्चयकरके जानलेवेगा और मुझेदण्ड करेगा वुजुरुचमेहर ने कहा कि नगरके दरवाजे पर एक वकरीका बच्चापड़ाहै उसकोआदमीका दूधपिलाकर पालाहै एकबुढ़िया बेचतीहै मुझसेमोललेकर उसबुढ़ियाको देकरला और उसेमारकर कबाब उसकेकलेजेका भूनकरउसेखिला शेषमांस अपनेखानेकेनिमित्त रखले उस समयउसकोभीईश्वरकाडर और अपनेअभिप्रायकीलालचलगआई वुजुरुच मेहरके कहनेके अनुसार कामकिया उसकेमारनेसे हाथउठाया अलकश कवाब खाकर समझा कि मैंभी अन्तर्य्यामी होगया बाग़मेंबैठे २ आनन्दमें मग्नहुआ वुजुरुचमेहरजीता जागताअपनेघरआया ॥

चौपाई ॥

परा बिपति में मैं बहुभीती । बीति गई आयों कुशलाती ॥

अपनीमातासे सबसमाचार वर्णनकिया वहबिचारी आफ़तकी मारी यहसमाचार सुनकरअपनी दीनतागुनकर और पुत्रके मुखसे यह वृत्तान्त जानकर अतिरोई और फिरउसके वचनपर ईश्वरकी प्रसंशाकरनेलगी और कहा कि बेटाघरसे बाहर न निकलाकरो ईश्वर न करै कोईबला तुमपर पड़ैतुमको बैरियोंसे हानिपहुंचे उसने उत्तरदिया कि आपयह बात अपने चित्तसेंनलावेंऔररंज न करैं देखिये ईश्वरक्याकरताहै वहअपनी रचनाकैसी दिखाताहै उसकेदसवें दिन बादशाह एकस्वप्न देखकर भूलगया प्रातसमय

हकीमों और मंत्रियोंको बुलाकरकहा कि मैंने रात्रिको एकस्वप्न देखाथा सोभूलगयाहूं किसीभांतिसे यादनहीं आताहै तुमको उचितहै कि उसस्वप्न का वृत्तान्त वर्णनकरो उन्होंबदला हमसेलोगोंसबने बिन्तीकी कि जोस्वप्नजान पड़ताती उसका अभिप्रायसुनाते अपनीबुद्धिके अनुसारकहते बादशाहने कहा कि सिकन्दरकेसमयमें जोहकीमथे बहुधावहस्वप्न देखकर भूलजाता था परन्तु उसस्वप्नको वेलोग बतादेतेथे जो मेरास्वप्न बताकर उसका फल न कहोगे तोएक २ कोमारडालुंगा क्योंकि मैंने इसी मनोर्थके कारण से सहस्त्रों प्रकारके काम तुम्हारे निकालेहैं और इसी निमित्त तुमलोगोंको हमनेनौकर रक्खाहै जो न कहोगेतो तुमलोगोंको मारकर तुम्हारेबालबच्चों कोभी मारूंगा और घरतुम्हारा सबनष्ट करदूंगा चालीसदिन की अवधि देताहूं जो मेरा स्वप्न सच्चीभांति न कहा तो देखना किसभांतिसेमैंकरूंगा अलकशपर सबसेविशेष आज्ञाकीगई क्योंकि वहसबसे अधिकअधिकारपर था जितने हकीम और बुद्धिमानथे इसबातसे अत्यन्तघबराकर औरसंदेह मयहोकर परस्पर कहनेलगे कि बिनासुनेऊये स्वप्नकाबिचार किसभांतिसे करें जिससे इसबलासे छूटजावें जब चालीस दिवसऊये अर्थात् बादशाह की कहीअवध व्यतीत होगई तबसबको बुलाकरपूछा कि स्वप्नका विचारकिया कुछपता लगाया और तोकोई न बोला परन्तु अलकशने प्रार्थना की कि सेवकनेतारमलके द्वारा निश्चयकियाहै कि आपनेस्वप्नमें यह देखाथा कि आकाशसे एकपक्षीने आकरआपको आगके गढ़ेमें डाल दियाहै यह देखकर आप डरसे अति चौंकपड़े और स्वप्न भूलगये बादशाहने क्रोधवान होकर अतिआतुरकहा कि ऐनीचतूमुझे झूठइस प्रकारकेशब्द सुनाताहै तूनेमुझे भलीप्रकारकी बात्तीकही उसपर दावाहकीमी और रमालीका करताहै और अपनीबुद्धिमानी जताताहै यहस्वप्न भलामैंने कबदेखाथा कि जोतूने वर्णनकिया अच्छामैंने दोदिवसकी आज्ञाऔरदीहै जोतैने तीसरेरोजमुझे स्वप्न न बतायातो सौगन्धखाकर कहताहूं कि तुझेनमरूदकी भट्ठीमें डाल कर जलादूंगा औरोंको अतिदुसह दुखदूंगाकिन्तु किसी कोभी जीता न छोड़ूंगा अलकश यहसुन अतिघबरायशोकमें मग्नहोगया और इसी प्रकार से घरको गया वहां पहुंचकर शीघ्र वफ़ादार हबशीको बुलाकर पूछनेलगा कि सच बता तैने वह लड़का क्या किया जीता छोड़ दिया था कि ज़मीन के तले छिपा कर गाड़ दिया उसने कहा कि उसको मैंने तभी मारडाला था और उसके कलेजे का कबाब बना कर आपको खिला दिया अबमुझसे पूछा जाताहै कि वह लड़का कहांहै अल्कसने कहा कि वहबड़ा बुद्धिमान और अन्तर्य्यामी है वह तेरे हाथसे बचरहा होगा आज्ञाभङ्गसे मतडर मुझेबता मैंक़समखाताहूं तुझसेकोईबात न कहूंगा बल्कितुझे जागीर और अधिकारदूंगा तू उसेबतलादे कि जिससेमेरीजानबचे और मेरेसाथबऊत

लोगोंकीजान और प्रतिष्ठा बचुजावे उसनेजो पहिले कहा वहीबात फिर भीकही तबतो उसने बलसहित तीनतमांचे उसके मारे जिससे नाक फटकर लोहू निकल आया बख़्तियार मुरझाकर ज़मीनपर गिरगया थोड़ी देरके पीछे चेतमेंआया और कहनेलगा सेवकको मतमारिये मैंउसकोलिये आ-ताहूं आपका कहाकिये लाताहूं अल्कमने कहा कि देनादान पहले मैंने किस २ भांतिसे पूछा तूने नमाननेके सिवाय स्वीकार नकिया अबजबमार खाई यहबात जीभपरआई बख़्तियारने कहा कि उसनेमुझसेमनाकरदिया था कि जबतक तीनतमाचे नखालेना तबतक मेरापता किसीभांतिसे नदेना अल्कमने उसको छातीसे लगाया और कहा कि शीघ्र उसकोबुलाला मैंतुझे अतिप्रसन्नकरूंगा और अगणित रत्नदूंगा बख़्तियार बुज़ुरचमेहरके दरवाजे पर जाकर हांकदी बुज़ुरचमेहर अतिशीघ्र घरसेबाहरआया और समाचार पूछके उसकेसाथ अल्कमके समीपगया अल्कम बुज़ुरचमेहरसे शिष्टाचार स-हित आगेआया और अगिलीबातोंका उज्रकरनेलगा और कहाकिबाद-शाह एकस्वप्नदेखकर भूलगयाहै और हमकोनाहक सपोटककररक्खाहै कह ताहै कि जोमेरास्वप्नबताओगे तो एक २ को मारूंगा सोआपके सिवाय ऐसाकिसमें बलहैकि अन्तष्करणकी बातबताये हमारीस्त्री और बच्चोंकेगलेसे छुड़ाये जो इससमय कृपाकरके आपउसस्वप्नको बतावेंतो मानोंहमारे सब की जानछुड़ावें बुज़ुरचमेहरने कहा कि मैंयहांतो न बताऊंगा किन्तु आप प्रातसमय बादशाहसे प्रार्थनाकरें कि मैंसरकारके हकीमों औरबुद्धि-मानों वमंत्रियोंकी परीक्षाकरताथा कि यहभीकदाचित् अन्तष्करणकीबात जाननेका ज्ञानरखतेहों सो जैसा यहलोग जानतेहैं मुझपर क्या दीनद-यालपरभी प्रकाशित होगया इनकी चतुरता विदित होगई और अनुचरका एकविद्यार्थीहै जोउसे सर्कारबुलाकरपूछें तोवहभीआपकास्वप्न बतलादेगा मयब्यौरासमेत सुनादेगा जबबादशाह मुझेबोलावेगा मैंस्वप्नको वर्णन कर के उसका अभिप्राय विचारके कहदूंगा आपको प्रसन्न करादूंगा सैकड़ों मनुष्योंकी जानबचालूंगा आपको बहुतसा अधिकार औरभी मिलेगा॥

राजसभामें बुज़ुरचमेहर का के बादशाहके स्वप्नका वर्णन और उसके
पिताके बदले अल्कमशमंत्रीका बध वृत्तान्तवर्णन॥

कुण्डलिया॥

गेहूंपैगेहूंजमैं जवसे जव ह्वैजाय। बदला अपना छोड़ जनि नहिपाछे पछिताय॥
नहिपाछे पछिताय समय सम एकनजैहैं। पहिले होयतभार फेरि कल्लो लगिऐहैं॥
ग्रंथकार कहै सत्य मानले मेरे बैना। दुख परने के बादि चैनपैहैं भरि नयना॥

इससंसारमें बदला सबका मिलताहै क्योंकि बहुधालोग कहावतको कहते हैं कि कलयुगनहीं करयुगहै इसहाथसेदे उसहाथले और बदलातो इसी संसारमें मिलजाताहै कदाचित् दैवयोगसे रहजावे तो उसे अन्तमें अवश्य

मिलताहैइसलियेमनुष्य कोउचितहैकिईश्वरकाध्यानकरै और क्षणभङ्गु-
रसंसारकीसम्पतिके लियेदुनियांमेंदनामीनले और परलोकको नबिगा-
ड़ेजैसेकि इसदुष्टअल्कामनेवरकेकामकरकेदुनियां और परलोककोबिगाड़ा
है उसका वृत्तान्त लिखने वाले ठीक २ यों लिखते हैं कि दूसरे दिन जो
अल्कामंची बादशाह की सेवामें प्राप्तहुआ और बजुरचमेहरका हाल
प्रारम्भकिया तोबादशाहने आज्ञाकी किउसकोराजसभामें शीघ्रलाओयह
सुनकर एकचोबदारने बजुरचमेहरसे जाकरकहा किचलिये बादशाहने
आपकोस्मर्ण कियाहै और बहुत शीघ्र बुलायाहै उसकहा किमेरे वास्ते
सरकार से क्या सवारी लायेहो तोमैं उसपर सवार हो बादशाह की
चौखट चलकर सभामें उपस्थित होऊं उसने कहा कि सवारी तो नहीं
लाया उसीभांति से आयाथा क्योंकि सवारी के निमित्त सर्कार से कुछ
आज्ञानहीं पाईथी मैंअबजाताहूं और सरकारके मंत्रियोंसे विनयकरके
सवारी लाताहूं चोबदारने जाकरविनतीकी कि बेसवारी वहनहींआ-
सक्ताहै वहमनुष्य बड़े मनुष्यका लड़काहै आज्ञाहुई किघोड़ा लेजावोउसे
शीघ्रलावो जबघोड़ा लेजाकर चोबदार आयातो बजुरचमेहरने कहाकि
घोड़ेकी उत्पत्ति वायुसेहै औरमें मिट्टीसे बनाहूं विदितहै किमिट्टी और
वायुसे परस्परविरोध अर्थात् एकदूसरे में मिलनहीं सक्तेहैं इसकारणसे
मैंतो घोड़ेपर सवार होकर कभी नजाऊंगा मेरे लायक सवारी लावो
तोमैं उसपर सवारहोकर चलूंगा बादशाहकी सभामें चोबदारनेपहुंच
करउसके कहेकेअनुसार समाचार वर्णन किये बादशाह ने उत्तर दिया
किसब सवारियां लेजावोजिसपर उसकाचित्त चाहै सवारहो आवे बा-
दशाहकी आज्ञानुसार सबप्रकारकी सवारियां तय्यारकीगईं औरशीघ्र
बजुरचमेहर के घरपहुंचीं बजुरचमेहर ने कहा कि हाथीपर तोमैंनच-
ढूंगा क्योंकि यह केवल सवारी बादशाहकी है इसपर सवारहोना बे-
अदबीहै मियांने परबीमार चढ़ते हैं मैंबीमार भी नहींहूं और नच्तक
जो चारकेकांधे जाऊंजोतेजी अपनेको मरा हुआ बनाऊं प्रशंसा है उस
ईश्वरकी मैं अच्छीभांति नीरोगहूं न मांदा नसुस्तहूं और ऊंट फिरिस्ता
स्वभावहै औरमैं मनुष्यहूं इसपरसवार होनेकी ताकतनहीं और मुझमें
ऐसी कुछ लियाकत नहीं खंचर हरामजादा है और मैंहलाल जादाहूं
मेरी सवारीके योग्य नहीं बैल पर बणिये और धोबी चढ़ते हैं मैं भले
मनुष्यका लड़काहूं और मैं अपनेबरे भलेरबचा रहताहूं विचारके द्वारा
काम करताहूं गधेपर वहचढ़े जोभारी अपराध करैमैंतो बेअपराध हूं
बादशाहका छोटा प्रजाहूं इनसवारियोंको फेरलेजावो और मेराकहा
बादशाह को सुनावोलाचार होकर जो सवारियां लोग लायेथे फेरले
गये और बजुरचमेहरकी कही हुई बात बादशाह से कही बादशाहने

कहाकि भलाउस्से पूछो तो क्या सवारी मागता है जो कहै वह भेज दी जावे उसका उपाय किया जावै नौकरों ने जाकर वादशाह की आज्ञा बुजुरुच मेहरकोसुनाई उसने कहाकिजो वादशाहस्वीकारकरैं औरस्वप्न सुन्ना अवश्य होतो अलक्षश मंत्रीकी पीठपर जीनकसवाकर भेजदेंतोमैं अपनेमनकी सवारीपाकर उसपर सवार होकर सरकार में आऊं और स्वप्नको भलीभांति से वर्णनकरूं दूसरेयहकि वहहकोमेंा कागधाहै और उसपरसवारहोना दोषनहीं मुझेउचितहैसभाकेलोगोंको यहवृत्तान्तसुन करबड़ा आश्चर्य्यहुआऔर कहनेलगे यहमनुष्य किसप्रकारकाचित्त-वमस्त करखताहै औरकिसप्रकारसेसाफउत्तर देताहै वादशाहकीअज्ञामाननेमें-लोगअपनेको बड़ाजानतेहैं तोकोईमंत्रीके द्वाराआतातोभी उसकायह-सान मानतेहैं यहांतो वादशाह उसे आप बोलातेहैं वहकिस २ भांति काउत्तर देताहै या तो इसमनुष्यके मस्तकमें कुछउपद्रवहै या कोईबड़ा मनुष्यहै वादशाहयह सुनकरबहुत खिलखिलाकर हंसा और कहा कि अल्कश कों पीठपर चारजामा इंचकर लेजावो बुजुरुचमेहर कोलेआवो आज्ञाकोदेरीथी अतिशीघ्र अल्कशकी पीठपर जीन बांधकर मुंहमेंलगा-मदीगई और बुजुरुच मेहरके समीप लेजाकर उसके मनोर्थ को पूर्णकिया बुजुरुचमेहरअल्कशकी पीठकेऊपर सवार होकरएड़ैं मारमार करकहा कि उसईश्वरकीप्रशंसाहै किआजमेरेपिता केबधिकको मेरे बश मे किया॥

—०—

बुजुरुचमेहर का अल्कशकोपीठपर सवारहोना और देखनेवालोंका उनके साथजाना॥

मार्गके मध्यमें जिसने देखा लड़का युवा वृद्ध हर एक उसके साथ हो लिया जब वादशाहके समीप आया वादशाहने उसको अति प्रतिष्ठा की और अच्छा आसन दिया फिर पूछा कि अल्कश ने तेरे साथ क्या अप-राध किया है जिस कारणसे तूने उसके साथ इस प्रकार कियाबुजुरुच-मेहर ने कहा कि प्रथमतो इसने बड़ा कपट किया है औरआपसादयाल मालिक पाकर छल का मार्ग लिया है और चोरी भी इसने भारी की है इसको किंचित्मात्र डर न आया कि जो मेरी चोरी विदित होजाय गोतो इसकाअन्त क्या होगा और कौनभांति से वादशाह मुझ परक्रोध करैगाजोता हुआ पृथ्वीमेंगाड़ा जाऊंगा और कौनगति मेरीहोगी यह चोरीकैसी खराबीदेखावैगी दूसरी यहबात हैकि यद्यपि इसने मेरेपिता सेरमलकी बिद्यापढ़ी और उसका बिद्यार्थीथा और उसने इसकेसाथ अति स्नेहकिया और सब प्रकार से ज्ञान व गुणव बिद्याका दिखाया जोइसका बाधक होतातो इस प्रकार से कभी इसको न सिखाता और मेरा पिता

इस्की ओरसे अपना चित्तप्रसन्न और स्वच्छ और शुद्धकेसमान सिखानेमें रखताथा और अपनीसंतानसे इसदुष्टके साथअधिक स्नेहरखताथा और कोई समाचार भलाबुरा इस्से छिपा नरखताथा और कोई वस्तु इस्से बाहर नहीं रखताथा सातढेर द्रव्यकेगाड़ेहुयेसहोदकेथे उसेमिलेथे आपनेनहींलिया और मित्रताके कारण इस्को बतादिया एक कौड़ीभी उस्में से नली सकल द्रव्य इसेसौंपदिया इसने इसडरसेकि कदाचित् यहबात किसीसे कहदे और होते २ आप परभी विदित होजावे तोयह साती ढेर मेरेहाथ से जाते रहैं और सहजही दूसरेको मिलजावें उस वेअपराधको मार कर उसीकोठरी में गाड़दिया कुछ भी ईश्वर और बड़े बूढ़ोंका डरमनमें न लाया और वे अपराध अपनी गर्दनपर अपराध लिया और अभीउसी स्थानमें उसकीमिट्टी पड़ीहै कङ्कड़पत्थरके तलेकुछ छुपीहै यहनहीं जाना किवे अपराधका अपराध पुकारता फिरैगा नये २ भांतिके रङ्गदेखाकर संसारमें जहांपानी न मिलैगावहां मारैगासो इसकारणसे मैंदीनदयाल सर्व्वकृपाल से आसरखता हूं कि मैं अपने न्याय को पहुंचूं जो आपमेरा न्याय अपनीन्याय शालामेंनकरैंगे तोईश्वर सर्व्वव्यापी है वहन्याय आपसे मांगेगा जिस समयमैं उस्से मांगूंगा उस समय आपभी पूछेजांयगे इस कामकेनिमित्त बदलेके हेत आपबोलाये जावैंगे तबउसके सामनेक्याउत्तर दीजियेगा जबआपसे पूछैगातब किसभांतिसे तरियेगा जबबादशाहनेयह समाचारपाया अत्यन्तक्रोधबस होकरअल्कशमंत्रीकी ओरदेखाओरकहा यहक्याकहताहै इसकेपिताने तेरेसाथ क्याअपराध कियाथा जिसपरतैने उसेमारडाला और उसके लड़केको मुरहा और स्त्रीको रांडकरडाला तेराक्या तैनेईश्वरकाभी कुछडरनकिया यह नसोचा किमैंइस समयना-हकअपराध करताहूं अन्तकोयह पापरङ्ग प्रकट करैगा मुझेअति दण्ड दिलावैगा सचहैउसने तेरेसाथ ऐसीही बदीकीथी कि जिसके बदलेतूने उस्कोइस भांतिकाकष्ट दियाजो वहरमलको विद्यान पढ़ातातो ॥

दोहा ॥

बाणावरी सिखायदी विविध भांति गुणजाहि । अन्तनिशाना कीन्हमोहि निज मनमें हर्षाहि ॥

निशाना सत्युकेतीरका क्यों बन्ताजो वह सातढेरद्रव्यकेजो कि ईश्वरने दीथीतुझे नदिखाता तो उसकाभोग क्योंचढ़ाता सचहै ॥

सोरठा ॥

बदकी बदी न जाय नेकीको बातैंकरै । तासों बदीसमाय यह चरित्र है खलनको ॥

किन्तु देख तू इसका बदला कैसा पाता सीधा अभय रसातल को जाताहै जोइस समाचारको तैनेराज सभामें प्रकट नकिया यहभी बड़ा अपराधकिया और न्यायकापाप तूने अपने सिरपरलिया अल्कशने कहा कि सरकार यहझूंठमुझे अपराध लगाता है और सहजही मुझेलियेम-

रताहै बुजुरचमेहरने कहाकि यहीगोर मैदानहै हाथकङ्गनको आरसी क्याहै कुछमनुष्य मेरेसाथचलें मैंअपनेदावा कोठीककरदूंगा इसभांडेको दरवाजेतक पहुंचाऊंगा बादशाह आप नौकरोंसमेत उसस्थानको और जहांख्वाजे जमालमारा हुआ पड़ाथाचला बुजुरचमेहरके साथहोलिया और आज्ञाकीकि अल्कशकोभी बेड़ियां पहिनाकर पैदलके समान शीघ्र दौड़ालावो इसचरित्रको देखकर सबनगरमें हलचल पड़गया सब मनुष्य इससमाचारके देखनेके निमित्त दौड़कोई ईश्वरका कोधजानकर बचने काशब्दजीभपर लायाकोईमनुष्ययहकहताथा किऐसेशील वालेमनुष्यको इसनेअपराध विनामाराहै सैकड़ोंगालियां देनेलगे और [illegible]कहने लगेकोई कहताथा बदीकाफल बदीहोता है बुरेकामका बदला कभी न कभीमिलता है कोईउसकी बुरीदशा देखकर उसपरशोक करनेलगाथा खुलासा यहहै किसकल नौकर व देखनेवालों सहित यलसमेत उसको बागके दरवाजेतक लायेजिससमय अन्यायधारीसे पहुंचेबुजुरचमेहर बादशाहको उसतहखानेमें लेगया और उसीस्थानका पतादिया देखातो सत्यसातढेर द्रव्यके उसतहखानेमेंभलीभांतिरक्खेहैं, और एकओरमिट्टी ख्वाजेजमालकी पड़ीहुईहै परन्तुसूखगईहै और माराजाना वेदोषउसको शरीरपर विदितहै और थोड़ाभी क्षतका पड़ा है और मांस व हड्डीरग सूखगईहै कांटेके समानहोगयाहै बादशाहवह अधिकद्रव्य देखकरकृतकृत्य हुआ और आज्ञा की कि इसी समय इस द्रव्य को हमारे खजाने में पहुंचावो सुशीलतासेहमारे कोठोंमेंभरदो उनकी आज्ञानुसार काम कियागया ॥

चौपाई ॥

संपति जहं अति तहं चलि जाही। यह वृत्तान्त विदित जगमाहीं ॥

और बुजुरचमेहरका कहासबजाना और ख्वाजेकीलाश निकालकर बहुतधूमधामसे साजकर कबरमें रखवादी और उसस्थानमें एकमकबरा बनादिया इसकेपीछे अल्कशसे बदलालेने और अपनेपिताकी क्रियाकरने कोचाहताथा अर्थात् फातिहा आदिअपने दीनके अनुसारकरने केनिमित्त चाहा इसकारण बादशाह ने समझ और जानकर उसे चालीस दिवसकी छुट्टी कृपाकी और अपने कोससे सहस्रों रुपया देकर बिदा किया बुजुरचमेहर उसरुपयेको हाथियोंपर लदवाकर घरमेंलाया और रुपयाआलिमी माताकेसामने रखवादिये और समस्तवृत्तान्त वर्णनकिया और [illegible] करनेके सोचमें रहा सब प्रकार के लोगजो बादशाह की न्यायशालामें कामकरतेथे नई सरकारको देखकर जमाहुये और मित्र तथासेही व कुटुम्बपरिवार केलोगअधिकप्रतापहोना सुनकर प्रीतिपूर्वक सबएकट्ठेहुये और खानेकी सामग्री होनेलगी और प्रतिदिनखानाबटनेलगा

श्रीर अनेकमर्गों मेंभी बाटनेके निमित्त खाना भेजागया जब मित्रों श्रीर कुटुम्बवालोंमें अच्छेप्रकारसे शिष्टाचार करचुके उससमय भिक्षुकआदि प्रजाकीबारी आई इसी प्रकारसे चालीसदिवस तक बराबर पुण्यकरता रहा चालसी का ब्योहार करचुका श्रीर सबभांतिके रसम निवाहदिये तिसपीछे बजुरुच्चमेहर बादशाहके समीप गया मातम पुरसीकी अर्थात् सोककरनेकी खिलतपाई श्रीरअपनीन्यायशालामें रहनेकेनिमित्त बादशाहकीआज्ञाहुई एकदिवस औसरपाकर बिनयकोकिजोप्रभुकीआज्ञाहोतो उसस्वप्न कोकहूंआपकेसमीप सत्ठहरूं कहाकिसबसेउत्तम जोमेरास्वप्नसत्यबतावोगेतोबहुतकृपाबोगेमेरासन्देहदूरहोजावेगाचित्तदुबिधारहित होगाबुजुरुच्चमेहरने बिनयकी कि आपनेयहस्वप्नदेखाया किदस्तरखान बिछाहै उसपरभांति२के इकतालीस व्यंजनकेपात्र खानेकेरक्खेहैं आपने एकहलुआकेपात्रमेंसे कौलतोड़कर चाहाकिभोजनकरें इसमेएककुत्ताकालेरङ्गकाआया श्रीरवह कौलआपकेकरसेछीनलिया श्रीरवहांसे भागगया आपडरकरचौंकपड़े श्रीरइसस्वप्नकोभूलगयेबादशाहनेकहाकिमैं सौगन्धखाताहूं कियही स्वप्नमैंनेदेखाथाश्रीर सत्यहैमेरास्वप्न यहीथाहांअब इसको बिचारकर मेरेसामने वर्णनकरोबुजुरुच्चमेहरनेकहाकिसेवककोअपनेधाममें लेचलिये श्रीर सबस्त्रियोंकोजमाकीजिये उससमयइसस्वप्नकाबिचारकरूंगा श्रीर सच २ समाचार सुनाऊंगा बादशाह बजुरुच्चमेहरको साथले करमहलमेंगया श्रीर स्त्रियोंकोबोलाया सबबादशाहकी आज्ञानुसार एक स्थानमेंआई तदनन्तर एक युवती अतिनागरपरमउजागर स्वरूपकीआगरसाज पहिने परीसमान प्रकाशवान मृगनैनी मृदुबैनी गज गामिनी सिंह कटिभामिनि लौंड़ियांसाथ मेहंदीहाथमें आसपास टहलुई बीचमें हुईनईचालढालसे उपस्थितहुईलौंडियोंके साथएकहबशिनभीदृष्टिपड़ी बजुरुच्चमेहरने उसकाहाथ पकड़के बिनयकीकियहवही कुत्ताकालाहैजिसने आपकेहाथसेकौरछीन लियाथा श्रीर वहकौलवहशाहजादीहैजोआपसा बादशाहस्वरूपवानपाकरफिरछोड़करइसदुष्टकेसाथ बिलासकररहीहै बादशाहआश्चर्यमानकरउसे देखातो बिदितहुआ कि सत्यवह स्त्री नहींहैमर्द है स्त्रीकेबानामें शाहजादी साथरहा करताथा रातदिन आनन्द सहित निडरबिहारकिया करताथा बादशाहकोइस वृत्तान्त के मालूम होने से अत्यन्तक्रोधउत्पन्नहुआ श्रीर सबद्वारपालपकड़ेगयेश्रीर खासकरइस द्वारपालकोअतिकष्टदियागया श्रीर बादशाहकीआज्ञासे उसी समय हबशी कुत्तांकरकेकटाया गया श्रीर उसशाहजादीको प्रथमतो गधेपर चढ़ाकर सकलनगरमें घुमाया तदनन्तर मीनारमेरखकरचुनवादियाश्रीर बजुरुच्चमेहरको बड़ाईकी खिलअत कृपाकीअल्कशको उसीसमयबाहर भेजवाकर श्रीर सबको देखाकर एकस्थानमे गड़वादिया परन्तु ऊपरका धड़खुलार-

क्खा और तीरन्दाजोंसे निशानालगवाया और अल्कसकीधनसम्पति स्त्री
पुत्रोंसमेत बुजुरुचमेहरको देदी लाखोंरुपये का धनकहां से कहां आया
बुजुरुचमेहर नजरदेकर वहांसेछुट्टीलेकर और वख़्तयार सेवकको साथले
अल्कशमंत्रीके घरमेंगयाउसकीस्त्रीसे कहाकिमुझे इसधनसम्पतिसेकुछकाम
नहींहै ऐसाधनलेकरकोई क्याकरै तुझीकोमुबरकारहैपरन्तुमैंने वख़्तियारसे
वचनकियाथा कि अपनेबापका बदलालेने के पीछेतेरा बिवाह अल्कशकी
लड़कीके साथकराढूंगा औरतेरामनोरथ पूर्णकरूंगा सोतूअबमेरीख़ातिरसे
इसकेसाथ अपनीदुहिता ब्याहदेऔर इसकीमनोकामनापूर्णकरदे औरतुझे
भीवचनदेताहूं किजोतेरी बेटीकेपेटसेवख़्तियारका जोपुत्र उत्पन्नहोगा तो
उसे मैं पढ़ाऊंगा और जबवह चैतन्य होगा उससमय अल्कशकेअधिकार
बादशाहसे दिलादूंगा अल्कशकीस्त्रीने बिनयकीकिमुझे आपकेमनोरथमेंकुछ
उजुरनहींहै मैंआपकी दासीतुल्यहूंआपजिसपर प्रसन्नहों मैंउसपरराजी
हूं वहआपकीदासीहै जिसकोइच्छाहो देदीजिये मैंअतिआनन्द पाऊंगी
खुलासायहहै किअल्कशकीस्त्रीने बुजुरुचमेहरकी अज्ञानुसार अपनीबेटी
का बिवाहवख़्तियार हबशीसे करदिया बुजुरुचमेहर का कहना स्वीकार
कियाजिससमय बादशाहनेयहसुना तो बुजुरुचमेहर की बुद्धिमानी और
शीलता और निरलोभतादेखकरआश्चर्यमाना औरफिरकई दिनपीछेजिस
समयमंत्री और बुद्धिमान् और हकीम व पहलवानआदि न्यायशालामें
आयेकहा किबुजुरुचमेहर अपने घरानेमें बड़ा अच्छा मनुष्यहै और भले
अच्छेमनुष्यका पुत्र है और उसकेसमानहिम्मतमेंदूसरानहींहैख़ाजेबख़्तजमा-
लकाबेटा हकीम जामास का पोत्रहै और विद्यामें अपनासा दूसरानहीं
रखता है और धर्म कर्ममें अति चतुरहै ऐसा मनुष्य कमदेखने में आयाहै
देखो अल्कश कुकर्मी अधर्मीने कैसीदुष्टताकी जो मैंने सम्पत्ति उसकोकृपा
कोथीउसने उसकीस्त्रीऔरबेटीकोदेदी एककौड़ी तकउसमेंसेउसनेनलीव्या-
करण वज्योतिषरमल गणितइत्यादि सबप्रकारकी विद्याओंमें अतिनिपुण
है इसकोछोड़ उदारवीराज प्रबन्धमें चतुर पहलवानी सुशीलता और शुभ
स्वरूपमेंभी अतिशोभितहै और सत्य और स्टुबोलताहै इसभांतिका म-
नुष्यदेखनेमें नहींआयाहै बल्किढूंढ़नेसे ऐसा सर्वगुणी नहींमिल सक्ता है
और अन्तर्यामी भीहै इसके पहिले हमारे राज्यमें जितनेमंत्री थे अबुध
और राज्य प्रबन्धमें आलसीथे इसकारण से इसको मैं अपना मंत्री बनाकर
प्रशंसताकी खिलअत इसेदूंगा सभाके रहनेवालोंने बादशाहकी बुद्धिकी
प्रशंसाकीऔर कहाकिसत्यहै इसगुणकाक्याकोईदावा करसकै आपकी
बुद्धिमानी वर्णनकरनेसे बयाननहीं होसक्तीहै इसकामकोजो आपनेकहाहै
उसेकृपा दृष्टिसे शीघ्र करडालिये हमसबको भी यही आसहै कि बुजुरुच-
मेहरको अधिकअधिकार दियाजावे बादशाहने उसीसमय बुजुरुचमेहर

को मंत्रीको खिलअतदी और दाहिनी ओर कुरसीपर बैठने को तख्तके समीपआज्ञादी फिरथोड़ी देरकेपीछे कचहरी बरखास्त हुईबज़ुरुच मेहर अतिहर्षसे अपने घर में आया औरपारितोषिक आदिबटनेलगा उसकी मातादेखकर ईश्वरको नमस्कार करके प्रशंसा करने लगी बज़ुरुचमेहर राज्यप्रबन्धको विचारकेद्वारा करनेलगा ॥

—o—

बादशाह करके अति स्वरूपवती दिलाराम नाम स्त्रीका निकालना और फिर उस्को स्वीकार का वर्णन ।

आकासवाजीगर मनुष्योंकोकिस२भांतिसे फिराताहै औरमाया जादूगरनीकैसेरूपदिखाती हैकभीफकीरकोबादशाह औरकभीबादशाहकोयती करदेतीहै औरजिन्हैं सूखी रोटीतकनहींमिलतीवहसहस्रोंमनुष्योंकोभोजन देतेहैंजो एकएककौड़ीके कङ्गालथे उनकोधनसम्पत्तिअत्यन्तबढ़ातेहैं इसदृष्टान्तके अनुसार यहइतिहास एकयतीका वर्णन करतेहैं कि बादशाह को उसकीचञ्चल चपलकी चालनेसब स्त्रियोंका विश्वास जाता रहादिलारामके सिवाकिवह अति स्वरूपवान और गानेव बजानेआदिमें अति चतुरथी बादशाहके निकटकोई स्त्रीआनेनपातीथी और कदाचित् किसी स्त्रीका सामनादैवयोग सेहोगयाता बादशाह क्रोध वानहो उसे अधिक दण्डदेताथा एक दिन बादशाह आखेटको गया बाज,जुर्रे,बहरी,लगाड़ झगड़,वेसरापहाड़ी,पाहबहरी,बश्वासिकरा,शाशातिरमुती,आदिशिकारीकुत्ते चीतेस्याह गोशकरैल इत्यादिका समूह का समूह साथबादशाहकेचलेराजके समीप एकपहाड़ असमानकेसमानऊंचा अतिरमणीक स्थानकहीं कहीं फूल लगेहुये और मनोहर भूमिदेखने में आईकिसी ओर अति लम्बेसीधेवृक्ष सोहायमानथे किसीओरवेली आधीनसे सिरपृथ्वीपर रक्खेहुये और उस्के खोहमें एक आखेट को जगहअति आनन्ददायक थी औरभांति२ के फूलोंकी सुगन्धछारहीथी और वृक्षअतिहरे लहलहारहेथे औरशिकारइसभांतिसेथे किगिननेमें न आसकेकाजकुङ्ग सुरखावमुरगावी सारस आदिअगणित इस्कीओड़एक और मैदानमें मृग,चीतल,पाढ़े वा बारासिङ्घे,पसीन,घोड़ारोज,चिकारी,पांति२के पशुपक्षियोंकी अधिकता थीऔरकोसोंतकघासलहसुनियाकीभांतिजमीथीऔरपानीकीनहरेंचारों ओरसेबहतीथीं कहींनदी कहींसोते कहींसरवर बहतेथे एकओर महानदलहरें आनन्दमयी लेरहा था जिसकापाट व जल निर्मल और बहुत पवित्रथा और उसीके कनारे पर हरेहरे धानों के खेत लहलहा रहे थे और कहीं २ फूलफूलरहेथे बादशाह यहसमाचार देखकरनदके समीप उतरपड़ा दैवयोगसे एकमनुष्य दुइलकड़ियोंका गट्ठाशिरपर धरेहुयेबनकीओरसे आताहुआ दृष्टिपड़ा अत्यन्तवृद्ध होगयाथा पैरधरनेसे कांपरहा

धामागमें अच्छीभांतिसे चलानजाताथा बादशाह उसके ऊपरदयालहो-करकहनेलगा किपूछोइस लकड़िहारे का क्यानामहै इसकाघर कहांहै पूछागया तोजाना कि नामइसदीनका कवादहै कुसमयके हाथोंसेअति दुखितहो रहाहै बादशाह अपने नाम के मनुष्यको देखकरअति आश्चर्य-मानकर बजुरुच्चमेहरसे पूंछा कि देखोतो हमारे और इसकेभाग्य में क्या भेदहै यद्यपिएक राशहोनेसे मैंतोसातो देशोंका बादशाहहूं और यह भिखारीहै बजुरुच्चमेहरने रीतिके अनुसारदेखकर विनयकी कि आपकी और इसकीराशतो एकहीहै और ग्रहभीएकहैं परन्तुआपके उत्पन्नहोनेके समय चंद्रसूर्यऔर स्थानपरथे औरइसकेपैदाहोनेके औसर वे दोनोंसोनग्र-हमेंथे यहसुनकर दिलाराम स्त्रीनेइसभांतिसेकहा किमैंइसकाप्रमाणनहीं मानतीइननक्षत्रोंकोकुछनहींजानतीमुझेजानपड़ताहैकिइसकीस्त्रीकुबुद्धिनि हैऔरयहमनुष्यभोलाहैनहींतोइसगतिकोनप्राप्तहोताऔर इसकायहसमा-चारनहोतातोइसकष्टमें अपनी अवस्था नखोता बादशाहतोस्त्रियोंकीओर सेशोकमय वअप्रसन्न रहताहीथा दिलारामकीयहबातअतिबुरीजानपड़ी इसके कहनेसे जानाजाताहै किहमारी सम्पतिइसीकेहेत करकेहै औरसब धनवसामग्री इसीसे है क्रोधित हो बादशाहने कहाकि इसकाभूषण यहीं उतारके इसेलकड़िहारेकोदोतुरन्त हमारी दृष्टिसेइस निर्लज्जकोदूरकरो आज्ञाहोतेही वहलकड़हारे कोसौंपदीगई सहस्रोंमनुष्योंके मध्यमेंअति सोकमेंग्रसित हुईदिलारामने ईश्वरकीकरतब्यजानकरलकड़हारेसेकहा किमुझेअपने घर कोले चल भगवानने तुझपर दयाकी किमुझसी स्त्रीको तुझेदिलाया ईश्वरका धन्यबाद कर किकष्टकेदिन दूरहुये इसकाशोच न करनाकिमुझे रोटीदेनीहोगी किइस अवस्था में और विपत्तिसिरपलेनी पड़ेगीमैं और हजारोंको भोजनदूंगी तेरानाम प्रसिद्धकरूंगी इनबचनों कोसुनकर वहदरिद्रमनुष्य अत्यन्त प्रसन्न हुआअपने साथउसको घरलेचला जबघर के निकटगया तो उसकी स्त्रीनेदेखा कि बुड्ढा आजनया चरित्र लाया और यहएक नयाफूल बनमेंफूला एकस्त्री अतिकोमल युवती स्वरू-पवतीलिये आताहै क्याबुढापा लगाहै कि मुझपर इस अवस्थामें दूसरी सौतलाया है यहबचन कहकर बड़ेबलसे दोयप्परमारे जिससे बूढ़ाभूमिपर गिर पड़ा लोटन कबूतर की भांति लोटने लगा दिलाराम ने उस स्त्री से यह कहा॥

चौपाई॥

आप क्रोधकिमि उरमें लीन्हा। तवपति पितासरिस मैं चीन्हा॥
कछु अपने उर जनि घबराहू। नहिं पुनिशोच पोच पछिताहू॥

ऐबीबी सुलक्षणी सुशीलवती इसनातेसे आपमेरीदयाशालनीमाता के समानहैं अपने लड़कों मेंमुझे भी जानो मुझेअपने हाथसेरोटी उठा

कार दीजिये मैंखाने पीनेका दुखन होने न दूंगी बल्कि और आपकी सेवा करूंगी उस बुढ़िया को दिलारामकी बातों पर दया आई और अपने कहनेपर लज्जित होकर कहाकि बीबी मैंराजीहूं सहित घरबार आपका है मुझेभी जो हाथ उठाकर देदोगी तुम्हारी सेवा किया करूंगी और यह उसका मामूलथाकि दिनभर लकड़ियां सदा बीनकर संध्या समय बेचकर बाजारसे रोटियां मोललेकरघरमें आता और बारा तेरह लड़के लूलेलंगड़े अपाहिज उसे लिपटजाते और रोटियां लेकर परस्पर बांटकर खाजाते थे परन्तु पेट संतुष्ट कभी न होताथा भूखेरहते थे यह दीनता और कष्ट सहते थे एक दिनतो दिलाराम यह समाचार देखकर चुप हो रही दूसरे दिन न रहागया उस लकड़िहारे से कहाकि बाबाजान आज तुम लकड़ियां बेचकर गेहूं मोललाना बाजारकी रोटियां किसी भांतिसे न लाना उसने कहा कि अच्छाबेटा आजऐसाही करूंगा तुम्हें गेहूंलादूंगा उसदिन लकड़ियां बेचकर वह गेहूंलाया दिलारामके सामने वैसेही पहुंचाया दिलाराम लेजाकर पीसलाई और रोटी उसकी बनाकरसबको क्षुधाभर खिलाई वह सब उसका धन्यवाद करनेलगे और उसके प्रतापसे सब चैन करने लगे जो दो दिवसके पैसे बचेहुये थे उसकी ऊन मगाकर उसकी डोरियां बटकर उसबूढ़ेको सौंपदीकि इसेबाजार में लेजावो उचित मोलपर बेंचलाना फिर इसीरीतिका बरतावकरती रहीकि कई दिवसके गेहूं इकट्ठा करके एक दिन उसकी ऊन बदलाई और उसकी डोरियां बटकर बाजारमें बिकवा मगवाई होते होते थोड़े दिवसमें कुछ रुपया जमाकरके खच्चर मोल लेकर उस वृद्धको दियाकि इसपर लकड़ियां लादलायाकरो इस बुढ़ापेमें कष्टन सहो लकड़ियां भी अधिक आवेंगी और तुमभी सुख पावोगे और जो बचेंगी वहघरमें जलजांयगी निदान इसी भांतिसे दो वर्षके समयमें धीरे २ चार खच्चरऔर कई टहलुये दिलारामने मोललिये और उसके कराये से कुछ असबाब और मकानात भी मोललिये उस वृद्ध के घरकी सूरत बदलगई दरिद्र दूरहुआ भाग्य उदयहुई लड़केवाले अतिप्रसन्न और मियांकी भी सूरत रंग बदल देखकर अति प्रसन्नतामें आनन्दमयहुये और जब बर्षाकोऋतु आई दिलारामने कहा कि इस ऋतुभर टहलुओंको खच्चर समेत अपने साथ लेजाकर लकड़ियां बनसे बाजार में बेचने को न लायाकरो वहीं पहाड़की गुफामें एकट्ठाकर आयाकरो जाड़े और बर्षामें अधिकमोलसे बिकैंगी कुछ न कुछलाभ प्राप्तहो रहैगा उस वृद्धमनुष्यने वैसाही किया जिस भांति दिलारामने कहा जब बर्षा बितीत होने लगी और जाड़ेकी ऋतुआई और लकड़ियोंका खर्च स्नानआदिमें होनेलगा ऋतुका रङ्गबदलगया शरदी ने अपना आगमन जनाया बादशाह उसीपर्ब्बत पर फिर आखेट खेलनेको आया दैवयोगसे दूसरेदिन रात्रिको ऐसी बर्फपड़ी कि

जिससे कोईबोलनहींसक्ताथा हाथपांवबाहर नहींहोतेथे आगवकड़ीकेबि-
ना किसीको चैन नथा दांतपर दांतबाजरहेथे सबसेना बादशाही शीत
के कारण ठिठुरकर मृतकके समान होगई बनमें ऐसा दुःखपड़ा कि म-
नुष्य लकड़ी तापनेको खोजनेलगे अचानक लकड़ियों का ढेर जो पहाड़
में देखातबजीमें धीर्य्यआया कि जीनेका सहाराहुआ फिर आगलगाकर
तापनेलगे जब इन्द्रियां चैतन्यहुई तब प्रातःकाल बादशाह नासकेत आ-
खेटखेलकर अपनी राजधानीको लौटआया, क़बादलकड़िहाराभीलक-
ड़ीलेनेकोचला औरअपनीरीतिकेअनुसार उसीस्थानपरपहुंचा लकड़ियां
तो न पाई परन्तुकोयलोंकाढेरदेखातो कमर थांम्हकर बैठगया औरधाहैं
मार२कर रोनेलगा आंसूसे मुख धोनेलगा अबईश्वरके चरित्रको देखि-
ये कि क़बादके दिन फिरे भाग्य उदयहुई मिट्टीछूनेसे सोना होताहैउ-
नलकड़ियोंका समाचार यों हुआ कि उसखाड़ीमें एकसोनेकी खानथी
जिससमय आगकी गर्मी पड़ी वहपिघलकर एकस्थानपर इकट्ठी होगई
क़बादनेकोयला खोदना आरम्भ किया पत्थरभी जलगया था उसकोभी
कोयलाजानकरखोदा तो उसकेतले कईसिलेंनिकलीं बुड्ढेने दिलाराम
केनिमित्त कईखच्चर कोयलोंसेलादे और दो एक सिलेंभीसाथरखलीं अब
घरमेंआया तो दिलारामकेनिकट कोयलेडालकरफूट२कर रोया और
सबकहानी कहसुनाई और कहाकोयलों कोछोड़कर पत्थरोंकीभी हजा-
रों सिलेंबनगईहैं ढेरकेढेर पड़ीहैं दोएक सिलेंभी इसीनिमित्त उठा-
लायाहूं कि कदाचित् तुम्हें बिश्वास नहो तो अपनी दृष्टिसे देखलो मुझे
झूठा न जानो मसाला पीसनेके काममें आवेंगी और एकआध बेंचभी
डालेंगे दिलाराम उससिलको छुरीकी नोकसे परीक्षाकेनिमित्त जो खु-
रचकर देखातो सिल सुवर्णकीहै उसीसमय भगवान् का धन्यबादकिया
और बोली ॥

चौपाई ॥

गरुअ सुमेरु रेणुसमताही। रामकृपाकरि चितवैं जाही।

क़बादसे कहाकि शीघ्रजाओर जितनी सिलेंहैं खच्चरोंपरलाद लावो
बुड्ढा अति शीघ्रतासेसबसिलें लादलाया फिरदिलारामने एकपत्रफैसल
सोनारके नामलिखकर क़बादके हाथमें दिया और एक खच्चरपर जि-
तनीसिलें लदसकीं लदवाकर उसकेसाथ करकेकहा कि बसरेमेंजाकर
यहपत्र और यहसिलें जोखच्चरपरलादीहैंफैसलसोनारको देनाऔरमेरी
तरफ़सेदण्डवत्करना जिसभांतिसेतुममेरे पिताहोउसीभांतिसे वहमेरा
भ्राताहै उसने मुझपर बड़ीदयाकीथी उससे कहना कि मैंदिलारामका
वकीलहूं तुम्हारे समीप भेजाहै और प्रयोजन इसपत्रमें लिखाहै वह इन
सिलोंके सिक्केकराके तुम्हें देदेगातुमलेआना खबरदार राहमेंकहीं कि-
सीचोर बटपार डाकूके जालमेंन आजाना क़बाद तो पत्रऔरसिलेंलेकर

बसरेकी ओरचलाइधर दिलारामने बाक़ीसिलोंको एक गड्ढा गहराआं गनमें खोदवाकर गड़वादीं और एक टहलुयेको सुहेल सराफके समीप जो मदायन नगरमें रहताथाभेजा और यहसंदेशाकहाकिकईवर्षसेमैंबा- दशाहके क्रोधमें आईहूं दुःखमेंसमयव्यतीत करलेतीहूं आकाशकेचक्करमें फंसीहूं जोईश्वर चाहैंगे तो अतिशीघफिर उसीभांति होजाऊंगी और बादशाहकी चौखटपर शीघ्रपहुंच जाऊंगी उचितहैकितुम जल्दीमेरेनि- कट कारीगर थवई मजूर बढ़ई आदि साथलेकर पहुंचो और किंचित् ढील इधरके आनेमें न करना कि मुझे एकस्थान बादशाहों के समान तुम्हारेद्वारा बनवानाहै जोतुम्हारे प्रबन्धसेबनजाय और मेरेप्रसन्न होजाय तो तुम्हारा अधिक उपकारहै और इससमय जोकुछ रुपयाउसकेबननेमें लगैगा तुम अपनेपाससे खर्चकरना मजूर आदिकी मजूरी देदेना ईश्वर चाहैगा तो शीघ्र तुम्हारारुपया पटजायेगा दाम २ मुझसेलेलेनाजो कि सुहेलको दिलारामका बड़ाविश्वासथा इस संदेशा सुननेकेसाथ थवईसंग- तराशआदि कारीगर चतुर प्रवीण व बुद्धिमान लेकर दिलारामके नि- कटआया और विनयकी कि मैंआपका अनुचरहूं जोकुछ आज्ञाहोउसे कहूं देने लेनेका चर्चा क्याहै जब ईश्वर आपको बड़े दर्जेपर पहुंचावे मुझे प्रसन्नकीजियेगा भलनजा; येगायहप्रार्थना करके शुभघड़ीमेंमहलकीनी- व डाली सहस्रों कारीगर कामबनानेलगे इसवनमें बस्तीकी सूरतनिक- ली थोड़ेदिनमें वहस्थान बनगया उस स्थानमें ईश्वरकी माया प्रकाशहुई जब वहमकान बनगया दिलाराम ने अपने और बादशाहके चित्र सबभी- तोंमें खिंचवाये औरभी अनेक चित्रमनोहर थवइयों से बनवाये और सा- मान राजोंकासा उस मकानके निमित्त मंगाकर सजाया थोड़े समयमें अतिविचित्र सुडौलकेसाथ उसघरको औरंगबादशाहके धामके समान बनवादिया और हृतवरदार और तिलंगे फर्राश सेवक खासबरदार व चोबदार व कहार आदि नौकर रक्खे और सब गुणन के गुणागर और पहलवान् फकैत टपयत बक़ायत तबनयत चाबुकसवार नेजावाज तीरन्दा- ज दूर २ से बोलवाये इससमय में कबाद भी अशर्फियां बसरे सेलेकरपहुं- चा दिलाराम क़बाद को स्नानके निमित्त हौज में भेजा क़बादकी सत्तर पीढ़ीमेंभी किसीने कभीनहीं ऐसाहम्माम देखाथा सेवकस्नानके निमित्त कपड़ेउतारनेलगे कवादभयभीत होकरउसकेचरणोंपरगिरपड़ाकिमुझसे जो कुछ अपराध हुआहो उसे क्षमाकीजिये मुझेनङ्गा करके इस खौलते हुये पानीमें नजलाइये सेवक उसको ऐसादेख बहुतहंसे और उसे धो- र्यदिया और कहाकि जोतुमसमझेहो वैसा नहोनेपावेगा तुमनडरोतुम्हें कष्ट नहोगा नहानेके पीछेदेहस्वच्छ और हलकीहोजातीहै लुङ्गीजो बां- धनेकी रीतीं शिरसे बांधनेलगा बड़ीकठिनतासे क़बादको स्नानकरवाया और वस्त्रपहिनायेगये किवैसे बादशाहोंको छोड़ किसीको प्राप्तनहीं और

दिलारामने उससेकहा कि आजके दिनसेफ़वादको सौदागरके सिवाय कोई लकड़िहारा कहैगा तो उसकी जीभ निकाली जायगी और बहुत कष्टवदुःख उठावेगा और चारपांच दिनकेपीछे उत्तम असबाब और नवीनवस्तु उसकेसाथ करके बुजुरुचमेहरकी भेंटके निमित्त भेजा और ढङ्ग सबभांतिका जो मंत्री और अमीरोंका होताहै लिखापढ़ा दिया फ़वाद मंत्रीके गृहमें पहुंचा बुजुरुचमेहरको समाचार विदितहुआ और न्यायशालामें बोलवाकर सौदागरसेमिलकर बूढ़े मनुष्यकोदेखकर अधिकशिष्टाचारकिया और अति प्रतिष्ठा करके भेंट और मनोर्थ प्रकट करनेके पीछे फ़वादने दिलारामके आज्ञानुसार बादशाहकोभेंटका मनोर्थकिया और उसकेमिलापकी युक्तिचाहीवाजेनेकहाकि अतिउत्तमआजमैं बादशाहसे आपकी चर्चा कररक्खूंगा आपकी प्रतिष्ठाके अनुसार बादशाहसेवर्णनकरूंगाकलशुभदिनभीहैऔरसावकाशभीमिलैगाप्रथम पहर मेंचले आइये बादशाह से भेंट होजायगी फ़वाद विदाहोकरअपनेघरमें आया और जो कुछ बुजुरुच मेहरने कहा था उसे कह सुनाया दिलारामने दूसरेदिन सुहैलसे पूंछा कि आज बादशाह किसभांतिके वस्त्रधारण कियेहैं और कैसे भूषण सजेहैं उसने जिसप्रकारसे वर्णन किया दिलारामने उसीरीति से वस्त्रफ़वाद सौदागरको पहिनाकर बादशाहकी भेंटके निमित्तभेजा फ़वाद प्रथमतो वाजेकेसमीपगया वाजाअपनेप्रचलनके अनुसार साथलाया औरमहलकीओरचला औरकचेहरीमेंलेजाकरसाजकेघरमें ठहराया और आप बादशाहसे बातें करनेकोचला और राजद्वारमें जाकरजोकुछ प्रार्थना करनीथी सबभांतिसे सबसमाचार वर्णनन किया बादशाहने बुजुरुचमेहरका कहास्वीकार कियाजोकि यह आधी लकड़ीकाटने और वेचनेकेसिवायबादशाह सिवमंत्रीकी सङ्गतकी प्रतिष्ठा क्याजानताथा दिलारामनेचलते समयकहदियाथाकि जबबादशाहके समीपजानापहिले दाहिनापैरधरना और सातसलामभुककरकरना इसको तोवह भूलगयाकिन्तु बादशाहकी सूरतदेखकर दिलाराम की सिखयाद आई आपने दोनों पांव मिलाकर एक बार कूदकर देखातो वहां संगमरमर का बिछौना था पांवजो खिसला तो चूतड़ों के बलगिरपड़ा इस चाल से बादशाह मुसकराया सभाके लोग भी बादशाहका मुसकराना देखकर मनमें हंसकर रहगये बादशाहने उसकी भेंट स्वीकारकी और ऐसी उसपर कृपाकी कि एक डली मिश्री जो हाथमें थी उसेदी उसने लेकर सलामकिया और सलामके साथहीमुखमें डाललिया जितनेलोग वहां थे सबपर साबितहुआ कि यह अविवेकी और मूर्खहै और बुजुरुचमेहरको इन दोनों चालों से उसपर सन्देह आया मनमें उसकी ओरसे ग्लानि हुई जिस समय दरबार उठगया फ़वाद घरमें आया और बादशाह की कृपासे मिश्री मिलना और सलाम करके खाजाना दिलाराम

से वर्णन किया दिलाराम अपने चित्तमें अबाद के उस काम से अत्यन्त लज्जितहुई कहाकि तुमने विना विचारे कामकिया बादशाहकी वस्तुदी हुई बादशाहके सामने नहीं खातेहैं बल्कि भेट देकर सलाम करके शिर पर रखतेहैं और अपने घर सौगात लातेहैं अबादने पूछा कि फिर अब क्या करैंकि जिसमें राजद्वारमें मूर्ख न बनें दिलारामने कहाकि अब जो कुछ बादशाह कृपाकरके देवें उसको शिरपर रखलेना और सलाम करना और कदाचित् औसर भेटका होवे तो भेट देना वह इस बातकी सुध मनमें कियेरहा दूसरेदिन न्यायशालामें गया उस समय बादशाहखासे परथा परन्तुअबादकी हाजिरीकोउसकी चालदेखकर कहरक्खाथादर-वानियोंने विनयकी और शीघ्र बोलायाअबादकोदेखकरबादशाहकृपाकर के एकथालाक्षीरमेंका दियाअबादउसेलेकर सलामकियाऔरदिलाराम की शिक्षायादकरकेउसथालको अपनेशिरपर उलटलिया उसके शोरबे से कपड़े समेतदाढ़ीमूछभी भरगई सबशरीरमेंलपटगयाबादशाहनेअपने चितमेंकहाकिइसेकुछबुद्धिनहींहैजोचालचलताहैवहसबमूर्खताकीविदित होतीहैफिर इसपरसौदागरीकरताहैईश्वरकीमायाहै उसदिन दिला-रामनेचलतेसमयकहदियाथाकि खाजेकेसम्मत करके बादशाहकेन्योताके निमित्त प्रार्थना करनाजो स्वीकार करेंतो अधिक प्रतिष्ठातुम्हारी होजा-वेगी सो अबादने वैसाहीकिया दिलारामके कहनेके अनुसार उसनेन्यो-ताका नाम बादशाहके सामनेलिया और यह दोहा दिलारामका सि-खाया हुआ पढ़ा ॥

दोहा ॥

प्रभुता और प्रताप जगनहीं राज्यते कोय ।
मुझ गवांर की ओर प्रभु कृपादृष्टि अब होय ॥

बजुरुक्षमेहरकोभी उसके ऊपर कृपा बहुतथी सिफ़ारशकी बादशाह भी उसका सीधा और भोलापन देखकर दयाकी दृष्टिकी और उसका न्योता स्वीकारकिया अबाद कृतकृत्यहोकर हंसताहुआ बिदाहुआ और दिलारामसे आकर बादशाहका न्योतामानलेना वर्णनकिया दिलाराम बादशाहके न्योताकी सामग्री इकट्ठा करने लगी ॥

जाना बादशाह का अवाद लकड़िहारे के घरमें और दिलाराम पर कृपादृष्टि करना और भोजन करना और वारुणी मद्य का पाना ॥

जब प्रात समय सूर्य आसमान पर उदयहुआ तब बादशाह बुजुरुक्ष-मेहर और सब बड़े बड़े अधिकार वालोंको साथ लेकर अबाद के घरमें न्योता खानेको गये अबादने अगवानीलेकर भेंटदी और कहा ॥

चौपाई ॥

चरण रावरे केर जो आये । बस्यो विपिनि हर्षित लय लाये ॥

जब बादशाह उसके घरमें गये बैठकों और मकान की दीवारों पर

अपने और दिलारामके चित्रपरस्पर देखतेदिलारामको यादकर बहुत शोचकिया और जिसस्थानकोदेखा बादशाहीमहलके समानपाया फिर बुजुर्गउम्मेदने शहरसेकहाकियहघरमानोमेराहै और उसीभांतिशोभितहैयह कहकर बारहदरी मेंमसनद जड़ाऊपर बैठगया तबलेपर थाप पड़नेलगी नाचराग होनेलगा थोड़े कालके पीछे बाबरचीने बिछौना बिछा के उस पर दस्तरखान भोजनके निमित्त बिछाया और फिर भांति २ के खटरस के व्यंजन अलग २ पात्रों में चुनकररक्खे फ़वादने दिलारामकी आज्ञानु-सार दिलाराम के हाथ धोने के निमित्त बर्त्तन मंगाकर हाथ धुलाये और बाजे २ व्यंजन अपने हाथसे चुनदिये बादशाह जिस समय भोजन करचुका दिलारामने वस्त्र आभूषणभांति २ के पहिनकर परदेकीओटसे अपनी मनोहर शोभा बादशाह को दिखानेलगी और परदेसे बादशाह का मन हरनेलगी बादशाहने ज्योंही उसकी झलक देखी फ़वादसेपूछा कि यहस्त्री जो परदेके भीतर है तुम्हारी कौनहै और इसका क्या नामहै यहयुवती अतिसुलक्षण और प्रवीणहै सबभांतिका प्रबन्ध इसीने कियाहै फ़वादने हाथजोड़कर प्रार्थनाकी कि सेवककीपुत्रीहैयह जोकुछ सम्पदा है इसीके लक्षण करके है और आपक्या परदाहै महल में जाइये इस सेवक की प्रतिष्ठा बढ़ाइये लौंडी को भी इच्छा दरशन करने की है तब बादशाह फ़वाद की प्रार्थना के अनुसार महल में जो गया तो पहिले दूरसे देखकर दिलाराम पर संदेह दिलाराम का किया जब निकट प-हुंचा तबउसने मोजरा किया कहा कौन है दिलाराम यहां कहां आई दिलाराम चरणोंपर गिरपड़ी औरजोरसे करतोई बादशाहनेउसकोसि-रकोउठाकर छातीसेलगाया और कृपासहित बोलेउसनेप्रार्थनाकीकि-यहवही फ़वाद लकड़हारा है कि जिसको मुझे दियाथाआपकेप्रतापसे यहांतकधनी होगयाकि जिसे सकल देशकासौदागर हुवाकि आपनेभी कृपासहित उसकोप्रतिष्ठादी बादशाह यहसमाचार सुनकरअति लज्जि-तहुवा और दिलारामका हाथ पकड़कर उस बारादरी में लाया जहां मसनदपड़ी हुईथी जाबैठा और दिलाराम के लक्षणोंकी प्रशंसा करने लगा और मसनद के निकट बैठा लिया और फ़वाद को खिलअत कृपा करके खिताब मुल्कुल् तिज्जारत अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी के सौदागरों के अधिपति की पदवी दी और अधिक उदारता से दिलारामको चङ्गब-जाने की आज्ञा दी वह आज्ञा नुसार चङ्गबजाने लगी और इस भांति चङ्गबजाया कि आकाश को भी चक्कर में लाई और फिर उसी प्रकार से समा बंधगया कि राजसभासदों सब विकल होगये जब दिलाराम चङ्गबजा चुकी और बादशाह कृपासागरको अपनागुण दिखाचुकी तब भांड़भग-तियेकथिक कश्मीरी कौवाल ढाढ़ी कलावत और वेश्याओंने अपना तम-शा दिखाया कुछ कालके पीछे फ़वाद को खिलअत कृपाकर बादशाह ने

सभा बरखास्त होनेकी आज्ञादी और दिलाराम समेत बादशाह मन्दिर में आया और जो स्त्रियों से घृणा होगईथी सो अब अतिचाहनेलगा थोड़े-दिवस के पीछे मोहतरिमबानों जो बादशाह के चचाकी कन्याथी उसके साथ अपना विवाह करलिया एकबर्षके पीछे शाहजादीको पुत्रकी आशा हुई अब ईश्वरकी कृपासे समय गर्भकाव्यतीत होगया राजपुत्री को पुत्र होने की पीडाहुई बादशाह ने बुजुरुचमेहर को बुलाया और कहा कि राजपुत्रीको अति कष्टहै जिससमय पुत्र उत्पन्न होवे उसके भाग्यका वृत्तान्त लिखना चाहिये और जन्मपत्र बनाना उचितहै फिर ख्वाजेनेबालक उत्पन्न होनेका समय जाननेके निमित्त हिन्दी फिरङ्गी रूमीआदि घड़ियां और ग्रहों के मालूम करने के हेत रमलकातख़्ता अपने निकट रखके पांसालेकर चैतन्यहोबैठा और पुत्रहोनेका मार्ग देखनेलगा इतनेमेंईश्वर कीकृपासे सूर्यके सदृश पुत्र शुभघड़ी शुभमुहूर्त में उत्पन्न हुआ और दाया के गोदमें सुशोभित हुआ उस समय शुभ सायत लिखकर पासा तख़्ते पर फेंका और जन्म पत्र खींचकर सब प्रकार जो विधि मिलाई गई तो उससमय सूर्य और चांदको एक स्थानमें पाया और शुक्र और वृहस्पति को परस्पर देखा ख्वाजेकी आंखें आनन्द से खुलगईं बादशाह को शुभ समाचार देकर बिनय की और यह सोरठा पढ़ा ॥

सोरठा ॥

पुत्र रहै कल्यान सुख निधान संसारमें। मित्रन हित गुणखान बैरी चय याते सबै ॥
सप्तदेश नृप होय प्रसप्रतापयाको सुनो । नहिंसमानजगकोय पुत्रछत्र राजस बिदित ॥

यह लड़का शुभाग्य बहुधा देशों का नृपति होगा और बहुत न्याय करने वाला होगा सत्तर बर्ष तक प्रताप समेत राज्य करैगा परन्तु एक बुद्धिमान की मूर्खता से बहुधा शोक ग्रसित रहैगा यह कह नाम धरने का मनोर्थ किया कि दो चालाकों ने बादशाह से बिनय की कि जो सर पानी का सूख गयाथा आज आपही आप बहचला बुजुरुचमेहर सगुन अच्छा जान कर शाहजादे का नाम नौशेरवां रक्खा और बाजे इतिहास वालों ने लिखा है कि जिस समय वह उत्पन्न हुआ था उस समय बाद-शाह के हाथ में अरुण प्याला मदिराका था बुजुरुचमेहर ने फारसी बोलीमें बर्णन किया अर्थात् कहा कि आप प्याला शराब का पी जाइये बादशाह प्रसन्न होकर ख्वाजे को पारितोषक दिया और राजपुत्र का नाम नौशेरवां धरा बजाने वालों को बजाने की आज्ञा हुई और तोप खाना में सलामी छूटने के निमित्त कहा गया तोप खाने में तोपों पर बत्तियां पड़ने लगी और दमाम घरमें नौबत भरने लगी तुरन्त मंगला चरणका शब्द आसमान तक पहुंचा और सकल नगरमें छोटेसे बड़ेतक सबके यहां आनन्दबधाये होनेलगे आनन्दकी सामग्री परस्पर करने लगे नाचरंग घर २ में होनेलगे और आसमानने उसके मङ्गलके हेतसूर्य चांद

को दफ़ बनायाशुक्र व बृहस्पति अतिप्रसन्नतासे नाचका बड़रङ्ग जमायाकि सब आकाशमें घूमनेलगे और खज़ाने लुटनेलगे उसीक्षण दुखीको धनवान करदिया कंगालोंको सबभांतिसे सम्पतिदी और सबप्रजाको एकवर्षकाकर छोड़दिया सकलमनुष्य सुखमेंभोगकरनेलगे ग्यारहवेंदिन उसीसमयबादशाहको धावनने खबरदी कि अल्कशकी बेटीकेपुत्रहुआ शाहजादेका सेवकभी उत्पन्न हुआ-बादशाहनेख्वाजे से कहा कि अल्कश के नाती को अभीमार डालना उचित है जो यह लड़का जीता रहा तो मुझे संदेहहै कि औसर पाकर तुमसे बैरिया दावकरैगा अवश्य तुमसेअपने नानाका बदलालेगा सांपको मारना और उसके बच्चे का पालना काम ज्ञानवानों का नहीं है इसपर ध्यान धरना उचित है आगे तुमका अख़्तियार है इनकामों में तुम्हारी बुद्धि तीव्र है ख्वाजेने कहा कि अपराध बिना किसी का मारना धर्म शास्त्र के अनुसार उचित नहीं है ऐसे लड़के अबुध का मारना ठीक नहीं बादशाह ने कहा कि मेरे निकट यह क़िस्सा यहां सच है शत्रुको कष्टसे प्रथम वध करना लायक है नहीं तो इसका तन बना रहैगा तो तुमको कष्ट अवश्य करैगा बजरुचमेहर उसके बचाने के निमित्त बादशाह की मति इस वाक्य को ओर से फेरी और बादशाह से बिदा होकर अल्कशके घरमें गया और बख़्तियारके लड़के का नाम बख़्तक रक्खा जब नौशेरवां चार वर्ष चार मास का हुआ बादशाह ने शिक्षा के हेत बजुरुचमेहर को सौंपा बजुरुचमेहर ने सप्ताहके पीछे बख़्तक से बादशाह को भेंट दिलवाई और प्रार्थना करके जागीर अल्कश की उसके नाम पर लिखाई नौशेरवां के पास उसेभी पढ़ानेलगा और अत्यन्त प्रसन्नतासे उसकी शिक्षामें श्रम करनेलगा जो कि नौशेरवां बड़ा तिब बुद्धी था कई सालके समय में सब विद्या व्याकरण वैद्यक ज्योतिष गणित रमल नम्रता पण्डिताव आदि में अतीव प्रवीण हुआ और सिपाहियाना में भी अति चतुर हुआ सकल प्रकार का अभ्यास प्राप्त करके बड़ा गुणी हुआ दैवयोग से एकदिन चीन के बणिये उस नगर में आये बादशाह की सेवा में नवीन वस्तु सौगात लाकर दी तिस पीछे राजपुत्र को भी भेंट देने के हेत आज्ञा चाही बादशाह ने उनकीप्रार्थनाके अनुसार आज्ञाकी जिससमय सौदागरों ने राजपुत्रकेसम्मुख भांति २ की सौगात आगेधरी और कुछवस्तु सोभायमान भेंटकीरीतिमेंतबदो नौशेरवां चीनके महाराजका वृत्तान्तपूछने लगा बणियों नेउसका समाचार ब्योरा समेत बिनयकिया और कहा कि चीनके बादशाहके एक कन्याहैमेहरंगेजनाम सूर्यऔर चन्द्रमाके समानरूपवान शोभा सागर परम उजागर परी सदृश कामिनीहै जिसकी सुन्दरताई संपूर्ण संसार में प्रसिद्ध है एक समूह उसकी शोभापर मोहित है हजारों राजपुत्र उसकेस्नेहमें पानी भर्तेहैं सैकड़ों बादशाह उस चन्द्रबदनी पर मरते हैं ॥

देखे की गति को क... मृगनयनी केनै न
सुनने ते बहु मरत हैं सत्य मान ले बैन ॥

मेहरंगेजकी चर्चा सुनकर राजपुत्रका चित्त अति मोहितहुआ और प्रीतिकी आग नैाशेरवांकी छातीमें प्रकाशित हुई कलेजेमें प्रीति रूपी-बान पारहोगया नेहमें बंधगया होते २ बल व पराक्रमने भी जवाब दिया और धीर्यनेभी अपनालार्ग लियाखाना सोनाछूटगया केवल चुपसाधे रहता हंसना बोलना ध्यानसे उतरगया निशिदिन उसके निमित्त क्षीण होता जाताथाऔर उसीकी बातेंकियाकरताथा सदा ध्यानलगाये रहता था और इन कवित्तों को पढ़ाकरताथा ॥

कवित्त ॥

यातो वे दिन रातये बावरे जामें बसन्त समाय रह्यो ।
बाग अनूप कौसैर सजो चितमें लहरादैतो धायगयो ॥
प्रेमहि वे बस आन पर्यो फुलवारी उतैलै जात भयो ।
वायु सुगंधित फूलनकी सम भेंटहि लेकरमाफ्लयो ॥ १ ॥
मित्र सनेही लिये सबसंग महाछबि रंग में अंग सम्यो ।
कबहूं हसनाथा परस्पर बीच कबहीं फूलों करखेल जग्यो ॥
कली के भांतिन चित्तयो तंग सभीजग मध्य में शोक भग्यो ।
मेरे चित्तको देखिके फूलसदा हैरांथा बड़ाईकेओरलग्यो ॥ २ ॥
निशिबासर सुक्खमें अंगरह्यो जनुफूल प्रफुल्लित रङ्गलिये ।
रूब औसर चित्तकेविस्तरही उरमाझ अनन्दउमंग दिये ॥
कामिनि तेनहिं काम कछू नहिं शोचशरीरमें खेद किये ।
बायुन ताती लगीतन बीच में नीचकी रीति न बोल्यो हिये ॥ ३ ॥
मदपान सिवायन आनकियो दिनरातसदायह बानि लिये ।
निशि बासरशोकनहीं तनको निजमित्र समेत सुचैन किये ॥
अरु केवल एक अनन्द रच्यो सब रंज कलेश बिसारि दिये ।
बसताथा बसंत समय सब भांतिअनन्द अनंत सम्हारे हिये ॥ ४ ॥
निज मित्रकेहाथ में हाथ दिये अरुसुक्ख समेत रह्यो जगमें ।
याती समय असहष्टि परयो जहं भूलतई सगरो मग में ॥
कछु प्रीतिमें आनफस्यो जो व्याप्योहै चित्तकोरगरगमें ।
अतिशीघ्र भयो पतिभारमनो जरदी कियो रूप सभीलगमें ॥ ५ ॥

विदाभयो सुखऔरदुःखघेरिआयो मोहिकोयन उबारे मेरीगोदखाली देखके। विधिवसशोकतनकोकसभीसूखिगयोकाटकेरूखभयोफूलडालीलेखिके ॥ नरगिसके समानहूं हैरान इसजहानमेंसोसनके भांतिकांतिजोभनिज पेखिके। आपतनक्षीणअरुदीनवोमलीनदुखसेरकोनसुधिबुधिभावतनदेखके ॥

कुण्डलिया ॥

डाली सूरति मोरकी परबन्धन निज ग्रीव । गुलू बन्द घेरा कियो दुःख

पड़ेकीसीव ॥ दुःखपड़ेको सोवकठिनता अधिक समाई । रक्त अंसुअन की नदी बीचवहिताहूं भाई ॥ चित जानतहै मोर सोकदुख जाहि डरायो । बलकुछ रह्योन मोहिं ईश यह काह समायो ॥ नदी अगमके मध्य खड़ा हों शोकसमेत । दृष्टिकनारा पड़तनहिं कहूंनदूरसचेत ॥ कहूंन दूरसचेत लहर दुख अधिक सतावे । देखें अब यह चरित कर्म कह काह देखावे ॥ मित्र सनेही कोइ कामनहिं मेरे आवे । बिनाईश के दुक्खकौन अब मोर मिटावे ॥ कहोंकहा कासों कहों कठिन बिपति अति मोहिं । प्रीति रूप पावक बिषय निशिदिन जरना होहि ॥ निशि दिन जरनाहोय श्वास संघ ज्वाला निकलें । धीरज कितनाधरों अधिक उरमें वे सिकलें ॥ ठीक यही है बातबिदितकोजैयह किसे । अंतरगतिका हालसुक्ख पहुंचे पुनि जिसे ॥

यद्यपि उसने बहुत छिपाया परन्तु जरद रंगत और मुंहकी सूख ने आहसरदकेभरने और चित्तपर क्लेशके तीरचुभने से प्रतिदिन दुर्बलहोगई जब यह समाचार शाहजादे का होने लगा दूतों ने बादशाह के समीप यह चरित्र पहुंचाया कि जाना नहीं जाता है कि हमारे लोगों के नष्ट कर्मसे कौन उपाधि शाहजादेको व्यापीहै खाना पीना सब छूटगया है न किसीसे कुछकहतेहैंऔरन किसीकी सुनते हैं दर्पणके समान आश्चर्यवान् हैं यह समाचारसुनकर बादशाहने पारकेसहस दुखित होकर बजुरुग्-मेहरको बोलायाऔर यहवृत्तान्त कहाखाजेने बादशाह को धीरजदेकर शांतकियाऔरआप नौशेरवांके पासगयाऔर एकान्तमें जाकरके कहा किशुभतोहै आपकाचित्त किस प्रकारका है ऐसाक्योंहै सत्य बतादीजिये तो उसकी मैंऔषधिकरूं आपके निमित्त दवाबनाऊं नौशेरवांनेकहाकि खाजहसाहब आपमेरेपिताके मंत्री दूसरेमेरेगुरूहैं आपकोमैंबड़ा जानता हूं यद्यपि स्थान लाजकाहै इसछिपे भेदको विदित करना अच्छा नहीं है किजोअपनासमाचार प्रकटकरूं और दुःखकहूंपरन्तु आपकेआज्ञानुसार कहताहूं कि मैं मलिकामेहरंगेजजो चीनके राजाकीबेटीहै उसकास्वरूप बिनादेखे उसपर मोहितहूं और अच्छीभांतिसे जानलीजिये कि जबतक मेरा उससे बिवाह न होगा तबतक मैंइसी शोकमें रहूंगा और जीव भी जातारहै तो आश्चर्यनहीं ॥

दोहा ॥

यह कहकर इक शाहकी मनमें बंधी सनेह । बिरह अग्नि तनमेंलगी जरनलगी सबदेह ।
बिरह बस्य मूर्छित भयो सुधिबुधि कछू न ताहि । तनके भीतर प्रीति है मनबूड़े तेहिमांह ॥

बजुरुग्मेहरने कहा कि शाहजादे इसभांतिकाखयालतुमकोकरनाउचितनहीं तनमनको आनन्दसे रक्खो यहकौनबड़ीबात है जिसकेहेत ऐसा ढङ्ग बनायाहै इतनादुःख बैठेबैठाये उठायाहै ईश्वरकेहेत यहशोकचित्त से दूरकरो खानपान आनन्द समेत करो अभी आप की क्या अवस्थाहैजो सेसओर मनलगाये हो आपस्वरूपवान् हैं आपके ऊपरवह सहित जी

के निछावर होगी बादशाहके पास बिवाहके कारण पैगाम आवेंगे कुछ काल और धीर्यधरिये अपनीबुद्धिसे कामनकीजिये यहबात क्याकठिन है जिसमें को आपकेजीवका भीसंदेहहै आपचित्त स्थिररखिये इस कार्य्यको मैंआपकरूंगा और आपका मनोर्थ पूर्णकरूंगानौशेरवांकोउसकीबातोंसे धीर्यआयाऔरमेहरंगेज राजपुत्रीकेमिलनेकीआशाहुई जल्दीवहांसेउठ कर स्नानकिया और मित्रों समेत आकर वस्त्रबदलके भोजनकिये बुजुरुच-मेहर वहांसे बादशाहके समीपगया और राजपुत्रके शोकमिटनेका समाचार सुनाया बादशाहने कहाकि ख्वाजहयहकार्य तुम्हारे बिना होना कठिनहै तुम्हारे उपायसे हमको बिश्वासहै कि होजायगा वह बादशाह भी बड़ा प्रतापीहै और उसकादेशभी बहुतहै बिवाहका कार्य बहुतसूक्ष्म है कोई मनुष्य सुशील उसकेनिमित्त जावैऐसेबड़े प्रबन्धके हेतमनुष्य बहुत तीव्र औरउपायी चाहिये अन्तको यहबात ठीक ठहरी कि ख्वाजह आप चीन कीओर जावे और बिवाहके निमित्त पहिले अपनेसे ठहरावे इसपर मार्ग की सामग्री सब की गईबुजुरुचमेहर पचास सहस्र सवार पियादे अपने साथ लेकर चीन की ओर चला अवबख्तककाहत्तान्तसुनिये कि जबसे सुध सम्हालीथी अपने नाना का चरित्र सुन कर प्रति दिन अपनी माता से कहताथा कि मैं जब बुजुरुचमेहर का मुंह देखताहूं तब मेरीआंखोंमें खूनउतरआताहै नानाका समाचार यादकरके चित्तभरआताहै जबतक अपने नानाका बदला न लूंगा तबतक मैं बेचैनरहूंगा औसर पाना मुख्य है कहां जायगा कभी न कभी जाल में आवैगा और सदैव बुजुरुचमेहर की बदीकर के नौशेरवां के कान अपनी जानमें भरा करता था और जो २ चित्तमें आताथा झूंठ सच अच्छा बुराकहा करताथा किंतु नौशेरवां उसे लानत मलामत करके कहता था कि ख्वाजह की भलाई को अपने साथ देख वहतेरे साथक्या २ उपकार करताहै और तूउसके ओर ऐसे२ काम करता है और उसको मिथ्या अपराध लगाता है अरे वह सब भांति से तेरा उपकारक है इसबात की चरचा कभी न कर नहीं तो ईश्वर के निकट अपराधी होगा और इस संसारमेंभी लज्जित होगा ॥

जाना बुजुरुचमेहर का चीन की ओर सहित दबाव और प्रताप के और लाना मनका मेहरंगेज का और गठिबन्धन उन दोनों का ॥

बुद्धिवान लोग इस इतिहास को आनन्द रूपी लेखनी से यों बर्णन करते हैं कि जब ख्वाजह बुजुरुचमेहर बादशाह से आज्ञा लेकर बहुत रिद्धि सिद्धि सहित मार्ग चलता हुआ चीन की सीमा में पहुंचा फिर चीन नगर में गया दूतों ने चीनके राजा को समाचार पहुंचाया कि सप्त देशके बादशाहका मंत्रीउपाई ख्वाजह बुजुरुचमेहर आपके पास आयाहै बादशाह क़बादकामरां का कोई संदेशालाया है यहसुन चीन के महाराजने मंत्रियों को ख्वाजह की अगवानी को भेजा और जब अति समीप

आयातब अपने बेटोंको शाहखुताब खुतनेसकेतआज्ञाकी कि आगे बढ़कर अगवानी लेवेंजब बजुरुच्चमेहर दीवानखासमें आयातब अदबसमेत बादशाहको झुककर प्रणामकिया और अपनेबादशाहकी ओरसे राजमंत्रियों के अनुसार सिष्टाचार निबाहके भांति २ की वस्तु और सौगात जो अपने साथ लेगया था अपने बादशाहकी ओर से चीन के बादशाह के समीप रक्खीं और हीरामोती आदि बहुतमोलके और घोड़ा हाथी और अस्त्र आदि सब प्रकारके पदार्थ बादशाह के निकट रखदिये खाकान चीन के बादशाह ने खाजहका स्वभावऔर नम्रता पसन्दकी और उसकी मधुर बातोंसे अति प्रसन्नहुआ और खाजहको प्रतिष्ठाका पारितोषिक दिया और धनसम्पत्ति अधिकदी लेखकोंने लिखाहैकि प्रथम मिलाप में खाजह को ग्यारहबार खिलअतकृपाकिये और उसकी अतिप्रतिष्ठा और बड़ाई हद से अधिक बढ़ाई अर्थात् जो बात चीनका बादशाह मुखमें लाता था उसका उत्तर अच्छी भांतिसे पाताथाऔर खिलअत अनुग्रह करता था जिससमयआनेकाकारणपूछा उसकोबुजुरुच्चमेहरनेइस रीतिसे बर्णनकिया और अभिप्राय यहविदित कियाकि जिसेचीन के बादशाहने मनसेराजपुत्री महरंगेजका विवाह नौशेरवांके साथस्वीकारकियासिवायमानलेनेके कोईबातन बनपड़ी यहबड़ी बातन्याय शालामें अपने मुखसे कही कि क्या शुभसमय और भाग्यउदय इसकाल में हुईहै जोमुझे नौशेरवां सदृस दामादमिलाहै फिरउसीदिन आज्ञाकी किशीघ्र सामग्री मार्गकी की जाय जिससेराजपुत्रीसमेत मदायननगरको जावें आज्ञापातेही थोड़ेही दिवस में मार्ग का सामान किया गया चीन के बादशाह ने कबाबाचीनी और कलावाचीनी जो दोनों बादशाहके सुशील पुत्रथे राजपुत्री मेहरंगेज के साथ चालीस सहस्र सेना से बिदाकिये और कई पीढ़ी की जोड़ी हुई सम्पत्तिकई सौ लौंडियां बसेवकतुर्की वहबशीखताई खुतनीजहेज अर्थात् दायजमें दिये कईमहीनेमें बजुरुच्चमेहर महरंगेज राजपुत्री समेत आनन्दित होताहुआ ईरानके निकटपहुंचा और उसस्थानमें रातकोरातबास किया प्रातःकालमें सेनापतियोंने अपनी २ सब सेनासंवारी और चीन के राजपुत्रने सबसामग्री दायजऔर बिवाहकी सबभांति से की जब बादशाह और नगर बासियोंको यह समाचार आनंदका बिदित हुआ तो सबओरसेप्रजाकामेलाहुआ बादशाहनौशेरवांने आगमानी की और बहुत सम्पतिराजपुत्रीकी डोलीपर निछावरकरके फकीरोंको धनवान्करदिया औरखाजहबजुरुच्चमेहरपर बड़ीकृपाकरकेगलेसे लगायाऔरबहुतसेपारितोषिक अनुग्रह समेत कृपाकिये और शुभमुहूर्त में नौशेरवां का बिवाह महरंगेज राजपुत्रीके साथहुआ बरातके पीछे एकवर्षतक आनन्द रहा ॥

दोहा ॥

रपमानन्द मगन सब धूम धाम कर व्याह । पुरबासी अतिसुखितभे तनमनअधिक उछाह ॥

जब दूलह बनठन चला शोभाबर्णि न जाय। राजप्रफुल्लित भईअति जनुदिन प्रगटेउ आय।
असशोभा परगट भई कबिको अगम देखाय। तातेयह चुप हो रहा मन सुखकर अधिकाय॥

इसके पीछे बादशाह ने ख्वाजहकी सम्मति से नौशेरवां को गद्दी दी और एकांतबैठ आप ईश्वरका स्मर्ण करनेलगा और विविधि प्रकारकी शिक्षा बादशाहने बार २ नौशेरवां कोदीकि बुजुरुचमेहर के सम्मतबिना कोई काम न करना और बल्लक को प्रधान मंत्री न करना नहींतो बादशाहतनष्ट होजावेगी कहतेहैं कि जब बादशाहने नौशेरवां को गद्दी पर बैठानेके निमित्त ख्वाजहसे सलाहकीथी तबख्वाजहने कहाथाकि चालीस दिनके पीछे शाहजादेको गद्दीपर बैठाइयेगा बादशाहने स्वीकारकिया और ख्वाजेने यह भी कह लिया था कि तब तक मुझसे कहदीजिये कि अपनेआधीनरक्खूं याजोचाहूंसोकरूंबादशाहने इसनिमित्तभी ख्वाजहको अधिकार दिया उसीसमय बुजुरुचमेहरने नौशेरवांको बेड़ीपहिना कर जेहलखानेमें भेजदिया और इकतालीसवें दिन बंधुआईसे छोड़ाकर अपनी सवारी के साथ दौड़ाता हुआ बादशाही महल तक लाया और तीन कोड़े इसजोरसे मारे जिसमें नौशेरवां तिलमिला गया और ग्रीषम का रेत उसमें नंगेपैरदौड़ाया उससे अतिदुखित होगया तदनन्तर खड्गखींच कर नौशेरवांके हाथमेंदी और सिर झुकाके कहा कि इस बेअपराधका यही दण्ड है कि मेराबध कीजिये और इसका बदला लीजिये नौशेरवां ख्वाजहके गलेसे लपट गया और कहने लगा कि ख्वाजह इसमें भी कुछ उपाय होगा नहीं तो आप मुझे इतना क्लेश न देते और मेरे कष्टका आप शोच अपने ऊपर न लेते इसके पीछे जिस समय बादशाहने शरीर त्यागनकिया उससमय में दोवर्षतक बल्लकको मंत्रीका अधिकारमिला उस क्षुद्र मनुष्य ने नौशेरवां से किस किस भांतिका अन्याय कराया जिससे नानाभांतिकेकष्ट प्रजाको पहुंचे जिससे उससमयमेंनौशेरवां बड़ाअन्यायी बिदितहुआ और उसके इसअन्यायका प्रकाश दूर दूरतकहुआ दैवयोगसे एकठग मार्गलूटनेके दोषसे पकड़आयाजो महाअपराधी और दुष्ट और ठगोंकाराजाथा जिसनेबेअपराध हजारों मनुष्योंकोफांसीदी और बहुतों के शीस राहचलते हुये काटडालेथे और बहुतलोगोंको जहरदेकर मार डालाथानौशेरवांने उसके मारनेके हेत बधिक को आज्ञा दी बधिक उसे बधस्थान को लेचला उसने उस समय बिनयकी कि बधतोमेरा होहीगा और सब का बदला पाऊंगा जो चालीस दिन का मुझे सावकाश मिले तो मेरा मनोर्थ पूर्णहो और मदिरा मांस और एक स्त्री कृपा होतो मैं एक ऐसी बिद्या जानता हूं और नया गुण गुरूसे सीखा है कि बादशाही सभामें कोई नहीं जानता होगा बल्कि कभी किसी ने न सुनाहोगा चालीस दिन के पीछे जिस बातकी आज्ञाहोगी उसे स्वीकार करलूंगा नौशेरवां ने पूछा कि वह बिद्या कौनसी है उसे कुछ लाभभी होता है

उसनेकहा किमैं जितनेजीव हैं सबकीबोली जानताहूं और इसविद्याको अच्छीभांति जानताहूं पर चिड़ियों की बोली को बहुतउत्तम जानता हूं नौशेरवांने उसकीबिनय स्वीकारकी और बुजुरुचमेहरको सौंपदिया बुजरुचमेहरने उसकोरहनेको एकस्थानदिया उसकीइच्छाके अनुसारसामग्री भी भेजदीं और पहिनाव और खाने पीने में अधिक प्रबन्ध किया उसने चालीस दिवस तक अच्छी भांति से चैन किया इकतालीसवें दिन बुजुरुचमेहरने कहाकि अबतोचालीसदिनगुजरगयेबोलीजानेकी बिधिमुझे पढ़ाइये और अपनी अवधिके अनुसार कही हुई बातको पूरा कीजिये उसने कहाकिमैं सबविद्याओंमें मूर्खहूं मुझसे और विद्यासे क्याकामहै मैं तो कुबुद्धिहूं लेकिनईश्वर अपनेगधोंको उत्तमभोजन खिलाताऔरअपनी रचना देखाताहै यह उसका प्रतापहै कि जिसने बधहोनेसे मुझे बचाया और भांति २ के भोजन कराये जो आनन्द करना या सो इस उपायसे किया अब खड़ा हूं चाहे फांसी दीजिये या गर्दन मारिये जिस भांति चाहिये जीवलीजिये खाजहने यह सुनकर हंसदिया और उसको ठगी और चोरीमें सौगन्दलेकर छोड़दिया एकदिन बादशाह शिकार करता हुआ किसीओर चलागया औरबहुत औरबुजरुचमेहरको छोड़कर और कोई साथ नथा एकस्थान परदेखा दोउल्लू एक वृक्षपरबैठे अपनी अपनी बोली बोलरहे थे नौशेरवांने बुजुरुचमेहर से पूछाकि इनकी क्या बातें हैं किसनिमित्त सलाह करते हैं बुजुरुचमेहरने कहाकि आपुस में बातें अपने लड़कोंके विवाहके हेत कररहे हैं घरवसने काउपाय करतेहैं बेटे वाला बेटीवालेसेकहताहै कि जोतीनखंडपृथ्वीके सब उजाड़अपनीबेटी के दायजमें देनास्वीकार करतोमैं अपनेलड़केसे तेरीलड़कीका बिवाह करूं नहींतो मुझे स्वीकार नहीं और मैं दूसरे स्थान पर अपने लड़के की ससुरालकरताहूं उसनेकहाकि जो नौशेरवां की जिन्दगीहै और ऐसा अन्यायप्रजापरकरता रहैगातो तीनखण्डक्याउजड़े जितनादेश नौशेरवां काहै मैंसबदायजमें दूंगातेरे मनोर्थको पूर्णकरूंगा नौशेरवां ने कहाकि अबहमारे अन्यायका चर्चाजानवरों में होनेलगा इसकाहुल्लड़ दूर२ तक हुआयह सुनकर बहुतलज्जित हुआ और फूट२ कररोया आतेहीदीवान खासमेंसांकर बंधवादी और नगरमें डुग्गी पिटवादी कि जोकोई न्याय के वास्तेआवे जंजीरको हलादेवे किसीकेद्वाराकहना कुछ काम नहीं है चोबदारोंकी कुछआवश्यकता नहींहै फिरऐसीहीरीति ठीकहोगई जो न्याय केहेत आया उसीकेद्वारा अपना अभिप्रायविदितकिया जिससेआज तकनौशेरवां का न्याय विदित है जो छोटे और बड़े हैं सब उसके नामको जानतेहैं उसकावर्णन कुछ अवश्यनहीं है कईवर्षके पीछे बादशाहके मेहरंगेज राजपुत्रीके उदरसे दोपुत्र और एकलड़की उत्पन्नहुई उसमेंसे एक का नामतोहरमुज और दूसरेकानामफराभुरज और बेटीकानाम मेहर

निगाररक्खा और उनकीसेवाहोनेलगी और उनकोख्वाजहकेनिकटभेजा ख्वाजहने एकका नाम सियाहूश और दूसरेका नाम दरियादिल रक्खा और दोनोंकीसेवामें परिश्रमकरने लगावहुतकालोपरान्तईश्वरनेएकपुत्रदिया उसने उसकानामबख्तियाररक्खालिखनेवाला लिखता हैकिएकरातकोनौ-शेरवांनेस्वप्नमेंदेखाकि पूर्वसेकालाकागआयाऔरमेरेशिरसेछत्रउतारकर लेभागाफिरपश्चिमकी ओरसे एकबाज आया उसनेउसकागको मारकर छत्र मेरेशिरपररक्खा यह स्वप्नदेखकर बादशाह जागपड़ा और बुजुरुचमे-हरसे वर्णनकरके विचारपूछनेलगा बुजुरुचमेहरनेप्रार्थनाकी कि पूर्वकी ओरएकनगरखवीरहै उसनगरमेंकुबादअमनामएकबादशाहजादाहै उसका पुत्र अल्कमाखैबरी नाम उत्पन्नहोगा आपसेऔर उससे लड़ाई होगी वह आनकर आपका छत्र छीनलेगा और आपको पराजितकरैगा फिर प-श्चिमकीओर एकनगर मक्काहै वहांसे एकलड़का हमजानाम आवेगा वह उस निर्लज्जको मारकर फिर छत्र और गद्दी आपको देवेगा और आप का बदला उससे लेगा वहयहबात सुनकरबहुतप्रसन्नहुआ और ख्वाजहको पारितोषिक देकर मक्केकीओर भेजा कि इस कामकी दवाकरो कि जो वहलड़का उत्पन्नहुआहोतो हमारालड़का प्रसिद्धकरके सबभांतिसे उस-की सेवाकरो ख्वाजह बुजुरुचमेहर बहुतसीसम्पतिऔर सामग्रीलेकरमक्के कीओरचला और उससुशीलपुत्रकोढूढ़नेलगाऔरप्रतिघरपतापूछनेलगा॥

बुजुरुचमेहरको मक्केकीओर जाना और अमीरहमज़ा का पतापूछना।

बुद्धिमानों ने ज्ञानके प्रकाश से भांति २ के वृत्तान्त लिखकर इस मधुर इतिहासको यों वर्णन कियाहै कि जब ख्वाजह मार्गमें चलते २ मक्का के निकट पहुंचा तब एक पत्र उस स्थानसे अबदुल्मतलब को जो वहां के मालिक थे इस समाचार का लिखा कि यह आधीन मक्के के दर्शन के निमित्तआयाहै और आपसेमिलनेकीभी इच्छा रखताहै आशा करताहूं कि आप अपनेदर्शनसे कृतकृत्य कीजिये और मेरी दीनता देखके दयाकी दृष्टिसे देखिये ख्वाजह अबदुलमतलब पत्रकोपढ़करबहुतप्रसन्नहुये औरमक्के केअच्छे२ मनुष्योंको साथलेकर बुजुरुचमेहरकीअगवानीके निमित्त आये और बड़ीप्रतिष्ठासे शिष्टाचार किया और अच्छे२स्थान उनकेरहनेकेलिये खाली करवादिये पहिले तो बुजुरुचमेहर ख्वाजेअबदुल मतलबकेसाथ २ काबे के दर्शन किये तदनन्तर नगर के मुखियोंसे जो बड़े २ अच्छे मनुष्यथे उनसे मिलाप किया और हरएकको रुपये और मुहरें देकर कहा कि ईरानके बादशाहने कहाहै कि मैंतुमसे बहुत प्रसन्नहूं और तुमलोगोंको उपकारक जानता हूं और सदा भलाई चाहता हूं यह कहकर डुगी पिटवादी कि आजकेदिनसे जिसकेघरमें लड़का उत्पन्नहोगा वहईरान के बादशाहका नौकर होगा सो पैदाहोने के साथही लड़के के मालिक हमारेपास लेआवें और उसलड़केको हमेंदेखावेंहम बादशाहकी ओरसे

उसकी सेवाके निमित्त मासिक नियत करदेवेंगे और उसका नाम भी हमीर रक्खेंगे और जो कि सेनाबुजुरुचमेहरके साथ अधिकथी इसलिये नगरके बाहर डेरा कियापरन्तु सदाबुजुरुचमेहर खाजह अबदुल् मतलबके दर्शनके निमित्त आता और कभी २ खाजह अबदुल्मतलबभी बुजुरुचमेहरके समीप जाता एक दिन पन्द्रह बीशदिवसके पीछे खाजह बुजुरुचमेहर खाजह अबदुल्मतलबके भेंटके निमित्त नियत समयपर जो आया तो खाजह अबदुलमतलबने सलामके अनन्तर कहा कि कल इस आधीनके पुत्र उत्पन्न हुआ है ईश्वरने भाग्यवान् और प्रतापीपुत्र कृपाकिया है बुजुरुचमेहरने उसीसमय मंगाकर उसका मुंह देखा और पांसा फेंककर उसकी रीति विचारी जानागया कि यह वही लड़का है जो सप्तद्वीपके बादशाहोंसे करलेगा और सम्पूर्ण संसार में अपना प्रताप फैलावैगा और जितने देश सब संसारमें हैं पहाड़समेत इसके वश्य रहैंगे और बड़े २ प्रतापी मनुष्य इसके आगे तुच्छ रहैंगे और दुःखियोंकी घटती और सदाचारियोंकी बढ़ती होगी न्यायकी वृद्धि और अन्यायका नाश होगा बुजुरुचमेहरने उसके मस्तकको चूमलिया और हमजा उसका नाम रक्खा और कृतकृत्य होकर खाजह अबदुलमतलबको मङ्गलाचार दिया और परस्पर में आनन्दबधाये होनेलगे जितने मनुष्य वर्तमान थे सबने खाजह बुजुरुच मेहर सहित काबाकी ओर हाथ उठाकर धन्यवाद किया और हमजाके आनन्द रहनेका वरमांगा ईश्वरकी प्रशंसा बारम्बार की कईसौ संदूक मोहरोंके हमजाके पालनके हेत बुजुरुचमेहरने खाजह अबदुल-मतलबको देकर और हीरामोती और वस्त्र पहिननेके हेत सौगातकी रीतिसे दिये खाजह अबदुल्मतलबने अरबकी रीतिके अनुसार शरबत बनवाकर चाहाकि सबको पिलावें और लेहियों और कुटुम्बवालों और पड़ोसियों को बटवावें बुजुरुचमेहरने कहा कि अभी धैर्य करो और दो मनुष्योंको आलेनेदो कि उनके भी लड़के आपके लड़केके मित्र प्रेमी होंगे और उपकारी और सहायक होंगे बुजुरुचमेहर यह कहता ही था कि बशीरनामी सेवक खाजह अबदुल्मतलबका अपने पुत्रको भी लाया और कहा कि सेवकके घर में आपका सेवक उत्पन्न हुआ है बुजुरुचमेहरने नाम उस लड़केका मुकबिल वफ़ादार रक्खा और बशीरको एक तोड़ा मोहरोंका मुकबिलके पालनेके हेत दिया और कहा कि यह लड़का बानविद्या में बड़ा पराक्रमी होगा फिर बशीर अपना लेकर अपने घरकी ओर चला मार्गके मध्य असीजमीरी सार बानसे भेंट हुई उसने बशीरसे पूछा कि कहांसे आता है और यह तोड़ा मोहरोंका किसने दिया है उसने सब समाचार ब्यौरा समेत वर्णन किया वो प्रसन्न हो करघरमें जाकर सबवृत्तान्त सुनाकर अपनी स्त्रीसे कहनेलगा कि तू सदा कहा करती है कि मैं गर्भसे हूं सो जल्द पुत्र उत्पन्न कर कि जिससे रुपया और मोहरें हाथ लगें और आनन्दित होकर समय व्यतीत करें उसने कहा कि तुझे कुछ चेत है मुझे अभी केवल सातवां महीना आरम्भ है इतने दिनोंमें मुझे

क्यों क्रोधहो मेरे शत्रुओं को पीड़ा होवे उसनेकहाकि तू कांखना अंगी-
कार कर कदाचित् पुत्र उत्पन्न हो जो आजभोरमें लड़काहुआ तो मेरी
इच्छा पूर्ण होगी जो दो महीना पीछे उत्पन्न होगा तो मुझे क्या लाभ
होगा वह क्रोधित होकर बोलीकि तेरीबुद्धिजाती रहीहै पीरसे लड़का
उत्पन्नकराताहै बुद्धिहीन अन्यायी तू मुझे आंखें दिखाता है उसको जो
क्रोध आया तो उसे एक लात इसबल से उसको मारीकि गर्भ स्थान में
लगीकि जिससे वह बिचारी पीड़ा से लोटने लगी बच्चा तो उसके पेटसे
निकलपड़ा और वहमरगई अमीरने झटपट पुत्रकोअंगरखा कीआस्तीन
में लपेटलिया बुजुरुकमेहरके निकट लेजाकर कहनेलगा कि कृपानिधान
इस दासके घरमें भी पुत्र उत्पन्नहुआहै और सुभाग्यने यह दिनदिखाया
है मालिक को दिखाने लायाहूं इसका नाम भीआपके रोजनामचा पर
लिखवाने आयाहूं ख्वाजे बुजुरुकमेहरने उसे देखकरहंसदिया और ख्वाजे
अब्दुल्मुत्तलबकी ओरदेखकर कहाकियहपुत्र बादशाह अच्छाहोगा और
बड़ा चालाकचतुर फरेबीहोगा बड़े २ बादशाह औ नृप बलिष्ठ इसके नाम
से कांपेंगे और इसका चर्चा सुनकर कांपेंगे और सैकड़ों बल्कि सहस्त्रों
को आप अकेले जीतलेगा और बड़ी सेनाको केवल अकेले अपने बलसे
भगादेगा और बड़ा चालाक प्रवीण होगा यह दयाहीन और अन्यायी
ईश्वर को भी न डरैगा अमीर हमजा का सहायक और मित्र होगा
मित्रतामें बड़ा उपकारी होगा यह कहकर जो बुजुरुकमेहर ने उसको
गोदीमें लेलिया तो वह चीखमार २ कररोनेलगा ख्वाजे बुजुरुकमेहरने
अपनी अंगुली उसके मुंहमेंदेदी उसने अंगूठीख्वाजेकी अंगुलीसे उतार
ली और फिर चुपारहा जिससमय ख्वाजेने अंगूठी अपनी अंगुली में न
देखी ताड़ूपाकी जधोंमेंढ़ी जबन मिलीतो चुपहोरहा जिस समय सबने
शरबतपिया ख्वाजेने एकबूंद शरबत का उसके मुंहमें डालदिया मुंह जो
खुला तो अंगूठी मुंहसे गिरपड़ी बुजुरुकमेहर अंगूठीको उठाकर और
हंसकरख्वाजे अब्दुल्मुत्तलबसे कहाकि यहपहिली इसकीचोरीहै मुझीसे
प्रारम्भ कियाहै यह कहकर कहाकि मैंने इसका नाम अमर रक्खा और
दो सन्दूक जवाहरोंके अमीरको देकर कहाकि अच्छीभांति इसकी सेवा
चित्तसे करना और इसकी शिक्षा अच्छे प्रकार करनी उसने भी अशर-
फियोंके तोड़े लिये और कहनेलगा कि इसकी माता इसके उत्पन्न हो-
तेही मरगई मैं इसको किसभांतिसे पालूंगा किसभांति इसकी सेवाकर
सकूंगा बुजुरुकमेहरने ख्वाजे अब्दुल्मुत्तलबसे कहाकि हमजाकी भी मा
मरगईहै और इनदोनों लड़कोंकी भी महतारी नहींहै अब उचित है कि
आप इनदोनों पुत्रोंको अपने घरमेंरक्खें और आदियेवानो मादीकर्ब
की माता जो इब्राहीमने हमजाके दूधपिलाने के निमित्त मुसलमान
करके भेजाहै सो वह चलीआती है आप अगवानी लेकर ले आवें और

दहनी ओरका स्तन हमजाको और बायां मुक़बल बफ़ादार और उमर-अय्यारको पिलावें खाजे अबदुल्मतलब बजुरुचमेहरकी आज्ञानुसार आदिये वालोंको ले आये और पङनई की भांति शिष्टाचार करके शरबत पिलाया और हाथ पांव धुलवाय और तीनों लड़कों को उसके हाथमें दूध पिलाने के निमित्त उसको सौंपदिया जबछः दिवस अमीरकेउत्पन्न होनेकेव्यतीतहुयेछठीकादिवस होचुकाबजुरुचमेहरने खाजेअबदुल्मतलब सेकहा कि प्रातःकाल अमीरका हिंडोला ड्योढ़ी परसवा दीजियेगा और जोवहपलना उठाजावे तोउसके निमित्तकुछ शोचनकीजियेगा कि ईश्वरने नानाप्रकार के पदार्थ अपनी रचनासे उत्पन्न कियेहैं और प्रत्येकवस्तुका रङ्गरूप भांति२के दिखायेहै एकस्थानहै जिसमेंपरीजिन अप्सराआदिक रहतेहैं उसकानाम काफ़पर्वत है उसके आसपास बहुत घर बनेहैं उन सबमें जिन्न देवपरी के समूह और ऊंट और हाथी घोड़ सुहे आदिक रहतेहैं और वहांका बादशाह शाहरुखका पुत्र शहपाल नाम है जिसका बहुत सुन्दर चन्द्रमा समान मुख है उसका मंत्री जो इस समयमेंन्यायकरनेमें अद्वितीय है और बुद्धि-विज्ञानमें उसके बराबरदूसरा नहीं मिलताहै वह ईश्वरके स्मरणमें ध्यानारूढ़ बैठाहै सो हमजाका पलना अपने बादशाहके समीप मंगवावेगा और सातदिनके पीछे फिर आपके समीप भेजवादेगा इसमेंअधिक लाभहोगा और विविध प्रकार के काम और मनोर्थ उससे प्राप्त होंगे यह कहकर खाजे अबदुल्मतलब सेआज्ञा लेकर अपनी सेनामें गया खाजेअबदुल्मतलब समय को देखता रहताथा और उस घड़ी कहेहुयेका ध्यानलगाये हुये बैठा था ॥

अमीरहमज़ाको काफ़पर्वत की ओर उड़ा लेजाना ॥

गुणोंकी प्रकाश करने वाली लेखनी काफ़पर्वतकीओर उड़ालेजाना योंवर्णन करती है और प्रवीणों को मधुरचरित्र यों सुनाती है कि एक दिन शाहरुखका पुत्रशहपाल काफ़पर्वतके बादशाहकी गद्दीपर सुशोभितथा और पर्वतकेआसपासके अठारह बादशाहउसके आधीन और करदेनेवाले न्यायशालामें उपस्थित रहतेथे और इसभांतिसे बड़े२लोग प्रतापवाले उसके निकट सदैव आतेथे इसी कालमें द्वारपालने आकर आनन्द समाचार विनयपूर्वककहा कि आपकी पुत्रीशुभाग्य पवित्रचन्द्र केसमान मानो असमानसे आईहै उत्पन्नहुईहै बादशाह ने ख़ाजेअब्दुलरहिमानसे किजो उसकामंत्री बुद्धिमान और सुलेमान बादशाह और सकल ज्ञानवानोंका संगीथा कहा कि इस लड़कीका नामरक्खो और उसके ग्रहविचारो कैसेहैं और भाग्यकिस भांतिकोहै खाजेअब्दुल रहिमान बादशाहकी आज्ञानुसार शाहजादीका नामआसमान परीरक्खा और रमलकेद्वारा विचारकर बादशाह से यह शुभसमाचार वर्णनकिया क कृपासागरका कल्याणहो यहलड़की काफ़के अठारहपरदे परराज्य

करैगी और बड़ी प्रतापी सुलक्षणी होगी परन्तु आज के अठारहें दिन जो२ देवगलबानहैं वह आपकीआधीनता न अंगीकार करकेफिरबैठेंगे और आपकाडर कछभी नमानेंगे और गुलिस्तांन इरमजरींव सीमींव काकम इत्यादिछोड़ जितने नगरहैं सब आपसे छूटजांयगे किन्तु उससमयमें एक मनुष्य चतुर्थभाग बासी आयेगा वह इन सबको जीतकर पराजित करैगा नयेसिरने आपको सबदेशदेगा बादशाह यहबात सुनकर अतिप्रसन्नहुआ और कहा किदेखोतो वहलड़का उत्पन्नहुआ है यानहीं वह किसदेशका बासीहै फिरदूसरेबार जो विचारकिया और जानकर कहा कि अरब देशमें एकनगर मक्काहै वहांके सरदारका वह लड़काहै और आजछठा दिनहै कि वह उत्पन्नहुआहै उसकानाम हमजारक्खा गयाहै और आजपलना उसका उसके पिताने डेवढ़ीपर रक्खाहै बादशाहनेकहा किचार जिन्नजाकर उसकापेलना उठालावें और उससुखदेनेवाले को हमारे समीपलावें और आप आनन्दमें मग्नहुआ कोस कापाट खोलादिया और पुण्यकरनेलगा बादशाह आनन्दही में था कि इतनेही कालमें परीपुत्रोंने हमजाका पलनालाकर रखदिया बादशाहने इसकेवा बहुत प्रतिकोजिन्न पारितोषिक दिया जितने न्यायशालामेंथे उस का रूपदेखकर चित्रलिखे से आश्चर्य में डूबगये उसको देखकर परीपुत्र लज्जित होगये बादशाहने अमीर को उठाकर गोदमेंलिया और सुलेमानी अंजन मगवा कर उसकी आंखों में लगाया और दूध पिलाने के हेत बादशाह दाया उसको देवाको ढढ़नेलगा उसकी आज्ञानुसार शीघ्र सब उपस्थित हुईं और देवपरी के समूह बाघसिंह का दूध सात दिन तक पिलाया खाजेअब्दुलरहिमान ने कहा कि रमल के द्वारा मालूम होताहै कि इसीलड़के से आपकी लड़कीका बिवाह होगा और परस्पर मनुष्य और जिन्नातसे नातेदारी इसीके भाग्यसे होगी बादशाह प्रसन्न होकर एक और पेलना कि जिसके पाये मूंगे के और पटीलाल चौराकी सुवर्णते जोड़ी बनीथीं और रेशमसे बुनवाकर उसपर अमीर कोलिटादिया और भांति२ के रत्न उसमें रखवादिये और फिर उसीमें अमीर को सोलाकर जो जिन्न लायेथे उनसे कहा कि जहांसे लायेथे वहीं रखआवो परन्तु विचारसमेत रखआना उसकेघरका सबसमाचार आकर मुझे बताना आज्ञा पातेही अमीरका हिंडोला जहांसे लायेथे वहींपहुंचाया और आनन्दितहोकरसकलसमाचारबादशाह कोसुनाये॥

बुजुरुचमेहर का मदायन की ओर जाना और वहां पहुंचकर आनन्द करना॥

इतिहास लेखकइस समाचारको यों वर्णन करतेहैं कि एकसप्ताहके पीछे खाजे बुजुरुच मेहरने अबदुलमतलब से कहलाभेजा कि सुधि तो लीजिये किहिंडोला छतपर आयाहै कि नहीं वह खोया हुआ अपना पुत्र आपने पाया कि नहीं यहसुनकर खाजेअबदुलमतलबने आदमी जो

कोठेपर देखनेको भेजा तो वह हिंडोला देखकर भौचकागया और उसीकी ओर आश्चर्यवान होकर टकटकी बांधकर देखने लगा ख्वाजे को फिर समाचार सुनाया कि अमीर एक दूसरे पलना को कि आज- आलमने भी ऐसाकभी दृष्टिमें न देखा होगा लेकर आये हैं जिसके सब छत प्रकाशित होरही है सकल कोठामें लाल लाली होरहे हैं ॥

दोहा ॥

यूसुफ़ जो खोगया था गुमान लीन जेहि देह ॥
कुनआं में पुनि आइयो पिता हेत कर नेह ॥

ख्वाजे अब्दुल्मतलबने यह वृत्तान्त सुनतेही सब समाचारमतीत मान आनन्द सहित बुजुरुचमेहर से कहला भेजा वह सुनतेही अपनी सेनासे आया और अमीर को देखकर आंखें प्रकाशित कीं और ख्वाजे अब्दुल- मतलबने कहाकि मुझे बादशाहसे आज्ञालेकर आये बहुत काल व्यतीत हुआ और मेरे लड़कों बालोंका ईश्वर जाने क्या समाचार हुआ होगा अब बादशाह के देखने को चित्त अकुलाता है अब मैंतो आप से बिदा होता हूं आपके कल्याण को सदा चाहता हूं परन्तु आप अमीर और मुकबिल और असुरकी सेवासे न चूकें और अपने उपाय पढ़ने लिखने में भी यत्नकरियेगा जब कभी मेरा पत्र आया करे उसका उत्तर शीघ्र कृपा हुआकरे अभिप्राय यह हैकि लिखा कीजियेगा और अमीरको तसदीम का चतुरबादशाह विदित कीजियेगा अपने साथियों से इसबातका चरचा कीजियेगा ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने सब स्वीकार किया और एक विनय पत्र लिखकर ख्वाजे बुजुरुचमेहर को प्रशंसा के हेत दिया बुजुरुचमेहर उस विनय पत्र को लेकर मदायन देशकी ओर चला कुछकाल के पीछे अपने स्थानमें पहुंचा और बादशाहके दर्शनसे कृतकृत्य होकर वह विनय पत्रदिया और अब्दुल्मतलब की उत्तमता और साहसकी बड़ी प्रशंसा की बादशाह उसे पढ़कर अति प्रसन्न हुआ और बुजुरुचमेहर को बड़ा पारितोषिक दिया उसके कई महीने के पीछे एक दिवस नौशेरवांआदि- लसको गद्दीपर बैठा था सब सभाके लोग मंत्री आदि सभा में बैठे थे और गाने वाले देशोंके और बणिये सौदागर सब ओरों के आये थे सब नगरों के वृत्तान्त सभामें पढ़े जाते थे कि चीनका वृत्तान्त बांचा गया तो उसमें यह लिखा था कि चीनके महाराजके पुत्र बहरामका पुत्र खाक़ा- नुल्ला गद्दीपर बैठा है और वह बड़ाप्रतापीबादशाह हुआहै और अपने समान दूसरे को पराक्रमी व साहसी नहीं जानता है रुस्तम नरीमा उसके आगे बुढ़ढीसी लगतीहै आखेट में जिस हाथी को थप्पड़ मारता है वह चिंघाड़ के बैठ जाताहै और शेरबबर को कुत्ते के समान जानता है और सब लोग उसके बलको मानते हैं उसने देश भी बहुत बिजयकर लिया है और चार सालका कर जो उसकेऊपर है उसके देनेकी इच्छा

नहीं है अपने बलपर यह घमंड कियाहै और यह सबसे कहता है कि इसको सप्तद्वीपका बादशाह करदेवे यातो अपने रुपये का नाम न लेवे नहीं तो मदायन को लूटकर उजाड़ दूंगा यह सुनकर बादशाह सन्देह मय होकर बजुरुचमेहर से सलाह पूछी कि इसका कोई उपाय करना उचित है ख्वाजे ने कहा कि इसका उपाय यही है कि अभी उसको जोर अच्छीभांति नहीं प्राप्तहुआ है किसी नौकरको आज्ञा दीजिये कि उसदुष्ट को बांध करकेआपके समीप लावे या उस अविवेकी का शिर काट कर सरकार में लाकर धरे नहीं तो बलवान होने पर उसकी जड़ उखड़ना कठिन होगा चीनके देशमें उसके शरीरसे उपद्रव अधिक होंगे बादशाह ने कहा कि तुमको ज्ञात है जिसे इस कार्य्य के योग्य जानो उस दुष्ट के पराजय के हेत भेजदो बजुरुचमेहर ने अल्कजरीके पुत्र गुस्तहमको जोबड़ा शूर वीर और बुद्धिमान और मल्लों की समूहका मालिक था बादशाह से पारतोषिक दिवाकर बारह सहस्र सवार पोढ़गर में चीनके बहराम पहलवान के पराजयके हेत भेजा और भी बड़े २ मुखिया सेनापति युद्ध प्रवीणोंको साथ किया और कठिन आज्ञा दी कि कर लेने के सेवाय चार साल की भेंट जुरमाना के भांति लेना और उसे पराजित करके अति कष्ट दे बांध लेना और बेड़ी पहिना कर न्याय शाला में भेजना खबरदार इसमें सुस्ती कुछ भी न करना यह सुनकर गुस्तहम सलाम करके चीनकी ओर चला ।

अमर के लाल चोराने और पाठशाला में जाने का वृत्तान्त ।

अवयहां अमीर और अमर के पाठशाला में पढ़ने जाने का वृत्तान्त यों वर्णन करते हैं कि आदियाबानों का यह मामूलथा कि एक स्तनका दूध अकेले अमीरहमज़ा को और दूसरी छाती का मुक़बिल व अमरको पिलाती थी और इन दोनों में अमीरहमज़ा पर कृपा दृष्टि अधिक रखती थी परन्तु अमीर प्रतिदिन दुबला होता जाता था और अमर मोटा होता जाता था यद्यपि दो साझी मिलकर एक स्तनका दूधपीते थे सब आश्चर्यवानथे कि इसका क्या कारणहै कि यह और लड़कोंसे मोटा है और स्वरूपवानहै एक दिवस आदियारात को सोती सोती जो चौंक पड़ी देखती क्या है कि अमर ने अमीर और मुक़बिल को तो पलंग से नीचे ढकेल दिया है और आप दोनों स्तनोंका दूध पीरहा है प्रातसमय आदियाने यह समाचार सबसे वर्णन किया और कहा कि यह लड़का जब बड़ा होगा बड़ा नामी चोर होगा कि अभीसे ऐसी चालें करता है बड़ा ढीठपन कर रहा है उसके कुछ काल के पीछे जब पैरों चलने लगा अमर ने अब यह बात अङ्गीकारकी कि जब घरके सब लोग सोजाते तब आपचुपचुपके चलकरजिस दालानमेंजाता स्त्रियोंकाछल्ला अंगूठी और जो कुछगहनापाता उठाकर आदियाके पानदान याउसकी तकियाके तले

रखदेता और आपसोजाताप्रात:कालजबलोग अपनामालढूंढतेतोआदि-
याबानोकी तकिया केनीचे याउसके पानदानमें पाते तबअपनार सबलोग
उठालेजाते आदियाबड़ा आश्चर्य करती और लज्जितहोती किन्तु मुखसे
कोई शब्द न कहती एक दिवस अमीर के हिंडोले का लालचोराकर
अपने मुंहमें रखलिया और कुछ किसीको मालूम न हुआ और यह
वृत्तान्त खाजे अबदुल्मतलब को पहुंचा कि हिंडोलाका एकलाल खो-
गया वह जवाहिर बहुमोल्य मकानही से बहगया दैव योग्यसे उसदिन
खाजेकी दृष्टि अमरके मुंहपर पड़ गई देखा कि एक ओर का गाल कुछ
सूजाहै खाजे ने और भी आदिया और लौंडियों पर क्रोध किया और
अमरको निकट बुलाकर देखनेलगा कि यह फूला कैसाहै गालको जो
दबाया उसके मुंह से लाल निकल पड़ा खाजेने कहा कि ईश्वर खैर-
करे कि इसबाल्य अवस्थाका यह चरित्रहै तो युवा में देखिये यह क्या
करेगा क्या२ यह ढहावेगा ग़रज़ कि अमरके हाथसे सबरोते थे और
कभी लड़कपन के काम से हसतेथे जब अमीरहमजा और मुक़बिल और
अमर पांचसालके हुये खाजे अबदुलमतलबने एकगुरुके निकट जोहा-
शम और नवोअमियां के लड़कोंको पढ़ाताथा उनतीनोंको भी पढ़नेके
हेत पाठशाला की रीतिके अनुसार भेजा पहिलेदिन श्रीगणेश कराया
गया उस समय के अनुसार आनन्दाचार किया गया जब दूसरे दिवस
मौलवी अर्थात् गुरु सबक़ देने लगा अमीर मुक़बिलने उसके पढ़ाने के
भांति पढ़ा परन्तु अमरसे जब उसनेकहा कि कहो अलिफ तब बोलासच
बबरहक़ है अर्थात् व्यापकहै पदकोयोग्य है कहा कि मैंकहताहूं अलि-
फ़कह तबकहता है सच बबरहक़ है यह क्याबातहै कैसामूर्ख है अमरने
कहा कि जो आप कहतेहैं उसका उत्तरमैं देताहूं जोमैं समझा हूं वह
आपकेचरणोंके निकट विनय करताहूं अर्थात् आपकहतेहैं कि अलिफ़मैं
कहताहूं सच बबरहक़ है अर्थात् अलिफ़ सीधाहै और इसका अंकएक
है और ईश्वर भी केवल एकहै जिसे फ़ारसी में वहदहूलाशरीक़ बोलते
हैं वहभी अकेलाही है जोमैं इसेअशुद्ध और झूंठ बोलताहूं तोमुझे सा-
सन दीजिये और मुझे क़ायल कीजिये और कोई भांति समझाइये आप
इसमें क्या कहतेहैं कि ईश्वर एक नहीं है कोई दूसरा भी उसका सा-
थीहै ग़रज कि सहस्रों उपायसे अलिफ़बे पढ़ाईगई ज्योंही दूसरी पाटी
कोबारी पहुंची जब अलिफ़खाली बेकेतले एक नुक़्तातेके ऊपर दोनुक़्ता
तासेके ऊपर तीनि शून्यअर्थात् बिन्दी गिनाकर पढ़ानेलगे तो और भी
अमरका चित्त घबराया और ढिठाई करने परउतारू हुआ पढ़ने के
ओर चित्तकुछ नलगाता व्यङ्ग बचनबोलने लगताथा गुरुनेक्रोध की दृष्टि
देखीपरन्तु अपनाही कहनाकरताथा लाचारहोकर हमजासे कहनेलगा
कि तुमको उचितहै इसगुरुसे पढ़ो औरअपना अमोल समय गवांवो मैंतो

नहीं पढ़ूंगा ऐसी विद्यापढ़ने से बाज़रहा इस विद्या का पढ़ना छोड़-ताहूं मैंक़ायदा अर्थात् रीति पढ़ने आयाहूं या हिसाब अर्थात् गणित समझाने की किताब लायाहूं जो अलिफ़खाली है तो मुझेक्या या किसी के पास दोएक़नुक़ते अर्थात् शून्यहैं तो मुझेक्या पड़ी है इनसे क्या प्रयोजनहै संक्षेप यहहै कि अमर इसी प्रकारकी बातेंकहा करताथा मुल्ला एकदिन ख़ाजे आबदुल्मतलब के निकट गया और अमर के ढीठपनेका समाचार सब वर्णन किया और सबवृत्तान्तकहा कि नतो आप पढ़ताहै और न हमलोगोंको पढ़नेदेता है जो हमलोगोंको पढ़वाया चाहो तो उसे और किसीको सौंप दीजियेनहीं तोमैं ऐसाकष्ट अपनेऊपर नलूंगा उन दोनों लड़कोंको भी बोलवा लीजिये ख़ाजेने कहा कि अमीरको दूसरे स्थानपर पढ़ने के हेतभेजें परन्तु अमीरने स्वीकार न किया उसपर यह सुनकर रोदिया और कहनेलगा कि जहां अमर जायगा वहां मैं भी जाऊंगा नहीं तो मैं एक अक्षर भी न पढ़ूंगा ख़ाजा नाचार होकर चुपहो रहा और फिर मुखसे कोई शब्द भी न कहा रीतियी कि सब लड़कों के निमित्त उनके पालक अपनी शक्ति के अनुसार भोजन बनवाकर पाठशाला में भेजते थे एक दिवस का समाचार सुनिये कि रीतिके अनुसार प्रतिगृहसे पाठशाला में भोजन आयाथा और उचित स्याननोंमें रक्खा हुआथा मध्याह्न के समय गुरु समेत सबनींद वशहोकर सोगये परन्तु अमर जागताथा जोकछु चाहा उसमें से लेकर खालिया और शेषपाठक के तकिया के तलेछिपाकर रखदिया जबसब जागे खाना ढूढ़ा परन्तु न पाया प्रत्येय बालक क्षुधा के कारण घबराये पाठक ने कहा कि अमर के सेवाय यह काम और किसी का नहीं है उस्के आगे और किसे इस भांति का काम होगा अमरने कहाकि वाह २ खासी यह वही कहावत है कि नगरमें ऊंटबदनाम आप प्रथम अच्छीभांतिसे ढूढ़वा लीजिये जिसपर अपराधठीकहो वहदण्डके योग्यहोगा और वही अपराधी है पाठक ने कहा कि तूही ढूढ़ अमरने पहिले नीतिके अनुसार सब लड़कोंका झाड़ा लिया और आसपास देखने लगा तिसपीछे पाठकके वस्त्र तकिया झाड़ी सब कपड़े उलटडाले सबने देखाकि पाठक के तकियाकेतलेसे भोजननिकलाचिल्लाकरकहनेलगाकिदेखोतोसाहबो ॥

चौपाई ॥

जो काबे ते अधरम होई। मुसलमान पुनि रहे न कोई।
जो गुरु करे काज इहि भांती। चेला किमिनहोय खल घाती॥

पाठककी जोऐसीनियत है तो मूर्खोंके ऐसे वृत्तान्त पर क्या पश्चात्ताप है हमलोग चलो उठो अपने पिता से कहो कि चोर पाठक के पास न पढ़ेंगे ऐसी विद्या पढ़ने से अपढ़ रहना उचित है हमको किसी प्रवीण सुकर्मी नीतिवान् गुरुके पास पढ़ावो और किसी तीव्र बुद्धि के निकट

बैठावो पाठक ने यह बात सुन लज्जित होकर दो तीन तमाचे अलहके मारे जब सो उसा न मानी तब कोड़े फटकारे अमीरने असरका अपराध क्षमा करवाया और अधिक दण्ड न होने दिया दूसरे दिन मध्यान्ह के समय जब पाठक और शिक्षक सो गये तब असर ने पाठक का शमला किरमानी हलवाई के निकट गिरों धरके पांचरुपये की मिठाई लाकर पाठशाला में रखदी और आप सो रहा पाठकने उठकर जब मिठाई अधिक देखी तब जीमें प्रसन्न हुआ किन्तु साथ ही असर की चलाकी के ओर ध्यान किया प्रत्येक से पूछाकि यह कैसी मिठाई है और कहां से आई है उन्होंने कहा कि हम नहीं जानते हैं तब असर को जगाकर पूंछा तो आपने उत्तर दिया कि बाबाजी ने प्रसाद भाना था सो यह मिठाई लेकर आयेथे दोएक लेही साथ लायेथे आपको सोतेसे जगाना बेअदबी समुझ चलते समय मुझसे कहगये थे कि जबपाठक सोकर उठें इसपर फातिहा अर्थात् देवता का नाम लेवाकर बटवा देना और मेरा भाग तुम लेलेना गुरु ने कहा कि किसके नामपर अर्पण करूं असर ने कहा कि बाबा शमलाके नामपर पढ़ो पाठक ने कहा कि यह कैसानाम है यह सुन असर बोला कि फ़क़ीरों के ऐसेही नाम होतेहैं ऐसे नामों से उनके गुरु उनको पुकारा करते हैं गुरुने उसको शमलायेश करके ऊपर से अच्छी २ मिठाई निकाल कर पहिले आपही खाई शेष असर ने सब लड़कों को बांट दी और आपभी खाई उनपेड़ों को जिन्हें पाठक ने खायेथे असर ने कुछ जमालगोटा मिला दिया था थोड़ी देर के पीछे पाठक साहब के पेट में गड़गड़ा कर दर्द होना आरंभ हुआ पाठकको दस्तपर दस्त होनेलगे पाखाना तक जाना कठिन हुआ हाथ पांव थर थराने लगे पाठकने असरसे पूछा कि अरे इस मिठाई में क्या मिला हुआ था कि जिसके खाने से मेरा हाल इस भांति का हुआ है असर ने कहा कि जिस प्रकारसे आपको सकल वर्णों में सैरें ऐसीयाद है कि प्रत्येकशब्द लातेहैं सभी लामकाफ़ मुंहसे निकालूंगा किमुझको भी वही असर अच्छे याद होगये हैं मिठाई तो हमसब ने खाई है कि डकारतक भी नहीं आती है जो मिठाई के खानेसे आपका समाचार ऐसा पतला हुआ तो हम लोगों को क्या हुआहै किन्तु ऐसा जोहोता कदाचितही जैसा कहावत में है कि किसी को बैंगन बोजियाले और किसीको पाचक आपने मरेजानेके आगेऊपर २ किसी लड़के सेमिठाई उड़वाई होगीया बेसम्हार मिठाई खाईहोगी बाबा शमला ऐसे नये कि कोई उनसे खराब काम होवे और उसके पेटमें किसी भांति की बुराई न उत्पन्नहो सेवायइसके आप काहेको भकभकमारे घकतसी खाली कि जिससे पचनेमें भी कठिनता अधिक जनाई असर की ढिठाई अमीर ने जानकरके मट्ठा मगवाया पाठक मोल्ला को पिलवाया और कहा कि

मिठाई की उष्णता ने गर्मी विशेष की है आपइही का पान कीजिये और चित्त में किसी भांति के सन्देह न करिये ईश्वर २ करके पाठक का जी बचा उस बलाय से सावकाश मिला जब चार घड़ी दिन रहगया पाठक सब बालकों को छुट्टी दी सबने अपने २ घर की राहली पाठक ने भी अपनी पगड़ी और फेंट संवारी देखें तो शमला नहीं मिलता खोगया लाचार होकर फेंट का दुपट्टा छोरकर मूड़में बांधा और घर की राहली जब हलवाईकी दूकानके निकट पहुंचे तब हलवाई शमला लेकर दौड़ा और कहा कि आपको शमला अर्थात् पाटम्बर भेजकर मिठाई मगाना क्या अवश्यथा क्या मुझे लज्जित करना आपको था क्या पांच रुपया मेरे ऐसेथे कि जिससे आपकी विश्वास नमानता दशपांच दिवसका धीरज नहोता दामोंकी कुछ ऐसी मुझे आवश्यकता नथी जब मासिक आपका आयाकरे भेजवा दिया कीजिये यह दूकान आपकी है जब जिस प्रकार की मिठाई चाहिये मगवा लिया कीजियेगा पाठक यह बातें सुन कर कुछ बनावटकी बातेंकहीऔर शिमलालेकर अंगाकीजेबमेंसे पांचरुपया निकालकर लाचारहो हलवाईके हाथमेंधरे और चित्तमें विचारकिया कियह वहीमिठाईहै कि जिसको अमरने आजअर्पण करवाई थी रात अच्छीभांति व्यतीतहो प्रातःकालमें हूं या अमर है कोड़ाहै या उसकी पीठहै अबप्रातः समय होतेही सबसेप्रथम अमरशालामें आया और बिछौनाझाड़के बिछाया और पाठक की मसनद तकिया लगाकर किताब खोलकर पढ़नेलगा पाठकने आकरजो उसको शालामें पढ़ते हुये देखा चित्तमें विचाराकि इसपर मेरा डरछागया है जिससे आज सबसे प्रथम शालामें आयाहै आज इसको कुछ न कहना चाहिये भुलावादेना चाहिये पाठकने सबको पढ़ाकर कहाकिमैं हम्माममें स्नानके हेत जाताहूं बहुत शीघ्र वहांसे आताहूं तुमसब बैठे २ पढ़ो अपना २ पढ़ाहुआ यादकरो और खिजाब बालोंमें लगानेको अमरके हाथ पहिलेहीसे भेजदिया था पीछे आप जानेका मनोर्थकिया अमरने मार्गमें समयपाकर तोला भरहरताल मिलादियाऔर अच्छी भांति खिजाब में घोरदिया गुरूजी हम्माममें पहुंचकर खिजाबको दाढ़ी मूछोंमें अच्छी भांति लगाकर एक घड़ीके पीछे जब उष्णपानी से धोया तो सब दाढ़ी मूछोंके बाल गिरपड़े तब अत्यन्त लज्जित हुये और सबसे मुहं छिपाया रात्री के समय एक कपड़ामुहंपर डालकर ख्वाजे अबदुलअतलबके निकटजाकर मिनको और अपनी सूरतदिखाई और अच्छीभांति से मुहंपीटा और रोरोकर अति बिलापकर कहाकि अमरने इस बुढ़ापेमें मेरीयह गतिकी और इस वृद्ध अवस्थामें मुझे किसप्रकार का कष्टदिया है कि लाजके कारण किसीको मुहं नहीं दिखासक्ता किसी मित्र स्नेहीके निकट नहीं जासक्ता और सब वृत्तान्त शमला और मिठाई आदि का वर्णन किया और अमालगोटा

डालदेने का सब समाचार कहा ख़ाजेने उनको तो बिनय करके बिदा-
किया और अमरको कष्टदेकर घरसे निकालदिया और अमीरसे कहा-
कि जो तुमने कभी अमरका नामलिया तो हम तुमपर बहुतक्रोधकरेंगे
ऐसे अयोग्यकुमार्गी को अपने समीप न बैठने दियाकरो मूर्खको अपने
निकटकोई नहीं बैठाताहै और अपने घरमें बोलाताहै ऐसेकी सङ्गत में
बदनामी प्राप्त होती है बुरेकेसङ्ग बुराईही मिलती है अमीर अमर का
बिछुरना कब चाहता था निशिदिन अमीररोया करताऔर भूखा बैठा
रहता यह समाचार जब ख़ाजे अबदुल्मतलब पर विदितहुआ लाचार
होकर अमरको बुलवाकर उसका अपराध क्षमाकिया और अमीर को
सौंप दिया और एक चिट्ठी गुरुके नाम अपराधके क्षमाकरनेके हेत दी
पाठकने उसका अपराध क्षमाकिया और उसी प्रकार फिर भी अमर
पाठशालामें पहुंचा एकदिवस किसी विद्यार्थीके घरसे कुछ भोजन आया
गुरुजीने अमरको देकर कहाकि इसको मेरे घरमें दे आइये और मार्ग-
में कुछचालाकी न देखाइयेगा जो मार्गमें खोलोगेतो इसमेंसुगंधका बसाहै
उड़जायगा फिर कठिनतासेभी न मिलैगा अमरने कहाकि मझे खोलनेसे
क्या कामहै आपकीआज्ञानुसार घरमें दियेआताहूं और उनसेउत्तरला-
ताहूं फिरउस भोजनको लेकर वहांसे चलाजब पाठकके घरके निकटगया
तोएक स्थानस्वच्छमें उसभोजनको सिरसे उतारकर खोला तो उसमें मीठे
चावल दृष्टिपड़े चित्त चलायमानहुआ भूखातो थाही उसी स्थानपर बैठ-
कर अच्छीभांति भोजनकिया शेषकुत्तोंको डालदिया और खाली पात्र
रखकर कसनी और भोजनका ढकना फाड़कर आगे बढ़ा पाठकके द्वार
पर पहुंचकर गुरुस्त्रीको झांकदी वह जबकिवाड़के निकटआई तब उनको
देकर कहाकि पाठकने इसके खोलनेके निमित्त मना कियाहै कि खाना
कुछ न बनाना और पड़ोसी भी जो दो एक मित्रहैंही तुम्हारे हों उन-
को भी खाना बनाना मना करना और उनके यहां खाना भेजवाना
वहबिचारी अमरकाछलन जानतीथी उसनेखाना भीकुछन बनाया और
पड़ोसियों को भी जो दो स्त्रियां उसकी अति मित्रथीं भोजन बनाने को
मनाकरवा भेजा दैवयोग्यसे उसदिन जोगुरुजी पाठशालासे उठेतो एक
मित्रकी मुलाक़ातको गये कि घड़ीभर मन बहला करकुछ कहते सुनते
चलें उसने दो पहर रात गयेतक पाठकको जाने न दिया यद्यपिखाना
खानेका सिष्टाचार उसकेमित्रने कियापरंतु पाठकको मीठे चावलों का
स्वाद मुंहमें था कुछ न खायाजब बिदाहोकर घरगये और स्त्रीसे पूछा
कि आज क्या बनाया है तुमको आज बड़ा कष्ट हुआमेरे आनेका ध्यान
कियेरही उसनेकहा कि आपनेभोजनबनानेके हेत मनाकारभेजाथा और
तुम्हारी आज्ञानुसार पड़ोसकीस्त्रियोंको भी भोजनबनानेसेमना करदिया
थासोआजनाहकआधीरात तकबाहररहेपाहुनोंसे ऐसेवेसुधिरहे किवह

बिचारीं भी अपने पुत्रों समेत भूखी बैठी हैं खानेका मार्ग देखरही हैं अबजो आपने भोजन भेजाथा वह रक्खा है पहले तो उन बिचारियों को जिनको मैंने तुम्हारे कहने के अनुसार न्योतरक्खा है भेजोफिर आपखान पान करें पाठक यह बाक्य सुनकर चित्तमें कहनेलगा कि ईश्वर अच्छा करे यहचाल अमरकी है और यहबात भी ढिठाईसे बाहरनहीं है उस पात्रको जोखोला तो उसमेंभोजन नदेखा और चित्तमेंकहा कि जांचेहुये कोजांचना मूर्खता है तेरीबुद्धिपर क्या परदा पड़ा है कि इसदुष्टके हाथसे कईबेर फलपा चुकाहै फिर उसपर विश्वास करता है फिर पाठकने उस रातको स्त्री समेत उपवास किया और यहहाल सुनकर जो और स्त्रियां थीं वैसी भूखी पड़ी रहीं भोर होतेही गुरूने कुछबनवा करखा लिया और शालामें जाकर अमरसे पूछा कि कलजो भोजन भेजा था वह क्या हुआ अमरने कहा कि खानेसे तो कुछ भेदजाना नहीं लेकिन वह मुर्ग जो आपने भेजाथा मध्य मार्गमें कसनी फाड़कर उड़गया और मैंने बहुत ढूंढ़ा परंतु उसका पता न लगा पाठक ने कहा कि तैंने हमारे घरमें भोजन बनानेका क्यों मनाकिया और क्यों निष्प्रयोजन घरवालोंकोदुःख दिया और हमने कब कहाथा कि पड़ोसियों कोभी न्योता देना उनको भी मेरे साथ दुःखदिया अमरबोला कि यहमुझसे अपराध हुआ पाठकने अमरको बांधकर अच्छीभांति दण्डदिया अमरने उसकादोष क्षमा कराया और उसकष्टसे छोड़ाया और कहाकि इसदाससे अबऐसा अपराध न होगा परंतु अमर पाठक का मनसे जीव घातक हो गया और सदैव किसीन किसी बातमें दुःख देता और अबूजेहल और अबी सुफ़ियां भी इसी शालामें पढ़तेथे दोपहरके समय जबसब लड़के सोरहे नींद में आशक्त हुये अमरने अंगूठी अबूजेहल की अंगुलीसे उतार कर पाठक के घरमें जाकर पाठककी लड़कीके पानदानमें रखआया और लड़कीके कानकी बाली उतारकर अबूजेहलके हाथमेंडालदी और चुपकाहोकर लेटरहा चुपकीसाधली जब सबलड़के जागे मुंह धोर कर पढ़ने लगे गुरू ने अबूजेहलके हाथकी अंगुली में अपनी पुत्रीके कानकी बाली जोदेखी तो कुछ कान खड़े हुये परन्तु कुछ कह न सके अबजेहल से पूछा कि यहबाली तूने क्योंकरपाई है अबूजेहल अपनी अंगुली को देखकर अति आश्चर्य माना और घबराकर कहनेलगा कि मैं यहनहीं कहसक्ता कि किसने यहबाली मेरेहाथमें पहिनाई है अमरबोला कि स्वामीजी मुझसे पूछिये मैं इस वृत्तान्त को अच्छी भांति जानता हूं यहभेद मुझे अच्छी तरह विदित है यद्यपि आपके सामने कहना उचित नहीं है पाठक ने कहा कि कहो अमरबोला कि दोपहर के समय जबआप और सबलड़के सोजातेहैं यह उठकर आपके घरजायाकरताहै और फिर उसीपांव झट पटफिर आता है आज जब यहउठकर चला दैवयोगसे उसीसमय मेरी

भी आंखखुलगई मैंभी उसकेपोछे पांवरखाकर चलागया जबवह आपके दरवाजेपर पहुंचाइसने जंजीरहिलाई आपकी पुत्री सुनकर दौड़ीआई प्रथमतोपरस्पर वार्त्तालापकरतेरहे और फिरकुछआनेजानेकीबातठहरी चलतेसमय इसनेअपनी अंगूठीउसेदी और उसकेकानकी बाली आपने लीइसकेपीछेयहांछिपाहुआ आकरसोगयामैंभी पीछेसे आकरसो रहा यहसुनकरपाठकक्रोधितहुआ औरअबूजेहलसेबालीलेकरइसभांतिसेउसे पीटाकिबेदमहोगया और उसी समय अपनेघरजाकरपुत्रीको नटकबोला-या और उसका पानदानमंगाया देखातो सचमच उसमें अंगूठी रक्खी है और अच्छीभांति यत्नसमेत धरी है यह देखतेही उसविचारीके बाल पकड़कर ऐसेथप्पड़ उसकेमुखसे गालोंपर मारे कि जिससेवह घबड़ाकर अचेतहोगई और मुंहउसका तांबासा लाल होगया माता उसकीगा-लियांदेतीहुई दौड़ी कि क्या तू विक्षिप्त होगया है तेरे मूंड़पर भूतबैठा है उस विचारीको मारेडालता है उसका क्या दोष है यह कहकर एक दो हाथ अपने पतिकी पीठपर मारे वहअपनी पुत्रीको छोड़कर उसके लिपटगया और उसकीडाढ़ी उसकेहाथमें और उसकीचोटी उसकेहाथमें टोलाके मनुष्य यह गुलशोर झगड़ा सुनके दौड़े और पाठकसे कहनेलगे कि तुमकोस्त्रीपर हाथडालना यहपाठकिसने पढ़ायाथा और किसगुरु ने विद्याकी शिक्षाकीथी जिस किताबमें यह लिखाहो कि स्त्रीको पुरुष मारेलिखा हुआदिखा दीजियेयहबात हमकोभी समझा दीजिये निदान लोगोंने बीचबराव करदिया और प्रत्येकको समझा कर यहकहनेलगे कि मनुष्यको उचित है कि स्त्रीपर हाथ न चलावें दैवयोगसे उसकेओर शुक्र का दिनथा लड़कों को छुट्टीदी गईथी प्रत्येक बालक खेल कूद में मस्त थे और सब बालक कमसिन अर्थात् थोड़ेही अवस्थाके थे अबर को नहीं सूझतीथी एक बिसातीसे आकरकहा कितुम्हारी स्त्रीका समाचार बुरा है मुझेहाथ जोड़ २ कर लोगोंने भेजाहै बिसातीयह बात सुनकर रोता पीटता घरकोचला अबरथोड़ी दूरउसके साथहोकर अलगहोबैठा और उलटेपांवों और राहमे दूकान पर आया और उसके चेलेसे कहा कि वह बड़ा बकसजो सुइयोंकाहै तुम्हारे गुरूनेमांगाहै कि उसकोएकमनुष्य मोललेगा और दामसुंहके मांगेदेगा वहआपतो न आसके इसनिमित्त मुझेभेजाहै फिरआगे तुमको अख़्तियारहै वहयह समुझकर कि यहलड़का अच्छाभलामानुस दीखपड़ता है छलयह नहीं जानता होगाबक्स सुइयों कादेदिया अबरउसे लेकरपाठशालामें पहुंचा और सुनापाकर पाठक के बिछौनामें अच्छी भांति तकियासमेतमें वहसूइयां चभोईं और आप अपनेघर चलाआया और जोकिउस दिवस पाठकसे और उनकीस्त्रीसे मारपीटहुई थी इसकारणसे भोजनकुछ न बनाया और झगड़ामचाया पाठक रिसाकर शालामें आया और बिछौना बिछाया कि आज यहीं

सोरहूंगा फिरकर घर न जाऊंगा जैसेही बिछौना पर पांव रक्खा वह सूइयांतलुओंमें गड़गईं तोश्चाश्चर्य होकर उसपरलेटकरअवकरौटेंलेनेलगा तोदेहभरमें सूइयांगड़गईं और चलनीकीभांति सम्पूर्णशरीरमें छेदहोगये और उसदिवस विद्यार्थीभीनथे छुट्टीकेकारण कोईलड़का नआयाथा अब उनके शरीरसे सूइयां निकालने वालाकोईनहीं है जिसभांति शरीर में चुभीथीं उसरीति से छेदोंरुधीं सरसे पैर तक तवसूजगया और जहां २ सूइयां छिदगईं थी वहां २ से रुधिरकी धारें छूटनेलगीं दूसरेदिवस अ-निश्वरको जवलड़के आयेतो देखा कि पाठक साहेब अच्छलीकेसमान तल-फते हैं और कराहते हैं बिछौनेपर अचेत मुरझायेहुयेपड़े हैं लड़केसूइयां निकालनेलगे और पाठकशूलके कारणचोखें मारनेलगे और अभीमनको पीड़ाकरके रुकजाते थे इतने में अमरभी सबसे पीछे उस दिन गया था पाठकको देखकर रोरोकर कहनेलगा कि जिसने स्वामीजी के साथयह कियाहै जोमैं उसेजानपाता तो इनसेउसकी बुरीगतिकरता और अपने गुरुका बदलालेता यहकहकर झटपट एक मियाना लाकर गुरूजी को सवारकराके अरोहके घरलेचला जबउस बिसातीके घरकेनिकट मियाना पहुंचावहअमरको पहिचानकर दौड़ा और कहनेलगाकि ऐलड़के तूबड़ा छलीहै और झूठमूठकी बातें बनाकर अच्छीभांति तमाशाकरना जान-ताहै मुझे झूठ मूठ बाक्य सुनाकर कि तेरी स्त्री मरने के निकट है घर को भेजा और मेरे नौकरसेमेरानामलेकरकई सहस्र सूइयोंका पूड़ाले-करचलगया अबतूकहांजाता है अभी तेरी गति करताहूं और सूइयां अभीमैं भरसेलेताहूं और सद्धलकास्वाद तुझेदिखलायेदेताहूं यहबातजब पाठकके कान में पड़ी उससमय कानखड़े हुये और बिसातीकीओर मुंह करकेपूछनेलगे कि यहकब सूइयांतेरी दूकानसेलेगयाथाअमरनेकहा भेद खुलगया झटपट आंखबचाकर वहांसेचलदिया पाठशालामेंआयाअमीर और मुकबिलसे कहा किलो ईश्वर मालिक है डेराबास अबइस नगरमें नहीं होसक्ता अमीरको भी अमरके बिना कब चैनथा यह बात सुनकर पछताभलातोहै सचबता क्यासमाचार है अमरने कहा कि मेरीतोइन्द्रियां इससमय स्थिरनहीं हैं किजो दृष्टान्तवर्णन करूं मार्गमें सब चरित्र सुना-दूंगा तबअमीरनेकहा कि चल कहांचलता है तेरेबिना मेराचित्त भीघब-ड़ाता है हम तेरेसाथ हैं यद्यपि आपकीचालों को खूब जानते हैं अमीर वमुकबिल और जिन २ बालकों को अमीर के साथ प्रीति होगई थी सबकेसब अमरके साथहुये और छिपे २ डरतेकांपतेआगेपीछे दीखतेहुये उसकेसाथ चले और अबलकेश पर्वत की गुफामें लुक रहे और साथियों समेत उसस्थानमें एक दिन और एकरात्रि बास किया जबकुछ काल वे अन्नजल व्यतीत हुआ अमीरने कहा कि अबतो भूखके कारण चित्तघब-ड़ारहा है और सबसाथी दुखित होरहे हैं अब पेट भरना किसी भांति

चाहिये अमर ने कहा कि आप साथियों समेत यहां रहैं सेवक भोजन
लाता है देखिये तो किस भांतिके व्यंजनआपको भोजन कराता हूं यह
कहकर नगरकी ओरचला औरएक बधिकसे दोहाथआंत लेकर जेबदा
नामीबुढ़ियाके घरके पिछवाड़े पहुंचा उसकी मुरगियांघरपरचरतीथीं
उन्हेंपकड़ने लगा और ऐसा उपाय किया कि उसआंतके सिरेपर एक
गांठिदेकर फेंकाजो मुर्गीउसे निगलगई दूसरे सिरेपर फूकनेलगता था
जबआंत फूलगई गलेमें गिरहपड़ीतोउसेपकड़कर छुरीसे मारकर और
परनोच कररूमालमें बांधी इसीउपायसे पन्द्रहसोलह मुरगियांमारकर
बांधलींफिरविचाराअबकुछऔर उपाय कियाचाहियेतो चारपांच पत्थर
उस दृद्धाके घरमें फेंके और आपघात लगाकर आड़में खड़ारहा वहदृद्धा
हल्लाकरतीहुई घरसेबाहरनिकली और ऐसा वैसीदीखनेलगी अमर तो
घातलगायेही था दूसरी ओरसे उसके घरमें पहुंचकर कोठरी दीखने
लगावहां एकहांडीमें मुरगियोंकेअंडेजोजमायेलेकरअपनीराहलीआगे
बढ़कर एककवाबीके पास कवाबभुनवाये और अंडेपकवाये औरपांचरुप
येकीघीरमालें और निहारीलेकरउसपरकवाबऔर अंडेरखकर चादरा
को उतारकर उस पात्रको अच्छी भांति बांधकर अपने मूंड पर रक्खा
और कवाबी से कहाकि अपना आदमी मेरे साथ करदे मेरे वह साथ
चले कुछदेर न होगी इसी समय तुम्हारे आदमीके हाथ दामभेजताहूं
ख्वाजे अबदुलमतलबने मगाये हैं उनकेघरमें भाइयों का न्योताहै उसनेजब
ख्वाजे का नाम सुनाशीघ्र अपना आदमीउसके साथकिया कुछभी भय
सौदादेनेमें नकीफिर थोड़ीदूर जाकर उसआदमीसे अमरकहाकि तुम
आगे बढ़ो ख्वाजे दीवानखानेमें चलो मुझेदही आदिलेनाहै उसे लेकर
आताहूं तुम्हें अभी मेहनत दिलाताहूं वहतो उसओर गया और आप
अबुलकैश पर्वतकी ओरचला जब अमीरके समीप पहुंचा भोजन देखकर
सबोंका चित्तप्रसन्नहुआऔरभोजनको जो खोलातो उसमेंभांति २ के खाने
दृष्टिपड़े अमीर उसे देखकर अति प्रसन्नहुआ अमरकी चालाकियां तो
अच्छी भांति जानताही था कहाकि प्रथम यह बताइये कि खाना कि-
स उपाय से लाये अमरने कहाकि प्रथम भोजन फिर बर्णन यह भोजन
खा लीजिये फिर बातें कीजिये अमीरने साथियों समेत उसको भोजन
किया अब उस आदमी का दृत्तान्त सुनियेकि जिसको कबाबीने अमरके
साथरुपयालेनेको भेजाथा ख्वाजा अबदुलमतलबके समीपगयाऔर कहाकि
मेरे गुरूने सलामकहा है और जो पांच रुपयेकी घीरमालें सरकार ने
अमरकी मारफतमगाईहैं उनका मोललेनेके हेत सेवकको भेजाहै वहां
पाठकतो पहिलेही से बैठेहुये अमरका दुखरोरहे थे यह सुनकर और
चित घबड़ाया इसी में एक बुढ़िया रोतीपीटती हुई नालशी आई कि
अमर ने मुझ दुखिया रांडको किसभांति छलदेकर मुरगियां औरअंडे

लेगया है ख्वाजे अबदुल्मतलब ने कबाबी के आदमी से पूछाकि अन्तको अमर किधरको गया है उसने कहाकि अबुलकेश पर्वतकी ओर जाताथा और चारों ओरको देखता भवचकासा थाख्वाजे अबदुल्मतलब ने उसको पांच रुपये मंगादिये और बुढ़िया को भी मुरगियों के दाम मंगादिये और पाठक से कहाकि आप अबुलकेश पर्वततक कष्ट सहिये अपने विद्यार्थियों से अमरको पकड़वालाइये पाठक पर जो वेषचढ़ा था विद्यार्थियोंको साथलेकर पर्वतका मार्गलिया और अमरके बांधने का मनोर्थ किया जब पर्वत के निकट पहुंचे अमरने दूरसे देखकर अच्छी भांति से ठट्ठामारकर हंसा और अमीरसे कहाकि गुरूजी हमे पकड़नेआते हैं विद्यार्थी भी कुछ साथआते हैं देखिये तो मैं कैसी उनकी गति बनाता हूं किससूरतसे घरभेजवाताहूं यहसुनकर गुरूजीठिठुके और अपनेस्थान पर खड़ेरहे किन्तु अबूजेहल और अबूसुफियां आदि को अमरके पकड़ने की आज्ञादी और आप कुछदूर चलकर बताना आरम्भ किया जब अबजेहल आदि निकटपहुंचे तो अमरने पुकारकर कहाकि तुमलोगों की मत चढ़ीहै जो बैठे बैठाये खोपड़ीकुचलातेहो गुरूजी तो विक्षिप्त होगये हैं तुम्हें क्या कुत्तेने काटाहै भलाचाहो तो फिरजावो अच्छी भांतिअपने बाप मा को मुंहदिखावो अबजेहलकब मानताथा बलसम्हारकर आगेबढ़ा अमरने कंकड़ उठाकर इसबलसे अबजेहलके मुंहपर मारे कि सबमुंह उसकाघायल होगयाऔर मुंहभरमेंचलनीके समानछेदहोगये सबकङ्कड़ मुंहमें घुसगये तबतो अबजेहल रोताहुआ पीछेको हटा और लड़कों ने अबजेहलका जबयह हालदेखा एकभी आगे न बढ़े पाठकने यह विचार कियाकि कदापि मेराडरमाने इस मनोर्थसे उसके पकड़नेको आपचला जब निकटपहुंचा तोअमरनेएकपत्थर उठाकर ऐसामारा कि पाठक का शिर फटगया और आगे चल न सके और रुधिर की धारें सिरमें छूटने लगींतबतो गुरूजोभी गणित विचारके पीछेहटे और घरका मार्ग लिया आखिरसे सब बदन डबगया चलते २ अबदुल्मतलब के निकट पहुंचे और अपनासिर और अबूजेहलकामुंहख्वाजेकोदिखाकर सबवृत्तान्तवर्णनकिया और कहाकि मैं अमरकोनहीं पढ़ाऊंगा आपनेअच्छी मित्रता मेरेसाथ की ख्वाजे सब इतिहास सुनकर आप सवारहोकर पहाड़की ओर गया और जो पता पाठक ने बताया था उसी मार्ग पर चला अमर ने दूरसे देखकर कहाकिअमीर ख्वाजेआतेहैं इनसेमेराबसनहींचलैगा मुझे पावेंगे तो नहीं जानताकि कैसा दण्डदेवेंगे मैंअपना मार्गलेताहूं सेवकपनका पद निबाहे देताहूं अब आपजानें आपका कामजाने ख्वाजे जब गुफ़ा में पहुंचे उसमें अमरको तो न पाया परन्तु अमीरको दिलासादेकर ऊंट पर अपने साथबैठायाऔर मनोर्थ समेतधामकोपधारे और मुक्बिलको बालकोंके समेत अपने सेवकके साथकिया अवसरमें आये यद्यपि अमीर

को धीरज और ढाढसदेकर कहाकि भैया अब असरका नाम मुंहपर
नलाना और इसको अबकभी अपने घरन बलवाना अविवेकमनुष्य ऐसी सङ्गति
से विचार करते हैं ऐसे दुष्टके साथ बैठने उठनेसे भागते हैं वह तुम्हें
कुमार्गी और बदनामकरेगा तुम्हारे बापदादेका नाम मिटादेगा अमीर
को वे असरके कबचैन और संतोष था आधक होकर रोनेलगा ख़ाजे ने
बहुतकुछ समझाया परन्तु उसका उत्तर न दिया चुपहोरहा और सात
दिवस तक खानपान कुछभी नलिया तबख़ाजे अवइसमतलब घबड़ाये कि
हमजा काजी इसी पर जायगा लाचार होकर असरको ढूंढने को आ-
दमी भेजवाये परन्तु अमीरसे कहाकि अब तुम असरका कहनालमानना
उस अयोग्य की बातों को चित्तमें न लाना और जो चित्त व्याकुल होवे
तो अपने बाग़में सैर करना अथवा मन बहलाना किन्तु दूसरे किसी के
बाग़ में न जाना हमारे कहे को ध्यान में रखना ॥

दोहा ॥

सैर हेत चल बाग़ में सुमन सुमित हूं देख। हैं पुकारती बुलबुलें चलु आनन्द उलेख।

एक दिन असर ने अमीर को शिक्षादी कि आज चलके बाग़की सैर
कीजिये फुलवाड़ी का मार्ग लीजिये उसके कहने के अनुसार अमीर ने
मुक़बिल और असर को अपने साथ लेकर बाग़ में गये और अति आ-
नन्दित हो बाग़ की सैर करने लगे असर उस बाग़ से निकलकर किसी
दूसरे के बाग़में गया और वहां से अच्छे फल चख चखाकर आया और
कहा कि रूप निधान यहांसे निकटएक बाग़ बहुतसुशोभित और रम-
णीय केहै आप के बाग़ की वसन्त ऋतु उसके आगे पतिझारहै अमीरने
पूछा कि कितनी दूर पर और किधर है बोला कि इसी आपके बाग़
से अति समीपहै अमीर मुक़बिल समेत असरके साथ उसओर चलेऔर
चलते २ उस बागमें पहुंचे देखा तो वैसाही पाया भांति २ के फूल कि-
यारियों में खिलेहैं और कुछ वृक्षों में फल खुरमें के लगे हुए हैं नहरें
स्वरूपवान बनीहैं और कियारियां प्रति वृक्षके सामने प्यारी २ बनीहैं
उस बागके मेवा देखकर देखनेवाले के मुखमें लार भरिआये एक खुर-
मा जो उसमेंका खाय तो स्वाद और मेवोंका भूलिजाय और बाग के
मध्यमें एक चबूतरा सङ्गमरमरकाऐसा स्वच्छ बना है कि जिसपर आंख
भी नहीं ठहरती है अमीर उस चबूतरे पर बैठके सैर करनेलगा असर
इधर उधर फिर २ के मेवे तोड़ २ कर अपना पेट भरनेलगा कुछ देर
के पीछे थोड़े खुरमे तोड़कर खाता हुआ अमीर के सामने आया अ-
मीर ने कहा कि हम भी इन खुरमोंका स्वाद चक्खैं मुखको अच्छाकरैं
बोला कि बैठो साहब किसर परिश्रम से वृक्षपर चढ़के यह खुरमे लाया
हूं अपने जी पर खेल आया हूं सो आप न खाऊं इनको खिलादूं जो
खानेकामन है तो हाथ और मुंहअपना है आपभी उस वृक्षके तलेजावें

अपने हाथसे तोड़कर खावें अमीर ने जो वृक्षके निकट जाकर चढ़नेको चाहा तब अमरबोला कि आपतो ऐसेकार्य्यके करनेको सेवकहै न कि ऐसे छोटे मनुष्यका वृक्षपर चढ़नेका कामहै तुम्हारे समानमेराशरीर होता तो वृक्षको जड़से उखाड़लेता अमीरको अमरके कहनेपर कुछलज्जाआई और क्रोधित होके वृक्षमें एकधक्कामारा वृक्षपृथ्वीपर गिरपड़ा अमरनेकहा कि इसवृक्षका उखेड़नाकुछकठिन नहीहै मैंभीचाहतातो इसछोटेवृक्षको गिरादेता अभी और आपको अपना पराक्रम दिखादेता यहवृक्ष की-ड़ोंने खालिया था यहसुनकर अमीरको बड़ा भारी क्रोध हुआ तो एक और वृक्षको जड़से उखाड़कर फेंकदिया अमरबोला कि यहभी वृक्षघुना था हां किन्तु वह जो वृक्ष आपकी दृष्टि के सामने है वहपुष्ट है उसका उखाड़ना कठिनहै अमीरको जोक्रोधआया तो उसकोभी उखाड़डाला तबतो कहनेलगा कि वाह साहब क्यों परायाबाग़ उजाड़ेडालतेहो अपने बलके समान किसी को नहीं समझते हो कुछ ईश्वरका भी डरहै यह कहकर बाग के मालिक को समाचार पहुंचाया और माली को भी जनादिया कि इससमय ऐसे जोरसे आंधीआईथी कि तेरेबागके तीनवृक्ष जड़से उखड़गये पहिले तो कुछ डालें टूटीं फिर एकही साथ एकझोंके में वृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़े उसनेकहा कि यहांतो इतनीभीवायु नहींआई कि पत्तातक हिलता था एक फलही यापफलवृक्षके नीचे हमकोमिलता बागमें ऐसीहवा कहांसे आई कि वृक्षों को गिरागई अमरने कहा कि बागमें आकर देखो सत्य असत्य अभी विदित हुआ जाता है माली जब बागमें गयातो देखा कि सत्यहै तीनवृक्ष उखड़ेपड़ेहैं जो सम्पूर्ण बागमें उत्तमथे देखकर रोनेलगा कि मालिक उसका उसीपर था और उसीके फलोंसे अपना खानेपीने का सामान करताथा अमीरको उसे देखकर दयाआईधैर्य्य और ढाढसदिया औरवृक्षोंके बदलेतीनऊंटदिये और शीघ्र अपने आदमीको भेजकर मंगवादिये मालीअतिआनन्दित होगया मनसे हजारों प्रकारके आशीर्वाद देनेलगा उसके मनोरथके वृक्ष फिरसेहरेहुये अमरने उसमालीसे कहा कि तू लड़कों को फुसलाके लेताहै भला तू जबतक मुझे न साझीकरेगा तबतक मैंक्यों तुझको यहऊंट लेनेदूंगाऔर बेचने दूंगा तेरे नाक में दम करूंगा उसने मारेडर के एकऊंट अमर को दिया और दोऊंट आपलेकर अपना मार्गलिया ॥

अमीर व अमर व मुक़बिल के बरपाने का इतिहास ॥

अब बुद्धिमान् लोग इस वृत्तान्त का वर्णन यों करते हैं कि एकदिन अमीर मुक़बिल व अमर समेत अपने बरोठेमें बैठेहुयेथे और जोमित्र थेहो उनकेथे सोभी वहांपर बैठेथे तोवहुतलोगोंको एकओरसे जातेहुये देखकर तोअमरसे पूछा कि इनका समाचार तो लावो कि येकहां जा-

ते हैं मुझको जल्दी आनकर पता दो अमर उसकी आज्ञानुसार पूछ कर वर्णनकिया कि कुछ सौदागर घोड़ेलाये हैं उनके देखने को यहसब मनुष्य चलेजाते हैं और अच्छीतरहसे बेधड़क देखआते हैं जो आपका भी चित्तहो तो चलके देखआइये अमीरने घोड़ोंका नाम सुनकर उस ओर जानेका मनोर्थ किया और मित्रों समेत आनन्दसे मग्नहो टहलते हुये चले वहांजाकर देखा तो सचमुच बहुतअच्छे २ घोड़े हैं भांति २ के तर- की ताजी अर्बी बग़दादी हिन्दीकेप आदि घोड़े प्रतिस्थानमें बंधे हैं और वहांपर एकघोड़ा सांकड़ों से जकड़ाहुआ मुंहमें छेंकादिया हुआ आंखों पर अंधेरियां पड़ी हुईं पावों में साकड़ों की अगाड़ी पछाड़ी बंधी हुई एक शामियाने के तले बंधाहै शेरकीसदृश खड़ाहै अमरने उसके मालिकसे जाकर मेलकिया और पूछा कि इसघोड़े को सांकड़ोंसे क्यों बांधाहै इ- सने क्या अपराध कियाहै वहबोला यहघोड़ा बड़ादुष्टहै पांचदोष रखता है चढ़ना तो कैसा कोईइसके निकटभी नहींजासक्ता है छींकोंमें रखकर इसको दाना पानी दियाजाता है बड़ी कठिनता से दाना पानी खाता पीता है अमरबोला कि यह तो कहनेहीकी बातहै कि कोई इसपरचढ़ नहींसक्ता हौवा बनारक्खाहै भला जो कोई इसपर चढ़े तो क्याहो और उसको क्यादोगे उसनेकहा कि ऐसातो मैं यहां किसी को नहींदेखताहूं इनलोगोंमें अच्छीतरह देखचुकाहूं जोकोईसवार हो और इसकोदशपांच पैग फेरेतो यहीघोड़ा बेदाम भेंटकरूंगा अमरने यहसुनकर अच्छीभां- तिसे बचन ठीककरके हाथ मारलिया और कुछ सौदागरों को जो वहां उतरेथे इसबाजी लगानेका गवाह किया और अमीरसे आकरसब समा- चार वर्णन किया और उसघोड़ेपर चढ़नेकी रुचिदिलाई अमीर उसघोड़े के निकटगया और उसपरजीन बंधवाईसांकड़े और अंधियारियां उसकी खोलवादीं और चौकमेंमंगाया जबचढ़नेका मनोर्थकिया और अयालपर हाथरक्खा घोड़ाछूतेही अपनी तीव्रताको दिखानेलगा तालियां बजानेलगा अमीर उसके निकटजाके एकफलांग मारके उसकी पीठ परजा बैठा वह टापैं मारने और कूदने लगा अमीर ने एक घूसा उसके सिरपर मारा घोड़ा बेचैन हो पसीनेमें डूबगया और बकरी के भांति कान कर लिये मनसमेत सब इन्द्रियां उसकी व्याकुल होगईं तब अमीर ने उसे प्रथम कदम चलाया फिरपोई और सरपट दौड़ाया जबघोड़े को दौड़ते समय हवालगी तो अतिबल करके दौड़ता हुआ चला अमीरने यद्यपिबाग खींची परन्तु नथंभा पचास कोस तक बराबर दौड़ता चलागया अन्तको अमीरने अपनीलंगर देकर उसकी कमरतोड़ डाली और उसकी ढिठाईका स्वाद चखादिया घोड़ातो गिरगया अमीरपैदल घरको फिराकभी पैदरचलनेका स्वभाव नथा पांवमें छाले पड़गये पैरउठातेहैं तो उठनहीं सक्ते निदान थककर एक वृक्षके तले बैठगये थोड़ी देरके पीछे क्या देखते हैं कि एक

सवार झालर पहिने हुये आता है और एक घोड़ा चितकवला जड़ाऊ जीनसे सजाकोतल साथ लाता है ॥

चौपाई ॥

बाजि बड़ाइ होइ केहि भांती । जिसके साथ पवननहिं जाती ।
पुनि आकाश न धावत ऐसे । चलत बेगहै वह हय जैसे ।

जब वह सवार अमीरके निकटआया और रीत्यनुसार प्रणाम किया और कहाकि हे हमजायह घोड़ा इसहाकनवी अलेहुस्सलामकी सवारी का है और इसका नाम सियाहकैतास है इसमें अनेक गुण हैं ईश्वर की आज्ञा से तेरे चढ़नेके निमित्त लायाहूं और ईश्वर की आज्ञा अनुसार तुझ को मैं भेंट करता हूं कोई बलवान तुझ को बसन कर सकेगा तेरा प्रताप सदैव प्रकाशित रहेगा और सबतेरे आधीन रहेंगे और सब के सबतेरी सेवा करेंगे यहजो पत्थर सामने ढेरसा लगा है इसको हटा कर पृथ्वीको खोद इसमें से एक संदूक़ नबियों के अस्त्रों का निकलेगा उसमें नाना प्रकार के अच्छे २ शस्त्र देख पड़ेंगे उसको अपने शरीर में बांधना समय पर उसके गुण देखना अमीर ने शीघ्र उस पत्थर को हटाया और बल इतना पाया कि जिसका भरोसान था पृथ्वीके खोदने में बड़ाबल कियाउसमें हज़रत होदका बख़्तर दाऊदका दास्तानायूसुफका मोजा सालेहके कमरबंद और कटार रुस्तमकी तलवार आदि उसमें से सबके शस्त्र निकाल कर देखा भाला और उन हथियारों और वस्त्रों को पहिन कर ईश्वर का नामलेके सियाह क़ैतास घोड़ेपर चढ़ा ॥

दोहा ॥

आया तुरग पुनीतजबतले जांघ सुकुमार । विदित भइंअंगुश्तरी नग शोभा सुखसार ।

और झालर पहिने हुये वह पुरुष दृष्टिसे जाता रहा और लवमात्र की देरीमें वह छिपगया लिखतेहैं कि वह झालरवाले घूंघुटकाढे हज़रत जबरील थे जो उससमय में अमीरके सहायकथे फिर ईश्वर जाने अमीर तो मक्केकी ओरचले अपने घरकी ओरसे पैरन हटाया अबअमर का समाचार सुनिये कि दशकोस तक अमीरके पीछे २ गिरता पड़ता चला आया और साथ न छोड़ा दौड़नेसे पांवन फेरा जब तलुये पावोंके बबूरोंके कांटे सेमसाखीके छाते होगये तोचलनसका और एक वृक्षके तले असाध्य होकर गिरपड़ा तबईश्वरकी रचनासे जबरीलउसके निकटपहुंचे और उसको भरोसा दिया और पृथ्वीसे उठाकर अपनी दया करके कहा किऐ अमरउठ हम परमेश्वरकी आज्ञासे तुझको वरदेताहूं कि तुमसे चलने में कोई आगे न जासकेगा यह कहकर अंतर ध्यान होगये अमर ने उनके कहने की परीक्षा ली देखा तो सचमुच पवन से अधिक गवन करता है तबईश्वरका धन्यवाद करकेअमीरके ढूढ़नेकोचला औरउसीओर जिधरअमीरको छोड़ाथा बढ़ा थोड़ीदूर गयाथा कि सामनेसे अमीर देख

पड़े दोनों ओरसे प्रेमसमेत कुशल प्रश्न हुई और मार्गके कठिनता को
बखानके पीछे अमर हथियार और घोड़ा देखकर आश्चर्यकरके अमीरसे
कहने लगा कि वह घोड़ा सौदागर का क्या किया और समझलावो कि
किसको मारकर यह घोड़ा और शस्त्र आदि छीन लिया अमीरने कहा
कि पराईजान मारनातेराकाम है यहक्या खराब बातकहता है मैंईश्वर
कीआज्ञासेहजरत जबरीलकाबरदिया हुआपायाहैऔरयहशस्त्रऔर वह
नबियोंकेपहिनेहुं और यहघोड़ा स्याहताजैसनामअसहाककी सवारीका
हैऔर नबियोंके सम्पूर्ण शस्त्रईश्वरने मुझकोदयाकिये हैं अमरबोला यह
तो मैं अबजानों कि जब आपका घोड़ामुझसेआगे निकलजावे और मेरा
पांवघोड़ेसेपछरजावे अमीरने अपनेचित्तमें बिचारा कियहक्या बकता है
इसको क्या होगया है मनुष्य कहीं घोड़ेके साथदौड़ सक्ता है और घोड़े
से आगे निकल जाय क्या ठीक है कहा कि अच्छा आइये अमरने कहा
किकुछबाजी लगालीजिये औरमेरामन संतुष्टकरदीजिये अमीरने कहा
किजोतेरीइच्छाहो वहहमसेबाजी लगाले अमरनेकहाकिजोमैंइस अश्वके
आगेनिकल जाऊंतो दसऊंट आपसेलुं और जोघोड़ा मुझसेआगे निकल
जावे तो मेरा पिताएक बर्षतक बेदाम तेरे बापके ऊंटोंका चरवाहा हो
अमीरने उसे अंगीर किया और घोड़ेकी लगाम पकड़ी अमर भी साथ
हुआ दसकोस तकगयेअमर और घोड़ेके पैरबराबर उठतेथे दोनोंवायु
से शीघ्रचले जातेथे अमीरअमरकी दौड़देखकर अतिआश्चर्य करनेलगा
औरउसकोतीरन्दाजसेसंदेह किया अमरने बिनयकी कि ऐअमीरमैंभी हज-
रतखिजरसे बरपाये हुयेहुं अबकुछ ख्वाजे अबदुल्मतलबका वृत्तान्त सुनिये
किजब सौदागरका घोड़ा अमीरको लेकर भागा और अमरउसकेपीछे
व्याकुल होकर चला वहसब समाचार ख्वाजेको पहुंचा वह सुनतेही
अचेतहोगया और अच्छे२अच्छे मनुष्योंको साथलेकर नगरकेबाहरनिक-
लाकिसामनेसे अमीर अस्त्रपहिने सजेसजाये स्याहकैताज घोड़ेपरचढ़ाम-
तापकेसमूहसहित औरअमरउसका शिकारबन्दपकड़ेचलेआते हैंयहदेख
करख्वाजेकाशोक और संदेहदूरहुआ और शरीरप्रफुल्लितहोगया और
ईश्वरकाधन्यवादकरने लगाअमीर ख्वाजेको देखकर घोड़ेसेउतरपड़ा और
दण्डवत् करके चरणोंपर मस्तक रक्खा ख्वाजेने अमीरको छातीसेलगा
या आंखोंमें आंसू भरलाया और प्रसन्न होकर अमीर को साथ लेकर
घरआया और बहुतकुछ अमीरपर उतारके पुण्यदानकिया और घोड़ा
और शस्त्रोंका समाचार पूछा अमीरने सबब्यौरा वर्णन किया ख्वाजे सुन
कर अति आनन्दित हुये और ईश्वर का भजन करने लगे अबमुक़बिल
वफ़ादारका वृत्तान्त सुनिये कि उसबुरुती मनुष्यका क्या हालहुआ कि
यह दोनों बरदानी होगये उस समय यह अपने मनमें सोचा कि तेरा
समय इनदोनों बरदानियों मेंनकटेगा क्योंकि इनदोनोंका चित्त बढ़ाहुवा

है तेरा इनमें कबपार होगा इससे चलकर नौशेरवांकी सेवा अंगीकार करूं शायद ईश्वरकी कृपासे वहां किसी अधिकार पर नियत कियाजाऊं जैसीभी भाग्य उदयहो और वहां प्रत्येककीप्रतिष्ठाबराबरहोती है यहचित्तमें विचारकर अकेलेचला चारपांचही कोस गयाहोगा कि मार्गमें थककर एक वृक्षके तले बैठरहा और चित्तमेंसोचा कि इसजीने से मरना भला है न तो कुछ खर्च है न सवारी यह सोचकर उसवृक्षपर चढ़गया और कमरबन्द का एक सिरा वृक्षकी डालीमें बांधा और एक सिरा अपनी गर्दन में फांसीलगाकर डाला और लटक कर हाथ पांव मारने लगा शरीरसे जीव निकलने परथाकि इतनेमें शाहखैबरीप्रकन दूसरे पंजत-न ने पहुंचकर हांकदी तब मुक़बिल पृथ्वीपर गिरपड़ा हजरतने उसको उठालिया और पांचतीर और एककमठादेकर कहाकि हमने तुझेबाणा-धरी की विद्यादी और इसमें तेरेसमान दूसरा कोई न होगा तब मु-क़बिलने बिनतीकी कि भलामहाराजमुझसेजोकोईपूछेगाकितू किसका वरदानीहै तबउससे मैंक्या कहूंगा हजरतने कहा कि कहियो अब्दुल्ला-उज्ञाजिबसे वरपायाहै मुक़बिल पांचोंतीर और धनुषलेकर अतिप्रसन्न तालेकलेकी ओरचला अब यहांका हालसुनिये किजबअमीर व अमर ने मुक़बिल को न देखा तो घबराकर अमर मुक़बिल की तलाश को चला जैसही नगरके बाहर गया तैसे मुक़बिल देखपड़ा तो अति प्रसन्नहोकर लिपटगया और हाथमें हाथ मिलाके अमीरके पास लेगया मुक़बिल ने अमीरके समीप जाकर तीर और धनुष आदि दिखलाये और वरदान होनेका समाचार सुनाया यह सुनकर अमीर बहुत प्रसन्न हुआ और सब मिलकर आनन्द समेत रहने लगे ॥

कालेना अमीरका और मुसलमानकरना यमनके बादशाह का

अब लिखनेवाला योंवर्णनकरताहै किजब सातवांवर्ष अमीरको लगा तो अमीर मुक़बिल और अमर समेत बाजारकीओर सैरकरनेके लिये गये तो देखा कि यमन महाराजा के सेनापति तहसील करने केलिये आगयेहैं दूकानदारों से करलेते हैं जिसके पास कुछदेने को न था वह वादाकरताहै परन्तु वेलोग नहींमानते मारपीट करते हैं अमीरनेअ-मरसे कहा कि देखो यहगुल कहांहोता है अमरने कहा कि यमन के नौकर करलेतेहैं और मारपीट करतेहैं अमीरको दयाआई तो अमरसे कहा कि इनको मनाकरदो कि तङ्ग न करें अमर वहांगया पर इसकी वहांकौनसुनताहै फिरअमीर आपवहांगये और अमरसे कहाकि दूका-नदारों को मनाकरदो कि कोई किसीको कुछ न देवे और जोकुछ सि-पाहियों ने तहसील कियाहै सो भी छीनलेवें यह आज्ञापातेही मुक़-बिल और अमर उनको रोकनेलगे उन्होंने लड़के समझकर कुछनमाना तब अमीरने चारपांच सिपाहियों पर आपक्रोध करके किसीका हाथ

तोड़ा और किसीका पांव और किसीका शिर फोड़ा उनलोगों ने भाग कर सुहेलयमनी के डेरे में गये और सब समाचार वर्णन किया किएक लड़का हमजाना जो पहिलेतो खजाना तहसीलनेसे रोका जबनमाना तब दो लड़कों समेत हमको मारकर भगा दिया और जो कुछ खजाना तहसील कियाथा वह सब हमारा छीनलिया यहकहरहेथे कि अमीर सिपाह कैतास पर चढ़े दूरसे दृष्टिपड़े और मुक़बिल व अमर दायें बायें शिकारबन्द पकड़ेहुये बराबर चलेआते हैं जब निकट आये तब सुहेल-यमनी डेरेमें से निकल आया और अमीरकी ओर देखकर कहने लगा कि ऐ लड़के तेराघोड़ा और हथियार मुझे अच्छे मालूमहुये वाके शीघ्र आगे धर मैं तेरा अपराध क्षमाकरूंगा नहीं तो अपनेकिये का फलपा-वेगा यहसुनकर अमीर बहुत खिलखिलाकर हंसा और कहनेलगाकि जो तेरा जी प्यारा है तो पहिले मुझेझुककर सलाम कर फिरपीछेबातें करना और मेरी सेवा अङ्गीकार कर नहीं तो पछितावेगा सुहेलनेक-हा कि इसलड़के को क्याहोगया है कि छोटे मुंहसे बड़ीबात कहता है इसको घोड़ेपरसे उतारलोऔर सबहथियार छीनलो साथियोंने उसकी आज्ञानुसारअमीरकोचारोंओरसेघेरलियाऔरअमीरकेमारनेकामनोर्थ किया अमीरने किसीको तीरोंसे किसीको तलवारसे किसीको घोड़ेकी टापोंसे रौंदवाकर मारडाला और मुक़बिल भीतीर मारनेलगा और जो दो तीनमनुष्य आगेपीछे हुये एकहीतीरसे पृथ्वीमें सोरहे सुहेलनेदेखा कि कई हजार सेना मारीगई तब आप अमीरहमजाके सामने आया अमीरनेउसकाकमरबन्दपकड़करके शिरसेऊंचाकियाऔरघोड़ेपरसेउठा लिया इच्छाकी कि मारें कि उसने रक्षा मांगी दीनता से जीव बचाया अमीरने धीरेसे पृथ्वीपर छोड़दिया सुहेलयमनी उसीसमय सहस्रवीरों समेत मुसल्मान हुआ अमीरने उसेछातीसे लगाया और अपनेबराबर बैठालिया औरउसकेऊपर कृपाकी सबयोद्धाऔर सुहेलयमनीऔर अमर व मुक़बिल सब अमीरके आधीन हुये और सेवकाई अङ्गीकार की और अमीर को सबोंने भेंटदी और सबोंने उसके सम्मुख नम्रताकी अमीर ने मुसकरा कर उनको अधिकार के अनुसार खिलतेंदीं और नगर में प-हुंचकर पहिले काबे के दर्शन किये फिर अबदुल्मुतलब के निकट आकर सुहेलयमनी का हाल वर्णनकिया ख्वाजेने कहा यद्यपि मुझे इसबात के सुननेसे अतिआनन्दहुआ कि ईश्वरने मुझेऐसादिन तो दिखलाया पर नगरके लोग इसबातसे डाहकरेंगे और शाहयमन के इससमय चालीस हजार सवार और लाखोंपियादे हैं और कई बादशाह उसके आधीन हैं ऐसा नहीं कि तुमपर सेनासाज के चढ़आवे जिससे सबमक्के के लोग घबरा जावें अमीरने कहा कि आपका आशीर्वाद और ईश्वरकी कृपा चाहिये वह इधर न आनेपावेगा मैं खुद वहांजाकर उसेपराजित क-

रुंगा अन्तको दो दिवस के पीछे अमीर मुक्तबिल और असर हज़ार सवारों समेत यमन की ओर चला जब सब लोग भेजने के हेत नगरके बाहर तक आये बिदा के समय किसी ने आशीर्बाद पढ़ा और किसीने यंच बांधा ख़ाजे ने भी गले लगा कर ईश्वर को सौंप दिया और कुछ उपदेशकी बातें कहीं निदान अमीर अपने मनोर्थके मार्ग में पांव रक्खा दूसरी मंजिल के मार्ग के बीचमेंसेना से अलग होकर अमीर असर से बातें करते हुये चले जाते थे इतने कालमें एक मनुष्य दशबारह वर्ष की अवस्था का यतीकासा भेष बनाये हुये शोकग्रस्त बैठा है अमीर को उसके ऊपर दया आई और उसकी ओर घोड़ा बढ़ाया कि ऐसा जवान-फकीर होजावे अमीर सलाम करके हाल पूछने लगा उसनेकुछ उत्तर नदिया तबअधिक सताया अमीरके आगे उसका कुछहो न चला चित्त में विचारा कि बिना भेदकहे यह कभी न मानेगा और दिलका हाल इसे अवश्य कहना होगा॥

दोहा॥

देखामाली क्यों करे उम मबारकी ओर। जतो रहा शरीरते घेरकहू को डोर॥

अमीरके पूछनेके आगे कुछनचलातो एक हाय मारकरयह कहने लगा कि ऐभाई मुझे वह दुःख है जिसको संसार में दवा नहीं है॥

सोरठा॥

जोन शून है मोहिं सुखविहीन देखत जगत। नहिं अराममें होय इशाजो औषधि करै।

चौपाई॥

नेह मध्य कोइ होय न ईशा। स्वास जाय आवे तन खीशा॥
बिनग मोहनी रूप न व्यापै। खोट दाम युसुफहि न लापै॥
नयन जोति नहिं रहै शरीरा। कर्म धर्म मब चले अधीरा॥
नेह बताशा जग कर लयऊ। नष्ट होय पुनि २ मिट गयऊ॥
सरवर मध्य बुन्द यक जाई। बेगजन्त तेहि खेह उड़ाई॥
नमफटि परै होय अस सङ्गा। गिर पर परै चूर ह्वै अङ्गा॥
सदा शोक बस याते रहई। मीठा प्रथम कटू पुनि सहई॥
तनकर भस्म बिरह कर छारा। जिमि पारा पावक बिचडारा॥
सुधा सींच पै जियै मरैना। बारि परै पुनि तेज हरैना॥
ईशहोय जनि नेह विकारा। दारुण दुखत बहुरि जगजारा॥
रहै शोकबस सदा शरीरा। जो जगलीन्ह नेहकर बीरा॥
बहुधाखोज मध्यमिट गयऊ। बहुत न खीस शीस जगलयऊ॥
अस कठोर जग और न दूजा। करै नाश तब लेवै पूजा॥
परे फरहाद कठिन यहिंमाहीं। भयो नष्टकछु वर्णि न जाहीं॥
लुटे समूह लाख संसारा। भये बहुत जरिके पुनि छारा॥
नेह मेह जापर वरषाहीं। नयनन नदी बहै जगमाहीं॥

लाजहीन अतिदीन मलीना । शोक मध्य बूड़त ह्वै दीना ॥
तनमन सुमन सरिस होखारा । व्यापै अङ्ग मध्य असधारा ॥
बूड़ेउत हि खोज नहिं मिलेऊ । मोती सीप मध्य जन पिलेऊ ॥
सरिस पतंग अङ्ग तपि गयऊ । समा शरीर सकल गलि गयऊ ॥
चालढाल जनि दीखकरै जग । नष्ट त्यागि पुनिगहै सुमतिमग ॥
नागर रूप वेष जन करई । जेहि बस ज्ञान मान सब टरई ॥
स्वप्न बीच भ्रम चहै न कोई । बांकी चाल ढाल चहु होई ॥
बिपति परैजोचित भ्रमचहई । लाजहीन मुख नहिं जगलहई ॥
सौंह देखि पुनि दुख जग होई । करै ममान होय अस कोई ॥
नेह न करै मान मम बाता । द्रूबजाय वर नाशै गाता ॥

अमीर ने कहा कि मृत्यु को छोड़ और तो ऐसा नहीं है कि जिसकी औषधि न हो उसने अमीर की कृपा देखकर वर्णन किया ॥

दोहा ॥

मनमलीन तनछीण है दुख कछु कहा नजाय । ममनलाल सम दागहै भ्रमक्रम भ्रम अकुलाय ॥

पश्चिम देशमें अति सुशोभित मेरे पितामह का स्थानहै मैं इस जंगल के बीच संकट में पड़ा हूं और सुलतान बख्श मेरा नामहै पश्चिम के महाराज का पुत्र यमन के महाराज की पुत्री से नेह लगाया है उसके नेह ने मुझे इस भेषमें पहुंचाया है और मान प्रतिष्ठा का विचार छोड़ाया है कुटुम्ब और मित्रोंसे अलग कराया है ॥

दोहा ॥

प्रीति बाण जाके लगे थिर न रहैं यकठौर । भ्रमत रहत संसारमें छिन प्रति औरकीऔर ॥

और उसकी बादशोपरी मुझसे नहीं होसक्ती है इससे मैं बनमें निकल आया और फ़क़ीरी अङ्गीकार की है अमीर ने कहा कि यह बातकुछ कठिन नहीं है वह कौनसी बात है कि जो उपाय करने से न हो सकै परन्तु मनुष्य को उचित है कि कभी किसी वस्तु या काम के करने में अधीर्य न हो और सदा चित्तको प्रसन्न रक्खै ॥

दोहा ॥

मानुष को यह चाहिये बेधीरज नहिं होय । कठिन नहीं कोइ बस्तुहै सहज नहोवे सोय ॥

ईश्वर की कृपा से धीर्यको ग्रहण कर और शोक सन्देह अधीर्य को परित्याग कर आप यहां से चलें मुझ पर दया करें इस भेष को त्याग करके मेरे पास रहिये ईश्वर चाहैगा तो मैं शीघ्र इसकार्य को करूंगा आसारूपी मोती से शीघ्र दामन भरूंगा अमीरने उस दिन उसीस्थान में डेरा किया और सुलतानबख्श मग़रिबीको मुसल्मान किया और सेवकों कोआज्ञादी किराजपुत्रके फ़क़ीरी बस्त्रउतारकर स्नानकरनेके पीछे अच्छी भांति से उत्तम२ वस्त्र पहिना दो और तम्बू व अस्तबल अर्थात् घोड़ सार आदि जोउचित जाना उसके निमित्त एकांत बतलाया और सदैव उसके

आदरके हेत कृपा दृष्टि रक्खी शाहजादा अमीर की दया से उन्हीं के निकट आनन्दसे रहनेलगा फिरकई मंजिलके पीछे मार्ग के बीचमें एक युवा अवस्थाके मनुष्यको देखाकि शेरकीखालकी टोपी और अङ्गाधारण किये बैठा है और एक बाघ उसके निकट बंधा है उसके निकट जाकर उस्से पूछा कि ऐजवान तू कौनहै और नाम व निशान तेरा क्याहै और इस बाघको तूने क्यों बांधा है वह बोला कि मैं ठग लुटेरा हूं इसकार्य में बड़ा प्रवीणहूं मेरानाम तैमूरविनहैरां है यही मैदान मेरा घरहै जो कोई इधर से निकलता है इस सिंहको उसपर छोड़ देता हूं जब वह उसे मारडालता है तब उसके पासकी वस्तु सब लेलेताहूं और उसका मांस इसे खिलाता हूं और कपड़ा आदि बेंचकर मैं खाता हूं अमीरने कहा बे अपराधियों के मारने से हाथ उठा नहीं तो अन्तमें अति कष्ट पाकर नर्कमें बासकरैगाऔर एकदिन इसकाफल पावेगा उसनेकहा कि ऐमनुष्य मुझको तेरेरूप पर दया आती है ऐसी बातें क्यों कर रहा है अपनी जान नहीं बचाता है और जो तुझे जानप्यारी होवे तो इसी में भलाईहै कि अपना घोड़ा और हथियार मुझे दे नहीतो अच्छा नहोगा इसे देकर सीधा अपना मार्गले अमीर ने कहा कि यह क्या निर्बुद्धिता कीबातकही क्यातेरी मृत्युनो नहींआईहै अपनेसिंहको छोड़कर ईश्वरकी रचनादेखले उसने सुनतेही बाघकी डोरी पट्टीसे खोलदी और अमीर की ओर सैनदी बाघ अमीर के सन्मुख हुआ और एक झपट अमीरके ऊपर की अमीर ने भालासे उठाकर उसी मनुष्य पर फेंकदिया उसने अमीरका बल देख अति आश्चर्य किया और तलवार लेकर अमीर पर धावा किया अमीर ने भाला की डाड़ी से उसे गिरा दिया और घोड़े परसेउतर के उसकी गर्दनपकड़के उठा लिया चाहते थे किउसे गर्दन मरोड़केदेमारें इतनेमें उसने जीवदानमांगा अमीरने उसेछोड़दियाउसने ठगीसेसपथ किया अमीरने उसे मुसलमान किया और अपनी सेना का झंडाबरदार किया और अपनीकृपा दृष्टिसे उसपर अतिदयाकी चलतेर जबयमनकी राजधानीपांचकोसरहगई अमीरनेएकसुन्दर मनोहरस्थान देखकर आज्ञाकी किआज यहांबास करो कुछदिन आराम करके सेना का प्रबन्धहो उसकीआज्ञानुसार ऊटोंपरसे तम्बूउतरने और प्रति स्थान पर गड़नेलगे अब यमनके बादशाहका समाचार सुनियेकि जोसुहेलनाम यमनी के सेनाकेलोग भागकर यमनको गयेथे उन्होंने अमीर कीलड़ाई और सुहेलयमनीके मुसल्मान होनेका समाचार बादशाहको सुनायाउसी समयशाहयमन ने नैमायनामी अपनेपुत्र और दशसहस्र सवार किलेमें छोड़करआप तीससहस्र सवारसे मक्केकीओरचला परन्तु वह और मार्ग से गया और अमीरकी सेना दूसरेमार्ग होकर आई अमीरने प्रथम एक पत्र नैमायके नामलिखकरभेजा और यहभी संदेशाउसीकेहाथ कहला

भेजा कि मैं ज़मायतानदार के साथ विवाह किया चाहता हूं उसकी बानी को सुझेबता मैं वहसबपूरी करूंगा और ज़माय तानदारको अपने साथ लेजाऊंगा नेमायने यह समाचार अपनी बहिनको सुनाया उसने कहाकि अच्छा यह कहकर मैदानके बनानेकी आज्ञाकी और कहाकि प्रात समय चौगानबाजी में तले करके उसका सिर क़िले के कंगूरे पर चढ़ाऊंगी उसके बल और सिपाहगरी का समाचार बतादूंगी सबमर्दी-नगी भुलादूंगी इस फिरजाने का स्वाद चखादूंगी यह सुनकर नेमाय ने उत्तर में लिखाकि बहुत अच्छा हमको आपका कहना सब भांति से स्वीकार है कल चौगान बाजी होगी प्रत्येक मनुष्य की बाखावरी देखी जायगी जो आप मैदानके चौक से जीतजावेंगे तो ज़मायतानदार को पावेंगे नहीं तो आपका शिरकाटकर क़िलेके कंगूरेपर चढ़ाया जावेगा दोनोंओर समरहोगा अमीर चौगानबाजीसुनकर अतिप्रसन्नहुआ और बड़े२ योद्धोंका चित्त बढ़ानेलगा और राग नाचका सामान करानेलगा और आज्ञादी कि सबसेनामें तबला नगारा व राग रंगहोकर रातको जागरण करके व्यतीतकरैं और ईश्वरके चरणोंमें ध्यानकरैं जब सूर्य पूर्व स्थानमें प्रकाशितहुआ और तमनष्टहोकर सूर्य्यका तेजझलका उससमय नयमाय सेनालेकर चौगानमें निकला और इधरभी बलवान् अस्त्रसाज कमर बांध सावधानहुये अमीर भी अस्त्र खड्ग व भाला वा धनुषबाण व वस्त्रआदि धारण करके सियाहक़ैतास पर सवारहुआ और हीरोंके बेटे सम्हरा तौकने भी झंडा अमीरहमजापर लगाया सुलतांबख्त मगरबीभी दहिनीओर अमीरके सबधजबनाके आया और बायें ओर सुहेलयमनी भी हथियार बांधके आया और अमर व मुक़ाबिल घोड़ेकेआगे धनुषबाण धारणकर तलवार आदि बांधि के घोड़े पर चढ़के नचाते कुदाते चले जाते सेनाके लोगों का चित्त बढ़ाते आगे लहलहाते आनन्द में समाते सुखपाते बलखाते बढ़ेजातेथे और मुक़ाबिल वफ़ादारको उसदिन अमीर ने सेनाके आगेकिया और वही हजार सवारों का रिसाला जो सुहेल यमनीके साथ मुसलमानहुआ था मुक़ाबिलके साथकरदिया अमरने इस उपायसे सेनाका प्रबन्धकिया कि बराबर पंक्ति २ खड़ाकिया जिसे दूसरी ओरके लोग देखकर आश्चर्यकरते पांच छ: सहस्र सिपाही का अमीर की सेना पर औरों का गुमान हुआ दोनों ओर से जब पंक्ति बन चुकीं लड़ाई करनेकी जब बारीआई अमीर ज़मायतानदारकी इच्छामें नय-माय मंजिरशाहके पुत्रके आगेखड़ेथे और शेरबबर कीभांतिपुकारतेहुये ईश्वरसेवर मांगरहेथे कि एक जवान घूंघटहरे वस्त्रका धारणकिये हुये सिरसे पांव तक घोड़े समेत जड़ाऊ सजे हुये ढाल तलवार कटार बाण सरासन भालाआदि अस्त्रकंधे पै संभालेगेंद हाथमेंलिये घोड़ेको चलाते हुये चलते २ मैदानमें आया और अमीरकी ओर देखकर हांकदी कि

हुमायताजदारके चाहनेवाला कौनहै मेरे सामनेआवे यहीगेंद है यही मैदान है अपनी सीखीहुई विद्या दिखलावे अमीर हांकसुनतेही घोड़े को बिजली की भांति चमकाकर मैदान में आये कावाईंड पर लगाये कभी उड़ाते कभी जमाते उस अच्छे चालाक घोड़े को लड़ाई में लाये और कहाकि बलवान् सावधानहो यही स्थानयही चौगान यही गेंदहै उसकी चालाकी देखियेकि गेंदको मैदानमेंलाकर डालदियाऔर उस हुमायुमेने घोड़ेको जांघसे गुदगुदाकर गेंदको चौगानसे लिया चाहती थीकि गेंदको लेजावेऔर अपनी चालाकी औरतीव्रता दिखावेकि अमीर ने असरके हाथसे चौगानलेकर घोड़ेको आगे ठहराया औरउसे बिल्लीके समान आसनसे दबाया और चौगानको संभालकर गेंद पर मारा और ईश्वरदत्त बलकी शोभादिखलाई उसहोने देखाकि हाथसे बाजीजातीहै और सबभांतिका गुणमिट्टीमें मिलाजाता है तो झटपट घूंघट उलटकर मुखका प्रकाश विदितकिया उसकामुंह हमजाने आंखोंसे देखा और सब चौगानमें प्रकाश छा गया ॥

चौपाई ॥

घूंघट उलट दीन्ह जेहिकाला । सूर्योदय जनु परम बिशाला ॥
हमज़ा दृष्टि कीन्ह जब वाही । अति आश्चर्य कीन्ह मनमाही ॥

अमीर उसे देख चित्रलिखेसे होगयेऔर ईश्वरकी रचनादेखकर अति आश्चर्यवान हुये हुमायताजदारने फुरसत पाकर घोड़े को झिझकारा बल्कि अपनी जानमें गेंद लेजानेमें कलीनकी थी परन्तु अमीरने चित्तको संभालकर ईश्वर का ध्यानकर अपनाआसन सावधानकिया और घोड़े को दौड़ाकर कहाकि हरातेरा छलसमझगये योंहीं तू गेंदोंको मैदानसे लेजातीहै और लोगोंको जीतकर उनके सिर कंगूरों पर लटकातीहै किसी से काम न पड़ाहोगा देखमैं मैदान से गेंदको लेचला ईश्वरकी कृपा से मैदानमेरे हाथरहा यह कहकर गेंदको मैदानसे लेगये यद्यपिहुमाय-ताजदारने अपनी चतुरता प्रकटकी तबभी अमीरसे कबबाजी पासकी थी अमीर गेंदको लेजाकर उसकेओर देखकरकहने लगाकि ऐ हुमाय-ताजदार अबक्या कहतीहै कुछऔर भी हौसिलाबाक़ीहै उसनेकहाकि एकबारऔर इसकी परीक्षाकिया चाहिये फिर लड़ाई का सामान क-रके अपना २ गुण दिखाया चाहिये अमीर उसके कहने के अनुसार गेंदको चौगान में फेंकदिया और तेजी करके फिर भी बाजी जीत ली हुमायताजदारने कहाकि बाजी हाथसेगई सहस्रों में प्रतिष्ठा भंग हो-गई चाहाकि घोड़ेको एड़ीलगाकर अपने भाई नेमायतको पहुंचे और मैदानछोड़कर अपनी सेनामें जामिले अमीरने घोड़ेको चलाकरहुमाय-ताजदारका कमरबन्दपकड़के घोड़े से अलगकियाऔर असरकीओर गेंद साफेंकदिया असरने कमरसे हाथ बांधकर अपनी सेना की ओर मुंह

किया ऊमाय ने अपनी सेना से कहाकि यारो दूसने गज़बकिया अति शीघ्र मैदान मारलिया किसी भांति यह जाने न पावें जिसमें दूसुल्तरक़-जावें ऊमायताजदार को लिये सबको बेइज्ज़तकिये जाता है उस समय दशसहस्र सवार अस्त्रपहिनेहुये खड़े थे सबके सबएकचित्तहोकर अपना २ वारकरना शुरूकिया अमीरकी सेनाभी जिधरबढ़ी पंक्तिकी पंक्ति साफ़ करदिया नैमाय की सेना काई की भांति सब फटगई समर का स्थान लाशों से पट गया ॥

दोहा ॥

आये थे खल गर्भ करि बोल बोलि अधिकाइ । डालदिये हथियार सब खोलि २ अकुलाइ ॥

ग़ाज़ीने सबके हृदयमें संभारके बाणलगाये अच्छी भांति जिस सरदार के शिर पर तौल के तलवार लगाई वह जीन तक उतर आई जिसके हमायलका हाथमाराशिर और गर्दनआधीछातीसे अलगहुआजिसकी कमरपर हाथ पड़ासाफ़ दो टुकड़े होगये उससमय यमनके महाराजके पुत्र नैमायने आनकर चाहाकि एक तलवार अमीर के शिरपर लगावे और दुष्टताका बलदिखावेकि अमीरनेउसके वारकोढालपर रोककरऔर उसके कमर बन्द में हाथ डाल के जीन से साफ़ उठा लिया और इद्दा चिड़ियाकी भांति अमीरहमज़ाने शाहज़ादेने मायको दाबकर उमरके हवाले किया बाकी लोग जितनेथे बहुधा अचेतहोकर भागे और बहुत से तलवारके कौर होकर यमपुर में पहुंचे अमीर फ़ौज का लूट माल करके बिजय प्राप्त करके अपनी सेना में पहुंचा जीत के बाजे बजने लगे खुशी और आनन्द होने लगा जब रात को खुशी की सभा सजी गई अमीर ने नैमाय को बुलाया कहाकि कह अबक्या कहताहै चित्तमें क्या इच्छाहै उसने विनयकी कि अगर कोई मेरे कुटुम्बमें होता तो उसकी क्या मजालथी किमेरी सेनाका सामनाकरता और जान न खोतापरन्तु ईश्वर जाने कि आप कैसे पराक्रमी मनुष्य हैं सब प्रकार से ईश्वर के बरदानिक हो क्या कहूं मुसल्मान होता हूं अमीरने समझाकर अपनी छातीसे लगाया और अपनी बराबर उसके निमित्त बिछौना बिछवाय और अति शिष्टाचार किया फिरअमर मंगलगाने लगा जबसभा उठगई अमीर ने नैमाय और सबिका ऊमाय ताजदारको कि उसने भी मुस-ल्मानी दीन अङ्गीकारकिया था ख़िलअत उचित कृपा करके उनको रवानाकिया और आप सोनेके हेत तम्बूमें गया प्रातःकाल नय मायने अपनी सेना को बुला के मुसल्मान होनेको न्योता किया सबोंने दीनता से शिर झुकादियां औरसब मुसल्मान होते गये जितने सेनामें मुखिया थे सबके सबमुसल्मानी मतमेंआयेऔर उनको लाकर अमीरकी मुलाक़ात करवाईऔर भेंटदिलाई अमीरने प्रत्येकको पारितोषिक कृपाकिया जब यह समाचार यमनके बादशाह मंजरशाह को पहुंचे कि चौगान बाज़ी

में हमजा गेंदबाजी हुमाय ताजदार से लेगया और उसकी प्रतिष्ठाके अनुसार बड़ाई की और नयमाय को लड़ाई में पकड़ के सेना समेत मुसल्मान किया सुनतेही हृदय में अतिक्रोधआया और मक्केका मनोर्थ छोड़के उलटा अपने देशको फिरा औ गढ़ीमें पहुंचतेही समर के हेत दुन्दुभी बजवाई अमीरने यह समाचार पाकर अपनी सेनामें भी नगाराबाजने का हुक्मकिया और सेनाका प्रबन्ध करनेलगे सूर्यकी किरणफूटतेही दोनों ओर की सेना समर भूमिमें युद्ध करने लगी बलवान् शेर समान आस पास में घिर आये और बड़े २ भट योद्धा जान देने और लड़ने भिड़ने पर फेंट बांधी मंजरशाह ने अपना घोड़ा मैदान में निकालकर हांकदी कि अमीर हमजा सेना पति किसका नाम है और कहां है देखूं तो उसकी सूरत कैसी है किसभांति का मनुष्य है मेरेसन्मुख आकर अपना बल प्रताप देखावें ॥

दोहा ॥

जो कोई फ़ौलाद में निज पंजाकरदेइ । सो दुखिया यहि बांहसों अति कलेश करिलेइ ॥

कभी किसी के साथ नहीं पड़ा किसी युद्ध करनेवाले से सामनानहीं हुआ अब अपनी जानदेना चाहता है यह सुनतेही उसके सामनेआया अमीर ने कहा कि यह क्या बक २ कर रहाहै क्यों कालशिरपरचढ़ा है ईश्वर चाहैगा तो एकबारमें तेरा कामहुआ जाता है पलमात्रमें तुझे मुसल्मान करता हूं प्रथम तू अपना गुण दिखा और चित्तकी हौसचित्तमें मतरख उसने भालाउठाया अमीरनेघोड़ेको दबायाओ उसके समीपगया और तेजीकरके भाला उसका छीनलिया और डंडी तोड़कर पीछेफेंकदिया उसने खड्गईंची अमीरउसकावार बचागया औरकमरमें हाथडाल कर घोड़ेपरसे गिराकर तलवार छीनली और चाहतेथेकि पृथ्वीपरपटकें कि उसने रक्षा मांगी अमीर ने धीरेसे उसे जमीन पर छोड़दिया वह भीउसीसमय मुसल्मानहुआ फिरउसकोअपने तम्बू में लाकर अतिसिष्टाचारकिया मंजरशाहको औरउसके खेहियोंको जो सेनापतिथे बड़े२पारितोषिकदिये और उनके दरजाबढ़ाये मंजरशाहने एक मासतक अमीरको सिष्टाचार से न्योताकिया और सब प्रकारसे ताबेदारी और आधीनता की और उसीदिन सामान विवाहका अपने अधिकारके अनुसार करने लगा और अमीरकी आज्ञानुसार सुलतानबख़्त मग़रबी के साथ हुमायताजदार का विवाह करनेको उद्यत हुआ सुलतानबख़्त ने विनयकी कि हुमायताजदार मेरीस्त्री होचुकी किन्तु ईश्वरचाहैगा तो गठिबन्धन उसदिन करूंगा जिसदिन आपका विवाह होगा तब तक हुमय ताजदार घरमें रहै बाप के यहां कुछ दिन सैर करे अमीर ने रीति के अनुसार उसका मनोर्थ पूर्णकिया और मंगलाचार के पीछे अमीर ने मंजरशाह से कहा कि अब मैं यहांसे कूच करूंगाऔर अपने घरकीओर जाऊंगा

कि मेरी माता सबोक्त वसन्देह मय होगी संजरशाह ने विनयकी कि
मैंभी आपके साथ चलताहूं कायेके दर्शनकरूंगा और वहांख्वाजेसाहब
के भी दर्शपर्श चाहता हूं यह कह देशका प्रबन्ध अपने मंत्री पर छोड़ा
तीस सहस्र सवार नैमाय सरोत लेकर अजीर के साथ चला ॥

हुस्साम अल्लम खैबरीके पुत्रका बड़ाहोना और मदायन देश मे का लेना ॥

जब हुस्साम बारहवर्षकाहुआऔर शस्त्रसम्हाला औरअतिवेगप्रतापसे
घर से बाहर पैर निकाला बाजार में हल्ला गुल सुन कर पूछा कि यह
हल्ला कैसा होताहै लोगोंने कहा कि तहसीलदार नौशेरवां की ओर
सेकरतहसीलकरतेहैं जोमनुष्य शीघ्रनहींदेनेमें ढीलकरताहै उसको अति
कष्ट देते हैं हुस्सामको बुरा मालूम हुआ तो कुछ लोगों को पकड़वा के
नाक व कान काट कर शहर से बाहर किया और हुक्मदिया कि कोई
एक कौड़ी किसी को न देवे जोकर नियत हुआहै वह हमारी सर्कार
में भेजाजावे और सेनाके इकट्ठाकरनेमेंअतिपरिश्रमकरनेलगा यहांतक
कि थोड़ेही कालमें एक बड़ीभारी सेना जमाकरली और मदायन की
ओरकूचकिया जब इतिहासलेखकोंने यहसमाचारलिखा औरबादशाहके
कानतकपहुंचाकिहुस्साम अतिबलवप्रतापकेसाथगर्वकरकेऔर बड़ीसेना
साथलेकरमदायनकामार्गलियाहै हुस्साम अल्लमका पुत्रखैबरी बलवान
हुआ बादशाह ने बुजुर्गमेहर से सलाह चाही बुजुर्गमेहरने सलाह
दी जोहजूर आपही उसकेसाथ सामना करेंगे तो मेरे निकट यहबात
अनुचितहै क्योंकि जो इस पर विजय भी हुई तो कुछ नाम न होगा
और जो कदापि औरही सूरत हुई तो अच्छा न होगा वैरियोंकोबात
करने का स्थान होजायगा कि सप्तद्वीपके बादशाह को एक छोटे मनुष्य
ने जीत लिया फिर प्रत्येक को आप से सामना करने का हौसिला हो
जायगा इससे मेरेनिकट यही शुभ है कि उसके आने के पहलेही हुजूर
शिकार खेलनेको जावें और मदायनमें किसीसेनापति को मुकर्रर करदें
जिससमय वहदुष्टआवेउसको पराजयकरैजिससे छोटे बड़े काहौसिलाटू-
टजावेऔरआधीनताके सिवाय शिर न उठावे बादशाहको बुजुर्गमेहर
की यह सलाह प्रसन्नहुई और उसके शुभ विचार पर अतिप्रशंसा की
आप आखेटकीओरगयाऔर शिकार खेलना अङ्गीकारकियाऔरअन्तर-
फीलगोश जो मल्ल प्रसिद्ध था पचास हजार सवारसे मदायन की रक्षा
और हुस्साम को दण्ड देनेकेहेत मुकर्रर किया आठदश दिवसब्यतीत
हुये थे कि हुस्साम खैबरी ने चालीस सहस्र सवार से आकर गढ़ी को
घेर लिया और प्रजाको सताने लगा अन्तरफीलगोश ने भी गोली तीर
तोप आदि से किसी को खांवां तक न आने दिया एक दिवस अन्तर
फीलगोश ने यह चित्त में विचारा कि हुस्साम बहुत दिवस से नगर
घेरे पड़ा है और मैं गढ़ी में बन्द हूं हुस्सामऐसा कहां का वीर है कि

जिसे मैं दबूं नगर के बाहर निकल कर सामना करूं और पल मात्र में मारके पराजित करूं और संसारमें नेकनाम और वीरकहलाऊंगा और बादशाह से जागीर और उहदा पाऊंगा ॥

दोहा ॥

रुस्तम नहीं संसार में रहा न पुनि बहराम। एक रह्यो आकाशतर ईश्वर को जगनाम ॥

यह समझ के पांच सहस्र मनुष्य सवार लेकर नगरसे बाहर निकला ऊश्याम उसे देख कर ठट्ठा मार कर हंसा और बोला कि इसके शिर पर मृत्यु सवारहै कि जो यह मेरेसम्मुख आया है गैड़को उसके सामने लाकर कहने लगा कि क्या मनोर्थ है क्यों अपनी और अपनी सेना का जी खोनेकेहेत आयाहै वह बोला कि अरे खल सदैवका पीढ़ीदरपीढ़ी का तू सेवक होकर तिसपर चढ़आया है इससंसार असार में थोड़ीसी उमर पर दुष्टता अङ्गीकार की है तू यह नहीं जानता है कि सप्तद्वीप के बादशाह का एकछोटा टहलुआ तुझको दण्डदेसका है और यहसब सामान जगसाचमें धूरमें मिला देसक्ताहै ऊश्याम ने कहा क्या विक्षिप्त हुआ है इतना नहीं जानताहै कि बादशाही के कामोंमें कौन किसका मालिक है और कौन किसके आधीन होता है और प्रजा कहलाताहै जो मनुष्य तलवार मारे उसी के नाम से सिक्का चलताहै मैं तलवारके बलसे तेरेबादशाहसे करलूंगा और सबदेशऔरकोषको बहुतशीघ्र अपने वश में कर लूंगा ऊश्याम का यह कहना था कि अन्तर ने तोल कर एक भाला उसकी छाती पर मारा भालेने अपनी नोक पीठ से बाहर को ऊश्याम ने यद्यपि ऐसा घाव खाया परन्तु अन्तरको तलवार से दो टुकड़े किये और उसकी सेना पर जागिरासेनाबिना सेनापतिकी नगर की ओर भागी ऊश्याम सेना समेत मदायन नगर में पहुंचा और सब नगर को नष्ट और बरबादकर दिया औरसत्तर सहस्र मनुष्य मारे और नगरके नाकोंपर अपने सिपाही नियत किये और बादशाहतका साज ताज और तख़्त समेत लेकर अपने डेरेपर लौट आयाऔर रात आनन्द समेत व्यतीतकीऔरसुबहकोसरदार समेत खैबरकी ओरचलाऔर कई दिनके पीछे एक दो राहैं मिलीं कि जिसमें एकमार्ग काबेको जाताथा और दूसरी खैबर जाने की थी-साथियों ने कहा यह लड़ाई दुनिया के नाम के लिये आप लड़े और विजय प्राप्त की एकलड़ाई पुण्यके हेतभी चल कर ईश्वरके घरमें कीजिये और मुसल्मानोंके धर्म स्थानको मिटा-इये ऊश्याम पर जो दुष्टता सवार हुई यह सलाह उनको प्रसन्न आई औरकाबेकी ओरचला यह वृत्तान्त मक्कामें विदितहुआ कि ऊश्याम खैबरीमदायन को जीत करके काबेके खराब करने के हेत आता है और बहुतसीसेना साथ लिये है जिसने सुना वहबेतके समान कांपगया और डरके मारे अचेत होगया उसीदिन हमजाभी विजय प्राप्त करके सेना

समेत मक्के में पहुंचा और काबेका दर्शनकरके अपनेबापको दण्डवत की और चरणोंपर गिरपड़ा ख्वाजेअबदुल्मतलब ने अमीर शिर अपने चरणों परसे उठाया और अति स्नेहसे गलेलगाया और साथियोंकाभी प्रतिष्ठा के अनुसार आदर किया शरबतकेघड़े मंगवाये और ईश्वरका धन्यवाद किया और धाड़मार कर रोने लगा अमीरने विनय की कि आज का दिन खुशीकाहै ऐसेसमयमें दुःख व शोकका क्याकारणहै मैंअच्छीभांति से युद्ध जीत करके आया हूं लोगों को जिसका भरोसाभीन था ईश्वर ने मुझ पर कृपा की और आप इसआनन्द को त्याग करके रंज करतेहैं ख्वाजेने कहाकिऐ पुत्र मेरेरोने का यह कारणहैकि थोड़ेकालमें विपत्ति का सामना होने वाला है कि अल्कम का पुत्र हुश्शाम खैबरी जहायन को नष्ट करके काबेके गिराने को बड़ीभारी सेना लिये आता है नगर के अच्छेप्रतिष्ठितमनुष्य उसकेकारण अतिघबरातेहैं कारण उसका यहहै कि वहबड़ा दुष्ट है इस निमित्त मैं चाहता हूं कि तुम को किसी बहाने से हबशकी ओर भेजदूं अमीरने कहा कि ऐ कृपानिधान मरने से पुकार क्या है अवश्य है कि ईश्वर बड़ा बलवान है उसकी कृपा और आप के आशीर्वाद से जो मेरी जीत होजावे क्या बुद्धिसे दूरहै मैं उसे यहांतक कबआने देताहूं आगे चलकर उसका जान लेता हूं यह कहकर उसी समय बाप से बिदा होकर काबेके दर्शनकोगयाऔर विजयकी इच्छासे मंच पढ़े और ईश्वर से सहायता चाही और सेना जोड़के हुश्शाम का मार्ग रोकने के हेत चला और दुगुनी मंज़िलें चले जातेथे एक मंज़िल पर यहठीक समाचार पाया हरकारेने आकरवृत्तान्त बतलाया कि यहां से दोमंजिल की दूरीपर उस दुष्टकी सेना पड़ी है कोसों तक भीड़भाड़ लिये पड़ा है यह सुनतेही हमजा उस स्थानपर उतरा और सेना का प्रबन्ध करनेलगा चारघड़ी रात व्यतीत हुईहोगी कि कई हजार सवार अपनी सेना से चुने और उस समय दौड़ मारने का मनोर्थ करके उस ओरकोकूचकरदिया औरअतिशीघ्र हुश्शामकी सेनापर अमीर हमजाकी सेनाबज्रकीभांतिजागिरी हुश्शामकीसेनामें हलचलपड़ी अमीरने ईश्वर कानामलेकर हांक दी कि ऐसोतेहुये भाग्यवानलोगोजागो कि ईश्वरके प्रलय ने तुम्हें घेरलिया बड़े २ दुष्टों का जोछुड़ा दिया यमदूत तुम सब को लेने आयेहुयेहैं और प्रातहोते२ दशसहस्रमनुष्य हुश्शामकी सेनाके हुश्शाम अपने तम्बू में पड़ा सोता था मार २ यह शब्द उसकी कान में पड़ा तो शीघ्र जागउठा औरअपने लोगोंसे पूछनेलगाकियहहल्ला कैसा है लोगों ने कहा कि कोई हमजानामी अरबका है उसने रातको दौड़ मारकर आलमगीर के समान मार पीट कर सेना को नष्ट कर दिया है जो ऐसेही दोचार घड़ी तक रहैगा तो सेना में मनुष्यका चिन्ह भी न रहैगा हुश्शाम झटपट गैंडे पर चढ़कर सेना में आया वहां सब को

न रहैगा हुश्शाम झट पट गैंड़ेपर चढ़करसेनामें आयावहां सबको अचेत और दुःखित और बहुतेरों को मारे हुये बहुतेरों को घायलपाया कि इतने में सूर्य उदय हुआ उस समय तीस सहस्र सवार हुश्शामके साथ और दश सहस्र सवार अमीर के साथ थे और बनिये आदि अधिक थे हुश्शामने मैदानमें गैंड़ेको लाकर हमज़ासे बोलाकि ऐ अरबी जवानयह घोड़ा और हथियार किससे तू मांग लाया है इतनी बिसात पर मुझसे सामना करने को आयाहै तुझे अपने जीका डर न आया नाहक मेरी सेना को सताया तेरी जवानी परमुझे दया आतीहै इससेतेरे मारे जाने की आज्ञा नहीं दी जाती है यह हथियार और घोड़ा तू मुझे भेंट की भांति दे और हाथ जोड़ कर अपना अपराध क्षमाकरावे तो अलबत्ता तेराजी जलाऊंगा तूनेजो मेरीसेना पररातको डाका मारा उसके बदले मैं तुझे छोड़दूंगा औरजो मेरा कहा नमानेगा तोतुझे अपनीतलवार से बमौत मारूंगा अमीर यह मूर्खता की बातें सुनकर क्रोध को न थाम सका और अत्यन्त क्रोधवन्त होकर कहने लगा कि अरे नीच तू नहीं जानता कि मैं कौन हूं और किस घराने काहूं ख्वाजे अबदुल्मतलब का पुत्रऔर हाशमका पोताहूं हमारी तलवारका समाचार क्यातेरे कान तक नहींपहुंचा और मेरे बाहोंकाबल तेरेकानमें नहींआया औरअपने मुंहको नहीं रोकता अब अरे मूर्ख नर्कवासी सावधान हो क्या तेरी मृत्यु आई है किस लिये जीने से तेरा चित्त घबराया है हुश्शाम इस बातको सुनकर गर्वित हुआ और भालाजो उसके हाथमें था अमीर की छाती पर मारा अमीर ने उसका भाला अपने भाले पर रोका और दोनों ओर से भाले चलनेलगे जब सौ २ वार भालेकेचले और दोनों ओर से किसी के घाव न लगातब हुश्शाम लज्जित होकर भाला को हाथ से फेंकदिया और तलवार मियानसे खींचली चाहता था कि अमीर के बराबर आकर तलवार मारे कि अमीर ने चालाकी करके तलवार उसकेहाथसेछीन ली और अपने साथियोंके आगेफेंकदी और कहाकि तू अपना वार कर चुका अब मेरी बारी आई अपने को सम्हाल और अपने घोड़े और हथियारों को देख भाल पीछे यह न कहना कि सावधान करके न मारा मेरीहौस न पूरी होने पाई यद्यपि उसने ढाल को ऊपर रक्खा परन्तु अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर जो तलवार उसके सिरमें मारी तो ढालके दो टुकड़ाकरके फौलादका झलरिया टोप काट करसिरके दोटुकड़े करते हुये छातीके बीचोबीच होकर चूतड़ों के नीचे उतरके आधा २ काट गई बैरीके मित्रोंके हवास ऐसी तलवार देखकर जाते रहेकि जो कभी न देखीथी ॥

चौपाई ॥

काट बखान करे केहि भांती। सिर पर धरे जाय आराती ॥

आंख बेठका पर नहिं रहई । ठाल काटि नीचे तक बहई ॥
यह वह देखि करै द्वै फारा । सिरते पांवलेइ महि धारा ॥
आस तलवार और नहिंदेखी । कीन्हविचारहृदयनिजलेखी ॥

छन्द ॥

कहै खड्ग दामिन सरिस सुन्दर शोभ वर्णत नाहिं बने ।
मानुष के करते अस चलै जस ईश निज करते हने ॥
दुश्शाम को करि नर्क वासी मीर मृग नृप सोहई ।
सेनाके बीचमें अस घस्यो जस अजय एक २ जोहई ॥

अमरने एकपलमें सबको मारकर लाशोंसे समर स्थानभरदिया बहुत भागखड़े हुयेऔर बहुत मुसल्मानहोगये अमीरने नौशेरवांका तख़्तऔर छत्र लेकर सबलूट जमाकीऔर ईश्वाराको बन्दिसे छोड़दिया और प्रत्येकको सवारी और खिलअत और मार्गका खर्च देकरकहा कि तुम लोगघर को जावो उसके पीछे एक बिनयपत्र नौशेरवांको लिखा कि मैंनेईश्वरकी कृपासे इस नीचको माराऔर हजारों मनुष्य जो उसके बन्दि में आपके थे उनको छोड़ा दिया और उस दुष्टका सिर मुक़बिल के हाथ कृपानिधान के निकट भेजता हूं और बैखुसरों का ताज और तख़्त जो आज्ञा होतोमैं लाकर हाजिरहूं यह अर्जी और दुश्शामकी खबरदेकर रवाना किया और आप विजय प्राप्त करके मक्केकी ओर प्रसन्नहोकर कूच किया कहते हैं अमीर इस डाकामारने के सिवाय और कभी रातका डाका नहीं मारा ॥

नौशेरवां की सभा में मुक़बिल वफ़ादार के जानेका इतिहास ॥

बुलबुलरूपी कलमनवा इतिहास सुनाता है स्वच्छ कागज के तख़्तापर सुन्दर बाग बनाता है कि चालीस दिनके पीछे नौशेरवां आखेट स्थान से मदायनमें आया और नगरको शोक और उजाड़ और तख़्त ताजका चिन्ह नपाया बुजुरुचमेहरसे नेत्रोंमें जल भरके कहने लगा कि गर्दिशने यहबुरा दिवस दिखाया यहां तकआपकी बिचार ठीकदिखलाई दी जो तुमने बताई थी किन्तु शेष यह दुखहमारा कबदूर होवेगा और कब आनन्द मिलेगा बुजुरुचमेहर ने कहा कि ईश्वर चाहता है तो आजसे कल तक वह भी विदित हुआ जाता है आपको अति आनन्द प्राप्त होगा सासानियोंने जो मारने से बचे थे बख़्तकसे कहा कि यह जो कुछ किया बजुरुचमेहरने किया जो बादशाह को मदायन से आखेट को न ले जाता तो दुश्शाम ऐसा बुरादिन न दिखाता मुफ्त में नातेदार और कुटुम्बके लोग हमारे बेमौत मारे गये और बाक़ी रहेते बन्दीमें होगये सचहै कि बुजुरुचमेहरने अपने मतके डाहके कारण बरबाद किया बादशाहकी सेवा में जाकर और बिनया करके हमारा न्याय करावो और हमारीओर से इतना करवाइये यहइच्छा होरहाथा कि सवारनसदा

पहिने हुये चालाक गर्द गुबार से भराहुआ बादशाह के निकट हाज़िर
हुआ और समाचार आनन्दमय बादशाहको सुनाया कि हुश्शाम खैबरी
ने ओमदायन को नष्टकरके सत्तर सहस्त्री पुरुषोंको बंधुआकरकेलेगया
था वहांसे खैबर की ओर जाता था और अपने आगे गर्व के कारण
किसी को नगांठता था हमजाने आपके प्रतापसे उसको मारडाला है
और उसकासिरअपनेएकमित्रके हाथकि जिसकानाम मुक़बिलवफादार
है हुज़ूरमें भेजा है और उसकीसेनाको मारके वहांकी प्रजाकोउसकीब-
न्दिसे छोड़ाकरसबको खिलअतेंदीहैंयहशुभवृत्तान्त सुनकरबादशाहउछ-
लपड़ा और बुज़ुरुखमेहर को दौड़कर छातीसे लगालियाऔर कहाकि
सबअधिकारी शीघ्र मक़बिल वफ़ादारकी अगवानीको जावें और प्रतिष्ठा
समेतउसको लेआवेंवैसेही बादशाहकी आज्ञानुसार कियागयाजोलोग
बड़े २ अधिकार पर थे अपनी २ सामग्री दुरुस्त करके मुक़बिल की अ-
गवानी के हेत नगरसे बाहर आये और प्रतिष्ठा समेत उसको अपने
साथलाये जिससमय मुक़बिल आया बादशाह के तख्तको चूमलिया और
अर्ज़ी अमीर की दी बादशाह इसभांति अमीर की प्रतिष्ठा की कि उन
के विनय पत्रको मुक़बिलके हाथ से लेलिया पहिले तो आपने पढ़ा फिर
बज़ुरुख मेहर को देकर कहा कि इसको बड़ी आवाज़ से पढ़ो और इ-
सके मतलब से सबको विदित करो और हमारी बादशाहत में इसका
विदित पत्र लिखकर सबजगह भेजवादो जितने लोग थे उसको सुनकर
अति प्रसन्नहुये औरबादशाह को इसविजयका मंगलाचार देनेलगे बाद-
शाहने उससमय मुक़बिलको पारितोषिक देकर प्रसन्नकिया और रुपये
मोहरें जवाहिरआदिसे उसको अतिप्रसन्नकिया और आज्ञाकी कि जब
तक मुक़बिलवफ़ादार मदायनमें रहै प्रतिदिन दरबारमें बे धड़क आया
करे लिखने वाला लिखता है कि जिसदिन मुक़बिलवफादार ने बादशाह
से भेंट की थी दैवयोग से उसदिन एक पडुकी बादशाह के बाग़में सरो
की डाली पर बैठी देखपड़ी और उसकी गर्दन में एक सांप परिध
समान गलेमें लपेटाहुआ दृष्टिपड़ाबागवानने आकरसमाचार बादशाह के
सामने विदित किया बादशाहने कहा कि जानपड़ा कि अपनान्याय क-
राने के हेत आई है कोई धनुषधारी ऐसा है कि जो इस पडुकीको ब-
चाकर सांपके फनमें बाण मारे किन्तु इसको किंचित् मात्र तक कष्टन-
मिले यह बात सुनकर सब चुपके होरहे परन्तु मुक़बिल अपने स्थान से
उठखड़ाहुआ और बादशाह केतख्तकापावा चूमकर आज्ञामांगने लगा
आज्ञापाने के पीछे उधर को मुंह किया और भालाकी नोक पर एक
दर्पण खड़ा करके एक मनुष्य के हाथ में दिया कि उसके मुंह के सा-
मने रक्खे कुछ भी डरनकरे और हाथ हलने नपावें सांपको जो अपनी
सूरत दृष्टिपड़ीफनको उठाकर उसओर देखनेलगा और जीभनिकालकर

अपने प्रतिबिम्ब की ओर निगाह करने लगा मुक़बिलने फन देखकर तीर
को फोंक में लगाया और गोशाकमान को ढूंचकर उस सांपको फनपर
मारा कि उस सांपके फनमें लगा लगतेही उसने अपना प्राण त्यागदिया
मेडुकी कोपरतकमेंभी कुछदुःख न पहुंचा और तीर सांपको घुसगया वह
सांप तो पृथ्वीपर गिरपड़ा मुक़बिलने अपना तीर निकाल लिया और
पेंडुकी परबजाते हुये अपने घोसले की ओर उड़गई आशक़ होकर देो-
खने वाले बाहर का शस्त्र सराहने के हेत कहनेलगे बादशाह ने मुक़-
बिलके हाथ चूमलिये और पारितोषिक देकर अच्छी भांति से प्रसन्न
किया और हमेजा के विनय पत्र का उत्तर लिखा और पारितोषिक
समेत बख़्तकको दिया कि लिफाफापर हमारी मोहर करके वह बह-
मनसगां और वहमनखरां को सौंपदो कि शीघ्र अमीर के निकट जावें
और यह उत्तर और पारितोषिक अमीर के निकट यलसमेत से पहुं-
चावें कहते हैं कि बादशाहने अमीरहमज़ाको अपने परवाने में लिखा था
कि ऐ सुभट समय के बैरियोंके नष्ट करनेवाले संसार से तूने अपनी सु-
शीलता से अपनाधर्म अच्छा निर्वाह किया और मेरे बैरियों से जो अ-
तिगर्वित थे उनको पराजित करके नाम वनिशान मिटादिया जो आ-
गरस्तम जीताहोता तो आधीनता का घेरातेरे ओरसे अपने गर्दन और
कानमें लटकाता और सोहराबइस फंदपर तेरेबलके आगे सिर न उठा-
ता बहमनसगां ववहमनखरांको पारितोषिक समेत भेजा है तख़्त और
छत्र और घोर असबाब बादशाही जो तूने उस मोबिद से लिया है
अति शीघ्र रवाना करके यहीं हाजिर हो जिससे मेरीआंखे तुझको दे-
खकर चैतन्यहों बख़्तक दुष्टनेउस परवाने को तोनहीं भेजा दूसरापर-
वाना इस मजमून का लिखा कि हेअरबजादे इससे पहिले मेरामनोर्थ
था कि सब अरब बासियों को मारके हाशम के पुत्रोंमें से किसी को
नरक्खूं परन्तु तुझसे यहकाम हमारी इच्छा के अनुसार हुआ इसका-
रण हमने तेरा अपराध क्षमाकिया और पारितोषिक बहमनसगांव
वहमनखरां के हाथ भेजते हैं और वह परवाना बादशाह का नहीं
भेजा लिखाहै कि एक मल्ल आदीनामी सदैव से उसी गढ़ीमें रक्षा क-
रता था हाशम अल्क़म के पुत्र खैबरीका समाचार सुनकर घरको अ-
पने खाली किया और अठारहसहस्र सवार से पहाड़ में छिपकर बैठा
कि जिससमय हुश्शाम इधर आनिकले मैं उसको पराजित करूंकिएक
धवान ने उसको समाचार दिया कि हुश्शाम खैबरी को हमज़ाने मारा
और उसका माल व असबाब लिये हुये मक्केका मनोर्थ किया है कि जो
उसके रहने का स्थानहै आताहै यह सुनकरवह बोलाकि अच्छा हमभी
अपना हिस्सा उससे लेंगे जिस समय गढ़ी रघाजिल के निकट हमज़ा
आन पहुंचा आदीने अपनी सेनामेंसेएक सरदारकोदूतकेहेतचुनके यह

संदेशा देकर हमजाके निकट भेजा किहुश्याम मेरा शिकारथामैं बहुत दिनसेउसकाघातमेंथा हुमको आपनेशिकारकियामेरीइच्छामनहीमेंरही अबआपसे यह बिनयकरताहूं जोकुछ उसके माल व असबाबसे आपके हाथ आयाहै आधा मुझकोदेदीजिये औरआधा आपलेकर मुझसे अपने घरकी राह लीजिये नहींतो आपकाभीमाल उसकेसाथ जायगा सिवाय डाह और अफ्सोस के और कुछनहाथ आवेगा अमीरयह संदेशासुन कर बहुत हंसा औरउसके ऊपर बहुत छपाकरके कहनेलगा किहमारी औरसे दुआदेकर कहना किजो सलाह उसे प्रसन्नहोतो शराबकप्याला हाजिरहै औरजो युद्धका सामान चाहता है तो यहीगेंदयही मैदानहै सबप्रकारसे मुझेस्वीकारहै जोउसकी इच्छामेंहोउसको मैंभीकरूं वहदूत हमजाके चालचलनपरसब प्रकारसे प्रसन्नहुआ और आदीसे जाकरप्रश्न का उत्तर कहा और अर्ज किया कि हमने अपनी अवस्थाभर मेंऐसा विवेकी औरबुद्धिमानऔरसुशील सर्दार कोईमनुष्यऐसा हमनेनहींदेखा मालुम हुआकि यहबड़ा प्रतापीहै आश्चर्य नहींहैकिसप्त दीप में अपनी दुन्दभी बजावे और कुछ दिवसकेपीछे सकल देशोंकी बादशाहत इसके आधीन होजावे यह उत्तर सुनकर आदी लड़नेपर उद्यत हुआ आदी दूसरे दिवस अठारा सहस्र सवारका समूह लेकरदुन्दभी बजाताहुआ मैदान में आया अमीरभी अपनी सेनालेकर सामनेआये औरयुद्धकरने पर उद्यत हुये आदीइससजधजसेआया कि सेनावालोंकाचित्तघबराया देखातो इक्कीस फुटका लम्बाचौड़ा दोनोंओर बराबरहै और अतिविकट रूप बनाये हुयेहै और सिर पर झलरियाटोप और सात पगड़ियांबांध कर तिसपर शमला बांधेहै औरउसके मुंड़के बालभी कुछ२ दीख पड़ते हैं और इक्कीस गजकी उसकेपेटकी दौरहै मनुष्यक्या देवहै उसपर कमर बन्द फौलादीबांधे जिरा बकतर और दास्तानेराकीमोजे टिकोरीपहिने ढाल पीठपर तलवार कटार छूरी तरकश नीचे कमरके कमान पांच टांक की कांधे पर डाले लम्बा भाला हाथ में लिये हुये है अमर देख-कर अमीरसे कहने लगा आपको अपने बलका बहुत घमंडथा आजमा-लम होजावेगा ईश्वर भलाकरैदांतों पसीना आवेगा अमीरने कहाकि मुझे बल देनेवाला उससे अधिक बली है वैरी जो बली है तो हमारा सहायक ईश्वरदयानिधानहै देख तो क्याहोताहै अमीरने परमेश्वरका स्मरण करकेउसके शरीरसे और देहसे कुछभी अंदेशा नकिया औरघोड़े कोउसकी ओर चलाकर कनोटीसे कनोटीको मिलादिया बराबरहोता थाकि एक ओझट ढालकी ऐसी उसके घोड़के मस्तक पर मारी किकई कदम उसकाघोड़ापीछेहटगया औरअचेतहोकर सिरझाड़नेलगा आदी ने जब यहबल हमजाका देखाकि वैरी अधिक बलवान्है औरजवानी से मस्तहै बोलाकिऐजवान तुझमेंभीजानपड़ाकि इसभांतिकाबलहै औरबाड़

साहसी है अब अपना नामबता कि तुझसा वीर मेरे हाथसे न माराजावे अमीरनेकहा कि पहलवानोंका नामखड्ग और धनुषआदिसे विदित होता है उसीपर खुदारहताहै तू सुनलेकि मेरानाम अबुलअलाहै तेरे सामने तेरा बल देखनेके हेत आयाहूं क्या अस्त्र रखता है देखूं तेरा वारकैसा होताहै आदी गदालेकर अमीरके सिरपर आया और बोलाकिऐ अबुल् अला इसकी चोटसे तू न मरैगा यहकहकर अमीरके ऊपर अपनी इच्छा केअनुसार वहगदा मारी और अपनाबलहोसिलादिखाया अमीर ने उस को बचाकरके कहाकिहां अब दूसराभी वारकरले जिसमेंतेरी हौसनरहै अबकीचोटसे बचूंगा तो मैंभीएकवार करूंगा जोजीता रहा तो उसको यादकभीनभूलैगासदैव उसवारकोयादकरैगा आदी यहसुनकर ओधवान हुआऔरगदाको शिकारबन्दमें लटकायातलवार मियानसे लेकरचाहा कि अमीरके सिरपर वार करके मारे अमीर ने उसका कबजा पकड़के दूसरा हाथ उसके कमरबन्द परडाल दिया वह भी अमीर से बलकरने लगा असरने निकट आकर कहा कि ऐअमीर तुमतो आपसमें बैलों की सी लड़ाई कर रहे हो घोड़ा बिचारे बेजीभ के हैं इनकी कमर क्यों तोड़तेहो जो बल देखना मंजूरहै तो पृथ्वी पर उतरके लड़ो तब हमजा और आदी दोनों ने असर की राय प्रसन्नकी और घोड़ों परकी लड़ाई बन्दकी घोड़ोंसे उतरे सामने मुक़ाबिला करनेको खड़े हुये आदीने कहा कि हथियार में तो हमतुम दोनोंसमान रहे हैं भाला व गदा युद्धमें भी हमतुमसमानरहे अब पिछलीलड़ाईमें दोनोंअपना २ बलदेखावें जोहारै वह उसकी आधीनता अंगीकार करे अमीरनेकहा कि मैं सब प्रकार से हाजिरहूं तेरी परीक्षा लेना चाहताहूं फिरआसनमारकर बैठगये आदीने इतना बलकिया किरोम२ में पसीना बह निकला किंतु हमजा हलनसका और पृथ्वीन छोड़ी आदीबोला कि हमजा मुझ जितना बल था कर चुका अपने बलकी सीमासे गुजर चुका अबतुम भी अपना बल दिखाओ उसका आसनमार के बैठना था कि हमजाने पहलेही बलमें उसका लंगरउठा लिया और कई वार चक्कर देकर पूछाकि अब तेरा क्या मनोर्थहै आदीनेकहा आधीनता और सेवकाई और मनसे आपके ईश्वर दत्त बलपर न्यौछावर हूं अमीर ने धीरेसे उसको पृथ्वी पर रख दिया आदी नम्रहो ईश्वर का स्मरण करके उसके दीनमें आया अमीर को सेना समेत गढ़ी तंगरवाजिल में ले जाकर अति आनन्द से शिष्टा चार बादशाहोंके समान किया और अपने भाइयोंको भी इनसे मिलाया अमीर ने प्रत्येक को गलेसे लगाया और बीरताका पारितोषिक कृपा कियाजब अमीरने उसआनन्द सभासे छुट्टी पाई तोकहा कि वह ईश्वर निगहवान है अबमैं अपने घरको जाता हूं अपने पिता के चरण के दर्शन करूंगा आदीने कहाकिऐ हमजा ऐसातो नहीं कि जो मुझेखाना

न देसकेगा मुझे किसहेत साथ नहीं लेतेहो जो हज़ार मन अनाज मेरे निमित्त होगे तो मैं उससे अपना जी रक्खूंगा दो पहर नहीं तो उसे एकही पहर भोजन करूंगा अमर बोला कि क्या खूब मनुष्य सबसे कम आदी खाता है भला ऐसी कम भखमें कौन खाना देनेमें मुंह मोड़ेगा इस विचारे कमखुराक का कौनचित्त तोड़ेगा अमीरने हंसकर आदी से कहा कि यह क्या बात है परमेश्वर रक्षक है मुझको और उसको दोनोंको वही खानेको देता है और सब चराचर की वही सुधि लेताहै जो तुम चलो तो मेरे सिर आंखों पररहो फिर आदी अठारह हज़ार सवार लेकर अमीर के साथ २ आया और अमीर प्रसन्न होकर मक्के की ओर चले ॥

अमीर का मक्का की ओर जाना और नौशेरवां का परवाना पहुंचना ।

लिखने वाले इस मधुर वृत्तान्तको यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर मक्केमें पहुंचा प्रथम काबेके दर्शनकरके नमाज दोगाना पढ़ी और आदी से ठगीको कसमकरवाई फिरअपने पिताकेचरण चूमनेको चला ख़्वाजे अबदुल्मतलब ने जब अमीरके आनेका समाचार सुनातो नगर वासियों से अमीरके लौटनेका मंगलाचार करवाया और नगरके भले२ मनुष्य लेकर अमीरकी अगवानीको चला और कुटुम्ब समेत सबलोग अमीरके लेनेकोगये मार्गके मध्यमें पिता पुत्रका मिलाप हुआ अमीरनेचरणचूमे ख़्वाजे ने उठाकर अमीर को अपनी छाती से लगाया और रुपया व मोहरें फ़क़ीरोंको लुटाईं वेलोग आशीर्वाद देनेलगे कि ईश्वर विजयी सदैव उसको विजय प्राप्तकरे ख़्वाजेअब अमीरको घरमेंलाये और दीवान-खाने में बैठे और नगरवासी भी सब आकर उपस्थितहुये अमीर से मं-ज़िरशाह यमनी और नयमाय मंज़िरशाह यमनी के पुत्र और सुहेल यमनी और सुलतानबख़्त मग़रबीने आशीर्वाद देकर तौक़विन हैरांकी नौकरी करवाई और प्रत्येककी प्रशंसाकी ख़्वाजेअति कृतकृत्य हुवा और सबपर कृपाकी दृष्टि की और इसी भांति से सबका अधिकार बढ़ाकर पहुंनई की एकदिन बातोंबात अमीरको मालूमहुवा कि आदीआदिया-बानोकापुत्रहै तब अमीरअति प्रसन्नहुये किदूधके कारण मेराभाईहै उसी दिनआदीको अपनीसेनाका सेनापति और दीवानखाने और नक़्क़ारखा-ने और फ़र्राशख़ानेका दारोगाकिया और अठारह प्रकारका पारितो-षिकदेकर अच्छी पदवीपर नियतकिया अमरने अमीरकी आज्ञानुसार आदीसे पूछाकि आपके खानेकेहेत जितनी सामग्री चाहनाहो कहदी-जिये कि बावरचीखाने का दारोगा प्रति दिन आपके निकट भेजदिया करै या खाना बनवाकर आपके डेरेमें भेजवादिया करै आदीने कहाकि यहतो घरहै मुझे खाना इतना चाहिये जिसमें जीव रहै अङ्गीकार यह है कि अमीरके दरवाजेपर अच्छीभांति सेवकाई निबाहूं अमरने कहा

कि प्रति वस्तुकानाम और तादाद कहदीजियेतो दारोगा आपकेबावरची खानेमें पहुंचादिया करैगागोल २ कहनाक्या जरूरहै जाय न कर ना चा- हिये आदीने कहा कि अच्छा भाई दारोगा से कहदो कि प्रातसमय इक्कीसजंटका मांसखाताहूं और दोपहरको इक्कीसहिरन और पचीस दुम्बेके कबाब अंगूरी मदिरा के इक्कीस शीशों के साथ चखताहूं और जितना मैंने प्रातःकालसे दोपहरतक बताया उतनाही सांझसमय बल्कि इक्कीस भैंसा अधिक वियारी करताहूं और इक्कीसमन आटेकी रोटियां दोनोंपहर खानेके निमित्त ढेर होता है और इसपर मेरा पेट अच्छी भांतिसे नहीं भरताहै किन्तु इतनेमें मेराजी रहसक्ता है अमीरनेकहा कि इसदूकान केदारोगासे कहदो भेजदियाकरै कुछभी इसमें कमी न कियाकरे उनके कहनेके अनुसार उतना रातिब उसका ठीकहुवा और प्रतिदिन खानाजाया किया कईदिवसके पीछे अमीरने सुनाकि नौशेर- वांके एलची आतेहैं मेरेनाम परवाना व खिलतलातेहैं फिर ख्वाजे अब्दु- लमतलब और अमीरहमजा नगरकेवासियों समेतउनको अगवानी लेने के हेत नगरके बाहरआये और अपने घर पर पहिले उनको लाये और शीशेके घर उनके हेत सज रहेथे उसमें उनको उतारा और थोड़ीदेरके पीछे अच्छे२ व्यञ्जन बनवा कर उनके निमित्तभेजे उन्होंने अमीरहमजा कोपरवानाऔर खिलअतदी अमीर उसपरवानेको पढ़करमौनहसिकोड़ी और अति रंजकिया ख्वाजेनेअमीर केरिसकरनेका कारण पूछकरकहा कि बाबा यह बादशाह है कभी सलाममे त्योरी भौंचढ़ाते हैं और कभी गालीसे प्रसन्न होकर खिलअत देते हैं अप्रसन्न होनेका स्थान नहीं है दूसरेदिन जबरात बीतीसूर्यने अपना प्रकाश कियातब ख्वाजे अब्दुल् मत- लबने नौशेरवां के लोगों की दावत की और सबनगर वासियों को भी उसन्योतेमें बुलाया खाने पीने के पीछे एलचियोंने ख्वाजे के नामका पर- वाना ख्वाजे को दिया उसके पढ़नेसे अमीर को अपनी खैरख्वाही और परिश्रम परअति डाह हुआ देखने वालोंको अति आश्चर्य हुआ कि इन लोगों का कैसा नाम है अर्थात् बहमन खरांके नाम पर जेपर औकात था उसको खेकी बिन्दी जानकर खरां पढ़ा और तशदीद काफ सकाल अशुद्धता से उसको काफफारसी अर्थात् गापढ़ो और वेदोनों इसीनाम से मक्केमें प्रसिद्धहुये अमर उस परवानेका समाचार सुनकर अमीर से भी अधिक अप्रसन्नहुवा जबखानेके हेतदस्तरखान बिछा और सबआा ये दोखान कसनों से कसके उनदोनों के सामनेलाया और बुराभला कहने को तय्यारहुवा किन्तुअमीरने उनकोमनाकिया और कहाकिन्होंतायह आपकामेरी ओरसेहै और अच्छीभांति से उसे रखवाया इसमें खुराक आपके योग्य है यह कहकर खानपोश उतार कर कसनोंको खोलकर जिसकाबमें घासथी वहतो बहमन खरांके सामने धरवाई और जिसमें

आदमियों की हड्डियां थीं वह वहमनसगांके आगे लगाये और जितने लोग उसस्थान परथे सन्देहमें आकर अमरसे कहनेलगे कि यहक्या चाल है यह कैसी बुरीबात करता है अमर बोला कि खर व सग अर्थात् गधा व कुत्तोंके निमित्त इसके सिवाय अच्छाभोजनक्या है यही पशुओं को मिला करताहै चोंकि इनकी पहुनई मुझपर भी उचित थी इस कारणसे मैंने भीमुंह न छिपाया वे दोनों अमरपर दांतपीस कररहगये और अनुचित बात जानकर कुछ कहनसके अबखाने से छुट्टीपाई सबका चित्त भरगया अमरने दो नावें मंगवाईं उसमें उनकी खिलअतेंथींवह उनके सामनेधरवाईं एकपरमें ढकना उठाकर एककपड़ा कुत्तोंके डौलका निकाला और बहमनसगांके हाथमें दिया और दूसरेमेंसे एकझूल निकालकर वह भी वहमनसगांकोदी और फिरएक पाखर निकाल करवहमनखरांकोओढ़ायातब तो उनसे न रहगया कटारनिकालकर दोनों अमरपर दौड़े और उसके मारने पर मुस्तइद हुये तौकबिनहैरांने कटार दोनोंके हाथोंसेछीन ली और घूंसों से उनको मारा उसी दिन दोनों येलची सिर पर हाथ रखकर भागे किसीके होश ठिकाने न रहे अमीरने एकअर्जी बादशाह के दरबारमें अपने सेवक के हाथ लिखी उसमें अभिप्राय यह थाकि जो सेवा मुझसे आपके निमित्त बनपड़ी उसके बदलेमें हुजूरने अच्छीभांतिसे प्रतिष्ठा इसआधीनकी की मैं ऐसेही परवाने और खिलअतके योग्य था आपसे मुझे आशाथी कि इस अनुचरके नाम छापाच आवेगा उसपर नाराजी का पत्र आपने भेजा और अर्जी और परवाना खिलअतसमेत एक सेवक के हाथ रवाना किया और कुछविनय करना थासो उसको जबानी कहला भेजा येलचियों ने बादशाहके पासआकर रो पीटके सब बुराई का समाचार वर्णन किया और झूठसच बहुत कुछकहा नौशेरवांने सुन कर बहुत क्रोध किया और बुजुरचमेहर की ओर देख कर कहा कि यह अर्वी अधिक गर्वी है उसके बड़े २ मनोर्थहैं येलचियों की बातोंसेजाना जाताहै कि फिरार हुआ चाहताहै बजुरचमेहर ने विनय कीकिकृपानिधान हमजाऐसा शीलवान गुणनिधान हैासिलामन्दहिम्मत वान मनुष्य संसार में उत्पन्न नहीं हुआ है जो येलचियोंकी बातें सचहैं और उसमें सन्देह और कोईबुराई नहींहुई है सबप्रकारसे मालूम हो जायगा यहबातें होहीरहीथीं कि मुकबिल अजीव परवाना वखिलअत जो बादशाह की ओरसे गयाथा लेकर हाजिरहुआ बादशाह अर्जीका मजमून और अपने परवाने का लिखा हुआ वृत्तान्त और वह खिलअत जो बादशाह अपने अंगीको न देता देखकर बख़्क पर क्रोध करने लगा कि हे मूर्खदुष्ट यह क्याबात है जो तूने की ऐसीमूर्खता और ढिठाईपर कमरबांधी और उसीसमय हजारतोड़ा मोहरें उसपर जुरमाना किया और कई दिनतक दरबार में आने नदिया और अमीर को उजरनामा

अपनेहाथसे लिखा कि वहपरवाना और खिलअ़त जो तुमको पहुंचाथा वह बलख़ने दुष्टतासे बदलकर भेजाथा तुमको उचित यहहै कि हमारी ओर से अपने दर्पण रूपी चित्त में मैलन बैठने देना और अपने चित्तका खेद दूर कर देना और इसी निमित्त परवाना खिलअ़त बुजुर्गउम्मेद बजुरुचमेहर के पुत्र के हाथ भेजा जाता है कि जिससे बख़्त को किसी भांति दुष्टता करने का समय न मिले कि तुमभी बुजुर्गउम्मेद के साथ मेल मिलाप करके शीघ्र दरबार में आवो और अपने हाथों तख़्त व छत्र लेकर गुजरानो यह लिखकर परवाना व शाहीखिलत बजुरुचमेहरकोदे कर कहा कि बुजुर्गउम्मेदके हाथ देखना दूसरा कोई इस परवाने और खिलअ़त को न देखे ख़ाजेबुजुरचमेहर बादशाहसे बिदा होकर जब घर में आया तो सुघड़ी देखके एकसर्प जादू का बनाया कि जब हवाउसके पेट में जाती तो तीनबार आवाज साहबक़िरांकीनिकलती और बैरीवमित्र के कानमें पहुंचती और उसकी सुगन्ध से सबका दिमाग सुगंध मयहो जाता उसकी महक के आगे और सुगंधित वस्तु लज्जित होतीं और जब बैरियों के आगे देख पड़ता तो अमीर की सेना का डर उसकेहृदय में छाजाता और इस वस्तु के साथ एक चौखट दानियालपैगम्बर की हमजा के हेत भेजी और चारसौ चौवालीस बोझ कपड़ा घोड़ों परख कर अमर के निमित्त भेजा और बुजुर्गउम्मेद से कहा कि हमारी ओर से यह अमर को पहुंचा देना और वस्त्र पहिननेका उपाय बुजुर्गउम्मेद को सिखाकर कहा कि इसीभांति अपने हाथसे अमर को पहिनादेना यह बातें समझा कर एक दस्ता सवारों का साथ करके रवाना किया और मार्गका हाल सबसमझा दिया जब चारकोस मक्का रहगया खाजे बजुर्गउम्मेदने डेरा किया दैवयोग से उसदिन अमर उसओर गया था बजुर्गउम्मेदने पहिचाना होनहो यहीअमरहै तो अपनेनिकट बोलाकर गलेसे लगाया और कहाकि हम तुम दोनों भाई हैं यहां उतरो पिताने कुछ वस्तु तुम्हारे हेत कृपाकी हैं और वस्त्र व भूषण अच्छे २ भेजे हैं यह कपड़े उतारो जिसमें वे कपड़े पहिनावें और उसका उपाय तुम्हें बतावें अमर ने अपने वस्त्र उतारे बुजुर्गउम्मेद ने वे कपड़े अपने आदमियों को देदिये और एक घड़ीतक अमर को वैसाही रक्खा और कहा कि ला-लच से नंगेमत होना अबयही लजाव पहिने रहो और ईश्वरपर राजी होकर निहंग लाड़ले रहो तब तो अमर बहुत घबराया और धाहेंमार कर रोने और हाथ जोड़ने लगा कि मेरे वस्त्र मुझ को कृपा करो मुझे इतने मनुष्यों में नङ्गा मत रक्खो मैं सदा तुमको आशीर्वाद देतारहूंगा मैं आपके खिलअ़त से हाथ उठाया अब अपने घरकी राहलूंगा बुजुर्ग-उम्मेद ने हंसकर कहा कि ऐ बाबा ऐसेही इस सृष्टि में बहुतलोगों को तूभी नंगा व हैरान करेगा और बहुतोंके कपड़े उतार लेगा इसनिमित्त

मैंने तुझे नंगा कियाहै कि जिसमें आगे यहसमय यादरहै अमरने कहा कि मैं आप का चेला हुआ बुजुर्गउम्मेद ने गठरी तोषेखाने से मंगवाई पहिले एक अम्लासा अमरको पहिनाया ज्योंही उसको पकड़कर ऊपर कोईंचा तो एक थैलीसी अमर के लटकनेलगी अमरने कहा बाबाजान भी बड़ेउदारहैं कि बालिश्त भरकी भिखानीतम्बामें नदी बुजुर्गउम्मेद ने आफ़तबन्दनिकाला अमर देखनेलगा तो उसमें एकथैली मखमलकी थी उमपरसातरंगकेगुलबूटेनिकालकरभेजीहै और उसकीडोरीमें एकघुण्डी लालकी लगी है कि वह अमोनया बुजुर्गउम्मेद ने लिंगोटी उसमें रखके लंगोटकी भांति ईसरकार कहाकि इसको आफ़तबन्द कहतेहैं आपके पुरखों ने भी ऐसे कपड़े कभी सुने व देखेहैं और उसके लाभ बतातेहैं किइससे एक तो दौड़ने कूदने में अण्डोंपर चोट किसी प्रकारकी नहीं आती है और दूसरे पानीमें तैरने के समय इसके खोलने की कुछ आवश्यकता न होगी अमर बोलाकि पिता कृपा निधान की मुझ पर बड़ी दया है कि जोमेरे निमित्तभी खिलअत भेजी और मेरी लिंगोटीके हेतभी भेजी बुजुर्ग उम्मेदने दो भांतिके वस्त्र अमरको पहनाये एक शरीरकाथा और दूसरा कतांका और उनके सबके लाभबताये और कहाकि जो एक नर्महैवहशरीर की स्वच्छता और आरामकेहेतहै और दूसरा जब्बल वायुके लियेहै और हराअंगा सुनहला पहनाया और एक आधा छत्र जड़ाऊ कि जिसपर सुगन्धितकरनेवालाएकतोता जमुर्रदका बनाथाकलंगीके तौरसे सिरपर रखदियाऔर हिरन की खालकासूर्यमुकट सूर्यकीउष्णताकेहेतमाथेपर लगाया और एक फलाखुन कि जिसपर लालरंगका रेशम लगाहुआथा और भांति२का जड़ाऊकाम उसपर बनाथा और एककमन्दजिसकी लच्छों से गांठेंबंधीहुई थीं चमकमें सूर्यसे अधिकशोभितथीं और पांचकटारजिन के दस्ते जड़ाऊ और चवालिस घुंघरू अमरके कमरमें बांधे बारह म्यान अट्ठाईस कोने पर शब्द चौबीस ख़ाबें और छः पातावें दिये और डाढ़ी की पट्टी बांधनेकी सबबातें बताई थैलीऔर कावरा लफ़ककमरमें रक्खा और मज़बूत कसा और कुछ वस्तु मदिरा में भिगोकर सुखाई हुईकि जब उसको पानी में भिगो दीजिये तो पानी मदिराहो जावे और एक हुक्का और एक अंतरदान अच्छी भांतिका बनाहुआ और जहरमोहरा की डबिया मोरकीसी पंखनी हुई और बिजलीकी तरह अच्छी सजी हुई तलवार और धनुष और लम्बी चौड़ी सिरसे पांवतक चादर और जोड़ा जूतेका अधिक नरम मोती उसपर जड़ेहुये इसी भांतिसे चारसौ चवालिसे टुकड़े वस्तुके सजेहुये बुजुर्गउम्मेद ने अमर को पहनाये और भांति२केअस्त्रउसकेशरीरपर सजे अमर बुजुर्गउम्मेदसे बिदाहोकर उसी भांति से अमीरकेपासगया और ब्यौरा समेत सब समाचार कहा और विनयकी कि नौशेरवां ने आपके विनय पत्रके उत्तरमें भारी उजुरनामा

पारितोषिक सहितबुजुरुच्चमेहरके बेटेके हाथउनका ख़ाजेबुजुर्ग उम्मेद नामहै और वहनगरसेदोकोसकीदूरपर टिकेहुयेहैं भेजाहै और ख़ाजेबुजुरुच्चमेहर ने भी एक जादू का सर्प और दानियाल का तम्बू आपके हेत भेजाहै और चारसौ चवालीस टुकड़े भांति २ के जो इस समयमें मैंपहिने और लगाये हूं मुझको कृपाकिये हैं और उनके साहबजादे ने यह सब वस्त्र और अस्त्र पहिनाकर सबका सुभाव बतलाया है अमीर यह समाचार सुनकर अति प्रसन्नहुआ और लोहियों समेत साज बनाकर सवार होकर ख़ाजे बुजुर्गउम्मेद की अगवानी के हेत नगर के बाहर पहुंचा बुजुर्गउम्मेद अच्छी भांति से अमीर के आगे आया और नौशेरवां का उजुरनामा अमीर को दिया और ख़िलअ़त जो नौशेरवांने दी थी वह अमीरकेआगे धरी अमीरशाही परवाना पढ़कर अति आनन्दित हुआ और ख़िलअ़तमेंसेकोई२ कपड़े निकालकर उसीसमय पहिनलिये उसके पीछे अमीरको सर्प और दानियालका तम्बू बुजुर्गउम्मेदने निकालकर दिया और कहाकि पिताने आपको आशीर्वाद कहाहै और यहवस्तु आपके निमित्त भेजीहै और सचतो यहकि ये वस्तु आपही के योग्य हैं अमीर उससे अति प्रसन्नहुये और वह सर्प तौकबिन हैरांको और तम्बू आदी को सौंपदिया और बुजुर्गउम्मेद को साथले सेना समेत नगर की ओर चला वहां पहुंचकर ख़ाजे अबदुल्मतलब और भले २ मनुष्योंसे मिलाप करवाया और बहुत दिनों तक एक मंगलाचार के हेत सभा शोभित रक्खीएकदिन बुजुर्गउम्मेदने अमीरसे कहाकि बादशाह आपका मार्ग देखते होंगे और आपका चर्चा बारम्बार करतेहोंगे उचित यह है कि अबआप मदायनकी ओर पधारिये अमीर उसीसमय काबेके दर्शनकरके ख़ाजे अबदुल्मतलबसे बिदाहोकर मुक़बिलशाहयमनी व नैमायऔर सुहेलयमनी व सुलतानबख़्त पश्चिमी और आदीकरब वतौक़बिन हैरां समेत तीस सहस्र महाभट व योधा से मदायनकी ओर चले प्रतिदिन मार्गमें चलते सैर करते चलेजाते थे कि इतने में एकस्थान पर दो मार्ग मिले अमीरने ख़ाजे बुजुर्गउम्मेद से पूछाकि आपइसी ओरसे आयेथे आपको मालूमहोगाकि यहराहैं किधरको गईहैं और कौन २ देशकी सीमामें मिली हैं बुजुर्गउम्मेदने कहाकि दोनों मार्ग मदायन के हैं एक मार्ग निडरहै परन्तु दूर बहुतहै छः महीने में इस मार्ग से पहुंचते हैं और दूसरी राहमें बहुत जल्द मदायनमें पहुंचतेहैं परन्तु पांचवर्षसे यहमार्ग बन्दहै कि इसमार्गमें भारीजङ्गल मिलताहै और उसमें एकसिंह आकर रहा है और आदमीकी सुगन्धपाकर बिपिनसे निकलकर एकहीथप्पड़में चाहैजैसामनुष्य बलिष्टहो प्राणहरलेताहै इसकारण इसमार्ग होकर कोई नहींजाने पाताहै अमीरने कहाकि वहदुष्ट ईश्वरकी सृष्टिको दुखदेताहै मुझको उसेमारना उचित है यहकहकर अकेले आपतलवार लेकर अ-

थीत् खाजे अमर अय्यार समेत उसमार्ग भयभीतसे मदायन की ओर पधारे और सेनाके लेहियों समेत दूसरीमार्ग जो अभयथी उसके खाजे बुजुर्ग उम्मेद्के साथसेना और कड़ाकि घोड़ोंकीचाल चलेजाना यद्यपि मंचिर-शाह आदिने साथचलनेको कहापरन्तु अमीरने नमाना दूसरेदिन उस वियाबानमें एकझाड़के निकटपहुंचे वहांअच्छी ठंढीवायु देखकर घोड़ेसे उतरपड़े और एकतालाव देखा कि उसके किनारोंपर हरी २ दूबलगी हुई थी और कुछ वृक्ष इधर उधर छायादार लगेहुये थे उसपर पक्षी विविधि प्रकार की अच्छी २ बोलियां बोलतेथे उसके किनारे परजीन-पोश बिछाकर बैठगये और अमरघोड़े को चरानेलगा और उसबिपिन से फलआदि खानेलगे इतने में एक भारी खड़खड़ाहट पैदाहुई और जानवर के आनेकी आहट मालूम हुई और एकसिंह उसमेंसे निकला अमरने अपनी उमर में कभी बिल्लीका भी सिंह न देखाथा ज्योंही उसे देखाभयभीत होकर घोड़ेको छोड़कर एकबड़े वृक्ष परचढ़गया और अ-मीरको पुकारने लगा किऐ हमज़ा एकसिंह बड़ाही लम्बाचैाड़ा झाड़ से निकलाहै और आपकी ओरचला आताहै तुम्हें आप उसतालाब पर से भागकर मेरेपासचलेआइये याभागकर शीघ्र किसी वृक्षपर चढ़जाइये अमीर अमर की यहबात सुनकर बहुत हंसे और कहनेलगे कितू क्यों अचेतहुआजाताहैकुछदीवाना हुआहै मैं आपउसके मारनेकेहेत इसमार्ग से आयाहूं इसीकारण इतनामार्ग चलकर सेनासे अलगहुआहूं और तू मुझेउससे डराकर भगाया चाहताहै इसस्थानपर तू मुझेनामर्द बनाया चाहताहै यहकहकर सिंहकीओर देखने लगा और उसकी ओर चला देखाकि सिंहबहुतभारी है अतिडरावनी सूरतहै पूछतक चालीसहाथ लम्बाहोगा और गायसे अधिकऊंचाहै अमीरने सिंहको ललकारा कि ऐ गीदड़ किधरजाताहै तेराबैरी आनपहुंचा है सिंह यहहांक सुनतेही अमीरके ऊपरगिरा कि अमीरने चोटबचाकर उसकी वार बचाई और ऐसा शब्द किया कि सब बन गूंजउठा और सिंहके पिछले पैरपकड़ कर ऐसा झिटका मारा कि कमर की हड्डीटूटगई और दोपहरमें वहसिंह चिल्लाकर मरगया अमरने अमीरके हाथों को चूमलिया और प्रातः-काल उस सिंहकी खालको खींचके साफ किया और भीतरमें भी अच्छी भांति साफकिया और उस में भुस भराकर उस बनसे लकड़ियां तोड़ लाया और नयातमाशा करनेको जीचाहा तो एक बैठका बनाया उस पर उससिंहको इसभांतिसे बैठाया कि जोकोई देखै उसको जीता देख पड़े और एकमनुष्यको पकड़के उसकेसिर पररखवा लिया और अमीर के साथहुआ अमीर इसकारणसे कि सेनाबहुत दिनों में मदायन पहुंचे गीजहां कहीं स्वच्छस्थान पातेडेरा करते और आखेट खेलने जातेइस कारणसे अमीर और बुजुर्गउम्मेदसाथही पहुंचे अमीरतो अपनीसेना

होगये और अमरने एकटीकड़े के कुकड़पर जो गढ़ीके तले की दीवारके तलेबना था उसमुसभरे हुयेसिंह को बैठाया कि कुछभी सजीव सिंहसे और उससे भेद नहीं था इसीभांति दूसरे दिवस जब दरवाजा नगरका खुला घसियारे उसटीकड़े की ओर घासछीलने केनिमित्त जातेथे तोएका एकी उनमेंसेएककी दृष्टिउससिंहपर जापड़ी तोचिल्लाकर अचेतहोगया और बोलबंदहोगया उसके साथी इधरउधर देखनेलगे कि इसने क्या ऐसी वस्तु डरकी देखी कि चिल्ला कर अचेत हो पृथ्वी पर गिरपड़ा देखते २ सिंहपर दृष्टिपड़ गई तो सबके सब नगर की ओर सिंह २ कह कर भागे किसी का चित्त ठिकाने न रहा घसियारों की जबानी जो यह समाचार. विदित हुआ नगरमें हलचल पड़गई कि एकबड़ा भारी लम्बाचौड़ासिंहटीलेपरबैठाहै थोड़ीदेरमें नगरकीओर आया चाहताहै हमारे साथका एक मनुष्य वहां अचेत होकर गिरपड़ा है देखें वह घरतक आताहै या उस सिंह का कौर होजाता है सब नगर भरघबरा गया कोई अपना दरवाजा बन्द करने लगा कोई बंदूक बांध कर अपने कोठे पर जाबैठा और बाहर निकलना पैठना कठिनहुआ नाकोंपर प्रबन्ध होने की आज्ञाहुई नगरमें यहचर्चाहुई कि देखाचाहिये जो कदापि नगरकी ओर फिरातो सैकड़ोंको मारडालेगा यहवृत्तान्त जब बादशाहनेसुना तो नगरकी गढ़ीकीओर जाकर मल्लोंसमेत और सेनापति साथ लेकर देखा तो सचमुच एकसिंह टीकड़ेपर बैठाहै जो कोई उसे देखताहै वहकांप उठताहै दैवयोगसे मुक़बिल अपने तम्बूसे कि जो नगरके बाहर गड़ाथा बादशाहकी मुलाक़ातको जाताथा जब टीलेके निकट पहुंचा तबवहसिंह दिखाईदिया तो तरकससेतीर निकालकर कमानकी नोकपरचढ़ाउसकी ओर चला और सामने पहुंचकर ध्यानलगाके जो देखा तोसिंहमें हलचल न पाई धोखेसे सूरतदृष्टिपड़ी तबसोचा कि ऐसी बाजीगरी अमरके सिवाय दूसरेको समझना कठिन है यह उन्हींका कामहै मालूमहोताहै किअमीर सिंहको लगाड़ सुनकर बनकी ओरसे आये और सिंह दुष्टसे उसबनको साफकर आयेहैं और सिंहको माराहै लोगोंको डरनेकेलिये अमरनेउसकीखालमें भुसभरकर एकतमाशाबनायाहै फिरबादशाहसेजाकर अपनी बड़ाईवर्णनकी बादशाहकोभी ज्ञानहुआ और प्रसन्नहोकर जोहरों के संदूकचे मुकबिलको कृपाकिये और खिलअत और भारीमोलके जवाहिरदिये औरकहादेखोतो अमीरनगरसे किधर उतरे हैं शीघ्र जावो और हरकारे रवानाकरो और पहले हलको अतिशीघ्र समाचार दो मुक़बिल बादशाह से बिदाहोकर नगर के बाहर निकला दैवयोग से अमरअमीर की सेनामेंपहुंच नगरकी ओरआताथा और बादशाह के पास अमीरके आनेकासमाचार सुनाने जाताथातोदूरसेदेखा किएकमनुष्योंकाझुण्ड गढ़ी सेबाहर निकला और उसबनकी ओरजाताहै अमरने उसका पीछाकिया

और निकट आकरदेखाकि मुक़बिल वफ़ादार हमारा पुराना मित्र है मुक़बिल अमरको देखकर पूछनेलगाकि अमीरका तम्बूकहांपर खड़ा है यहसुनअमर को बुरा मालूम हुआ कि नतो मुझे सलामकी और नक्षेम कुशल पूछीऔरन घोड़ेसे उतरकरमिला अमरमुक़बिलको ओर देखकर कहने लगाकि हे दुष्ट सुनतुझको अमरने बादशाहकी सेवामें भेजाहै या सैरकरने को मुक़बिल ने कहा कि मैंने सुना है कि थोड़ी देर हुई कि यहां अमीर आये हें उनके मिलने को जाता हूं सैरकैसी बादशाहकी सेवासे आताहूं अमरने कहा तूनेबहुत बुराकिया कि उनके मिलने को चला मुक़बिल ने कहाकि क्या तू दीवाना होगया है कि मुझसे बराबरी करता है अमर यह सुन झुझला कर बोलाकि ऐ भाई तुझको भी यह हौसिला हुआ जो मुझसे भी ऐसी बातें करने लगा नौशेरवा ने तीन संदूक मोहरोंके क्यादिये कि तू ख़्वाजा बनगया जिसेतेरा मन ठिकाने न- रहायह कहकर गोफन निकाला और अतिदमका चमकता एक पत्थर अपनी थैली से निकालकर गोफन पर रक्खा और घुमाकर मारा तो मुक़बिल के माथेपर लगने से रुधिरकी धारें छूटनेलगीं मुक़बिल उसी सूरत से अमीरके निकट चलाआया और रोने पीटनेलगा अमीर यह समझकर कि क्या मदायनके लोगोंने इसेरस्तेसे सानकराया है इसभौंहें सिकोड़ीफिर मुक़बिलने अमरका गिलाकिया अमीरने अमरकोबुलाकर कहा कियह कैसी चालहै आपसमें ऐसीशत्रुता रखतेहो अमरने बिन्ती- कीकि यहवही कहावतहै कियहअपनेही मुंह मियामिट्ठू बनताहै मुझ- सेभी सुनलीजिये अमीरने कहाकह क्या कहताहै अमरने कहा किमनुष्य परदेशमेंदूसरे साथीका भरोसारखताहै और यहमुझको मिलाताजस- लामकिया नमिलाजो अच्छेमनुष्योंको चाहिये अबहमदोनों आपकेसम्मुख समानहैं जैसीआज्ञाहोवहकरैं मैंतोउसके मिलनेको खड़ाहुआ और यह गर्वसमेत मुझसे घोड़ेकी बागथामकर आपको पूछनेलगा मैंने उससेकहा किऐ दुष्टतुझको अमीरने बादशाहके समीप सेवाकरनेके निमित्त भेजाहै कि सैरकरनेको यहबहुत बुराकरताहै किसैरकरता फिरता है तो यह मुझसे क्या कहता है कि तू मेरी बराबरी करता है आप इसका न्याय करें और इसकोछोड़ आपके प्रतापहीसे यहदिनइसे ईश्वर नेदिखलाया है कि बादशाह कीदीहुई जड़ाऊ खिलत पहिनेहै और तीनसंदूक मो- हरों के पाये हैं और कौनसी बातमें यह मुझसे अधिक है यह क्याकरै इसको अपनी धनसम्पतिका अभिमानहै यहकहावत सचहै किसीने कहा है कि ईश्वर छोटे मनुष्य को धन प्रतापनदेवे और किसी कमीनेको बड़ा अधिकार न देवे अमीर ने अमरकी बातें सुनकर मुक़बिल से कहा कि इससमाचारमें तेरा अपराधहै कि तुमदोनोंको आपसमें बिरोध करना अनुचित है जाओ आपसमें मिलाप करलो मुक़बिलतो मिलनेपर राजी

होगया परन्तु अमरने इनकारकिया और कहाकि यहधन सम्पत्तिवान औरसेठहै और बड़े अधिकारपरहै मैंबिचारा वे सामान और आधीन और दीन हूं मुझसे और इनसे समानकी कोई बातनहींहै और इनके आगे क्या हक़ीक़तहै मुक़ाबिलने देखाकि अमरतो मिलापनहीं करताहै तोएक सन्दूक मोहरोंका अमरको दिया और कहाकिले भाई अब तो मेरा अपराध क्षमाकरके अपना चित्त मेरी ओरसे साफ़कर अमर तो लोभका सेवकही था मोहरेंले प्रसन्न होकर मिलगया दूसरेदिन ख़्वाजे बुजुर्ग उम्मेद बादशाहके पासगया और अपनेजाने और अमीरकेआने का समाचार वर्णनकिया बादशाह बहुतप्रसन्न हुआ और बिचारके अनुसार बुजुरचमेहर सब अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेने का बिचारकिया बख़्तकने सामानियों को बहकाकर मनाकरनेपर आरूढ़किया किसप्रदीपका बादशाह एकअर्दबाहेकी अगवानीलेके औरछोटे नौकरकी इतनी प्रतिष्ठाकरे ख़्वाजे बुजुरचमेहरने कहाकि हमजा बादशाहका पुत्रहै उसने भी तुम्हरे साथ २ उपकारकिया है कि तुमलोगों को लड़के बालोंसमेत एकभारी शत्रु से छोड़ालिया और उसपर ख़िलअतें आदि देकर बन्दिसे छोड़ादिया है मालूमहुआ कि तुम लोग अति निर्लज्ज हो और कुछभी बुद्धि नहीं रखते हो बुजुरचमेहर के समझाने से वह झगड़ा दूरहुआ और प्रत्येक मनुष्य अपने२ स्थानपर चुपहोरहा फिर बादशाह चार हाथी के तख़्तपर सवारहोकर अधिकारियों समेत सजधजबनाके अमीर उमराओं सहित अमीरकी अगवानीको चले दो कोस सवारीगईहोगी कि सामनेसे कालीरेखप्रगटहुई जब वायुनेउसमैदानकीरज उड़ाकरसाफ़किया तोबीसझण्डे तीससहस्र सवारोंके विदित हुये और उनसवारोंके बीचमेंअमीर स्याहक़ैतासपर सवारदेखपड़ादायें बांहकी ओर बादशाह बायें मल्लदिखाई दिये और अस्त्र धारण कियेहुये बखसजे शब्दकरते बारह सौन चौबीसलचक अट्ठाईस कोनेकासह करते हुये विद्यार्थियोंको साथलिये ख़्वाजेअमर अय्यारभीचलेआतेथे बादशाह ने दायेंबायें आगेपाछे पियादह सवारों की सेनाका तमाशा देखते हुये अमरको देखा कि पन्द्रह सोलहवर्षकाहै और उसकीसुन्दरताईकेआगे कोईसंसारमें नहींहै और सकलगुण निधान अतिशीलवान स्याहक़ैतास पर सवारहै इससजधजका मनुष्य आसमानकेसी संसारमें न देखाहोगा नौशेरवांकी आंखें सबसाथियों समेत अमीरपरपड़ीं अमीर बादशाहको देखकरघोड़ेसेकूदपड़ा और भेंटकरनेकोआगेबढ़ाऔरझुकके सलामकिया औरकैख़ुसरो कोतख़्त जिसेहुश्यासलेगयाथा अपनेशिरपररख छत्र समेत बादशाह को भेंटदिया अमीरका तख़्त शिरपर लेजानेका कारण यहथा कि जब कैख़ुसरोने तूरान विजयकरके ईरानपर क़ब्ज़ाकियाथा तोरुस्तमजालके पुत्रने उस तख़्तको अपने शिरपर उठाकर तीसपग बादशाह के

दर्शनको गयाथा इस कारणसे अमीरने भी नौशेरवांकीबड़ाईकी कितख्त को शिरपर उठाकर चालीस पगगया और उसको फ़र्श उठाकरइस वास्ते लेगया कि मैं रुस्तमसे दशगुना अधिक बलिष्ठ हूं नौशेरवां इसचाल को देखकर अमीरसे अतिप्रसन्न हुआ और अपनेनौकरोंमेंसेएकको आज्ञा दी कि शीघ्र तख्त अमीरके शिरपरसे उतार ले और आपतख्तसे उतर कर अमीर की ओर चला और अमीरको अति कृपादृष्टिसे देखनेलगा अमीरभी दीनतासे अति शीघ्र आगेबढ़ा और बड़े प्रेमसे चरणोंपर गिर पड़ा नौशेरवां ने अमीरके दोनों हाथ पकड़कर गलेसे लगालिया और उसीसमय अपने दोनों पुत्रों हरमुज और फ़रामुर्ज़ को अमीरके मिलने को आज्ञा दी और सब सरदारों से मिलवाया और हर एकका अधिकार और नाम बताया ॥

अमीर का मदायन नगर में जाना और रुस्तम की जगह पर बैठना और उससे अधिक बल और प्रताप दिखाना ॥

लिखनेवाला इसवृत्तान्तको यों वर्णन करता है कि दूसरेदिन ख़्वाजेबुजुर्जमेहरने दरबारके भीतर अमरको बादशाहसेनौकरीकरवाई और उसके गुण और लक्षणकी प्रशंसा बादशाह से की बादशाह ने अति कृपासे अमरकी ओर पांव फैलादिया कि चूमलेवे और हाथको जंघापररक्खा अमरने बादशाहके पांवचूमकर हाथोंको आंखोंसे लगाया और चालाकी से अंगुली से अंगूठी इसप्रकार से उतारली कि बादशाह को खबर भी न हुई और फिर और २ सरदारोंसे मिलनेलगा जब ख़्वाजा गिराजउ-द्दीनबख़्त से मिलनेलगा तो चुपकेसे वह अंगूठी उसकी जेबमें डाल दी उसीसमय बादशाह घोड़े पर सवार होकर लगाम पकड़ कर मदायन की ओर चले अमर अपने साथियों समेत बादशाहके साथ रहा फलांग मारता हुआ चला अमर को इस चालसे मेहतर आतश जो नौशेरवां की सभा में बड़ा चतुर और सरदारोंमें बढ़ाथा अमरकी इसचालसे जल भुन कर कबाब होगया पुकार कर अमर से कहने लगा कि ऐ लड़के गुरुगुड़ही रहा चेला शक्कर होगया यहस्थान तेरे चलनेका नहीं है मेरे आगे तुझे चलना न चाहिये अपने क़ायदे से चल बादशाह के साथ तुझे चलना क्या कामहै अमर बोला कि प्रथम तो तुम बूढ़े हो और मैं जवान और पराक्रमी दूसरे आगे तुम अकेले थे अब मैं भी आगयाहूं आगे तुमको जाना अनुचित है अबछुट्टी लेकरएक किनारा पकड़के बैठिजाइये मेहतर आतश अमर की ये बातें सुनकर आग होगया नर्मगर्म कहने लगा बादशाह और अमीरने दोनोंकी सुनी और दोनोंकी ओर देखकर बादशाहने आतशसे पूछा क्या है आपसमें क्या झगड़ा है उसने वर्णन किया सेवक पुराना चतुरोंका सरदार है और सदासे आपने पालन किया है और यहलड़का मुझको आपके साथचलने नहीं देता नौशेरवां ने कहा

कि अमर तू क्या कहता है क्या तुझको अपनी चतुरता का अभिमान है अमरनेप्रार्थनाकी कि कृपानिधान चतरता केवलबातोंसे मेलनहीं रखती वहगुणसे समझी जाती है इससेबड़ा दौड़धूपका कामहोता है जो आतश को इसकी परीक्षा करनी होतो देर नकरे मैदानपकड़े बादशाहने कहा कि अमर यहबात तो तूने बहुतअच्छी कहीमैं प्रसन्न हुआ यहांसे नगर का दरवाजा दो कोसहै तुमदोनों एक २ तीर लेकर दौड़ो तुममें से जो प्रथम तीरदरवानको देआवै तोवहदूसरेपर बड़ाईलेजावै दोनोंनेअंगीकारकिया बादशाहकी आज्ञानुसार एक २ तीरमिला दोनों हाथ पर हाथ मार करभागे थोड़ी दूर सवारीसे बढ़कर अमर पीछे रहा आतश आधकोस आगे बढ़गया देखनेवालोंने कहा अमरनेनाहक अपनी प्रतिष्ठा खोईअंत में मेहतर आतशआगे निकलगया कि आतशनगरके निकट पहुंचाअमर ने यहसमझ कर कि देखनेवाले मुझपर हंसतेहोंगे उसवरको यादकरके आतशके निकटफलांग मारके पहरेके सिपाहीको तीरदे के आतशके पीछेसे दुलत्तीलगाई और गर्दनको ऐसागांठा कि आतश चित्तगिरपड़ा और रुब शीघ्रताकी चालभूलगया सिरमेंजो पत्थरकी ठोकरलगी एककिर्च खोपड़ीकी उड़गई रुधिरबहचला अचेतहोकर घबरागया और पगड़ी उसकीउतार कर तीरद्वारपालकको देकरकहा कि मुझकोपहिचान रख कि मेरानाम अमर है मेरी चतुरता सबकहीं प्रसिद्ध है और असत्य को अच्छी भांति समझलेता हूं ऐसा नहो कि कुछ लेदेकर कहा कि प्रथम तीर आतशने दिया है और अमरने उसकेपीछे दिया है वहांजो झूठबोलोगे तो अपना किया पाओगे इससे सावधान होजाना लालचका काम न करना रुचर बादशाह से कहना द्वारपालक घबरायाकि यह क्या हालहै अमर पीछे पाओं चलकर बादशाह के समीप जा पहुंचा और सलाम कर मेहतर आतश की पगड़ी दिखलाई बादशाह उसकी चालाकी पर बहुत हंसे और आतशलाज के कारण बादशाह के पास न गया जब बादशाह की सवारी नगर के फाटक पर पहुंची कहा कि सेना साहब किरांकातिल शादकाम स्थानपर उतरे और उसी स्थान पर सबके स्थान सवार और पियादेके स्थानबनें सबने पांति २ से डेराकिया और वहस्थान नदीके कि-नारेथा किन्तु साहब किरांबादशाह के साथनगरमें पहुंचा और वहांसे क़िलेमेंगया और साहबक़िरां के देखनेको सब नगरभर उमड़ाया छोटेबड़े स्थानोंमें खुशीथी कि साहबकिरांने उनलोगों को बन्द से छुड़ाकर सलूक कियाथा जो देखताथा वहअमीरको आशीर्वाद देताथा कि ईश्वर सदा इसकाबनायेरक्खे और इसकातेज और प्रतापसदाहराभरा रक्खेइसीभां-तिसेसाहब किरांबादशाह के साथदरबार की ड्योढ़ीपर आये बादशाह ने आज्ञादी कि मुसल्मानी अमीर तककी दाहिनी ओर बैठें और लोग अपने २ स्थान परबैठें सबसेपहिले अमरएक चौकीपर तकिया लगाकर

बैठगया और मूछोंपर ताव देनेलगा साहब किरांसेबादशाह ने कहा कि तुमको अख़्तियार है जहांचाहो वहांबैठो तुम्हारा घर है अमीरने अपने चित्तमें कहाकि ऐसी जगहपर बैठोकि कोई बराबरीका दावा न करसके कहावत है कि बिल्ली को पहिले दिनमारै जिससे तोता बचे बादशाह के तख़्त के निकट एक चन्दनकी चौकी जड़ाऊ बिछी थी और वह बैठका रुस्तमका था सलामकरके उसी पर बैठ गये जिससमय साहब किरांने ज़ीनपोश उठाकर पांवरक्खा सासानियोंके कलेजे में गांसी सी लगगई चित्तमें विचारकिया कि आजकादिन तकरारकानहीं कल्ह समझलेंगेइस बैठनेका प्रश्न उत्तर करेंगे बादशाहने कई ढेर मोहरों के साहबकिरां के ऊपर नेवछावर किये अमीरनेभी जो अच्छी २ वस्तु लाये थे बादशाहपर नेवछावरकी बादशाह की आज्ञासे कन्दका शर्बत अमीरको दिया गया पहिले साहब किरा ने पिया फिर और २ सरदारों को दिलाया फिर बावर्ची भांति २ के खाने चुनकर लाया बादशाह ने साहबकिरां समेत उसे खाया जब खाना खाचुके तब मदिरा चलने लगी और मंगलाचार की सभा सजी मदिरा देने वाले एक हाथ में मदिरा की बोतल लिये हुये और दूसरे हाथ में प्याला थांभे हुये उपस्थित हुये बादशाहने अति आनन्द में बाजे अमर के गाने के निमित्त आज्ञा दी अमर दाऊदी दुतारे को मिला कर सब प्रकार के राग गाने लगा प्रत्येक छोटा बड़ा कान लगा के सुननेलगा वह रागगाये कि मियांसूरी फीकेहोगये तोता भी कान लगाकर सुननेलगा और सब ओर से प्रशंसा का शब्द निकलता था मियां तानसेन मानो जी उठे उस समय नौशेरवां ने चाहा कि अंगूठी उतारकर देवे गाने का बदला लेवै देखा तो अंगूठी से अंगुली खालीहै क्रोधकरके कहाकि हमारी अंगूठी किसने ली है अभी हाथसे उड़ीजातीहै कहीं गिरतोनहीं पड़ीहै अमरने कहाकि सेवायइनलोगोंके और तो कोईनहीं आयाहै जो वह इस अपराधमें फंसेऔर इतनेआदमियोंसे सुल्तान आलमकी अंगूठीले गया जो आज्ञाहो तो सेवक एक२ की तलाशी ले और आपके प्रताप से उसे निकाले और पुकार २ कर कहनेलगा कि यारो जिसने अंगूठीपाई हो हजूरमें गुज़रा नदेवेइनआम पावेगा नहींतो उसको कष्टमिलेगा इधर उधर ढूंढ़नेलगा और प्रत्येक कहताकि भलाहुआ कि हम दरबार से बाहरभी नहीं गये बादशाहने अमरसे कहातो अमरने शाहकी आज्ञानुसार सबका झारालिया नाम करने के हेत सबकी जेब टटोली और कहा कि मुसल्मानों पर हमें कुछ संदेहनहीं है तुम हमारे लोगों का झारालो इनहीं लोगोंमें ढूंढ़ो जब अमरसब पहलवानोंऔर सेनापतियों का झारालेचुका बादशाहने बुज़ुरुचमेहरको आज्ञादी कि अब तुम अपनी ओर के लोगोंको देखो सबका झारालो और अच्छी भांतिसे सबकीकमर और कपड़े देखो और सबका

भारालिया जब बख्तककी बारीआई उसकी जेबमें अंगूठी पाई और वह सब अमीर आश्चर्यवान्हुये और बख्तक अति लज्जितहुआ अमरने बादशाह से हाथ जोड़कर कहा कि चालाकोंको चोरीकरते सुना था और मंत्रियोंको न सुनाथा नदेखाथा सो आज बख्तकको देखा कि मंत्री भी चोरी करते हैं जोदस बीसलाखकी कोईवस्तुहोती तो संदेह न था इस थोड़ेपर नियत करना इन्हींका कामहै आपकी कृपासे इसके घरमें बड़े २ मोलके रत्नहोंगे उसपर भी यह नियत है किस प्रकारकी क्या दृष्टि में यह आतशका नाती है जो उसकेभांति चालपकड़ी है उस नमकहराम पापी ने सातढेर शद्दाद के आपके पिता से चुराये थे इसने समीप के राजाकी अंगूठी चुराई तो क्याहुआ यह तो अपने नाना से भी अधिक हुआ नौशेरवांने बख्तकको बुराभला कहा और अमीरने कहा कि चोरके हाथ काटना उचित है ऐसे मनुष्यके हाथ काटना और दण्डदेना योग्य है बख्तकने अपनेजीमें कहा कि इस चालाकने मेरेहाथ कटवानेकी तदबीरकी वहांकी कसर मुझसे निकाली और बुजुरुचमेहर की सिफारश से हाथतो न काटे गये लज्जित होनेसे बचापरन्तुदरबारसे निकालागया और आज्ञा हुई किबख्तकको गर्दनपकड़कर दरबारसे निकालदो और फिरकभी दरबारमें न आनेपावे आज्ञाकी देरथी कि उसीसमय बख्तक निकालागया अमीरने थोड़ीदेरके पीछे बादशाहसे विनयकी कि बख्तक का अपराध कुछ नहीं यह चालाकी अमर की है बादशाह ने अमर कीचालाकी देखकर आश्चर्यकिया और बख्तकको अमीरके कहनेसे दरबारमेंआनेदिया औरवहअंगूठी अमरको कृपाकी और उसकीचालाकी से प्रसन्नहुआ अमीरने कहाकि तुम मेंजाकरआराम करो परन्तु प्रति दिन सेव्हियों समेत दरबारमें आयाकरो अमीर दरबार से बिदाहोकर तिलशादकासमें पहुंचा और बादशाह महलमें गये॥

बहराम गिरदखाकान चीनके साथबड़ी धूमधामसे सदायन नगरमें गुस्तहमका आना॥

अब इस इतिहासको यों बर्णन करते हैं कि जब अमीर तिलशाद में गये और दरबारके-वस्त्रउतारे और शस्त्रखोलकर लेटनेका मनोर्थ किया किबख्तक का कामस्थान पच अमर के नाम इस मजमूनका पहुंचा कि पांचसौरुपये नक़द और पानसौका कागज तमस्सुककेभांति भेजा है कि यह रुपया आपकी भेंटका है अतिशीघ्र रुपयाभेजके तमस्सुक फेरलिया जावेगा और कभी २ और भी कुछ आपकी भेंटमें कियाजायगा आप से यह प्रार्थना करता हूं कि अब ऐसा कभी दरबारमें लज्जित न कीजियेगा जिसमें आपकीकृपासे मैंभी सासारियों में प्रतिष्ठित हूं अमर रुपया और तमस्सुक लेकर कृतकृत्य हो गया और चित्तमें कुछ विचार ईश्वरका धन्यवाद किया और कहा कि पहिले पहिल रुपये की सूरत तो देखी कि इतनी द्रव्यहाथ लगी ईश्वरने घरबैठे इतनीद्रव्य कृपाकर

के भेजदी और उसपत्रके उत्तरमें बहुतसा उत्तर किया और रुपयों की रसीद लिखभेजी दूसरे दिन अमीर साथियों समेत बादशाही दरबारमें आये और फिर भी उसी चौकी पर बैठ गये और सासानी अमीर क्रोधित हो इस उपायमें हुये कि किसी भांतिसें अमीरहमजाको बादशाह की दृष्टि में हलका करदेवें यह जो बढ़ २ करबैठते हैं उसकाफल इनको चखा देवें एकदिन अमीर ने विचारकर रीति के अनुसार उसी चौकीपर बैठना चाहा कि एक मनुष्य वस्त्र और शस्त्र सजेहुये दरबार में आया बादशाह से सलाम किया जब बैठचुका तब अमीर की ओर तिरछी चितवन से देखकर बादशाह से प्रार्थना की कि मेरे पिता को आपने काबुलपर युद्ध करने के हेतभेजा औ उनके आसनपर एक अर्बजादे को बैठया यह क्या प्रतिष्ठा और न्यायहै और इसी जगह हमलोगों की प्रतिष्ठा और आबरूहै वह थोड़ेही कालमें बिजय प्राप्तकरके आताहोगा उस समय देखाचाहिये कि यह अर्ब किस मति से इस चौकीपरबैठता है अमीर से यह बात सुनकर रहानगया बादशाह से यहपूछा कि यह कौन मनुष्य है और कहांका रहनेवाला है नौशेरवांने कहा यह गुस्तहमका पुत्र पोलाद है बहिराम मलखाकान चीनने सर उठाया था मैंने इसके बापको उसके पराजय करने के हेत भेजा है सो वह उसको पकड़े हुये लिये आता है और जल्द पहुंचेगा यह चन्दन की चौकी जिसपर तुम बैठेहो उसीके बैठने की है यह स्थान उसीके बैठने को कपाहुआहै इसे तुम्हारा बैठना अच्छा नहीं मालूम होता है कहता है कि यह चन्दन की चौकी मेरे बापके बैठने की है इनके बैठने को क्योंदी है अमीर ने कहा कि मैं भी यही चाहता हूं कि इसका बाप मुझसे बलकरे जो जीते वहबैठे दूसरा उसकी आधीनता करे पोलाद यहबात सुनकरक्रोधित हुआ और तिउरी चढ़ाकर बोला कि रे अर्ब मेरे बाप से पीछेबल करना पहिले मुझसे बलकरके पञ्जामिलाले और अच्छीभांति बलकरले अमीर ने कहा कि बहुतअच्छा पोलाद अमीर के समीप बैठा और अमीरसे पञ्जा लड़ानेलगा अमीर उसका पंजा जीतगये और वह कुरसी से नीचे गिरपड़ा और लज्जित होगया अमीर पर खञ्जर खींच के दौड़ा अमीर ने उसका खंजर छीन लिया हुरमुज ने पोलाद से कहा कि ऐ पोलाद तेरा क्या मनोर्थ है इधर आकर चुपका बैठ बहुत झगड़ा न कर नाहक में और दुख पावेगा दरबार के मध्यमें बे इज्जत करके निकाला जायगा वह नीचा सिर करके हुरमज के समीप जा बैठा बादशाह ने अमीरसे उजर करके दरबार बरखास्त किया संक्षेपयहहैकि प्रति दिन अमीर दरबार में साथियों समेत आतेथे और जब दरबारउठजाता था अमीर तिलशाद कामस्थानपर जाकर बैठतेथे दसबारह दिनके पीछे बादशाह को समाचार मिला कि गस्तहम बहिराम मलखाकान चीनको

चार सहस्र पहालवानों समेत बांधलाया है यहां से बारकोस के दूर- पर ठहरा है आपकी आज्ञा की राह देखता है जिस समय आज्ञाहो आकर उपस्थित हो आपके चरणों के दर्शन करै जो कि वह्लक के डर में अमीर की ओर से मैल भराही था सब प्रकार से उपाय बांधता था कि अमीर की प्रतिष्ठा भंगकरै बादशाह उसकी अगवानी लेने को गया था और देखों २ इसका चर्चा था वह्लकने इस लागपर चाहाकि बाद- शाह को गुस्तहम की अगवानी को लेजावे और यह बात लोगों के चि- त्त में जमाई कि बादशाह जो अमीर की अगवानी को गये तो यह कुछ इनकी बड़ाई नहीं जो कोई शाही नौकर विजय प्राप्त करके आता है उसकी अगवानी करते हैं गर्ज कि प्रार्थना करके बादशाहको गुस्त- हमकी अगवानी के हेत लेगया और आपभी रकाबके साथ चला मार्ग के मध्यमें बुजुरुचमेहर ने बादशाह से प्रार्थना की कि अमीर हमजाका भी साथ चलना अवश्य है उसके चलने से आपकी सेना सुशोभित हो- ती है बादशाह ने उसी समय अमीर को कहला भेजा कि हम गुस्तहम की अगवानी के जाते हैं तमभी आवो और अपनी सेना और साथी साथ लावो बादशाह एक कोस भर नगर से आगे गये होंगे कि देखा गुस्तहम अखशजरीं का पुत्र घोड़े पर सवार मूछोंपर ताव देता झंडों की छायाके नीचे चला आता है और चितवन से ऐसा जान पड़ता है कि खाकान सल्लचीन को बंधुआ करके लानेको छोड़ अपने समान दूसरा पराक्रमी नहीं जानता है उसको देखकर सासानी लोग चित्त में प्रसन्न ऊयेकि अवश्य आगयाहै कि अमीर को नीचे करेगा चित्तके मंसूबे सब निकल जायंगे गुस्तहमने घोड़े परसे उतर कर बादशाहके तख़्तका पाया चमलिया और अपनी बहादुरी और बहराम के पकड़ने और लडने भिड़ने का समाचार वर्णन किया बादशाहने ईश्वर काधन्य बाद कियाऔरगढ़ीकी ओरफिरा गुस्तहम वह्लककीसैनसेपीछे रह गया और बादशाहके संगनगया फिरते समय मार्गमें अमीर मिले बादशाह ने अमीर से कहा कि आपभी गुस्तहम से मिल ते आइये उसकी बातें सुनकर थोड़ीदेर जीबहिलाइये अमीरनेकहाकि बऊत अच्छा मुझेआप की आज्ञामानने में क्याइनकार है आपकी आज्ञामेरे लिये अतिउत्तम है वह्लक का हत्तान्त सुनियेकि गुस्तहमसे अमीरकी चुगली करकेकहा कि और तो और इस अबेजादे को अपने बलका ऐसा अभिमान है कि वह आपकी बैठकपरबैठ गया और फौलादका पंजा भरी ऊई सभामें लचाकरअति लज्जित कियाधन्यहै कि आपआन पऊंचे शीघ्र चले आइये बगलगीर होनेके समयऐसा दबाइयेगा कि थोड़ीसी हड्डियांउसकी नर्म हो जावेंकिजिसमें आपको ससुझे रहै और फिर आगे कभी आपके सामने अभिमान न करे ऐसी बातें जिसमें आगेन करें गुस्तहमने कहाकि ऐसा

ही होगा इतने में अमीर की सवारी आन पहुंची गुस्तहम के डेरे में पहुंचे गुस्तहम अमीर को देख कर पैदल होकर अगवानी के हेत आगे बढ़ा अमीरभी अपने घोड़े से उतरे दोनों बराबर सामने २ चले भेटहोने के समय पहिले गुस्तहम नेअमीर को अपने बल भरदबाया और सहमय बातें कहने लगा फिर अमीर ने भी प्रीति विदित करके उसको ऐसा दबायाकि गुस्तहम की नीचेसे कई बार बायु निकल पड़ी लज्जित होकर अमीर के कानमें कहा कि ऐ अमीर तुम बड़े पराक्रमी हो इसबातको किसी के साम्हने नकहना मुझे कभी लज्जित न करना मेरी और आप की यही प्रतिज्ञा रहैगी अमीर ने कहा कि ऐसा ही होगा गुस्तहम और उसकी सेना भी उसके साथ चली और अमीर उसी स्थान में सैर करने लगे और साथी भी साथही रहे कि एक ओर जो दृष्टि पड़ी देखा कि एक संदूक जंजीरों से जकड़ा हुआ पीछे उसके चार सहस्र सवार साथ चले आते हैं पहरे वालों से पूछा कि इस संदूक में क्याहै वह बोले कि बहिराम मल्ल खाक़ान बन्द है जो बड़ा पराक्रमी संसार में प्रसिद्धहै अमीर ने कहा कि बादशाहों और पहिलवानों को कोई इस भांति से बन्द करताहै जो इन लोगों कोइस भांतिसे पकड़कर सताता है संदूक को पृथ्वी पर रखवाया और शीघ्र अपने नौकरोंसे खुलवाया दे खातो उसमें एक सुन्दर मनुष्य बन्द है और साकड़ों से जकड़ा हुआपड़ा है अमीर ने उसको संदूक से निकाल कर बन्द से छोड़ाया और अतर गुलाबउसके मुंहकर छिड़का और शरबत सेब अनार के जो बहिंगीपर पर साथ थे उसके मुंहपर छिड़काया जब उसको चेत हुआ अमीर ने पूछाकि ऐ बहादुर तूकौनहैउसनेकहाकि आपके घरपरपहुंचकरअपना ब्यौरा कहूंगा अभी मुझमें इतना बलनहींहै कि आपसे बातेंकरूंमेरेमुंह से बातें नहीं निकलतीं हैं अमीरने एक घोड़ा मंगवाकरउसे सवारकिया और जितनेबंधुवेथे सबकोछोड़ दिया औरअतिप्रतिष्ठासेअपनेसाथलेचला और शीघ्र अपने डेरे में पहुंचे और बहरामने ख़ाक़ान चीन को अपने पलंग पर लेटाके सुगन्ध सुघाने की आज्ञादीऔर हरीरह बनवाके पि- लाया और उसके साथियों के वास्ते अच्छा खाना बनवा के भली भांति से खिलाया जब ख़ाक़ान मल्लचीन के चित्त और श्वास ठीक हुये तो अमीर से कहा यद्यपि आपका समाचार आपसे पूछना अनु- चितहै परन्तु तुम्हारे चेहरा से रियाशत और बड़प्पन और प्रताप साफ़२ बिदितहै परन्तु यहां कोई दूसरा इससे योग्यनहीं कि आप का वृत्तान्त उससे पूछूं इस कारण आपही से प्रार्थना है कि आप अपना वृत्तान्त और नाम निशान बतलाइये कि मुझेजीव दानदिया नहीतो कोई क्षणमें मरजाता बहुत दिनों से मैं इस सन्दूक में बन्द था ईश्वर ने मुझे आप तक पहुंचाया वहदिन दिखाया मालूम होताहैकि कुछदिन अभी मेरा

जीना है अमीर ने कहा कि ऐ बहिरामतुभपर गुस्तहमक्योंकरग़ालिब आया और तू उसके बशमें किस भांति से हुआ उसने वर्णन किया कि संग्राममें मैंने उसे गिरादिया और अपने आधीन करलियाथा औरसेना को मार के उसको पकड़ा था चार वर्षतक यह मेरी आधीनता में रहा एक दिन मैं शिकार खेलता हुआ दूर निकल गया और सेना मेरी मुझसे दूरथी प्यासा जो हुआ तो इसने पानी मांगा इसने औसर पाके बेहोशी मदिरा मिलाकर पानी मुझे पिला दिया जब मैं अचेतहो गया अपने सिच सेहियों को जो मेरी सेना में मिले हुयेथे बोलाया और मुझको पकड़के सदूक में बन्दकिया और बिविधि प्रकार का कष्ट दिया यहसुन अमीरने उसको धीर्य और ढारस बंधवाया बहिराम ने प्रसन्न होकर कहा कि ईश्वर धन्यहै कि जिसका सप्त दीपमें कोई बराबरी करनेवाला नहीं है उसकी रक्षामें प्राप्त हुआ और जबवह समाचार गुस्तहमको पहुंचा कि अमीर बहरामास मल्लखानखीनको बधुवोंसमेत अपनी सेना में लेगये उसको सेना समेत बन्दसे छुड़ादिया और उसको पकुनई और सिष्टाचार से अति प्रसन्न किया यह सुन आगहो गया और उसी समय बादशाह से जाकर ब्योरा समेत सब समाचार कहा बादशाह कोभी अमीर की यह बात बहुत बुरी मालूमहुई अमीर को बुलाकरकहा कि ऐअबुअला तुमजानते हो वहरामकासाकोई बैरीसप्त दीपमे न होगा मेराकुछ विचार न किया तुमने क्या समझके उसे छोड़ दिया अमीर ने कहा कि कृपा निधान आप सप्त दीपके बादशाहहोजो पहलवानों और बहादुरों को इसी प्रकारसे छलकरके नीचेकिया करेंगे तो लोग निडर होकर गाली देंगे इतिहासों में लिखा जायगा अबदुल आवद आदि बादशाह होको सभा में चर्चा रहैगी कि नौशेरवां ऐसा नामर्दथा कि उसके समय में पहलवान छलसे बंधुवाकर कैद रहेते थे और उसके नौकर और अधिकारी पहलवान आदिछल करने के हेत आरूढ़ रहेते थे और बहराम कैसा कौनसा पराक्रमी है कि मदान के बीचमें विजय नहीं होसकती बादशहने कहा बहराम कहां है उसेबलवावो दरबारमें हाज़िर करोकिमैं उससेउसके पकड़े जानेका हाल पूछूं उसका वृतान्तमैं अपने कानों से सुनूं अमीर बहिरामको अपने डेरेपर छोड़गयेथे उसीक्षण उसे बुलाया बादशाहने उसकी ओर देखकर कहा कि गुस्तहमतुझे बहादुरीसे पकड़ लाया या नामर्दीसेआधीन और बन्द कियाथा वहरामने प्रार्थनाकी कि आपयहीदेखलेवें कि मैंने चारमहीने से लंघन कियाहै अन्न और पानीको सूरत नहीं देखीहै उसपर संदूक में बन्द और सांकड़ोंसे जकड़ा हुआ बन्धुआ आताथा बाहरकी हवाको तरसताथा जो अमीर मुझे थोड़ी देर कटेरे से न निकालते तो मैं मरचुका था इससे विदित है कि अत्यन्त निर्बलहूं परन्तु इस औसर में भी

गुस्तहम मेरेसामने आवेतो उसके हाथसे तलवार छीनलूंतो दण्डकेयो-
ग्य समझाजाऊं गुस्तहम सासानियों समेत उससमय दरबार में हाजिर
था बादशाहने कहा कि यह क्या कहता है गुस्तहम ने लज्जितहोकर नीचे
शिर करलिया और कुछ भी उत्तर न दिया बादशाहने फिर बहरामसे
पूछाकि अमीरहमज़ा से अपना बलकरेगा वहबोला कि हाजिरहूं पह-
लवानोंका नाम करके मुंह क्यों मोड़ूं अमीरने कहा कि कृपानिधान यह
अभी अत्यन्त निर्बलहै इसमें बलका चिन्हभी नहींहै जो चालीस दिनतक
अच्छीभांतिसे खानापावे तो फिरभी उसीभांतिका होजावेगा उससमय
इसका बल देखनेके योग्य होगा और यहभी जानकर अपना बल मुझसे
करेगा बादशाहको अमीरकी यहबात बहुत पसन्द हुई अमीर और बह-
राम दोनोंको पारितोषिक देकरबहुत कृपाकी और आज्ञादी कि ऐ ह-
मज़ाबहराम तुम्हारेही पास रहै उसकी सेवा और खाना तुम्हारेही आ-
धीनहो चालीस दिनकेपीछे तुमदोनोंको कुश्तीलड़ाके दोनोंका बल देखेंगे
जब चालीस दिन व्यतीत होगये तबइकतालीसवें दिन अमीर बहराम
समेतबादशाह के पास गया और प्रार्थना की कि बहराम से लड़ाइये
भलीभांति खा पीकर तैय्यार हुआहै कुश्तीदेख लीजिये बादशाहने बह-
रामसे पूछा कि तेरीक्या इच्छाहै वह बोला कि मैं हाजिर हूं आपकी
आज्ञा क्योंकर भङ्गकरूं बादशाह ने कहा कि अच्छी बात है हमभी तुम
लोगोंकी लड़ाई देखेंगे अखाड़ा बननेके लिये आज्ञादी वह शीघ्र बनाया
गया अमीर और बहराम बाघके खालको जांघिया और टोपपहिन
लङ्गोट कस तालठोंक परस्पर बलकरने लगे दोनोंने गर्दनोंमें हाथ डाल
कर एकटक्कड़ ऐसी मारी कि जो पौलादपर टक्कड़ पड़ती तो चूना हो
जाता किसीके मस्तक में कुछ न जानपड़ा फिर परस्परमें दोनों के दावं
पेच चले परन्तु किसी का लङ्गड़ किसी से न उखड़ा और चित्त होने की
तो क्याचर्चा थी अन्तमें अमीरने ईश्वरका नामलेकर बहरामको उठा
कर शिरसे ऊंचाकिया बहराम ने कहा कि हे अमीर मालूम हुआकि
तुझमें ईश्वरदत्त बलहै संसारमें तुझसा बली नहींहै आपकेआधीन और
सब प्रकारसे सेवकहूं मुझे पृथ्वीपर गिराके इतने मल्लोंमें लज्जित नकीजिये
अमीरने हलकेसे उसे पृथ्वीपर रखदिया चारोंओर से अमीरकी प्रशंसा
होनेलगी बादशाह ने भी बड़ाई की अमीरने कहाकि ऐ बहिराम अब
बादशाहकी सेवाकरना अपना मूलधर्म जानो और सदाअपना मालिक
समझो उसने कहा कि मैं आपको छोड़ और किसीके पास नहीं रहूंगा
बादशाहने कहा कि तुम्हारे पास रहा तो मेरेही पासहै और दो खिल-
अत मंगा कर अमीर और बहिराम को दिये और अमीर बहराम को
अपने डेरे में लाये और उसको अच्छी भांति आदर और ब्यौहार से
प्रसन्नकिया और विविधिप्रकारसे शिष्टाचार करनेलगा और उसकेरहने

के लिये अलग स्थान बनवादिया अपनी सवारीमें से चालीस घोड़े और बहुतसे ऊंट आदि बहराम को दिये और चौथाई हिस्सा ऊख्वाम की लूटकादिया और एक विनयपत्रमें सब समाचार लिखकर अमरके साथ ख़ाजे अब्दुलमतलब के पासभेजा अब सासानियों का हाल सुनिये कि बख़्तक समेत सबगुस्तहम के निकट जाकर कहनेलगे कि हमलोग हमज़ा के सामने प्रतिष्ठा हीन होगये हैं जो हमज़ा के निकालने के लिये कोई उपाय न करोगे तबतक हम लोगों को चैन न मिलैगा किसी भांति से ज़िन्दगी न होगी दिन दिन बादशाह की कृपा उसपर होती है और हमलोगोंकी प्रतिष्ठा घटती जातीहै गुस्तहमने कहाकि बलमेंतो हमज़ा से कोई न जीतपावेगा परन्तुमैं दो चार दिवस में छल करके उसे मारूंगा उसका चिन्ह भी मिटादूंगा रातको तोयह सलाहहुई प्रातसमय गुस्तहम घोड़े पर सवार होकर अमीर के निकट गया और खुशामद करके आगे आया और अति दीनता से आधीनी करने लगा अमीरनें उसकी बहुत खातिर की और दोनों सवार होकर बादशाह के दरबार में आये और मार्ग में बहुधा बातें मित्रता की करते गये जब अमीर दरबारसे उठकर आपतम्बू की ओर आये गुस्तहमभी अमीरके साथजा-कारतम्बू तक पहुंचा आया प्रतिदिन दोनोंपहर गुस्तहम अमीरके पास जाता और बिविधि प्रकारकी खुशामदियां करता होते२ अमीरको भी गुस्तहम की ओर से कोई खटका चित्त में न रहा एक दिन गुस्तहमने अमीरसे कहाकि आपकी जितनी कृपा मेरे ऊपरहै सकल नगर में विदित है इस सूरत में मेरी सेवा करने और आपकी कृपा होने का समाचार प्रकट करना अवश्य है इस हेतु से मेरी यह इच्छाहै कि मेरे बाग़में चलकर दो चार दिन आनन्द मंगल कीजिये और मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाइये अमीरजो निष्कपट और निश्छलथे उसकान्योता अंगीकार कर लिया वहां पर यह रीत थी कि बादशाह सात दिन दरबार करते थे और सात दिन मकान में स्त्रियों के साथ बिहार करते थे जब बादशाह का समय आन पहुंचा तब गुस्तहम ने अमीर से कहाकि इस सप्ताह में छुट्टी है आपमेरे बागको चलें यह सप्ताह आप भी आनन्दसमेत व्यतीत करें तो और लोगों में मेरी प्रतिष्ठा अधिक होगी अमीर बहराम मक़्बलख़ाक़ान चीन को साथ लेकर मुक़बिल आदि साथियों समेत गुस्तहमके बागकी ओर बड़े प्रतापसे चला और आनन्दित होकर बागके निकट पहुंचा गुस्तहम ने बागके भीतर अच्छे२ वस्त्र आदि अतलस व कमख़ाबके बिछायेथे और बारादरीमें बिछौना बादशाहोंकासा बिछवारक्खा था अमीर उसके हौसिलेको देखकर अति प्रसन्न हुवा और आपनेमित्रों में उसकी प्रशंसा करने लगा गुस्तहमने बिविधि प्रकारकी मेवा अमीर के आगे धरी और मदिरा वालोंको बुलाया और मदिराके प्याले चलने

लगे और प्रत्येक मनुष्य इसतमाशे को देखने लगा और अमीर के आने के पहिले चारसौ पहलवान छिपा कर बैठारक्खेथे और उनसे कहदिया था कि जब मैं तरऊपर तीनहांकेंदूं तबतुम शीघ्र पहुंचकर अमीर और उसके साथियोंको तलवारसे मार डालना और बुजुरुचमेहर और बादशाहका कुछडर न करना संक्षेप यहहै कि जब गुस्तहमनेदेखाकि आधीरात का समय आया और अमीर साथियों समेत ऐसे मदके बश हुआ कि काला और उजला नहीं पहिचान सका उसने अपनी सलाहके अनुसार तीन हांकें दीं और तीनतालियां बजाईं लोग गाड़ से निगले और गुस्तहमके साथहोकर अमीरके शीसपर आये गुस्तहमने अमीर से आखें भिड़ाकर कहा कि ओ अर्बजादे तूने बहुत शिर उठाया था और अमीरों और अधिकारियोंको अतितुच्छ समझताथा देख अबतेरी मृत्यु निकटआन पहुंचीयह कहकर अमीरके सिरपर जापहुंचा और एकतलवारसे मारा बहराम यद्यपि नशे में चूरथा परंतु अमीरपर जापड़ा और आपकोढाल बनगया वह तलवार गुस्तहम की अमीरपरतो न पड़ी बहराम की पीठमें लगी इसओरसे उसओरतक खुलगया सब आंते पेटसे बाहर निकल पड़ीं मुक्कबिल ने चतुरई से मदिरा बहुत कम पान की थी थोड़ा २ पीता था और सभाकारंगदेखरहाथा शीघ्रधनुषधारण करके बाणबर्षानेलगा और इतनेही कालमें सौ जवान पृथ्वी परगिरा दिये बागमें लाशों के ढेरलगा दिये गुस्तहमने चित्तमें विचार किया कि हमजाका कामतो मैंने तमाम करदिया यहांरहना मुक्कबिलके हाथसे मौतमांगना है अपने मित्रोंसमेत जो मुक्कबिल के हाथसे बचेथे जीवलेकर भागकर किसीओर चलदिया जिस समय अमीर का मदद्दूर हुआ देखातो सभाका ऐसा ढंगहोगया है कि सब बारादरी रुधिरसे लालहोरही है बहराम एक ओर पेटफटा सिसकता है और सौ जवानसे अधिक मरेहुये पड़ेहैं मुक्कबिलने वह समाचार वर्णन किया कि उसनेआपके साथअच्छी भांति मित्रता निबाही जिससेआपको मारना चाहा और उसके छलका चर्चा सबकहीं छा गयाकि गुस्तहम ने बागमें बुलाकर न्योताके बहानेसे अमीर को मारडाला बादशाह सुनकर अति सशोक हुआ और शीघ्र हुरमुजताजदार और बुजुरुचमेहर और और बख्तकको भेजा कि हमजा की खबरलो और उनको शीघ्र दवा करो अल्कमयसातूरदक को तीनसहस्र मनुष्योंसे गुस्तहमके पकड़नेके हेतुभेजा और बहुतसा पारितोषिक देनेको कहा गुस्तहम यह सुनकरनगरसेभागा और शाहजादाहुरमुज और बुजुरुचमेहर बख्तकसमेत गुस्तहमके बागकी ओरगये और बागमें पहुंचे अमीरको अच्छी भांतिदेखकर ईश्वरकाधन्यवादकिया और बहरामको घायल देखकर अत्यन्त शोच किया अमीरने ख्वाजे बुजुरुचमेहरसे कहा कि आप वैद्य हैं इसको शीघ्रदवाकीजिये जो बहरामको जान न बचैगीतो मैं मक्केकी सौगन्ध खाकर कहता हूं कि

सासानोको जीता न छोड़ूंगा बुजुरुचमेहर बहरामका कठिनघाव देख कर बहुत घबराया दवाइलाजतो क्या यहसुनकर अचेत होगयाइतनेमेंअति प्रबीन ख़ाजे अमर भी आये और आनन्दित होकर ख़ाजे अबदुल्लातलब का समाचार अमीरको तो सुनाया परन्तु बहराम का हाल देख कर रोनेलगा और अमीरसे कहनेलगा कि क्यों साहबकिरां इसी भांतिका सलूक होता है जिसपर उपकार करते हैं उसेइसी भांतिका दण्ड देते हैं अमीरने कहा कि ऐ अमर यहसमय सिखानेका नहीं है बहराम के अच्छाकरनेका उपायकिया चाहिये अमरने ख़ाजेबुजुरुचमेहरसे कहा कि आपईश्वरकी कृपासेबड़ेहकीमहैं आपनेक्या औषधिबिचारकीहै और मैंभी ग्रोचरहाहूं ख़ाजेने कहा कि इसके भारीघाव लगा है इसकी आंतेंपेट में जावें और अपना स्थानपावें तो टांकेलगें और आतोंका पेटमें जाना कठिन है और सबप्रकारसे इसमें कठिनता जान पड़ती है और दिलपर हाथलगानेसे शीघ्र मरजावेगा फिरकुछ न बनआवेगा और यहहो नहीं सक्ता है कि आंतोंमें हाथ न लगाया जावे और घावसीनेका कोई उपाय होजावे अमरबोला कि ऐ ख़ाजे यद्यपि आपमेरे गुरु हैं तद्यपि बैद्यहोना अति कठिन है और आज काल कोई मनुष्य इसगुण में निपुणता नहीं रखता है यहकहकर एक छुराजेबसे निकाल बहराम को दोनोंपांओं से दबाकर हाथपेटकी ओरबढ़ाया ख़ाजेबुजुरुचमेहर ने अमर से पूछा कि क्या मनोर्थ है अमरने कहा कि जितनी आंतें बाहर निकली हैं इनको हाथकी सफाईसे साफकरदूंगा जिसमें घाव सिया जावे फिर मलहम लगाकर अच्छा करदूंगा ख़ाजेने यह सुनकर आश्चर्यकिया कि यहक्या कहता है इसबिचारकी जानलेनेका मनोर्थकिया है बहरामने अमरकी जोये बातें सुनी सन्नाटेमें आयाजिन्दगीसे निरासहुआ और अत्यन्त घबराया ठंडीसांस ज्यों उसनेभरी कि सब आंतेंपेटमें अपने२ स्थानपर जा पहुंची अमरने ख़ाजेसे कहा कि लीजिये अबतो आपका अभिप्राय प्राप्त हुआ आप देखिये कुछभी कठिनता न पड़ी टांकेदीजिये घाव सीलीजिये बुजुरुचमेहरने अमरकी बुद्धिकी प्रसंशाकी और देखनेवाले हसतेरबेचैन होगये ख़ाजेने बहरामका घाव सिया और शर्बत पिलाने की आज्ञादी कि बेकाररुधिर नष्ट होजावे और अमीर से कहा कि बहराम के हाथ पांव बंधवाइये कि हिल न सके नहींतोटांके टूटजावेंगे उससमय यह न बचेगा और मैं प्रतिदिन दोनोंकाल देखनेको आयाकरूंगा और मनलगाकर इसकी दवा करूंगा यहकह कर बुजुरुचमेहर और बलक और हुरमुजताजदार अमीरसे बिदाहुये और अपने घरको चले अमीर बहरामको प्यारकरता था अपने मित्रोंसमेत वहींरहा बुजुरुचमेहरने यह सब समाचार बादशाहसे कहा बादशाहने कहा कि ऐ ख़ाजेयहां बगदादसेअच्छा कोईस्थान नहीं है और उस मकानसे उत्तम नगरमें और

कोई मकान नहीं है मैं चाहताहूं कि हमज़ाकोवहां कुछदिनरक्खूं और अपनी सामर्थ्यभर उसका आदर और शिष्टाचार भीकरूं और कुछवस्तु उसेदेवें कि उसकेचित्तका शोचदूरहो ऐसा न हो कि हमज़ा समझे कि मेरी सलाहसे यहकाम हुआ है और मुझेइतना दुःख दिया है और मैं ईश्वरकी सौगन्धखाकर कहताहूं कि गुस्तहमके इसमनोर्थका हाल मुझे कुछ नहींमालूमथा और मैंने इसवृत्तान्तको सुनतेही प्रति स्थान उसकेपकड़नेके हेत मनुष्यभेजदिये हैं और सब ओरपरवाने और हरकारे भेजे हैं यहकहकर उसी समय अमीरपर पुण्यकरने को सामान भेजा अपने आनेका मनोर्थभी किया दूसरेपहर बुजुरुचमेहर जो बहराम के देखने के लियेगये अमीरसे कहा कि बादशाहने आज्ञादीहै कि मैंने छः अधिकारी गुस्तहम के पकड़ने के लिये भेजे हैं और छिपे हुये परवाने और हरकारेभी रवानाकिये हैं जिससमय वहदुष्टआवेगा उसीसायतउसका पेट फाड़कर भुसभराजावेगा और मैं ईश्वरकाअत्यन्त धन्यबाद करता हूं कि तुमको उसखलके हाथसे किसीप्रकारका दुःख नहींपहुंचा ईश्वर ने बड़ीकृपाकी और यहवस्तु आपको दीहै और कहाहै कि हमारी ओर से बहरामकाभी समाचार पूछना और मुझसे दवा करने को बहुत ताकीद कीहै कि ऐसा उपाय करो जिसमें बहराम का घाव जल्दी अच्छा होजावे और कहाहै किअबमेरी यहइच्छाहै कि इससप्ताहभरहमज़ाको लेकर बग़दाद की सैरकरूं और वहीं मित्र और उमराओं समेत रहूं किन्तु बख़्तक और अमर नहीं क्योंकि ये दोनों उपद्रवीहैं अमीरने मानलिया दूसरेदिन अमीरको बादशाहने बग़दादमें जाकर बुलवाया और अपने मसनदकेनिकट अमीरके लिये बैठका बनवाया साहबकिरांआदी और मुक़बिलको साथलेगये बादशाहके ख़ासपहुंचे बाग़को देखा कि चार कोसका लम्बाचौड़ा और बहुतसुशोभित है और इसबागकी प्रशंसा इतिहासकेबड़े होनेके कारणसंक्षेप वर्णनकीगई क्योंकि पहले इसबागकी तारीफ़ होचुकीहै अमीर बादशाह के दायेंओर हुरमुज़ताजदार के गोदमें बैठे और मुक़बिल बुजुरुचमेहरकी बाईंओर बैठे और नाचनेवाले सजधज से आये और सभा सब प्रकार से शोभित हुई मङ्गलाचार होने लगा पहिले दिन बादशाह ने एक बारादरी में आनन्द किया जबदिन व्यतीत हुआ और सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा उदय हुआ उससमय मदिरा के प्याले चलनेलगे बादशाहने एक प्याला मदिराका लेकर अपने हाथ से अमीर को कृपा किया अमीर सलाम करके उसको पीगये फिर तो और लोग घूम२ कर और भर२ करमदिरा देनेलगे यहांतक किसबके सब नशेमें मग्न होगये और वेश्यादिक नृत्य करनेलगीं और इसप्रकारसे गायाबजाया कि सबके सब चित्रसे लिखे होगये अब आगेका समाचार सुनिये कि जब अमर अय्यारने एक रात दिनतक अमीरको न देखा घ-

उड़ाकर मकान से बाहर निकला ढूंढ़ते और खोज करते हुये बाग के निकट पहुंचा वहां देखा कि आदी सजे सजाये कुरसीपर बैठा मदिरा पी रहा है और लोग सकल प्रकार की गजकें उसके पास ले आते हैं वह प्रसन्न होकर खाता है और ऐसा प्रबन्धहै कि पक्षी भी बागके दर-वाजे तक उड़ कर जा नहीं सक्ता है लोगों से पूछा कि यह बात क्याहै अमीर तो बाग़के भीतर हैं आदी क्यों बाहर बैठा है किसीने कह दिया कि बादशाह की आज्ञा है कि अमर और बखूक बाग में न आने पावें इस निमित्त अमीरने आदी को दरवाजे पर बैठाया है अमर आदीसे सलाम करके कुरसी पर बैठगया आदीने पूछा कि ख्वाजे किस हेत से आपआयेहैं बोला कि दो दिनसे आपको न देखाया आखोंमें अंधियारा छा गया गिड़ता पड़ता तुम्हारे देखने को आया हूं यद्यपि आप मुझको भूलगये परंतु मैं नहीं भूला आदीने मदिरा और कबाब अमर के आगे खानेके निमित्त रखदिया अमरने एक प्याला पिया और आदीसे कहा कि आज मैंने एक लाल मोल लिया है देखो तो मैं ठग तो नहीं गया आदी अपने मनमें प्रसन्न हुआ कि अमर मुझे जौहरी जानता है तब तो लाल परखवाने आयाहै ऐसा रत्न मेरे देखने के हेत लायाहै आदी बोला कि ख्वाज़े तुमसे जौहरी कौन होगा तुमको कौन ठग सक्ता है अमरने जेबमें हाथ डालकर मुट्ठीभेरेत निकाली और आदी की आखों में झोंकदी आदीतो आंखें मलने लगा और लोग घबरा कर आदीको और देखनेलगे और उसके मुंह और कपड़ों की राख झाड़ने लगेअमर कूदकर बागमें गया आदीने झटआखें धोकर पोंछी और गर्द गुबार से साफ किया और सब लोगों से पूछा कि अमर कहां गया कोई न बता सका कि किधर कोगया आदी समझा कि मेरे डरसे भागगया बागको अमर देखकर प्रफुल्लित होगया कि उमर भर ऐसा बाग देखा सुना न था सैर करता हुआ उस महलकी ओर गया जहां बादशाह और अमीर बैठे हुयेथे और उस महल के निकट एक सुन्दर नहरथी उसी स्थानमें एकवृक्ष लगा हुआया उसके तले बैठ कर दुतारा मिला कर गानेलगा अमरका गानामृतकको जिलाताथा अमीरके कानमेंजो उसकी तानका शब्दगया तो कहाकि हमने आदीको मना कियाथा कि अमरको बागमें न आने देना फिर यह यहां क्योंकर आयाजाओ आदी कोतो बुलालावो बादशाहने अमीर को क्रोधवान देखकर कहाकि आदीको बुलाना कुछ काम नही है हमने अमरका अपराध क्षमा किया अमरको बुला लाओ उसके बुलानेके हेतचोबदार भेजो जो अमरको बुलावे चोबदार अमीरके कहने से अमर के निकट गया और कहा कि तुमको बादशाह बुलाते हैंउसने उत्तर दिया कि जिस सभा में बादशाह और अमीर से लोग बैठे हैं वहां मुझ दुखिया का क्या कामहै जोचालाक हूं और ऐसीसभा

जहां विविधि प्रकारके राग औररङ्ग और मंगलाचार होरहा है वहां दीन दुखिया का क्याकामहै मैंने बगदादकी प्रशंसा सुनीथी इसनिमित्त मैंभी आया हूं और एक कोने में बैठा हूं और फूल का खिलना और बलबुलों का बोलना सुनरहा हूं मैंजो जाऊं तो कदेचित् किसीका चित्त मुझसे अप्रसन्न होजावे तो मैं उसकेहाथसे कष्ट सहूं इससे अच्छाई और भलाई केवल अलगही बैठने से होती है॥

दोहा॥

इस संसार में स्वर्ग है एकान्तहि केमाहि। सङ्गति बुरी है नर्कतें ताते केहिविधि जाहि॥

चोबदार जवाब हो कर फिर आये और उसकी बातें बादशाह के सामने वर्णन कीं बादशाह सुन कर अत्यन्त हंसे और वहां के सब लोग हंसते २ लोट गये बादशाह अमीर का हाथ पकड़े हुये महल से बाहर आये और फुलवारी की सैरकरते हुये उसओर को चले कि जहां अमर बैठागारहाथा अमरने देखा कि बादशाह और अमीर सभासमेत इधर को आते हैं एकफलांग मारकर बादशाहके चरण छुये और आशीर्वाद देकर कहने लगा कि मुझको आपसे यह आस न थी कि मुझे सभा में आने के हेतु मना करेंगे और हमजा को तो क्या कहूं यहतो बड़े मित्र पालक औ सुशील हैं कि अकेले मजे उड़ाते हैं और थोड़े से समाचार पर जीवारों को भुलजातेहैं बादशाह हंसपड़े और अमरका हाथ पकड़ कर महल में ले गये जब तख्त पर बैठे अमर को मदिरा बांटने के हेत आज्ञा दी अमर प्याला भर २ कर पिलाने लगा रात भर तो मदिरा पान में व्यतीत किया जबसवेरा हुआ उससमय अमर नये२ सप्तबन्द को जोड़ कर ऐसा बजाया और अति मृदुवैन से गाया कि बादशाह और अमीर सभा समेत फूट२ कर रोनेलगे और रूमालपर रूमाल अमरपर वरषने लगे और बादशाह ने मोतियों से अमर का दामन भर दिया और बहुत कुछ पारितोषिक दिया और वह महल बहुत सुन्दर सुशोभित सजा हुआ था वहां अमीर को लेकर जा बैठे अब दो बातें बख्तक की मैं वर्णन करके सुनने वालों को हंसता हूं वह बुगदाद में अमर के आने की खबर सुनके अचेत हो गया पेट पकड़ के फिरने लगा कि यह क्या अन्धेर है कि अमर बगदादमें पहुंचा और मैं न जासका ईश्वर जाने अमर जब मुझे वहां देखेगा तब मेरे निमित्त क्या करैगा यह शोच कर कुछ कमखाब आदि के थान नाव में रखकर घर से बाहर निकला दरवाजे पर पहुंचा आदि से मिलाप करके मित्रता विदित करने लगा आदोने पूछाकि आप कितहेत आये हैं कहा कि आप के निमित्त कुछ पदार्थ भेंट लाया हूं इसे अङ्गीकार कीजिये और मुझे कृपा करके बाग के भीतर जानेदीजिये आपकी मुझपर बड़ी दयाहोगी आदोने यह सुन कर अत्यन्त क्रोधकिया और जलभुनकर कहनेलगाकि बख्तक क्योंअभाग्य

दया आई है मुझेतूने लालची बनाया कि लालच देखाकर बागमें जाऊं जो तुझे प्रतिष्ठा समेत घर जाना हो तो अच्छी बात नहीं तो अभी तुझे सिपाहियों से निकलवादूंगा बख्तक मानहीन होकर घर फिरगया दिन भर तो रोधो काटा जब रात्रि हुई एक नमदा ओढ़ कर और बगल में बकुचा अपने कपड़ों का चोरों की भांति छिपा बुगदाद की ओर गया और दीवारके नीचे पहुंचा और गठरी तो बागके भीतर फेकदी और आप नाबदानके मार्गसे घुसा अब ख़ाजे अमरका हालसुनियेकि उसे सजे हुये महलमें बादशाहकी आज्ञासे मदिरा दे रहाथा कि पसुली फड़की और ढिठाईकी आग हृदयमें भड़की अर्थात् चित्तमें यह विचार किया कि इस भांतिसे गुस्तहमने भी अमीरका न्योता कियाथा ऐसा न होकि वही सामानयहांभी हो औरजगह चलकर हाललेना चाहिये इधरउधर देखातोकोईबहानाकरकेमहलसेनिकला और रविशोंपर फिरनेलगाओर फुलवारीकी सैरकरता इधउधर देखता हुआ दरवाजेके निकटजा पहुं-चा आदी उसीसमय किसीसे कहरहाथा कि आज बख़्तक मुझे घूसदेनेको आयाथा मुझेभी अपनेबापके समान नमकहराम समझकर लालचसेबाग में जाया चाहता था यहबात जब अमरने सुनी चौंकउठा जिससमय ब-ख्तक इसमनोर्थ से यहांतक आयाथा तो अवश्य किसी न किसीभांति से वह बागमें आवेगा अब अच्छी भांतिसे झाड़ीआदि सब देखनेलगा और बागमें ढूंढना आरम्भकिया एकदृष्टि उसकी गठरीपर जापड़ी दूरसे दे-खा कि गठरी दीवारके तले पड़ीहै उसेजो खोला तो उसमें बख्तकके कपड़े दीखपड़े उसका मनोर्थ पूर्णहुआ अति कृतकृत्य होगया फूला न समाता था गठरी तो एककोने में वृक्षोंके पत्तोंमें छिपादी और आप ढूंढनेलगा कि इसबाग में किधरसे आनेका रस्ताहै यहां कब किसीका निबाहहै जो ध्यान लगाकर नाबदान में देखा तो कोई मनुष्य शीसनिकाल कर इधर उधर देखरहाहै और फिरशिरको खींचलेता है समझा कि यही बख्तक है समझा कि यह वही निर्बुद्धिहै ख़ाजेअलफपोश जो बागवानोंका मा-लिक था उसकेपास जाकर कहा कि तू सुखनींद लेरहा है वहां बागमें एकचोर नाबदानके मार्गसे घुसाचाहता है मैंने आहटपाकर तुझे खबर दीहै अब तू जान और तेरा कामजाने वा और जो किसी प्रकार की ढील हुई तो तूहै और बन्दीखानाहै वह घबराकर कुछमाली साथलेकरबेलचे समेत उठा और बागकी दीवारकेनीचे लुकरहा ज्योंही बख्तक नाबदान से बाहर निकला मालियोंने लिपटकर पकड़लिया यद्यपि उसने बहुतसा कहा कि मैंबख्तकहूं किसीने न माना और एकवृक्षकी डालमें लटकाकर मारपीट करनेलगे अच्छीभांतिसे उसकी खबरली जब अच्छीभांति से ह-ड्डियां बख्तक की नर्म होचुकीं और पीठ और पसुलियां फूलचुकीं असर ख़ाजेअलफपोश से पुकारकर कहनेलगा कि ख़ाजेअलफपोश क्याहै यह

हल्लागुल्ला कैसाहोता है उसनेकहा एक चोर पकड़ाहै और उसेवृक्षमेंबां-
धाहै बख़्तक ने जो अमीरकी आवाजसुनी अमरको पुकारा और दूसरी
ज़बान में कहनेलगा कि ख़ाजेअमर इनदुष्टों के हाथसे छुड़ा मैं उमरभर
तुम्हाराउपकार मानूंगा किसीकाममें तुमसेमुंह न फेरूंगाअमरने ख़ाजे
अलकपोशके निकट आकर कहा और बख़्तकके छुड़ानेके लिये सिफ़ारश
करनेलगा कि सच यह बख़्तक बादशाह का मंत्री है ईश्वरने इसे किस
दुःख में फंसाया शीघ्र छुड़ादो जितने बागवान थे सबकहनेलगे कि ख़ाजे
साहब यहआप क्या कहतेहैं बख़्तककीक्या कमबख़्ती है कि इसप्रकारसे
नङ्गाहोकरनाबदानकेबीचमें होकरआवेगा वहबादशाहके निकट रहता
है आपको क्यों चोरबनावेगा यहठीकजानो कि यहचोरहै और यहबड़ा
पराक्रम करके आया है बाग में आनेका मजा तो चक्खे और जो तुमने
कहा उसेभी हमने मानाकि यह बख़्तकहै तौभी इससमय नहीं छोड़ेंगे
प्रातःकाल में बागसे बाहर न जानेदेंगे बादशाह के सामने जैसा होगा
वैसा होगा बख़्तक ने अमरसे कहा कि मेरेवस्त्र देते तो मैं पहिन लेता
अमरने कहा कि मैंतेरेवस्त्र नहींजानता कि कहांहैं और जो इन लोगों
ने लिये भी होंगेतो इनसे मेलभी नहीं है जो उनसे दिलवादूं और तुझे
पहिनादूं यहकहकर अमर बादशाहके समीपगया तमामरात मदिरा
बांटतारहा जब प्रातःकाल हुआ तब बादशाहसे विनय की॥

सोरठा॥

ऋतुवसन्तकी आहि बाग महक सबही रह्यो।
सुमन लिये क्या क्याहि बुल २ मृदु बोलत बचन॥

ठण्ढी वायु चलरही है और प्रातःकाल फूलफूलरहे हैं बादशाहकेजी
में आया कि अमीरका हाथ पकड़कर सभासमेत बागकी सैरकरनेकेलिये
चलें और अमरभी साथहोकर बादशाहको उसीओरलाया जहां बख़्त-
क नङ्गा वृक्षमें बंधाहुआ था बख़्तक बादशाहको देखकर गुलमचानेलगा
कि कृपानिधान मालियोंने मेरा यहहालकिया और उधरसे ख़ाजेअल-
कपोशने आकर विनयकी कि रातको एकचोर नाबदान के मार्ग होकर
बागमें आयाथा नौकरोंने उसेवृक्षमें बांधरक्खाथा जब चारचोट की मार
पड़ी तब कहता है कि मैं बख़्तक बादशाह कामंत्रीहूं कुसमय के कारण
यहां आनफंसा हूं बादशाह और अमीरने जो ध्यानकरके देखा तो सच
मुच बख़्तक वृक्षमें बंधाहुआ देखपड़ा अमरने बढ़कर कहा कि आजबाग
में नया फूलफूला बख़्तकतो बड़ासमझदार और बुद्धिमानहै उसकी क-
मबख़्तीथी कि यहां आता और आपको आफ़तमें फंसाता शायद कोई
भूत उसके भेषमें आपको दिल्लगी और तमाशा दिखारहाहै और संदेह
नहींहै कि कुछदेरके पीछे उड़जावे फिर इसस्थान में किसीको देखनपड़े
अमर यह कहरहाथा और बादशाह सैरकरतेहुये आगेबढ़े तो मीरअ

ने मनमें विचारकिया कि देखनेसे जानाजाता है कि इसमें असरकाभी मेलहै आपकी यहांभी बुद्धिविशेष प्रकटहै बख्तक को देखकर बादशाह खिलखिलाकर हंसा और जितने हाजिरथे सबहंसीमेंऐसे बेचैनहुयेकि हं-सते२गिरपड़े अमीरने उसको खुलवाकर आफतसे छुड़ादियाऔर उसकी देहदेखी तो तमाम शरीरमें घावकेसिवाय कुछनज़र न आया शरीर से रुधिर बहरहाहै चांदफंसी होगईहै बादशाहने क्रोधवान होकर कहा कि इसीतरह से इसेयहांसे निकालदो अमीर ने उसका अपराध क्षमा करवाया और उसकेबस्त्रअसरसेतीनसौरुपयेको मोललेकरपहिनाये और दिलासा दिया बादशाहने बागहश्तबुर्ग जो बुगदाद के बीचमें नग के स-मान बनाहुआ था उसेदेखनेकी इच्छाकी और उस बागमें अमीर और बुजुरुचमेहर औरहुस्समुत्ताजदार और मुक्तबिलबख्तकऔरसबसरदारों समेतगये और कहने और देखनेमें वह नामके समानथा उसकीबनावट स्वर्गकेसमान थी और अमरने अपनी किताबमें बख्तकका नाम सबसेप-हिले लिखाथा बादशाहके सामने मसखरापन करनेलगा कि कृपानिधान बख्तक बिचारेकी हड्डियोंको मालियोंने बेलचों से मारकर अत्यन्तचूर-कियाहै और शिरमें बालनहींरक्खेअच्छा साफकरदिया है और जहां२ फूला है वहां २ चमकरहा है जो उसकी मोमियाई कृपाहोती तोउस पर बड़ीदयाकीजाती अबतो अपराधहुआ कि आपकी आज्ञाभङ्गकी कि बागमेंआया सो उसकाफलमिला अबइसे ऐसाअपराधनहोगाकभी आज्ञा भङ्ग यह न करेगा यहकहकर फिर बख्तककी ओर शिरउठाया और उससे कहनेलगा कि हाथ जोड़कर प्रणकर कि फिर ऐसा अपराध नहोगा अमर बख्तकको मसखरा सबजगह बनाताथा बादशाहने कहाकि आदी को तो बुलावो जब आदी आया बादशाह ने कहाकि आदी हमनेतुमको धीर्य्य-वान् जानके दरवाज़े का रक्षक किया तिसपर भी बख्तक बागकेभीतर आगया यह सुन आदीने यह प्रार्थनाकी कि कृपानिधान बख्तकका क्या अपराधहै जो आपकी आज्ञाबिना बागमें पांवधरे मेरेनिकटआया था कि मुझसे भेटलो और मुझे बागमें जाने दो मैंने उसको झिड़कदिया वह ल-ज्जितहोकर अपने घर चलागया बादशाहने कहाकि देखो तो वह कौन है बख्तक है या कोई और है आदी बख्तक को देखकर क्रोधयुक्त हुआ औरगर्दन पकड़कर बोलाकि बागसे निकलकर देखियेगा कैसी गत बना-ता हूं और किसभांतिसे आपके साथ सलूक करताहूं अमीरने आदी को मनाकिया कि अब बख्तक से मत बोलो बादशाह ने उसका अप-राधक्षमा किया है अब तुम अपने स्थानपर जहां बैठे थे वहीं बैठो आदी तो बागके दरवाजेपर गया और सभामेंप्याले चलनेलगे मदिराको लिये हुये लोग घूमनेलगे इतनेमें सूर्य अस्तहुआ और चन्द्रमाने अपना प्रकाश विदितकिया सेवकदीपक और फानूस लेलेकर प्रकाशकरनेलगे और मङ्गला

चारी लोग आये गीत राग होने लगे और विविधि प्रकारसे अमीर को प्रसन्नकरते थे जोकि बादशाह सोये न थे उस दम बादशाह की आंख लगगई अमीरभी वस्त्रबदलनेके हेत उसमहलसे बाहरआये मित्रस्नेही भी उनके साथ सैर करतेहुये बागके एक कोने में आये एक नहर वहां पर देखी जिसकी स्वच्छता के आगे दर्पण लज्जित होता था उसका पानी भर्झारियों की राहसे बाहरजाता था मुक़बिल से कहा कि हम स्नानकर के वस्त्रबदलेंगे मुक़बिलने अमीरकी पोशाक उतारी और नई पोशाकबदलने के हेत मंगवाई अमीर उस हम्माममेंनहाने लगे यकायक मलका मेहरंगेज नौशेरवां की पुत्री जो महलके ऊपर भरोखेमें बैठीहुई उधर इधर देखरही थी उसका रूप देखकर अचेतहोगई ॥

दोहा ॥

रज समको शुभरूपने तारा कीन्ह प्रकास।
पुनिखद्योत जो देखही रविसमहोय हुलास॥
सकलबागसो जरउठा रूप बिद्युवत जानि।
फूलहृदसे जोगहै सम चिनगारि निशानि॥

अमीर पर जो उसकी दृष्टिपड़ी स्नेहरूपी बाण उसके कलेजे के पार होगया स्नेहरूपी बाणखाकर चित्तमें बिचारकिया कि मुझको तो इसके रूपने घायलकिया बैठे बैठाये बिरह का घाव और दाग़स्नेह का दिया इसका सावधानी से जाना भलाई नहीं है गजरा गलेसे निकालकर अ-मीर की ओर फेंका वह अमीरके कांधेपर गिरा अमीरने जो उधर देखा तो ईश्वर की रचनाकी शोभा दृष्टिपड़ी ढारस न बांधसका ॥

चौपाई ॥

चन्द्रवदनि देखी तेहि काला। परीते अधिक सजी नवबाला॥
रूप स्वरूप कहों केहि भांती। कोइ उपमा नहिं हृदयसमाती॥

उसको देखकर पानीमेंगिरे मुक़बिलने कूदकर अमीरको सम्हाला और गोदमें लेकरपानीसे बाहर निकाला अमीरने ऐसी बिरहकी आहखींची कि आनन्द रूपी खलिहानमें आगलगगई बिरहकी चिनगारियां चित में भड़कने लगीं और डाहके आंसू नेत्रोंसे टपकने लगे ॥

दोहा ॥

बिरह आग अति है कठिन उदधि होत भसमन्त। पाहनमें जोलागई पुनितेहि मिलेनअन्त

चौपाई ॥

आवत याद दिवस जेहि काला। थे जो रहित शोक जंजाला॥
रहा न आह लाह तन माही। स्वास कठिन व्याप्यो जबनाही॥
आंसू नदी सरिस नहिं बहई। मुंह नहिं पियर कतहु रंग लहई॥
तन विभूत ऊपर नहिं लायो। खाकी सरिस न रूप बनायो॥
कामन लीन कतहुं जगमांही। जो अपनेहि हेत लेलाही॥

निशि दिन रहें अनन्द समेतू। कतहु न देख्यो शोक निकेतू ॥
जल बिन मीन चित्त नहिं भयऊ। सदा प्रफुल्लित बहु बिधि रहेऊ ॥
रोना सेकन जाग्रत जानेउ। भूत वश्य कतहुं न उर आनेउ ॥
फुलहारी शरीर जग रहेऊ। सदा प्रफुल्लित औ सुख भयऊ ॥
डाह आश अरु शोक कलेशू। रहे कीन्ह ताको उपदेशू ॥
बाग जगतको वायु न व्यापो। चितमें चिन्ता कतहुं न कापो ॥
गुच्छा मन कर सदा हुलासू। भयो नफूल कतहु कुम्हिलासू ॥
रोवत देखि कहीं कसरोना। शोक आंसुते कसमुह धोना ॥
चन्द्रबदन कर बिरह वियोगू। कस उर धरें जगतके लोगू ॥
मन चित धर्म बुद्धि अरु ज्ञानू। कस परि हरें बिरह बस जानू ॥
मृग नयनी के बस ह्वै लोगू। सहें अन्याय कठिन जग जोगू ॥
बिरह बसत जगमें कह अहई ॥ बिरह कहत काको जग रहई ॥
अबजो देखि यहे जिय जाना। कठिन बिरह नानाविधि माना ॥
अति है अधम अगम बिरहांगति। होजो वश्य हरें ताकी मति ॥
बिरहा अति असान करहेतू। टूटे ज्ञान धर्म जेहि सेतू ॥
पावक सम अहै बिरह निकेतू। धर्म कर्म जारि ज्ञान समेतू ॥
मारग जेहिं बताय जग कोई। ह्वै बटपराधीन धन सोई ॥
मित्र करें बैरी होय जाई ॥ अस चरित्र जग अहै गुसाई ॥

दोहा ॥

नेह रूप पावक विषय लखो न कौनो भाव। सो पावक उर आइके मम तन कीन्हो घाव ॥

चौपाई ॥

रोदन बारि बहै मुख धारा। सूझै नहिं जग पार अपारा ॥
जरोजात तन संशय नाहीं। कठिन सो पावक या जग माहीं ॥
जल गो इसी आगके माहीं। सत्य कहों नहिं यहै छयाहीं ॥
अस प्रचण्ड जगमें है नारी। लाखों यह फूंके चिनगारी ॥
विपिनि मध्य फरहाद बसायो। शीरी काज कठिन दुख पायो ॥
वामिक पुनि डजरा बस भयऊ। सकल प्रकार दुसह दुख सहेऊ ॥
सो पुनि कीन्ह मोर अस हाला। डारेउ कठिन हृदय जंजाला ॥
नेह मांझ आनद न हुलासू। नहिं सुखपुनि नहिं कछुक सुपासू ॥
तरस रहा चित मोर सनेहू। जापर अहै न सुख कुछ लेहू ॥
होंजेहि वस बिनवहिं सुखनाहीं। बिरहवन्त के हृदय समाहीं ॥
जिव घातक तें पड़ा है पाला। कीजो जाय कि मिलि है बाला ॥
जान बूझके भयो वियोगी। बिरह कठिन ताकर भय रोगी ॥
सुमन सुचित है फूलको रूपा: देखो सदा सनेह अनूपा ॥
नहिं कुछ चाह युवति मन माहीं। कुआं मध्य अब परों अथाहीं ॥
कुबरी केर फ़ेर बस भयेऊ। अन्त पयोधि बिरह बिच गयेऊ ॥

कृष्ण रातें अधिक असूझ । भयो अस हाल जाय नहिं बूझा ॥
धाम बंदि खाना सम लागे । काम सकल देखन चित भागे ॥
कारण यह सुख नाशक केतू । और कछुक दूजो नहिं हेतू ॥
जुलफ के बदले वाम कस्तूरी । थी किमि हीन मीन जो पूरी ॥
मृग नयनी चंद्रवत् प्रकाशी । ताहि देखिनी थान गुणाशी ॥
या केवल मोहि विपति बेगाहू । लीन्ह मोल कीन्हेउ उरदाहू ॥
बहु विचित्र धारतें मोहीं । मरन बदा सोई पुनि होहीं ॥
भौंह कटार फार उर दीन्हा । अगणित कष्ट बास तन लीन्हा ॥
दुसह वियोग बिछोह कलेसू । रहै सहन सब भाँति मदेसू ॥

दोहा ॥

रहै वगावा उचित मोहिं दृष्टि कटीली बान । नहिं कीन्हें फल पायऊं रुधिर करत पोपान ॥
मानुष केहित दृष्टि अस बेगि कटाक्षर देय । मनो कटारी वाढ़िया शान धरेउ अवटेय ॥
उचित रहै बातें मुझे मारों तीर ममान । दुख कछु मोहि न व्यापतो जो करतेउपरमान ॥
चंद्र वदनि के नयन शुभ और कपोलप्रकाश । कतों सरिस चित भाइहै मानत अधिक हुलाश ॥
सिसो चमीइनदमन परजो मरतेहमनाहिं । तम निशिमें सब नखतको किमदिखतेअंकुलाहिं ॥

सोरठा ॥

चक्षुहीन की भांति चाह कूप मुख परगिरा । कूप मांझ धसिजात अच्छाया जो बूड़तो ॥
तनपर थाकेबार सकल सुःख अपनो दियो । वर्णों कौन प्रकार जस दुख व्याप्यो हृदय में ॥
हौंअमान जेहिभांति असजगकोउ दूबर नहीं । अहै कठिन सब भांति अस बलायमें हौंफसा ॥
जेहिमें मेरवामा रहेम कोय जनि फांसिये । दूसररोग हजार पै यामें नहिं होइ कोइ ॥
दिनव्यतीतजोहोय निशआवत धड़काहिया । नेहको नाम जगोय जूड़ो आवत ताहि सुनि ॥

चौपाई ॥

यहि विधि नेहकीन्ह उरघायल । पावक सरिस बागमोहिं थायल ॥
सुगंध फूल ब्रह्मगड नशावे । यहि विधि नेह मांझ दुख पावे ॥
कतहूं रोदन कतहुं मसाना । कतहुं बिलाप सरोलगि ठाना ॥

कवित्त ॥

भावे न धाम न काम हमैं नहिं बाग कि सैरको चित्त चलै ।
नहिं नीद नभूख नप्यास कछू निस बासर शोक हृदयमें हलै ॥
अस नेहके मेहमें भीजो शरीर करे रनहीं केहि भांति टलै ।
कवि कोविद लोग विचार कहैं वह दृष्टि कटारी सदैव सलै ॥
कोइ मित्रस्नेही नहीं जगमें चित व्याकुलताको जो शान्तिकरै ।
वणधाम औ जङ्गल मांझ चणों चण जाऊं नदी तट धाइफिरै ॥
केहि भांति करों चित धीरजसों पुनि शोक कलेशही कैसे हरै ।
कवि लोग कहैं कोउ न्यायकरै फिरयाद कहो केहि भांति सरै ॥

दोहा ॥

कुसमय का गिल्ला करों प्राप्त कछू नहिं होय । वैरीको बैरी कहै यहभी उचित नसोय ॥

मान अम न म शूक को आशिक ऊपर लेइ । वह गाली जो देइ त्यहि तेहि आशीष तु देइ ॥
रूप देश माशूकके जब तक रहै बसेर । कम मलूक यहि भांतिसे रहै यादजेहि ढेर ॥

मुक़बिल ने अमीर को समझाया कि यह स्थान वियोग का नहीं है नये वस्त्र पहिनिये और सभा में चलिये उस समय अमीरने मुक़बिलकी शिक्षा मानली औरवस्त्र पहिनके उसमहलमें गये परन्तु चित्तमें औरही विचार था और उधर मलकामेहर निगारको हाल औरही था ॥

दोहा ॥

गिरी द्वार खटमीच में ह्वै अचेत बहु भांति । जनु काहूके वश्य है विकल परी अकुलाति ॥

दाइयां और लौंडियोने घेरलिया कोई कटोराफ़क़ीरों को पिलाती कोई फूक डालती कोई दुआ मांगती खाना पीना सोना सब बन्दहो-गया कोई हाथ पांव सोहलाती मलकाको जब ब्यौरा हुआ अपनेचित्त में विचार किया कि कहीं यहभेद प्रकट नहोजाय यह नेहकोई दूसरा समाचार न उत्पन्न करै लौंडियोंसे कहा कि चिन्ता करनेका कुछ प्रयो-जन नहींहै मुझे आपही आप मूर्छा आगई अब मैं अच्छीहूं हल्ला गुल्ला मतकरो चित्त में न घबरावो फिर इधर उधर अमीर देखतेथे कि दिन कहीं व्यतीत होवेतो शान्ति होनेका उपाय किया जावे फिर ज्यों त्यों करकेदिन काटा और पहर राततक धैर्य बांधे बैठारहा अन्त में व्या-कुलहुआधैर्य न होसकाबादशाहसे प्रार्थनाकी आजछठीरात है पलक से पलक इसआधीनकी नहीलगी है जोअज्ञादीजिये तो आराम करलूं किसी किनारे बाग़में जाकर सोरहूं बादशाहने कहाकि जाइये अमीर मुक़बिल समेत सभासे आयेफिर झरोखे के तले पहुंचे कोईलगाव ऊपर जानेका न पाया परन्तु एक वृक्ष महल के निकट दृष्टि आया उसकी गली कोठेकी मुडेर से लगीहुई थी मुक़बिल को उस वृक्ष के तले खड़ा करके आप वृक्ष पर चढ़ गये और सतमहला पर पहुंचे ॥

मलिका मेहर निगार से प्रथम मिलाप ॥

चौपाई ॥

नेह नयाकर नया सुभाऊ । औसर प्रति करै विविधि बनाऊ ॥
कतहुं रुदन अरु कतहुं विलापू । कतहुं रुधिर कर पान प्रतापू ॥
कतहुं घाव कर लोन करेरा । कतहुं पतंगा दीप गसेरा ॥
कतहुं गहक कतहूं गहिजाई । दोनों भांति है अधिक भलाई ॥

अब इस वृत्तांतको इसभांतिसे वर्णन करते हैं सब प्रकार से संदेह को हरते हैं विलाप का वृत्तान्त कागज़ पर इस प्रकार से जमाते हैं कि अमीरने डेवढ़ी के ऊपर जाकर देखा कि मलका मेहरनिगार युवति-योंके मध्यमें बैठीहै और बोतल मदिराकी भरीहुई सामने धरीहै शीशे का प्याला हाथमें जमक रहाहै ॥

दोहा ॥

मदिरा यत्न ममोतें भरी है प्याला माहि । शाेभा वर्णन नहिंबने बांटत मद सुखपांहि ॥

परन्तु बोली रूपी आलुओं की लड़ीगंथ रही है नेह की धार हृदय में लहर ले रही है और बिरहकी पावक उरमांक छारही है भारी श्वांस मुंहसे लेती है दिलकोता अमीरने दूरसे देखा जब निकटसे दृष्टि भिड़ाई तब औरही सूरत दृष्टि आई कि जिसके रूपका प्रकाश दृष्टान्त नहीं रखता है और पूर्णेन्दु उसके रूपको देखकर बलायले रहाहै और उसकी ठोढ़ीको जो हारूत मारूत देखतेता मरजाते और स्तनों का जोनीबू देखता ता दांत खट्टे होजाते और उसके शरीर को जो सरो देखता ता अपनेको देखकर लज्जित होजाता कपोलोंने लालाको दागदिया आंखोंने मृगोंको विपिनमें वासकराया और चोटीने संबल को लपेट दिया ओंठोंने कटार को मियानमें करवाया सुआ के भांति जिसकी नासिका इसी प्रकारसे सकल अंगसजा हुआ था ॥

दोहा ॥

करै सूर्य जो दृष्टि वहि सोंह हाेय जवचार । चका चोंध ह्वै जाय पुनि असहै रूप अगार ॥

चौपाई ॥

पूरन चंद्र देख जो पावे । दाग खाय लज्जित ह्वै जावे ॥
यूसुफ जो बिलोकतो रूपा । ताे नहिं जात छोड़ पुनि कूपा
देखत रूप जु लेखा जोई । यूसुफ को न देखनो सोई ॥
यहि बिधि अहै नासिका शाेभा । मोथि लकीर देखि जग लाेभा ॥
लज्जित हाे सुआ निज डर देखो । रूप प्रकाश नासिका लेखो ॥
करण जवाहिर खान लजाई । दर्पण रूप कपोल सोहाई ॥
अधर अरुण बिम्बाफल रूपा । दाड़िम दसन सुहात अनूपा ॥
मुख बरणों केहिभांति प्रकाशू । देखत मन आनन्द हुलाशू ॥
अस विवेक जेहि मांझ निकेतू । उपमा कोउ न मिलै तेहि हेतू ॥
अति सुन्दर ठोड़ी कर रूपा । मनों सरूप रुचिर है कूपा ॥
चित घबराय देखि जो पावे । आपहि आप डूबि पुनिजावे ॥
जो गिरिपड़ै निकरि नहिं पावे । यूसुफनाय देखि रहिजावै ॥
ग्रीव सीव केहि भांति बताऊं । देखैहि बनहि याहि समझाऊं ॥
करमें अरुण लगी है मेंहदी । सोहत बिबिधि भांति की बेंदी ॥
देखि रूप व्याकुल तन भयऊ । रहाते अधिक अधिक ह्वै गयऊ ॥
मन नहिंरहा हाथ में मेरा । नेह कीन्ह जब आय बसेरा ॥
शोक बिछोह धरों कस धीरा । तन अति बिकल अधिक उरपीरा ॥
विधिना निजकर हाथ सवांरे । अंग अंग प्रति गुण अधिकारे ॥
अंगुली चमक दमक छबि भारी । देखत अचरज अति हितकारी ॥
अस्तन छबि बरणी नहिं जाई । मनो अनार युग सुखित सुहाई ॥

योबन अति रुचि करत शिकारा । मारत लोगन विविधि प्रकारा ॥
वस्त्र हटे छाती से जबहीं । लाजवन्त मिमिटत है तबहीं ।
तनो टनो यहि भांति बनाई । जनु नेहक बांधे सुखपाई ॥
वस्त्र स्वरूप रूप अस यानू । वर्णों कैम हृदय हैं मानू ।
आगे लिखों कवन मुखलाई । छवि वरगान बरणी नहिंजाई ॥
पर्दे कर पर्दे में हालू । लज हेत नहिं करत बिगालू ।
कनक खम्भ सम जंघ सोहाई । देखै नर जो सो बलिजाई ॥
मखमल सरिस नरम गति जासू । छुवै जो होय शीघ्र बस तासू ।
फीलो रुचिर बनी अति गोरी । उपमा मिलि न करै जेहिजोरी ॥
यहि प्रकार नख सहित सरूपा । रचना रची अनूप अनूपा ।
नख तारा सम करत प्रकाशू । मेंहदी तापर करत हुलाशू ॥
कंजन अंजे नयन युग सोहैं । देखत तासु सृष्टि इक मोहैं ।
छलवल किये सिंगार समेतू । चाल बिशाल मदन कर हेतू ॥
कटि केहरि सम सोहत नारी । अति बलखात जात सुकुमारी ।
अस सुकुमारि वस्त्र जेहिभारू । चल न सकत शुभ किये सिंगारू

दोहा ॥

नहिं सहि सकत भार कछु असमुकुमारि दुलारि । मेहदो जेहि गरुईलगै आगेहि कहा विचारि ॥

अमीर उसके मनोहर स्वरूपको देखकर आपमें न रहे और भी चिनगारी चित्तमें भड़की मलकामेहरनिगार की सबसहेलियां समझारहीं थीं अपने २ बुद्धिसे धीर्य्य देरही थीं कि इसशोक और रोनेसे नहींमालूम कि कोई दूसरा बखेड़ा न उठै इससे ऐसी बिवसमत होजाओ और थोड़ा आपको संभालो जिसके निमित्त तुमऐसा बिरह धारणकियेहो उसनेभी तुमको देखाहै उसको भी चैनकहां होगा वह तुम्हारे बिछोहमें फिरता होगा कोई न कोई उपाय मिलनेका करेगा इसकारण से मलकाकारोना पीटना दूरहुआ और फितनावानो नेजो मलकाकी दाईकी बेटीथी मदिरा का प्याला मलका के हाथमें दिया कि इसको पियो ॥

दोहा ॥

करु मदिरा को पान तू शोक त्यागु सुकुमारि । वे दिन पहिले नहिं रहैं ये कम रहैं दुलारि ॥

मलका ने कहा कि हम थोड़ी देर पीछे पान करैंगी पहिले तुम तो अपने २ मित्रोंका नाम लेकर पियो थोड़ीसी मेरेहेत भी रहनेदो सब से पहिले फितनावानो ने प्यालाभरा उठाकर असर अय्यार कानामलेकर पिया यह सुनकर अमीरका चित्त घबराया कि असर यहां क्योंकर आया यह सोचताथा कि दूसरी प्रिया मुक़बिल वफादार का नाम लेकर प्याला शराब का पीगई इसी भांति से सब सहेलियां अपने २ स्नेहीका नाम लेलेकर प्याला पीगई अमीरने मनमें कहाकि इसभेदको हमनहीं जानते थे इतनेमें मलकाने भी प्याला मुंह से यह कहकर लगाया कि

जिसने हुश्याम अल्कमेके पुत्र खैवरी को मारा है और कठिन विपत्ति और क्लेशसे तुमलोगों को छोड़ाया है उसकी याद कर पीती हूं अमीर यहसुनकर मनमेंअतिकृत्य होगया पहरभरतक इनसबकी सभाजारी रही और मदिरापान करतीरही मलकाजब प्यालाउठावे तबपहिले साहब किरांकानाम लेवे तबउसेपीवे जबदोपहरसे रातअधिक व्यतीत हुई वह सभाउठगई मलकाभी छपरखट में जाकर लेटरही यद्यपि करोटें लेती थी परन्तु चित्तउसका अमीरकेपासथा नींदक्योंकर आतीधाहैं मारकर रोती जाती अन्तमें रोते २ थकगई साहबकिरांने देखा कि मलका भी सोगई और सखियांअपने२स्थानपर जाकरसोरहीं तोसीढ़ियों के मार्गसे महलकेकोठे परसेतलेउतरा और दबेपांवोंमलका के छपरखटके निकट गया देखा कि मलका सो रही है ॥

चौपाई ॥

नयन खुले सोवत सुकमारी । ताहि बिलोकि भयो सुख भारी ॥
बिरहा सोवत ताकर पाटू । खुले हैं सकल भांति कर ठाटू ॥

देरतक उसकेचन्द्रवत्मुखारविन्दका प्रकाश विलोकाकिया और चित्तमें विचारकिया कि बड़े परिश्रमसे तू यहांतक पहुंचा है अत्यन्तकष्ट सहा है तबतुझे यहांतक आनेका औसरमिला है मनकी हौस तो अब किसी भांतिसेनिकाल किसीहीलासे साहबकिरांने अपनेदोनोंहाथ मुखलतकियोंपरधरे और चाहाकिउसके ओठोंकाचुम्बालेवे और कपोलोंकोभीचूमें तोहाथ तकियोंसेफिसलगये औरमलकाकी छातीसे लगगये मलकाचौंकपड़ी अमीर का तो ध्यान न रहाआसक्त होकर चिल्लानो चोर २ कहने लगीचारोंओरसे लौंडियांजागपड़ीं और हांकसुनकर दौड़ीआईं अमीर ने कहा कि मैं अल्कमेकेपुत्रका मारनेवाला तुम्हारे रूपका मारा हुआ हूं मलका अमीरको पहिचानकर अपने गुलकरनेपर अतिलज्जित हुई और चेरियां बिल्ली करनेलगीं और साहबकिरां को झटपट छपरखट के तलेछिपा दिया लौंडियों को यह कहकर बहिलादिया कि मैंनेएकऐसा नष्टस्वप्नदेखाथा कि उससेमैंडरागई इससेचोरपुकारउठी अच्छा तुमलोग जाकरसोरहो अपने २ स्थान परजावो वेतोनींदकी मातीहीथीं अपने २ स्थानपरजाकर सोरहीं साहबकिरां उनकेजातेही छपरखटके तलेसेऊपर आये और मलकामेहरनिगारकेबराबरबैठेमलकाने दिनकोतो दूरसेदेखा था अबजो पाससे देखा और भी अचेत होगईसाहबकिरांने मुंहसे मुंह मिलाकर अपनीसुगन्धजोसुंघाई तो थोड़ीदेरके पीछेहोशमें आईइतने में प्रतःकाल होगया साहबकिरांने ओसकेसमान नेत्रोंमें जलभरकेकहा कि ईश्वरजो निगहबान है अब मैं ठहर नहीं सक्ता हूं ॥

चौपाई ॥

देख्यो रूप प्रात जब भयऊ । घाव हृदय महं अति करि गऊ ॥

तन मन सकल मोर हरिलीन्हा। कठिन वियोग शोक तन कीन्हा।

भेद विदित होजानेका डर है बादशाहसे सोनेका बहाना करके आ-
याथा जो जीतारहूंगा तो फिररातको आऊंगा तुम्हारे बिछोहमें नाना
प्रकारके क्लेशपाताहूं चित्त लगाये हूं॥

दोहा॥

बेधीरज कतहूं नहीं कीन्ह मिलाप अनेक। सो अब भयो सनेह बस रह्यो न कछू विवेक॥

किन्तु इसघायलकी सुधि न भुलाना मेरेऊपर कृपाकिये रहना चित्त
में ध्यानरखना भूल न जाना मलकाने एकआह सर्द खींची और नेत्रोंमें
जलभरकर बोली कि देखिये इतनादिन कैसेब्यतीत होगा चित्तका धीर्य्य
किस भांतिसे होता है॥

चौपाई॥

ज्यों त्यों निशि बिछुरन कटि आई। दिन कमकटे इंश दुख दाई॥
विरह वियोग कठिन जजालू। विकल अधिक तनमन दुखमालू॥

यह कहकर कहा अच्छा ईश्वर को सौंपा॥

चौपाई॥

राउर निज स्वरूप ले जाऊ। कठिन अधिक तन मन पछिनाऊ॥
बिति है सो मोपर बिति जेहै। शोक बिछोह कठिन दुख पैहै॥

इसके पीछे अमीर विदाहुये उसीभांतिसे कोठेपरसे तले आये और
मुक़बिलको साथलेकर सभामें पहुंचे बादशाह भी सेजसे उठकर बाहर
निकलकर सभाके मध्यमें शोभित हुये और सबलोगोंने दर्शन पाये जिस
समय प्रातःकाल हुआ और सूर्य्यमुखी का फूलप्रफुल्लित हुआ बादशाह
अमीर का हाथपकड़े हुये चमन में आये और सभा के लोग भी उसी
स्थानमें आये अमीर का मनविरहसे स्थिर न था॥

चौपाई॥

अब मन भयो नेह बस मेरा। भावत उजड़ न मोहिं बसेरा॥
उजड़ें जाउं चित्त नहिं लागे। देखि बसेर विरह उर जागे॥

घड़ी २ उठ २ कर अमीर इधर उधर देखतेथे अपना चित्त मलका
मेहर निगार पर लगाये हुये थे और बारम्बार उसके मकान की ओर
दृष्टि करते थे॥

चौपाई॥

आदर अधिकनेहकर भारी। मित्र सकल भूलें एक बारी॥
तनको दशा कहों केहि भांती। अदब बिसारि दीन्ह दुखथाती॥
धीरज धरत रहत मननाहीं। अबकह चैन शोक मगमाहीं॥
रहत रहत बाढ़त डर शोचू। सबबिधि रहत हृदय संकोचू॥

बजुरुचमेहरने अमीरका हालदेखकर ताड़ा कि अमीरका चित्त किसी
से लगगया तो अमरकी ओर इसारा किया उसनेकहा कि मैं आपसे

प्रथम जानगया हूं इसका चित्तकिसी न किसीमे लगगया चित्तकी अधीर्य-ता देखबख्तकने भी अमीर का शोच देखकर विचार लिया कि अमीर किसीको अपना मनदेआयेहैं यहअकारण बेधीर्य नहींहैं बख्तकने बाद-शाहसे प्रार्थना की कि लोग हर घड़ी सभासे उठ २ जाते हैं और फिर लौटआते हैं इससे सभाकी शोभाजाती रहती है आज्ञादीजिये कि जो कोईबिना आवश्यकतासभासे बाहरजायगा उसकेऊपर सौरुपयेजुरमाना कियेजावेंगे बादशाहने इसबातको प्रसन्नकरके अमीरसेकहा किजो कोई उठेगा उसपर सौरुपये जुरमाना किये जावेंगे अमीरने कहाकि यहतो बहुत अच्छी बात है उसपर आप दोबार अकुला २ करउठे और दोसौ रुपये जुरमानादिये ॥

दोहा ॥

गाहक तेरी हाटमें टूटन अधिक विहाल । जोर है मारग तासुको अतिशै कठिन कराल ॥
तेरी मूरत देखिके निज पद उठत न नेक । भीतसरिश ह्वै गयों मैं है तिहार हित टेक ॥

बुजरुचमेहर ने अमरसे कहा कि कुछ ऐसा उपायकिया चाहिये कि जिससे बख्तकसभासे उठजाय और इससमयमें फिरनआनेपावे अमरनेकहा कि यह कितनीबड़ी बात है अभीतो यह एकही बातकेकहनेमें जाता है यहकहकर बादशाहसे प्रार्थनाकी कि इससमयमें अद्भुतलीलाहै जोआप की आज्ञाहो तोमैं अपने हाथसेदोचार प्यालामदिरा केभरकरपिलाऊं बादशाहनेकहा कि इससेअच्छी क्याबात है हमैंभी यही मंजूर है अमर ने प्याला और बातलको हाथमेंलेकर देनाशुरूअ कियाजब तीनचारप्याले बारम्बारबादशाहको पिलाचुका तबहुरमुजताजदारको एकप्यालापिला-कर अमीरकोदिया तिसकेपीछे ख़ाजेबुजुरुचमेहरको एकप्याला पिलाया इसीभांतिसे घमताहुआ बख्तकके मुंहसे प्यालालगाया किउसका मस्तक ठनकउठाकि इससमय अवश्यकुछकारण है अमरसे कहनेलगा कि मैंने कलसेमदिरापीनेकी सौगन्धकी है यहसुन अमरने पुकारकर कहा कि यहअद्भुतबातहै किसबसभाकेलोग औरबादशाहने मेरेहाथसेमदिरापीना स्वीकारकिया परन्तुबख्तक मेरे हाथसे मदिरापीना मंजूर नहीं करता यहनहींजानता कि जो अवलीसमेरे हाथसेपीजाता तो अनेक भांति से हजरतआदमके चरणछूता अभिमानसे सिरनउठाता अमरकीइसबातसे बादशाह समेत सब लोग हंसपड़े और बख्तकसे कहनेलगे कि सबसृष्टि में अमरकेसमान कोई मदिरा बांटने वाला न होगा क्या तुम पर यह बात विदित नहींहै आश्चर्यहै कि तुमइन्कार करतेहो और पीनेमें तकरारक-रतेहो लाचारहोकर बख्तकने अमरसेप्याला लेकरपान किया और जोकि अमरने उसप्यालेमें कच्चाजमालगोटा बहुतअच्छाढूढ़के मंगाकेमिलायाथा एकघड़ीभी नबीतीकि बख्तकके पेटमें मिड़ोड़ाहोनेलगा बादशाहसे प्रार्थना करकेउठा किसेवकआवश्यकता मिटानेकोजाताहैअभीफिराहुआआताहै

जबउससेनिपट करआया एकपलभी न गुजराया कि फिरपेटमें शूलहोनै लगी लाचार होकर फिर उठचला अमर बोला कि अब कहां जाते हो अभीतो बाहरसे चले आते हो भलाई तो है अभीआप आये हैं फिरभी जायाचाहतेहो बखतकनेभी सौरुपये जुर्मानादेकरअपनी हाजतरफाकी दमभर न बैठेऊआथाकि फिरभी दिशाकीआवश्यकतामालूमऊई परन्तु जुरमानेकेडरसेसाधेऊयेबैठारहा जबबऊतआशक्ताऊआ तबतोसाधन सका पाखानेके मार्गहोकर बहकर पायजामेके तलेपांयचोंसे निकलपड़ा अमर तो इसीताकमेंया प्यालेकोहाथसे रखकरबादशाहसे प्रार्थनाकी कि इस समय ऊजूरको नशा है जो बागकी सैर कीजिये तो दूनी खुशी प्राप्त हो बादशाहने कहा कि अमर मेरीभी यही इच्छा है बादशाह अमीर का हाथपकड़कर चमनकी ओर चला सभाके लोगभी सब उठखड़े ऊये और बादशाह के साथ चले बखतक भी पाखाने की आवश्यकता से उठालो गोंने देखा कि बख़्तक की कुरसी सब पाखाने से भरी ऊई है और उसके पायजामोंकी मोहरियोंके मार्गहोकरमैलाबह रहाहैकिरमानो काली न भी तमाम भर गई है अमरने बादशाह से इस बातकी खबरकी बादशाह का दिमाग पहिलेही से बदबू में छागया था यह सुनकर और भी क्रोधकिया और आदी को बुलवाकर आज्ञा दी कि इस मूर्खअविवेकी को जो हमारी संगति के योग्य नहीं है बाग से बाहर निकालो आदीतो पहिलेसे उसपर विष खायेऊये था आज्ञा पातेही बख़्तक की दाढ़ीपकड़के घसीटता ऊआ बाहरलेगया ख्वाजे बुजुरचमेहर ने कहा यद्यपि तूने बख़्तक को उपायके सहित निकाला लेकिन् अमीर को दम परदम बेकरारीअधिक होतीजाती है ईश्वरजाने कि इसका क्याकारण है ऐसा नहो कि बादशाह कुछमनमें जानेतो बदगुमान होवे फिरऔर ही सामानहोवे हाथबांधकर बादशाह से प्रार्थनाकी कि हमजा ऊजूर की क़दरदानी से बऊत यहसानमन्द ऊआ तमाम उमर आपका यहसानमन्द रहैगा अबआप चलके बादशाहत की गद्दीपर बिराजिये ईश्वर की सृष्टि न्याय करनेको आई है वह आशादेखरही है सबआपकी प्रजा आपका दर्शन चाहती है बादशाह को बुजुरचमेहर का कहना बऊत प्रसन्न आया अमीरकोशाही खिलत देकर बिदाकिया और आप न्यायशाला में आया ॥

मलकामेहरनिगार का अमीरके ऊपर अधीर होना और जाना अमीरके डेरे की ओर अमीर की चाहमें ॥

लिखने वाला इसस्नेहके वृत्तान्त को इसप्रकार लिखता है कि साहब क़िरांतिलग्रादकाल स्थानपर जाकर घड़ियां पल २ गिना किया और बिछोह का दिनरात के मिलापकी आशसे व्यतीत किया जिस समय सूर्य ने पश्चिम दिशा में बसेरा किया और चन्द्रमा आसमान पर प्रका-

शित हुआ अमीरने अपने रात के पहिरने के वस्त्र मगाये अतलस का जामा गलेमें पहिनकर कमरबन्द सुनहला काले रंग का कमरमें बांधा शिमला काला सिरपर लपेटकर तलवार और कटारकमरमें बांधीसूफ़ का पाताबा पावों में चढ़ाया उसपर नमदी जूता पहिनकर कमन्द का घेराशाने से लगाया और काले रेशमकानकाब अपने मुंहपर डाला इस सजधज से मुक़बिल को साथलेकर अपनेखीमेसे निकला और मल-का मेहरनिगार की ओरचले मार्गमें अमर छिपाहुआ खड़ाथा फलांग मारकर बोलाकि ख़बरदार हो चोरोंकी तरह कहांजाते हो क्यों मुझ से छिपाते हो तुम नहीं जानतेहो कि मैं पहरादेता हूं अमीरने कहा कि क्यों मेराहरजवरताहै उसकहा ऐ अमीर जानपड़ा किमैं नहींजा-नता हूं और आपमें कुछ कपट रखता हूं तबतो मुझसे अपना भेद छि-पाया मुझे अपनेसे फिरा और बदखाह ठहराया अमीरने कहा कि जो तू कोई ग़ैरहोगा तो मेरासगामित्र और सनेही कौनहोगा किन्तुइस निमित्त मैंने तुझसे नहीं कहा कितू मुझे शिक्षादेगा और मैंअपने बशमें नहींहूं मेरामनकाबू नहींहै क्या करूंले आ तूभी मेरे साथ चल अपनेस्नेही के मार्गमें जाताहूंमनकी घबराहट उसके मिलापसे मिटाताहूं अमरने पूछाकि हुजूर वह कौनहै और कैसी है आदमी जादहै या अप्सरा है जिसकेहेत तुमसाधीर और शान्तमनुष्यबेधीर्यव और बेकरारहोअमीरने कहा कि सुननाअच्छा कि दीखनाचल करअपनीआंखोंसे देख और विधि कृत रूप पर दृष्टिकरलो अमीर अमरसेये बातेंकरते बागदाद की ओर चलेजातेथे और प्रति स्नेहसे पांव बेखटका बढ़ातेथे मलिका मेहरनिगार का हाल सुनिये के अमीरकी चाह में किस कष्टसे दिनकाटा दिन भर शोकमें गुजरा छपरखट में मुंह लपेटेपड़ीरही न उठी न बैठी और यह चौपाइयां पढ़तरही ॥ चौपाई ॥

मांगत वह बर मित्र सनेहू । चरणाहट जगाय मोहि देहू ॥
नरगि सरिस विकल मनमारे । देखत हित चित्र नयन उघारे ॥

न मुंहधोय न खाना खाया न पानी पिया न तकिया पर से शि-रउठाया न कंघी चोटीकी न पोशाक बदली तमामदिन आंसुओंसे मुंह धोया की और अमीरकी चाहमें रोया की खानेके बदले अपना कलेजा खाया की और पानीकेबदले आंसुवों की नदी बहाया की जो किसीको आतेदेखा तोआंसूपी गई कंघी चोटी के बदले नर्म पंजे से बाल बिखड़ा दिये पोशाकके बदले चादरसे मुंहलपेट लिया जो अपने पास किसी को न देखा तो रहशियों की भांति से इधर उधर देखकर आशक्त हो आ-हसर्द खींचकर यह चौपाइयां पढ़ने लगी ॥

चौपाई ॥

बदन हेत मस्त चित अहई । मनघट धार नयन जलबहई ॥

अधरअरुण कोमल मन जासू । विकल अधिक तापर विश्वासू ॥
दाड़िम दशन सोहात अनूपा । दोपक सरिस तपन तन कूपा ॥
मैं तव छविपर सर्बस दोन्हा । खान पान त्यागन करदीन्हा ॥
मद मदिरा बिसारि सब दयऊ । केवल सभा एक उर रहेऊ ॥
मोह कठिन मंत्री हठ कीन्हा । ज्ञान तमाम मोर हरिलीन्हा ॥
तन हमार यह देश भुआरा । नृपति काम तहं भयो रखवारा ॥
विरह विपति दुख कष्टअनेका । कुमति कुकर्म शोच जेहि टेका ॥
सोये कटक लीन्ह निज साथा । केवल मोहिं विचारि अनाथा ॥
दया क्षमा सन्तोष विवेका । सब हरि लीन्ह हंवार अनेका ॥
लाजहीन अति दीन मलीना । विरह वस्यतीहिं मोहिंकरदीना ॥
कहु केहिभांति धरों उरधीरा । व्याकुल अति पियमोर शरीरा ॥
वेगि छड़ाव तासु कर फंदू । सुनो बचन पिय ग्रांनद कंदू ॥

दोहा ॥

बिरह आगि तनमें लगी जरोजात सबगात । वेगि छड़ावो कृपानिधि तनमन अति अकुलात ॥
जबसे मन हरगयो है तबसे नहीं करार । समा सरिश मुख जासु को भयो पतिंगा वार ॥
नेह वारुणीके लिये नयन पात्र करदीन्ह । मःपकसी वाको भयो रोहि तन मन हरिलीन्ह ॥
नेहबोच ऐसी फंसी सर्वस दीन्ह गवाय । रहै बसेरा उजड़मा व्याकुल अहै सिवाय ॥
देखू जो कैसे बचे जोघातक के साथ । यारी सो मैंने करी अगम अधिक है गाथ ॥
कहत सबै यारी विषय चरन धरै जोकोय । स्वपनेहु माभ्रनसुखमिलै अधिक कठिनदुखहोय ॥

लौंड़ियों ने मलकाका हालदेखकर फितनावानोसे कहा कि मालूम होता है कि मलका ने अपना मन कहीं गवाया किजिससे खान पान छोड़ दिया न दिनको चैनहै न रातको आरामहै इसभेदको बिदितकरो और उनसे जाकर समाचार कहो कि वह कुछउपायऔर कोई तदवीर दुःखके दूरहोने की निकालें नहीं तो यह नेह और उसका बिरह दूसरा फूल खिलानेचाहता है इसमें किसी की लाज ढकी नहीं रहने पाती है यह गली २ के तिनके चुनवाता है लड़कों से पत्थर खिलवाता है होठों को सुखाता है आईमतभुलाता है दमपरदमक्लेश और रोदनकरवाता है ठण्ढी सांसै भरवाता है सिर से पांव तक पत्थरों से सर फोड़वाता है कानों में गफलत की रुई भरवाता है शिक्षासुन्ने नहीं देता है संसार में यहरोग बड़ा करालहै इसके हेत यह दोहेकहती हूं सको सुनो ॥

दोहा ॥

नेहकेर पावक विषय फूंका जात शरीर । आंसू से यहकहतिहूं है साथ करु धीर ॥
अतिकराल गतिनेहकी क्षणप्रति बदलतरङ्ग । असपावक यह कठिनहै थिररहतजेहिअङ्ग ॥
यह जो सबसंसारमें सम्पति अङ्ग बनाय । तो पपोल इकदीन हूं नृपति होय हर्षाय ॥
सुन्दररूप औ नेह जो नहिंहोते संसार । भेदछिपा खुलता नहीं यहदृढ़कीन्ह बिचार ॥
यहिजीके आराम का मिलता नहीं निशान । स्वादकछू नहिं पावते तरुणवृद्ध सबजान ॥

नेह आपनो रीतिजो दिखलावत नहिंसोइ । तो पुनियहि संसारमें रहता बसबकोइ ॥
है यामें अतिकठिनता तातेकहौं विचार । नानाविधि दुखजाहिमें तनमें जातकरार ॥
कशिशअधिकयहिमाफहैखींचतबिबिधिप्रकार । तनपाहनममहोकठिनमोमहोतदयामार ॥
असमंकटमें प्राण हैं धीरज मिलत न नेक । रूपनेह ये युगल पुनि जानलेन की टेक ॥
बुद्धिवान जानत इसे जो सर्वज्ञ निधान । नेहबास आशिक हृदय जानो माव न आन ॥
नयन देखने के लिये रूप सरूप निहार । कर्ण बोल के सुनन को निजनेही के द्वार ॥
हाथबाल सुर्भन हिते पांवचलन के काज । दिलवरके दरबारतक और कछूनहिं साज ॥
नेह जानते हमन थे अतिअन्याय निकेत । युवा बेस के मध्य में जीव हमारो लेत ॥
कबथी अस वृत्तान्तते मुझको खबर सुयान । कठिन हृदयके बीचमें मर्तफफोला खान ॥
बड़ाजोड़ बांधतअहै असबिचार गतिमोरि । काहकोंकासेकहौं अपना चरितनिहोरि ॥
लाखजगह तन मन सबै उलझावे करि हूक । नये पेंच के बीच में देत नईनी लूक ॥
नेहकेर असहाल है सबके हृदय में बास । अधिक रमायन मे अहै याकोबास सुवास ॥
अन सरहे संसार में जानबचो केहिकेरि । शक्ति सभी मिटजात है शूलदहै उर घेर ॥
मौतघाट के सरित में इसे दीन्ह उतार । जाते जो निजघाव ते मारेअधिक अपार ॥

चौपाई ॥

अस है नेह जक्त बगियारा । फूक कीन्ह बहुतनको छारा ॥
ताते मानो कहा हमारा । समझो कठिन सकल संसारा ॥
तन गुणज्ञान धर्म हरि लेइ । शोक सदा तनमन कह देइ ॥
भूले पैग कतहु जनि दीजे । इतना कहा मोर सब कीजे ॥

दोहा ॥

यहसब कारण जानके यहिमग कतहु न जाय । लाजज्ञानगुण धर्मसब बेगिनाश होइजाय ॥

फितना वानोनेकहाकि मैंतो नहीं कहूंगी तुम अम्माजान से यह हाल बयान करो मेरे कहनेसे तुम्हारा कहना अधिकहै देखो तो उसका क्या मनोर्थहै अन्तको थोड़ी लौंड़ियोंने मेलकरके दायासे कहा इससमाचार को सुन दाया घबरा कर मलका के निकट दौड़ी आई देखा तो सच सुच मलका का अद्भुत हाल है न खाने पीनेका कुछ ख्याल है सुस्तलपेटे हुये छपरखट में पड़ी है चेहरेसे वहशत टपकरही है दायाने चादरको मुंह से उठाकर कहा कि बेटी भलाई तो है आपका मिजाज कैसा है छपरखट में पड़े रहनेका कारण क्याहै मुझसे न छिपावो अपने चित्तका क्लेश निडरहोकर सुनावो छोटेपनसे मैंतुम्हारी छिपेभेदकी कुंजी जानती रही हूं मलकाने कहा कि यद्यपि लाजआती है परन्तु बेतुमसे कहे भी काम नहीं चलता है कि मेरे कलेजे में आग लगने से तुम्हारा भी चित्त जलता है ऐदा अमीर का नेहरूपी तीर मेरे कलेजे पार होगया है मिलापरूपी मलहम लाकर किसी भांति मेयह घाव अच्छा करती तो इस में भलाई है दाया बोली कि मलका यह ध्यान ध्यान करने का है कि कैसे २ शाहजादों का संदेसा आया और तुमने अंगीकार न किया

और यह मनुष्य मुसलमान दूसरी जात और दूसरादीन का है मेरे समीप उचित तो नहीं है कि तुम उसको गोदमें बैठो मलकाने कहा कि एक नेहके धर्म और गैरके धर्मसे क्या लगाव है उससे क्या सरोकार है यह तुम अच्छी भांति से समझलो कि साहबकिरांके सिवाय बिनाजान मेरी नहीं बचैगी हमारे मनने धीर्य्य को परित्यागकरदिया है यह कह कर एक अम्बरीचा गलेसे उतारकर दायाको दिया जोतीन सहस्र रुपये को मोलमगायागयाथा और उससे कहाकि दायाबहुतकुछ साहबकिरांसे और अपने पास से बहुत कुछ तुझे दिलादूंगी दाया लालच में खाजे अमरसे कुछ कमन थी अम्बरीचा देखतेही लालसुह में भर आई जो जो मलकाने कहा सब मानलिया और यहभी सोची कि मलका को नसीहत क़बूल नहीं होगीतो अपना फायदा क्यों छोड़ू मलका से बोली कि जो यही मरजी है तो उठो हम्माम करके पोशाक बदल गहना पहिन अपनेको बनावो जब यह रात गुजरैगी तबरातके वस्त्रपहिनाकर तुमको साहबकिरां के पासले जाऊंगी तुम्हारा मनोर्थ पूरण करूंगी किन्तुधीर्य का त्याग नकरो नहीतोभेदखुल जायगा इसके जाहिरमें घाटाके सेवाय नफा न पावोगी मलका को धीर्य हुआ उस समय उठकर हम्माम में स्नान किया और वस्त्र आभूषण धारण किया जब घड़ियालीने पहररात का गजर बजाया दायाने मलका को कालेवस्त्र पहिनाये और आप भी मर्दानाभेष बनाया और कोठेपर जोबुर्ज था उससेकमन्दको लटकाकर मलकाकोलेउतरी और तिलस्मादकामका मार्गलिया थोड़ीदूर अमीर का डेरा रहा था कि तीन मनुष्य कालेवस्त्र धारण किये हुये देख पड़े और उसीओर जिधरसे मलका आतीथी आते दृष्टि पड़े मलका औ दाया उनको देखकर आड़मेंहोगईं दोनोंकोदोनो आपको छिपानेलगीं अमीर कीभीनिगाह इनदोनों स्याहपोशोंपर जापड़ीऔर उनकीचालदेखकेमुक़ाबिलसे भारी आवाजसे कहा कि मुक़बिल देखना येदोनों स्याहपोश कौन हैं कि जो इससमयमें बाहर निकले हैं अपनेघरवालों से छिपेहुये किस ओर जातेहैं मलका नें अमीरकी आवाज पहिचान कर यहदोहापढ़ा॥

दोहा॥

जेहिके हित योंजान यह निकलतहै घबराय। इस मारग से कौन बिधि अनजाने निकलाय॥
जेहि के कारण बन गई सिड़ी बावरी हाय। पूछत है अनजान को यह दुखिया को आय॥

मुक़बिल जो निकट आकर देखाकि चन्द्रबदनी मृगनयनी मलिकामेहरनिगार है अमीर को वहींसे पुकारा और आसक्त होकर अलभ्य लाभ पाकर चिल्ला उठा किआपयहां आकर पहिचानें किकौनहै और कहां का मनोर्थ कियाहै किसके ढूढ़नेकेलिये घरसेपांव निकाला है किस२ को यहइच्छा नहीहै कि तेरीखबर मिले हम नंगेपांव तुम्हारे कारण फिरते हैं अमीर जो आकर देखा तो मारेखुशीके उछलपड़ा और ऐसे कृतकृत्य

हुये कि सातोंद्वीप की बादशाहतभूलगये और मलका का हाथ पकड़कर अपने खीमे की ओर चले फिर अमरने आकर सलामकिया और शिर झुकाकर यह बातकही कि हक़ीक़तमें यह तो आपने बड़ाएहसा नकिया हम लोगों को इस समय मुखपर स्याही से बचाया हजरत की कशिश और स्नेह आप को इंचलाई इनके बदौलत हमको भी दर्शनहोगये और मनोकामना पूर्णहुई लिखा भी है कि ॥

चौपाई ॥

जापर जाकर सत्य सनेहू । सो तेहि मिले न कछु सन्देहू ॥

मलकाने मुक़बिलसे पूछा कि यहकौन है और क्या नामहै कहांरहता है मुक़बिलने कहा कि ख़ाजेअमर अय्यार यहीहै इससमय में आपही की मक्कारीका चर्चा होरहाहै मलका उसको देखकर आश्चर्यकिया और बारम्बार उसकी सूरत देखती थी और यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

पूरब में रविहिं उदय क्यों नहिं होत प्रकाश । कौन अहै यहि धाम में मोचक बिना हुलाश ॥

अमीर जब अपने स्थानपर मलका मेहरनिगार को लेकर पहुंचे मलका को अपने गोदमें बैठाया और मदिराके प्यालेको भर२ कर अपने हाथसे पिलाया और मलका एक प्याला और बोतल लेकर अमीर को पिलाने लगी और अमर बैठाहुआ गायाकिया फिर अमीर दाया को बहुत सा धन सम्पत्तिदेकर प्रसन्न करदिया और एककिश्ती जवाहिरात की कृपा की और बहुत सा पारितोषिक देने को कहा ॥

चौपाई ॥

निशिभरि रचो विविधि विधि क्रीला । बरणि न जाय तासुकी लीला ॥

कीन्हेंउ बहुविधि भोग बिलासा । पूजी हौस कीन्ह पुनि आसा ॥

प्रात:काल होनेलगा अमीर अमर और मुकबिलको साथलेकर मलकाको उसके महलतक पहुंचा आया और दूरसे मिलापकावादा किया ॥

दोहा ॥

सुखमिलाप काहे भला जोफिराक नहिं होय । नशा अधिक सुन्दरलगे जाइखुमारजो धोय ॥

जिससमय मलका दाया समेत महलमें पहुंची कोई २ खाजे सराय जो मकानके पहरुआ जागतेथे दोनों स्याहपोशोंको देखकर चोर २ कहकर गुलमचानेलगे जब दिनहुआ कहींचोरका नामनिशान भी न देखपड़ा नव्याबनाजिरने मलकामेहरअंगेजसे प्रार्थनाकी कि कौनकिसके मनमेंबैठा है अच्छेकेउरमें बुरा और बुरेकेभीतर अच्छा सबीक़ौसमें होता है हाल यहहै कि कोई सर्दार शाहजादी के आसपास पहरा देनेको नियतहो कि वह होशियारी से पहरा दियाकरे मलका ने यहबात पसन्द की और बादशाह को इस समाचार की इत्तिला दी बादशाह ने अन्तर तेगजन नामी पहलवान् को चार हजार सवारों से पहरा देनेको नियत किया

अब अमीर की सुनिये कि आधीरात तक मलकामेहरनिगारकी आशा देखी जब मलका न पहुंची और अन्तरतेगज़न का नियत होना पहरेके हेत सुना तो अति कष्ट पाया ॥

दोहा ॥

नरगिस केरे फूलसम पलके मिलतीं नाहिं । ईश ढूढ़ती कौनको कष्ट सहित मनमाहिं ॥

फिर अमीरने कालेबखमांगे अमरअमीरका हालदेखकर रोनेलगाऔर हाथबांधके पांवोंपर गिरपड़ा और कहाकि ईश्वरकेहेत आजसे बाहर न निकलना चाहिये दिनको सम्हालना चाहिये सुनते हैं कि अन्तरतेग़ज़न को बादशाहने पहरा देनेके लिये नियत कियाहै और उसको निगाह-बानी की आज्ञादीहै कहीं अन्तरतेग़ज़न देखपाये और तुमको कुछक्लेश पहुंचाये तो प्रतिष्ठा भङ्ग होजायगी जो कुछ आपने नाम व निशान पैदा कियाहै सबबरबादजायगा और बैरियोंकी बनआवेगीबनीबातबिगड़जायगी यहसुनयातो अमीर रोतेथे या बेअख़्तियार हंसपड़े और कहनेलगेकिअमर क्या दीवाना होगया है जोमुझेमरने से डराताहै तू नहींजानता कि मैं हुश्शाम अल्कमके पुत्रकाबधिकहूं उसदिनको ईश्वरकी कृपासे कब डरता हूं इन बकरियों से कब डरताहूं हां तुझको अपना जीप्यारा है तोतू मेरे साथ न चल घरसे बाहर न निकल यह कहकर मुक़बिल को अपने साथ लिया और मलकामेहरनिगार के महलकी ओर मनोर्थ किया अमरसे कबरहाजाता था पीछे २ अमीरके साथलगाहुआ चलागया जब बागदाद के निकटपहुंचे तो देखा कि अन्तरका पहराहै औरजागतेरहो होशियार रहो कहताहुआ चलाजाता है और उसकेसाथ हरकारे भी बहुतचले आतेहैं एकस्थानपर कुछ घनेवृक्षथे अमीर साथियों समेत उनमेंछिपगये जबपहरा निकलगयातो महलकेनीचे मुक़बिलको खड़ाकरके आपवृक्षपर चढ़गये और फिर भी कोठेपर अमर समेत पहुंचे तो देखा कि मलका बस्त्रोंसे सजीहुई बैठीहै और अमीरकी राह देखरहीहै मदिराकीबोतलें और प्याले आगेधरेहुयेहैं और काफूरके शमा जलतेहैं सब प्रकारसे सुभा लैसकियेहुयेहैं एक तरफमें तरारखूबां मुकबिलकी माशूका और दूसरेमें फितना वानोंदाया की पुत्रीअमरअय्यार की आशनासजो बैठीहै सिवाय इनदोनोंके और जो लौंड़ियां मलका की सहेली और भेद जाननेवाली थीं गानेका साजलियेहुये आज्ञाकी राह देखरहीहैं और मलका उसीमार्ग की ओर आंखें कियेहुये देखरही है और अति आनन्दसे बैठीहै ॥

दोहा ॥

तीर यारके खोज का उरमेंगड़ा कराल । यहि कारण वह देखती नयनन किये बिशाल ॥

दायाने कहा कि बलालूं आज साहबक़िरांका आना कठिन है चार सौ सवारों सहित अन्तर प्रहरा देरहाहै और सबओर पुकारताहैकि जागते रहो होशियार रहो यह सुनके मलका बोली कि ऐ दाया जो

साहब किरां सचमुच मेरा मित्र है तो यह क्या पहरा जो बादशाह की सब सेना पहरादेवे तो भी वह क्षणमात्र में आता है मेरामन गवाही देरहा है कि साहबकिरां थोड़ीदेर में पहुंचता है साहबकिरां मलका की बातें सुनकर मनमें अति प्रसन्न हुये और ऊपरसे तलेउतरे मलिका ने दायासे कहा कि क्यों मैं न कहती थी देखो वह साहबकिरां आये वेयहांके आये कब उनको कलथी अन्तमें अमीर वहांपर पहुंचे ॥

दोहा ॥

मन निज आकर्षण ममुक्ष अप्रचण्ड गनि भान। आपहि आय सनेह बस प्रीतम आयमकान॥

चौपाई ॥

आये धाम प्रेम लखि मोरा। रचना ईश देखु कस जोरा।
कतहुं नहीं कतहूं निज धामा। अहै त्रिलोकत जाकर नामा॥

मलका ने उठ कर साहबकिरां का हाथ पकड़ कर तख़्तपर बिठला-लिया और दोनोंओरसे प्रेमकी बातें होनेलगीं मदिराके प्याले चलने लगे मलका ने अपने हाथ से प्याले शराब के भर २ कर अमीर को पिलाना आरम्भ किया साहबकिरां मलका के गलेमें हाथडालकर मदिरा पीने लगे होंठसे होंठ और छातीसे छाती मस्तीके जोशमेंमले फिर अमरगाने लगा ताने उड़ानेलगा उसके कामोंसे मलकाकाचित्त अतिप्रसन्न हुआतो अमरकी ओर देखकरकहा कि इनयुवतियों में से कोई पसन्दहै किसीकी तू भी इच्छा करता है अमरबोला कि क्योंकर प्रार्थनाकरूं वह आपकी बड़ी मुसाहबहैं सब महलवालियोंपर ग़ालिबहैं मुझे काहेको अङ्गीकारक-रेगी मेरे नामपर गालियांदेंगी मलकाने सौगन्द देकरकहा कि इनमेंसे जो मंज़ूरहो उसकेगोदमें तूभी जाकरबैठ अमर कूदकर तरारखूबां की बगलमें जाबैठा और उसी स्नेह दृष्टिसे देखनेलगा वह अमरको गालियां देनेलगी औरतिरछी भौंहें चढ़ाकर उठखड़ीहुई मलकानेकहा अमरवह क्याकहतीहै क्याकुछ बुराभला कहतीहै अमरबोला किसर्कार क्याकहैंगी लाड़ करतीहै औरअपनेचोंचले दिखातीहै इनका मनहीजानता होगा वैसा अच्छा जानपड़ाहोगा मलकाहंसतेर लोटरगई और कहनेलगी कि अमरसचकहो उसकी कौनसी बाततुझे पसन्दआई किइसकेसाथस्नेह और मित्रता जमाई अमर बोला कि इसकेपास गहना बहुतसाहै इसकामुझे लालचआयाहै इसबातपर फिरभी हंसीपड़ी सबसभा लोटगई तरारखू-बांअप्रसन्न होनेलगी मलकाने कहा कि वो तरारखूबां तूभीकितनी बेमजा और नकचढ़ी है कितनी आखिलखोरी और रूखीहै अरे अमर दूसरा अमीरहै चालाकोंका गुरूहै इसकीमाशूका मुझसेदर्जे और अंशोंमेंकम नहीं इससेअच्छामनुष्य चातुरीमें और नहींहै इसकेपश्चात् अमीरनेमलकासे कौलकरार अपने दीनका ठीककिया और कुछ बातेंसिखाई मलकाने मु-सल्मानी धर्मअङ्गीकार किया औरअमीरसे कहा किजबतक मैंजीतीरहूंगी

तबतक सेवकाई करूंगी आपकी आज्ञासे बाहर नहूंगी अमीरने कहा कि जबतक मैंभीतुमसे बिवाह नकरूंगा तबतक दूसरीस्त्रीको आंखउठा-कर नदेखूंगा दोनोंमें यहठोकठहरा और इसी क़ौलक़रारमें प्रातःकाल का रङ्गदेखपड़ा अमीर मलकासे बिदाहुये और अमर समेत उसी मार्ग से नीचे उतरे और तीनों आदमी अपने डेरेको ओर चले ॥

॥ दोहा ॥

भोर भयो बीती रयन चन्द्रगयो तजि धाम। यहि मकारको मुख कलित मज गये जेहिनाम॥

राह के बीच में अन्तरका पहरा मिला उनलोगों ने चोर २ कहकर अमीर का पीछा किया अमीर ने तलवार खींचकर दशबारह मनुष्यमा-रडाले और आप अच्छी भांति से अपने डेरे पर पहुंचे जब सूर्य निकले अन्तरने देखा कि सिवाय अपनेही आदमियों के और किसी की लाश दृष्टि न पड़ी तो जाकर यह समाचार बादशाह से कहा और तमाम इतिहास रातका सुनाया जो उसदिन साहबकिरां दर्बारमेंगये बादशा-हने कहा तुमने कुछ औरभी सुनाहै कि बड़ा अद्भुत समाचार है मैंने अन्तर को महल की निगहबानी के लिये नियत किया था कारण यह उसकाहै कि मैनेचोरोंका गुलसुनकर यहप्रबन्धकियाथा सो आजपिछली रातको दशबारा आदमी उसके साथ मारेगये और चोरों का पता न मिलायद्यपि आपकोकष्टतो होगा परन्तु महलकी निगहबानी करतेतो बहुत अच्छाथा जिसमेंचोरतो पकड़मिलें तुम्हारे लोग अच्छापहरा देते हैं अमीरने कहाकि मैं आधीनहूं जो आज्ञाहोगी उसेकरूंगा लोगोंने सुनकर कहाकि बादशाहने बहुत अच्छाप्रबन्धकिया जो साहबकिरां को महलके पहरादेनेको नियतकिया जोकोई सासानीहै तो अमीरकानाम सुनकरअभी से उधरको पांव न धरैगा और जो अरबी अथवा तुर्कोंमेंसे है तोभी मनोर्थ न करेगा किन्तु बखतकने अपनेमनमें कहाकि यहवही कहा-वत हुई कि (सैयां भयेकोतवाल अबडरकाहेका) बादशाहने बकरी की रखवारीभेड़ियाके आधीनकीक्या अच्छीबादशाहकी बुद्धिहैदरबारउठनेके पीछेबादशाहसेबिदाहोकरअमीरप्रसन्नहोकरअपनेडेरेमेंआयेऔरअच्छे २ सिपाही और खासबरदार अपनेसामने बुलवाये और मुक़ाबिल के साथ दो आदमीकरके पहरादेनेको आज्ञाकी और आप उसीरीतिसे पहर रातगये अमरछलीको भी साथलेकर मलकाके पासपहुंचे सारीरातम-दिरापीते और गानाअमरका सुनते रहे जबभोर हुआ लुकापड़ने लगा अमीर मलकासे बिदाहोकर तिलशादकाम परगये अबतोकिसीका डर न रहा तमामरात खूब क्रीड़ाकी और दरबारकेसमय दरबारमेंगये बाद-शाहसे प्रार्थनाकी कि सेवकआपकी आज्ञानुसार तमामरात पहरादिया परन्तु कोईचोर न देखाबादशाहने कहाकि तुम्हारेडरसे कोईनहीआया किजो वहांका मनोर्थकरेगा तोमाराजायगायहकहकरबादशाहने अमीर

को खिलअतदी और शाबाशीदेकर बहुतप्रसन्नकिया बख्तकने बादशाह से प्रार्थनाकी कि आजकारनवन्द को कि सासानियोंमें प्रतिष्ठित अधिक है पहरादेनेको आज्ञाकीजिये उसकीभी कारगुजारी औरपरिश्रमदेख लीजिये बादशाहने उसका कहना अंगीकार किया और कारनको पह-रादेनेको हेत नियतकिया फिर बख्तकने कारनसे कहाकि ऐ पहलवान तू तहिमूर्सदेववन्दके कुटुम्बमेंसे है बहुत सुशीलता और सावधानीसेपह-रादेना जो सामनेआजाय पकड़लेना खबरदारजो देवभी हो तो उससे मत डरना उसनेकहाकि तू खातिरजमारख तेरीमर्जीके अनुसार कामकरूंगा औरबादशाहकेसामनेभी प्रतिष्ठा प्राप्तकरूंगाजबदरबारउठा अमीरतिल-शादकालपर आये और मित्रलोगभी साथ थेकारन देववन्दनेतीनसौ पह-लवानअपनेदलमें चुनकरशायंकालहोसेपहरादेनेलगा मलकानेजो कारन के पहरादेनेका समाचारपायातो अतिव्याकुलहुई दायासेकहाकि आज कारनदेववन्द पहरादेनेपर नियत हुआ है अमीरअवश्य आनेका मनोर्थ करेंगे कोईऐसा होताकि जो उनकोमनाकर आताकि आजतुमआनेका मनोर्थ न करना इसमार्गमें भूलेसेभी न आनादाया बोलीकि अमीरऐसे अथान नहीं हैं आजवह आप न आवेंगे उनकोभी तो अपनी प्रतिष्ठाका खयाल है अबअमीरका हालसुनिये किजबदोपहररातबीती कालेवस्त्रमांगे अमरनेअपना सिरपीटा कि हमजा जाननहीं पड़ता है कि तुम्हें क्या हो गया है एकरात भी धीर्यनहीं करसक्ते अमीरने कहाकि ऐ अमर स्नेह और धीर्यसेक्या लागहै यहांतो नेहकीआगभड़कतीहै मेरेजानेका रोकने वाला कौनहोताहै किसका कलेजा इतनाहै अमरबोला कि कारनदेववन्द ऐसापहलवान नहीं है कि समयपर बचायजायगा और आपपर धावा न करैगाअमीरने कहाकि जबमैं कारनसेडरातो किसीसेस्नेह और मित्रता करूंगा यहकहकर कालेवस्त्र धारणकिये और मलकाके कोठेका मार्ग लिया तब्बकेबाहर निकलेमुक़बिल और अमरभी साथहुये देखाकि थोड़े२ लोगमशालेंजलायेहुये अलग २ पहरादेरहेहैं जबअमीरबागमें पहुंचे तो देखाकि कारनएक कुरसीपर बैठाहुआहै और अपने साथियोंसेखबरदार होशियारकी ताकीदकररहा है मुक़बिलने अमीरसेकहाकि आज्ञादी-जियेतो कमानकांधेसे उतारके एकतीर ऐसामारूं कि कारनकुरसी में मिलजाय जगहसे न उठनेपावे अमीरनेकहाकि मुझेकिसीके मारनेसे क्या काम है उसेबैठारहने दो वहप्रबन्धकरता है जब मेरा मार्ग रोकेगा तब उसे समझलूंगा उसी भांतिआगेआऊंगा यहकहकर छपते छपाते उस-की दृष्टिसेअपनेको बचातेहुयेकोठेकी दीवारकेतलेपहुंचे मुक़बिलको उसी भांतितले खड़ाकरके कमन्द लगाकर अमरसहित कोठेपर चढ़गयेऔर मलका को देख कर अति आनन्दित होगये और दौड़ कर गले में लपट गयेतमामरात भोगविलासकरके आनन्दमें व्यतीतकी जब प्रातःकालहुआ

मलकासे बिदाहोकर अपनेस्थानका मनोर्थकिया और वहांसेचले पहिले अमर उतरा जबवारी साहबकिरां के उतरने की आई कारन ने दौड़ करअमीर पर तलवार लगाई अमीर तो बचे परन्तु वहतलवार कमन्द पर पड़ी कमन्द के दो टुकड़े होगये यद्यपि साहबकिरां को मुक्षबिल ने रोंका परन्तु अमीर का बोझा मुक्षबिल से कब संभल सक्ता था साहबकिरां का शिर दीवारमें टक्कड़खाकर फूटगया और थोड़ासा रुधिर भी निकला उससमय मुक्षबिल और अमरने कईआदमीतीर और गोफनसे मारे कारनने जो देखा किहमजाहै पीछा नकिया परन्तु उस कमन्दको बादशाहके सामने लेगया उसमें हमजाका नामखुदा हुआथा बादशाह देखकर अत्यन्त अप्रसन्नहुआ और उसीसमय बुजुरुचमेहरको बुलवाया और कहा कि ख्वाजे हमजाने यह क्या चाल हमारे साथकी यही भलेमानसी का काम विदित किया मेरी प्रतिष्ठा और शिष्टाचार का बदलादिया बुजुरुचमेहरने कहा कियह कमन्दजाली है किसीने जालसाजीकीहै हमजाऐसानहींहै कि जिससे ऐसी खराबचाल देखनेमेंआवे और शीघ्र अहलकीओर उसका मन किसीभांतिलेजावे आपकसेखा किहमजाका शिरभी दीवारमें लगकर फूटगयाहै और कुछरुधिरभी निकलाहै बुलाकर देखलीजिये बादशाहने अमीरको बुलाया अब अमीरका हाल सुनिये कि जबतम्बू में पहुंचे और अपने भेददारोंमें ठहरे चित्तमें विचार किया कि अवश्य कारन मेरे घावका समाचार बादशाह से कहेगा तो अत्यन्त हलकापन और अधिकबुराईहोगी ईश्वरसे बरमांगनेलगा किमेरे भेदको अयानों से छपा मेरी प्रतिष्ठा को वैरियोंसे बचा इतना पराक्रम तुझीमेंहै और यहबल मुझेतुझीने कृपाकियाहै मेरीनियत बुरीनहींहै कुछ हराम मैंनेनहींकिया एककाफिरको मुसल्मान कियाहै मेरेशिरकेघावका चिन्ह न रहै किसीपर मेराभेद नखुले अमीर यह आशीर्वाद मांगरहे थे किएकाएकी एकझपकीसी आगई तोदेखाकि हजरतइब्राहीम शिरपर हाथफेरकर कहतेहैं किहमजा उठतेरेशिरका घाव अच्छाहोगया किसी प्रकारकाचिन्हभी नहींरहा अमीरकी आंखजो खुलगई शिरकोटटोलकर देखें तोघावका चिन्हभी नहीं है खबरहुई कि बादशाहने यादकियाहै जल्दी हाजिरहोनेकी आज्ञादीहै अमीर बादशाहके पासगया साथीमिचले हो पहुंचे बादशाहने साधारणजो अमीरका शिरदेखा तोघाव क्यागुमड़ाभी शिरपर न मिला बादशाहने बुजुरुचमेहरकी बात सचमानी और कारन पर क्रोधकिया कि हमजापर तूने झूठक्योंलगाया एकभलेमनुष्यकीआबरूकी फिक्रक्योंकी यहकह उसेदर्बारसे निकलवादिया और अमीरकोखिलअत कृपाकी कुछदिनके पीछे बहिरामनेभी आरामहोनेका स्नानकिया और बादशाहकेपास फिरहाजिर रहनेलगा एकदिन सरेदरबार बुजुरुच मेहरने प्रार्थनाकी कि अबसेखुसरो हिंदुस्तानदेशका बासी लन्धौरसादा

शाह का पुत्र गद्दीपर बैठाहै तबसे हिंदुस्तानकाकर बादशाही खजानेमें नहीं पहुंचताहै अत्यन्त बलिष्टहैऔर बहुतहृष्टपुष्ट बनाहै और एकहस्त सातसौ मनकीतबरेजीकी उसकीगदाहै और हजारों पहलवानोंमें एक पहलवान है और हाथीपर सवार होताहै अपना और गदाका चित्र बनवाकर खड़ा किया है किसी का घोड़ा उसके डरसे पास नहीं जाता और किसीभांति का घोड़ा अरबी होया तातारी या तुर्की या ईराकी उसकेआगे पांवनहीं बढ़ाताहै बादशाहने कहा कि इसका कुछ उपाय कियाचाहिये जो कि बुजुरुचमेहर बुद्धिमान और संसारीगति देखेहुये या भीत और उष्णसमय सब जानेहुये था अमीरके मस्तक से ताड़गया कि इनका चित्त सहजमें किसी पर लगगयाहै और वहां मलकामेहर-निगारके सिवाय ऐसा कौनहै जो ऐसा कामकरे और चोरका पता न लगे तो उसे भी मालूम हुआ कि इसचालका आदमी सिवाय अमीर के और कहांहै मनमें शोचा कि इनको तरुण अवस्थाका रङ्गदीखपड़ा है और भलाबुरा कुछसमझता नहीं जोकोईबात देखनेमें आई औरकिसी दुष्टने खबरलगाई तो मुफ्तकी बदनामीहोगी और जोकि मैंसहायकहूं मेरेलिये भीबुराईहोगी इसकारण यहविचारके ऐसीसूरत निकाली कि इसलड़ाई पर सिवाय अमीरके कोईमनोर्थ न करेगा और कोईबीरान लेगा कुछदिन अमीरउधरजायें किइसनेहसेछूटजायेंबुजुरुचमेहरनेप्रार्थना कीकिअमीरसेअच्छा और कोईनहीहैजबसब अमीरदर्बारमेंआये बादशाह सबकेआगेकहनेलगाकि खुसरो हिंदुस्तानदेशकाबासीलन्धौरसादानशाह के पुत्रको जो उसमें अभिमानने मेरी आधीनता से फेर रक्खा है अपने मनमें समझताहै कि संसारमें मेरे समानकोई बलिष्ठऔर पराक्रमी नहीं है इस जगके बीचमें मेरी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है देखिये कि कौनउसकेसाथ लड़नेका बीरालेताहै कौनउसदुष्टको पराजय करताहै॥

लन्धौर की शिकायत में भाई सादानशाह का विनय पत्र भेजना और
उसके पराजय के हेत अमीरका मनोर्थ करना॥

अब लेखनी इस इतिहासको इस भांतिसे वर्णन करती है कि अभी बादशाहलन्धौरकी सरकशीका बयान दरबारमें तमाम न हुआ था कि हरकारे ने रक्षाकरो २ यह शब्द बादशाह नौशेरवां के कान तक पहुं-चाया बादशाह की आज्ञानुसार बखतक दरबार से बाहर आया और सरंदीपके बादशाह के धावनके हाथसे बिनय पत्रले हुजूर के पासलाया और लिफाफा बन्दथासो खोलकर बिनयपत्र निकालाऔर दरबारकेबीच में भारी आवाजसे पढ़नेलगाकि आतसकदहनसहूद की सेवा पहुंचकर सप्तद्वीप के बादशाह की प्रकाशित बुद्धि पर प्रकाशहो कि मुझसे पहले सादानशाह मेराभाई गद्दीपर शोभितथा एकदिन आखेटखेलनेगयाते। एक मृगके पीछे घोड़ाडाला सेनासे अलगहोगया तीनदिन तक फिरता

रहाऔर अत्यन्तप्यासाहुआ तोपानीकोढूढ़ताहुआ एकतालाबपरपहुंचा देखाकि एक स्त्री बड़े क़दकी तीन मशकें पानीकी भरीहुई उठाया चाहतीहैऔर किसी औरको लेजायाचाहती है सादानशाहने उससेकहाकि मैं तीन दिन का प्यासा हूं थोड़ापानी मुझे पिला मेरे कलेजे की गर्मी मिटाउसने उनमशकोंका पानी नाडालाऔर ताजापानी भरना आरम्भ कियासादानशाह इसबातसेउसपर अत्यन्तक्रोधकिया और अप्रसन्नहोकर अपने मनमें कहाकि पानी पीलूंतो जैसा इसने मेरे मांगनेसे पानी मश-कोंका बहादियाहै वैसामैं भी इसका रुधिर बहाऊंगा फिर उसस्त्रीनेएक पात्रमें भरकर पानी सादानशाहके आगेरक्खा जबवह पानी पीनेलगातो एक दो चार घूंटपीने के पीछेहाथ पकड़लिया और पूछने लगीकि तू कौनहै और तेरा क्या नाम है तू किस देशमें रहता है और तेराकहां स्थान है सादानशाह ने कहा कि अरी बदबख़्त पानी तो मुझे प्यास भर पीलेने दे फिर तू पूछना परन्तु उसने नमाना अपने पूछनेसे न फिरी न उसकी बात सुनी बादशाह सादानशाहने दोचार घूंटपिये जबप्यास बुझी तोतलवार निकालकर उसके मारने का मनोर्थ किया वहस्त्रीबोली ऐ मनुष्य मैंने तेराक्या अपराधकिया है कितू मुझे मारताहै सादानशाहने कहाकि पहिले मैं तुझसे कहचुका था कि तीन दिनका प्यासा हूं तूने तीन मशकें पानी की भरी हुई ना दीं और मुझे खाली करके देखाया और दुबारा पानी भरने में और देर करने लगी इतनी देर मुझे और प्यासा रक्खा जब पानीदिया और जबमैं पीनेलगा तोतू सांसभरके पीने न दिया दोचार घूंटके पीछे मुझे छेड़ना आरम्भकिया कि तू कौनहै और कहांसे आयाहै कि ऐसा प्यासका सताया है यहसुन उसस्त्रीने हंसकर कहा कि नेकी बरबाद गुनह लाजिम पहिले तू अपना नाम व निशान बतला पीछेसे इसका उत्तरदूंगी और तुझेढाढस दूंगी सादानशाहने कहा कि इसदेशकामैं बादशाहहूं सादानशाह मेरानामहै आखेटखेलने आया था मार्ग को भूलगया हूं उसने कहाकि आपकी बुद्धि पर धिक्कार है जो बारहसहस्र द्वीपों काबादशाह होकरबुद्धिसेखालीहै समझसेतूकोसोंदूरहै सादानशाह ने कहाकि इसपर कोई दृष्टान्त भी है या केवलयोंहीं मूढ बनारही है उसने कहाकि सुन जिससमय तूने मुझसे कहाकि मैं तीन दिनका प्यासा हूं दूरसे पानीढूंढ़ता आया हूं मैं उसी समय सुनतेही मशकों का पानी फेंका और दुबारा पानी भरकर दिया भी तो सांस भरकर पीने न दिया इस निमित्त से कि तूकई दिनका प्यासा था लोभ के मारे पानी बहुतपीजातामैं सोचीकि जो एकाएकी इसने पानीपिया और इसके कलेजेमें पानीलगा तो सहजहीमें मरजायगा जो कोई देख-लेगा तो इसके अजाबमें मुझे पकड़ेगा जान छोड़ाना कठिन होजायगा आबरूपानी होजायगी सादानशाह यह बातसुनकर उसकी बुद्धिमानी

पर दीवाना होगया और उसकेक़ायदे और होशियारी पर अचेत हो-
गया और पूछाकि तू कहां रहतीहै तेरा कोई मालिकहै या अकेलीहै
उसने कहाकि सिवाय ईश्वरके मेराकोई पालकनहींहै अपने हाथपांवके
श्रमसेखातीहूं जाहिरमें मेराकोई खबरगीरनहींहै सादानशाहनेउसको
नगरमें लाकर उससे विवाहकिया कुछ दिन के पीछे वह स्त्री गर्भवती
हुईऔर सादानशाह मरगयागद्दीपरमैं बैठागर्भके दिनबीतनेके पीछेउस
स्त्रीकेलड़का उत्पन्नहुवा उसलड़केका शरीर पांचगजकाथा कुछदिनकेपीछे
वह स्त्रीभीमरगई मैंने नामउसका लन्धौररक्खाऔर उसकेपालनेमें प्रवृत्त
रहाऔर अंटनउसके दूधपिलानेके हेत नियतकी और दूधपिलानेवाली
दाइयां व खेलानेवाली स्त्रियांउसके खेलानेको नौकररक्खीं और जिसदिन
लन्धौरउत्पन्नहुआ था उसी दिनमेरे यहांभी लड़का उत्पन्नहुआ उसका
नाममैंने जयपूररक्खा और दोनोंको पालनेलगा जबदोनों पांच२ वर्षके हुये
एकदिन खेलानेवालीने अदबसिखाने के हेत एकतमाचा लन्धौरके मारा
कि गला उसका सूजगया लन्धौरने उस खेलानेवालीको उठाकर धरती
पर पटकदिया कि वह मरगई और जो लोगउसके देखनेवाले और नि-
गहबान थे डराकर भागे और मेरे निकट आन पहुंचे मुझसे सब समा-
चार वर्णनकिया मैंने आज्ञादी कि लन्धौरको मस्त हाथी के नीचेडालदो
और अभी घरसे बाहर निकाल दो मेरी आज्ञानुसार हाथी आया ल-
न्धौरको उसके आगे डालदियाहाथीजो सूंडसे उठानेलगा कि लन्धौरने
एक झिटका ऐसामाराकि सूंडउसकी जड़सेउखड़गई वह चीखमारकर
भागाऔरपीलखानेमें जाकरएकखम्भा उखेड़कर सबहाथी मारडालेऔर
तमामनगरमें हलचलपड़गया फिरमैंने आज्ञादीकि लन्धौरकोपकड़लावो
बन्दीखानेमें बन्दकरो किसी औरने तो पराक्रम न किया किन्तु एकमंत्रीने
कहाकि यह मेरा कामहै मैं लन्धौरको पकड़ के आपके पास पहुंचाता
हूं यहकहकर एकप्याला हलुवेका लन्धौरकेआगे रखदियाजबवह हलुवा
खाचुकातो उसको मार्गपर लगायाऔर मेरे पासलाया लन्धौरने मुझको
देखकर मंत्रीसे पूछाकि यह कौनहै और क्या नाम है उसने कहा यह
आपके चचासाहब यहांके बादशाहहैं यह मुल्कइन्हींका है लन्धौरबोला
कि इससे प्रथमकौन बादशाहथा मंत्रीनेप्रार्थनाकी कि आपका बापथा
लन्धौरने कहाकि तू गद्दीका कौनहै मैं तो मालिकहूं और यह मनुष्य
राज्यकरै और मैं बेकार बैठा रहूं मंत्रीने प्रार्थनाकी कि यह बात सत्यहै
आपमालिक बादशाहहैं यह देशआपहीकाहै यहसुनकहने लगाकि इसे
गद्दी परसे उतारदो मैं गद्दीपर बैठूंगा आजही से राज्यकरूंगा मंत्री
ने मुझसे कहाकि भलाई इसीमेंहै कि आप गद्दी पर से अलगहों और
इसे बैठने दीजिये मैं गद्दीपर से उतरा और उसपर लन्धौर बैठा एक
घड़ीके पीछे लन्धौरने मंत्रीसे खानामांगा मंत्रीने बेहोशी की दवाउसमें

मिलाकर उसके सामने खानालाया वहबोलाकि शहपालव जैपूरकोभी बोलालो कि वह भी हमारे साथ खावें खाने में मेरा साथ दें कदाचित् इसमें तुमकुछ मिलादिया हो मेरीजानलेनेका मनोर्थकिया हो लाचार होकर मैंने जैपूरको बुलवाया उसनेउसके साथ खानाखाया फिर तीनों थोड़ीदेरके पीछे अचेतहोगये एकघड़ीके पीछेमंचीने मुझे और जैपूर को एक तैल सुंघाया और दोनोंको फिरचेतमें लायामैंने आज्ञादीकि लन्धौर को सिरसे पांव तक लोहे में जकड़ दो और औरंग व गोरंग जो दोनों लखनौटीके शाहजादे हैं उनकोसोंपदो मंचीनेमेरी आज्ञापातेही वैसाही किया और उनदोनों शाहजादों को बुलवाया और बादशाह के हुक्मसे खबरदी उन्होंने शीघही उसे लेजाकर लखनौटी कुवांमें डालदिया और उसका मुंहबन्दकर दिया पच्चीसबर्षतक वहउसी कुएमें बन्दरहाऔर उमर व्यतीतकिया किया जोकि लन्धौर की मातासीस पैगम्बरके कुटुम्बमेंसे थी एकदिन औरंग और गोरंगकी बहनने स्वप्नमें देखा कि आकाशसे एक तख्त पृथ्वीपर उतराऔर उसपर हजरतसीसपैगम्बर बैठेहैं लन्धौरका तमामवृत्तान्तऔरपराक्रमबताके कहतेहैंकि मैंनेतेरा लन्धौरका जोड़ाकिया उससेतेरे एकपुत्रउत्पन्नहोगा वहबड़ा प्रतापीहोगा वहजो स्वप्नसे चौंकी तो एक थालामें खानारखकर उसकुयें परपहुंची निगहवानों ने पूछाकि तू कौनहै और क्यालाई है और इस समयकहांसे आई है उसने कहा कि लन्धौरके निमित्तखानालाई हूं और एक प्रतिष्ठित प्रतापी का शुभ समाचार सुनाने आईहूं वह चुपरहे और कुछ न बोले वह कुयेंमें उतर गई और लन्धौर को खाना खिलाया और लोहे की बन्द सोहन से काटकरअपना स्वप्नसुनाया औरघरकोचलीआई लन्धौरने जो बहुतदिन के पीछेसुखपाया सांकड़ोंको अपने सिरहाने रखकर निर्भयपड़के सोरहा निगहवानों ने कहाकि लन्धौरकी जीभ तालूसे तो किसी दम न लगती थी आज क्या है जो उसके चिल्लाने का शब्द कान तक नहीं पहुंचता है यह क्या माजराहै एकने जाकर देखाकि लन्धौर चैनसे पांव फैलाये अचेत सोरहा है और जिन सांकड़ोंमें जकड़ा हुआथा वहटूटी हुई सिरहाने पड़ीहैं वह आराम कररहा है उसी समय निगहवानों में खलबल पड़ीशीघ्र औरंग गोरंगको खबरदी दोनों शाहजादे दौड़आये और बहुत से पहलवान अपने साथलाये देखा तो सचमुच लन्धौर छूटा हुआ पड़ा सोरहा है इच्छा की कि इसे सोतेही फिर सांकड़ों से जकड़देवें परन्तु लन्धौरने जागकर दोनों शाहजादों को उठाकर देमारा और सब समाचार वर्णनकिया कि तुम्हारी बहनआई थी मुझेखाना खिलागई है और मुझ से विवाह का क़ौलकरार कर गई है और सोहन से सांकड़ों को काटकर मुझे छुड़ागई है इसकारण मैंने तुम्हें जीदानदिया नहीं तो तुम दोनोंकी जानजाती फिर उसके स्वप्नका समाचार सब वर्णनकिया दोनों

शाहज़ादे इस समाचार को जानकर मनमें प्रसन्नहुये और लन्धौर को उस अन्धेरे कुएसे निकालकर तख़्तपर बैठाया और गद्दीपर बैठने की सब सामग्री इकट्ठाकी लन्धौरने अपने निमित्त एकगदा सातसौ मनका बनवायाऔर उसगदाको हाथमेंलेकर एक मस्तहाथीपर सवारहुवा और सरंदीपकामार्ग पूछनेलगा औरहुकुरहुने हाथबांध करकहाकि कृपासागर कुछ दिन रहजाइये सेनाजोड़के सरंदीपकी राहलीजिये उसको यहबात अच्छी जानपड़ी और सेना बटोरनेपर कमर बांधी जबएकफ़ौज अच्छी चुनी हुई बनगई तो बड़ीधूम धामसे सरंदीपकी ओर कूचकिया कुछदिनके पीछे समुद्रके किनारे पर पहुंचा वहांसे जहाजों पर सवार होकर सरंदीप के फाटक पर पहुंचा हरकारों ने यह समाचार मुझे पहुंचाया मैंने जै-पूरको दोलाख सवारकी भीड़से उसके मुक़ाबिले को भेजा और कईसौ पहलवान उसके साथ किये दोनोंओर की सेना रीतसमेत जमाईगई और जयपूर और लन्धौरका सामना हुवा जयपूरने देखा कि लन्धौर जब गदा मारता है तब दश २ बीस २ पहलवान पिसकर मरजाते हैं शरीर के फोहे फोहे अलग होजाते हैं तो भागकर गढ़ीमें पहुंचा और फाटकबन्द करलिया और किलापरसे गोला लन्धौरकी सेनापर बरषाने लगा लन्धौरने किलाके दरवाजे पर पहुंचकर एक गदा फाटक में ऐसी मारी कि वह दरवाजा टुकड़े२ होगया औरकिलादार जो फाटकपरथे उन सबको मार-डाला और दरवाजेके टूटतेही मैंतको हाट गर्मकी और किलेमें रुधिर की नदी बहाई मुझसे कुछ उपाय बन न आया फिर मैंने उसके सामने आकर जीदान मांगा लन्धौरने कहा कि किसबात परतू जीदान मांग-ताहै किस मनोर्थ पर मुझसे प्रार्थना करताहै मैंने कहाकि यहबादशा-हत नौशेरवां जो सप्तद्वीप का बादशाह है उसके आधीनहै जिसको वह आज्ञा देगा वह इस गद्दीपर बैठेगा आपकुछ दिन धीर्यधरें उत्तरमेरे विनय पत्र का आ लेनेदें उसने उत्तर दिया कि जब तेरे फिरयादनामे का उत्तरआवे और वहकुछ तुझे लिखवा भेजवावे तबतक तू एकद्वीप में बैठ मैं तुझे और नौशेरवांको क्या समझता हूं क्या मैं तेरी तरह निर्बलहूं कि तेरी या उसकी आधीनताकरूं अबमैं किसीसे नहींडरता मैं लाचार-होकर जानबचा नगरसे बाहर निकला लन्धौर गद्दीपर बैठाजो किमुझे आपको खबरकरना उचितथी इसनिमित्त हुजूरमें प्रार्थनाकी आगेआप मालिक हैं जो लन्धौरको आप पराजय न करेंगे तो वह मुझेबहुत सता-वेगा और अभीतो मेरे बालबच्चे मरनेसेबचचुके हैं मैंआपसे क्या२ बेअदबी और अनुचित बातें न कहूंगा बादशाह ने इसहाल को सुनकर बुजुरच-मेहर को अलग लेजाकर सलाह पूछीकि उपाधि के दूर करने का क्या उपाय है जो कोई उसकी बराबर न हुवा तो अत्यन्त छोटाई की बातहो-गी बुजुरचमेहर ने प्रार्थना की कि पहले गुस्तहम को सरंदीप की ओर

जानेकी आज्ञा दीजिये उसके पीछे दरबारके बीचमें यह कहिये कि जो कोई लन्धौरको पकड़लावेगा मेहरनिगारके साथउसका विवाहकरूंगा और वह बहुतसा देश व मालपावेगा सासानियों में से तो ऐसा पराक्रमी दृष्टिनहीं आता है कि लन्धौर का सिरलाने की हामी भरै परंतु हमजा नाम व निशान पर मरता है यक़ीन है कि वह अंगीकार करैगा और यह मंसूबा बहुत अच्छा है कि जो हमजा मारागया तो आप बदनामी से बचेंगे और जो लन्धौर को जीतलियातो हिन्दुस्तान का सबदेश उसी के आधीन होजायगा बादशाह अपने मनमें बहुत प्रसन्नहुआ और बुजुरुचमेहर की बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की और उसी समय गुस्तहम को जो बहरामको घायलकरके जाबुलमें भागकर बादशाह के डरसे रहाथा सांड़नी सवार के हाथ उसको परवाना भेजाकि चालीस सहस्र सवार जो तेरेसाथ हैं उन समेत सरंदीपपर जा लन्धौर का सिर काटकर हुजूर में हाजिर ला तेरा अपराध क्षमाकिया जायगा और आगे तेरी खातिरदारी की जायगी और भारी इनाम भी पावेगा दूसरे दिन जब कि सब अमीर उमराव दरबारमें आये और अमीरभी आकर रुस्तमके स्थानपर बैठा बादशाह ने कहा कि ऐ पहलवानों नामदार समय के बादशाह हिंदुस्तान ने मेरेसाथ बैरकरने पर कमरबांधी है और शत्रुता करनेपर उतारू हुआहै जोकोई उसका शिर काटलावेगा मैं उसको अपना लड़का बनाऊंगा और मलका मेहरनिगार के साथ उसका बिवाह करूंगा यह सुन जितने पहलवान सासानी आदिथे किसीने दमनमारा अपनेर मनमें बिचारनेलगे कि प्रथमतो समुद्रसे जोतेजाना कठिनकाम है दूसरे ऐसे बलिष्टसे सामना करके किसकी मजालहै कि बर आये जानबूझकर कौन अपने को मृत्युबस करै यह बात बुद्धिसे दूर है परंतु साहबकिरांने दंगल से उठकर बादशाहको सलामकिया ॥

दोहा ॥

उमर तुम्हारी अधिकहो जबलग सूरज चन्द । हम तुमसे फल पावहीं तुम दुखहत सुखकन्द ॥

और प्रार्थना की कि इस आधीन को जो आज्ञा दीजिये तो खुसरो हिंदुस्तान के बादशाहको जीताहुआ पकड़लावे मुझे केवलवहां पहुंचने की देरहै आपके पासतक बेड़ीपहिनाकर लाऊं औरजोमारागयातो आप पर से न्यवछावर हुआ यहसुन बादशाहने तख़्तसे उठकर उसको गलेलगाया और कहा कि ऐ अब्दुलअलांइस अधिक तुमसे मुझेआशाहै ॥

चौपाई ॥

राजमे छत्र सदा बहुभांती । रहै कृपाल तोर सुखयाती ॥
प्रजासुखी है विविधि प्रकारा । असप्रतापहै नाथतुम्हारा ॥

बुरीदृष्टि दूररहै बादशाह ने कहा कि जो साल अच्छाहोता है वह वसन्तहीसे दीखपड़ताहै जोयहहिम्मत तुममें नहोतीतो इसअधिकारपर

क्योंकर पहुंचते और क्यों जवांमर्दीका गुर्दाभरते फिर उसीदम अमीरको खिलअत इनायकी और तीनजहाज जिनपर हजार२ मनुष्य सवारहों बन नेको आज्ञादी अमीर विदाहोकर अपने डेरेमें आया और कूचकासा-मान करनेलगा और सबको धैर्य देनेलगा और सेनाको आज्ञादी कि तुमलोग आजही कूच करजावो बसरेमें जाकर हमारी राहदेखो और अमरको बुलाकर कहा कि ऐ अमर जो चलते २ एकबेर दृष्टिसे मलका को देखलेते तो डाह न रहता अमरने कहा कि एकपत्र बुजुरुचमेहरको लिखिये यहबात उनके उपायसे होसक्तीहै वह तुम्हारे भलाईके चाहने वालेहैं और सहायकरतेहैं अमीरने अपनेहाथ से एकरुक्का बुजुरुचमेहर कोलिखा अमरने ख्वाजेके पासलेजाकर वहपत्र ख्वाजेकोदिया ख्वाजेनेउस रुक्केकोपढ़कर अमरको अपनेसाथलिया और बादशाहसे जाकरध्यानकिया कि यहांसे हिंदुस्तान तक हमजा आपकादामाद जाहिरहोगा परन्तुयह कैसीदामादी कि शर्बतभी न पिलायागया और हमजा आपकी आज्ञा-नुसारजो न्यवछावर करनेको चला नौशेरवांने हंसकर कहा कि क्याहै हमजाको बुलवावो पानीवालेसे कहकर शर्बत बनवाओ ख्वाजेने बादशा-हकी आज्ञानुसार शीघ्र हमजाको बुलवाया और कन्द व गुलाबकाशर्बत बनवाया अमीर शीघ्रही बादशाहके पासआये बादशाहने अमीरकोप्यार समेत अपनेपास बैठाला और शर्बत मांगा ख्वाजेबुजुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि दामादीका शर्बत महलमें पिलवाना उचितहै और गिलोरियां पानकी भी वहीं खाना उचित है मर्दानेमें इसबातका होना उचितनहीं है जनाब बेगमसाहब के पीछे यहबात करना उचित नहीं नौशेरवांने अ-ङ्गीकारकिया और ख्वाजेबुजुरुचमेहरसे कहा कि तुमहमजाको महलमें लेजावो और शर्बतआदि पिलवाओ मेहरनिगार की माताअपनेहाथ से हमजा को शर्बत पिलावेंगी और समझादेना कि जितनी रसमें विवाह की हैं सबकीजावें कि शर्बत पिलानेके पीछे हमजाका शिष्टाचार आदर व्यौहारकरें और कहें कि मेहरनिगार तुम्हारी धरोहरहै और हमारी इज्जत तुम्हारीही इज्जतहै चाहिये कि जल्दी बादशाहके बैरीकोमारकर आवो या उस दुष्टको जीता पकड़ लावो और मेहरनिगार से विवाह करो हमारे मनको आराम चैनदो ख्वाजे बुजुरुचमेहर अमीरसे पहिले घरमें गये और बादशाहने जो कुछ कहाथा मलिकमेहरअंगेज से कहा बख्तक यह खबर सुनकर अपने मनमें सोचा कि जिससमय हमजा महल में गया उस समय अवश्य मेहरनिगार को यह देखेगा इससे तू भी चल कि उसकी इच्छा मनहीमें रहै मलकाका देखाना जिसमेंनसीब नहो झटपट खच्चरपर सवार होकर चला और दरवाजेपर पहुंचा अमीरने बख्तकको देखकर अमरसे कहाकि इससमय यह उपाधि टालाचाहिये दोसौ रुपया तुझे दूंगा और बहुतराजी करूंगा अमरने मक्कारी भाषा

में अमीरसे कहा कि आपमकान को जावें वहां आनन्दकरें मैं इसखल-को वहां तक न जानेदूंगा खड़े २ अभी समझलूंगा ज्योंही अमीरआगे बढ़े अमरने बख्तकके घोड़ेकी बाग पकड़ली और कहाकि ख़्वाजे बख्तक हम हिंदुस्तान को जातेहैं देखिये वहींकी मिट्टी है या अच्छी भांति से लौट आवें इससे जो आपने तमस्सुक पांचसौ रुपयेका लिखदिया है सो अब कृपा करके रुपया देदीजिये तो राहका ख़र्चहीहो जावे और आपके ऊपरसे क़र्ज़भी उतरजावेयहबकवाला कितूभी बड़ामूर्खहै तकाज़ाकरने का यहकौन सौक़ाहै मैं हमज़ाके साथ काम को जाता हूं तेरे मालिक का साथी हुआहूं और तू मेरामार्ग रोकता है कि मेरे रुपये देदो तू जा मेरेनामसे अदालतशाहीमें नालिशकर जो मुझपर रुपये निकलेंगे तोमैं दूंगा तूमुझेमार्गमें क्योंरोकता है अमरने कहाकि साहब यह तो उसे कहिये जो आपसे कमज़ोरहो जब मैं न ले सकूं तबतो अदालत में नालिश करूं-ख़बरदार आगे पांव न धरियेगा पहले मेरे रुपये मंगवादीजिये फिरजहां मनमेंआवे जाइयेगा बख्तकने अप्रसन्न होकर अपने सेवकोंसे कहा कि अमरको हटादो यह बात सुनकर अमरको बड़ा क्रोध हुआऔरकूदकरखच्चरपर बख्तकके पीछे जाबैठाऔर कटार निकालकर बख्तककी पीठपर धरा और कहा कि दुष्ट क्या मृत्यु आईहै तुझे अबहे नीच मारडालूं आंतेंयहीं ढेरकरदूं बख्तक यह सुनकर कांपगयाऔर हाथ जोड़नेलगा और विनती करनेलगा परन्तुअमरने एकदस्ता उसके ऐसा मारा कि बख्तकका सिरफूटगया रुधिर बहने लगा-बख्तकउसी भांतिसे लोहूमें डूबाहुआ बादशाह के सामनेगया और पगड़ी देमारी कि अब सेवकका यह दर्जाहुआ कि छोटा मक्कार बाजारके बीचमें मेरी प्रतिष्ठाभंगकरै नौशेरवांको भी बुरा मालूमहुआ औरअमरको बुलवाया जब अमर आया पूछा कि बख्तकने तेरा क्या बिगाड़ाथा कि तूनेउसके साथ ऐसाकिया अमीर ने प्रार्थना की कि कृपानिधान आप न्याई हैं न्यायकरें जिसका अपराधहो उसेदण्डदें या क्षमाकरैं इसका पांच सौ रुपयेका तमस्सुक मोहरी सेवकके पासहै यहमेरे रुपयोंके देनेको इनकार करताहै गुलामनेइससे कहाकि अबमैं हिंदुस्तानको जाताहूं जीता रहने के पीछेकब आनाहो अपना तमस्सुक लीजियेमेरा रुपया दीजिये यहसुनकर यह क्रोधवन्तहुआ और अपने सेवकोंसे कहाकि इसको मारकर निकालदो हमारे सामनेसे दूरकरो वे मुझे मारनेको दौड़ेऔर सैकड़ों बातें अनुचित कहींहुज़ूर इसका न्यायकीजियेकि मैं बाज़ारके बीचमार खाऊं और पियादोंकी दौरदबकउठाऊं इसका न्यायकीजिये कि किसका अपराधहै और किसनेझगड़ाकी जड़डाली यहकहकरतमस्सुक भी जेबसेनिकालकर डालदियाऔर न्यायमांगनेलगा बादशाहने बख्तकसे कहाकि इस मुक़द्दमेमें तेरा अपराधहै सरासर तेरी जबरदस्तीही जान पड़तीहैऔर

न्यायके निमित्त हमारेपास दौड़ताहै जो इस तमस्सुक के रुपये अमरको दे नहीं तो अदालत तुझेअपराधी ठहरावेगी जो रुपये न देगा तो बहुत से कष्ट पावेगा बख़्तकने उसी दम खजानची सेसब रुपयालिया और अमरके हवाले किया और आप रोता अपने घरगया अमर मकानकी ओर चला अमरतो दूसवखेड़े में था अमीर और मुक़बिल महलमें पहुंचे मलका मेहरअंगेजने अमीर को बड़े आदर व्यौहार से बादशाह के बैठका पर बैठाया और मंगलाचारकी सामग्री तुरंतही सगाईगई और आपमेहरनिगार को एक कोठरी में लेजाकर बैठी मंगलाचार करने की सभा जमीशर्बत पीनेके शब्दबन्दीजन गानेलगे गुलशोरमचने लगा शर्बतलाने के हेत मलकाने आज्ञा की अमर जो डेउढ़ी पर पहुंचा चाहा कि भीतर को जावे दर्बानी तो पहिचानता न था उसने लकड़ी उठाकर रोका कि तू कौन है जो महल में चला जाताहै बेपूछे हुये मकानमें घुसता हुआ चलाजाताहै अमरदोनों आंखों परहाथ रखकर लेटगया और गलमचाकर कहनेलगा कि दर्बानी तेरा बुराहो तूने मेरी आंखें फोड़डालीं यह हाल देखकर सिपाही जो दर्वाजे पर था घबरागया और उलटी खुशामद करने लगा मलका मेहरअंगेज ने गुलशोर सुनकर कहा कि देखो यह हल्लाकैसा होताहै कौन दर्वाजे पर चिल्ला रहा है अमीर अमरका बोल सुनकर दौड़े अमीरके दौड़ने के साथही ख़्वाजे बुजुरुचमेहर भी दौड़े देखें तो अमर आंखें पकड़े हुये लोट रहा है अमीर ने कहा कि अमर आंखेंखोलमुंहसे कुछ बोल जो तेरी आंखों में चोट आई हो तो ख़्वाजे तेरी दवाकरें पर अमर आंखोंको खोलता नथा और हाय२ गईआंख गईआंख के सिवाय कुछ बोलता न था अंतको अमीरने जबरदस्तीसे उसकी आंख को उघारकर देखातोआंखें साफतारासी चमकतीहैं कुछ धक्का तो लगा-हीन था अमीरने कहा कि अमर यह क्याथा कि जोहमको और ख़्वाजे को बेकाम बैठेबिठाये उठाया और मलकासाहबा कोभीघबराया अमर कहनेलगा कि आपके सिरकी क़समहै इसदर्वानीने लकड़ी मेरेमारने के हेत उठाईथी जोलकड़ी मारतातो मेरी आंखोंमें लगतीतो मेरी आंख फोड़ही डालीथीयहसुनअमीरऔरख़्वाजेहंसपड़ेऔरअमरकोलेकरमहल में गये मलकामेहरअंगेजने जो यहहाल सुना वह भी बे अख़्तियार हंसने लगी जब अमीर मसनदपर बैठे और बादशाहों की भांति शर्बत पिलाया-गया और मंगलाचारकी धूममची और मलका मेहरनिगारके सहेलियों में दिल्लगीहोनेलगी और मलकामेहरअंगेजकी आज्ञानुसार प्रजालोगों को इनआम दिया गया मलका मेहरअंगेज ने कहा कि साहब किरां मेहरनिगार आपकी धरोहर है और जिससमय तुम बिजय प्राप्त करके हिंदुस्तान से फिरोगे उस समय तुम्हारे साथ विवाह करूंगी आप का मनोर्थ पूर्ण हो जायगा अमर ने बुजुरुचमेहर की ओर देख कर कहा

कि वाह २ साहब यह तो बहुत अच्छा न्याय आप ने किया और बहुत अच्छी रीति है विदित है कि हम तो बादशाह की आज्ञानुसार हिंदुस्तान में सिर बेचने के निमित्त जावें और आपसे हरनिगार को एक दृष्टि भी न दिखायें जो ईश्वर ने हमको जीता फेरा और मनोर्थ समेत यहां तक पहुंचाया तो हम नहीं जानते हैं कि आप किसके साथ हमारा का विवाह कर देंगे किसको इसके गले मढ़देंगे हमें क्या मालूम कि बादशाह की बेटी गोरी है या काली है दुबली है अथवा मोटी है हम इस समय देख तो रक्खें जिसमें पीछे को खराबी में न पड़ें और हमें बादशाहके चरण की क़सम है कि जब तक हम मेहरनिगार को देख न लेंगे कभी पांव इसमकानसे बाहर नधरेंगे यहसुनमेहरअंगेजने हंसकर अमरकी बातों पर कहा कि कहीं मर्दों को दीखना उचित है यह रीति कहीं नहीं है कि लड़की को देखें हां स्त्रियां मंगनीबिवाहके हेत आतीहैं वही देख जातीहैं अमरने प्रार्थनाकी कि हुजूर सत्य कहती हैं परन्तु मेरी यहां कौन माई मौसी बैठी है कि महल में आये और मलका साहब को देखजावे आपहीहम लोगोंकी बड़ी बूढ़ीहैं जो उचित होगा उसे करेंगी मलका ने कहा भला यह तो अब तुम्हारी हमारी प्रतिष्ठा और आबरू एकहुई जबचाहो देखलो फिरकहा बहुतअच्छा ख़ाजेतुमअमीरको पर्दे के भीतर लेजावो औरमेहरनिगारको दिखला लावो बजुर्चमेहरउनकोपर्दे केभीतरलेगया अमीर मलकामेहरअंगेजको देखकर सलामकिया और भेंट दी मलका असीस देनेलगी मलकामेहरनिगार तलेमुंड़ किये हुये अपनी माताकी गोदमें बैठीथी लाजके कारण सिरऊपर नउठातीथी अमीर उसे देखकर अत्यन्त हतहत्य होगये मारे खुशीके फूलेन समाते थे मलकामेहरअंगेजने जो अमीरको पाससे देखातो बड़े आनन्दसे अंगीकार किया बजुर्चमेहर ने मलकामेहरनिगार से कहा कि अमीर को जाना बहुत दूर है कुछचिन्ह अपना दीजिये कि सदा उसको अपने पास रक्खें आपकी यादमें ध्यान लगाये रक्खें मेहरनिगारने एक जमुर्रदकी अंगूठी हाथसे निकाल कर अमीरको दी अमीर ने भी अपने हाथ की अंगूठी उतार कर मेहरनिगार को देकर कहा कि हमारा भी चिन्ह आपके पासरहै कि जिससे हमको आप न बिसारें कभी २ यादकरती रहें फिर अमरनेभी हाथ बांधकर मेहरअंगेजसे प्रार्थनाकीकि जोअपराध क्षमा हो तो मैंभी कुछ प्रार्थनाकरूंउन्होंने कहा कि कह क्या कहताहै तेरीक्याइच्छाहै अमरने कहा जिससमय अमर का बिवाह मलकामेहर निगारसेहोगातो सेवककाभी बिवाह मलकाकी दायाकी पुत्रीसेहोसो मुझेभीचिन्ह दिलवादीजिये सर्वतदाया साहबासे मिलवादीजिये यह सुन मेहरअंगेजने कहा क्याअच्छा दायाकुछ सुनतीहै कि अमर क्या कहताहै औरहीमनोर्थ इसकाहै दायाने कहाकि ईश्वर मलकाको सदा प्रफुल्लित

रक्खे जिनकी बदौलत यहबातें सुननेमें आईं मलकाको छोड़कर यहकहां जायगी मलका की जो मर्जी होगी वही यह भी करैगी यहसुन मेहर-निगारने इशारेसे कहाउसने अंगीकारकरलिया फिरमलका मेहरअंग-जने फितनावानो से कहा कि कुछ तूभी अपना चिन्ह अमरको देउसने कईसौ रुपयेका अतरदान दिया फिर मेहरअंगेजने कहा कि फितना-वानो तूभी कुछ अमरसे ले वहबोला देताहूं यह कहकर जेबमेंसे एक खुरमा और दो अखरोट निकालकर फितनावानों के हाथ में रखदिये और कहा कि इसको बहुत अच्छीभांति से रखना दीखनेवाले अमर की इसतमाशेपर हंसते २ लोटगये फिर अमीर बिदाहुये और बादशाह की ओर चले ख्वाजे बुजुर्चमेहरने अमरसे कहा कि बाबा तू मुसल्मानों की सेना में जाकर खबर दे कि अमीर आते हैं तो कोई संदेह और फिक्र नकरे मैं अमीर को विदाकरवाने के हेत बादशाह को बुलवाता हूं और इच्छाके अनुसार पारितोषिक दिलवाता हूं अमर तो उधर गया ख्वाजे अमीर और मुकबिल को अपने मकानपर बुलाकर बादशाह के पास पहुंचा और विनय की कि मलका मेहरअंगेज ने भी अति प्रसन्नता से अमीरको दामादीसे अंगीकार किया बादशाह अमीरको निकटबुलवाया और खिलअत दामादी की कृपाकी इसके पीछे ख्वाजे अमीरको मकानमें लाकर बाज २ बातोंकी शिक्षादी और शर्बतपिलाया शर्बतपीतेही अमीर अचेतहोगये तो ख्वाजेने अमीरकी जांघ अस्तुरासेचीरकरघावकोगहरा उसमें रक्खा और टांके देकर मरहम दाजदी उसमें लगादिया मुकबिलने पूछा कि हजरत यह कौन दवा है कहा कि हिंदुस्तानी एक मनुष्य अमीर को विषदेगा आपके मारने का उपाय करेगा और उसकी दवा इसके सि-वाय और संसार में उत्पन्न नहीं हुई है खबरदार जबतक तू अमीर के हाथसे मारन खालेना तबतक उसको न बताना यहकहकर किसी वस्तुका पानी अमीरके मुंहमें टपकाया अमीर शीघ्र होश में आये परंतु इतनी देरमें घावऐसाभरगयाथाकि अमीरपर इसभेदका हाल न खुला इतनेमें अमर भी डेरेसे आन पहुंचा ख्वाजेने अमीरको बिदा किया और रीति भांति करके समुद्रकी ओर चले और बहुत से अमीर जो अमीर के स्नेही थे भेजने के हेतचले और नगर के बाहर पहुंचाकर रुखसत मांगने लगे अमीर ने सब को ईश्वर को सौंपकर आप वहांसे वेग कूच किया कुछ दिन बीते सेना समेत वहां बसरा नगर में दाखिल हुये और समुद्र के किनारे सेना समेत गये देखा कि तीस जहाज बादशाह की आज्ञानु-सार बने खड़ेहैं मेरे आनेका मार्ग वेलोग देखरहेहैं अमीर अपने तीस सहस्र सवारों से उन जहाजों पर सवार हुये और हिंदुस्तान की ओर चलने को तय्यार हुये अमर जहाज से उतरकर अमीर से कहनेलगा कि मैं जिन्न और जादू और पानी से बहुत डरता हूं इस हेतुसे हिंदुस्तान

की ओर नहीं जाने का मक्के में जाकर आपकी विजय के हेत ईश्वर से बरमागूंगा अमीरने देखा कि यह किसी भांतिसे मेरे साथ न जायगा उड़ान घातियां बतावेगा फिर अमीरनेकहा कि अच्छा अमरमैंभी नहीं चाहता कि तू कष्टपावे परन्तु थोड़ीदेर यमजा तोएक विनयपत्र अपने पिता को लिखदूं अमरने जाना कि सचमुच पत्रलिखदेंगे और मुझे यहीं से बिदाकरेंगे तो जहाजपर सवार होकर अमीर के पासगया अमीरने एकपत्र लिखकर अमर के हाथ में सौंपा और कहा कि ऐ भाई आवो तो मिललें ईश्वर जाने अबकब मिलापहोगा अमर की आंखों में जलभर आया और बहुत से आंसू टपके अमीरने अमरको बग़ल में लेकर कहा कि यार तुमने हमारी बड़ी२ मुसीबतों में साथ नहीं छोड़ा इस समय तुम्हारा बिछोह कबमनको भाता है ॥

दोहा ॥

जो कुछ लिखा लिलारमें होना वही जरूर। अबतो नाव चलाय दो ईशकरे भरपूर ॥

केवटसे कहा कि जहाजका लंगरउठा आज्ञा देनेकी देरी थी लंगर जहाज का उसीघड़ी उठगया जबकिनारे से दूर निकल गयातोअमीरने अमरको छोड़दिया अमर हाथपांव पटक २ कर जहाजपर दौड़नेलगा और बड़बड़ाने लगा कि मैंनेतो इस अर्बवालेके साथक्यों प्रीतिकी रीति से मिलापकिया और यहमेराबैरी जीवघातक होगया थोड़ीदेर चलके एकटापू तीसगज का चौड़ा दृष्टिआया अमर उस टापूको देखकरमनमें बिचारने लगा कि इसपर कूदकर घर तक पहुंचजाऊंगा परन्तु जिसको अमर टापू समझा था वह मछली थी धूपके खाने को पानी पर उतरा आई थी अमर जो उस पर कूदा मछली अमर के कूदने की धमक से पानीमें चलीगई तो अमर बूड़नेलगा और बहुत घबरागया यहवृत्तान्त देखकर साहबकिरांने केवटोंसे ताक़ीद अर्थात् धमकी दी कि खबरदार अमर बूड़ने न पावे दूसरा गोता न खावे जो इसे निकाल लावेगा वह भारी पारितोषिक पावेगा केवटों ने सांकड़े फेंक कर अमर को जहाज पर उठालिया अमीरके सामने लाकर बैठा दिया सचहै कि जो मनुष्य दुःखमें फसताहै वहो आरामका हाल जानताहै अब जो अमर समुद्रसे निकालागयातोभीगीमुर्गीकीभांति जहाजके एककिनारे चुपकाबैठारहा कईदिनके पीछे एकटापूके किनारे पहुंचे जहाजोंका लङ्गरपड़ा सबसे प-हले अमर कूदकर पृथ्वीपर आया और खिलखिलाकर फिरने लगा दैव योगसे एक वृक्षकेतले एक आदमी कमरमेंचमड़ेकी पेटीबांधे बैठाहुआथा अमरको देखकर मनमें प्रसन्नहुआ कि मनोकामना पूर्णहुई अमरसे क-हनेलगा कि एमेरेभानजे तेरा मिलनाभी दैवगतिसेहुआइस स्थानमेंतेरा पहुंचनाबड़ाआश्चर्यहै मैंनेतोजाना किमैंमरा औरद्रव्यभीगईपरन्तुईश्वरने हक़दारको भेजदिया बड़ीदयामेरेऊपरकी अमरने जो मालका नामसुना

तोचुपहोरहानहीं ते। कहाचाहताथा कि मैंतेरा भानजा काहेकोहूंक्यों अजनबी आदमीसे प्रीति बिदेशमें करूं अमरने उसकाहाल पूछा उसने कहा कि तूने मुझेनहीं पहिचाना होगा कि मैं तुझे छोटासा छोड़कर सरंद्वीप को निकलगयाथा जिससमय मैंनेवहां बहुतसी सम्पत्तिपैदाकर चुका तब चाहा कि अब घरको चलिये ते। एकाएकी वायु बहुत जोरसे चली समुद्रमें तूफान आया और बड़ी २ लहरें उठनेलगीं जहाज यहां पर आनकर बूड़गया मैं एकसंदूक हीरा मोती आदि जवाहिरात का लेकरकूदा और सूखेमेंआपड़ा परन्तुपैरोंमेंऐसीचोटआई कि पैरभरतक चलना कठिन होगया इसद्वीपमें एकजर्राहरहताहै बहुतअच्छा लोगउसे बतातेहैं लोगदयाकर मुझेलेगये और कुछखानापीनाभी मुझेदेगये उसने अपने घरके निकट एकमकान किरायेकाभी लेदिया और केचुओंका तेल अपनेघरसे लगानेका दिया पर आज मनउबनेसे यहांतक आयाहूं परन्तु बड़ीदेरसे मकानपर जानेका मनोर्थहै जानहीं सक्ताहूं पीरकेकारण कुच-किचाताहूं चलनाकैसा खड़ेहोनेसेभी जीचुराताहूंजो तू मुझेपीठपरलाद कर लेचले ते। मुझपर दोहरा उपकारकरै किमैं घरतकबेपीर पहुंचजा-ऊं और तुझेतेरीधरोहर भी सौंपदूं और मैंभी एक किनारे जहाजपर बैठलूं अमरने जो संदूकचोंका नाम सुनकर समझा कि मेरीभाग्य उदय हुई बेगानों के आगे अपना जानपड़ता हूं सेंतकी लक्ष्मी हाथआती है आवताव कुछभी नदेखा झटपट उस लूलेलंगड़ेको अपनी पीठपर बैठा लिया उसका पीठपर पहुंचना था कि उसने अमर की कमर में दोनों पांवलगाकर तथा अच्छीभांति करके लपेटा और घुटुओंसे एड़ियांलगा२ कर कहनेलगा हां मेरेघोड़े अपना कदम अच्छीभांतिसे बढ़ाकरदौड़तो अपनी दिखा अमरका सबशरीर अकड़गया यद्यपि चाहा कि हाथसेपांव को उसके छुड़ावे जिसे उपाधिसे छूटेपरन्तु उसने हाथभी बांधलिये और अपनेहाथसे अमरकोधौलेंमारनेलगाऔरमुहपर थप्पड़ पीठपरघूसेलगाने लगा कि दौड़ता नहीं है सहलहीमें मोल लिया चाहता है अमर सब चालाकी और मक्कारीभूलगयाअत्यन्तअचेत होगयाऔर लाचार होकर अमीरकी ओरदौड़ा जहाजकी ओरका मार्गलिया कि अमीर मुझे इससे छुड़ावेंगे वहांजाकर देखा कि वहांभीअद्भुत लीलाहोरही है कि मित्र सेही समेत अमीरभी इसीमें फंसेहैं अमीरने अमरको देखकर अय्यारी भाषामेंकहा कि हमसमझतेथे तुमइसउपाधिमें नफसेहोगेहमलोगों को इनसे छुड़ावोगे सोतुमभीइसीमेंफसेअमरयहहाल देखकरलाचार होकर अमीरके पाससे निराश होकर फिरा परन्तु इसके उपायमेंथा कि वह तसमियां पांवकभीतोकहताथाकि क़दमचल कभीहुक्मदेता था कि कूद फिर उछल उसने सब अपने साथियोंको देखाकि सब सवारहैं यह सबके बस कहनेलगेकि तुमभी अपना२घोड़ादौड़ावो और सर्पटपोइयां दिखावो

और हमभी अपना घोड़ादौड़ावें देखें किसका घोड़ाआगे निकलजाता है और कौन पीछे रहकर मार खाता है इसके पीछे इन्हें मारकर कबाब लगाकरभूनर कर खा जावेंगे यह सुनकर सबके होश उडगये ठंढीसासें भरनेलगे फिर वेअपने २ घोड़ों को एड़ी मारना शुरू की और अपने२ घोड़ों को बागेंलीं आदीका सबसेअधिक नाकमें दमहुआथा कि मुटापेसे कदम २ पर ठोकरें खाता था वह दशादेख अमर ने यह दोहा पढ़ा॥

दोहा॥

मानुष पर बीतत कबहुं अतिदुख दगड़ करोत। कबहुंक सुखमें रहत तनमनअति हर्षितहोत।

और ऐसा दौड़ाकि कोई उसके आस पास तक न पहुंचा सबसे दो कोस आगे निकलगयायहदेखवहदुष्ट अतिप्रसन्नहुआ बोला किमेराघोड़ा सबसे अच्छाहैवायुके समान जाताहै अमरने एक स्थानपर देखा कि कोसों तक अंगूरके दरख्तलगे हैं फल बहुतसे लटक रहेहैं और दानों से रस टपकरहाहै रसकीनदी बहतीहै उसके समीपकद्दू की बेल फैलीहै उसमें सैकड़ों कद्दू लटकतेहैं दूर तक इसकी बेलें चलीगईहैं अपने मनमें अति प्रसन्नहुआ औरकद्दू की बेलकेपास जाकर अपने सवारसे कहा कि बड़ा सा कद्दू तोड़दे इसको पीकर औरभी कदम निकालूंऔर अपनी चुस्ती व चालाकी तुझे दिखाऊं उस बुद्धिहीनने अमरके कहने पर कामकिया औरतोड़करअंगूरका पानीउसमें भराऔरथोड़ेबूंदअमरके मुंहमें चुआये और दोचार फलभी तोड़कर खिलाये अमर छलांगेंफलांगेंमारकरगाने लगा और उसको लेकर अति चलसे दौड़नेलगा वहदुष्टअतिप्रसन्न होकर अमर से कहनेलगा कि ऐ घोड़ेमेरे जबतकमैं जीऊंगा कभी तुझे साथ से अलग नकरूंगा कि तू हंसता और जी बहिलाताहै और कदमभी खूब जाताहै अमरनेकहाकिदेखो यहपानीतुम नपीलेनाभेरेनिमित्तरहने देना वह अपने मनमें समझा कि मालूमहुआ यह पानी बहुत अच्छीचीज है तब तो यहपीनेको मनाकरताहै और इसरसके नामसे इसके मुंहमेंपानी भरताहै दो घूंट जोउसनेपिये और उसकोस्वाद मालूमहुआतो कद्दू को मुंहमें लगाकर सबपीगया अमरके दौड़नेसे जोजड़लकी हवाउसकोलगी सारी दुष्टता भूलगया औरअचेतहोकरअमरकीपीठपर सेगिरपड़ाअमर ने कटार निकालकर उसका पेट फाड़डाला और अमीरके पास जाकर कहनेलगा कि ऐअमीर तूने एककाफिर की बेटीकेहेत इतने मुसल्मानों का अपराध अपनेऊपर लिया और मुझकोभी दुखदिया देखाचाहिये अन्तमें तेरा क्या हाल होताहै और इसमार्ग में क्या २ फल मिलता है अमीरने कहा कि यहतो विदितहै कि मैं अपराधी और अज्ञानहूं परन्तु तुमतो इतनी पुण्यकमावो कि मुसल्मानों की जान बचावो अमरने कहा कि मुझे क्यागर्ज है कि बेमतलब इतने पंगुलोंको मारूं अपाहिजों का अपराध अपने ऊपरलूं अमीर ने कहा कि इनका पाप हमारी गर्दनपर है

और एकआदमी प्रति दोसौ अशर्फी दूंगा और आपका उपकारमानूंगा अमरने अङ्गीकार किया और प्रत्येक को गोफनसे मारकर ढेर करदिया जब सबोंने उनलंगड़ों के हाथसे छुट्टीपाई तो सबोंकेशरीर में जान आई अमीरने शीघ्र जहाजपर सवार होकर लंगर उठवाया जहाज को आगे बढ़ाया कि यह हिंदुस्तान का द्वीपहै ईश्वरजाने इसमें और कोई उपाधि का सामानहोवे कि सबसेना दुःखमेंफसजावे चलदियेदोमहीनेकेपीछेएक द्वीपऔर मिला मल्लाहोंने अमीरसेकहा किजोआज्ञादीजिये तोजहाजों पर पानी भरलेवें और कुछ अन्नभी खाने के हेत जमाकरलेवें अमीर ने कहा अच्छातो है लोगोंके कपड़े भी मैलेहोगयेहैं बड़घाट कपड़े धुलवा लेंगे फिरआगेका मनोर्थ किया जायगा केवटोंने जहाज का लंगर किया और सब सुखेमें उतरे अमर भी ठंढी हवादेखकर सैरकरने कोगयातो एक तालाब बहुत अच्छा दृष्टिपड़ा उसमें स्वच्छ मोती सा पानी लहराते देखा उसकाभी जीलहराया कि स्नानकीजिये तोकपड़े उतारकर किनारे पर रखदिये और तालावमें गोतालगाया फिर जोसिरनिकालकरदेखा तो कपड़ोंको घाटपर न पाया समझा कि अमीर ने चकमा देनेके हेत कपड़ा उठवामगाये होंगे किसीके हाथ चुरवाकर रखवाये होंगे हमजा हमजा कहकर अच्छी भांतिसे चिल्लानेलगा अमीरने अमरकी जो बोली पहिचानी जाना कि किसीदुःखमें तोनहींफसा आशक्त होकर दौड़े और अमर से कहनेलगे क्या हुआ भाई अमर भलाई तो है क्या फिर किसी उपाधिमें फंसा अमरने कहा कि यह दिल्लगी आपकी मुझे नहीं अच्छी लगती है नंगा मुझेतालावमें खड़ाकर रक्खाहै कपड़ेमेरे दिलवा दीजिये अमीरने कसम खाई कि मैं तेरे कपड़ों को नहीं जानता तब तो अमर घबड़ागया अपने मनमें कहनेलगा कि जो अमीरने कपड़े नहीं उठवाये तो कहांगये और कोई दूसरा मुझसे दिल्लगी नहीं करैगा एकाएक जो अमर की दृष्टि ऊपरगई और वृक्षोंपर नजर पड़ी तो देखा कि वृक्षोंपर बन्दर बैठेहुये हैंकपड़ों को नोचखसोटरहेहैं किसीके हाथमें नीमताजहै कोई अंगाखोलकर दीखताहै कोईपायजामा लियेहुयेहै कोई कमरबन्द अपनेहाथमें लपेटरहा है अमरने और वस्त्रमंगवाकर पहने और पहिले नीमताजको अपनेहाथसे उछाला बन्दरकाकायदाहै कि जो देखताहै वही आपभी करताहै उसनेभी अमरके नीमताजको उछाला परन्तुरोकन सका धरती पर गिरपड़ा अमरने उठालिया इसीभांति से अमरने अपनासब असबाब मांगलिया और वृक्षोंमें तेल मलकर आग लगादी जितने बन्दर थे सब जलकर मरगये अमीरने शीघ्र सवार होकर जहाजों के लंगर उठवादिये जहाज आगे को बढ़े कई दिनके पीछे एक बादल का टुकड़ा आसमानपर देखपड़ा फिरघड़ीभरमें तमाम आकाश परछागया वायुने जोर किया तूफान की सूरत उत्पन्न हुई दिनकी रातहोगई हाथ पसारे

न देखपड़ने लगा केवट सब घबरागये और बड़ी भारी भारी लहरें उठने लगीं जहाजों में जोर२ से लगनेलगीं केवटलोग जिन्दगीसे निराश होगये और आंसू बहाने लगे मनोर्थ रूपी किनारा तो न मिला मौतने आघेरा फिर फिर अमीरने कहा कि अधीर्य न होना चाहिये ईश्वर की दया पर दृष्टि करना चाहिये ॥ दोहा ॥

प्रथम दुखित जो होत है सुख पावैंगे अन्त । जो पहिले सुख लहत हैं पुनि पीछे दुखवन्त ॥

अमर सबसे अधिक घबरागया और रोरोकर कहनेलगा कि ऐ केवट सब मुसलमानों का बेड़ा तेरे हाथ है तू पार उतारेगा तो उतरेंगे कभी कहता था ऐ हजरत अलियास जो इस बेड़े को जो मांझ धार में फंसा है किनारे लगावोगे और इस उपाधिसे बचावोगे तो यद्यपि इस समुद्र में बल नहीं है परन्तु सवादमड़ी की खांड़ की पुड़िया चढ़ाऊंगा और इसकी मुख्यतमभी पावोगे इसके सिवाय तुम्हारे भाई हजरत खिजर तुमसे प्रसन्न होंगे कि मैं उन्हीका बरदानी हूं और इस आफ़तमें फंसाहूं कभी अमीर से कहता था ऐ हमजा यह सबतेरी करनी करतूत है मेरो भी मिट्टी तूने बे क़बर और बेकफ़न खराब की जो कुछ किया सो तूने किया मैं इसी कारण समुद्र में पांव नहीं रखताथा यद्यपि मैं तेरे स्नेह में बहुत फंसा था और तू भी जानता था कि मैं पानी से पहिले कोसों भागता था किनारेके भांतिसदा अलग रहताथा इतनी उमरहुई कभी होजमें भीनपांव धराथा नहाते समय सिरसे कभी पानीनहीं डालताथा तू अपने वशसे मुझे लाकर समुद्र में डुबोया और समुद्रकेबीच मेंमुझेदोनों जहानसे खोया सुननेवाले यातो दुःखमेंथे या अमरकी बातेंसुनकर खिल खिलाकर हंसपड़े फिर ईश्वर२ करते तीनदिनके पीछे उजालाहुआ और सूर्यने अपना प्रकाश किया लहरोंकी थपेड़ें बन्दहुईं समुद्र का उलझना बन्दहोगया अधिकारी लोग प्रसन्नहोनेलगे और परस्पर कहने लगे कि हम जो जीनेसे हाथधोचुकेथे ईश्वरने बचाया कोई बोला कि डूबनेमें क्या कुछबाक़ी रहाथा परन्तु ईश्वरने पारलगाया अमरने कहा कि यारोमेरी आशीर्वादने तुमसबको डूबनेसे बचाया और दुःखसे निकाला क्या मैंने मानता नहीं मानीहै हां कुछदेतेजावो कि मैंउनसबको अर्पणकरूं हरएकने कुछ २ दीनार अमरको दिये और बाजोंने देनेका वादा किया अमरने कहा चाचा अलियास जब सरन्दीप में पहुंचलूंगा तब शक्कर मोललेकर चढ़ाऊंगा इसखारी समुद्रमें शक्कर कहांसे लाकर चढ़ाऊं लोग उसकी बातोंपर हंसनेलगे और खुशहुये अभीमनका खेद नगयाथा कि इतनेमें समाचार मिला कि बहराम मलखाक़ान चीनके जहाजों का पतानहीं लगता हजारों जहाज़ बेपतेहैं किसी भांतिसे जहाजों का पतानहींपाते दूरबीनभी लगाई परन्तु दृष्टि नहींपड़ते अमीर सुनतेही शोकरूपी समुद्र में डूबगया रो२ कर कहनेलगा कि बड़ा भारी पहलवान बूड़गया जिसे

सेनाकी शोभाथी उसीका थलबेड़ा नहींलगता लोग बोले कि ईश्वर न करै जहाज किसीओरको तवाह होगयेहैं किसी बन्दरमें लगेहोंगे ईश्वर उसको किसीद्वीपके किनारे लगादेगा वह ईश्वर बड़ादयालुहै फिर अपनीकृपासे मिलादेगा अमर बोला कि हमजो कुछ मानता मानो मैंने मानीथी उसीसे बचरहा और मेरेही पुण्यसे तूभी बचगया अमीरनेकहा यह जगह हंसने की नहीं है समय को पहिचान मेरी ओर से तू हो मन्नत मान जिस समय बहराम की सूरत देखूंगा जो तू कहैगा सो में दूंगा अमरबोला कि बहुतअच्छा परंतु जो पारउतरे और बहरामसिले तबकहो कि थोड़ेसे खर्चमें काम निकाल लोतो उससमय मैं क्याकहूंगा आपसे क्या सुनाऊंगा अपनी गिरहसे मुझको करनापड़ेगा अमीरने हंस कर कहा कि ऐसानहोगा जो तुमकहोगे वही देंगे॥

अमीर के जहाजों का सिकन्दरी तूफान में फंसना और उससे निकल कर सरन्द्वीप में पहुंचकर शादानशाह के पुत्र लंधौर से कर लेना॥

बुद्धिमान गुणवान इस वृत्तान्त को लोगोंको इस प्रकार से सुनाते हैं कि तूफान बन्दहोने के पीछे थोड़े दिन बराबर अच्छी वायुमिली किसी भांतिसे कुछ चित्त स्वस्थहुआ केवट पाल उठाये चले जातेथे एकदिन जहाज के देखनेवालोंने शुल मचाकर कहा कि यारो बड़ाही तूफान आताहै इसके आगे जिसमें पड़ेथे वह बहुत छोटाथा देखें परमेश्वर किसे बचाता है और इसमें कठिनता अधिक है कि सिकन्दरी यहां से बहुत निकट है ईश्वर बचावै कदाचित् जहाज इसमें पड़गये तो चक्कर खाकर डूबजावेंगे अमरके तो हाथ पांव ढीले पड़गये फूट २ कर रोनेलगा और घबराकर जानअपनी खोनेलगा कभीकहताथा कि ऐ अलियास चचा बचाओ मैंनेतो पहिलेहीसे कहाहै कि सरंद्वीपमें पहुंचकर तुम्हारा प्रसाद चढ़ाऊंगा कभी चिल्लाता किहजरत खाजे खिजर मेरी सहायता अपने भाई से करवाओ ईश्वरसे वरमांगा कि जो मान्तामानीहै वहसुखे में पहुंचकर करूंगा अमीरने हल्ला गुल सुनकर कहा कि अब यह रोना पीटना कैसाहै हजरत अलियास और खिजरसे क्यों फिरियाद होतीहै मल्लाहियोंने कहा कि हजरत तूफान बहुत उठाहै इसे ईश्वरही बचावे तो बचेंगे नहीं तो बचना कठिनहै यह बातें होरही थीं कि तूफान आपहुंचा और समुद्रमें लहरें उठीं और जहाज बातकी बातमें सिकन्दर के घेरे में जापड़ा चक्कर में आकर घूमने लगा तबतो सबकी बुद्धि घूमनेलगी चित्त घबराया अमीरनें उस तूफानमें ध्यानकरके जो देखा तो उस भंवर के बीचमें एक खम्भा पत्थरका गड़ाहै वह लम्बा चौड़ाहै उसके सिरेपर एक तख्ती सफेद पत्थर की है और उसमें काले पत्थरके अक्षर छीले छिलाये बनेहैं और वह अर्बी भाषामें लिखेहैं उसके पढ़नेसे जानपड़ा कि यह लिखाथा कि एक समयमें साहबकिरांके जहाज इधर आवेंगे और

वहसब इस घेरे में फसेंगे साहबकिरां को उचितहै कि आप इस खंभेपर चढ़जावें उस दमामे को जो उसपर धरा है बजावें या अपने नायब को इसपर चढ़ावें कि उसके हाथ से यह दमामा बजायाजावे तो उसका जहाज निकलजायगा अमीरने अमर से कहा कि लो भाई हमतो इस खंभपर जाते हैं और ईश्वर का नाम लेकर नकारा बजाते हैं जो केवल हमारे जीसे हजारों की जानबचेतो क्या कठिन है ईश्वरके बन्दोंकी जान तो बचावें अमरने कहा कि आपके नायब काभी तो नामलिखा है सो मैं आपका नायब हूं इस खंभपर जाकर नगारा बजाता हूं और अपने मनमें सोचा कि इस खंभपर चढ़कर मजेसे बैठरहूं समुद्र के मध्यमें तो बचूंगा जब कोई जहाज इधर आवेगा तब सवारहोकर किसी ओर की राहलूंगा बालबच्चे तो हैं नहीं अकेले किसी भांति से जिन्दगी निबाह-लूंगा फिर सबसर्दारों की ओर देखकर कहा कि यारो तुमलोगों का बलिबकरा होता हूं इस समय तो गांठ खोलदेजावो कदाचित् जो बच-जाऊं तो अपनी मेहनत की मजदूरी तो पाऊं सबोंने एक के स्थानपर सौ और सौके स्थानपर लाखरुपये का तमस्सुक लिखकर अमरके हवाले किया अमरने तमस्सुक लेकर यह सोरठा पढ़ा ॥

सोरठा ॥

यह समुद्र की धार अगम अथाह अमोवहै । सोई लगावैपार नामजासु लैके धस्यो ॥

और श्वास लेकर एकफलांग लगाई तोउस खंभपर पहुंचकर श्वास टूटीतोसमुद्रमें गिरपड़ा और अमरतलेको चलातो क्यादेखाकिएक निहंग मुंह खोले बैठा है खुराक की ताक में है अमर घबरागया कि यहबला कहांसे आई जो उस उपाधिसे बचे तो यहां जानगवांई हवास सावधान करके उसके दांतोंपर खड़ेहोकर फलांग जो मारीतोऊपर जाखड़ाहुआ फिरउसखम्भे की चोटीपर जा पहुंचा अमर की यह तीव्रता देखकर सबों ने सराहा अमरने जो देखा तो सचमच एक नगारा रक्खा है और उस दमामेपर सिकन्दर का नाम लिखाहुवा है अमरने ईश्वर का नामलेकर उसपर चोब लगाई तो बड़ी भयानक आवाज आई उसके शब्द से चौंसठ कोसतक समुद्र में लहरें पड़गई अद्भुत भांति का शोरहुआ जितने जीव समुद्र में थे सब उतराआये और जो पक्षी उसपर रहते थे सबकेसब घब-राये एकबारगी उड़े उनके परों की बायुसे जहाज चलनिकले परअमर उसी खंभपर रहगया यद्यपि मनसे उसकी यही इच्छाथी कि मैं इसपर रहजाऊं परन्तु अकेले से घबरागया कुछदिन के पीछे सरन्दीप के टापू में जहाजों के लंगर पड़े और साहब किरां सेनासमेत सुखसे उतरेउधर अमरका यह हालहुआ कि अकेले और प्यासकेजोरसे बेहोश होता और ईश्वर से हाथजोड़कर दुआमांगता था और रोता था कि एकाएक अमर के कानमें आवाज सलामकी आई तबतो अमर की तबीयत और भीघबराई

भवचक्का होगया और इधर उधर देखकर आश्चर्य मानकर कहने लगा कियहां मेरेसिवाय आदमीकहां कि जोमुझे जोहारकरे और मेरीखबर ले किन्तु कदाचित् अजराईल अर्थात् यमराज आयेहोंगे मेरी जानलेने का मनोर्थ किया होगा अफसोस क्याबुरे स्थानपर मौतआई कि कफ़न तकनमिला इतनेमें हजरत खिजर आपहुंचे अमरनेदेखा किवस्त्र हरापहिने एक मनुष्यखड़ाहै और चेहरेपर टोपीशोभितहैतब अदबसमेत सलाम करके पूछा किआपका नामक्याहै और इस स्थानपर किसहेत आयेहो हजरत खिजरने कहाकिमैं खिजरहूं और तुझेनिकालने आयाहूं ईश्वर चाहताहै तोअभी तुझे निकालकर बाहर करूंगा अमर उनके पांवोंपर गिरपड़ा जबउठा तब कहनेलगा कि ऐहजरत मैं भूखाहूं आपकी कृपा चाहताहूं तब हजरतने एकरोटी काटुकड़ा दयाकरके दिया और कहा कि इसे खा मैं पानी भी पीनेको दूंगा और तुझे इस बलासे छुड़ाऊंगा अमरउसको देखकर जलगयाकि इसटुकड़ेसे मैंकाहेको अघाऊंगा भूख की कठिनतासे बड़बड़ानेलगाकि ऐहजरत जो आपपैगम्बर अर्थात् ईश्वर केदूतहैं यद्यपिआपकीबराबरी और अधिकारपरमैंनहीं पहुंचताहूं परन्तु मैंभीवलीअल्लाह का सेवक जानकारहूं आपहमसे ऐसे समयमें दिल्लगी करतेहैं यहांहम अपनी जानको मरतेहैं जबमनुष्यका पेटभरताहै तबउसे दिल्लगी सूझतीहै नहीं तो उसेबातकरना अच्छानहीं मालूम होताहै हज-रत खिजरने कहाकि दिल्लगीकैसी मैंनेभूखकी शिकायतकी मैंनेतुझे एक टुकड़ा रोटीका दिया और पानीपिलानेका भी वादाकिया अमरबोला किसाहबयहवहीकहावतहै कि(ऊंटकेमुंहकोजीरा)भला इसटुकड़ेसेमेरा क्याहोताहै एकअंतड़ीभी तो नअघायगी आपने केवलप्रसाद कृपाकिया है खिजरने कहाकि मलेमानुष प्रथमनीयत अच्छी करके खादेखतो इसे सब खासक्ता है या अभीसे अधीर्य होकर अनायास बकताहै अमरने वह टुकड़ा खाया पर वह उतनाही रहा किन्तु पेट भरगया और हजरत खिजरने सवा बालिस्त का एक मश्क् निकाला और उसे पानी पिलाया और कहाकि तूतोपहिलेही से अधीर्य होता था अबक्यों टुकड़ा बचरहा अमरने जो देखा भखकी भूख जातीरही और प्यास बुझगई ईश्वर की धन्यबाद किया और कहा कि हजरत भूखप्यास आदमी के साथरहता है आपतो चलेजांयगे मैं फिर भूखा प्यासा मरूंगा तो किससे कहूंगा जो यह टुकड़ा मुझे कृपा होजाये तो जीते जिन्दगी रोटियों की चाहन होतीआपकी अत्यन्तप्रशंसा करताहजरतने अमरकी प्रार्थना अंगीकार की और वहटुकड़ा अमरको देदिया और कहाकिऐ अमरयह वस्तुतुझे बड़े २ गाढ़ेमें काम आवेगी और यह सिकन्दरी दमामा असबाब समेत हमजाको देदेना खबरदार इसमेंसे कुछन लेना अमर बोला कि हजरत मैं इसबोझको किसभांतिसे लेजाऊंगा और इसका बोझक्योंकर उठाऊंगा

हजरतखिजरने एककमली देकरकहा कि इसमेंलपेटले तुझेकुछभी बोझ नजान पड़ेगा अमरने अपने मनमेंकहा किकमलीभी अच्छीवस्तुहै समय परकाम आवेगी और जाड़ेमें आरामदेगी फिरसबसामान नकारे समेत अपनेसिरपर रक्खा और पांवअपने हजरतके पावोंकी पीठपररक्खे फिर इस्मआजम अर्थात् ईश्वरकानामजो हजरतने बतायाथा पढ़नेलगा और आंखेंबन्दकरलीं तोबहुतहीशीघ्रकहींसे कहींपहुंचा हजरतने कहाकिअमर आंखेंखोल ईश्वरकी रचनादेख कि दमकेदममें कहांसे कहांतक पहुंचा है पहिले किसकष्टमें फसाथा अबकहांखड़ाहै अमरने आंखेंखोलीआपको सूखे में पायातो ईश्वरका धन्यवादकिया और कोहिस्तानकी ओर चला और अमीरको ढूंढनेलगाअबसाहब कि रांकाहाल सुनिये किजबबन्दरसरं-दीपमें पहुंचे और सेनासमेतउतरेहजरत खिजर और इलियासका प्रसा-दजो मानाथा अच्छीभांति से चढ़ाया और कहा कि हमारा दो महीने तकयहां रहनाहोगा दुखकष्ट से कामरहेगा और हम अमरका मातम करेंगे और उसके नामसे बहुत कुछपुण्य करेंगे जाहिर है किमैं उसको अपनीजानकेबराबरप्यारा जानताथा और सबमित्रोंसे उसेअधिकजानता-थाउसनेमेरे हेतअपनी जानदी और सदामुझसे अच्छीभांति प्रीतिरखता था फिर जितने लोग वहां थे सबने वस्त्र रंगाकर अमरका मातम किया रोने पीटने चिल्लानेलगे कुछदिन के पीछे अमरने उसबनमें एक मसजिद देखीकिबहुत अच्छी बनीहुई है जबनिकट पहुंचा तबपांच आदमी नमाज पढ़तेदृष्टि पड़े अमरभी उनमें मिलगया जबनमाज पढ़चुके तबचार मनुष्य तो अपने २ घोड़ों पर सवार होकर चले और एक आदमी पैदल चला अमरने दयाकरके उससे हालपूछा उसनेकहा कियेप्यारे भाईहमपांचों शहीदहैं ईश्वरके मार्गमें जान दीहै उसके बदले ईश्वरने ये पदार्थ कृपा किये हैं चारों आदमी एघोड़े समेत मारेगयेथे इससेवे सवारहैं और मैं पैदलमारागया था इससे पैदलरहगया किन्तु तूमेहरबानी करे तो मैंभी घोड़ापाजाऊं तेरे निमित्त दुआकरता रहूंगा अमरनेकहा कि मुझसेजो आपकीसेवा होसकेवहकरूं ऐसेलोगोंकी सेवाकरनामें बड़ीपुण्य जानता हूं वहबोला कि यहांसे एकनगर थोड़ीदूर है उस नगरके फलाने महल्ले में मेराघरहै और मेरेघरके आंगनमें एकवृक्ष अमरूदका है उसके थाल में दो सहस्र अशर्फियों अर्थात् मोहरोंका लोटामुंहढपा गड़ाहै तू नि-कालकर तिहाईतो मेरेलड़केबालोंकोदे और एकतिहाईतूले और एक तिहाईकाघोड़ा और उसका असबाब खरीदकर ईश्वरके मार्गमें मेरेनाम पर किसीको देदे कि मुझेइसप्यारे पांवसेछुट्टीमिले अमरउससे बिदाहुआ और उसके घरपर जाकर उसकेकहे हुयेको किया फिर आगेको चला कईकोसगयाहोगा कि एकवृक्ष डालीदार मिलाउसकी छायामें सुस्ताने के हेत बैठगया एकक्षण पीछे एकवृद्ध मनुष्य को अपने दाहने खड़ादेखा

तोपैर छूके पूछाकि आपकौनहैं उसनेकहा मेरानाम अलियास है तेरी धरोहरतुझे देनेआयाहूं यहजाल और कमलीले जालमेंतो जितनाबोझ बांधेगा सबहलका दिखाईदेगा और कमली जब ओढ़लेगा तबतू सबको देखेगा और तुझेकोई न देखेगा यह कहकर चलेगये अमर कुछ दिनके पीछे साहब किरांकी सेना के निकट पहुंचा पहिले मनमें प्रसन्न हुआ और ईश्वरकी प्रशंसाकी कि उसने सेनातो दिखाई फिरदेखा कि प्रत्येक मनुष्य काले वस्त्र धारण कियेहैं कोई २ शोक करते २ अचेत होगया है अमरनेअपने मनमेंकहा कि ईश्वरहमजाको अच्छा सुनवाये उसकीसूरत देखावे फिरएक मनुष्यअजनवीसे पूछाकियहकटक किसकाहै और सेना तमाम मातमी क्यों होरही है वह बोला कि यहसेना साहब किरांकी है कुछ दिनोंसे यहां पड़ीहै घमर अय्यारनामी एक अमीरका भाईथा अमीर उसका बहुत प्यारकरतेथे सोवह खारी समुद्रमें एकशृंगके ऊपर चढ़के मरगया उसके शोकमें सबने कालेवस्त्र पहिनेहैं और अमीर आप बहुत दुःखकिया है आज उसका चेहलम है फकीरों को खाना बटता है अमरने अपने मनमें कहा कि अमीर की प्रीति की भी परीक्षा होगई फिरदिनतो उन्हींफकीरोंमें जिन्हेखाना घटतायाकाटारातको कमली ओढ़कर मादीकर्बके तम्बूमें घुसादेखातो मादीकर्ब अचेतनिर्भय सोताहै तो उसकी छातीपर चढ़बैठा वहजागकर पूछनेलगा कितूकौनहै और कहां से आया है मुझसे बैरका क्याकारण है अमरबोला कि यमराजका दूतहूं आज अमरका जीवैकुंठ में भेजते थे वहांजाना उसने अंगीकारन किया और यमराजसे कहाकि मादीकर्ब मेरावड़ा मित्रहै बिनाउसके मैं बैकुंठ में नजाऊंगा ॥ दोहा ॥

वहमें नहीं सुजान सुन इकने सेरहि जाउं । मित्रसनेही साथ ले तब बहु बिधि गुण गाउं ॥

यद्यपि उसेसमझाया कि उसके आनेमें अभी बड़ी देरहै अभी उसकी मियाद बहुतहै परन्तु तबभीउसने नमाना मुझेआज्ञादी किजावो मादीकर्बकोभी लेआवो इसमें तुझेमारने आयाहूं मादीकर्बने कहाकि मैं उसका मित्रकभी नहींहूं बल्कि उसका बैरीजीघातक रहाकरताहूं और उसकी मौत ईश्वरसे मांगा करताथा बल्कि उससे हमसेकभी मेलभीनथा अमरबोला कितुम मुझको कुछदोतो छोड़कर जाऊं और जोकुछ तुमने कहाहै वह यमराजसे कहूं मादीनेकहा किवह सामने एकसंदूक अशर्फियोंका रक्खाहै आपलेलीजिये मेरीजान छोड़दीजिये अमर वहांसे संदूकलेकरसुल्तानबख़्तके तम्बूमेंगया और वहीबातेंउससेभीकहीं उसनेभी एकसंदूक अशर्फियों कादिया और अपनी जानबचाई संक्षेप यह किउस रातको इसीभांतिसे तमामसरदारोंके पासगया और अशर्फियांजमाकीं उसीझोलीमें भरलीं फिरअमरके आनेकेपीछे सबकोडरके कारणसे जूड़ी ताप आई और किसीने डरके सबबसे रातभर चैननपाया जब प्रातःकाल

हुआ पहिलेतो आदीनेरातकाहाल अमीरसेकहा अमीरने जानाकियह अच्छाखप्न नहींहैतोउसकीबातें सुनकरबहुतहंसे सुल्तानबख़्तनेभीअपना समाचारवर्णनकिया और२लोगोंने आकरऐसाहीसब बयानकियाअमीरने कहाकि जल्दयहांसे तम्बूउखड़ावो आगे सेनाको बढ़ावो यहां शैतानका बासरहताहै नहींतो क्याकारणहै कि सबलोग खप्न एकसेदेखें ऐसानहो किलोगसिड़ीहोजायं दूसरेदिन अमरने अमीर से यही बातकी अमीरने कहाबड़ी अद्भुतबातहै किशब्दआताहै परन्तु आदमी नहींदेखपड़ता है अमीरनेहाथसेटटोलातो उसकाशरीरहाथसे मालूमहुआतोमिलमसुभकार एकहाथसे उसकोपकड़ा दूसरेहाथसे चाहाकि घूंसामारैतो अमरनेकहा कि खबरदार वो अर्व वाले घूंसा नमारना मेरे चोटलगेगी और भटपट कमली उतारकर ऊपरसे फेंकदी अमीर ने दोनो पहिचान कर गले से लपटालियाफिरअमरनेसबहालवर्णनकिया और सारीकहानीकह सुनाई औरनगारा आदिसिकन्दरी असबाबअमीरकोदिया और वहटुकड़ारोटी काऔर छोटोलसकापानी बहुत सुगन्धदेताया और कमली औरजाल अमीरको दिखाकर अपने पास रक्खा और कहाकि यह हजरत खिजर और अलियासने मुझे दिया है दूसों और कोई साक्षी नहीं है अमीर ने प्रातःकाल होतेही वहांसे कूचकिया और सरन्दीपकेतले तम्बूखड़ाकिया चारों ओर यहसमाचारविदित हुआकि हमजानामी बादशाह नौशेरवां का दामाद लंधौरसे लड़ने केहेत आयाहै सेनायद्यपि थोड़ीहै परन्तुप्रति मनुष्यकी वीरताकी साका रुस्तमआदिसे बढ़करहै और आप अमीर भी बड़े दमदावाका मनुष्यहै सरन्द्वीप गिरिपर मेलेकेसमय अमीर पहुंचेथे और आसपास केलोगवहां जमाहोते जातेथेमेलाहोने का कारण यहथा कि हजरत आदमको उन्हीं दिनोंमें ईश्वर के यहांसे प्रतिष्ठा और मुक्ति उसी स्थान परहुईथीऔर उसपहाड़पर उनके पांवका चिन्हभीबनाहुआ था हिन्दूऔर मुसलमानों का पूज्यस्थानथा दोदोचार२ महीने कीराहसे लोग जमा होतेजातेथे औरजो दिनठीक होता उससेंदर्शन करतेअमरने अमीरसे कहा कि आज्ञाकीजिये तोपहाड़ की सैरकर आऊंऔर वहां जाकर कुछ खबर लाऊं अमीरने आज्ञादी अमरने अपनी राहली जो पहाड़के तलेआया तो एक वृद्ध मनुष्य कोतप करते देखा उस वृद्ध ने जो अमरका नामलेकरसलामकिया अमरनेदिवालपाव समझकर कटारपर हाथकियाऔरत्योरीचढ़ाईतो उसवृद्धनेहंसकरकहाकिऐ अमरमैंदिवाल पाव नहींहूं हजरतनूह अलैहुस्सलाम केकुटुम्बमेंहूंतेरावैरीनहींहूंसालिम मेरानामहै रातको मुझे खबर हुई थीदूसे मैंने तुझेपहिचाना नहीतो मैं तुझको और तेरेनाम कोक्या जानता यह कहकर एक गज दिया और कहाकि सामने जाकर इस गजभर धरती खोद जोतेरी भाग्य में होगा वहमिलेगा किन्तु लालचको अपनेहृदयमें नकरनाऔरजो कुछमिलजाय

लेलेना अमरने उसजगको नाप करधरती जोखोदीतो एकदाना लालका अति प्रकाशवान निकला जब खोदते २ थकगया और कुछ न निकलातब तोलज्जित होकर सालिमके पासआया और वह लालकादाना दिखाया सालिमने कहाकि अबपहाड़ परजावो आदमके चरणोंका दर्शनकर आवो अमरने कहा कि पहाड़पर जानेकी राहतो किसी ओर दृष्टिनहीं आती है उसकी उंचाईपर चढ़तेहुये मेरी बुद्धिचकराती है किसभांति लेजाऊं सालिमने कहा वहजो पतली पगडंडीहै उसपर सीधाचलाजा अपनेमन में कुछ नघबरा अमर उसीराहसे पहाड़ परगया परन्तु चलते २ थकगया फिर देखाकि एकहाता बहुतअच्छा बनाहै उसहातेके भीतरहरेरा भईहै उसके आसपास बहुतसाफतड़ागबहताहै और हरजगह दरख्तोंपर चिड़ियाचहचहातीहैं जब और आगे गयातो एकसफेद पत्थरपर हजरत आदमके चरणका चिन्हदेखातो आंखोंको पलकसे उसेचूमलिया और वहांकोअमृतको आंखोंमेंलगालिया उसचरणके आसपास आदमी भरढेरजवाहिरातका देखकर मनमें लालचहुआराआई सोचाकि आदमके चरणके दर्शन तोकरचुका इसजवाहिरातको अबले और बेग यहां से लेनाकी राहले यहांकौन देखनेआताहै तुझेजो बंधुवाकरकेलेजायगा फिर कमली बिछाकर सबजवाहिरात को उसमें समेटा और चलापरन्तु जबदर्वाजेके पासगयातो दर्वाजा आंखोंसे नदेखपड़ा अमरने फिरउलटे पावों आकर जहां जवाहिरात पड़े थे वहीं डालदिये और दर्वाजेपर जो दृष्टिकी तो उसीभांतिसे जैसाका तैसादृष्टिपड़ा फाटककी चौखट आदिसब देखी अमरने फिर बिचारकिया कि पहिले इसदर्वाजे परकोई चिन्हबना आवें तब जवाहिरात यहां से लेजावें तो नीमताज अपना दर्वाजे की चौखट पर धरके जवाहिरातके ढेरोंके पास खड़ाहोकर दर्वाजेको ताकातो दर्वाजा और ताज दिखाई दिया अमरने फिर उसजवाहिरातको कमलीमें बांध करराहली जिससमय दर्वाजेके पास पहुंचा तब नीमताज और दर्वाजा बे पता पाया जैसा किया वैसाफिरभी आगे आया मनमें कहनेलगाकि दादाआदमभी बड़े प्रबन्धी थे उनकामाल किसीको नपचेगा उन्हींके आगे रक्खा रहेगा फिरउसी भांति जैसेके तैसे जवाहिरात रखदिये तब ताज दर्वाजेपर दृष्टिपड़ा अमरने देखाकि नमाजका समय आया तो तालाबसे वजूकरकेनमाजपढ़ी और धाहेंमारकररोने लगा और उसजगहको पाक जानकर ईश्वरसेवरदानमांगनेलगा किएकाएक उसरोवाधोईमें अमरकी आंखझपकगईतो देखाकईवृद्ध साहबकरामती मेरेसिरपर खड़ेहैंजिनका चेहरा अतिप्रकाशितहै और मेरीओरकृपादृष्टिसे देखतेहैंउनमेंसेएकवृद्धने जो सबसेलम्बाथा एकजामादेकर कहाकि इसे तू पहिन इसकोदेवजामा कहतेहैं इसकेपहिननेसे सबप्रकारकी उपाधियोंसे बचारहेगा और किसी भांतिकाघाटाजिन्नप्रेतआदिसेनपावेगा और इसमेंजोनबहैउसमें जोतमाम

संसारकीवस्तु डालदेगा सबसमाजावेगी और इसकेसेवाय जोवस्तु दरकार होगी वह इसमेंसे निकलआवेगी और दूसर हाथधरके कहेगाकि दादा आदम मेरीसूरत ऐसीबनजाय शीघ्र उसीभांतिकी बनजावेगी यह इसकी करामातहै और जिसकीबोली चाहेगा बोलेगा और नाममेरा आदमहै अमरने सलाम करके चरणों पर शिर रक्खा दूसरे वृद्ध ने प्याला देकर कहाकि इस प्याले पर जो बड़ा नाम लिखा है उसको याद रखना तेरे बड़े काम आवेगा और इसमें तुझे लाभ बहुतहोगा और मेरा नामइस-हाकनवीहै तीसरे ने अपना नाम दाऊद पैगम्बरबताया और एकदुतारा देकर कहाकि जबतूइसको बजाकर गावेगातोतेरी बराबरीमें कोईगंधर्व भी न आवेगा जो गानविद्याभी जानता होगातो भीतेरे गाने की चोट उसके हृदय में लगेगी चौथेने साल्हे: पैगम्बर अपना नाम बताकरअमर की पीठ पर हाथ फेरा और कहा किदौड़में तेरे बराबर कोईन होगा और कोई घोड़ा भीतेरी बराबर न जावेगा और कभी न थकेगाहजरत साल्हे यह कह रहेथे कि एक तख्त आसमान से उतरा उसपर एक वृद्ध बैठे हुयेथे उनकी सूरत देखकर अमरकीआंखोंमेंचकाचौंध छागया फिर चारोंपैगम्बरोंने उठके सलामकिया अमरने उनसेपूछाकि येकौनसाहबहैं उन्होंनेकहाकिये पैगम्बर अन्तकेसमयकेहैं मुहम्मद सल्लेअल्लाहुअल्लइनका नाम है अमरने हाथबांधके बंदना की और पहले से प्रार्थना करने लगा याहजरत सबपैगम्बरोंने एक२वस्तुकृपाकी आपसेभी मांगताहूंकि जबतक मैं तीनबेर मौतन मांगूं तबतक यमराज मौत मेरी जाननिकाले मुह-म्मद साहबने कहाकि ऐसाही होगा इतनेमें अमरकी आंखखुलगईदेखा जोजोवस्तु पाईथी वहसब पासधरीहैं अमर इसप्रसादको लेकर सालिम के पासगया और सबकहानी ब्यौरा समेत वर्णनकी सालिमने कहा कि अमर अबजाकर हमजाको भेजदे तो उसकेभी जोभाग्यमें बदाहोगा सो मिलेगा अमर वहांसेचला मार्गमें जेबपरहाथ रखकर कहनेलगा कि ऐ दादा आदममैं बड़ेकदकाहोजाऊं मेराकदबहुतभारी आदमी से कईगु-नाबढ़जावे फिरजोदेखातो शीघ्रकदबढ़गया फिरदर्पणमें अपनीसूरतदेखी तो अपनी सूरतसे आपमनमेंडरा किऐसा नहोजो ऐसीही सूरत बनी-रहै फिरउसी परहाथ रखकर चाहाकि मेरीसूरत ज्योंकी त्यों होजावे फिरभी बहुत जल्दवैसीही सूरतहोगई तबतो अमर प्रसन्नहुआ बग़लेंब-जानेलगा किमैं जसी सूरतचाहूंगा वैसीही बनजायगी फिरसूरत बदल के मुसल्मानोंकी सेनामें पहुंचा और दुतारा बजाकर गाने लगा जिसने सुना अपना कामछोड़कर अमरके साथहुआ लोगोंने यहखबर साहब-किरांको पहुंचाई किएक हिंदूआदमी इससूरतका सेनामें आयाहै दु-तारा बजारहाहै कि सुने वालोंका होशठिकाने नहीं रहताहै साहब-किरांने उसको अपने सामने बुलवाया देखातो जानाकि अजब सूरतका

आदमीहै कि स्वप्नमेंभी ऐसीसूरत कभी न देखीहोगी गानाबजाना जो सुनातो कानखड़ेहुये अमीरने पूछाकिऐ भाईतू कहांका रहने वालाहै तेरानाम क्याहै अमरबोला किमुझे महमूद स्याहतन कहतेहैं और रहनेवाला इसी जगहका हूं हिंदुस्तानका बादशाह मुझे अच्छीभांति से जानताहै और बहुत कुछ इनाम उससेपाताहूं परन्तु मुझे कोई हैसिले भरनहीं देताहै जिसे अघाजाऊं और किसी रईसकेपास हाथनफैलाऊं साहबकिरांने कहाकि इसको हमारे खजाने में लेजावो जितना रुपया अशर्फीजवाहिरातइससेउठसकें दिलवादो सुल्तानबख़्त अमरकोअमीर के खजानेमें लेगया और इनआसके उठानेकोकहा अमरने जितनेखजाने मेंसंदूकथे सबएक२ निकालकर धरे सुल्तानबख़्तबोलाकि यहतोसैकड़ों गाड़ीका बोझहै तुझसे जितना उठसके उतनाउठा और जितनी अमीरकी आज्ञाहै उतना माललेकर घरकोजा इतनालालच क्योंकरताहै जोनाहक खजाने के संदूक उठाताहै अमर बोलाहां हजरत वही करताहूं नहींतो क्यामेरे पासछकड़ा बहलेंहैं जो उनपर लादके लेजाऊंगा या और लादनेवालोंकोकहींसे बुलालाऊंगा सुल्तान बख़्तयहसमझा कि क्या यह बिक्षिप्त होगयाहै चुपहोरहा औरभी लोग यहहाल देखते रहे सबकेसब चुपखड़ेरहे अमरने उन सबसंदूकोंको तलेऊपररक्खा और उसजाल में खुबकसा और रस्सीसेबांध कांधेपररख पहाड़ की ओर जाने का मनोरथकिया देखनेवालोंके होशउड़गये सुल्तानबख़्तने उसेरोककर कहाकि थोड़ासा ठहरजा हम अपने हाकिमको इसबातकी खबरकरदेवें अमरसंदूकोंको कांधेपरसेउतारकर बैठगया सुल्तानबख़्तने जाकर अमीर से सब हालकहा किऐ साहबकिरां वहतो मालूम नहीं होताहै कि जिन्नहै याप्रेत याकोई जादूगर है या कोई आफ़त आसमान से उतरआईहै उसनेतमाम संदूककांधे परबांधके एकजालमें रक्खे और ऐसा हलका चलनिकला कि उसके पांवतक नहिले इस आधीनने उसेरोका है किहम इसकीखबर अपने मालिककोा करलेवें तबतुझेबिदाकरें साहबकिरांने सुनतेही तजवीजकिया कियह बेशक अमरहै कोई तमाशा सीखकर आयाहै यहउसीकी चालाकीहैतो आप जाकर कहाकिक्यों भाई यहतोबहुत अच्छेतमाशेदेखातेहो पहिलेहमारेही ऊपर हाथसाफकररहेहो अमरनेहंसदिया अमीरनेउसेगलेलगालिया फिरअमरनेसारासमाचारकहाऔरकहाकिआपकोभी सालिमनेबोलायाहै कुछप्रसादआपकेहेतभी रक्खाहै अमीरने रातको आरामकिया प्रातःकाल मित्रसेहियों समेत अमरको साथलेकर पहाड़की ओरचले और बागवतालाब व नहरोंकी सैरकरनेलगे फिरएकस्थानदेखा किधरती वहांकीसपेद चन्दन समानबनाई गईहै और अत्यन्त सुन्दर बराबर चबूतरेसीबनीहुईहै और आनन्ददायकहैकहींनीचीऊंचीनहींहै और उसकेकिनारेपरपत्थरकीनाल

औरमोगदर और लेजम व गदा आदिसबअसबाब रक्खेहैं कुछलोगउसके निगहबानखड़ेहैं अमीरने उनसेपूछाकियहकिसका अखाड़ाहै वेबोलेकि हिंदुस्तानके बादशाह जिसकानामलंधोरहै उसका अखाड़ाहैउसकी क-सरतकरनेकीयहीजगहहै अमीरनेअमरसेकहाकिमैंभी अपनाबलअजमा-ऊं अमरनेकहाकिबहुतअच्छाफिरअमीरवहांपर जाकरसबमोगदरवबल्लम व लेजमकोबहुत हलकाउठालिया परन्तुगदानउठीतो अमीरकोअत्यन्त दुःखहुआ और कहनेलगा किऐईश्वरतूही प्रतिष्ठा व लाजरखने वालाहै जबउसकोगदानउठीतबलड़ाईमें कठिनताहोगी फिरआगेचले और सा-लिकके निकटगये सालिमने बगलगीरहोकर वहीगुर्ज अर्थात् गदादेकर कहाकि आपइसके प्रसादउसस्थानकी धरतीखोदें जोकुछआपका भाग होगा वह मिलेगा वह आपमेरे पासलावें अमीर ने सालिमके कहनेसे जो कामकिया तो एक दाना हीरेका निकला अमरने सालिम को ले जाकर दिखलाया सालिमने कहाकि यहमाल आपकाहै इसको अपनी जेबमें रखिये और इसपहाड़पर दर्शन करनेको जाइये आपकासहायक ईश्वरहै जबतक उधरसे सहायता नहोगी तबतक हिंदुस्तानके बादशाह सेजीत न पाइयेगा अमीरनेपहाड़पर चढ़केहजरत आदमके चरणकाद-र्शनकिया और उसीस्थानमेंतपकरने और ध्यानधरनेलगे और रोरोकर आशीर्वाद मांगनेलगेयहांतक किअमीरकोझपकीसी आगई तोदेखाकि एकतख़्तआसमान परसेउतरा और उसीस्थानमें स्थितहुआ उसपर क-ईवृद्ध अतिप्रकाशवान् तेजस्वी बैठेहैं उनमेंसेएकवृद्ध बड़ेक़दकाथाकेउनसे अमीर का नामले सलामअलैक किया और आशीर्वाद देकर कहा कि हमजा यहबाजूबन्द ले अपने भुजापर बांध कभी तू किसी के साथनहीं हारेगा और जोतेरे वैरीका शरीर हजारगज लम्बाहोगा तोभी इसी बाजूबन्दके प्रतापसे तेरी तलवार उसपर पड़ेगी तुझेकभी किसी भांतिसे उसकेहाथसेकष्टनपहुंचेगा परन्तुलड़ाईके नगारापर कभीपहिलेचोबमत लगवानाउसके ऊपरकभी पहिलेवारनकरना जबतकतेरेऊपर तीनवार नकरलेवे अपने अच्छे स्वभावको कभी बुरा न करना जो जो दानमांगे उसको वोदानदेना और जोतुझसे भागे उसकापीछा नकरना कि तूइस संसार के काफ़रोंका मुंह छीलेगा और मुसल्मानोंका दीन बढ़ावेगा और अभिमान कभीनकरना दीनपर दयाकरना ॥

दोहा ॥

अपने को आधीनकर कि मोतें छोड़ न कोय। सुन्दर है यह राज्यते जो हिमद कबहुंनहोय॥

औरदेखनारनमें कभीअनायास शब्दनकरना तेरेशब्दकी आवाज सो-लहकोस तक जावेगी सुननेवालोंका हृदय भयभीत होजावेगा यहसि-खाके हजरत आदमने अमीरको गलेलगालिया और सब पैगम्बरोंने अ-मीरकेऊपर कृपादृष्टिकी फिरखुशीकेमारे अमीरकी आंखेंखुलगईं और

नींदसे जागा और उठकर सुबहकी नमाज़ पढ़ी और नमाजपढ़के सालिमके पासआया और मङ्गलसमाचारकहा सालिमने अमीरको धन्यवाददिया और यह कहा कि मुझको केवल आपहीको देखनाथा आपको पताबताने का बोझ था सो ईश्वर सहायक है मैं अब अपनी राहलेताहूं परन्तु इतना कहे देता हूं कि इतना कष्ट अंगीकार कर लीजियेगा कि मुझे कफ़न और क़बर आप अपने हाथसे बनाइयेगा यह कहकर दुनियांसे हाथ खींचलिये और पांवफैलादिये ईश्वरका नामलेकर बैकुण्ठ में पहुंचे अमीरने इस क्षणभंग शरीरको देखकर आंसू बहानेलगा और उनको कफ़न और क़बर दोनों अपने हाथसे बनवाया और उसमें रखदिया और वहां से उठकर लंधौरके अखाड़ेमें आया वह जो एकसहस्र सात सौमनकी गदा थी तृणके समान उठाकर एक कोने से दूसरेकोने में रखदी और आनन्दित अपनी सेनामेंआया वहांपहुंचकर कईहजार रुपया फ़क़ीरों और भिक्षुकोंको दिया निगहबानोंने यहसमाचार लंधौर को पहुंचाया लंधौर यह समाचार सुनकर अपने अखाड़े में आया गदा दूसरे स्थान पर देखकर अति आश्चर्य किया कि और दूसरा भी कोई हमारी बराबरिवाला आनपहुंचा और निगहबानों पर ताकीदकी कि जिस मनुष्य ने मेरी गदाको एककोने से दूसरे कोनेमें रक्खा है और अपना बलअजमाया है जो वह फिर आवे तो मेरेपास उसकोले आना और बहुतशीघ्र मुझे खबरकरना अब अमर का हाल सुनिये कि अमीर से सैरके बहाने बिदाहुआ और वहांसे लंधौरकी सभा की ओर चला एक खुरासानी की सूरतबनकर हाथमें वही दुतारा लिये हिन्दुस्तानके बादशाह की चौखटपरजा खड़ाहुआ दर्बानियोंने पूछा कि तूकौनहै और तेरीजीविकाक्याहै और किसदेशसे आयाहै बोला कि सातद्वीपके बादशाह की यामाता के साथ यहांतक पहुंचा हूं हिन्दके बादशाह की उपकारता और उदारता देखकर यहांतक आयाहूं भाईजरामेरा समाचार बादशाहसे कहदो औरमुझे वहांतक लेचलो दर्बानियोंने दारोग़ाको खबरदी दारोग़ाने लंधौरसे प्रार्थना की हुक्महुआ कि हाजिरकरो अमर उसकी आज्ञानुसार उनकेदरबारमें पहुंचा लंधौरअमरको देखकर आश्चर्यकिया कि इस सूरतका आदमी उसनेकभी देखा न था अमर सेपूछा कि तेरा नामक्या है और कहां का वासी है अमर आशीर्वाद देकर बोला कि मुझको बाबायजदवरद कहतेहैं अर्थात् मारा और उठाया और कहा कि मेरे सबघरवाले खुरासान में रहते हैं अमर से लंधौर ने कहा कि तेरा नामव तेरी बातें बड़ीअद्भुतहैं मालूमहोताहै कितू किसीको मारे आताहै और उसकामाल उठालेजाताहै अमर बोला किमै वकतारको मिजराव से मारता है और सुननेवालों और क़दरदानों के चित्तों को उठालेताहै लंधौरइसचुटकुलेपर बहुतप्रसन्नहुआ और गानेका हुक्मदिया

अमर सबलोगों से ऊपरबैठा और दुतारेको मिलानेलगा जितने गवइये बजवइये थे अमरके ऊपर बैठने से कुनसुनाने और नाक भौंहें चढ़ाने लगे इससें क्या ऐसा बढ़के गुणहै जो हमलोगों से उपर चढ़के बैठाहै इनकी लरहाहै लंधौरने कहा प्रथम तो यह मुसल्मान है और एक शाहजादे लेजखी के साथ आयाहै और इसका फ़क़ीरी सामान है और इसका मनोर्थ मुझे करना अवश्यहै कि देशविदेशजायगा और सब जगह यहांका जिकर आवेगा मैं इसका मन जो तोड़ूं तो दूसरे देशका रहनेवालाहै औरजगह मेरीनिन्दा करैगा और जो शिष्टाचारकरूंगा तो इसेतमाम उमर यादरहेगा और दूसरे निकट से इसका गानासुन्ना मुझे मंजूरहै तुम्हारे क्रोधकरने का यहस्थान नहीं और इनबातों से तुम्हें कुछ काम नहीं है उनको समझाकर अमर को गान की अमर गाने लगा जितने सुननेवाले थे सबकेसब प्रसन्न होगये और कहने लगे कि इसके गलेमें कहीं हड्डी है गला क्या बांसुरी है लोग तो अमरके गाने पर मस्तथेही अचेत होगये परंतु अमर ज़मुर्द के मोरों पर जो चारों कोने तख़्त के जड़ेथे दांतलगाये बैठाथा निगाहोंमें तकरहा था लंधौरने प्रसन्नहोकर कहा कि ये बाबायज़दवरद मांग क्या मांगताहै तेरी इच्छा किस वस्तु पर अधिक है अमर बोला कि आपकी उमर अधिकहो हुजूरकी कृपासे नौशेरवां के यामाताने बहुतकुछ दिया है संसार की आधीनता से कुछ प्रयोजन नहींहै फिर लंधौर ने कहा कि तू इससमयमांग मेरामन तुझे कुछ देनाचाहता है तुझसे अतिप्रसन्न हुआहूं अमर बोला कि आपकी कृपासे मुझे कुछभी नहीं चाहिये सेवक रुपये पैसेका भूखा नहींहै परंतु यह जीचाहताहै कि जो आज्ञाहो तो इससमय मदिराबांट एक प्याला वारुणी का पिलाऊं पहिले जो बांटता था उसकी और इशारा किया उसने प्याला और बोतल अमर के हवाले किया अमर गुलाबी मदिरा जड़ाऊ प्यालेमें भर२ कर पिलानेलगा जब दोतीनबार पिलाचुका देखा कि लंधौरकी आंखों में ललाईदौड़ी हवासबदलेएकदफ़ा हाथबढ़ाकर उनमोरों में से एक उखाड़कर अपनी बग़ल में चुरालिया लंधौर कन-खियोंदेखकर कहा कि यज़दवरद यह क्या करताहै मोरको क्योंझोली में धरता है आंखमार के कहनेलगा कि चुपरह ऐसा न हो कि जिसमें कोई सुनले या और कोई देखे लंधौर इस बातपर बहुत हंसा कि यह तो अद्भुत मनुष्यहै कि मेराही तो मालचुराता है और मुझीको उड़न घाइयांबताता है कि चुपरह ऐसा न हो कोई सुनले या कोई देखले बादशाह ने कहा कि सुन तो यज़दवरद चीज़ तो मेरीहै दूसरे के सुन्ने से क्या होगा मुझे चोरी किसकी है किन्तु जोकि तेरी इसचोरी ने भी इससमय नयास्वाद दिखाया इसके बदले येमोर भी तुझेमैंने दिया अब तो प्रसन्नहुआ अमरने सलाम करके उनमोरोंको अपनेजेबमें रक्खा और

कमलीकपरी लेनेके उपायमेंहुआ खुसरोकी आंखबचाकर थोड़ीसीदारू बेहोशी की उसजेबसे निकाली और उसमदिरा में डालदी और उसमें से दोदो प्याला लंधौर समेत सबसभाके लोगों को पिलादी एकक्षण न बीताथा कि सबकी आंखोंमें सरसोंफूली सब अपने २ नशेमें चूर होगये नशेकीतरंगमें सबनेअपनेको तालाबसमझकर भारीशब्दसे कहाकियारो तालाब बहुतबढ़ाहुआहै डुब्बीलगा २ कर किनारेनिकलो झटपटतैर २ कर किनारे पहुंचौ सबके पहिले यहां तक लंधौर कूदा और मुंहकेबल गिरा उसकेपीछे सबसभाकेलोग अपनेरस्थानसे उछले और तड़ाकपड़ाक अचेतहोहोकर पृथ्वीपर गिरनेलगे अमरने अपनाहाथ फैलाया जहांतक उसमेंअसबाबकि फर्शतकथाउठकेउसीझूलमेंभरी और अपनीराहलीबात कीबातमें अपनेडेरेपर आनपहुंचा और लूटका माललेकर गुप्त होगया दैवयोगसे उससमयअमीरनेआज्ञादी कि देखोतोअमरकहांहैकौनफ़िकर करता है देरसे गया है देखो तो लश्करमें है या कहीं बाहरगया है वेगिजावो जिसकाम में मिले उसेलेआवो लोग जो अमरके तम्बू में आये देखें तो अधिकता से भांति २ का असबाब फैलापड़ा है उसमें पहिली दूसरी फ़िक्रचुन रहाहै उन्होंने अमरसे कहा कि चलिये साहबक़िरांने यादकियाहै इसीभांतिसे आपको लानेकी आज्ञादीहै अमीरने असबाब समेत बोलायाहै बोला कि अच्छाभाई असबाब संभाललूं तो चलताहूं तुम्हारेसाथही तम्बूसे निकलताहूं वह बोला कुछखबरहै मैंसब असबाब समेत तुमको लेजाऊंगा नहीं तो साहबक़िरां तुमपर खफाहोंगे अमर असबाबसमेत अमीरके पासगया अमीरने समझा कि इसका कहींवार लगगया हंसकर पूछाकि यह असबाब कैसाहै बोला कि हिन्दके बादशाहने मुझे इनामदियाहै साहबक़िरांको धीर्यहुआ उससमयतो असबाबको हवालातमें रक्खा प्रातःकाल आदोसे कहाकि हिन्दुस्तानके बादशाहको हमारी ओर से सलाम कहना और यह असबाब और जो मैं उसकेहेत सौग़ात देताहूं देकर यहसंदेसा कहना कि मालूमहुआकि रातको अमर आपकी सभामें गया था उसका बयान यहहै कि हिन्दुस्तानके बादशाह ने मुझे यह असबाब इनआम में दियाहै परन्तु जोकि उसकीबात और कामका मुझको विश्वास नहींहै कि उससे बढ़केकोई संसारमें छली और मक्कार नहींहै इसनिमित्तसे इसअसबाबको मैंनेभेजा है और इससौग़ातको जो बहुतथोड़ीहै जो अंगीकार कीजिये तो मेरी बड़ी खुशीहोगी इसकालेलेना आपको उचितहै अमरने जोकुछ बेअदबी कीहो तो मुझे खबरकरना किमैं उसे दण्डकरूं आदो उस असबाब को छकड़ोंपर भरवाकर बादशाह हिन्दके निकटगया वहां लंधौरकी सभा का यह हाल हुआ कि जब सूर्य का प्रकाश हुआ तब सबलोग होश में आये अपनीसभा को उजड़ी देखकर पूछने लगा कि यहदवरद कहां है

लोगों ने कहा कि हमको नहीं मालूम कि वह किधर को गया फिर लंधौर ने अपने गले में एक चिट्ठी बंधी देखी खोलकर जो पढ़ी मालूम हुआ कि वह अमर था उसीसमय लानकरके पोशाकपहिन दरबारकी तय्यारीहोनेलगी फ़र्राशोंलोंने न्यायशालामें फ़र्शबिछाया नयेसिरसेफिर कमरे सजे इतनेमें हरकारोंने ख़बरदी कि मादीग्नर्ब नामी नौशेरवांके यांमाताका एलची आपकेलिये बहुत वस्तुलायाहै लन्धौरने कईसरदार आदीकी अगवानीलेनेके हेतभेजे वह सब जाकर आदी को साथलेकर दरबारमें आये आदीने मस्तकझुकाके सलामकिया साहबक्रिरांने जोकुछ कहाथा सुनाया और वह असबाब जो अमर उठालेगया था वह और सौग़ात साहब क्रिरांकीदीहुई बादशाहके आगे रखदी बादशाह आदी के विवेक पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अपने सिरदारों से सबके ऊपर बैठारा साहबक्रिरांकी सौग़ात भेजीहुई तो लेली और कहाकि हमने अमर का अपराध क्षमाकिया और हमारी ओर से अमीर को सलामकरके कहनाकि अमरकी ओरसे हमको कोई कष्टनहीं पहुंचाहै बल्कि अमर की असली सूरत देखा चाहताहूं जो आप उसको असली सूरतमें मेरे पास भेजदेंगेतो मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा यह कह कर आदीको खिलअतदेकर बिदाकिया आदीने जो कुछ देखा सुनाथा अमीरके आगे वर्णनकिया अमीरने कहाकि येबाबा यज़दवरद तुमको बादशाहहिन्दने असलीसूरतमे बोलायाहै और असबाब तुम्हारे निमित्त लौटादियाहै अमर अत्यन्त ख़ुशहुआ और असबाब अपने तंबूमें रखकर लन्धौर की ओरचला मार्गमें अमरने देखाकि एकसमूह सौदागरों का जाताहै और उनकेपास बहुत अच्छे२ माल सौदागरीके हैं उनमेंसेएकके हाथमें एकछत्रलाखोंरुपयेका ऐसाहैकिकभी किसीने नदेखा नसुनाहोगा अमर भी सौदागरों का भेषबनाकर उनके साथहोलिया जबवह समूह बादशाह की चौखट तक पहुंचा दर्बानोंने ख़बर की बादशाह उनका असबाब मांगभेजा लन्धौरने जो छत्रको देखातो बहुत प्रसन्नहुआ अपने दारोग़ाको बुलवाया और कहा जो मोल इसछत्रकाहो इन सौदागरों को देदो और इनआम भी इनको दिलवादो इनको प्रसन्नकरके बिदा करो मैं अभी इसताजको अपने शिरपर रक्खूंगा अमरने सुनकर कहा की पहिले ताजकी क़ीमत हमको मिले तब बादशाह ताज अपने शिर पर धरैं बादशाहने यह बात सुन ताज दारोग़ा को देदिया और कहा इसका मोल सौदागरों को देकर हमारे पासलावो मैं किसी की वस्तु ज़बरदस्तीसे नहीं लेताहूं मुक़ीम दारोग़ा ताजको सौदागरोंसे लेगया और मोलपूछनेलगा अमरने उसके हाथसे लेकर कहाकि उजेलेमें देख-कर इसका मोलमैंकहूंगा बादशाहोंका दरबारहै यहां देखभालके लेन देनकी बातेंकरूंगा मुक़ीम बोलाकि बहुत अच्छाहै मैं तुम्हारीहीकही

क़ीमतदूंगा अमर सभासे निकलकर आसमानकी ओर देखकर कहने लगाकि क्या बुराबादल उठाहै कुछ आंधी की अवाईहै धुन्धकारही है यह कहकर एक ओर चला और झटपट ताज लेकर भागा सौदागर और शाहीनौकर आसमानके चारों ओर देखकरकहनेलगेकि ये भाई कहीं चिन्हभी बादलका है इतना झूंठ क्यों बोलताहै फिरकर जो देखा तो जानाकि वह ताजलिये भागाजाताहै और बहुत दूर निकलगयाहै जल्द यह ख़बर बादशाह को पहुंची और सेनामें विदितहुई बादशाह आप एक हाथीपर बैठकर उसके पीछे हाथी दौड़ाताहुआ चला और अमरको जाकर रोका अमर एक झाड़ी की ओर भागा उधर राह न थी अमर खड़ा होकर इधर उधर देखने लगा देखा तो एक झोपड़ा उसेसूझ पड़ा उसमें एक मनुष्य चक्की पीसरहा है झट पट उसके घरमें जाकर उसे कहनेलगा कि तुझे कुछ मरने जीने की ख़बर है हिन्द के बादशाहने एक स्वप्नदेखा था हकीमों ने उसे विचार करकहा है कि जो किसी चक्कीवाले के शिरकी खाल नक़्क़ारे में मढ़कर बादशाह अपने हाथसे बजावेतो स्वप्नकेदुःखसे छूटजाय सोतेरेपकड़नेको दौड़ आतेहैंवह विचारा सुनकरघबड़ागया कि मुफ़्तमेंजानगई घबराकर अमरसे पूछने लगा कि किसैं सभांतिसे इनअन्याइयोंके हाथसेबचूं और थोड़ी ज़िन्दगी केदिनतेरकरूं अमरनेकहा कि अपनीधोती मुझेदे किमैं पहिनकरचक्की पीसनेलगूं तेरीजान बचनेका उपायकरूं तूइसहौजमें बुड्डीलगाकर बैठ रह जो कोई आवेगा मैंउसको जवाबदेलूंगा तेरेघरसे होलाकरके टाल दूंगाउसनेजाना कि मानोहमारा नयाजन्महुआ अतिशीघ्र धोतीछोरके अमर को देदी अमरने पोशाक अपनी उतारके चुराली और वह चक्की वाला नंगाझटपट हौजमें कूदपड़ा और दबककर बैठरहा अमरने उस धोतीकोबांधकर चक्कीपीसना शुरूअकिया लंधौर हाथी परसे उतरकर उसचक्की वालेके घरमेंघुसा कि ऐसीही सूरतका आदमी अभी तेरेघर में आयाहै सचबता वहकहां छिपाहै अमरनेकहा कि हौजमेंबुड्डीलगा कर बैठाहै उसमेंदेखरहाहै लंधौर कपड़ाउतार कर हौजपर रखदिया और आपउस हौजमेंकूदा और अमरचक्की से उठकर लंधौरके कपड़े उठाकर लेभागा ख़ज़ानची सेजो मिलापहुआ उसे कहा कि बादशाह यहचिन्ह दियाहै कि दिखाकर वेगि दोसौ रुपयेले आवो ख़ज़ानची ने दोसौरुपये उसके हवाले किये अमरने लेलिये फिर अपने डेरेकी ओर का मार्गलिया और रुपये अपनीझोलीमें भरलिये अब वहां लंधौरका हाल सुनिये कि उस चक्की के पीसने वाले को हौजसे लंधौर निकालने और ऊपर उछालनेलगा उसने हौजके पत्थरोंपर अपनेशिरको देमारा और शिरको घायल कर फिर कहने लगा कि अब मेरे शिरकी खाल ख़राब होगई और किसी काम कीन रही किसी दूसरे चक्की वालेको

ढूंढ़कर उसके शिरकी खाल का नक़ारा मढ़वाकर बादशाह कोदे श्रैार अपनी इच्छा पूर्वक इनआमले कि बादशाह उसको बजावे स्वप्नका दोष मिटावे लंधैारने आश्चर्यकिया कि यह क्या बकताहै जान पड़ताहै यह विक्षिप्तहै जोऐसी बेमतलबकी बातें करताहै जबवह चक्की पीसनेवाला होजकेबाहर आया लंधैारने देखा कि यह वहमनुष्यनहीं है इसमें श्रैार उसमें बड़ाभेदहै बाहर निकलके लोगोंसे पूछा कि इधर कोई आदमीगया है इसघरसे कोई आदमी श्रैारभी निकलाहै लोगोंने कहा कि श्रैार तो कोईनहीं निकला है परन्तु जिस मनुष्य को आपने अपने वस्त्रचिन्ह देकर भेजाथा श्रैार दोसौरुपये देनेको कहा था सोख़- जानची से रुपया लेकर इधर गयाहै नहीं मालूमहै कि कहां रहता है बादशाह समझ गया श्रैार उसकी चालाकी श्रैार मक्कारी पर प्रसन्न होगया पोशाक बदल कर अकेला सीधा अमीर के डेरेकी श्रैार चला अमीर को हरकारों ने खबरदी कि लंधैार हिंद का बादशाह अकेला हाथी पर चढ़ाआता है श्रैार कोई मित्र स्नेही व अधिकारी सिपाही साथनहीं हैं साहबक़िरांने कहा कि आनेदो श्रैार सब चुपकेहोरहो जब लंधैार हाथीपरसे उतरा श्रैार अमीरके तंबूकी श्रैार चला साहब क़िरां तंबू से उठकर अगवानी करके ले आये श्रैार जड़ाऊ चौकी पर उसे बैठारा श्रैार उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार उसका शिष्टाचार किया श्रैार रंगबरंग की सभाकी लंधैार अमीर का शिष्टाचार देखकर तन मनसे प्रसन्न होगया श्रैार बड़ी प्रशंसा की श्रैार पूछा अमर कहां है उसको इस समय बुलवाइये परंतु अपनीही सूरत में उसे मंगाइये कि जल्द आवे मुझे उसके देखनेकी लालसा है मेरे निकट जब जाताहै भेष बदलके जाताहै श्रैार नया चुटकुलाकर आताहै अमीरने आज्ञाकी कि वेगिअमरको लावो आज्ञापातेही अमर आया श्रैार जो उसका रूपथा उसी रूपसे हाजिर हुआ लंधैारको सलाम किया श्रैार अपनी चौकी पर बैठगया मदिरा बांटने वाले सजधजके सभामें आये श्रैार प्यालों से मदिरा भरकर फेरने लगे पहिला प्याला साहब क़िरांने अपने हाथ से भरकर लंधैारकोपिलाया फिर आपने पानकिया जबनशा जमी आंखों में अरुणाई आई लंधैारने अमरको गानेकी आज्ञा की अमरने दुतारा मंगा कर मिलाया श्रैार ऐसीसमय की रागिनी गाई कि सकल सभा मोह गई श्रैार लंधैारने मोतियोंकी माला गलेसे उतार कर अमरको देदिया श्रैार कहा कि बहुतानभी हमने तुमकोदिया फिर साहबक़िरां श्रैार लंधैारसे मित्रता की कुछ बातें गुप्त हुईं जब सूर्य अस्त हुआ हिंद के बादशाहने बिदाके समय अमीरसे कहा कि हमारी प्रार्थना आपके मन में कुछठनी या नहीं कहा कि आप स्नेहकी रीति से करते हैं मुझे अपनी मित्रतासे अहसान मन्दबनातेहैं श्रैारमुझे सप्तद्वीपके बादशाहने

आपसे लड़नेको भेजाहै यहस्थान बहुत लाचारीकाहै लंधौरने कहा कि इस मनोर्थको आप छोड़ दीजिये मिलाप में भलाईहै या कि लड़ाई में नौशेरवां ने आपको मुझसे लड़ने नहीं भेजा है या उसने आपसे छल कियाहै वह आपका शत्रुहै जब कोई उपाय न चला तब उसनेआपसे यह उपाय कियाहै इसनिमित्त मैं आपसे आश रखताहूं कि मुझे अपने साथ ले चलिये कि मैं उसको मारकर आपको गद्दीपर बैठादूंगा चैनसे राज्य कीजिये और अपनी प्रिया को बग़लमें लेकर रात दिन आनन्द कीजिये अमीरने कहा कि मैंने तुम्हारे मारनेका बीरा उठायाहै मैं किसभांति से उसे बुराईकरूं लंधौरने तलवार ईंचकर अमीरके आगे रखदी और शिर झुकाकर कहा कि जो यही मनोर्थहै तो मेरे शिरको काटलीजिये और बेअसके नौशेरवां के आगे रख दीजिये साहबक़िरांने लंधौर को गलेसे लगालिया और उसके मर्दीनगीकी प्रशंसा की और उसका मन प्रसन्न किया और कहा कि यह कामवधिकों काहै युद्धकी दुन्दुभी बज-वाइये और रणभूमिमें आइये उसस्थानमें जोकुछ होगा वह होरहेगा लंधौरबोला कि अच्छा ईश्वर मालिकहै जो आपका यही मनोर्थहै तो नक़ारा युद्धके बजवाइये औरसेनाको ख़बरपहुंचाइये अमीर ने कहा कि पहिले आप अपने कटकमें युद्धका नक़ारा बजनेकी आज्ञादीजिये प्रथम आपहीकी ओरसे सजधजकीजावे फिर मैंभी अपनीसेना सजकर दुन्दुभी बजनेकी आज्ञादूंगा लंधौरने लाचारहोकर अपनेयहांआकर नक़ारा बजवाया साहबक़िरांनेभी उसके धौंसेका शब्द सुनकर अपना सिकन्दरी नक़ारा बजानेकी आज्ञा दी और कहा कि नक़ारा पर चोब पड़े हुक्म होतेही नक़ारावालेने नक़ारेपर चोब डाली उसके शब्दसे पृथ्वी डगमगा उठी जो लोग शूरवीरथे उनके मन बढ़गये कि कल तलवार बांधने को मिलेगी लड़ाईमें अत्यन्त सुख पावेंगे किसीको मार किसीका उरविदार लाशोंसे खाईं भर आवेंगे यह विचारजानकर पोशाक बदली पान चबा२ कर परस्पर में बातें करने लगे कि देखिये कल किस की बड़ाई प्राप्त होतीहै और सबबग़लगीर होकर मिलने लगे कि भाई आजफागुहै सब लोग गले मिल लीजिये कलमौत अपना बेड़ा संवारेगी देखिये मिलने का समय देया न दे अभी स्नेहसे आनन्द प्राप्त कीजिये देखिये कौन घा-यल होताहै और कौन अपनी जान खोताहै वाजोंने अपनी तलवार में डोरा डलवाया कि शत्रुकी गर्दका डोरा नबचे बाजोंने तलवारका पट्टा चढ़वाया कि जिसे शरीरकी नस व पुट्ठा लगा न रहे कोई कहताहै कि कल अपनी तलवारकी चाक़ ढाल देखनाहै कोई बोला कि अस्फ़ हानकी तलवार का मुंह लाल दीखता है कोई कहता ईश्वर हमारी प्रतिष्ठा रखने वालाहै दो सर्दारोंकी लड़ाईमें उसीका भरोसाहै कोई कहता है कि हिंदुस्तानकी तलवार और हिंदुओंका पराक्रम दीखना है और अ-

पने २ अश्वोंपर लोगबाढ़ धरानेलगे अपने हथियारोंको देखने भालनेलगे बरछी आदि सब संवारनेलगे किसीने तलवार किसीने कटार और कोई भाला कोई बल्लम पर शाने व बाढ़ धरवाने लगे जिसमें शत्रुपर लागतेही वेगिप्राणहरै कोई अपने तीर और कमानदुरुस्त करनेलगे और जो नामर्द थे उनको नक्कारेका शब्द सुनतेही जूड़ीआई और मुंह सूख गये रोरोकर आशीर्बाद मांगनेलगे और प्रसाद मननेलगे कि जोबिना युद्धके सिलाप होजावे तो आके मदार बाबा तुम्हारी छड़ियां चढ़ावेंगे कोई बोला कि मैं पीरजलीलोंपर जाके वेभुचड़ीकी कढ़ाही करूंगा किसीने कहा कि मैं पीर अलूलेका मेला करूंगा इसी भांतिसे प्रत्येक नामर्द मानता था और अपने साईससे कहताथा कि देखना भाई प्रातःकाल न होने पावे तुम घोड़े को कसना हम ठंढे २ तारों की छांहमें सवार होकर अपने घरकी राहलेवेंगे हमदशघंटे सेनाके साथयुद्ध क्योंकरैं अमीरको तो मखिका से लवलगीहै हमक्यों ऐसे स्थान में मुफ़्त जानदें साईसने कहा कि साहब सिपाही होकर ऐसीबात जीभपर लातेहो क्यों मुफ़्तमें दरमाहा खातेहो समय पर जान बचावोगे तो लोग क्याकहेंगे साथवालोंको क्या मुंहदिखावोगे मर्दोंकाकाम शत्रुको पीठदिखाना नहींहै इससमय वीरता दिखानेकाकामहै याघरचलेजानेका जोऐसाकरोगेतो साथकेजवानआपको लज्जित करैंगे सभामें बैठनेसे ठेनादेंगे आपका जीना उनकेहाथोंसेकठिन होजावेगा और अप्रतिष्ठा होगी यह चर्चा सबजगह विदित होगई तो आपको चाकरीमिलना दुर्लभ होजायगा और किसी रईसके पास आपकी आबरू न रहेगी जो ऐसा हृदय रखते थे तो क्यों सिपाहगरी में नाम लिखवाया ऐसा समय क्यों अंगीकार कर लिया यह आपको क्यों कर मालूमहुआ कि मैं माराही जाऊंगा जो आपके बैरीही मारेजावें देखिये घोड़ेको जो दाना दिया जाताहै जिसकी भाग्यमें दोटुकड़े होना नहींहै वह चनासमूचा चक्कीसे निकल आताहै ईश्वरके हेत दृढ़ताको न त्यागिये बढ़२ के तलवार मारिये मर्दाना वार बैरियोंपर कीजिये काम बनपड़े तो मालिकसे पारतोषिक लीजिये आज एक घोड़ाहै तो कल दो घोड़े होजावेंगे और आगे जो और काम बनपड़ेगा तो आपकी नौकरी और अधिकार बढ़जावेगा झुंझलाकर साईसको गालियां देनेलगे और कहनेलगे कि अबे तेरा क्या जावेगा वहांसा जोतो हमारा जायेगा तुझ पर क्या कष्ट आवेगा तूभी तो चाहता है कि जो हम लड़ाईमें युद्ध करैं और वहां मारेजावें तू हमारा घोड़ा और बस्त्र लेकर सज धज बना के सवारोंमें नाम लिखादे और मजेसे तनख्वाह लेवे मुझसे कहताहैकिइस उत्तम देहको कटा करो अम्माजान और बड़ी भावीसाहबाको बहका कर उनकागहनाबेचवाया और अपनेपरोसीसे रुपयालेकर घोड़ामोल लेगे और बख़्शीजीसे मिलकर घोड़ेकेदाग़ करवाया हमको उपाधि में फसाया

यद्यपि हम कहते थे कि हमको लोहू देख कर ग़श आजाताहै चिड़ि-
यां शिरपरसे उड़कर निकलती हैं तो डरके मारे जानसन सनाती श्रौर
दम घबराताहै कि कहीं गोली न लगै कि घोड़ा हथियार हाथसे जाव
यह रणभूमि श्रौर लड़ाई भिड़ाई को हम कब जान्ते थे लड़कपन से तो
हमको अम्मांजान विविध प्रकार से लाड़ करके पालाहै कभी सिपाहियों
की सङ्गतिके निकट जाने की इच्छा नहीं की सिवाय सितार व शतरंज व
गंजीफ़ा व नाचरङ्ग आदिके कुछकाम नहीं रहा अब सवारोंमें नाम लि-
खवा कर घरके बाहर निकला अभी विवाहके दोचार वर्ष नहीं बीतेहैं जो
सुरत श्रौर ही हुई तो वह बिचारी क्या कहेगी उठती जवानी किसके
शिर रहेगी परिश्रम करके खाते बेल काढ़ते श्रौर नैचा बांधते शामको दो
पैसे घर लाते माता श्रौर भाभीकेपास बैठकर खुश होते रातको अपनी स्त्रीके
पास टांग फैलाकर चैनसे नींद भरके सोते श्रौर शब्द तो कोई उससमय
फेंकेगा जो हमको इस सेना में देखेंगे हमको अपना जीभारू नहींहै कि
यहां से निकल कर फिर इस अभाग्य समूह सिपाहगरी में नौकरी करें
या फिर इसमें नाम लिखवानेकी इच्छा करें श्रौर जो तूने मुझे पुरचक
दी उसे मैंने समझली तू किसी भांति से जान बचनेदे तू नहीं जानता
कि जब कभी ऐसी वैसी लड़ाई हुईहै तो हम भागके पछाड़ी रहेहैं किसी
ने हमारीसूरत देखीनहीं हां एकबातहै जोतू खैरख़्वाही जनाताहै श्रौर
नमक हलाली बतलाताहै तोतू अपना अंगोछा लंगोटी हमको दे कल
हम खारा खुरपा लेकर तेरे बदले घास छील लावेंगे शाम को घोड़े के
आगे डालदेंगे श्रौर तुझे रोटी बनाकर खिलादेंगे तू हमारे कपड़े पहिन
कर हथियार लगाके घोड़े पर चढ़ श्रौर हमारे बदले नौकरी कर श्रा
लड़ाईमें मर्दोंका साथ देना खिलअत श्रौर इनआम जोमिले उसे तमही
लेना संक्षेप यहहै कि अर्थात् कायरकूर सब अपनार उपायकर रहेथेश्रौर
जो योधा श्रौर बहादुरथे व ईश्वरसे वर मांगते रहे कि ईश्वर कल इस
रणभूमिमें हमारी लाज रखना भलाई है श्रौर कायर रातही को भाग
निकले जब सूर्यके प्रकाश होनेका डंका बजा इधर से साहबक़िरां नमाज़
पढ़कर योधों समेत श्रौर उधरसे लंधौर सेना लेकर रणभूमि में आया
श्रौरसेना जमाईश्रौरलड़ाई करनेपर उताकहुये सफ़ाईवालोंने मैदानको
झाड़ी वृक्ष आदि से साफ़ किया श्रौर बेलदारों ने ऊंची नीची पृथ्वी को
बराबर किया श्रौर सक्का वालोंने मसकों से धरतीको छिड़क दिया सब
प्रकारसे चौरहपंक्ति होके दोनों श्रोर की सेना रणभूमि में खड़ी कीगई
अभीकिसी श्रोरसे लड़ाई नहीं मांगी गईथी कि सामनेसे बहुत काला
एकबवण्डल उठा जब वायुने उस रेणुको स्वच्छ किया चालीस झंडे देख
पड़े सन्मुखके लोग सावधान हुये मालूम हुआ कि चालीस सहस्र सवार
की इस सेनामें भीड़है जिससमय वह कटक सामने आया साहबक़िरांने

देखा कि पछिली लड़ीमें गुस्तहम अस्कानी का पुत्र झंडा के तले खड़ा है सेनाका मार्ग देखरहा है अमीरने अमरको दिखाया अमर अपने मनसे एक चुटकुला सोचकर अपनी सेनासे अलग होकर गुस्तहमकी कटककी ओर चला औरवहां पहुंचकर अदब समेत गुस्तहमको सलामकी और अपना चुटकुला किया गुस्तहम बोला कि कहो ख्वाजे अमर अच्छे तो रहे बहुत दिनों के पीछे देख पड़े अमर बोला कि अच्छे क्या खाक हैं न जीतेहैं न मरतेहैं जिन्दगीका दमभरतेहैं इस अरब वालेकी नौकरी करके अपनी मिट्टी खराबकी मुफ़तमें बला अपने शिरपरली गुस्तहम बोला कि सताई तोहै आजकल हमजा नौशेरवां की दामादीके आशमें ऐसा अभिमान करके घोड़े पर सवार है कि किसीका आदर नहीं करता है यह समझताहै कि संसारमें न तो कोई मेरे समान मल्लहै न बलवान न बुद्धिमानहै यातो मुझे खुशामद करके दंगल पर बैठाता था या अब कुरसी पर बैठने का भी मनोर्थ नहीं रखता है अब कुछ भी मेरी वहां प्रतिष्ठा नहींहै मैंने जैसी भांतिसे परिश्रम कियाहै वैसा जब कोई करेगा तबमालूमहोगा औरउसीसमय मेरी खैरख्वाहीका मजामालूमहोगा अबमेराभी यही मनोर्थहै कि इसकी नौकरी छोड़दूं और किसी औरकी राहलूं ईश्वर की दृष्टि तंगनहींहै और मेरा पेट लगनहींहै एक नहीं तो आधी कहीं मिलेगी इस उपाधिसे मेरीजान तो बचेगी गुस्तहम बोला यह क्या बात है तुम जहां रहोगे वहां तुम्हारे निमित्त सब कुछ है जो मुझको प्रतिष्ठा प्राप्त करावो तो मैं तुमको जान समान मान रक्खूं और तुम्हारी सेवा अच्छी भांतिसे करूं अमरबोला कि इसी गुमान में तुम्हारे निकटआया हूं परन्तु एक काम कीजिये कि हमजा को लंधौर से लड़ने न दीजिये उचित यहहै कि आप सबसे पहिले अपना घोड़ा कुदाकर लंधौरसे लड़ाई मांगे अमीर मुंह देखकर रहजाय और उसकी सेना सबकी सब लज्जित होजावे लंधौर को कुछभी बल नहीं है मैंने उसकी गदा देखथी एक लकड़ी पर लोहे का खोल चढ़वायाहै मैं जानताहूं कि लंधौरके समान संसारमें कोई कायर और निर्बल नहीहै सो हमजा जो उसकोमारलेगा तो नौशेरवांका दामाद बनेगा उसमें देखें क्या धूम होतेगा गुस्तहमने कहा कि अच्छाहुआ जोतुम मेरेपास आये मैं लंधौर को मारकर हमजा कोभी मारताहूं और दोनों को तलवार के घाट उतारता हूं अब तुमसे छिपा क्याहै जो कुछ हाल मेराहै सो यहहै कि मैंने बहरामको मारकर काबुलमें बास कियाथा और वहां बहुतअच्छीभांतिसे गुजर होतीथी इतने में नौशेरवां का परवाना इस मजमून का मेरे पास गया था कि बेगि सरंदीपमें जाकर पहिले लंधौरका शिरकाटकर हमारे पासलावो फिर हमजाको मारकर मेरे पास आवो कि मैं मेहरनिगार का बिवाह तेरे साथ करूंगा अन्त को अमर गुस्तहम को उभार कर रणभूमि में लाया

और आपभी गुस्तहम के घोड़ेके साथ किसी के भेषमें आया गुस्तहम ने अपने घोड़े को बढ़ाकर आवाज दी कि लंधौर सादान का पुत्र कहां है यही गेंद यही मैदान है मेरी तलवार का काट देखे मेरी मार अपने ऊपर ले लंधौरने अपने हाथी को पेल कर गुस्तहम से कहा कि क्या बे-फ़ायदा बकताहै अपना वार कर गुस्तहमने तलवार ईंचकर लंधौर के शिरपर एक वार किया लंधौरने उसको गदापर रोका तलवार ने दो दांत निकाल दिये लंधौर ने गदा का एक वार उस पर लगाया गदा तो पूरी उसपर न पड़ने पाई पर गदाकी डांड़ीकी झपट गुस्तहम की पशुलियों में लगी थोड़ी पशुलियां उसकी टूट गईं सब बहादुरी धूरि में मिलगई और वह औंधा मुंह होकर धरती पर गिर पड़ा और अचेत होगया साथके सवारोंने चालाकी करके गुस्तहम को उठा लिया और जल्दीसे फिरनेका डंका बजा दिया लंधौर ने अमीर की ओर देख कर मुसकरा कर कहाकि अब कल आपभी समझलेंगे आपभी तलवार का स्वाद देखेंगे अमीरने कहा कि इससमय कौन मना करता है आज का काम कलको मत छोड़ो ईश्वरका नाम लेकर लड़ने पर कमर बांधो वह बोला कि आज यही भलाई है कि कलही पर यह युद्ध उठ रहै दोनों ओरसे दुन्दुभीबजी फिरनेका मनोर्थ हुआ अमीरकी सेना अमीर समेत अपने डेरे पर आई और लंधौर अपने घर गया और गुस्तहम रात को भागकर पहाड़में छिपरहा और मनमें यहविचार किया कि जो हमजा लन्धौरको मारकर फिरैगा तो अवश्य इधरसे आवेगा उससमय गाड़ासे उठ कर उसे मारलूगा और उसकी सेना को पराजय करूंगा यह न समझा कि हमजा बड़ाबली है हमारे मारने योग्य नहीं है ॥

अमीरहमजा के साथ लन्धौर का युद्ध करना और लन्धौर का आधीन होना ॥

अब लेखनी इस युद्धके वृत्तान्तको कागजपर इसप्रकार से वर्णनकरती है कि यह इतिहास युद्धका हिंदुस्तानके दो सिंहोंकी लड़ाईका बयानहै कि गुस्तहमने लन्धौरका गदासे पशुलियां तोड़वाकर रणभूमिसे भागकर पहाड़की खोहकी राहली परंतु साहबकिरां रातभर अपनी प्रतिष्ठा रखनेके हेतु आशीर्वादमांगता रहा एक योधा दूसरेको ललकारता था कि कल परीक्षाका दिनहै यह रणभूमि योधोंके हेतु सोनेकी कसौटीहै देखिये कौन तलवारकी बाढ़ सहताहै कौनअपना भेषबदलताहै किसका सिक्का पराक्रमके देशपर जारीहोता है किसकी प्रतिष्ठा का पल्लाभारी होताहै कल सब कलई खुलजाइगी यहीचर्चा लन्धौरकी सेना में मचा था जिससे परस्पर में लागडाट थी डांकमारता था कि कल बांकों की निकवतियां देखेंगे देखिये कौन नदीरूपी पराक्रम में गोतामारता है कौन तलवार के धारपर खड़ा रहकर उसनदी में ललकार कर पैरता है कौन शत्रुओंकेसाथ कुश्तीकरके उनके शरीरकीमौतका तूफानदेखाता

है संक्षेप यह है कि रातभर यह गुलगपाड़ा दोनोंओर की सेनोंमें इन्हीं बातोंका परस्परमें चर्चारहा जब सूर्यने प्रकाशकिया साहबक़िरांने वस्त्र व शस्त्र सजधज के साहक़ैतास घोड़ेपर सवारहुये नक़ीब और चोबदार विजय का आशीर्वाद ईश्वर से मांगनेलगे कमान तरकश एक कांधेपर रखकर दूसरे कांधेपर रक्खा ईश्वरकी रचना की शोभा प्रकटहुई लौक़ हैरानकापुत्र झंडाकीछाया शिरपरकिये हुये चला अमीर उसकी छाया तलेहुये अब दायेंओर मुक़बिल वफ़ादार और बायेंओर सुलतानबख़्तपराक्रम का किनाराचला और अमर अय्यार चारहसौ मक्कारों के बीचमें वस्त्र अस्त्र पहिन कंटूरा सोनहला और पांतावें सकरलातोको सजेसजाये गोफ़ना को कमरमेंबांधे तलवारकटार छुरीआदिहथियार बांधकर छाशब्दवारह स्थान चौबीसस्थाने अढ़ाई कोनेनीचे में कहताहुआ छलांगफलांगे मारता चला और तीससहस्र सवार लोहे से सजेसजाये परीकापरी जमायेसाथ अमीरके हुये उधर से हिन्दुस्तान का बादशाह लंधौर सादान का पुत्र सातलाखसवार बड़ेयोधाखुमाची,संदली,बंगाली, करनाटकी,मरहटा, दक्खिनी,गुजराती,रांगड़ा,भील,सियारखोरा,काईन,भोजपुरी,बुंदेला, राजपूत, मंदराजी, आशामी, धनाकी, भूटिया, फ़ौलादलोहेको पहिने, बैसवाड़ेकेबैस अवधदेशके छत्री, ठाकुर, दिषित, पवांर, ब्राह्मण, सुकुल, तेवारी, दुबे, पांडे, चौबे, और बहुतेरे गवांर हथियार, छुरी, कटारी, सिरोही, तलवार, पट्टा, बाना, शेरबचा, क़राबीन, पिस्तोल, बर्छी, सांगलगाये हुये बक़ीयरक़ लेकर मस्तमतंग पर सवार जब दोनों सेना पांति २ जमाईगई उनकेबीचोंबीचमें यमदूतों ने अपना तम्बू खड़ाकिया साहबक़िरांने अपने घोड़ेकी लगामली और सिंहसमान लंधौरके सौंह आकर कहा कि ये लन्धौरबादशाह मुझको तुमसे काम तुमको मुझसे कामहै और लोगोंके मारेजाने से क्या प्राप्तहोगा यह समझने का स्थान है जिसगुण में तुम को दावाहो वह तुमकरो अपने मनका अभिलाष मिटालो लन्धौरने कहा कि येसाहबक़िरां जो मैंने पहिले तुमपर वार किया तो तुम्हारे मनकी अभिलाष मनहीमेंरहजावेगी तुम्हारी मनोकामना न प्राप्तहोगी पहिलेवार तुम करो अपनी बाढ़ दिखावो साहबक़िरांने कहा कि मेरे गुरूने यह नहीं बतायाहै ॥

रणभूमिमें युद्धहोनाअमीर और लन्धौरसेओरतलवारमरना अमीरका लन्धौरके शिरपर और तलवारकेघावसे लन्धौरकेघोड़ेकी गर्दनअलगहोकर धरतीपरगिरना और घोड़ेका मरजाना

साहबक़िरांने कहा कि जबतक तीनवारतुम न करलोगे तबतक मैं अपनी वारनहींकरूंगा अपनाहाथभी तुमपर न लगाऊंगा जोकि लन्धौर साहबक़िरांपर नेहकरताथा इसनिमित्त गदापर हाथ न डालकर भाला साहबक़िरांपरचलायासाहबक़िरांने उसकेभालेकोनोकअपनेभालेपररोकी एक दूसरेसे भालाकी लड़ाईहोनेलगी जबलौरनोकेंभालेकी चलगई और चोट

किसीपरनआई और घोड़ाभीपसीनामेंडूबगया साहबक्रिरानें उसकेभाले को गांठकर एकडांट्टी ऐसीमारी कि भाला उसके हाथसे छूटकर दूर जागिरा और वायुकेसमान उड़गया यद्यपि भालाकी अनी लन्धौर की छातीमें पारहोगई लाजमें डूबकर अपने चेहरेको पीलाकरदिया परंतु अपनेकोसंभालकर प्रशंसाकरके बोलाकि येसाहबक्रिरांभाला लगानेका ढंग केवल संसारमें ईश्वरनें तुम्हींको दियाहै जोमैं योधा और मर्द हूंगा तो फिर आजसे कभी भालेको हाथमें न लूंगा यह कहगदालेकर बोला कि साहबक्रिरां अबभी मिलापकापट खोलोदेखो युद्धमें भलाइ अच्छीहोती है नाहक तमामउमर तुम्हारा शोक मेरे हृदयमें रहेगा मुझेरंजअपना न दो अमीरने कहा कि यहसमय लड़ने मरनेकाहै शीखव लेहका नहीं है मैं पहिलेही कहचुका हूं कि अपनी बातमे लाचार हूं नौशेरवां का अब तो आज्ञामानक हूं उसका हुक्मकरने वालाहूं लावोदेखूं तो तेरी गदाकी कैसीमारहै लंधौर लाचारहोकर दोनों जंघामिलाकर गदाको तोलकर दोहत्थड़ साहबक्रिरांके शिरपर मारी साहबक्रिरांने ईश्वरका नामलेकर गदाको ढालपर गांठा उसपर कुछ धमकभी न लगी यद्यपि अमीरकेशरीरमें पसीना निकलआया परन्तु हजरतआदमके बाणवन्दकी तासीर सवाजूटेढी न होनेपाई लंधौरने अपनेमनमें कहा कि गदा जिसपर लगी उसकी हड्डियां चकनाचूर होगईं परन्तु साहबके कुछधमक भी न मालूमहुई त्यौरीपर मैलभी न आया दूसरीबार अत्यन्तबलकेसाथ गदा अमीरपर लगाई यद्यपि साहबक्रिरांने सिकन्दर के समान उसकोरोका परन्तु छठीकादूध यादआया लंधौरने तेहराईको फिरगदा भंभलायके लगाई और इसबलसे उसगदा को हनी कि जो कोहके पहाड़पर पड़ता तो चूर२ होजाता और जो साधारण गिरिपर मारता तो उसमेंसे पानी बहनिकलता साहबक्रिरां ने उसको भी रोका परन्तु तुरङ्ग स्याहक्रैतास धरणीपर चारोंपैर से चित्तगिर पड़ा और अमीर गर्दकेबगोले में पड़गये इसधमकसे जो शरीरमें गदा पड़ी उससे गर्मीमें अटगये लंधौरकेमुखमें निकलगया कि आपके मुखका रङ्गबदलगया कि वहमारा और तलेगिरा दिया भगवन्तको निर्वलकिया परन्तु अफसोसहै कि साहबक्रिरांकी यवा अवस्थाका मैंने इसीकारणसें बार२ मनाकिया पर इनकी मौतुनेनमानने दिया यह कहकर अमीर के पास हाथीपर से उतरकेगया जाधें और हाथमलकर कहा कि ये बादशाह तेजस्वी जोजीताहो तोबोल कि जिससे मेरीजान में जानआये और जो मरगया होतो प्रलयके पीछे मेरा तेरा मिलाप रहै मुझे तेरा अतिशोक व्यापा है साहबक्रिरां जो होशमें आये तोजियानादाऊदी स्याहक्रैतासके ऊपर चमाकाया घोड़ा चारों सुम भाड़ कर उसस्थान से अलग जाखड़ाहुआ और स्वच्छ निकलआया अमीर ने कहाकि ये बादशाह हिन्दुस्तानके किसकोमारा और किसको तलेकिया

दोर कैान बलवन्त और किसको निर्बल किया मैंतो अभी जीताहूं एकबार ओर अपना लगाले अपनेमनकी हौस मिटाले अभी तो युद्ध का आरम्भ हुआहै ईश्वरजिसकीलाजरक्खे उसकोरहै इतनाक्यों अधीर्य होताहै किसो मर्दसेकभी काम न पडा होगा ॥ चौपाई ॥

हिलदेवताघरकोकेबाढ़े । पस्योनकबहुंसुभटरणगाढ़े ॥

लन्धौर ने घचम्भा माना और हाथीपर से उतरकर घोड़पर सवार हुआ और तलवार यहांनी बाढ़िदार खींचकर अमीरपर लगाई अमीरने बड़ाऊरेयम सम्राङ्गसेगुन्धोहुई ढालको आगे किया और उसकी तलवार कराल को उसपर गांठलिया और कहा ये बादशाह लन्धौर पांचवार मैंने तेरी रोंकी अब दौरमेरा है मेरे वारका औसर आया खबरदार हो यह न कहना कि धोखेमें मुझेमारा और जानने न पाया यह कह-कर रकाबसे रकाब मिलाकर तलवार ईंचकर अत्यन्त चालाकी व हो-शियारी से लन्धौरके शिरपरमारी बादशाह ने ढालपर रोककर चाहा कि रद्द करे और अमीर के हाथको गांठले परन्तु तलवार ढाल के दो टुकड़ेकरके घोड़की घोंचके तले जानिकली घोड़ेका शिर गिरपड़ा बाद-शाहहिन्द ने चोन को खालीकिया और लज्जित होकर क्रोधमें आया और तलवार खींचकर अमीर पर दौड़ा अमीर ने अपने मनसेकहाकि ऐसा न हो कि स्याहकूँतास घायल होजावे या अपनीजान इसके हाथसे खोवे तो बल मेरा आधा रहजावेगा और फिर ऐसा घोड़ा कहां मेरे हाथ आवेगा चालाकीकरके घोड़से अलगहुये और बलकरके तलवार लन्धौरके हाथसे एकाएकी निकाललो और छीनकर अपनी सेनामें फेंकदी लंधौरने अमीर की गर्दन हाथ में बांधी अमीरने उसकी कमर में अपना हाथ डालदिया दोनोंओरसे जोरावरी होनेलगी देखनेवालोंका मुंह फिरगया जब दिन बीतगया और रातहुई तब दोनोंओरसे मशालें बारीगई रातभर बराबर उजाली तीनरात व तीनदिनतक लन्धौर और अमीरमल्लयुद्धकरते रहेपरन्तु किसीका किसीसे लंगर न लगा चौथेदिन अमीरने ईश्वरकानाम लेकर लन्धौर को छातीतक उठालिया परंतु शिरतक ऊंचा न करसका उस लंगर को जो बहुतभारी था रोंके रहा उसको छोड़कर चाहा कि जांघके ऊपर कटारमारें जानको शरीरसे बाहर करके मिट्टीमें मिलावें लन्धौरने अमीरकाहाथ पकड़लिया और हाथजोड़केकहा येसाहबकिरां आपके सिवाय और किसीने इतनीशक्ति पाईहै कि मेरालंगर धरतीसे उखाड़े और मुझेपृथ्वीसे उठालेवे मैंने तनमनसे आपकी आधीनता अङ्गी-कार किया और आजसे मैंने आपका साथ पकड़ा अमीरने लन्धौर को गले लगालिया और उसीसमय ईश्वरका धन्यवादकिया और कहाकिबादशाह तुममेरेबांहबलहो मैं तुम्हें भाईकी भांतिजानूंगा और जानसे अधिकप्यारा रक्खूंगा परन्तु मेरी यह इच्छाहै कि तुम मेरेसाथ नौशेरवांके पासचलो

मुझे उससे चाकरी लन्धौर ने कहा कि मैं आपही नहूं जहां आज्ञा होवहां चलूं निदान: अहकरकहा चलिये आगे तम्बू में लिये अवतो मैं घात हार चुका इसवात में वे उतरहूं लंधौर ने उसीदम अपनी सेनाके सर्दार बुलवाकर अमीरको नौकरी करवाई और सबके अहदों अर्थात् अधिकारों का हाल अमीरको बताया और आप अमीरके साथ होकर अमीरके तम्बूमें गया साहबक़िरां ने बहुत कुछ रुपया पैसा लंधौर के ऊपर न्यवछावर किया और सभा सजके मेहरनिगार के चित्रको देखकर रोनेलगा आंसुओं की नदी बहाने लगा लंधौरने देखकर मालुम किया कि अमीर को मेहर-निगार की सुधि हुईहै अपने रुमाल से अमीर के आंसू पोंछकर सम-झानेलगा कि यह आंसू बहाना किसहेत है अब बिछोह का समय बीत गया और मिलाप का औसर शिरपर पहुंचा साहब क़िरां ने मनमें धीर्य बांधकर अमरको गाने की आज्ञा दी अमरने अदबसमेत दो पायोंको बांधकर मिज़राबकी टोपी अंगुलीमें पहिनाई और छेड़छाड़ की ठहरी और दुतारा बजाकर पहिले सामाराग को दिखाई फिर अच्छे स्वरोंसे दाऊदीराग का गाना आरंभ किया ऐसा गाया कि अमीर और लंधौर और सभामें जो२ लोग बैठेथे सबकेसब मोहित होगये और सबसे लंधौर और अमीरका मनबहुत आनन्दित हुआ दोनोंने अमरको हीरा रत्न देकर मनभर दिया उसके पीछे लंधौर ने खजाने की कुंजियां अमीर के आगे रखदीं और हिंदुस्तानकी अच्छी२ वस्तु आगे अमीरके धरी लंधौर मुसल्मान होगया बुतपरस्तोंको त्यागदिया दारोग़ा बावर्चीखाने को बुलवा-कर एक कमरे में भांति २ के खाने दस्तरख़ान पर चुनवाये अमीर ने लंधौरको साथलेकर खाना खाया लंधौर खाना खाने के पीछे प्रार्थना की कि मैं अमी आपसे आशनाई को रक्खेहूं बहुतदिनों से यह इच्छा मेरे मनमें है कि मेरे घरमें आप अपने चरण पधारिये और लवण रोटी खा-लीजिये और मेरेमनोर्थ को पूर्ण कीजिये और यह दोहा कहा ॥

दोहा ॥

ममगृहके जो मध्य में चाकमात्र पगजाय । मित्रलिहारे पैरते ग्रहकाबा होजाय ॥

अमीरने कहाकि मुझे तन मन से यह मंज़ूर है और हिंदुस्तान का रवाना होना बहुत ज़रूर है इसकेपीछे लंधौर बिदा हुआ साहबक़िरां अपने साथ और २ भी अधिकारियों को लेगया सभा आनन्ददायक सजीगई तबलेपर थापपड़ने लगी अब लंधौर और अमीर दोनों को उस जश्न में रहनेदो थोड़ा समाचार गुस्तहमका वर्णनकरूं विदितहो कि गुस्तहम निर्बल मार खाने की निशानी जो लंधौर से पसुलियां तुड़वाकर भागा मंज़िलोंपीछे फिरके न देखा एकपहाड़ की खोहमें छिपकर बैठा और रातदिन साहबक़िरां के मारनेके उपायमें रहा हरकारोंने उसे समा-चार पहुंचाया कि अमीर ने उसेतले किया और मुसल्मानों की सेनाने

विजय प्राप्तकी और आजकल दिनमें लंवैरके साथ विलासकर रहे हैं
सिवाय सुक़बिल वफ़ादारके और कोई दूसरा अमीरकी सेनामें सिर-
दारनहीं सबमिस लेंडी अमीरोंके साथ हैं गुस्तहम ने देखा कि अब
इस समयमें ओसर घातका मिलाहै पड़ाव मारा चाहिये इनलोगों पर
वारलगाया चाहिये कहीं मलिका मेहरनिगार की दोलौंडियां साथ
लायाथा और साहब क़िरांने भी उनको मेहरनिगार के पास देखाथा
गुस्तहमने विषहलाहल दोबोतलोंमें जो अंगुरी शराब से भरीहुई थीं
चारमिसकाल अर्थ मिलादिया जो एक बूंदभी उसका खारीसमुद्र में
गिरता तो उसके जीवधारी एकभी न बचते छोटशीशों में लगाकर
मेहरनिगार की मोहर लाखीको और चेलियोंकी सूरत पथिकोंकीसी
बनादी और एक पत्र मेहरनिगार की ओरसे लिखकर उनको देदिया
और उनको मज़मून उसका अच्छी भांतिसे समझादिया कि पहिलेमु-
क़बिलके पासजाकर हालवर्णनकरना कि मलिका मेहरनिगारने हमको
भेजाहै वह तुमको अमीरके पास ले जावेगा अमीरसे बहुतसी बातें स्नेह
मय मलिका मेहरनिगारकीओरसे कहना फिर ये दोनोंशीशे देदेना और
यह पत्रभी देना और उसकामन अपने हाथ में लेना जो यह उपायकर
लावोगी तो तुमको मैं अपने महलमेंरक्खूंगा और अपनी स्त्रियोंमेंमिलालूंगा
वे दोनों मुरदारें मरदाना भेष बनाके चलीं जबसेनाके निकट आई पहरा
वालोंने रोका बोलीं कि हम मलिका मेहरनिगारके पाससे आते हैं और
उनका पत्रलिये तुम्हारे अमीरके पासजाते हैं वेलोग उनकोसाथलेकर मुक़-
बिलके पासलाये मुक़बिलने हालजानकर सभामेंजा अमीरके कानमेंसब
हाल वर्णनकिया कि दोलौंडियां मलिका मेहरनिगारकी भेजीहुई आई हैं
और दोशीशे अंगुरीके पत्रसमेत लाई हैं आपकेपास आनेकी आज्ञा चाहती
हैं अमीरको नशातोथा ही और भी आनन्द से लीनहोगया और जल्द अपने
स्थानसे उठखड़ाहुआ और बादशाहसे कहाकि आप तबतक सभामें रहिये
मुझे एककाम बहुत आवश्यक है उससे निपटकर अभीआताहूं और अमरसे
कहाकि तुम मेरेबदले तबतक बादशाहकेपास हाजिररहो अमीर अपने
तम्बूमें आनकर एककिनारे बैठे और उनके आनेकेलिये आज्ञादी उनदोनों
टहलुइयों को बुलाकर हालसुना पत्रकेलिफ़ाफ़ेपर जो मोहर मेहरनि-
गारकीथी उसको चूमा और आंखोंसे लगाया और बारम्बार जांघपर
रक्खा फिर उठाया संक्षेप यहकि पत्रको पढ़कर ऐसे फूले कि शरीरमें
न समासके बुराई भलाई समयकी भूलगये एक शीशेकी मोहरको खोलकर
उजेलेमें हिलाया और मेहरनिगारका नामलेकर मुंहमें लगाकर पीगये
उसमदिरा का गलेसे नीचे उतरना था कि अमीर बेहोशहोगये मुंह से
फेना जारी हुआ हाथपांव मारनेलगे नेत्रोंमें जलभरआया ॥

दोहा ॥

यह मदवे उमयार के दुखित हृदय मंझधार। गर्दन में जो छिड़किये होय नयनके पार ॥

लौंडियोंने जानाकि अमीर का कामसमाप्त होगया कोईदमकेपाहुन हैं अबहमारा काम अच्छीभांति से बनगया किसीभांति से तम्बूकीमेखें उखाड़कर उन्होंनेराहली और खुशहोकर गुस्तहमकी ओरचलीं दैवयोगसे बादशाहने अमरसे कहा कि अमीरके बिना सभा फीकीलगतीहै क्योंकि जिससभाके बीचमें पाहुन न हो उसका कुछढंग नहीं है जाजे जो अमीर को इससमयलेआवो तो चारसौ रुपये तुमकोदेकर अभी तुम्हारा झोरा भरदूंगा अमरने रुपयाका नाम जब सुना तब काठ डरताहै शीघ्र वहां से चलताहुआ तम्बूके दर्वाजेपर मुक़बिल को देखा उससे पूछा कि अमीर क्या करतेहैं मुक़बिलने कहा कि दो लौंडियां मेहरनिगार की आई हैं उनसे एकांकिनारे बातेंकररहे हैं लौंडियों का नाम सुनतेही अमर का कलेजा धड़कामुरझागया बोलाकि ईश्वर कुशलकरे तम्बूमेंजाकर दीपकको बुझापाया झटपट बातीबारकर दीवाजलाया देखाकि अमीरके शरीरमें सब फफोले पड़गये हैं नीलारङ्ग होगयाहै फेना मुंहसे बहताहै इसअचेती में हाथपांव धुनरहे हैं बोतल चकनाचूर पड़ीहै और दूसरी वैसेहीधरी है जहांतक उसके बूंदधरतीपर पड़े हैं वहांकी धरती फटगईहै इधरउधर देखा तो किसीको न पाया परन्तु तंबूकी मेख एकओर की उखड़ी देख पड़ी जल्दी उसी ओर से निकल कर लात लगाताहुआ उन लौंडियों के पीछेचला जाते२ उनकेसमीप पहुंचा और वे दोनों कहतीजाती थीं कि क्या शुभसायत परचलीथीं कि कुछ देरभी न लगी किअमीरको मारकर चलीआईं चलो गुस्तहम से वादा पूराकरा दो और उससे पारितोषिक दिलवादो पीछेसे अमरबोला ये दुष्टिनियों हम तुम्हारे यमदूत आपहुंचे भलेघरबैनादिया यह कहकर कमरसे कटार निकालकर दोनोंको वहीं ठिकानेलगादिया और उसीस्थान से उलटेपावों फिरा मुक़बिलको तम्बूमें लेजाकर अमीर का हाल दिखाया और कहा कियह तेरीही ग़फ़लतहै अब बता क्याकरें क्या दवाकरें मुक़बिल शिरपीटने लगा अमरने कहा कि चुपरहो ऐसा न हो कि हिन्दकी सेना इस समाचार को सुनकर फिर- जाय और हमारी सेना उनलोगों से जाइक्का घिरजाय तू अमीर की निगहबानी कर और यहां से पांव बाहर न धर जब तक मैं न आऊं किसीको तम्बूमें न आनेदेना और इसस्थान से हिलने का नाम न लेना लंधौरसे जाकर चुपके से कहा कि अमीर इस समय आ नहींसक्ते और आपको भी वहां बुलावा नहींसक्ते क्योंकि दो सर्दार नौशेरवां के पाससे आये हैं और यह कहलाये हैं कि जो तुमको मुझसे अपना वादाकर- नामंजूरहै तो जल्द लंधौरको बंधुवा करलेना किसीभांतिसे उसको छोड़ न देना सो अमीरने आपसे कहाहै कि जो तुमको बंधुआहोना अंगीकार

हो तो मेरा कामनिकलता है तुम्हारा किसीभांति से बाल भी टेढ़ा न होगा बादशाह ने कहा कि बंधुआहोना तो कोईबात नहींहै अमीर जो मेरा शिरमांगे तो हाज़िर है इसमें मुझे क्या ढीलहै यह तो बात मेरी खुशीका कारणहै अमर ने कहा कि ऐसा नहो कि आपकी सेनाबिगड़े और कुछ झगड़ाकरे बादशाह ने कहाकि किसमें इतनीशक्तिहै सर्दारों को समझादिया और अपने हाथबंधवा कर मुसल्मानों की सेनामें आया अमर को एक किनारे बैठा कर शिष्टाचार करने लगा और एकप्याला चालाकी का पिलाकर लंधौर को बेहोश करदिया फिर उसे सांकड़ोंमें बांधकर एक ऐसा सन्दूक़ जिसमें वायुलगे रखकर बन्द करदिया और सेना का प्रबन्धकरके वहां से मार्गलिया राह के मध्य में दो सवार देखे यद्यपि उनसे छिपा परन्तु छिप न सका और उनके सामने आया तोवे अपने २ घोड़ोंसे उतरकर अमरको बग़लमें लेकर मिले और मिज़ाजका हाल पूछनेलगे अमर ने पूछा कि आप कौनहैं वे बोले कि हमशहपाल हिन्दीके बेटे हैं तुम्हारी तलाश में दूरसे आये हैं सबूरवसाबिर हमारा नाम है बाप हमारा ऊपरदरा मुसल्मान है परन्तु अंत:करण में कुमार्गी और बेईमान है रातसे अमीरको हलाहल पानकरनेका हाल सुनकर गुस्तहम की सहायताको गयाहै और उसदुष्टसे मिलगया है इस कारण से आयेहैं कि अमीर को लेजाकर अपने क़िलेमें रक्खें और अच्छी भांति से मनलगा कर दवा करें अमर ने ख़ुशहोकर कहा कि अच्छा चाहै दो आंखें अमीरको साथ लीजिये और ईश्वरको बीचमें दीजिये कि कुछ छल न हो और कोई झगड़ा न खड़ा हो उन्होंने ईश्वरको बीचमें दिया और कहा कि जो ऐसा हमको मंज़ूरहोता तो क्यों इधर का मनोर्थ करते अमर उनको लेकर तम्बूमें आया और एक तम्बूमें अलग बैठाया जब आधीरात का डंकाबजा अमीर को डोलीमें सवारकरके साबर और सबूरके क़िले में पहुंचाया और क़िलेमें अपना प्रबन्धकरके साबिर और सबूर से कहा कि अब अमीरके अच्छेहोनेका उपाय क्याहै वे बोले कि यहां से दसमंज़िल नारवन नामी एक द्वीपहै उसमें हकीमअक़लीमून रहता है दुनिया में केवल वही इनकी दवाकरने योग्यहै अपने समय का धनन्तरहै एकचिट्ठी लिखदेते हैं उनको बोलालावो तो अमीरको वेगिही आरामहोजावेगा अमर ने पहिले अपने मनमें विचारकिया कि जब तक हकीम आयेगा नहीं मालूम कि हमज़ाका क्याहाल होजायगा फिर सोचा कि जो वैद्य न आयेगा तो दवा कैसेहोगी वायुके समान जानाचाहिये और साथही उसको लानाचाहिये यह अपने मनमें ठानकर चाहा कि जायें साबिर सबूर ने उसके साथ दाराबनामी चालाक को राह बताने के हेत साथ करदिया अमर बाहर क़िलेके निकलकर वायु से कहा मामा वायु इस समय बड़ी आवश्यकताहै मुझे अपनेआगे जानेदेना और मेरेआगे इसका

पैरभी न बढ़ने देना दाराब पूरी मंज़िलभी न गया था कि फैलगया अमर से कहने लगा कि कहीं सवारी मिलती तो आगे को चलनाहोता यह सुन अमर बोला कि अच्छा सुसतालो किसी दृक्षकेतले हवाखालो कि चलने का जिसमें बलहो थोड़ा चले थे कि एकबाग मिला एक दृक्षकेतले दोनों बैठगये अमर ने चालाकी से मकर काखाना देकर कहा कि कुछ खालोकि चलनेका बलहो और मार्गकाहाल पूछनेलगा वह कहनेलगा कि सीधेनाक की सूत चलेजावो दाहिने बायेंओर न देखो उसद्वीप के निकट एक पगडण्डी दाहिनेहाथकी ओर मिलेगी तुम उसीलकीर पर समुद्रके किनारेतक चलेजाना बीचमें और भी उधर की राहें मिलेंगी पर और तरफ़नजाना चारकोसके लगभगचौड़ा उस समुद्रकापाटहै वहां नाव पर सवारहो पारजाकर थोड़ीदूर जावोगे तो उस द्वीपके मकान दिखाई देवेंगे वहां जाके तुम आप बुद्धिवानहो पतालगालोगे अमर ने देखाकि दाराबकीआंखोंमें सरसोंफूलींअमरकेआगे चौकड़ीभूलीदाराबसे कहाकि लोभाई जल्दीचलोदूरजानाहै अपनी कमरकसो उसका उठना थाकि उसीस्थानपर मिट्टीका घूहाबनकर गिरपड़ा अमरनेएकदृक्षमेंउसे बांधदिया और आपचलताहुआ शामनहुई थीकि समुद्रके किनारेपहुंचा नावकेआनेमें देरदेखी दरियामें अलियास पर सवारहोकरचला बातकी बातमें पारजाकर शामके समय करामातद्वीपमें पहुंचा हिन्दूकी सूरत बनकरबाज़ारमेंगया एक आदमीसे पूछाकि हकीमअफ़लातूनका कहां मकानहै भाई हमकोपताबतादो वह बोलाकि इसबस्तीकेमालिक वही हैं यह फाटक जो देखपड़ताहै सो उन्हींका मकान है अमरने दर्बान से जाकरकहाकि साबिर व सबूरके पाससे आयाहूं हकीमसाहबके नाम का पत्रलायाहूं उनको खबरदो दर्बानीने हकीमसाहबसे सब हालकहा हकीम साहबनेकहाकि आने दो खबरदार उसे कोई न रोके दर्बानी ने अमर से कहकर उसे हकीम साहबके पासभेजा अमरने निकट जाकर युक्ति समेत सलाम किया और वह पत्र दिया हकीम ने अमर से पत्र लेकर पढ़ा क्रोधितहो भौंहें समेटकर कहा क्या अच्छा मुझको लिखाहै कि जो शीघ्र आकर हमज़ाको अच्छा करदोगे तो तुम्हारी थैली हीरा रत्नसे भरदेंगे बहुत खुशहोके तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे कहने लगा कि क्या खूब मुझे लालची जानलिया जो यहबात लिखीहै जोयह बात न लिखते तो मैं जाता परन्तु अब न जाऊंगा कभी उधर का मनोर्थ न करूंगा अमर बोला कि कृपा निधान उनसे अपराध हुआ जो ऐसे निर्लोभी बेपरवाहोंको यह बात लिखी क्षमा कीजिये और सवारी मंगवाइये ह-कीमजी बोले कि तू अपनेसे क्योंपैर बाहर धरताहै तुझको इनबातोंसे क्या प्रयोजनहै जब मैंने इनकार किया तबइनकारही जान इसमें विवाद से तुझे क्या लाभ होगा अमरने कहा कि बातें बढ़ाने को जाने दीजिये

संक्षेप यह कि आपके न जानेसे एक ईश्वरका सेवक मराजाताहै वहां जाकर अच्छा फल देखियेगा पुण्य लीजियेगा हकीमजी बोले कि जो हो मैं नहीं जाऊंगा अमरने कहा कि भारी छोटा तो मैं नहीं जानता यह बात किस क़ानूनमें लिखीहै कि हकीम बीमार का हाल सुनकर अपने स्थानसे न टसके यह क्या भलाहै कि एक ईश्वरके सेवककी इलाज में कि जिसके हेत सहस्रों आदमियों को लाभ पहुंचे उसपर ध्यान न करे हकीम अक़लीमून बोला कि तू क़ाज़ी है या मुफ़्ती या तेरी मौत आईहै क्यों खोपड़ी खाईहै जा अपनी राहले अमरने कहा कि आपका चलना मुख्यहै किसी भांतिसे चलने की सूरत निकालना चाहिये ऐसी बात आप क्योंकहतेहैं हकीमने कहा कि क्या तू विक्षिप्तहै ऐसा बुद्धिमान होकर मुझसे बतकहीकररहाहै अपनी हैसियतभरि बातेंनहीं करताहै अमरने कहा कि हज़रत किसी भांतिका सौदाई हो लड़कों को उसके पीछे ताली बजाना उचितहै इतनी दूरसे आताहूं मेरे पीछे तो किसी ने चुटकीभी न बजाई तुम्हारी तरह सौदाईहो तो उसके पीछे ताली बजाना लड़कोंको उचितहै आपमुझे विक्षिप्त बनातेहैं यह बड़ा अन्यायहै तब तो अक़लीमूनने अपने सेवकोंको आज्ञादी कि इस बीमार बे अदब को बांधो और घूसोंसे इसकी ढिठाईनिकालो यह सुनकर जब अमरने जाना कि हकीम न जायगा और मैं दण्ड पाऊंगा तो रोने चिल्लानेलगा और कहनेलगा कि ये बातें जोमैंने आपसे कहीहैं मानोसाबिर वसबूरके मुखसे भाषी गई भलाहै कि आप न जायें हानाहक मैं कष्ट वे फ़ायदा न उठावें परन्तु साबिर व सबूर दोनों बड़े मसख़रेहैं जो मुझे कालकेसी दौड़ाया जो आजकी रात अंधियारी है इहांसे जा नहीं सक्ता हूं और कोई आगे नगरभी नहींहै न रातको कोईराही मिलसक्ता है आज्ञाहो तो इस संकटमें आपके द्वारे पररहूं प्रातःकाल अपना मार्गलूं अक़ली-मूनने अपने सेवककी आज्ञादी कि इसको बवरचीख़ानेमें लेजाकर कछु खिलवाकर सो रहने दो कल सबेरे यहांसे रवाना करो अमरने अपने मनमें विचार किया कि हकीम अक़लीमून बड़ा नादानहै बुद्धिमान हो कार लाभ हानि नहीं समझता है यही मूर्ख का चिन्ह है इसका कुछ इलाज करना चाहिये कोई होशकी दवा दिया चाहिये बावरचीख़ाने में जाकर बावरची से चिकनी २ बातें करने लगा बावरची अमर की मधुर बातें सुनकर दूध खांड़की भांति घुलगया अमरने ख़मीर मिठाई के कई टुकड़े उस थैली से निकाल कर उसे दिये कि थोड़ी इसकीभी चाशनी चखिये बहुत आपने रकाबदारी की और बहुतसी मिठाइयां बनाई होंगी बहुधा बुद्धिमानोंके साथ सङ्गति रही होगी बावरची ने उसकी बातें सुनकर वह मिठाई अच्छीभांतिसे खाई और प्रसन्नहोकर सबपेड़े खालिये बोला कि सचमुच इसकीमिठाई होंठ बन्दकरतीहै इस

स्वाद को मिठाई कभी नहीं खाई अमर बोला छोड़ क्या कोई दम में खास बन्दकरेगी फिर और ही स्वाद देखावेगी अन्त को उसको मजे में लाकर एक कोने में ले गया और बोला कि कुछ नमकीन का भी स्वाद चखिये बावरचीने कहा कि जब मिठाई में यह स्वाद नमकीन में दूने अधिकस्वाद देखावेगा अमरने अपनी झोरीसे एकटिकिया निकालकरदी उसअमरभुक्खेने उसकोभी खालिया फिर तो झूमनेलगा अमरने अतिचिल्लाके एक गाली उसे दी वह आगबबूला होगया एक चैला लेकर मारनेको उठा पांव जो लड़खड़ाया खाजेके चरणों तले आरहा अमरने बावरची खानेमें एक चूल्हे के पास गढ़ा खोदकर उसे गाड़ दिया ऊपर से लकड़ियां जलाकर रखदीं और हांडीमें पानी चढ़ादिया और आप उसकी सूरत बनकर हकीम के हेत बियारी पकाने लगा कलौंचा की रोटी में अपना दाना खर्च किया और ऊपर से सौंफ़ लगा दी और क़लिया व कुर्मा व पुलाव आदि में अपने झोरे से घी निकालकर डाला और सब सामान अपनीही झोरीसे निकालकर डाला और सब प्रकारके भोजन बनाये प्रातःकाल होतेही हकीम साहबके दस्तरखानपर सब वस्तु चुनदी और हकीमसाहबको खिलानेलगा हकीमसाहबने जो वस्तु खाई उसमें प्रशन्सा करते २ मुंह बन्द होगया अमर ने कहा कि कृपा निधान यह आपकी दवा कीगई और क़ानूनसे आंच दीगई है बनपड़ाहो तो सदा ऐसाही खाना खाया कीजिये तो दिमाग़में बल अधिक हो जान बूझके काम करें और बीमारीको अच्छी भांति जान लिया करें कुछ छिपा न रहे हकीम साहब खाना खाकर बहुत खुश हुये थोड़ी देरके पीछे जोर से डकारने लगे और कहा कि तेरी बुद्धि बड़ी तीव्र है हम और बातेंभी तुझे खाना पकानेको बतायेंगे अमरने थोड़ा दूर पीछे हटकर कहा कि खुष्टमें हकीम साहब आपसी बलिष्ट नुसखा हैं पढ़ लिखकर सब चौपट किया कितने बेहूदाहैं अक़्लीमून झुंझलाकर उठा और कहाये निर्बुद्धी यहक्या बेहूदा दिमाग़ पकाताहै यहक्या बेअदबीकी बातें मुखमें लाता है अमरने पीछेको छलांगमारी औ हकीम साहब फलांग के मारतेही अचेत होकर धम से मुंह के भल धरती पर गिर पड़े अमर ने हकीम साहबको चादर अय्यारी अर्थात् चालाकीसे लपेटकर झोरी में लेटाया थोड़ीसी बेहोशी की दवा देकर सारे विद्यार्थियों को खिलादी जब सब बेहोश हुये अमरने कुतुबख़ाना व दवाईख़ाना और कुलघर के सामानको उसी झोरीमें भरकर उसके ऊपर हकीम साहब कोलेटाकर एक परवाना राहदारीका हकीमसाहबके नामसे लिखकर उनके क़लमदानसे मोहर निकालकर परवानेपर करके प्रसन्नतासे अपने स्थानकी राहली उसका मज़मून यह था कि घाटके मांझीको उचितहै कि शीघ्र बे तकरार इस मनुष्यको नदीके पार उतार दे और एक पैसाभी उतराई का न ले जो

थोड़ीभी देर लगावेगा तो कठिन समुद्रमें डुबाया जायगा थोड़ी देर के पीछे अमर गठरीबांधेहुये नदीकेकिनारे जापहुंचा और घाटकेमांझीको राहदारीका परवाना दिया घाटवाला शीघ्र उतारने पर उद्यत हुआ पहिलेहीखेवेमें अमरकोपारउतारा अमरएकपहरकेभीतरमेंवहांपहुंचा जहां दाराबको वृक्षमें बांधगयाथा दाराबको खोलकरकोई दवादी उस्से चेतहुआ दाराबजो सावधानहुआ और नींदसे चौंकातो बोलाकि बहुत सोयेनहीं तो आधीरात उस दीपकी लपटजाते नींदने मंजिलभी खोटी की अबचलिये दीपकी राहलीजिये अमरने आदिसे अन्ततक सब समाचार हकीमके लानेका बर्णन किया दाराब के होश कहानी सुनकर उड़गये और गुरूकहकर अमरके चरणोंपर गिरपड़ा और अमरका चेला हुआ अमरने दाराबसे कहाकि तू होले २ आ मैं तो लम्बीलेताहूं साबिरसबूर को यह सबसमाचार बताताहूं हवाको जो पछिले पावोंसे मारा तो दाराब की नज़र से जातारहा थोड़ी देर के पीछे क़िला के पास पहुंचा देखै तो अद्भुत चरित्र है गुस्तहम सेना लिये हुये क़िला के तले खड़ाहै और एक ओरसेना हिन्दके बादशाह की खड़ीहै क़िलेके बुर्जोंपरसे गोलीबरसती है गोलंदाज तोपोंको महताबी देरहेहैं अमरघुसकर क़िलाके बुर्जकेतले पहुंचा और कमन्दफेंककर बहुतजल्द क़िलेकी दीवार पर चढ़गया परंतु तलेसे एकमनुष्य ने निशाना बांधकर उसको गठरी में तीरलगाया वह तीर गठरीको तोड़कर गालीसानहली पर बैठा अमर फलांग मारकर क़िलेके भीतरगया और वह गठरी साबिर सबूरके आगेरक्खी जिसउ-पायसे हकीमसाहबको लायाथा सब बयानकिया साबिरसबूर अमरकी बुद्धि की बहुत प्रशंसा की अमरने सब असबाब हकीम साहब के आस पास चुनकर चेतहोनेकी दवादी कि इतने में हकीमसाहब की बेहोशी दूरहुई और उसीपियादेकी सूरतबनकर कहा कि आपको साबिर सबूर ने बुलायाहै और मुझे अतिकष्टसे आपकेपास भेजाहै हकीम अक़्लीमून मुंहसिकोड़कर बोला कि यहां कोई है इसदीवाने को बांधकर मेरेपास लावो किमैं फ़स्दखोलदूं बेफ़ायदा दिमाग़खारहाहै इसका इलाजकरूं अमरने कहा कि कृपानिधान मैं विक्षिप्त नहींहूं कि नश्तर दीजियेगा मैं दीवाना अपनेकार्य का होशियारहूं क्योंदवा कीजियेगा हकीम साहब बोले कि शिड़ोके शिरपर क्या सींगलगे होतेहैं किजो तेरेनहींहैं तेरे क्या सुरखाबका पर लगाहै लाखबार कहा किमैं नहींजाऊंगा तू अपनी रटे जाताहै जबकोई न बोला हकीमसाहब देखकर चुप होगये भवचक्काहो-कर इधर उधर देखने लगे कि सभी असबाब मेरे मतलब का मेरेपास धराहै परन्तु मेरा मकान नहींहै उसस्थान और आदमियोंका कुछचिन्ह नहींहै इतनेमें साबिर सबूरने आकर मुलाक़ात की हकीम साहब का शिष्टाचार आदर पूर्वक किया हकीमअक़्लीमूनने पूछा किमैं असबाब

समेत यहां खोंकर आया अमर बोला कि मर्जा नही है जो ये कहे हुये जानलीजियेगा किसी विद्धिप्तोको अपनीही हड्डीसे फ़स्दखोल दीजियेगायह पियादाजायाहै इतनोदूरचलकरयहां पहुंचायाहैअक़लीमूनको जबमालूमहुआ कि अमरहै उठकर गलेसेलगालिया कि ख़ाजे जोमैंजानता कितुमहोतोमैं बेतकरार चलाआता और कभीइनकार नकरता अमर बोला कि अबभी आपके उपकारका बोझा मेरेऊपर बहुतहै कि आपने मुझे देडाला परंतु शीघ्रकोई ऐसाउपाय कीजिये कि अमीरकेशरीरसे विषदूर होजाय और इनको आरामहोजाय हकीम अक़लीमूनने देख कर अफ़सोस करनेलगे और कहा कि इसकाइलाज नौशेरवांकेसिवाय दूसरीजगह कहीं धरतीपर नहीं है अमरनें कहा कि हज़रत वह ऐसी वस्तु क्याहै किजो संसारमें दूसरेस्थान में नहीं है अक़लीमूनने कहा कि शाहमोहराउस दवाका नामहै कयानियोंके पीढ़ी दरपीढ़ी चलाआया है उसकेबिना अमीर को आराम नहोगी विष नस २ में व्यापिगया है अमरनेकहा कि कृपानिधान यह वही मसल है कि जब तक इराक़ से ज़हरमोहरा लायाजायगा तबतक सांपका काटामर जायगा इसआने और जानेतक हमज़ा काहेको बचेगा उससमय तक इसका दम अच्छा काहे को रहेगा अक़लीमून ने कहा कि अबतो अमीरका अच्छा होना कठिनहै बहुतबड़ी बीमारी है अमररोता पीटता शिरपर धूल उड़ाता क़िलेके दरवाज़ेपर आया वहां मुक़बिल खड़ा हुआ था कहाकि ख़ाजे कहो हकीमने क्या इलाज ठीक की अमरने कहा कि क्याकहूं कि इस असमेंतो हकीमको लाया और उसकसबह को यहांतक पहुंचाया अब वह कहताहै कि इसका इलाज शाह मोहराके सिवाय संसारमें नहीं है अब शाह मोहरा नौशेरवां के यहांके सिवाय और अत्तार खानों में कहीं नहीं निकलेगा और पृथ्वीपरउसका पतानलगेगा मुक़बिल सुनकर चुप होरहा अमर दोचार क़दम आगेबढ़ा मुक़बिलने पीछे से पुकारके कहा कि ख़ाजे जो मदायन जावो तो नौशेरवांके फाटकपर एकबुढ़िया रहती है उससे मेरा सलाम कहदेना अमर खिसिया कर पलट के एक सोंटा मुक़बिल के शिर पर इस बलसे मारा कि मुक़बिल खूनमें भीगगया चक्करखाकर धरतीपर गिरपड़ा उस समय मुक़बिल छोटे बोल से कहनेलगा कि ख़ाजे खफ़ा क्यों होतेहो शाह मोहरा यहीं मिलजायगा तब तो और भी अप्रसन्नहोकर मुक़बिलको गालीदेने लगा कि तुझे मेरा रास्ता खोटाकरने में क्या मिलेगा मुक़बिलने कहा कि ख़ाजे हमज़ाके शिर की क़समहै शाहमोहरा इसीस्थानमें है मुझसे लीजिये कोई दममें हाथ आवेगा बुज़ुरुचमेहर ने मेरे सामने अमीर की जांघमें रखकर टांकेलगा दियेहैं और उसका लाभ भी बतादियाहै अमीर ने मुक़बिल को छातीमें लगालिया और हमज़ाके पास पहुंचा अक़लीमूनने कहा कि ख़ाजे अभी

यहीं हो मैं जानता था कि मदायन पहुंचेहोगे शाहमोहरा कहीं से ढूढ़ेलाते होगे अमर बोला कि हज़रत मैं गयाभी और पतालगा करले भी आया अक़्लीमून ने कहा तुमसे कुछदूर नहीं है लावो जो लायेहो तो दो अमरने कहा कि अमीरके जांघमें है अक़्लीमूनने अमीरके शरीर को देखा तो सचमच नीलकांच के समान होगयाहै परन्तु जिसस्थान पर शाहमोहराहै उतने शरीरका साधारण रंगबनाहै विष कुछ अभी नहीं बैंधा है अक़्लीमून ने कहा यद्यपि अमीर का रङ्ग नीला है परन्तु शाह-मोहरा जो अमीर की जांघमें न होता तो अबतक अमीर मरगयेहोते फिर कईसौमन दूधमंगा के रक्खा और छूरासे अमीरकी जांघ चीरकर शाहमोहरा निकाला और रेशममें बांधकर अमीरके कंठसे पेटमें उतारा और कुछकाल के पीछे उसे निकालकर दूधके कड़ाह में डाला उसी में उसको खूब गोतादिया दूधका रङ्ग हरापांगालके समान होगया दूधका रंग बदलने लगा उसीभांति से मोहरा को अमीरके पेटमें पांच२ छः२ मिनट रखकर कईबार दूधमें डाला जब दूधने रंग न बदला और रंगत बदनकी बदलचली और अमीरको छींकआई अक़्लीमून थोड़ी चादरेंकातां की अमीरको ओढ़ाईं और होशमें लानेका उपाय किया और लोगों से कहा कि खबरदार कोई मनुष्य अमीर के सामने जहर खाने का हाल बयान न करे भूलसे भी इसहालका नाम न लेवे दोघड़ीके पीछे इतना पसीना अमीर के शरीर से निकला कि सब बिछौना डूबगया दूसरे दिन जब अमीर को कुछ होश आया खाना मांगा अक़्लीमून ने तीतर का शोरुआ अमीरको पिलाया जब अच्छीभांति चेतहुआ और अमीर तकिया लगाकर बैठा पूछा कि लंधौरबादशाह कहां है और सभा का औरही सामान है अमर ने झटपट लंधौर को चेताके अमीर के पास पहुंचाया और राह के मध्य का सकल वृत्तान्त बयान करके तमाम समाचार कह सुनाया कि आपके फिरजानेके डरसे मुझसे यह अपराध हुआहै अमीर से इसका ज़िकिर न कीजियेगा अब तो जो कुछ होना था सो होचुका जिससमय लंधौर और बड़े २ सिर्दार अमीर के पास स्थितहुये प्रत्येक ने अमीर के ऊपर से बहुतकुछ न्यवछावर किया सब फ़क़ीरों को माल से भरदिया अमीर ने हकीमअक़्लीमून को देखकर कहा कि यह कौन है और कहां से आयाहै यह किसीकेपास गाताहै या सौदागरहै जो माल बेंचने के हेत लायाहै अमरके मुंहसे वे सम्हार निकलगया वह जो लौंड़िया शीशेशराब अंगूरीके लाईंथीं वह आपका जानलेने को विषहलाहल भर के लाई थीं गुस्तहम की भेजी हुई थीं आपने जो एक शीशा शराब का पिया उसमें विष मिलाहुआ था तमामबदन में बेधगया था साबिरवसबूर आप को भी शहपाल के बेटे हैं अपने क़िले में उठालाये और आप की अत्यन्त निगहबानी करतेरहे और हमलोगोंसे अति कृपादृष्टिसे पेशआये

और अमर को भेजकर नार्बनद्वीप से हकीम को बुलवाया जिससे हुजूर का इलाज हुआ ईश्वर ने आपको इसकराल विषसे बचाया और गुस्त-हम क़िलेको घेरेपड़ाहै और बराबर लड़रहाहै यहबात सुनतेहीखंधौर के तलुओंसे आगलगी शिरमें जाबुझी बोला किअभी उस दुष्टको रसा-तलमें भेजताहूं अभीतो मैं उसका बधिक जीताबैठाहूं उसखलको थोड़ी देबात में तोदफ़ा करताहूं अमीर ने मनाकिया कहा कि आप धीरज धरिये मैं समझलूंगा इसमें खबर पहुंची कि शहपाल भी उसका स-हायक है क़िलेपर चढ़ने का मनोर्थ किया था साबिर नामी उसके बड़े लड़केने मारकर स्वर्गको भेजदिया गुस्तहमने यहहाल सुनकर क़िले पर धावाकरने की आज्ञादी है और आपने भी मनोर्थकिया है थोड़ी देरमें खंदक उतरके क़िलेपर आयाचाहता है अमीरने अमरसे कहा कि तुम जावो और गुस्तहमको मेरी ओर से कहदो कि मैं नौशेरवां के कारण तरह देताहूं अभीतक चुपचाप बैठाहूं परंतु तेरे हृदयमें यहबात नहीं आतीहै अपनी दुष्टताको छोड़ता नहीं उसपर झगड़ा फ़िसाद कररहा है जो यहांसे अपना मुंहकाला करनहीं तो अपना कियापावेगा अमरने अमीरका संदेसा गुस्तहमसे जाकर कहा उसदुष्टने हंसकर उत्तरदिया कि वो सवीनबच्चे तू मुझसे मकरकरता है हमज़ाको मरेहुये बहुतदिन हुये और हमज़ाका चिन्ह भी शेषनहीं रहा है मृतकों को जिलाता है जिसकी ओरसे संदेसा लाया है अमरने झुंझलाकर कहा कि वो दुष्टतू साहबक़िरां के निमित्त ऐसीबातें मुखसे कहताहै मौतके दिनतेरे निकट आयेहैं जो ऐसीबातें सटांयपटांय की उड़ारहाहै क्या करूं अमीर का हुक्म नहींहै नहींतो गोफनसे तेरेदांत तोड़कर तेरीहलक़ में डालदिये होते बढ़ २ के जो बातें करताहै और दावाकर रहाहै सब हौसले तेरे निकालदिये होते गुस्तहम बोलाकि अच्छाहमज़ाजो जीताहै तोजाकर पूंछ आ कि मेरे किसभेदसे आगाहहै अमरजोतू यह उत्तर सहीलाया तो भला नहीं तोतू ये बातें मुझसे करताहै कि उसका खैरख्वाहहै अमर अमीरके समीप आया और जो गुस्तहमने कहाथा सम्पूर्ण कह सुनाया और कहाकि ऐसाहबक़िरां आश्चर्यहोताहैकि तुमगुस्तहमऐसेदुष्टसे कि जिसने तुम्हारे मारडाल ने में उपाय न छोड़ाथा उसके भेदको अभीतक आपछिपायेहैं और उसखलसे जिसकेपानीय मिट्टीमेंखमीरहै भूलेहुयेहो पहिले उपाधि बहिरामके शिरपरसेटरी और अबविष दिलवाया ईश्वर बुज़ुरुचमेहर का भलाकरे कि उसने शाहमोहरा जांघ में रखदिया था नहींतो जीनेकी कौनसूरतथी अमीरने उसके पादमारने का हाल कह कर अमरसे कहा कि बस यही उसकाभेद है तूजाकर उसे जियादे वह क्या करताहै और उसेमंज़ूर क्याहै अमरने गुस्तहमसे आकर कहा कि अमीरनेकहा है कि वो गूही भेंटके समय तूने तीनबार पादमारा था

जबहथियार लगेगा तब हगर२ देगा गुलहमने इसभेदके सुनतेही जाना कि हमजा अभीजिन्दाहै देखियेअबक्या आफ़तआवे यहांसेचला जानाही उचितहै उसीसमय सिन्धनदी के ओरभागा और वहांजाकर उसदुष्टने बड़ा फिसाद मचाया दो म्रतकों के शिर मंगाकर नौशेरवां के पास भेजे और अपनी बसोठी उनशिरों के साथभेजा और विनयपत्रमें यह लिखा कि लंधौरने मैदानमें हमजाकोमारा और मैने आपके प्रतापसे लंधौर को मारडाला और उनदोनों के शिर आपके समीप भेजताहूं बड़ी २ लड़ाई बीचमें हुई हैं और एकपत्र बख़्क को व्योरा समेत लिखा और उसमें यहदर्जकिया कि मैने बादशाह के विनय पत्रमें झूठ इस निमित्त लिखाहै कि नौशेरवां मेहरनिगार की शादी किसीसेकर देवै और वह म्रगनयनी अमीर के हाथ नलगे और नहीं तो सत्य यहहै कि हमजा ने लंधौरको जीतलिया और लंधौर तनमनसे उसका आधीनहुआ और अमीरके सामने गर्दन अपनीझुकादी मुझसे सिवाय हमजाको विषदेने के कुछ न बनपड़ी और कोई उपाय न होसकाथा हमज़ाबड़ाकड़ा जीवका निकला कि विषसेभीउसका कुछन बिगड़ा मैंलाचार होकरवहांसेभाग कर सिन्धमें आया अपनीजान वहांसे बचालाया इसकारण से बारम्बार लिखताहूं कि बादशाहको बहकाकर मेहरनिगारका विवाह किसी से करादेना और इस सलाह में और लोगों को भी मिलालेना कि जिससे हमजा सुनकर मरजाय शत्रुके मारनेका डरहै किसी भांतिसे जानगवांये जिससमय वह विनयपत्र और शिर नौशेरवां के पास पहुंचा और देखकर नेत्रोंमें जल भरके बुजुरचमेहर से कहा कि अफ़सोस हमजा की जवानी मैं जानता हूं कि हजार वर्ष आसमान घूमेगा तो भी ऐसा स्वरूपवान उत्पन्न करके न दिखायेगा बुजुरचमेहर ने कहा कि मैं कुछ कह नहीं सक्ता अन्दाज से तो हमजा अच्छाजान पड़ता है परन्तु उसके शरीरको कष्टहुआ है आगे ईश्वर जाने ॥

विजय प्राप्त करनेके पीछे मदायन की ओर लन्धौर समेत बड़े सजधज से अमीरका चलना ॥

सजधजसे अब अमीरके मार्गका समाचार वर्णनहै कि अमीरको जब कुछ बलहुआ तब माशूकाकी यादकर गह्वरगति होजाती भई और तबियति अति घबरातीभई लन्धौरसे कहाकि अबजी चाहताहै कि मदायन को चलैं बादशाह ने कहाकि जैसी आप की मर्ज़ी हो बहुत दिन राह चलते बीते बादशाहके मिलनेका मनोर्थ हो विसमिल्लः मनोर्थ चलने का कीजिये पर हिन्दुस्तान में सिक्का अपना जारी करके किसी को अपना युवराज अपनी ओरसे छोड़जाइये अमीरने कहाकिए बादशाह तुम्हारा देश तुमको फलै मैं केवल तुम्हारे स्नेहका भूखाहूं बादशाह ने जयपुर में अपने भाई चचा जादको अपना नायब किया और आप सिपाह समेत साहब किरांके साथहुआ आदी खोमालेकर पहिले एकदिन आगे गयाथा

उसमे एक रमनीकस्थान देखकर नदीके किनारे तम्बू गाड़दिये अमीरभा
सेना और लश्कर समेत धूमधामसे चले और तम्बूमें पहुंचे प्रातःकाल
वहांसे कूच किया और इसी भांतिसे प्रति दिन कूच मुक़ाम करते चले
जातेथे यद्यपि अमीरके शरीरमेंकेवल हाड़खालके कछ न रहाथा परन्तु
मेहनिगारके नेहवश मंज़िलों मार्ग लपेटते चलेजातेथे अब बख़्तकका हाल
सुनिये कि गुस्तहमका पक्षपढ़के उसके उपाय करनेमें प्रवृत्त हुआउसके
मनमें आया कि ख़्वाजे ज़ादा नौशीन सुर्जवांके वंश जो कैकाऊसका है
इसके कुटुम्बमेंहै मेहरनिगारके विवाहके हेत उभारा चाहिये और किसी
भांति वेगउसे बुलवाना चाहिये झटपट एकपत्रइस मज़मूनका औलाद
सुर्जवांके पुत्रके नाम लिखाकि मलिकामेहरनिगार सप्तदेश के बादशाह
की पुत्री अवयुवा हुई हमज़ा नामी अरब वालेने उसकी इच्छाकी थी
बादशाह ने दूसरी क़ौम जानकर उसके साथ अंगीकार न किया और
उसको हिन्दुस्तान में लन्धौरके साथ लड़नेको भेजदिया और वह सुनते
हैं कि लन्धौरके हाथसे मारागया सो मेरीइच्छा आपकी भलाई केहेत
हैकि आप बहुत जल्द जिसभांति होसके यहांका मनोर्थ करें और अति
शीघ्र अपने आपको मदायनमें पहुंचाइयेमें उपाय करके आपकाबिवाह
उसकेसाथ कराटूं और नौशेरवांका पुत्र आपको बनादूं औलाद सुर्जवां
का पुत्र पत्रको देखकर अति आनन्दित होगया तीशसहस्र सवार लेकर
काबुलसे चलाथोड़े दिनके पीछे मदायनमें पहुंचा बख़्तकने ख़बर पाकर
उसका प्रबन्धकरना आरम्भकिया शीघ्रमें बादशाहसे प्रार्थनाकी कि औ-
लाद सुर्जवांका पुत्र केकावसी आपके मिलनेके हेत काबुल से आया है
अगवानी उसकी अवश्य चाहिये कि वहभी एक बड़े मनुष्यके घरानेका
है थोड़े सिर्दारोंको आज्ञादीकि अगवानी करके तिख़शाद कामपरउसे
उतारैं और उसकी पहुनई में आरूढ़ रहैं बादशाह कीं आज्ञानुसार
उसकी प्रतिष्ठा की गई दूसरेदिन बख़्तकने उसकी नौकरी करवाई और
ख़िलअ़त दिलवाई कईदिनके पीछे अपनासमय पाके बादशाह से अलग
प्रार्थनाकी कि हमज़ा तो मारागया मलिका मेहरनिगारके बिवाहका
उपायअवश्य करनाचाहिये क्योंकिअबअवस्था बड़ीकठिनताकी आई और
होशियार होचुकीहै और गुस्तहमके साथ जो हजूरने ठीककियाथा सो
वहबूढ़ाहै और उमरसे उतरगयाहै और विदितहै कि जवान अवस्थाकी
स्त्रीका बैठनाबूढ़े मर्दके गोद में बहुत अनुचित है किसी ऐसे युवा और
प्रतिष्ठित पुरुष और अच्छे घराने काहो उसके साथ विवाह करदेना
उचित है और इस भलेकाम में जितनी शीघ्रता हो करदेना चाहिये
क्योंकि समय बेढब है नौशेरवां ने कहा कि तुम्हीं किसी को प्रसन्नकरो
इसकाम की कोई सूरत निकालो बख़्तकने प्रार्थना की कि मेरे समीप
औलाद सुर्जवां मे कि कैकाबसी है और सूरत और लियाक़त भी

अच्छी मालूमहोती है और तो इससे अच्छा कोई नहीं जानपड़ता है फिर आपकी जैसीसलाह हो और मलिका साहबाकी मर्जी वह सबसे अच्छीबात है बादशाह ने यह बात पसन्दकी और मलिकामेहर अंगेज को इस समाचार से प्रकाशित किया जोकि उसदिन तक अमीर का मरना बादशाह के घरमें किसीको मालूम न था मलिकामेहरअंगेजको यह वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुखहुआ सब पर कड़ाईकी कि कोई अमीर के मरनेका समाचार मेहरनिगारको न बतावे और उसके सामने इसकी जिकर किसीभांतिसे न कीजावे परन्तु उसे खबरपहुंचादी मेहरनिगार ने अपने को ऐसा दुखित किया कि देखने वाले हैरान होगये उसका यह हाल देखकर सब मुरझागये मलिकामेहरअंगेज ने आकर बहुत समुझाया परन्तु उसने कुछ न माना मलिकामेहर अंगेज लाचारहुई बादशाह को खबरदी नौशेरवां ने बुजुरचमेहर से कहा कि तुम जाओ मेहरनिगार को समुझाकर औलाद सुर्जवां के बेटे के साथ विवाहकरने पर राजीकरो बुजुरचमेहर महल में गये और मलिकामेहरनिगार को इलाहदा करके कहनेलगे कि मलिका अमीरकी सबभांति से कुसल है और ईश्वरकी कृपासे अच्छीभांति है यह लोगोंने झूठमूठ उड़ाके उसके बैरियों के निसबत जो खबरउड़ाई है निहायत झूठहै केवल इसमनोर्थ से कि अमीरका गुजर इसराजधानी में न होनेपावै यह उपायकियाहै हां अमीरको गुस्तहमने बाहरदिलवायाथा उससे तकलीफ़ बहुतपाई आप देखलीजियेगा आजके चालीसवेंदिन अमीर से और आपसे बखूबी मुलाक़ातहोगी मेरे निकट मुनासिबहै कि नामवार औलादसुर्जवां के पुत्रको अंगीकार कीजिये परन्तु यह बात ठहरालीजिये कि औलाद चालीस-दिन जिसमें आपके सामने न आये और परदेके निकट तब तक पांव न धरे मेहर निगार ने बुजुरचमेहर के कहने से अंगीकार किया बुजुरच-मेहर ने बादशाह को शुभपूर्वक बात कहकर मेहरनिगार का संदेसा दिया नौशेरवां ने दर्बारके बीच यामाचता का पारितोषिकदेकर कहा कि चालीसदिवस के पीछे विवाह कियाजावेगा बख़्तकने सुर्जबां के पुत्रसे कहा कि यह मोहलत बरीहै और उसके आनेका भी हाल सुनागया है क्योंकर कि हमज़ा जीता है जो इतने में आजायेगा तो सबउपाय नष्टहोजायगा आप एककामकरें कि कल उठनेके समय बादशाहसे प्रार्थना कीजिये कि सेवक की यह इच्छाहै कि यह विवाह काबुलमें जाकरकरें वहां पहुंचते २ चालीसदिन भी बीतजांयगे और मेरे कुटुम्बपरिवार के लोग भी सबजमाहोंगे और इस विवाहसे आनन्द प्राप्तकरेंगे और मैंभी आपकी बातपर पुर्चकदेदूंगा और बादशाहको राजी करदूंगा औलाद इस बातसे अतिप्रसन्न हुआ खुशीके मारे चेहरा का रंगलाल पड़गया और मुलक़ातके समय नौशेरवां से कहा और बख़्तकनेभी उसकी बातकी

सहायता की और अपनी ओर से भी पुर्चकटी बादशाह ने अङ्गीकार किया और दाइज आदि देनेका प्रबन्धकिया बख्तक से कहा कि मेहर-निगारकी बिदाकाप्रबन्ध तुम्हारे आधीनहै इसकामसे निपटके बेगिबिदा करना अच्छाहै बख्तकने एकके स्थान सौखर्च करके कईदिनमें मार्ग आदिका के सामान तैयार करदिया बादशाह ने मेहरनिगार को बड़ी धूम धाम से बिदा किया और मंजिल तक मलिकामेहर अंगेज समेत गये और आपभी अधिकारियों समेत साथ चले औलाद मलिका को लिये कूच करता हुआ मंजिलों प्रसन्न चला जाता था किन्तु तम्बू मलिकाके हुक्म से तीनि कोस पर खड़ा किया जाता था बारह सहस्र टहलुए हबशी व तुरकी मलिका के तम्बू के आसपास रहतेथे पक्षियोंको यह शक्ति न थी कि उड़ कर मलिका के तम्बू में जासकें जिस समय उन्तालीस दिन व्यतीत हुये वह समझी कि मिलापके दिनशिरपर पहुंचे औलादने एक पहाड़ अति रमनीक पर कि वायु वहां की चित्तको प्रसन्न करतीथी वहांपर तम्बू खड़े करने को आयस दिया और कहा कि कल्ह हमारा यहां मुक़ाम है मलिका का वादा पूरा होगा इसी मुक़ाम पर बिवाह का मंगलाचार करूंगा मेहरनिगार अपने मनमें ठाने हुये थी कि जिस समय औलाद तम्बू में पांव रक्खे उसी समय अपनी तीव्रता देखावें अपने को मारडालें ॥

पकड़ा जाना औलाद मुनेज़िके पुत्र का चोर जाना बंधुआ होकर अमीर की आज्ञा से प्रतिष्ठा रहित होकर नौशेरवां के समीप ॥

चौपाई ॥

लागत देर छणक नहिं वोही । करत सकल बिधि सुखबहु जोही ॥
आश त्यागि आशक जनि देई । सेवा मन लगाइ करि लेई ॥

ईश्वर की रचना का तमाशा देखना है बिपिनि में नया फूल खिला बुलबुल रूपी कलम यों चहकता है ईश्वर की कृपा से साहब क़िरांभी वहां आपहुंचे और उसपहाड़के ऊपर तम्बू गड़वा दिया और कहा कि यहां की वायु से कुछ मन तनको बल प्राप्त होता है और यहां के बास करनेसे मन भटकताहै एक सप्ताह इसी ठौर पर मुक़ाम रहे और इसी ठौर कुछ दिन डेरा रहै सबोंने अंगीकार किया कि बहुत अच्छाहै जो हुक्म आपका हक़ीम अक़लीमून ने अमर से कहा कि यह चराई का स्थान है कि तुम शिकार का सामान लेजाओ और एक हरन का तुम शिकार कर लाओ उसके कबाब की बास अमीर को सुंघावो ईश्वर के अक़बालसे हमेश: अमीरको बल होगा पीछे उसके हम तुम साथ खावें अमर को आज्ञा होतेही कमंदगोफन लेकर वहां से चला चराई के स्थान में एक सुन्दर हरन देखकर चौकड़ियों भागने लगा हिरनों ने करवटियां बदलकर चराईके स्थानसे भागकर जंगलकी राहली अमरने

एक हिरनके साथ फलांगें मारता हुआ उसके समीप पहुंचकर पहाड़ के निकट बांध इलका कमंद का इस चालाकी से हिरनके सींगों पर मारा कि वह कमंदमें फंसकर अपनी चौकड़ी भूल गया अमरने उसके चारों पांव बांधकर एक पत्थरके तले राहसे अलग दबादिया और आप पहाड़ के देखने के जा बैठा देखे ते एक तम्बू ऊपर जोतना है उसकी शोभा बादशाही तम्बू के समान झलक रही है और दो आदमी सोने चांदीकी चिलमें और आफताबा लिये खड़े हैं किसीके हुक्मके देखते हैं अमर एक हाथ के झुलाता और पावोंसे लंगड़ाता उनके पास जाकर खड़ा हुआ और अति दीनता से उनसे पूछने लगा कि क्यों भाई यह डेरा किसका है और आप कौन हैं और आपके सिपुर्द कौन काम है वह बोले कि यह डेरा मलिका मेहरनिगार का है हम उसके सेवक हैं उसकी आधीनता और आज्ञा कर लाने का हमारा काम है पहिले हमजा नामी एक मनुष्य अर्बवासीसे मलिकाका विवाह ठीक हुआथा सो वह लंधौरके हाथसे मारा गया उसका मनोर्थ पूर्ण न होने पाया कि वह बिचारा मरगया यद्यपि मलिकाने अपने के अति दुखित किया और बादशाह भी सशोक है परन्तु मौतसे किसी का कुछ बल नहीं चलता बख़्तक दुष्ट ने बादशाह के समझाबुझा के मलिका के औलाद गुर्जवां के पुत्र कैकाबसी के दिलवायदिया है और वह विवाह करनेके हेत अपने साथ जाबुल के मलिका के लियेजाता है मलिकासाहबा ने बुजुरुजमेहर से सुना था कि आजके चालीसवेंदिन तुम साहबक़िरां के मार्गमें पावोगी उससे मिलापकरके आनन्द उठावोगी इसनिमित्त से चालीस दिवसका क़ौलकरार करलिया था कि जबतक दिन न बीतिलेवें तबतक वह तम्बूमें न आनेपायेगा सो आज चालीसवांदिन है जो शामतक साहब क़िरां यहां पहुंचे ते मलिका जीवेगी नहीं ते जिससमय रात के औलाद तम्बूके निकटतक पहुंचेगा मलिका विषकी पुड़ियां फांकजायगी जो हाथमें लियेबैठी है अफसोस मलिका कहती है कि उसने अभी कुछ नहीं देखा है नाहकमें जान देती है अमरने कहा कि बाबाईश्वर का स्मर्णकरे आश्चर्य क्या है जो साहबक़िरां आजही आपहुंचे सब भांति ईश्वर मलिका का मनोर्थ पूर्ण करे फ़क़ीरका तुम से इतना सवाल है कि मेरा एकहाथ और एक पांव सुन्नहोकर रहगयाहै वैद्यने बताया था कि जो सोनेरूपे की चिलमची और आफ़ताबे से हाथ पांव धोवेगा ते तेरा हाथपांव अच्छाहोजावेगा मुझको ते कहां प्राप्तहोता कि यह सेवक करता परन्तु जानपड़ा कि कुछदिन अभी जीनेके शेषहैं जो तुमऐसे साहब मनुष्यों के हाथ में चिलमची और आफ़ताबा देखपड़ा अपने जीने का कुछ सहारा हुआ थोड़ी देर के निमित्त जो कृपा कीजिये ते आपके सामने इस नदीसे पानी भरके हाथपांव धोलूं नहीं ते फिर कहां ऐसा

औसरमिलेगा कौनऐसी बहुमोल्यकी वस्तु मुझेदेगा उन दोनों मनुष्योंने तर्सखाकर सलाहकी कि एकफ़क़ीरका काम निकलताहै और हमारा इसमें घाटाक्याहै वहीं इसेलेकर सेना से भाग नहीं सक्ता अभी हमको लौटादेगा यह सोचकर चिलमची और आफ़ताबा अमर को देदिया अमरने सलामकरके लेलिया और नहरसे पानीभरके हाथपांवधोये और उनको अपने पासरक्खा उनलोगों ने कहा कि खावोभाई अब तुम्हारा कामनिकलगया अब चिलमची आफ़ताबा हमको देदो अमर एकफलांग मारकर वहांसे बोला कि मैं ऐसानिर्बुद्धी नहीं हूं कि लेकर उलटपलट करूं और अपनी दवा तुमको देदूं हमने मानलिया कि जोमैं इससमय अच्छाहुआ जो इस बीमारीने फिर मेरेऊपर आकर छेंगदिया तो मैं तुम को कहां पाऊंगा और यह चिलमची आफ़ताबा किससे मांगता-फिरोंगा यह कहकर औलाद के तम्बूके ओर भागा उन दोनोंने पीछा किया अमर भला उनको कहांमिलता था हवाहोगया कहींकाकहीं पहुंचा औलादके तम्बूमें जाधुमाछलकी चादरबिछाकर पण्डितकी सूरत बनकर पांसालेकर बैठा उनदोनों मनुष्योंनेउसके आसपास भीड़देखकर अपनेमनमें कहा कि इसके पण्डितावकापांसा फेंकवाइये इसका ज्योतिष देखिये और चोरका ठिकाना लगवाइये पासजाकर खड़ेहुये और उसका हालदेखने लगे कि जोकोई उसमें पूछता है वह उसके मनकाभेद वर्णन करता है यह बड़ी आश्चर्य की बात करता है यह भी जाकर बैठगये अपना समाचार उससे पूछने लगे उसने कहा कि तुम्हारे कोई बरतन जातेरहेहैं और वहदोनों चांदीसोनेकेहैं वहबात सुनकर अत्यन्त उसका बिश्वासमाना और आपसमें सलाह करनेलगे तेहिकेपीछे एक तो अमर के पास बैठारहा और दूसरे ने मलिका के पास जाकर प्रार्थनाकरभेजी कि सेवक कुछ प्रार्थना कियाचाहताहै और बहुत अवश्यकामहैमलिका तो रातकी राह तकरही थी कि जब शामहो मैं विष हलाहल खाऊं इस जिन्दगी से छुट्टीपाऊं गुलामकी यह बात सुनकर शीघ्र उठखड़ीहुई कि कदाचित् कोई खुशीकी बातसुनावे उस प्यारेका समाचार बतावे पर्देसे लगकर पूछा कि क्याकहताहै कोईखबर अच्छीलायाहै उसने प्रथम हाल चिलमची और आफ़ताबे का वर्णनकिया उसके पीछे पण्डित का हाल बताया मलिका अत्यन्त बुद्धिमानथी मन में सोची कि इतनीशक्ति सेवाय अमर के किसीने नहींपाई है कि मेरे डेरेके निकट इसचालाकी से वस्तु लेकर चलता होजाय और सहस्रों मनुष्यों की आंखमें धूलझोंक कर चलदे और आश्चर्य नहीं है कि वहां पण्डित की भी सूरत बनाहो यहभी तमाशाकिया शीघ्र आदमीपर आदमी भेजकर अमरको बुलवाया और एककिनारे में चिलमन के निकट उसे बैठाला और कहा कि ऐ पण्डित मेरे मनका भी तो कुछ हालकहो अमरने कहा कि साहब मैं

बिनामुंहदेखे कभी नहीं किसीका भी हालकहताहूं और पर्देमें किसी का हालकहनामैंनेनहीं सीखाहै मलिकाने विचारकिया किआखिरआज मरना है यह बूढ़ा मनुष्य मुझे देखेगा तो क्याहोगा किसपर मेरा भेद विदितहोगा पर्दा उठादिया और अपनी सूरत दिखादी अमर ने पांसे मेहरनिगार के हाथमें देकर कहा कि आप पांचसौको हाथमेंलें और उनशकलोंपर फेंकें मैं शकलोंका हाल देखकर आपका मनोर्थकहदूंगा और विचारके हाल बतादूंगा मलिकाने जो पांसेके चिन्ह देखे तो पंडित के पांस न पाये औरहो कुछ बाहीतबाही पांसे दृष्टिपड़े क्योंकि मलिका तो इसगुण में बुजुर्चमेहर की चेली थी किन्तु खामसाधे रही कि देखे क्या करता है इसकी आज्ञाकैसी है पांचसौको जो फेंका अमर ने सब आदिसे नेहबताना आरंभकिया और कहा कि आज आपको हमजा को खबरमिलेगी खुशीका समाचार सुनाईदेगा मेहरनिगार ने अपनी बुद्धिसे जाना कि यह अमर है यह बही छली रंगकररहा है हाथबढ़ा कर उसकी बनीहुईदाढ़ी को जो ईंचातोदाढ़ी अलगहोगई अमर की सूरत दिखाईदी मलिका अधीर होकर गलेसे लिपटगई धाहें मारकर रोनेलगी और पूछनेलगी कि सचकह अमीर मेराजीवनाधार कहांहैं अमरने कहा कि अमीर आज सबेरे से इसीपहाड़के तले तंबूगाड़े हुये हैं ईश्वरकी कृपासे अच्छे हैं परन्तु आपके शोकमें ग्रसितहैं ऐसा सुनकर मलिका तो मनो फूले न समाई चाहती थी कि अमीर का हाल पूछे और अपनीबीती कहै कि इतने में आदमीपर आदमी डेवढ़ीपर पहुंचे कि पण्डितको विवाहकी सायत देखनेकेहेत औलादने बोलाया है सब सामग्री विवाहकी इकट्ठाहै केवल इसी पण्डित का मार्ग तकरहा है अमरने कहा कि अब आपबेफिक्ररहें चैनसे बैठें देखिये तो इसविवाहके बदले कैसा औलाद को दुखित करता हूं उनजातउजागर के साथ क्या२ करता हूं यह कह कर बिदा हुआ मलिका ने खिलत बिदाकी और बहुत से रुपये कृपाकिये अमर वहांसे लेकर चला और औलाद के पास पहुंचा देखा कि एक अग्निका पुञ्ज सजा सजाया जवाहिरकी चौकीपर बैठाहै और विवाहकी सामग्री उसके आसपास धरीहैं औलादने पहले पूछा कि मलिकाने तुझे क्योंबुलायाथा वहबोला कि एक हतककी जिंदगी पूछतीथीं और बहुत अफ़सोस उसका करतीथीं मैंने कहदिया कि वह मरगया और आप को औलाद मुजर्रा से बहुत फलमिलेगा पहिले तो राजी न थीं परन्तु मेरेकहने सुननेसे राजीहुई है यहबात सुनतेही औ- लाद बहुतकृत कृत्यहुआ और मंगलाचार होनेलगे अमरको भारीमोल की खिलअत देकर पूछनेलगा कि विवाह कबकरूं उसचन्द्र बदनीसे कब मिलाप करूं अमर ने कहा कि जितनी शोघ्रता इसमें होसके कीजिये औलाद इसबातसे औरभी खुशहुआ एकथैलीमोहरोंकी और अमरको दी

अमर उसको लेकर असीस देने लगा और कहने लगा कि सेवक के चार लड़के हैं एक तो गदा अच्छी चलाना जानता है इसका तब में दूसरे को नहीं समझता है और दूसरे ने पटेबाजी में अपना दूसरा नहीं रक्खा और तीसरे को ढोल खूब बजा आता है और चौथा सहनाई बहुत अच्छी बजाता है जो आप उनका तमाशा देखें तो बहुत प्रसन्न होवें औलाद ने कहा कि कल प्रातसमय तुम अपने सब कुटुम्ब को हमारे पास भेज देना अलबत्ता यह तमाशा देखने योग्य है कि तेरा परिवार भी गुणी अपने गुण में होगा कि तू आप भी होशियार है अमर उससे बिदा हुआ और पहाड़ के तले आकर अपने साधारण भेष में होकर हिरण को हकीम अक़्लीमून के पास लाया उन्होंने मार के कबाब को बू अमीर को सुघाई उससे शरीर अमीर का बहुत प्रसन्न हुआ और अमर सीधा राही हुआ लन्धौर के पास गया राह में मुक़बिल से जो भेंट हुई उससे कहा कि तू आदी को लेकर लंधौर के तम्बू में बेगि आ बादशाह लन्धौर ने पूछा कि ख़ाजे किधर आये क्यों इतना घबराये हो बोला कि आपही के पास आया हूं कुछ हाल अपना कहूंगा आप जानते हैं कि साहब क़िरां मलिका मेहरनिगार पर जान देते हैं और उसके निमित्त यह सब कष्ट अपने शिरपर लेते हैं अफ़सोस है कि आप के होते मलिका को कोई दूसरा लेजाय और अमीर उसके नेह में गल खाय यह कह कर सब हाल बयान किया और कहा कि पहाड़ के तले उसका डेरा गड़ा है और वहां सामान विवाह का इकट्ठा है शाम तक वारा न्यारा है लंधौर इस वृत्तान्त को सुनते ही आग बबूला होगया गदा लेकर उठ खड़ा हुआ कि मैं अभी उसकी हड्डी पसुलियों का भी सुरमा करता हूं इसी समय उसका शिर फोड़ता हूं अब तो उसके रक्त का पियासा हूं अमर ने कहा कि ऐसा मनोर्थ न कीजिये कदाचित् अमीर को नागवार हो उसको जीता पकड़ लीजिये लंधौर ने कहा फिर जो तुम्हारी सलाह हो मैं राजी हूं जैसा तुम्हारा मनोर्थ हो वैसा करूं इतने में मुक़बिल भी आदी को लेकर आन पहुंचा अमर ने उससे सलाह की और अपना मनोर्थ वर्णन किया उन्हों ने भी लन्धौर को बात मानी जब दिन हुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश फैलाया अमर ने बड़ा ढोल तो आदी के गले में डाला और सहनाई मुक़बिल को दी लंधौर से कहा कि आप गदा सम्हारें और अपनी सूरत एक अच्छे छोकड़े की बनाकर पट्टा हिलाता हुआ औलाद की डेवढ़ी पर गया और औलाद ने सुना कि उस पण्डित के बेटे आये हैं अपने पास बुला भेजा और तमाशा करने के हेत आज्ञा दी अमर ने ग्यारह पट्टे अपनी झोरी से निकाल कर ऐसी पटेबाजी की कि औलाद ने सभा सहित आश्चर्य किया और प्रशंसा करने लगे कि हमने अपनी उमर में कभी ऐसी पटेबाजी नहीं देखी थी और ऐसा गुरू इस गुण का देखने में नहीं

आया ओलादने बहुत कुछ इनआमभी दिया मुक़ाबिलने सहनाई और आदी ने ढोल बजाकर सभा को प्रसन्न किया उनकोभी इनआम दिया गया लंधौरभी जो गदागरी करनेलगा उसकी वायुसे लोग अखाड़ा और कुर्सीसे धरतीपर गिरनेलगे और सबओरसे एक हल्ला बसर का होनेलगा अमरने लंधौरको इशारा किया कि यही समयहै ईश्वरका नाम लेकर अपनी गदा की चोट दिखाइये और इन सबको अपना बल दिखाइये लंधौर ने हिलाते २ उस गदा को औलाद के तम्बू पर मारा औलाद दर्बारियों समेत तम्बू में दबगया और सेना से युद्ध होने लगा लंधौरने गदा उठा कर ज़ोर से कहने लगा जो मनुष्य जानता हो सो जाने और जो न जानता हो वहभी जाने मैं लंधौर हिन्दके बादशाहका पुत्र हूं उसका नाम सुनतेही बारह सहस्र सवार लंधौर के जो गांड़ा बांधे घातमें बैठेथे तलवारें खींचकर शत्रुकी सेनाके शिरपर पहुंचे दश सहस्र सवार औलाद की सेनाके मारे गये और पांच सहस्र घायल हुये और दश सहस्र बन्दमें फंसे और शेष पांच सहस्र जीव लेकर भागे अब आदी का चरित्र सुनिये कि युद्ध के समय विचार किया कि आज औलादका मनोर्थ विवाह करनेका था खाना अवश्य अच्छा २ बना होगा बावरची खाने की ओर चलकर खाना चाहिये यह सोचकर बावरची खाने की ओर चला थोड़ी दूर गया था कि खीमे के तले से एक मनुष्य को निकलते देखा ढोल उसपर रखकर उसे नीचे को दबाया तो ढोलका चमड़ा भारसे फटगया और वह मनुष्य उसके भीतर समा गया ॥

आना अमर व मुक़बिल व आदी व लंधौर का बाज़ीगरों के भेष में औलाद के तम्बू के निकट और तमाशा से युद्ध करना और पकड़ना औलाद का ॥

अति शीघ्र उसके मुखको कड़ाबन्द करके बावरचीखाने में घुसा खाना तो बहुत था ही जो जो वस्तु जीमें आई निडर होकर खाने लगा हाथ अपना मुंह अपना भरने लगा अमरने यद्यपि औलाद को तम्बूमें ढूंढ़ा परन्तु उसका खोज न मिला लाशों में ढूंढता हुआ बावरचीखाने की ओर जा निकला देखाकि आदी बड़े२ कौर खारहाहै भांति२ के भोजन निकाल कर अपने आगे रक्खा है अमर ने त्यौरी चढ़ाकर कहा कि तू हमज़ा की सेनामें प्रसिद्ध पहलवान कहलाता है और युद्ध के समय लुककर एककिनारे पेट पालनकरताहै यह समय पेटभरने का नहीं है अपनी प्रतिष्ठा काभी ध्यान न रक्खा आदीने कहा कि मैंनेभी एक आदमी पकड़ाहै मेरा खाना ठीक व उचित होगया अमरने कहा कि हम भी उसकी सूरत देखें आदी बोला कि वह ढोलके भीतर बन्दहै उठकर देखले मुझे खानाखाने दे अमरने उसकी झलक देखकर कहाकि यह एक आदमी तो लाख आदमी के बराबर है सच मुच सबसे तूने बड़ा अच्छा काम किया कि इसे जो आधीन करके फंसाया यह कहकर प्रसन्न हो

आदीसे ढोल उठवाकर लंधौरके निकट लेगया और कहा कि ऐ बादशाह मैंने एकबड़ा शिकार फसाया है लंधौर ने कहा कि वह शिकार मुझे दिखावो ज्योंही आदी ने ढोलका मुंह खोला औलाद ढोलसे निकल कर कटार लेकर लन्धौर पर दौड़ा लंधौर ने कटार उसके हाथसे छीनकर उसको धरती पर दे पटका अमर ने कमन्दसे नख सिखसे उसे जकड़ा और यह शुभ समाचार मलिका को सुनाया मलिका ने ईश्वर का धन्यवाद करके अमरको इनआम दिया अमर वहां से अमीर के पास पहुंचा आदि से अन्त तक जो हुआ था वह अमीर को सुनाया अमीर ने अमर को गले से लगा लिया और लंधौरसे कहा कि सचमुच हमारी तुम्हारी एकही आबरू है तुम न रक्षाकरो तो और कौन रक्षाकरे और ऐसे औसर में मित्रोंके सिवाय और कौन काम आवे और सहायक हो और साथ दें सुलतानबख़्त पश्चिमीके साथ मलिकामेहरनिगार का भेजना ठीकहुआ और औलाद को भी बेड़ी पहिनाकर भेजने का मनोर्थ किया नौशेरवां जैसा उचितजानेगा वैसा करेगा और एक विनयपत्र बादशाह सप्तद्वीप को इस मज़मूनका लिखा कि मैं आपकी आज्ञानुसार सरन्द्वीपमें गया और मार्ग में जैसा २ कष्ट पाया उसका वर्णन नहीं होसक्ता और मैंने लन्धौर को जीतलिया और ईश्वर ने सब भांति से प्रतिष्ठा रक्खी और उसको मैं अपने साथ लियेआताहूं आपके पास शीघ्र उसे पहुंचाताहूं और इससमय में मेरे मरने का समाचार शत्रुओं ने आपको पहुंचाया था उसको आप सत्य समझकर कुबुद्धियों की सलाह से आपने मलिका मेहरनिगार को औलाद के आधीन करदिया कुछइस असत्य समाचार कोआपने नहीं जांचा मार्गकेमध्यमें मुझसे और औलाद से मिलापहुआ उसको पकड़ के आपके पास भेजा इसमें मेरी हीनताई विदितहुई जो दण्ड आप उचितजाने इसकरें और जोलोग इससलाह में थे उनको भी जानना चाहिये और मलिकाको भी बिदाकिया अपनी धरोहरको आपके पास भेजा है ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र उपस्थित होकर विवाह करूंगा और अपने बैरियोंको समझलूंगा इसविनयपत्रको लिखकर सुलतानबख़्त पश्चिमीको दिया और गुस्तहमने मुझे विषदिया था उससे जीव तोबचा परन्तु कष्ट अधिकहुआ और मलिका के साथियोंको अलग २ खिलअत दिया को मेहरनिगार ने अमर को बुलाकर कहा कि मैंने मंगलाचारकी सभाकी तैयारीकी थी अमीरने मुझे अपनेपासतक न बुलाया और मदा यनको बिदाकिया ऐसाक्या अपराध मुझसे हुआहै कि मेरा मुंहदेखनेके योग्यनहीं रहाहै अमरने अमीरसे आकरकहा कि मेहरनिगार सशोक बैठीहै और इसभांतिसे कहतीहै अमीर ने कहा कि तुम देखतेहो कि मेरीसूरत विषखानेसे कैसीहोगईहै इसकारण से मेराजी नहीं चाहता हैकि अपना मुंह मलिकाको दिखाऊं अथवा मैं जाऊं या उनको यहां

बुलाऊं ईश्वरचाहेगा तो मदायन पहुंचतेही ज्योंकात्यों देह होजायगी वहां फिर मिललेयगें मलिकाको अच्छीभांति से समझा दो और मार्गके बीचमेंतुम हमारेपासआवो और जितनी जल्दीहोसके मुझे मिलोहकीम अबुलमूनने कहाखाजेतुम मदायन जाते हो नोशदारू लेते आना परन्तु अमीरके नामसे किसी से न मांगना नहीं कोई न देगा अमर अमीर से बिदाहोकर मेहरनिगार के पास पहुंचा और उसे समझाकर चुपका किया और डोलीपर सवार करके मदायन का मार्गलिया थोड़ेदिनों के पीछेमलिकाकीसवारी मदायनमेंपहुंची नौशेरवांअगवानी करके लेगया सुलतानबख्तकपश्चिमीको खिलअत कृपाकी और अमीरकी आरोग्यतासुन कर बहुत प्रसन्नहुआ अब अमर का हालसुनिये कि एक गंवारका भेषब नाकर एक कसाई की दूकान परगया और दो घिसुआ पैसा जिसमें अक्षरका चिन्हभी न था लेकरगया और उसके आगेफेंककर कहा कि येदोपैसेले और इसकी नोशदारूदे उसने कभी नामतक न सुनाथा वह बोला साहब नोशदारू किसजीव का नामहै उसकीसूरत कैसीहै अमर यह सुनकर एक बणियेंकी दूकान परगया औरउसके आगे पैसेफेंककर नोशदारू मांगने लगावह बोलासाहब आटा दाल चांवल लोन लकड़ी घी तेल महुआकोदो बाजराआदि मेरे यहां है जोलीजिये तो लीजिये दूकान आपकी है नोश दारू तो मेरे पास नहीहै कि जो मैं तुमकोदूं मैंने तो कभी इस वस्तु का नाम भी नहीं सुना किसी पन्सारी से पूछि ये कदाचित् उसकी दूकान पर निकले अमर पन्सारी के समीप गया वह बोला कि केराने में नोश दारू किसी पदार्थ का नाम नहीं है हमने इस नाम का केराना नही सुना देखो कुंजरेके पास हो अमर कुंजड़ेके पासआया उसने कहा कि साहब गाजर मूलीसागपात आदि चाहो तो मेरे पास है नोश दारू नाम तो किसी तरकारी का भी नही है आगे किसी की और दूकान देखो अन्तको होते २ अत्तारकी दूकान पर गया और उससे नोशदारू का नाम पूछा उसनेकहा नोश दारू हमने कहां पाई कभी देखने में भी नहीं आई परन्तु तूएक काम कर बादशाह की न्याय शाला की सांकड़ हिला हां बादशाह के दवाई खाने में मिलेगी अमर ने जाकर उस सांकड़ को खड़खड़ाया बादशाह ने बुला कर उसका हाल दरियाफ्त किया अमर ने दोपैसे जेब से निकाले और नौशेरवांके आगे रख दिये कि साहब उसकी नोश दारू चाहता हूं मोर बेटवा का संपवा काटेसि है गौंआं के बैदवा कहेसि है कि मदायन से सवा तोलानोसदारू आलादेहै तो तोर बेट-वाछिनमानीकहो जेहे सो कसाई बनियां कुंजड़ा पंसारी से पूछत फिरेउ था कोऊ नाहीं बतावत रहा आज एक मनई से वाटमें जो भेट भई वह महिका कहेसि कि पादशाह के लगे मिलि है सो मैं तुम्हारे

पास हाज़िर भया हूं खामिन्द के चरनन लो पहुंच गया हूं यह टकौना लेउ श्रौर तीन मिस काल नोशदारू श्रामोहि का देउ माेल तोल जोख में कम होइ है ते। काम न निकसि है मोरे दामो जैहैं सो मैं पूरेतीन मिसकाल लेहैं। नहीं तो दाम न देहैं। बादशाह सभा समेत उसकी बातें सुनकर बहुत हंसे श्रौर उसकी सकल देख कर बहुत प्रसन्न हुये श्रौर कहा कि पैसे उठा ले हुजूर से नोशदारू तुझे कृपा होगी श्रमर बोला कि साहब मैं ग़रीब मनई हैां हैं बे क़ीमत कैसेउ नाहीं लेति हूं तब पाव छोड़ैां से मुफ़त २ नोशदरूश्रा कबले हैां नाहक में श्रापका यह सान श्रपने मूड़ पर धरैां बादशाहने बुज़ुरचमेहरसे कहाकि इसको खज़ाने में ले जाकर तीन मिस काल नोशदारू देदो श्रौर किसी भांति से इस के देने में कमी न करना बुज़ुरचमेहर श्रमर को साथ लेकर ख़-ज़ाने में श्राया श्रौर संदूक को खोलकर एक जड़ाऊ डब्बा खोला श्रौर उसके ऊपर की ढट्टी खोली उस में से तीन मिसकाल नोशदारू श्रमर को दी श्रौर तीन मिसकाल लेकर श्रपनी जेब में रक्खी इस कारण से कि रमल के विचार से गुस्तहम का ज़हर देना श्रमीर को जान पड़ा था यह श्रच्छी भांति मालूम था कि श्रमर नोशदारू मांगने को श्रावेगा श्रमर ने मार्ग में बुज़ुरच मेहर से कहा कि वाह हज़रत बादशाह के नोकर होकर साहब चोरी भी करते हैं ऐसे इज़्ज़त दार मनई होकर कोई दमड़ी पर नियत बहंकावत है नोशदारूश्रा जो चोरा के टेंटे में रक्खो है। सोमों का दे दो इसमें भलाई है नाहीं तो बे इज़्ज़त होइ हैा बुज़ुरचमेहर ने इस बाई के डर से डर कर श्रमर को दे दी मनमें वि-चार किया कि यह गंवार श्रादमीहै जो भेद विदित करे तो कुछ बात न बनैगी श्रब बख़्तक का हाल सुनिये उसको तो श्रमीर का विष खाना मालूम था श्रत्यन्त घबरा कर मन में सोचा कि बुज़ुरच मेहर ने श्रवश्य हमज़ा के हेत नोशदारू छिपा कर रक्खी होगी श्रपनी श्रसालत का मार्ग जान कर बाद शाह से प्रार्थना की कि बुज़ुरच मेहर को देखिये श्रौर नोशदारु को देखिये बादशाह भी उस के कहने में श्रागया जो श्रावश्यकता थी तो हुजूर से मांग क्यौं न ली एक गंवार को हुजूर ने कृपा की क्या इन को न मिलती कठिन श्राज्ञा दी बुज़ुरच मेहर का झारा लिया जावे बादशाह की श्राज्ञानुसार काम किया गया परन्तु कुछ भी न निकला उसी समय बुज़ुरचमेहर को खिलश्रत दीगई श्रौर बख़्तक पर जुर्माना किया गया श्रौर बुज़ुरचमेहर से बहुत कुछ लल्लो पत्तो की बातें कहीं उस समय बुज़ुरचमेहर को मालूम हुश्रा गवांर जो नोश-दारू ले गया है वह श्रमर था श्रपने मनमें बहुत प्रसन्न हुश्रा कि श्रमर की बदैालत चोरी की ज़िल्लत से तो बचे श्रमर ने नगर से बाहर नि-कल कर श्रपना साधारण भेष बनाया श्रौर श्रमीर के श्रोर का मार्ग

लिया यहां अमीर एक दिन निर्व्बलता के कारण बहुत रोये और अपने
आपको भला बुरा कहने लगे कि इस जीने से मरना अच्छा है रात के
समय उसी शोक में हज़रत इबराहीम साहब ने आकर अमीर को
ढाढ़सदी अमीरने प्रातःकाल उठकर स्नानध्यान परमेश्वरका किया और
पलंग पर तकिया लगाके बैठे कि इतनेमें अमर पहुंचा अमरने अमीर
को न पहिचाना और दूसरा कोई जानकार पूछनेलगा कि आपकौनहैं
और कहांसे आयेहैं आपको मालूमहै कि हमजा कहांटिके हैं अमीरने
कहा कि मैं औलादका भाई हूं बन्दसे छोड़ाने के हेत आया हूं उसको
तो न पाया परन्तु हमजाको संसारकी बन्दसे छोड़ाया ज्योंहीं यहबात
अमर ने सुनी झटपट कटार निकालकर दौड़ा अमीरने खंजर अमरसे
छीनकर गलेसे लगालिया और कहा कि मैं हमजा हूं आपने नाहक में
इतना क्रोधकिया अमर ने नौशदारू हकीमअशालीमुन के आगे रखदी
और उसके लानेका हाल कुछभी न कहा वह अमीर को कईमासे रोग
खिलानेलगे कि उससे कुछ अमीर को बल व तन ठिकानेहुआ अब थोड़ा
हाल बहिराम मलकाकान चीन का सुनिये कि चार जहाज़ जो उसके
पास तूफ़ानमें अमीरसे अलग होगये थे छःमहीने तक समुद्र में हलचल
पड़ारहा सिंधुके किनारे लंगर जहाजों का देकर अनाजआदि लेने को
नियतहुई खानाकेहेत सूखेमेंउतरकर थोड़ी दूरगया देखा कि एकबड़े हुज
तले एकतख़्त पर कमान और हज़ारमोहरों का तोड़ाधरा है बहरामने
लोगोंसे पूछा कि यह कमान और तोड़ा क्यों चौकी पर रक्खाहै निग-
हबान बोले कि सरकशहिन्दी जो यहां का बादशाह है उसका भाई
कोहबख़्श अत्यन्त बलिष्ट है उसने परीक्षा के हेत कमान मोहरों समेत
रखवादी है और यही सूरत बलकी परिक्षालेने के हेत रक्खी कि जो
कोई इस कमानको चढ़ादेवे मोहरों का तोड़ालेलेवे बहराम ने विचार
किया कि यह माल ईश्वर का दियाहै इसको न छोड़नाचाहिये चौकी
के पास जाकर कमान का चिल्लाचढ़ाया और उसके गोशेको कानकीलौर
तक खींचकर रक्खा और तोड़ा उठाकर अपने आदमियोंको दिया और
मनोार्थ चलनेका किया निगहबानों ने यह हाल कोहबख़्शहिन्दी से कहा
कि एकसौदागरने आपकी कमानपर चिल्लाचढ़ाया और तोड़ामोहरों
का अपने लोगोंको सौंपा दैवयोगसे एकमक्कार भी यह तमाशादेखताथा
कड़ीकमान के तीरके समान सरकशहिन्दी के निकट पहुंचा और यह
सब हालबयान किया सरकशहिन्दी ने आज्ञा की कि अभी जावो और
उसको हमारे पासलावो आज्ञापातेही लोग चिल्लातेहुयेदौड़े कि सौदा-
गरको कमानसमेत इसनगरके हाकिमने यादकियाहै और उसे देखना
चाहता है बहराम मर्दों के समान सरकशहिन्दी के पास पहुंचा सर-
कशहिन्द अत्यन्त शिष्टाचार समेत आगे आया और उसके आदमी भी

कमान लेकर पहुंचे और अधिकारी भी उपस्थित हुये सरकशहिन्द ने बहराम से पूछा कि इस कमान को तुम्हींने चढ़ाईहै बहिराम ने कहा कि हां ईश्वर की कृपासे मैंने चढ़ाईहै सरकशने कहा कि एकबार मेरे आगेभी खींचिये अपनाबल दिखाइये और देखनेवालोंकोभी यहीइच्छा है बहराम ने कमानको लेकर इस बलसे ईंचा कि कमान टूटगई सरकशने क़दरदानी की राहसे उसे बैठने की आज्ञा दी बहराम कुर्सी सानहली पर जो सरकश के निकट पड़ीहुई थी बैठगया बहराम का बैठना हुआ कि इतने में कोहबख़्त शेरबबर के समान पहुंचा कमान को टूटा और बहराम को कुर्सी पर बैठा देखकर आपेमें न रहा कटार खींचकर यह कहताहुआ दौड़ा कि एकतो तूने मेरी कमानतोड़ी दूसरे हमारी कुर्सी पर बैठा तेरी यह प्रतिष्ठा कहांसे हुई बहरामने कोहबख़्तका हाथपकड़कर कटारछीनलिया और कमरमें हाथडालकर चारों शानेचित्त पृथ्वीपर गिरादिया और कहा कि अब क्यामनोर्थ है इतनीही शानथी अथवा कुछ अधिकबल था सरकश ने बहराम से उज़र किया और कोहबख़्त का अपराध क्षमा करवाया और कहा कि तुम को अपने दीन की क़सम है कि तुम कौन हो और क्या नाम है और किस देशमें रहते हो बहरामने कुल हाल अपना आदिसे अन्ततक कहा कि सरकश ने अमीर का नाम सुनकर एक आहसर्द भरी और कहा कि मुझको हमज़ाके देखनेकी बड़ी इच्छा थी परन्तु ईश्वर गुस्तहमका बुरा करे कि उसने ऐसे जवान प्रसिद्ध पहलवान को मारा और उसकी जवानी को धूल में मिलाया बहराम यह बात सुनतेही चिल्लाकर अचेत होगया जब सुगन्ध सुंघानेसे उसे चेत हुआ उसने पूछा कि यह समाचार ब्यौरा वार कहिये इसको अच्छी भांति कौन जानताहै किसने आपको यह हाल बतायाहै सरकशने कहा कि गुस्तहम यहां आया था उसने यद्यपि मेरे मिलनेकी इच्छाकी परन्तु मैंने उसे अपने यहां आने न दिया उसनेयहांसे लंधौर और हमज़ा के शिरको एक मित्रके हाथ नौशेरवां के पास रवाना किया और यह फिर नहीं जानपड़ा कि आप कहांको गया परन्तु मुझको उसकी बातका विश्वास नहीं कि वहभी बड़ा झूठा मालूमहोताहै इसनिमित्त मैंने कईमनुष्यसरंदीपकी ओरभेजेहैं कि ठीकर हाल मालूम करें और इस हालसे मुझे इत्तिला दें बहरामने कहा कि आपने जो नाम गुस्तहमका लिया मुझे विश्वासहुआ कि उसकी दुष्टताको खूब जानता हूं निश्चयकर्के उस खलने अमीर को छल से मारा होगा वह उसके मारनेके उपायमें था अवश्य औसर पाकर कुछ न कुछ छल किया होगा अब मैं यहां एक क्षणभी ठहर नहीं सक्ता मदायन को जाऊंगा और इसी चार सहस्र सवारों से नौशेरवां की सेना को न मारडालूं और नौशेरवांका गलाकटारकी नोकसे न पारकरूं तो संसार

नेकिसोको मुंह न दिखाकर विष खाकर या कटार मारकर मरजाऊंगा जब सरकशने देखा कि बहिराम नहीं ठहरता शीघ्र छ: महीनेके निमित्त ग़ल्ला जहाजों पर भरवा दिया और बहराम को बिदा किया बहराम रोता पीटता जहाजपर सवार हुआ और जहाजोंके लंगर उठवादिये छ: महीनेके कालमें जहाज बसरेमें पहुंचे बहराम चार हजार सवारों समेत सूखे २ मदायन की ओर राहली और सेना को आज्ञा दी कि जो गांव नगर आदि मदायन के आधीन मिलें उनको लूट लो कोई स्थान बसा हुआ बचने न पावे सब को नष्ट कर दो यह ख़बर नौशेरवां को पहुंची कि बहराम ने अमीर के मरने का हाल सुन कर लड़ने भिड़ने पर कमर बांधी और तमाम गांव नगर जो मार्गमें मिलते जाते हैं उनको उजाड़ता हुआ चला आता है नौशेरवां ने फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्र को भेजा कि तू जाकर बहराम को समझा दे कि अमीर जीते हैं मरने का बताने वाला बहुत झूंठा है शत्रुओं ने झूंठी ख़बर उड़ाई थी तुम को उचित है कि सीधे होकर और सत्य मानकर हुजूर में आवो और अमीर की ख़बर बद से किसी भांति शोक न करो फ़ौलाद गुस्तहम का पुत्र मार्ग के मध्य में बहराम के सामने दो चार हुआ कि साहब क़िरां जीता है पर वह कब मानता था फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्र को देख कर जल कर बोला कि ऐ दुष्ट तेरी बातें ये हैं और तेरा बाप यह कुछ कर बैठा है तेरी बात क्यों कर मानें जो कुछ वीरता रखता हो तो मैदान में आ तू भी क्या याद करैगा कि किसी से काम पड़ा था फ़ौलाद गुस्तहम के पुत्रने लाचार होकर सफ़ बांधी और मुक़ाबिला के समय उसने एकभाला बहिराम की छातीपर मारा बहिरामने हाथ बढ़ाकर भाला उसका छीन लिया और वही भाला उसकी छाती पर मारा खनककर घोड़ेको जो जांघों में दबाया फ़ौलाद अपने घोड़ेसे अलग होकर नट की भांति भाला के साथ उतरता हुआ चलाआया बहराम ने देखा कि फौलाद का काम तमाम हो गया भाला को हाथ से फेंक दिया फौलाद की सेना ने धावा किया बहराम ने उन्ही चार सहस्र सवारों से सब को मार डाला कुल पांच सौ आदमी दस सहस्र सामि नियों में बच रहे वे अपनी जान लेकर भागे और नौशेरवां से जाकर ब्यौरा समेत सब हाल वर्णन किया नौशेरवां को अत्यन्त शोच हुआ कि क्या उपाय किया जावे कि इतने में बहराम चार सहस्र सवार लेकर किला के निकट पहुंचा यद्यपि लोगों ने कहा कि अमीर ईश्वर की क्षमा से जीते हैं बादशाह से तू इस समय ढिठाई करता है अमीर सुन कर तुझ से खफ़ा होंगे परन्तु उसको तो धैर्य्य न था समझा कि नौशेरवां अपने को बचाता है लाचार होकर किला की फसी लों पर से लड़ाई होने लगी हथियार बजने लगे बहराम चालाकी करके

क़िलेके तले पहुंचा नौशेरवां अत्यन्त शोकयुक्त था कि बहराम थोड़ी देरमें क़िले का दर्वाज़ा तोड़कर भीतर आवेगा मुफ़्त में सब मारे गये अभी तक बहराम क़िले पर गदा न लगाई थी कि नौशेरवां की दुआ ईश्वरने अङ्गीकारकी अमीरके आगमनका धुरिहर दूरसे देखपड़ा और सवारों का परा दिखाई दिया घिरेहुये क़िलेमें जो थे सब चिल्लाये कि साहबक़िरां आये बहराम ने जो फिरकर देखा तो सचसच अलम अज़दहा पैकर गर्दके ऊपर दिखाईदिया बहरामने घोड़ेको फिराकर दौड़ाया और अमीरकी रकाब को चुम्मादिया अमीर घोड़ेसे कूदकर बहरामको छातीसे लगाया और लन्धौरसे मिलाप जानपहिचानका करवा के कहाकि मेरीबाहोंका बल एक आपहैं और दूसरा यहहै और अति बलिष्ठ और सच्चामित्रहै अभी सवार न हुयेथे कि एक सवार नौशेरवां का पहुंचा अदब समेत आगे आया और सेवकाई की रीति करताहुआ नौशेरवांकी ओर से बोलाकि बादशाह सप्तद्वीपने आपको आशीर्वादके पीछेकहाहैकि इसी स्थानपर तुम आजडेराकरो कल मैं आप प्रातःकाल आपकी अगवानी के हेत आऊंगा तुम्हें अपने साथ नगर में लाऊंगा साहबक़िरां बादशाहकी आज्ञानुसार उसीस्थानमें तम्बूगाड़दिया और अपना सलामबादशाहको कहिलाभेजा जब सूर्य्यप्रकाशहुआ साहबक़िरां लन्धौर और बहराम समेत सवारहुये और बादशाहकी चौखट चूमनेके हेतचले उधरसे नौशेरवां अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेनें कोचला राहके मध्यमें बादशाहका तख़्तदेखकर अमीर घोड़ेपरसे उतरपड़े और तख़्तके पायेको चुम्मनकिया नौशेरवां नेभी अपना तख़्तरखवाकर अमीरको छातीसे लगाया और सवारहोकर मीठी२बातें अमीरके प्रसन्न करनेकेहेतकहीं और नगरकीओरचला और वहांजाकरकहा कि अमीर कीसेना अगली भांति तिलशाद काम पर उतरे जब कैख़ुसरोके तख़्तपर नौशेरवां और अमीर सभा न्यायशालामें पहुंचे बादशाहगद्दी शाहीपर बैठगया और अमीर उसी भांतिसे रुस्तमके दंगल पर बैठे नौशेरवां ने बहुत कुछ अमीरपरसे उतारकर पुण्यकिया और सभाके उठनेके समय अमीरको ख़िलअत कृपाकी अमीर तो ख़िलअत लेकर तिलशाद काम पर पहुंचे और वहां जाकर आनन्दमय सभा रचित की और अनन्द बधायेहोनेलगे बख़्तकबदबख़्तने नौशेरवांसे प्रार्थनाकीकि जब हमज़ाअकेला था तब तो एक २ को आसान उसे ख़ताहोतीथी सबका दम निकलता था अब तो लन्धौर और बहराम उसकेदो मित्रहैं उससे कौन आंखमिला सक्ता है मुझको डरलगता है कि कहीं तख़्त न छीन ले और आपको पराजितकरे बादशाह बख़्तकको इस बातसे अत्यन्त डरगया और कहने लगा कि फिर इसका उपाय क्याहै बख़्तकने कहा कि एक२ की सफाई करलीजियेकल जिससमय हमज़ा आप के पासआवे तो उससे कहिये कि मैंने

लम्बौर का सिर तुमसे मांगा था यह नहीं कहा था कि उसको जीता लेआवो और मेरी आज्ञानुसार काम न करो नौशेरवां ने कहा कि इसबात के कहने को तुझी को अधिकार दिया है जिसभांति से उचित जानना उसभांति से हमशा से बातें करना उससमय तो बखक खुशीव खुशी अपने घरमें आया और अतिकठिनता से रात काटकर प्रातहो-तेही सभामें आया जब प्रातःकाल अमीर दर्बारमें आये अभी कोईबात न हुईथी कि बखकने कड़ाईसे कहाकिऐ अमीरबादशाह यह फरमाते हैं कि मैंने लम्बौरका शिरतुमसे मांगाथा न कि यह कहाथा कि लंधौर को मेरे सिरपर लावो और एक उपाधि मेरे नगर में लगावो कि यह कहना उसका अमीरको बुरामालूम हुआ कहाकि मनोर्थ आधीनता से है या मारनेसे सिरकाटने को यह सेनासमेत आधीनहै बखकने कहा कि आधीनतासे कुछकाम नहीं इसका अच्छाअंजाम नहींहै आजइसने चरणोंपर सिररक्खा कलको फिर अभिमानकर फिरजाय तो उस समय क्याहोगा अमीरने कहा कि मेरे जीतेजी उसको क्याशक्ति है जो आपसे फिरजाय अगर बादशाह की यही मरजी है तो उसका सिरहाजिर है मुझे बादशाह की खुशी सबभांतिसे मंजूरहै बखक बोला कि बादशाह कोतो उसका सिरहीदरकार है बादशाह कब उसकी सूरत देखसक्ताहै और यह मैं क्योंकर कहूं कि लम्बौर आपके कहने से सिरदेदेगा और देनेमें किसीभांति से इनकारनकरेगा अमीर ने कहा कि यह क्याबात है जो आज्ञा उसेदूंगा तो शीघ्र सिरदेनेपर उपस्थित होजायगा और तलवार के तले सिरझुकादेगा बल्कि अपनेहाथ से अपना सिरकाटकर देदेगा बखकबोला कि फिर देरक्याहै लम्बौरको बुलाइये जो कहना हो सोकहिये साहबकिरां ने अमरको आज्ञादी कि लम्बौर को बुलालावो अमर लम्बौरके निकटआया और कहा कि चलिये बादशाह ने आपके मारेजाने को आज्ञाकीहै अमीर ने बादशाह की आज्ञानुसार आपका सिरकाटने के हेत बुलायाहै लम्बौर यहसुनकर उठखड़ाहुआ और यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

सजननेह मदमस्तहूंसुधि माहीं कछु मोहिं।इस मारगमें जायशिर कछुचिन्ता नहिं होहि ॥

मुझे साहब किरांकी खुशीकी चाहना है कि मुझे अब शिर शरीर पर भारी जानपड़ता है चौपाई ॥

एकलालसा यह मन माहीं। चल तू बेगि वधिक के पांहीं ॥
कांधपै अधिक बोझ शिरकेरा। सधत नहीं पुनि होतअबेरा ॥

और अब तू मेरे हाथ रूमाल से बांधदे और बादशाह की सभाका राहले अमर लम्बौरकी बातें सुनकर गलेसे लिपट गया और बीरताकी बातें कहनेलगा कि ऐ बादशाह लम्बौर किसको इतना बलहै कि तुमको

बुरी दृष्टि से देखसके मेरे साथ आइये तुम्हारे शिरके साथ पहिले तो हमजाका सिर है उसकेपीछे यह जितने पहलवान हैं उनका और मेरा सिर है आप अच्छीभांति से हाथियार बांधकर और हाथी पर सवार होकर चलिये बादशाह लन्धौर हथियारबांधकर हाथीपर सवारहोकर और गदा कांधेपर धरकर बादशाह की सभामें उतरपड़ा अमर दर्बार में जाकर अमीर को खबरदी कि लन्धौर हाजिर है उसे सबप्रकार से अमीर की खातिर मंजूर है यहां लन्धौर गदाको हवापर फेंकने लगा और हाथों पर रोंकनेलगा चारोंओर से शोरहुआ कि जो अभी गदा हाथसे छूटगई तो दशबीश मनुष्य बे अपराध मर जांयगे सैकड़ों की हड्डी टूटि जांइगी बादशाह ने गुल सुन कर कहा कि भलाई तो है यह हल्ला गुल कहां होताहै लोगोंने सब हालबताया बादशाह चुपहोरहा अमीर ने कहा कि लन्धौरको बुलाओ अमरजाकर बुलालाया लन्धौरने अमीरसे प्रार्थना की कि क्याआज्ञा होतीहै आपने क्योंयादकिया है अमीर ने कहा कि कि बादशाह आपका सिर चाहतेहैं तुम्हारी ओरसे बदगुमा न होगये हैं लन्धौरने कहाकि मैं आपका आज्ञाकारक हूं जो आपकी मरजीहो मैं हाजिर हूं अमीर ने कहा कि अच्छा तुम हजरत से बिदाहो और जिलोखान: के आंगनमें सिरझुकाकर बैठो जिसको बादशाह की आज्ञा मिलेगी वह तुम्हारा सिरकाटने को आवेगा लन्धौर उसीतरह प्रणाम करके जिलोखान: के आंगनमें गया और गदासे तकिया लगाकर बैठा अमीरने आदीको आज्ञादी कि लन्धौरका शिरकाटलाओ आदीने लन्धौर से कहा लन्धौरने सिरझुकादिया और यह दोहा कहनेलगा ॥

दोहा ॥

अलगशीशकरदेंगितू चित न करहु भ्रमजाल। पूर्णकरूं इतिहासयह नहीं कलेशबिकराल ॥

और कहाकि धन्यवाद है उस ईश्वरका मेरा शिर अमीरकी आज्ञा से काटाजाता है मेरी आधीनतामें बालभरेका भेद नहीं होताहै आदी लन्धौर की आधीनता देखकर अचेत होगया और यह कहकर लन्धौर की जांघोंपर जाबैठा और कहा कि कोई प्रथम हमारा शिरकाटलेवेगा फिर लन्धौरका शिरकाटेगा अमीरने इसमाजरेको जांचकर बहरामको आज्ञादी कि तुमजाकर लन्धौरका सिर अपने हाथसे काटलावो वहभी लं-धौरकी बातोंपर भूलगया दूसरीओर जाबैठा कि हमारा सिरभी लन्धौर के शिरकेसाथहै साहबकिरांने बहरामकी बातेंसुनकर सुलतानबख़्तमग्रिबी को भेजा वह भी लन्धौर के पास आनकर बैठगया और कहनेलगा कि अमीरने अच्छी खूंरेजीपर कमरबांधीहै जो यही मरजीहै तो हमारा भी शिर इनकेसाथ है जब येबातें उनलोगोंकी बादशाहके कानमेंपड़ीं इतने में बख़्तक बोलाकि जल्लाद बादशाहोंको क्योंनहीं आज्ञा होती है कि वह जिस२ के शीसको कहिये काटलावे एकदम में क्रिया पूर्ण करदे अमीर

ने कहा तुम को अख़्तियार है जिसको चाहोभेजो बख़्तने उसीसमय एक जल्लादको आज्ञादी वह लम्भौरके शिरपर पहुंचकर पुकारा कि किसके जिन्दगीके दिन बीतगये हैं अमरने देखा कि जल्लाद बाघ को खाल का अंगापहिने कंधबन्ध लोहूसे भरा हुआ कटिके ऊपर एकखड्ग बांधे हुये एक तलवार हाथमें पकड़ेहुये लम्भौरकीओर चला अमरभी उसजल्लाद अर्थात् बधिककी पीठ पर पहुंचा कि इतनेमें एक भारी शब्द हुआ और होते २ यह आवाज बादशाहके मकानतक पहुंची देखें तो मलिकामेहर निगार व मलिकामेहर अंगेज किसी ओरसे झप्पानपर सवारआतीहैं और महलकी ओर जातीहैं मेहरअंगेज ने चितवनसे देखकर मेहरनिगार से पूछा कि यह क्याहै कुछ गुलशोरकासा तौरहै मेहरनिगार ने कहा कि यही लम्भौरहै मलिकाने ख्वाजे सरावोंको आज्ञादी कि जान तो आवो यहक्या बात है मकान पर इतना जमाव क्यों हुआ है और वहीं से सवारी धीरे २ चली ख्वाजेसरावोंसे जानकर मलिकाने कहा कि मालूम होता है कि बादशाह के शिर पर खून चढ़ा है नाहक निरपराधियों के मारनेपर तय्यार हुआहै जावो लम्भौरको हमारे पास लेआवो ख्वाजेसरा लम्भौरके लानेको गया जल्लाद रोंकने लगा मलिका ने सुनकर कहा कि इस जल्लाद के काननाक काटकर सभासे निकालदो जल्लाद तो यहबात सुनकर चुपहोरहा लम्भौरको उसउपाधि से छुड़ाकर मलिकाके मकान पर लेगये मलिका ने लम्भौर को खिलअत देकर बिदा किया लम्भौर तो बहराम व आदी व सुलतांनबख़्त प्रसन्न होकर तिलशाद कालको रवाना हुये और यह खबर खबरदारों ने बादशाह को पहुंचाई कि मलिकामेहर अंगेजने लम्भौरको बुलाकर खिलअत दी और बिदाकिया और उसे जीदानदिया नौशेरवांने कहा मलिकाने यहकाम बेसमझेबूझे नहीकिया होगा कोई बात इसमें विचारी होगी अन्तमें भेद खुलेगा यह कहकर कचहरीबरखास्तकी और महल में पहुंचे ॥

विदितहोना मरना मलिकामेहरनिगारका सक़ारग़ारवानो मावस्तककी जवानी और यह हाल सुनकर अमीरकी परेशानी और मारना अमरकासक़ारग़ार को और पतों में छिपाना उसी बदकार को ॥

समयका समाचार बड़ाअद्भुतहै नये २ रङ्ग दिखलाताहै उसीमें यह इतिहास है लिखनेवाले का यह बयान है कि जब बादशाह घरमें पहुंचे मलिकामेहर अंगेज से पूछा कि तुमने क्या सोचके लम्भौरकी जानबचाई मलिका बोली पहिले तो लम्भौर आपका अपराधी नहींहै और यद्यपि उसे इतनाबलहै पर उसने कुछसरकशी नहींकी अमीर के लेहसे नाचार है दूसरे लम्भौर भी एक देश का बादशाह हैं बादशाह बादशाहों को इस भांतिसे नहीं माराकरते हैं तीसरे जिससमय देश प्रदेश यह खबर विदित होगी तुम्हारा विश्वास जातारहेगा तमाम दुनिया आपको दोष

देंगे तुम्हारी बातपर कोई कानधरेगा चौथे जब लन्धौर इसभांतिसें मारा जायगा हमजा सकल देशके दीपक लन्धौरके बदले बुझादेगा आपदेखते नहीं हैं कि लन्धौर हमजाकी आज्ञासे सिरदेनेको तैयारहुआ नहीं तो आपकी तमाम बादशाहत में कौन पहलवान ऐसा है जो लन्धौर का सिरलाकर आपको देता इस निमित्त मैंने खिलअतदेकर उसे बिदाकिया बादशाह सनिकाकी बुद्धिमानी देखकर बहुत प्रसन्नहुआ परंतु कहाकि अफ़सोसहै कि हमजा के मारनेका कोई उपाय नहीं निकलता है उस समय सकरगानो बख़्तककी माता वहां परथी हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि जो मुझे आज्ञाहोवे तो मैं एक उपाय करके हमजा को मारडालूं नौशेरवांने कहाकि क्योंकर तब उसने कहाकि कल आप दर्बार के बीच में हमजा से कहेंकि एक सप्ताह के पीछे तुम्हारा विवाहकिया जावेगा तुम विवाहकी सामग्रीकरो और सर्कार से भी नौकरोंको तुम्हारी सहायताकेहेत कहा जायगा और थोड़ी सेहरनिगार को छिपाकर तहखाने में बैठावेगी दोदिनके पीछेमेहरनिगारकी बीमारी प्रसिद्ध करके उसके चौथे दिन जिस समय हमजा यह बात सुनेगा कि मेहरनिगार मरगई आप मरजायगा ॥ दोहा ॥

छल युवतिन कर कठिनहै तन मन सब हरिलेइ। दोटुकड़ा मनके करेदुख नानाबिधिदेई॥

यह सुनकर बादशाह को यहमंसूबा सकरगारवानोंका पसंदआया दूसरे दिन दरबार में हमजा से विवाहकी तैयारी करने की आज्ञादी अमीर खुशर बिदा होकर अपनेस्थानमें पहुंचे और बिवाहकी तैय्यारी करने लगे और महल से सकरगारवानोंने मेहर निगार को संगला चार देकर तहखाने में बिठलाया और कहा कि बन्नो इस तहखाने से एक सप्ताह तक बाहर न निकलना बिवाहमें इसीतरहहोताहै और उसकी हमजोलियां जमाहुई दिल्लगी करनेलगीं और इच्छा विवाह के मिलापकी हुई और जो कुछ समझानाथा समझाया मेहरनिगार हर्षित हो तहखानेमें बैठी दो दिनके पीछे उसछलिन ने प्रसिद्धकिया कि मेहरनिगार बीमारहै उसके चार दिनके पीछे मकान में सब रोने पीटनेलगे कि मेहरनिगार मरगई अमीर उसकी बीमारीही सुनकर सहस्रों बीमारोंके एक बीमार होगये थे मरनेका जो समाचार सुना कटार पेटमें मारनेलगे लन्धौर व बहराम ने पावोंपर शिररखदिया कटार अमीर के हाथसे लेलिया और धीर्य्यदेकर बातेंकहनेलगे कि आजतक कोई मृतक के साथनहीं मुआहै मौतसे कुछ बसनहीं है अमीरने कहाकि माशूकका मरना आशिकको जीनानेह के विषयमें अनुचित है कुछकरो मैं अपनी जानदूंगा मुझे अब जीने से क्या काम है अमर ने देखा कि अमीर अब किसी भांति से मानते नहीं हैं बोला कि भला आप सुनते हैं कि किसी ने आपके मारने के निमित्त जो यह छलकिया हो तो मेहरनिगार तो

जीतीरहे और आप मरगये तो उसका कुछ घाटा न हो थोड़ा धैर्य्य धरिये मुझे खबरले आने दीजिये अमीर को यह बात अमर की पसन्द आई और उन लोगोंनेभी सुनकर अमरकी बुद्धिको सराहा अमर शीघ्र चलकर मलिका की डेवढ़ी परपहुंचा और अपने आनेकी मलिका मेहर अंगेज़ को खबर की सकरगार वानों ने मलिका से कहा कि इस समय अमर को महल में बुलालेना बहुत उचित है कि वह यह रोनापीटना देखकर हमजा से कहेगा हमजा सुनकर बहुत शीघ्रआपमरैगा मलिका ने अमर को महल में बुलाया जब अमर महल में पहुंचा देखा तो सबके शरीर में काले बस्त्र शोक के चढ़े हैं छोटे बड़े सब उदास हैं परन्तु थोड़ी देरके पीछे सकरगार वानों ने आकर कुछ मलिका के कानमें कहा और उलटे पावों फिरगई अमर ने सोचा कि इसमें कुछ भेद है यह सनकाने काजनहीं है इसी दुष्टा का यह छल है शाम तो होगई तमामसहल में रोने पीटनेकेकारण अंधेरा पड़ाथा अमर धीरे२सकरगारवानोंके पीछे २ चला इधर उधर देखकर एक बुढ़िया की सूरतबनगया जब वह अकेली पाई बागमें पहुंची आहट पाकर ठिठकी बोलीकि कौन आताहै अमर ने धीमी आवाजसे कहाकि मेंहीं हूं कोई दममें मलिका के बदले यम-दूत आपको लिये जाताहै जबहीं सकरगारबानोने आगे पांवधरा अमर ने कमन्द का हलका उसके गर्दन में डालकर पीछे को झिटका दिया अंटाचित होकर धरती परगिरी अमरने ऐसी गर्दन उसकी दबाई कि प्राण शरीरसे बाहर निकलगये उसको सूखे पत्तों के ढेरमें छिपादिया और आपउसकी सूरत बनकर रौसपर खड़ारहापरन्तु हैरानथाकि अब किधरको जाऊं और मलिका का किस प्रकार पतालगाऊं इतनेमें एकलौंडी मोमकी बत्ती लियेहुये फुलवारीकी ओरसे आकर बोलीकि हुआसकर-गार बानो तुम्हें देरसे मलिका साहबा बुलारहीहैं अमरने उसके उत्तर में कुछ न कहा और उस छोकड़ी के साथ २ तहखाने में गया देखे तो मलिका मेहरनिगार सिंगारकियेहुये अति प्रफुल्लितमसनदपर दुलहन बनीबैठीहै लौंडियोंसे दिल्लगीकर रहीहै और मसनदके समीपबोतल और प्याला रक्खा है फितना बानो प्याला भर २ देती जातीहै मलिका साहबकिरांका नामलेलेकर पीतीजातीहै मेहरनिगारने कहाकि सकर गार बानो तुम आजकल मुझपर बड़ी कृपादृष्टि रखतीहो पहले इतनी कृपा न करतीथी अमर बोला इसडरसे कि कदाचित आपको बदीका गुमान मेरी ओरसे होवेकि बख्तककी मांहै उस दुष्टकी भांति से बैरियों पर अदावत रखतीहोगी परन्तु आपके प्रतापसे आपके आशीर्वाद देने में तनमनसे प्रकटरहकर अलग २ पैरों से पड़ी थी अब आप मुझे अपने भलाकरनेके लिये समझिये देखियेकि शादी के सामानमें कैसी दौड़रही हूं एक दम मेरा पांव नहीं लगता मेहरनिगार ने कहा कि जो कुछ

तुमने कहा वह सत्य है अब कहो कि बरातके आनेमें कितनी देर है वहां क्या सामान होरहा है अमर ने सबको अलगकरके कहा कि कैसी बरात तुम्हारा तो महलमें रोना धोनापड़ाहै कि मेहरनिगार मरगई हमारी सेनामें भी एक बुरीगति होगईहै कि अमीरने यह खबर सुनकर अपनेको मारीही डालाथा परंतु मुझे कुछ सूझगई कि मैंने अमीरसे कहाकि थोड़ा धीर्य धरिये मैं जाकर हाल पूंछआऊं वैसाही आपको सुनाऊं ऐसा न हो कि शत्रुओंने आपके मारनेके हेत यह हालकिया हो मैंने यहां आकर उस सांपिनको मारकर पत्तोंमें छिपादिया और उसकी सूरत बन कर आपतक पहुंचा तो अबवेगिजाकर अमीरको तुम्हारी सलामती का हाल सुनाऊं जिससे उनकी जानबचे होश व हवास ठिकाने हो दममें दमआवे यह बातसुनकर मेहरनिगारका मन प्रसन्नहुआ और अमरको बहुतसी मोहरें देकर बिदाकिया परंतु अमर ने चलते समय एक रुक्का मेहर निगार के हाथसे अमीर के नाम लिखवालिया जिसे अमीर को बिश्वासपड़े और जाकर वह रुक्का अमीरके हाथमें दिया अमीरने उसके पढ़नेसे जिन्दगी दुबारापाई और दशहजार मोहरें उससमय अमरको पारितोषिकमें दी अमरने अमीरसेकहाकि अबमेरा कहना मानिये तो मैं बहुत अच्छी भांतसे इसभेदको विदितकरूं हरामजादों को जिन्होंने फ़िसाद उठायाहै अच्छी भांतिसे कष्टदूं और निश्चयहैकि तमाम उमर बादशाह भी इस बातसे लज्जितरहे और फिर कभी भले मनुष्यके साथ ऐसा झूंठ न बोले अमीरने कहाकि इससे अच्छाक्याहै जो तू कहेगासो मैं करूंगा और तेरे कहनेको न छोड़ूगा अमर ने कहाकि आप लन्धौर और बहराम और आदी और सुल्तान बख़्तआदि जितने सरदार हैं तिन समेत काले बस्त्रधारण करके बादशाहके पासजावो और बादशाह से ताकीद कीजिये कि अबशीघ्रलाश निकलवाइये जिससे लोगताना न करें कि बादशाह सप्तद्वीपकी लड़की मरीहुई इतनी देरतक पड़ी रही अमीरने यह मंसूबा अमर का बहुत पसन्द किया और बहराम आदि जिनको कहाथा साथलेकर बादशाह के पासगये और सबके सबशोक हो अपने२स्थान परबैठेदेखातोबादशाह सबसामानियों और केयानियों समेत काले बस्त्र पहिने हुयेहै और सब और से रोने पीटने का जोशहै एक घड़ी पीछे अमीरने बादशाह से प्रार्थना की कि अब जो होना था सो तो हुआ अब बहुत देर तक घरमें लाश रखने से क्या है आज्ञा दीजिये कि महल से जनाजा निकाला जाय बाहर किसी स्थान पर रक्खा जाय बादशाह ने मलिकामेहर अंगेज से कहला भेजा तो उत्तर आया कि दिन भर तो और मेहरनिगार महलहीमें रहे रातको लाश निकाली जावेगी अलगर्ज वह दिन रोने पीटने में गुज़रा महल में कोहराम मचा रहा जब सांझ हुई सैकड़ों ब्राह्मण शंख व घुंघुरू बजाने लगे और अपने

दैवतों के नाम लेने लगे महल में सक्कारगारवालों की तलाश हुई तो लाश उसकी, पत्तों में से निकली मेहर अंगेजने उसी लाशको संदूक में रखकर महल से निकाला लाखों मशालें रोशन होगईं और सहस्रों मनुष्य उस लाश के साथ होलिये अमर ने देखा कि मनुष्य शंख व घुंघरू बजाते और अपने क़ौमों को गलेमें लगाते और पैर २ पर आतशबाजी छोड़ते जाते हैं अमर ने भी अपनी सुरत दल घुंघरू हाथ में ले प्रत्येक के गले से मिलना शुरूअ किया होते २ बखतक के पास पहुंचा एक छछूंदर जला के बखतक के गले में डालदी और दबाया बख़्तक न समुझा कि यह काम सिवाय अमर के कौन करेगा अल्लाह हो हाय जला हाय जला कहके बोला कि अमर इसजा केवास्ते मुझको छोड़दे सब छाती और पेट जला जाता है और सब शरीर में फफोले पड़े जाते हैं अमर ने कहा आपकी मां जर गई हैं जो सतीओं के समान दीपकवत् जल जाइयेगा तो नेक बख़्त कहलावैगा यह कह कर बख़्तक को छोड़ दिया और आप आगेको बढ़ा और वह छछूंदर पेट व छाती बख़्तक की जलाकर गर्दन से निकल गई बख़्तक मार्ग में एक गढ़ा पानीका देखकर उसमें कूद पड़ा अपने शरीरका कुछ चेत न रहा जितने लोग जनाजेके साथ याती रोतेथे या हंसपड़े और थोड़े मनुष्यों ने बखतक के शरीर की आग बुझाई परन्तु बख़्तक को ताब न आई अपने उस मृतकको तो मनुष्योंको सौंपा आप रोता पीटता अपनेघरको फिरा जब नदी किनारे बख़्तक की मां को दबा कर फिरे बादशाह को दीवान खास में सशोक बैठे देखकर जो लोग हाजिर थे वेभी पीट २ कर रोने लगे अमर ने जो ध्यान लगा कर देखा तो बादशाहके रूमालमें पियाज का एक गट्ठा है जब आंख से लगाते हैं तब आंसू बह आते हैं अमर ने निकट जाकर चुपके से कान में कहा कि तुमसा छली बादशाह देखने सुनने में नहीं आया है कोई ऐसा छल भले मनुष्यों से करता है यह सुन कर बादशाह ने हंस दिया और कहा कि जिसने मकर व छल किया था वह अपने फल को प्राप्त हुआ यद्यपि बादशाह ने यह बात तो कही परन्तु अपने मनमें बहुत लज्जित हुआ और लाज के मारे पसीना शरीरसे निकल आया अमीरने कहाकि बख़्तक अपनी सजाको पहुंचा और जाननहीं पड़ता अमर बोला कि हुजूर यहजनाजा उसकी मांकाथा अपनी माता छपाशालिनीके सोकमेंहै उसकाकिया उसकेआगे आया इससे वह घरमें जाकर सोकमें बैठाहै नौशेरवांने अमीरसे बहुत उजर किया और कहाकिमैं कुछभी नहीं इसछलको जानता था आप मुझपर गुमान न कीजिये यह मक्कारी जिसकीथी वह अपनी सजाको पहुंची अमीरने कहाकि मैं सबप्रकारसे आपके आधीनहूं यह कहिये कि अब बिवाह कबहोगा बादशाहने कहाकि चालीसदिवसके पीछे बिवाह

कया जायगा आपका मनोर्थ पूर्ण होजायगा अमीर तो बिदा होकर तलशाद काम परगये परन्तु अमरवक रहा अब बादशाहने दर्बार बर खास्तकिया अमरने बुजुरुचमेहरको ठीककरके बादशाहसे प्रार्थना अमीर की ओरसे की कि अमीर को चालीश दिवसकी देरीमंजूर नहींहै भले कार्यमें ढील करना कुछ अच्छी बात नहींहै बादशाह ने कहा कि अभी सामान बिवाह व दाइजका तय्यार नहींहै अमरबोलाकि आपबादशाह हैं आपको देरीहै असबाबके न होनेमें क्या ढीलहै वारे कहने सुननेके पीछे बुजुरुच मेहरने बीशदिनका इकरारकराया अमरइसबातसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ अमरने कहाकि कृपानिधान इस मजमून का एक परवाना साहब किरांके नामलिख दीजियेकि वे उसको देखकर सामान आदिसब तय्यारकरें बादशाहने एक परवाना इकरार नामाकी भांतिलिख दिया अमरने जो वह परवाना आनकर अमीरको दिया अमीर पढ़कर अमर कि बुद्धिमानी पर प्रसन्नहुये और गलेसे लगालिया और बहुतसी मुहरें अमरको दीं और आनन्दबधाये होनेलगे बादशाहका हाल सुनिये कि महलमेंजाकर मेहरनिगारको गलेसे लगाया और बीशरोजका कौल जो अमीरसे कियाथा कहा इसकेपीछे अमरकी हरकतेंजो जनाजेके साथकी थीं वर्णन की मलिका मेहर अंगेज व मेहर निगार अमर की बातों पर हंसते २ लोटगईं बख़्तक का हाल सुनियेकि उसने जो सुना बादशाह ने हमजा को इकरारनामा लिखदिया है कि बीश दिवस के पीछे बिवाह करदूंगा और पांचदिन उसमें बीतभी गये पन्द्रहदिन बिवाह के शेषरहे हैं दोनों ओर बिवाहका सामान होरहाहै नगरमें इसका घर२ चर्चाहै यह सुनकर हकी चिनगारियों में फुंकगया यद्यपिउसके जलनेकेघाव अभी नहीं पूरेथे परन्तु फफोला तोड़नेके हेतबादशाहके पासगया अलग कर के कहाकि मैंने सुनाहै कि आपने हमजा को पत्र लिखदियाहै कि बीश दिवसके पीछे बिवाह करदूंगा और बिवाहकी सामग्री होरहीहै मगर मेहूसीकी धूम मचीहै अफ़सोसहै कि आपको अपनी बातका कुछ ध्यान नहींहै सेवाय इसके मलिका का बिवाह हमजा के साथ करना उचित नहीं सब देशोंमेंयह बातप्रसिद्ध होगईहैकि बादशाह सप्तद्वीपको हमजा की याचना नामंजूर होगई है जिसने सुना उसने कहा कि सच मच बादशाह इसीकाम को जो बिनादेखे ईश्वरको पूजताहै क्योंकर अपनी पुत्रीदेगा और आप बिवाह करनेपर मुस्तैद हुये हैं यह सब संसार क्या कहेगा नौशेरवां ने कहा किमैं क्याकरूं बहुत हैरानहूं कोई बातभी बन नहीं आती यह सुन बख़्तक ने कहा कि हुजूर हैरान न होवें मैंने एक बहुत अच्छी उपाय ठहराई और बहुत दूर की बात सोचीहै नौशे-रवांने पूछाकि वह क्या तुमने सोचा है बख़्तकने कहा कि कल जिस समय हाकी सोहाकी सभा में हाज़िरहों और हमजाभी उसी भांतिसे आ

बेंगा मैं दोतीन आदमी नाक कान काटकर भेजूंगा वे न्यायशाला की जंजीर हिलावेंगे हुजूरभी उसीभांतिसे उनकाहाल पूछें वे लोग प्रार्थना करेंगे कि हम हुजूरके नौकर पुराने हैं सप्तद्वीपका खजाना सालबसाल जमाकरकेहुजूरमें भेजतेथे इससालमें किसीनेएकपैसातक नहींदिया उस परनाककानकाटकर दुखितकिया और कहतेहैं कि बादशाह सप्तद्वीपका करदेने के योग्य नहीं है वह अग्निपूजक होकर हमजानामी मुसल्मान को अपनी बेटीदेगा और अपनीकुलकी रीतिछोड़दी अब बादशाह का जामाता आवैगा हमसे करलेलेगा सेवकोंने इसपर बिवाद किया उन्हों ने सेवकों की यह सूरत बनाकर अपनी हद्दसे निकालदिया जिस समय ए बातें हमजा सुनेगा तो अवश्य लज्जित होकर आप से बिदा मांगेगा नौशेरवां को यह सलाह बख्तक नीचकी बहुतअच्छी मालूमहुई उसदिन तो बख्तक बिदाहोकर अपने घरगया दूसरेदिन जब बादशाह तख्तपरबैठे और हकीम व विद्यावान् व बुद्धिमान सब अपने २ स्थानपर बैठे अमीरभी आकर अपने स्थान पर बैठे उसी समय किसीने न्यायशाला की जंजीर हिलाई जब सांकड़का शब्द नौशेरवां के कानमें आया तोनौशेरवां ने फिर यादियोंको बुलवाकर देखाकि थोड़ेलोग नाककान कटेहुये न्यायकराने के हेत घबरायेहुये अचेतआयेहैं दरबारकेसबलोग उनको देखनेलगे कि किसनेऐसीसूरतइनकी बनाई कि नाककान जड़सेउड़ादिये फिरियादियों नेजो कुछ बख्तकने सिखादिया था अच्छीभांतिसे वर्णन किया लाजकेमारे अमीरके रोयें खड़ेहोगये क्रोधसे बेअखतियार बोलउठे कि ईश्वर व काबा की कसमहै कि जबतक उनखलोंसे कर न लेलूंगा तबतक बिवाह न करूंगा आदीको आज्ञादी कि आज सप्तदेशकी ओर डेरा रवानाहो नौशेरवांने कहा कि ऐ अब्दुलअला जो यही मर्जीहै तो पहिले बिवाहसे निपटलो पीछे उनको जाकर दण्ड दो अमीर ने कहा कि मैंने कसमखाई है कि जबतक उनखलोंसे कर न लेलूंगा तबतक विवाहका मनोर्थ न करूंगा इस बातमें आप दखल न दें हंसीखुशी से बिदाकरें बादशाह ने कहा कि जो यही मर्जीहै तो अभौर या बहराम को मलिकाकी निगहबानी के हेत छोड़जावो अमीर इसबात से बहुत प्रसन्नहुये और बहरामसे कहा कि तुम बादशाहके पास रहो बादशाहने अमीरको खिलअत देकर सातखत सातोंदेशोंके बादशाहोंकेनाम लिखकर अमीरको देकर बिदाकिया कि सब बादशाहोंको भेजवादोजियेगा और जहांतकहोसके उनसेसलाहकी जियेगा और कारण देवबन्दको बारहसहस्र सेना देकर अमीरके साथ किया कि जोकुछ अमीरकहैं उसेकरैं किसीभांतिसे अमीरकीआधीनता व सेवकाईमें चूक न करे अमीर ने प्रार्थना की कि क़ारनके बदले और किसी सरदार को मेरे साथ कीजिये और इनको आप यहां रहने दीजिये क्योंकि येखानदानियोंमें सबसे बड़े और आपके नातेदारहैं और

इसके सिवाय कई बार मुझसे और इससे तकरारभी हो चुकी है कदाचित् मार्ग में किसी भांति को कोई तकरार करे तो अच्छा न होगा मैंने जो छोड़ दिया तो मेरे साथियों से यह कभी न बचेगा क़ारन ने एककौलपत्र अधीनताके हेत इसमज़मूनका लिखा कि जो मैं कोई अपराध करूं तो अमीर को मेरे मार डालने का अख़ियार है अमीर ने कहा कि दो अपराध तक मैं क्षमा करूंगा परन्तु तीसरे परदण्ड दूंगा अमीर तो तिलस्मादकाम पर बिदा होकर पहुंचे बादशाह सात पत्र सातों बादशाहोंके नामलिखे औरक़ारनके हवालेकिये औरमज़मून उन पत्रों में यह था कि हमज़ाको हमने समय जांच कर उधर को भेजा है कर क्या दखल तक न पावे इसका सिरकाटकर हमारे पास भेज देना और सातमिसकाल अर्थात् साढ़े यकतोला मारेविष हलाहल क़ारनको देकर कहा कि जब औसर पाना हमज़ा को खिलाना और खिलअत देकर बिदा किया क़ारन अमीर को सेनामें आया अमीरने दमामे पर कूच की चोब लगवाई और रवाना हुये उस समय अमर ने अमीर से कहा कि आपने युद्ध करने पर ध्यान लगाया है मेहर निगार का नेह कहने सुनने का है अब आपको अख़्तियारहै जहां जी चाहे वहांको जावें देशदेस फिरे और युद्धमें लड़ैं सेना वो पहलवानोंको लड़ाकर तमाशा देखिये बन्दा बहुत दिनों से आपके साथ खराब फिरताहै और किस २ उपाधियों से बचा है अब मक्के में जाता है वहीं आपके निमित्त दुआ करूंगा जो कोई पत्र अपने पिताको देना हो दीजिये तो उनकी सेवामें पहुंचा दूंगा अमीरने एक पत्र लिख हवाले किया और अमर मक्के की ओर रवाना हुआ ॥

इति प्रथम भागः समाप्तः ॥

अवलेखनी देश विदेश की बातों के हेत पधारती है दूसरी मंजिल छपसादे पचके लपेटने पर मुस्तैद हुई है अमीर के मार्गका हाल जीभ पर लाती है नये नये इतिहास सुनाती है कि जब अमीर सप्तद्वीप की ओर चलने वाले हुये यहांतक कि सात मंजिलें जा चुके थे कि कारन ने एक दुराहा पर घोड़ा खड़ा किया अमीर ने पूछा कि क्या कारण घोड़ा रोंकने का हुआ है कारन ने कहा कि यहां से सप्त देशको दोराहैं गई हैं एकराह तो बहुत दूरहै इसमें दो सड़कें बड़ी २ हैं मार्ग बहुत कठिन है जो कूच करते चले जाइयेगा तो कम से कम महीने भरके पीछे उसस्थान तक पहुंचियेगा और दूसरा मार्ग समीप है कि आजसे दश दिन तक चलना पड़ेगा और कष्ट किसी भांति से न होगा परन्तु इस मार्ग में तीन दिन तक पानी नहीं मिलता है पियास का डर है अमीर ने कहा कि तीन दिन के निमित्त पानी पखालों में भरवा लिया जावे अधिक चलना क्या जरूर है सेना को इतना कष्ट क्यों दिया जावे सेनावालोंने तीनदिन का पानी ऊंटों पर लादलिया और उसी राहसे जानेका मनोर्थ किया जबतीन दिन बीत गये और पानीका एक बून्दभी पखालों में नरहा चौथे दिन सेना पियाससे बेताब हुई और अमीर को भी जीभमें पियासके कारण कांटे पड़गये और इस में भी कोई कारण है उसने कहा कि साहब किसी भांतिका ख्याल न कीजिये यद्यपि आस पास ढूंढ़ा परन्तु कोईतड़ाग नदीआदि दृष्टि न पड़ा कारनसे कहा कि तूने कहा था कि चौथे दिवस पानी मिलेगा वह पानी कहां है इस बातमें भी कोई मतलब ठीकनहींहै कहाऐ साहब औरकिसी भांतिका ख्याल न कीजिये मुझको बारह वर्ष का असौ हुआ कि मैं इसतर्फ आयाथा विदित हुआ कि इस समय नदी सोते बालूसे पटगये और कोई तालाब आदिबाकी न रहेपरन्तु आपके पीनेलायक पानीमेरे छागलमें भरा है आज्ञा दीजिये तोमैं लेआऊं अमीरने कहा बहुत अच्छा कारण ने जलमें बिषमिलाकरप्याला भरअमीरके पासलाया अमीर ने प्याले को हाथमें लेकर मनमेंकहा कि पश्चात्ताप है किमैं तृप्त होऊं और खुसरो मेरामित्र प्यासा रहै खुसरो को प्याला देकर कहा किमैं यद्यपि तुमसे ज्यादा प्याससह सक्ताहूं तुम्हारे देशमें जलमिलताहै तुम प्यासनहीं सह सक्ते पीलो यह सुनकर खुशरोने कहा कि यह मित्रता से अलग है कि मैं तो पानी से प्यास दूर करूं आप प्यासे रहैं ऐसा कह उस पानीको न पिया और आदी को जो बहुत प्यासा था दे दिया आदीने देखा कि थोड़ासा जलपीकर अधिक प्यास बढ़ाना है यह सोच उस पानी को न पिया मुकबिल को देकर कहा यह जल तुम्हारी प्यासदूर करने के योग्य है तुम पिओ यह सुन मुकबिलने कहा कि यह मित्रता से अनु-

चित है कि अमीर प्याले रहैं और हम पानी पीवैं इसी तरह विषका पानी अलग रहा किसी ने न पिया अन्त को सबोंने उस प्याले को अमीर के हाथमें देकार कहा कि आपके पास रहने में हमको पानी पीना उचित नहीं है यद्यपि अमीर ने बहुत कहा पर किसी ने न माना॥

हज़रत हिज़र अलेहुस्सलाम की आज्ञानुसार अमर का निषेधकरना विषमिलेजलकेपीने से अमीर को और आकाशवाणी के सुनने से अमीर का उसजल को न पीना॥

इतिहासरूपी समुद्रके गोतालगानेवाले उत्तम २ बातोंरूपी मोतियों को निकालकर व अर्थरूपी सुन्दरता को सन्मुख यों प्रकट करते हैं कि अमर मक्केसे याचाकरके आता था कि मार्गमें एकवृद्धमनुष्य को देख कर इच्छाकी कि इससे बातेंकरते चलें कि मार्ग सुखके साथ कटे और थोड़ीदेर चित्त आनन्द में रहे यद्यपि बहुत शीघ्रता की परन्तु पहुंच न सका तब तंगहोकर सौगन्धें देनेलगा कि हजरतसलामत आपको अपने दीन और धर्मकी सौगन्ध है अगर आप आगे पैरउठावें उसका ठहरना था कि अमर ने जाकर देखा कि हजरतहिजर हैं दण्डवत करके हाल युद्धकरने का पूछा तब हजरतहिजरने कहाकि इस समय अमीर तृषावान् है और कारनने जलमें विषमिलाकर अमीरको दियाहै अबतक वह गिलास अमीर के हाथमें है जल्दजाकर अमीर के हाथसे गिलास पृथ्वी पर डालदे और यहींसे पुकारताचलाजा खबरदार जल न पीना २ परमेश्वर तेरा शब्द अमीर के कानोंतक पहुंचावेगा और उसधर्मिष्ठी के जीवको पापी के हाथ से बचावेगा अमर बेहोसहोकर दौड़ा और हर कदम परयह कहताचला कि खबरदार न पीना२ मैंभी पहुंचा अमीर की यही इच्छा थी कि जलपीवें शब्द जल न पीने का उसके कानों में पड़ा गिलास को मुखके पाससे हटालिया और इधर उधर देखने लगा कि किसने मुझे जलपीने से निषेध किया है जब मनाकरने वाला दृष्टि न पड़ा तब फिर जलपीने की इच्छा की परन्तु फिर वही शब्द सुनकर अचम्भितहोकर चारोंतरफ देखनेलगा कि कोई मनाकरता है पर देख नहींपड़ता कि किसका शब्द है तीसरीबार अमीर ने फिर गिलासको मुखसे लगाया कि फिर वही शब्द सुनाईपड़ा तब अमीरने गिलास को हटाकर बड़ेसन्देहमेंहुआ कि यहक्याहै कि जब जलपीनेकी इच्छाकरतेहैं तभी मनाकरताहै यह ईश्वरकी रचनाहै और अनेक २ तरहके संदेह कररहा था कि सामनेसे एकबवण्डल आया और उसमेंसे अमर निकला देखाकि गरुड़के समान उड़ता चला आताहै और कहता है कि जल न पीना जब अमीरके समीप गया तब उसगिलासको अमीरके हाथसेलेकर पृथ्वीपर पटकदिया और जहांतक उसकी छींटें पड़ीं पृथ्वी जलनेलगी यह हालदेखकर लोग बड़े संदेहमें हुये उसमेंसे एक छींट अमीरके मुख पर पड़ी खाल और हड्डी काटती हुई पीठ तक पहुंची अमरने अति शीघ्रता

से ग्राह मोहरा घिस कर लगा दिया कि बिष का असर जाता रहा कारन ने जो देखा कि भेद खुल गया है तब शीघ्रता से अपनी सेना की ओर भागा और सेनाको तो पहिलेही से तैयार होने की आज्ञा दी थी शीघ्रही बारह हजार सवार अमीर के ऊपर आगिरे और एक बरछी लन्धौर को मारी उसने बरछी छीनकर जो एक डाटमारी तो कारन लोटपोट कर पृथ्वीपर गिर पड़ा और बाकी जो सवार थे उसे उठाकर बनकी तरफ हवा के समान ले भागे असर ने सेना को उसी सोते पर जो हिजर ने बताया था लेजाकर जल पिलाया और खुदभी पिया अमीर ने असर को गले से लगाया और कहा कि तूने आकाशरूपी शब्द सुनाकर खूब मेरे जीव की रक्षाकी नहीं तो मैं मर चुका था पर अब मार्ग ढूढना उचित है कि इस निर्जल देशसे बाहरचलें तब असर सेना सहित एक नगर में गया तो सब मनुष्य असर को देख कर भागे तब उसने दौड़कर एक मनुष्य को पकड़ा और भागने का कारण पूछा उसने कहा कि परसों एक सेना आई थी उसने हमलोगोंको बहुतसा मारा और रुपया लिया और हर एक प्रकार का दुःख दियाहै उसी कारणसे जीवकी रक्षाके लिये भागे जातेहैं असर ने उनको धैर्य देकर कहा कि हम लोग वैसे नहीं हैं और किसीको दुःख नहीं देते हमारा स्वामी दयावान् और धर्मात्मा है तुमको उससे बड़ा लाभ होगा और बहुत प्रसन्न करेगा तुम हमारी ओर से निर्भय होकर सब मनुष्यों को हमारे समीप ले आओ तब उसने जाकर सब मनुष्यों को अमीर के स-मीप हाजिर किया अमीर ने उनको बहुतसा धन दिया और उस पहिले मनुष्य से पूछा कि यह बन कहां तक है और मीठा जल कितनी दूर पर प्राप्त होगा और पहिले नगर और नगर के अधिपति का क्या नाम है वह बोला कि बारह कोस तक यह बनहै और इसके बाद एक मीठे जल की नदी है और वहांसे एक दिनकी राह पर इलजाबे नाम नगर है और उसके स्वामी का नाम हामहै और उसी से मिला हुआ इलजमाकनामनगरहै और उसके स्वामी सामसहज्जारी और कामहू हैं और वे बड़े शूरबीर और युद्ध करने वाले हैं और प्रत्येक मनुष्य दश स हस्र सवारों का समूह रखताहै आप कहेंगे तो मार्ग दिखानेको चलूंगा और आपकी आज्ञा विना न फिरूंगा अमीरने सबसे अधिक द्रव्य उसको दिया और उसी तरफ चले जब बन नांघ गये और नदी किनारे पहुंचे नदी के जलका रंग हरा देखकर उस मनुष्य से पूछनेलगे कि इस नदी का जल सदैव हरा रहता है या इन्हीं दिनों ऐसा बहता है उसने कहा कि इस जल की सुन्दरता देखकर मोती काभी पानी लज्जित होताथा सूर्यका कुण्ड इसकी स्वच्छताके सन्मुख मलिनथा लेकिन विदित होता है कि जैसे इसमें किसीने विष घोल दिया हो जो जलका स्वभाव और

[illegible] जल पीने के योग्य नहीं है मारक विषके तुल्य
होगया है अमरने अमीरसे कहा कि यहकाम उसीपापी काहै जिसने
प्रथम आपको विषदियाहै कहीं २ नये सोतों से सेना को जल प्राप्तहुआ
और आवश्यकता के लिये पखाले और मशकों और चंगुलोंमें भर लिया
दूसरे दिन ईश्वर २ करके ईप्सित स्थान पर पहुंचे और इलजालिया के
क़िले के समीप वास किया कारन का इत्तान्त यह है कि विषकी गांठें
नदियों और सोतों में घोरता हुआ हाम के समीप पहुंचा और नौशे-
रवांका पत्रदेकर कहा कि हमजा नामी अरब का बादशाह बहुपूजक
अपने इष्ट मित्रों को साथ लिये आताहै जो कर मांगे तो न देना और
जिस प्रकार उचित हो उसको और उसके सहायक लन्धौर को मार
डालो या बांध लो तो तुम्हारे राज्यका तीन साल का कर माफ करके
और २ भी बादशाही कृपा तुम्हारे ऊपर होंगी ॥

यही कहते हुये साम और महदजरीकोभी जाकर समभाया और
वहांसे आगे को चला और सेनाको आगे भेजदिया हामने जो देखा कि
अमीर की सेना बहुत है दश सहस्र सेना से मैं इससे जयन प्राप्त कर
सकूंगा तब अपने दोनों भाइयों को लिखा कि सेना सहित तुम यहां
आओ क्योंकि हमजाके साथ सेना बड़ीहै जिसने कि मेरा क़िला लेलिया
तो तुम्हारे क़िलों का लेना कुछ कठिन नहींहै इस देशमें इसके समान
दूसरा कोई नहीं है साम और महज़री व कमर ए लोग अपने भाई
साम का खत देख कर सेना सहित क़िले में आये प्रत्येक सलाह करने
लगे साम ने कहा हमजा के साथ सेना अधिक है इसै धोखा से मारना
चाहिये महजरी व कमर बोले कि छलसे मारना नीचों का काम है
उचित है कि तीस सहस्र सवार लेकर युद्ध करैं बड़े भाई हामने कहा
कि मैं तो इस बात को पसन्द नहीं करता उचित है कि सौगात लेकर
हमजा के समीप चलकर मिलैं जो वह प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख हो तो
उसकीताबेदारी कीजिये और करदीजिये कदाचित् प्रत्येकके बातीलाप
में कुछ भेदहोगा तो पीछे जैसा उचितहोगा करैंगे हमारे निकट यह
बात उत्तमहै और आश्चर्यनहीं कि हमजा बहुत प्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहो
क्योंकि महरयार वगैरह बड़े २ अमीर उसके साथहैं और वहभी शूरता
और उदारता आदिमें प्रसिद्धहै और शूरवीरलोग शूरवीरोंकी प्रतिष्ठा
करतेहैं इससे वह तुम्हारी प्रतिष्ठाकरैगा और हमजाकी बीरता प्रसिद्ध
है कि जब सातदेशों के महाराजाधिराजसे कुछ न होसका तो हमको
पत्रलिखा कि किसीप्रकारसे हमजाको मारडालनाले कि नयहबात्तीप्रसिद्ध
है कि धोखेसे मारना नीचों का कामहै इसलिये यह बात हमको किसी
प्रकार करना उचित नहीहै उन सबको हामकीसलाह पसन्दआई और
युद्धकी इच्छा निष्फलहुई दूसरेदिन सौगात लेकर अमीरकेस्थानपरगये ॥

सातदेशोंमेंसे इलज़ानिया व इंलज़ाकियाके अधिपति हाम,मज़र्जरी,कामर, और सामका अमीरके हाथसे मुसलमान और आधीनहोना व करदेना और सेवाकरना हामआदिकका॥

शीघ्रगति लेखनी जो लिखनेमें अतिशीघ्र है वह अमीर के मंजिलों और कूचका वृत्तान्त यों लिखती है कि अमीर उनतीनों अधिपतियों से बड़ी कृपाकरके सन्मुख हुआ और तीनदिन तक उनके लिये नाच और तमाशा करातारहा और जब देखा कि ये लोग हमारे बसहोगये हैं कहा कि बड़ेसन्देह की बातहै कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर ईश्वर को नहीं पूजते और अग्नि और एक पत्थरकी मूरत जोकि मनुष्यकी बनाई है पूजतेहो और उसमें किसीप्रकार की शक्तिभी नहीं है यह सुनकर वे तीनोंभाई साफ मनसे कलमा पढ़कर मुसलमान हुये और अमीर ने प्रत्येक को खिलत देकर कहा कि अब तुमलोग हमारे भाईहुये अगर खज़ाना तुम लोगों का खालीहो तो मैं अपने पास से दाखिल खज़ाने सरकारीमें करदूं और तुमसे कभी एककौड़ी भी न मांगूगा उनलोगों ने कहाकि आपकी कृपासे खज़ाना अशरफी और रुपयोंसे भराहै अगर आज्ञाहो तो पेशगी दाखिलकरैं हमलोग हरएक प्रकारसे आपकी कृपा चाहते हैं अमीर ने आज्ञादी कि पेशगी की कुछ आवश्यकता नहीं है मालवाजबी देना उचितहै और दारोगा दिवानखाने और दारोग खज़ाने से दाखिलालेना चाहिये तब उनतीनों भाइयों ने उसपच को जो कारन देगया था दिखाकर पढ़वाया अमीर उसको पढ़कर प्रथम तो क्रोध किया पर फिर शोचकर कि शायदजाली हो किसीप्रकार का संदेह न किया और पूछने लगा कि अब जो देश मिलेगा उसका और उसके स्वामीका क्यानामहै और यहांसे कितनी दूरपरहै और मार्गमें कौन२ शोभायमानस्थान हैंहामने कहा कि यहांसेपन्द्रह १५ मंजिलपर अलोना नामनगरहै और उसकेस्वामीका नामअनीसशाहहै जोमहाशय और उभ पदवी वालाहै अमीरने कहा कि ईश्वरमालिकहै तुम सब अपने२ देशमें राजकरो और मैं जाताहूं और परमेश्वर की कृपासे बिजयकरके शीघ्रही आताहूं तब उनलोगोंने कहा कि हमलोग आपके सेवकहैं आपकेसाफ करनेसेभी करका रुपया हाजिरकरैंगे खज़ानचीको आज्ञा हो कि वह दाखिल करके दाखिला देवे और हम लोगों को हमराह में चलने की आज्ञा दीजिये अमीर ने बहुत उपदेश दिया पर किसी ने न माना अपने २ मंत्रियों को राजमें छोड़ कर और कर का रुपया देकर साथ चले जिससमय कि स्थान अलोना दो कोस बाकी रहा अमीर घोड़े पर से उतर कर एक स्थान पर जो बड़ा शोभायमान था डेरा डाला जब अनीसशाह को खबर पहुंची तो वह अपनी सेना को लेकर युद्ध करने को आरूढ़हुआ परन्तु जब देखा कि बिजय न पाऊंगा अपनेघोड़े पर से कूदकर अमीर के चरणोंपर गिरा और जीव की रक्षा के लिये मुसल्मान

होकर कलमा पढ़ा तब अमीर उसको अपनी सेना में ले जाकर अनेक प्रकार के वार्तालाप करने लगा और वह पापी मनुष्य अमीर के समीप कई दिनतक रहा एक दिन संयोग पाकर प्रार्थना की कि महाराज सेवक ने एक स्थान नहाने के लिये तैयार करवाया है विनय करता हूं कि आप एकदिन उसमें चलकर स्नानकरैं कि मार्ग का श्रम दूर होजावे पहिले तो अमीरने न माना परन्तु फिर उसकी प्रार्थना करने से गया तो उस स्थानको ऐसा बनवाया था कि जो कोई देखताथा वे इच्छा भी स्नान करनेकी इच्छाकरता था और यत्न यह कियाथा कि लोहे के पावे पर छत रक्खीथी और उनमें जंजीरैं डाली थीं कि चार आदमी चारों जंजीरों को छोड़ देवें तो वह छत नहाने वाले के ऊपर गिर पड़े और वह दबकर मरजाय इसीप्रकारसे उसदिन चार मनुष्य अतिबलवान को नियतकरके आज्ञादी थी कि जब हम तासदैमारें तो तुम लोग उसका शब्द सुनकर छोड़कर भागजाना अमीर तो लन्धौर और मुक़बिल आदिक को साथलेकर स्नान करनेकोगया पर अमरू और आदीने अमीर की आज्ञा को न माना पर अमरू वृद्ध मनुष्य का भेष धारण करके उस स्थान के पीछे गया तब उनचारों मनुष्योंने कहा कि ऐ बुड्ढे तू यहां से जल्दभाग जा हम अभीतास का शब्द सुनकर जंजीर को छोड़ देवेंगे नाहक तूभी दबकर मर जायगा और तेरा पाप हमलोगों के ऊपर होगा यह हाल सुनकर वह लौटा और उस स्थानके दरवाजेपर जाकर सबहाल अमीर सेअपनी भाषा में कहा तब अमीरने बाहर निकलकर जंजीर की कांटी चढ़ाकर सब अपना वस्त्र पहिना तब अनीसशाहने कहा कि इसके पीछे एक स्थान पर कुछ मेवा आदिक आपके लिये रक्खा है अमीर ने कहा कि तुम चलकर प्रत्येकके लिये भागलगा कर रक्खो हम अपने साथियों समेत आते हैं खूब खावेंगे और खिलावेंगे अनीस शाह का उसमें जाना था कि अमरू ने तास को दैमारा वेचारों मनुष्य जंजीर छोड़कर भागगये और वह छत अनीसशाहके ऊपर गिरपड़ी और वह आपही अपनी तदबीर से मारागया अमीर ने अमरू की बुद्धिमानी की बड़ी प्रशंसा की और उसके पुत्रको सेना समेत मुसल्मान करके महदजर्री और कमरको सौंपा और आज्ञादी कि इसकी तालीम और रक्षाकरो और जब अमीरने सेनापतियों से सुना कि कारन एक पत्र बादशाहको देकर जिसमें यह लिखा था कि अमीर और लन्धौर को किसी तरह से मार डालना देकर हलब की तरफ को गया है यहसुनकर बड़ा संदेह करके हलबकी तरफ कूच किया अब और कारनका हाल यहहै कि वहांपर जाकर हदीसशाह को एक पत्र दिया और कई एक दिनके बादकहा कि बादशाह ने मुझसे यहभी कहदिया है कि जो कोई हमजा और लन्धौर को मारेगा उसकेउपकारसे हमकभी उऋण न होंगे औरयह एहसान

उसका हमारे ऊपर रहेगा ऐसी २ बातें कुछ बादशाहकी तरफ़से और कुछ अपनी ओर से कहीं और बहुत तरह से अमीर की बुराई की यह सब कहकर यूनानकी तरफ जानेकी इच्छाकी तब हदीसशाहने कारनसे कहा कि अभी तुम यूनानदेश को नजावो हम तुम्हारे सामने हमज़ा को मैदान में मारेंगे कारन ने कहा कि यह कहने की बात है कि हमज़ा को मैदानमें मारेंगे हमज़ा ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारीसेनासे हारजाय और माराजाय हदीसशाह ने कहा कि अगर यह तदबीर अच्छी नहीं है तो हमने एक कुंआ खोदवाया है उसमें अनेक २ प्रकार के हथियार हैं और जोकि बहुत तेज और नोकीलेहैं वे खड़ेहैं मैं हमज़ाको चौगान बाज़ीके खेलमें कुयेंमें मारूंगा कारनने कहा कि यह यत्न अच्छाहै और इससे वह मारानायगा यह तदबीर करके जबसेना हमज़ा की हलब के समीप पहुंची उसी समय हदीसशाह भी सौगात आदिक और तीन सालका पेशगीकर लेकरहाजिरहुआ और कलमापढ़कर मुसल्मानहुआ अमीरने उसको सबसे अधिक खिलतदी चारपांच दिनतक नाचरंगहुआ किया एकदिन हदीसशाहनेकहाकि मैंने आपकी शूरताकी बड़ी प्रशंसा सुनीहै चाहताहूं कि आपथोड़ीदेरके लियेचलें और मुझे विद्या चौगानबाज़ी की सिखलावें अमीरने कहा बहुत अच्छा सबेरे हदीसशाह अपने कोट में जाकरमनुष्योंसेकहा कि खबरदार कुयेंपरइसतरहसे घास जमानाकिकिसी कोकुयें और खन्दकका संदेह न होवे और जिससमय कि हमज़ा कुयें में गिरपड़े तुमलोग उसकी सेनापर चढ़ाईकरके लूटपाटलेना और सबकोमार डालनाजब हदीसशाह अमीर को मैदानमें ले गया तो एक तरफ हदीस की सेनाथी और एक तरफ अमीरकी दोनों मैदानमें गये और दोनोंतरफ के अफ्सर लोग तमाशा देखनेके लिये गये हदीसशाहने कहा कि आप चौगान लगाइये अमीरने कहा कि हमतो कोई कार्य पहिले नहींकरते और गुरूने यहबात नहीं बताईहै प्रथमतुम चौगानको (गुये) पर लगावो पीछे मैंभी हाथमें लेकर जोकुछ जानताहूं तुमको दिखलाऊंगा तब उसने सलामकरके घोड़ेको तेज किया और जब वह एक बाणकी दूरीपर गया तो अमीरने भी चौगान (डंडा) लेकर अपने घोड़ेको तेज किया हदीस शाह तो पीछे रहगया और अमीर आगे जिधर कुआ था बढ़ गया और उसके जालपर नज़र न की स्याह कैतास नामघोड़ा उसकेसमीप जाकर भुका अमीरने कोड़ा उसके मारा तब उस घोड़े ने चाहा कि कूद जावैं मगर पिछले पैर कुये में जारहे तब अमीर उस परसे कूदकर अलग हो गया और घोड़े की बाग थाम कर आगेसे भुका कर बाहर निकालकर फिर सवार होती समय कारन को देखकर उसकी तरफ घोड़ा छोड़ा और वह पहाड़की तरफ भगा अमीरभी उसके पीछे घोड़ा दौड़ाते हुये गया हदीसशाह ने जाना कि अमीर कुये में गिर कर मर गया अपने

बीस सहस्र सवार लेकर अमीर की सेना पर चढ़ाई की और बहुतसी सेना मुसल्मानों के हाथ से मारी गई और आपभी लन्धौर के हाथ से मारा गया और सेना उसकी भागी लन्धौरने जब देखा कि अमीर नज़र नहीं आता घबड़ाकर अमरू से कहा कि उसका पता लगाना चाहिये अमरू स्याह क़ैतास नाम घोड़े के पैरों के पते से चला क़ारन एक साधु की कुटी पर जाकर उस स्थानसे एक सेरवा लेकर और उसमें विष मिलाकर उस साधुको दिया और कहाकि मेरे पीछे एकसवार आताहै यह उसको देना और वह जो कुछ दे ले लेना अगर उसने खाया तो सो अशरफी मैं तुमको देऊंगा और अगर कार्य मेरा पूर्ण होगया तो मैं बहुत खुश करूंगा यह कह के कुद पहाड़ की तरफ चला गया पीछे से अमीर आगया उसने वह सरवादिया अमीरने उससरवेको लेकर पूछा कि मेरे आगे २ एक सवार आया है वह किस तरफ को गया है उसने कहा कि सामने पहाड़की दरमेंगयाहै उस तरफराह निकलनेका नहीं है और वहां सेर लागू है मनुष्य का वहां जाकर लौटना अति दुर्लभ है अमीरने इच्छाकीकि उससेरवेको पियेउसी समय उससाधुने कहाकिऐ जवान यद्यपिमुझे सौ अशरफीइसके बदले में मिलैंगी पर तेरी सुन्दरता और स्वभाव देखकरलेनेकी इच्छा नहीं होती इस सरवे में उस पहिले सवारनेकुछमिलाकर मुझेदियाथा कि पीछे जोसवारआताहै उसकोदेना अगर वह मरजायगा तो सौ अशरफी मैं तुमकोदूंगा तब अमीरने उस सरवेकोफेंकदिया और हजार अशरफीके मोलका जवाहर देकर पहाड़की तरफ घोड़ेको दौड़ाया ज्योंहीं पहाड़ पर पहुंचाकिएक बाघ उसकेऊपर आगिरा अमीरने एक तेज तलवार जोमारी तो उसके एक के दो भाग हो गये फिर अमीर पहाड़ के दरमेंगया और देखाकिक़ारन एक दरमें दबका पड़ाहै चाहाकि खंजरमारे वह मरजावे कि इतनेमें उसने कहा कि अगर मुझे न मारोतो तीन वस्तु मैं तुमको देताहूं अमीरनेकहा कि क्या देता है देथोड़ी देर इसी से जान बचा उसने एकखंजर निकालकर दिया और कहा कि यह देवबन्दी की कमर का है बड़े दुःख और यत्न से मिला है और एक बाजूबन्द हाथ से खोल कर दिया जिसमें बारह लालथे और हर एक तीन २ करोड़ के थे यह दो वस्तुदेकर बोलाकि इस पहाड़ में एक स्थान पर बहुत खजाना है चलो वह भी बतलादूं तुम्हारी भाग का था मिला इतने में अमरू गया तब अमीर ने क़ारन के हाथ बांधकर अमरू को सौंपा कि देखो कहां खजाना बतलाता है यह कोई यत्न करता है अगर सच्चा है तो उसको अपने हाथ में करो और अगर झूठ है तो इसको लेकर आवो अमरू ने कमन्द से उसके हाथ और कमरको बांधकर उसेबाहर लेकरचला तब क़ारन बल करने लगा कि रस्सी कमर से टूट जाय और मैं उसके हाथ से निकल जाऊं

अमरूने कहा कि क्यों बल करताहै खजाना बतलादे मैं तेरेलियेअमीर से कहकर छोड़वा दूंगा कारन ने कहा कि खजाने का नाम तो मैंने अपना जीव बचानेके लियेलियाहै मगरतू मुझे छोड़दे तो दोलाखअशर्फी मदाइन में चलकर दूंगा अमरूने कहा कि अब मैं जीतेजी कब तुझको छोड़ताहूंकिकोईबात घचुताकी मुझसे और अमीरसे उठा नहीं रक्खी है ऐसी काबू पाकर मैं तुझको क्योंछोड़ूंगा यह कहकर खंजर कमरसे निकालकर मारडाला और अमीरके समीप जाकर सब हालकहा तब अमीरने कहाकितूने अच्छा कार्यकिया कि रोजका झगड़ा मिटादिया ॥

अमीर का यूनान की तरफ जाना और हुदद मरहीम के साथ विवाह करना ॥

पुस्तक निर्माण करनेवाले उत्तम अर्थ को लेखरूपी भूषणसे सुशोभित करतेहैं उत्तम वर्ण को नये २ प्रकार से अलंकृतकरके यों वर्णनकरते हैं कि जब शाह जफ़र अमीर के शीशा रूपी चित्त में प्रकाशित हुये तो अमीर ने किले में जाकर सात दिन तक वास किया और वहां से पांचों देशों का कर और कारन पत्र आदिक संयुक्त हाल कारन के या और २ जो उसने किया था लिख कर मुक़बिल के हाथ बादशाह नौशेरवां के समीप भेज कर आप यूनान की तरफ़ चलकर थोड़े दिन के बाद उसके समीप पहुंचकर बासकिया फरेदूंशाह बादशाह यूनान को अख़बार के द्वारा पहिलेही मालूम हुआ था इस वृत्तान्त के सुनतेही कर और अपने भाइयों को साथ लेकर चला और मार्ग में अमीर से भेट आदिक देकर मिला और साफ मनसे कलमा पढ़कर भाइयों समेत मुसल्मान हुआ तब अमीर ने अति प्रसन्न होकर उसको और उसके भाइयों को खिलत दी और कई दिनतक उसी जंगल में मंगल रहा फरेदूंशाह ने एक दिन संयोग पाकर अमीर से प्रार्थना की कि सेवक को तीन कार्य करने की अति आवश्यकता है और प्रत्येक का होना अति दुर्लभ है अगर आप इन कार्यों को कर देवें तो बड़ीही कृपा होगी अमीरने कहा वह कैसा कार्य है कहो उसने विनय करके कहा कि प्रथम कार्य तो यह है कि थोड़े दिनों से एक अजगर यहां रहता है उसके कारण से मन्जिलों की आबादी वीरान हो जाती है और लाखों रुपये का नुकसान होता है और दूसरा कार्य यह है कि कोट के समीप एक पहाड़ है उसपर डाकू सैयदों ने अपने रहने के लिये एक स्थान बनायाहै और सालभरमें एक बार लूटमार करते हैं कई सहस्र मनुष्य उनके हाथ से मरते हैं तीसरा कार्य इन दोनों के होने पर कहूंगा तब अमीरने कहा कि प्रथम हम अजदहे को मारेंगे और फिर कोट में सोने के लिये स्थान बनावेंगे प्रातः काल हमारे साथ चलकर अजदहे का स्थान बतलाकर तुमलोग अलग खड़ेहोकर तमाशा देखना खुसरो ने कहा कि आप सैयदों पर क्या जावेंगे अगर आज्ञा

हो तो खड़ी सवारी जाकर उसका सिरकाटकर आपके समीप लाऊं अमीर ने कहा कि प्रातः काल हम अज़दहे को मारने जांयगे तो तुम उसके मारने को जाना और मार यमपुर को पहुंचाना अमीर तो फरेदूं शाह को साथ लेकर अज़दहे को मारने चला और खुसरो हिन्द असफ़भाई फरेदूं शाह को साथ लेकर उस नंगी सैयदों पर गया जबकि अज़दहे के समीप पहुंचे फरेदूं शाहने घोड़े परसे उतरकर प्रार्थना की कि आपदेखें कि कोई वृक्ष आदिक जंगला नहींहै और सब बन और पहाड़आदिक जलकर राखहोगये हैं और जब वह अज़दहा निद्रा से रहित होकर जागता है और सांसलेता है तब यहांतक उसकी लपक आतीहै इससमय वह सुखनींद सोरहा है नहीं तो मनुष्य तो क्या जन्तु आदिककाभी इस स्थान पर आना अति दुर्लभ है अमीर भी घोड़े पर से उतरकर अमर को साथलेकर अज़दहेके मारनेके लिये आरूढ़ हुआ फरेदूं शाहभी साथचला समीपजाकर देखा तो एक वस्तु कालेरंग की विदितहुई परअतिनिकट जानेसे प्रत्यक्ष हुआ कि अज़दहा पड़ाहै अमीर ने कहा कि निद्रामें मारना उचित नहीं है यह तो केवल एक कीड़ाहै अमीरने उसको जगाया उसको देखकर अज़दहेने अपना शरीर ताड़के वृक्षके समानकरके फुफकारता हुआ अमीर के ऊपरचला उसकी लपक से जो वृक्ष कि हरे थे सुखगये और बहुत से भस्महोकर कोयलेहोगये तब अमीर ने जो एक तीरमारा उसके दोनोंनेत्र फूटगये और पृथ्वी पर गिर पड़ा तब फिर अमीर ने जाकर एक तलवार ऐसीमारी कि एकके दोअज़दहेहोगये और उस स्थानसे उठ नसका तब फरेदूं शाह अतिप्रसन्न होकर अमीर की परिक्रमा करके सलाम किया और अमीर जिस समय कि सवारहोकर किलेमें पहुंचा था उसीसमय लन्धौर भी शिर लेकरपहुंचा और खज़ाना जो किलेका लूटकर लाया था अमीरके समीप लेगया फरेदूं शाहने यह सब रुपया और जवाहर लन्धौरको देकर नाच व रङ्ग कराने का आरम्भ किया और कईदिन तक खुशीरही अन्त को फरेदूं शाहने प्रार्थनाकी कि दोकार्य्य तो आपकी कृपासे पूर्णहोगये और तीसरा यह है कि मेरी बेटीके साथ विवाह कीजिये कि सब बलवान मनुष्यों और आपके समीप मुझसेवक की प्रशंसारहे और सब शत्रु भी डरें तब अमीर ने कहा कि यह कार्य तो अतिही कठिन है यह तेरा विचार मिथ्याहै क्योंकि मैं मलिकामेहरनिगार से प्रतिज्ञाकरचुका हूं कि जबतक तेरेसाथ विवाह न करलूंगा तबतक दूसरी स्त्रीकी तरफ दृष्टि न करूंगा यह सुन फरेदूं शाह अपनासा मुंहलेकर रहगया और अपने भाई असफसे एकान्तमें कहा कि जो कदाचित् मैं अपनी बेटी के विवाह की वार्ता अमीर से न करता तो अति उत्तम होता और क्यों सभा में इसप्रकार लज्जित होता और सर्वत्र यह वार्ताप्रसिद्ध होती कि अमीर

ने फरेदूं शाह को अप्रतिष्ठित जानकर उसकी बेटी के साथ विवाह न किया ऐसे जीवन से तो मृत्यु उत्तम है यह कह कर चाहा कि एक खंजर पेटमें मारे और मरजाय तब असफने उसकाहाथ पकड़कर कहा कि ऐसे कार्यों का परिणाम विचारना उचित है और इसकी प्रतिज्ञा करताहूं कि अमीरके साथ नाहदमरहीम का विवाह कराटूंगा और अवश्यहै कि आपका कार्य सिद्ध होगा और शत्रुओंको लज्जा प्राप्त होगी अमरूको बुलाइये तब फरेदूं शाहने अमरूको बुलाकर अपने समीप अति प्रतिष्ठाके साथ बैठाया और पांच सहस्र अशर्फी देकर कहा कि यह मेरी प्रतिष्ठा तेरे हाथहै परमेश्वरके लिये मेरी लड़कीका विवाह अमीर के साथ कराके इस कठिन कार्यको सिद्ध करो तो दस सहस्र अशर्फी और बाद विवाह होनेके दूंगा कदाचित् ऐसा न होगातो बिष खाकर मरजाऊंगा अमरूने उसको समझा कर कहा कि यहकुछ बड़ीबात नहीं है आजही विवाह होजायगा आप संदेह न कीजिये चुप चाप विवाह कासामान कीजिये यहकहकर अशर्फियोंको लेकरअपने स्थानपर जाकर अमीरसे एकांत में नाहदमरहीम की सुन्दरता और स्वभाव की प्रशंसा की कि अमीर को उसके सन्मुख किया अमीर ने कहा कि हम फरेदूं शाहकी लड़कीसे विवाह अभी करते पर मलिकाको क्या जवाब दूंगा कि मैंने उससे प्रतिज्ञा की है कि जब तक तेरे साथ विवाह न करूंगा तबतक दूसरीस्त्री पर दृष्टि न करूंगा परीभी जो सन्मुख आवेगी उसको कुरूप जानूंगा अमरूने कहा किऐ अमीर कहीं जवान भी ऐसी बातों में सच्चा रहताहै स्त्रियोंसे इससे अधिक भी करार करतेहैं और पूर्णनहीं होते फिर वह मनुष्य जो देश और प्रजाका अधिपति हो उसकी प्रतिज्ञा ऐसी होती है आपने तमाशबीनों की बातें नहीं सुनी मेर–तुम नहीं औरसही और नहीं और सही आपखुशी से विवाह कीजिये और मलिका मेहरनिगार का वृत्तान्त वह जाने या मैं अगर वह आप से कुछ कहे तो आप मेरा नाम ले लीजियेगा मैं उसको समझा दूंगा तब अमीर ने अमरू के कहने पर उसके साथ विवाह करने का क़रार किया परन्तु कहा कि मैं जब तक मलका मेहरनिगार के साथ विवाह न करलूंगा तब तक उसके साथ न रहूंगा फरेदूं शाहने इसबातको अति प्रसन्नताके साथ मानलिया और उसी दिन तिलक हुआ और विवाह का सामान होनेलगा फरेदूं शाहने अमरूको दससहस्र अशर्फीके सिवाय एक ख़िलत जड़ाऊ की देकर कहा कि ऐ ख़्वाजः मैं तेरी सेवा सदैव इसी प्रकार से किया करूंगा अमरू तो अति लुब्ध ही था फरेदूं शाह को भीदिलासा दिया और अमीर से इस प्रकार से उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की कि अमीरने दूसरेदिनकी रात्रिको सर्वपूजनआदिक करके महदमरहीम के साथ विवाह करके पन्द्रह दिवस तक उसके साथ वास किया

खोलहवेंदिन महद मरहीम के। उन्होंबारह लालोंमेंसे जा कारन से प्राप्त हुयेथे देकर महल से बाहर निकला उसके दर्शन की इच्छा करने वाले बहुतसे मनुष्य एकट्ठाहुये और फरेद शाहसे करका रुपयालेकरसाथ उन वस्तुओंके जो जन्दौर लूटकर लायाथा सब लेकर नौशेरवां के समीप भेज करअमरू कोभीसाथ कियाऔर अपने याचकीआज्ञा मिश्रकी तरफदी ॥

जाना अमीर का मिश्र देश की ओर कैद । होना बादशाह के हाथ दगा से ॥

नगर के लेखकों के लिखने से प्रसिद्ध होता है कि जिस समय खुसरो अमरू के साथ मदाईनके समीप पहुंचा तब बादशाह नौशेरवांने सुनकर सरदारोंको उसकी अगवानीके लियेभेजा औरआने के समय बड़ीप्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होकर देर तक अमीर का वृत्तान्त पूछता रहा तब थोड़े काल के व्यतीत होने पर सब करका रुपया व पत्र और सौगात आदिक नौशेरवांकेसमीप रखकरसर्व वृत्तान्तकारण व अनीसशाह और हदीसशाह आदिक की शत्रुताका बयानकिया और अमीर की ओर से प्रार्थनाकीकि अमीरने कहाहैकिबादशाहकी आज्ञासे बाहर मैं नहींहूं और जो बादशाह आज्ञा देवें तो मैं अग्नि में भी कूदपडूं पर प्रतिष्ठामें भेद न होवे तब बादशाहनेकरका रुपया खजाने में भेजकर खुसरो और अमरूको खिलतदेकर आज्ञा दी कि तुम लोग बराबर हाजिर रहाकरो और अपने२ स्थानपर बैठाकरो खुसरो तो अपने स्थानपर जाकर स्थित हुआपरन्तु अमरू उठकर सब सुतानहरीमके दरवाजे तक गयाथा कि तुरन्तही मलका मेहरनिगारने सुनकर बुलाया और अमीरका वृत्तान्त पूछनेलगी अमरूने अमीरका पत्रदेकर सर्ब वृत्तान्त जोकुछ उसके सामने हुआथा कहाकि मलका अमीर का चित्त आपही में लगा है जो समय व्यतीतहोता है वह आपही के यादमें गुजरता है मलका बोलीकि ऐ खोजे अबतो विरह ऐसा सताताहै कि दिन व रात्रि अति कठिनता से व्यतीतहोतीहै ॥

चौपाई ॥

तेरे ध्यान मांहि दिन बीते । रात्रि स्वप्नमें तुहीं प्रतीते ॥

दोहा ॥

हमजा तेरे वियोग में प्रानन होत पयान । हृदय सों बाहर जानको औंठन करतहै थान ॥

चौपाई ॥

मृत्यु आजाए तो मैं जीजाऊं । अभय पद दुःख विरह से पाऊं ॥

हे ईश्वर या तो साहेब किरांको ले आवै या मृत्युदेकि इस दुःख से छूटूं अमरने कहाकि ऐ मलका बहुतगई थोड़ी रही अब किसी प्रकार का संदेहकरना अनुचित है जिस ईश्वर ने उनको इतनी आपत्तियों से बचायाहै और तुमको एक पापीके हाथसे छोड़ायाहै वही एकदिन यह भी करेगाकि तुम और अमीर अति प्रसन्नताके साथ संयुक्त होगेअबके वलजिसकाकरलेना शेषथा वहभी ईश्वरकीकृपासेअति शीघ्र पूर्णहोगया

होगा और आश्चर्य नहीं है कि वह इस तरफ़ चले हों इसी प्रकार से मलका की दिलजमई करके बाहर निकल कर बहराम, खाकान, और मुक़बिल आदिक से मिलने को गया तब मुक़बिल और बहराम अति प्रसन्नता के साथ मिलकर नाच रंग आदिक करवाने लगे इसके संपूर्ण होनेपर असद ने खुसरो बहिराम और मुक़बिल आदिक से कहा कि तुम लोग प्रत्येक दिन बादशाह की सभा में जाया करना परन्तु अपने कोल कांटों से खबरदार रहना क्योंकि बादशाह की कृपा और मित्रुता की कुछ ठीक नहीं है उसका मन स्थिर नहीं रहता और बुजुरुचमेहर के समीप सदैव जाया करना क्योंकि वह अमीर का एक मित्र और शुभचिन्तक है और उसकी बातोंपर ध्यान रखना यह सब उपदेश देकर कहा कि मैं तो अब मक्का को जाता हूं और अति शीघ्र अमीर की खबर लाता हूं सब वस्त्र जिस प्रकार से यात्री लोग पहिनते हैं धारण करके मक्के की तरफ़ चला॥

अब और वृत्तान्त अमीर का यह सुनाता हूं कि जब अमीर मिस्र के समीप पहुंचा तो नील नदी के निकट डेरा डाल कर सर्व दिन बातों में बिताया और जब कि रात्रि हुई उस समय फर्राशों ने बिल्लोरी भाड़ और फ़र्शी आदिक प्रत्येक स्थान पर रक्खी और भाड़ व फ़ानूस आदिक में मोम की बत्तियां लगावा कर प्रज्वलित करवाया और फिर जो नदी की तरफ़ चिराग़ छुड़वा दिया तो उस के कारण कर के और अधिक तमाशा हो गया और उसकी परछांही जो जल में पड़ी तो एक दूसरी सभा बन गई इसके पश्चात् अमीर ने शराब और मांस अपने साथियों समेत खाकर रात्रिभर नांच और गानाआदिक देखता और सुनता रहा जबकि यह वृत्तान्त मिस्र के बादशाह को प्रगट हुआ कि अमीर हमज़ा नौशेरवां बादशाह की ओर से कर लेने को साथ अपनी सेना के आकर नील नदी के निकट स्थित है उसी समय कारवां नामें सेनापति को बुलाकर सर्व वृत्तान्त कहकर सम्मति पूछने लगा कि हमज़ा आया है क्या करना उचित है सेनापति ने जो अति बुद्धिमान था कहा कि उसकी शूरता आदि का वृत्तान्त तो आप को अखबार के द्वारा विज्ञात हो चुका है वह अति बलवान और युद्ध करनेवाला है ऐसे मनुष्य से युद्ध करने का यत्न करना अपने हाथ से अपना सिर काटना है इस कारण से मेरी बुद्धि में तो यही आता है कि आप चल कर अगवानी मिल सौगात आदिक देवें और उसकी प्रबलता और शीलता तो जगत में प्रसिद्ध है जो आप का स्वभाव और प्रकृति अच्छे प्रकार से जान जायगा तो निश्चय है कि आप के ऊपर अति कृपा करेगा मिस्र के बादशाह अति क्रोधित होकर कहा कि तेरी सलाह उत्तम नहीं है जो मैंने विचारा है वही उत्तम होगी तब उसने विचारा कि यह इस समय मिस्र का स्वामी होने के कारण यद्यपि यह बे सामान है परन्तु अपने को सहित सामान के जानता है इस समय जो

परमेश्वर भी समुझावैं तो अपनी बुद्धि के सामने कुछ न मानेगा यह विचारकर चुपहोरहा और कहा कि अवश्य यह मारा जायगा ॥

प्रातःकाल मिस्र के बादशाह नेतीनसालकाकर और सौगात आदिक लेकर अमीर के समीप जाकर मिला, और सब उसके समीप रख कर प्रार्थना की कि आपनेनगर छोते बनमें क्यों बासकियाहै कि हर प्रकार से दुःख प्राप्त होता है आपनगर में चलकर सेवकके स्थान में बास करैं अमीरने खिलतदेकर कहा कि मित्रोंकास्थान मित्रोंहीके लियेहै हमको किसी प्रकार का संदेह तुम्हारेस्थान परचलने का नहीं है यह कहकर उठ खड़ा हुआ और सेनाको उसीस्थान पर छोड़ कर साथ अफ़सरों के चलाज्योंही अमीर नगर में पहुंचा सब छोटे बड़े उसके देखने के लिय दौड़े और अमीरका रूपदेखकर सबलोग आशीर्वाद देनेलगे ॥

ईश्वरतोहि यहि जगत में राखें सम्पति युक्त। सफल दृष्टि नव भूति अरु नववय अरुउद्यक्त ॥

अन्त को अमीर यूनानमें जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठा और सरदारलोग कुरसियों पर बैठे तब मिस्र के बादशाहने साकियोंको शराब लेआने की आज्ञादी और नाचरंग कि सभाकर के शराब पिलवानेका आरंभ किया और आप टहलू के समान सब कार्य करता रहा और यदि अमीर बैठनेको कहताते हाथजोड़कर विनय करता कि आपकी टहलकरना मुझेउचितहै और बड़ी भाग्यथीकि आपआये अमीर उसकी मीठी २ बातों से अतिप्रसन्न होकर निसंदेह होगये ॥ रात्रि के समय उसपापी बादशाहने अपने हाथसे बेहोश करनेवाली मदिरा साकियोंको देकर आज्ञादी कि अब जो मदिरा दीजावे वह इसीमेंसे देना तब उन लोगोंने वही शराब गिलासों और सुराहियोंमें भर२कर देनेलगे अमीरने पहिलेही गिलास पीनेपर पूछा कि क्या यह दूसरी मदिराहै बादशाह मिस्र ने हाथ जोड़ कर कहा कि यह शराब आपही के निमित्त सेवकने मंगवाईहै और इससे उत्तममदिरा दूसरी नहींहोती पर अमीर ने अपनी अवस्था भरमें दारू बदहोशीकी नहीं पीथी उसकी बातों को सत्यजाना चारपांच गिलास पीनेके पश्चात् अमीर के साथी झुक २ कर गिरनेलगे जब अमीर ने उनका यह वृत्तान्त देखा तब उठने की इच्छा की तो खुदभी पृथ्वीपर गिरपड़ा तब बादशाह मिस्रने अपने वज़ीर से कहा कि देखो हमने यही विचार किया था उसी समय आज्ञादी कि अति शीघ्र जल्लादोंको बुलाओ कि हमज़ाका शिरसाथ हम राहियों के काटकर शुतरसवारको देकि वह अतिशीघ्र नौशेरवां बादशाह के समीप पहुंचावे तब फिर क़ारवां ने हाथ जोड़ कर विनय की कि सत्य है कि आपने ऐसे बलवान् शत्रुको यत्नसे अतिशीघ्र अपने आधीन करलिया है परंतु मेरी बुद्धि में यह आता है कि अभी हमज़ा का मारना उचित नहीं है क्योंकि हमज़ा के ऐसे २ मित्र हैं कि हमज़ा के मारने का

हाल सुनकर मिस्र की सिट्टीतक खोदकर उड़ादेंगे जिनमेंसे एकखुसरो जिसके साथ लाख सवार और बहुत से पैदल जो अपने जीव पर खेलते हैं और सब बड़ेबड़े बली और शूरबीर हैं दूसरे बहराम शाह जिसके साथ कई लाख चीनी और खाकानी सवार और बहुत पैदल हैं और हर एक तलवार बहादुर हैं तीसरे मुक़ाबिल जिसके साथ कई सहस्र तीरंदाज़ हैं चौथे असद जो सब से बलवान् और शूरबीर हैं और ऊंट पर अकेला रहता है इन सब बातों से उचित है कि इनलोगों को क़ैद रखिये और बादशाह नौशेरवां को पत्र लेजिये जैसी वह आज्ञादेवे वह कीजियेगा जो बादशाह हमज़ा को मारने की आज्ञादेवे तो मारकर अपने हौसिले को मिटाइयेगा मिस्रके बादशाह ने कहा कि यह बात अति उत्तम है और मैंने भी यही विचारा है परन्तु केवल इतनेही बात का संदेह है कि जब तक दूत आवे जायगा जो इसी समय में असद आगया और हमज़ा को छुड़ा लेगया तो सब परिश्रम वृथा जायगा और तब हमज़ा किसी प्रकार से हमको उठा न रक्खेगा और दुबारा फ़साद उत्पन्न होगा कारवां ने कहा मैं पत्र का जवाब दो दिनमें मंगा सक्ता हूं परन्तु जो बादशाह जवाब लिखने में विलम्ब न करें और किसी प्रकार से मार्ग में आपत्ति न पड़े मेरे घर में एक जोड़ा मदायनके कबूतर का है आप पत्र लिख दीजिये मैं उसके गलेमें बांधकर प्रातःकाल यहां से छोड़ूंगा संध्या को वहां पहुंचेगा जो बादशाह शीघ्रही जवाब लिखा तो दूसरे दिन यहां ले आवेगा बादशाह ने उसकी बुद्धि की बड़ी प्रशंसा करके लुहारों को बुलाकर आज्ञा दी कि हमज़ा सहित उसके साथियों के पैरों में बेरियां डालकर चाह यूसुफ़ में क़ैद करो और सरहंग मिस्र के सरदार को बुलाकर आज्ञादी कि तुम साथ अपने सिपाहियों के इन क़ैदियों की ख़बरदारी में रहो और किसी से भेट और मेलकी बातें नकहना नहींतो असदआकर इनकोछोड़ाले जायगा और परिश्रम वृथाजायगा और लज्जाप्राप्तहोगी औरनगर में ढिंढोरापिटवा दिया कि जो कोई हमज़ाका नाम लेगा वहबिना बादशाह की आज्ञा के मार डाला जावेगा नगरबासियों ने डर के मारे मुसल्मानों का नाम लेना छोड़ दिया इस प्रकार से प्रबन्ध करनेके पश्चात् दूसरे दिन एक पत्र नौशेरवां के नाम लिख कर कबूतर के गले में बांध कर मदाइन की तरफ़ उड़ादिया वह वायुके घोड़ेपर सवार होकर उसी तरफ़कोगया ॥

कबूतर का मदाइन में पत्र लेकर पहुंचना और मुक़ाबिल आदिक के मारने का यत्न करना और असद का आजाना ॥

आशिक़ों ने जिन की वाक्य रचना में सुमधुर भाषी पक्षियों की ऐसी माधुर्य है औ इश्क़ बाज़ लोग कि जिनके विचारांश की उच्चता आकाश गामियों की ऐसा है बरराह रूपी पक्षी को पंक्तिरूपी पींजड़े में बन्द

करके तमाशा देखने वालों का देखाते हैं और नई २ भांति के आश्चर्यों को यों वर्णन करते हैं कि कबूतर ने मिश्रसे छूट कर जा मन्नाटाभरा ते। शाम न होने पाई कि मदाइनमें पहुंच कर बादशाह नौशेरवां के कबूतरों की ठाटपर जाकर दम लिया कबूतर बाजने नया कबूतर देख कर अपने कबूतरोंका खोलकर जाल फैलाकर दाना फेंका और कटोरे का पानी उछाला क्योंकि वह कबूतर तमाम दिन का भूखा प्यासा था सब से पहिले जालमें जारहा कबूतर बाजने दौड़ कर उसको पकड़ा तो देखा कि एक पत्र उस के गले में बंधाहै पत्रको खोलकर नज तक के समीप ले गया और कहाकि इस समय मैंने एक कबूतर पकड़ा है उसी के गले में यह पत्र बंधा था सो उसको मैं आपके समीप लायाहूँ नजतकने उस पत्रको जो कबूतर के परों से बंधा था पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बादशाह को दिया उस पत्रके पढ़ने से बादशाह भी प्रसन्न हुआ नज तक ने कहा अब अति शीघ्रही हमजा के मारने की आज्ञा लिख कर पत्रको दीजिये कि जो मेरे निकट एक कबूतर मिश्र का है उसके गले में पत्र बांधकर प्रातःकाल उड़ादूंगा निश्चय है कि संध्या तक लिखने वाले के पास पहुंच जायगा और इसमें किसी दूसरे की सम्मति न लीजिये नौशेरवांने कहा ऐसे २ कार्योंमें बुजुरचमेहरकी सम्मति लेना अवश्य है क्योंकि मुझको पिताकी आज्ञा पालनी जरूर है तब वह बोला कि अति उत्तम है परन्तु बुजुरचमेहर मुसल्मानहै अपनी जाति का पक्ष अवश्य करैगा और हमजा ऐसे बलवान्‌का बार२ वशमें आना कठिन है बादशाह ने उत्तर दिया कि इसी बातमें बुजुरचमेहर की भी परीक्षा होजायगी और विचार भी प्रगट होजायगा यह कह कर बुजुरचमेहरको बुलाकर पत्रदिया पत्रको देखतेही विक्षिप्त होकर अपने चित्तमें कहा कि बड़े आश्चर्य की बातहुई परन्तु स्वस्थहोकर कहा कि परमेश्वर आपका कार्य सिद्ध करै कि आपभी अलग रहें और सब संदेह मिट जायगा परन्तु अभी हमजा के मारने की आज्ञा देना उचित नहींहै कदाचित वहहत्साम्त अम्भौर वहराम वसुआविल तक प्रकट होगा तो वे मदाइन के सम्पूर्ण शीर्षों का नाश करदेंगे और मिश्र की जो दशा करैंगे उसको परमेश्वर जानै प्रथम तो आप इन लोगों का यत्न कीजिये तत्पश्चात् हमजाके मारने की आज्ञा दीजिये नजतक बोला कि इन लोगों का मारना कुछ बड़ी बात नहीं है कल जिस समय वे लोग सभा में आवें उस समय उनको शराब वेहोशी की पिला कर पकड़ लीजिये तत्पश्चात मिश्र के बादशाह को हमजा के मारने के वास्ते आज्ञा लिखकर उसी कबूतर के गले में जो आप के पास है बांध कर उड़ा दीजिये ॥

और जब हमजाका सिर आवे तब लन्धौर आदिको भी मारकर सदैव के लिये अपने देशसे उपद्रव मिटादें नौशेरवांको यह सम्मति अतिप्रसन्न आई और नजतकने उसकी बुद्धिकी बड़ीप्रशंसाकी जोकिनजतक बुजुरुच-मेहरको अति ईश्वरका भक्त जानता था न तो आप उसरात्रिको अपने स्थानको गया और बादशाहसे कहकर बुजुरुचमेहरको भी न जानेदिया प्रातःकाल जब सभाहुई तो लन्धौर बहराम वो मुक़बिल भी यथोचित सभामें आके अपने २ स्थानपर बैठे बादशाह उसदिन अति प्रसन्नता से उनके सन्मुखहोकर उनको बिषमिली मदिरा पिलानेलगा तब पोर्तु-गालीय व फ़िरंगी बेहोशहोकर गिरनेलगे और बुजुरुचमेहर ने आखें छुपाकर लन्धौर आदिकको मदिरापीनेसे बहुत निषेधकिया परन्तु उन लोगोंने कुछ न समझा केवल मुक़बिल दो गिलास मदिरा पीकर शिर की पीड़ाका बहानाकरके सभासे उठगया और गिरता पड़ता बुजुरुच-मेहर के स्थानपर जाकर पड़ा और लन्धौर व बहराम मदिरा पीकर अचेतहो कुरसियोंपरसे गिरपड़े तब बादशाहने अति शीघ्रता से पैरमें बेड़ियां गलेमें तौक कमर में जंजीर आदि से बांधकारागार में भेजकर मिश्र के बादशाह को यह पत्रलिखाकि हमजा का शिरकाटकर अति शीघ्रतासे हमारे समीप भेजदेव यह लिखकर नजतकको दियाकिप्रातः-काल कबूतर के गलेमें बांधकर उड़ादेना और इस भेदको किसी से न कहना यह आज्ञादेकर बादशाह दरबार से उठकर महलमें गये और बुजुरुचमेहरने अपने स्थानपर आकर देखातो मुक़बिलदाहकी नशासेमुरदे के समान पड़ा है उसको चैतन्यकरके सबवृत्तान्त सुनाया तब मुक़बिल हाय २ करनेलगा तब बुजुरुचमेहरने कहाकि हाय २ करने से कुछ न होगा इसका उपायकरना चाहिये तुम हमारी ऊटनीपर सवारहोकर दौड़ो और मार्गमें किसी यत्नसे कबूतरको मारडालो उसीके मारनेसे सब बात है यही उपाय हमारे निकट उचित है मुक़बिल उसीसमय सवारहोकर निकला बुजुरुचमेहर ने रमलसे प्रश्नउठाया तो मालूम हुआकि यह कार्य्य केवल अमरूही से पूर्णहोगा और बिना उसके कुछ न होगा तब बुजुरुचमेहर बड़े सन्देहमें होकर बाहर खड़ा था उसके बड़े पुत्रने कहाकि आप किस संदेहमें हैं तब बुजुरुचमेहर ने कहाकि तू कुरिया पहिनकर मुझको बताकि किस सन्देहमें हूं तब उसने बत-लायाकि आप किसी मनुष्यके आनेके सन्देहमें हैं वह शाम तक आपके समीप अवश्य पहुंचेगा तब खुद उसने सकल कुरियाको मिलाकर देखी और अति प्रसन्नहोकर नौकरसे कहाकि देख कौन मनुष्यदरवाजे पर खड़ाहै और उसकी सूरत सकल किसप्रकारकी है उसने आकर कहा कि एक मनुष्य रंगीन पोशाक पहिने और सपेददाढ़ी का खड़ा है और यह कहताहै कि ख़्वाजेको मेरा सलामकहो और उसको यहां भेजदेव

यह सुनकर नंगेपैर दौड़कर अमरूको घरमेंलाया और सब वृत्तान्तकह सुनाया और कहाकिजो तूने कबूतरको मार्गमेंन मारातो अच्छानहीं हमसबा कलमारा जायगा यह सुनकर अमरूरोनेलगा, और कहाकि ऐ ख़्वाजे मैं किसप्रकार से सहस्र कोस एक दिनमें जासक्ता हूं और न कबूतर के समान बालवपर हैं कि उड़कर चलाजाऊं तब बुजुरुचमेहर ने कहाकि ऐ अमरू मैंने तेरी कुण्डली में देखाकि तीन बार तू अपनी अवस्थामें ऐसा दौड़ैगाकि न कोई दौड़ा है न दौड़सकेगा प्रथमतो इस कबूतरके साथ सहस्र कोस एक दिनमें जायगा दूसरे जब अमीर के शत्रु लोग चौबअकाबीन पर खींचेंगे तो ग्यारह सहस्र कोस बारह दिन में जाकर मुसल्मान सरदारों को जमाकरोगे तीसरे हमज़ाके पुत्र के लिये सिकन्दरके बनमें सात सहस्रकोस सातदिनमें जायगा और किसी समय मार्गमें न थकेगा अमरू ने कहाकि ऐ ख़्वाजे बड़े रंजकी बात सुनाई कि मुझै अवस्थाभर दौड़तेही व्यतीतहोगा ख़्वाजेने कहाकि प्रसन्नहो कि इस दौड़धूपमें इतनी द्रव्य प्राप्तहोगी जो किसी बादशाहने भी न देखीहोगी इसके पश्चात् बुजुरुचमेहर ने कहाकि अबदेरी न कर मुक़बिलको भी मैंने साड़िनी पर सवार कराकर भेजा है मार्ग में तुमको वह मिलेगा और निश्चय है कि अति शीघ्र तुम उसके समीप पहुंचोगे अमरू बुजुरुच-मेहर से बिदा होकर हिन्द और चीनके अफ़सरोंके समीपआकरकहाकि तुम लोगों का यहां बासकरना उचित नहींहै तुमलोग जाकर बेशेफ़ी-चमें छावनी करो और ईश्वर की कृपाके आश्रित होकर देखो क्या २ रचना देखाई पड़ती है यह कहकर कबूतर के मारने के लिये चला

जाना अमरू का मिश्र को कबूतरके पीछे और मारना उसका मिश्र के दर-
वाज़े पर और छोड़ाना अमीर का कारागार से ॥

लेखनी रूपी पक्षिणी कागदरूपी विस्तृत मैदानमें यों गूंज रहीहै कि जब सुबः का डंका बजा उसीसमय अमरू उठकर बादशाह के कबूतर खानेके समीप जाकर खड़ा हुआ और जिससमय किनजतकने पत्रकबू-तरके गलेमें बांधकर मिश्रकी तरफ़ ठाट परसे उड़ाया उसीसमय अम-रूने नजतकसे कहा कि जोहमज़ा या उसके साथियोंका एक बालभी बिखरेगा तोतूतो क्या नौशेरवां तक मारेजांयगे और जो इसमेंशरीकहैं उनके बालबच्चेभी न बचैंगे इससमय तो तेरे कबूतरके शिकारको जाता हूं देख तुझको क्या खराब दिन दिखलाताहूं और जिससमय नजतकने कबूतरको मिश्रकी तरफ उड़ाया उसी समय अमरू भी कबूतरके पीछे परमेश्वर २ कहता हुआ उड़ा चला जाता था और जहां कहीं नदी नालेआदिक पड़तेथे कूदकरपार होजाताथा और किसीरोधक वस्तुको कुछ न समझताथा बहरीकेसदृश कबूतरकेपीछे चलाजाताथा अबथोड़ा वृत्तान्त हतज़ मुक़बिल का इसप्रकार वर्णन करता हूं कि जब वह सा-

ड़िनीपर सवार होकर चला तो सत्तर कोस तक निश्चिन्त चला गया परन्तु एक नहर का जल मोतीसेभी अति स्वच्छ देखकर साड़िनी से उतरकर साड़िनी को वनमें चरनेके लिये छोड़दिया और आप कमरमें जो रोटी बंधीथी उसको खोलकर खानेलगा संयोगसे जो उसबनमें घिया विषको जड़ी बहुत जमाहुईथी ऊंटनीने जोखाई शीघ्रही मरगई मुक्त-बिल अति विकल होकर पैदर चला और कई कोस तकगया कि पांव उसके शिथिल होगये लाचार होकर एक वृक्षके नीचे बैठकर रोते २ बिकल होगया इतनेमें अमरू जो कबूतरका पीछाकिये चलाजाता था मार्गमें मरी हुई साड़िनी देखकर समझा कि यहवही साड़िनीहै जिस पर चढ़ कर मुक्तबिल आयाथा ज्योंहीं थोड़ी दूर आगे गया देखा कि पैर सूजनेसे मुक्तबिल एक वृक्षके नीचे बिकलपड़ाहै अति शीघ्रताके साथ जल लेकर उसके मुखमें डाला तब मुक्तबिलके नेत्र खुल गये और रोने लगा अमरूने कहा कि यह रोनेका समय नहीं है शीघ्र मेरे कन्धे पर सवारहो किसी प्रकार इस कबूतरका शिकार करू मुक्तबिलने तीरको कमान पर चढ़ाकर अमरू के कन्धे पर सवार हुआ तब अमरू अति शीघ्रताके साथ उड़ता हुआ वहांसे चला कभी तो कबूतर मुझसे आगे और कभी मैं कबूतरसे आगे होजाताथा अभी तक सूर्य न अस्त हुये थे कि कबूतर मिस्रके क़िले की दीवारके समीप पहुंचकर चाहताथा कि भीतरजाऊं कि मुक्तबिलने अपने सफ़ाकवाणसे मारकर गिरादिया अम-रूने उसके गलेसेपत्र खोल कर पढ़ा और अमीर के दिखलाने के वास्ते पत्रको अपने जेबमें रखलिया और कबूतरको मारकर उसकामांस मुक्त-बिलके खानेको दिया और मुक्तबिल समेत जहां मुसल्मानोंकी सेनापड़ी थी जाकर पहुंचा तब सुल्तान बख़्त मग़रबी अमरू को देख कर रोने लगा अमरूने उसके आंसू अपने रूमाल से पोंछकर कहा कि अब कुछ सन्देहकी बात नहीहै परमेश्वर चाहताहै तो शीघ्र अमीरको छुड़ाकर लाताहूं और तुम सबको दिखाताहूं जो ईश्वरने चाहा तो मैं अमीर को इसदुखसे छुड़ाकर मिस्रके मक्कार बादशाहको कैसे २ तमाशे दिख-लाताहूं जोकि अमरू मार्गका थका था रातभर बेहोश होकर पड़ा रहा जिससमय अरुणोदय हुआ और सूर्य प्रगट हुये उसीसमय अरबी का भेष धर मिस्रमें जाकर देर तक फिरा लेकिन अमीर की कुछ चर्चा कहीं न सुनी, संध्यासमय देखा कि एकभिश्ती कन्धेपर मसकरक्खे प्यासों को पानी पिला रहाहै मालूम हुआ कि यह मनुष्य बुद्धिमान और वृद्ध है अमरू ने उससे जलमांगा उसने कटोराभर जल अमरू के पीने को दिया अमरूने कुछजल पिया और कुछ फेंककर कटोरे को अपने झोलेमें रखकर भागा भिश्तीभी उसके पीछे यह कहता हुआ दौड़ा कि कहां का उठाईगीर है जो मेरा कटोरा लिये भगा जाता है चौकसे निकल

अमरू खड़ाहो गया तब भिश्ती अमरू के हाथ से कटोरा छीन लिया और चौक की तरफ चला तब अमरू ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर एकान्तमें लेजाकर पूछनेलगा कि ऐ भिश्ती मिस्रके बादशाहने अमीर हमजा को कहां क़ैद कर रक्खा है वह बेचारा किस आफ़तमें फंसा है तब उसभिश्ती ने अमरू के हाथ पकड़ कर चिल्लाना आरम्भ किया कि दौड़ो २ मैंने अमरूको पकड़ाहै चारों तरफ से लोग उसके पकड़ने को दौड़े अमरू ने अपने चित्तमें बड़ा आश्चर्य किया कि इसभिश्तीने मुझको कैसे पहिचाना अति शीघ्रतासे उसके हाथोंको अपने दांतों से काटकर छुड़ाया और बलसे कूदकर एकऊंचे स्थान पर चढ़कर कोठों २ कूदकर दूर निकलगया जब यह खबर सरहंग मिस्रीतक पहुंची तब वह अपने शागिर्दों समेत चारोंतरफढूंढ़ने लगा जबपता नमिला तो अपने शागिर्दोंको आज्ञादी किजो कोई नया मनुष्य मिले उसीको पकड़लाओ वही अमरू नामवरहै आखिरको अमरू चलते फिरते एक तरफ देखा कि एक तकिया लगी है उसपर एक अन्धा फ़क़ीर बैठा है अमरू एक खोटा पैसा देकर बैठगया वह आशीर्वाद देनेलगा तब अमरूने जाकर उससे हमजा का हाल पूछने लगा वह अमरू का दामन पकड़ कर सरहंग मिस्री की दोहाई देने लगा तब अमरू ने अपने चित्तमें सन्देह करके विचार किया कि इस अन्धेने किसतरहसे मुझे पहिचाना वहांभी मनुष्य हरतरफ़से जमा होगये और अमरूके पकड़ने की यत्न करने लगे अमरू वहांसे अपने दामनको काटकर भागगया इसीसमयमें जब रात्रि हुई और पहरा फिरने लगा तब अमरू मीर आग्ना के डर से रात्रि भर एक कंदला में रहकर न कुछ भोजन किया न जल पिया सबेरा होतेही एक सौदागरका भेष धारण करके इधर उधर फिरते २ कातवालीकेसमीप जानिकला उससमयें सरहंग मिस्रीपोशाक पहिने कुरसी पर बैठा हुआ अपने साथियों के साथ तमाशा देख रहा था अमरू भी मार्गमें खड़ाहोकर तमाशा देखने लगा सरहंग मिस्री और अमरू की दृष्टि एक होगई समीप आकर पूछनेलगा कि आपकौनहैं और कहांसे आते हैं और आपका नामक्याहै और इस नगरमें किसप्रकारसे आयेहैं अमरूने उत्तर दिया कि मैं सौदागरहूं चीनमें मेराअस्थानहै आपकेनगर का नामसुनकर आयाहूं नगरके दरवाजेपर उतराहूं नाममेरा (ख़्वाजे तयुकुसबिन मायूसबिन सरबोसबिन ताक़बिनतक़तराक़ बाजरगानहै) सरहंग ने कहा कि मैंने आजके सिवाय और कभी ऐसा नाम नहीं सुनाहै अपने सिपाहियों में से दोको बुलाकर आज्ञादी कि इनके साथ जाकर देखआओ कि कौन २ वस्तु इनकी दुकानपरहै ख़्वाजेने कहा कि यह मसलसहीहै सही दूरकी ढोल सोहावनी होतीहै मैं अपने नगरमें सुनताथा कि मिस्र एक उत्तम स्थानहै और वहांहर प्रकारके मनुष्यों का

गुज़रहै और माल्व असबाबकी रक्षाहोतीहै परन्तु बड़े सन्देहकी बात है कि राजाके मनुष्य सौदागरों को तकाज़ी लिया करतेहैं और सौदागरों और यात्रियोंको बेप्रतिष्ठित जानते हैं सरहंग मिश्रीने कहा यह सत्यहै इस नगरमें हर प्रकारसे रक्षा जीव वस्तुकी होतीहै और मैं जो आपकेसाथ मनुष्य भेजताहूंतो इसकारण करके कि रात्रिको पहरेवाला आपके स्थान पर वास्ते रक्षा के भेजूंगा अमरू ने कहा जो यह है तो अति उत्तम है यह कह कर दोनों को साथ लेकर चला॥

मित्रता करनाअमरूका सरहंगमिश्रीके शागिर्दों केसाथ और वाज़ीले जानाउनदोनों मक्कारोंसे॥

अखबारनवीस और बहुतसे बुद्धिमान लोगयोंलिखते हैं कि जब अमरू उन दोनों मनुष्यों को साथले कर दोपहर तक इधर उधर स्थानों पर फिराकिया तब उनलोगोंने कहा कि यह बतलाइये कि आपकिसस्थान पर स्थित हैं और इसप्रकार से आप क्यों सन्देह करतेहैं अमरूने कहा कि नाम उस दरवाजे का अमन है और मैं उसकी रास्ता भूलगया हूं ईश्वर जाने वह रास्ता कहां है दोनों मनुष्य बोले कि आपने प्रथमही क्यों न कहा कि आपको पहुंचाकर हमभी अपने स्थानपर ठंढे २ चले जाते अब चलिये आपको उसस्थानपर पहुंचादेता हूं तब अमरूने कहा कि अबदोपहर हुआहै अभीतक न कुछ भोजनकिया है न जलपिया है मारेक्षुधाके मरेजातेहैं उनलोगोंनेकहा कि यहांसे बहुतसमीप बाजार है वहांचलकर भोजन लेकर खाइये और स्थानपरचलकर हमलोगोंकी विदाकीजिये अमरूने कहा कि तीन मनुष्यों का भोजन कितने में होगा उनलोगों ने कहा कि एक रुपया से पूर्णहो जायगा तब अमरूने कहा कि एक रुपयेसे क्याहोगा पांचरुपयेका अतिउत्तम भोजन नानबाई की दुकानपरसे लावो तब उनमनुष्योंने चित्तमेंविचाराकि यह कोईबड़ाधनवान मनुष्यहै तब अमरू ने एक नानबाईकी दुकानपरजाकर पांचरुपये का अति उत्तम भोजन उनलोगोंसे मंगवाया और उनके साथ बैठ कर भोजनकरनेलगा जब पूर्णहोगया तो उठकर टहलनेलगा और कहा कि मैंतो सन्तुष्ट होगया तुमलोग अच्छेप्रकार से भोजनसबखालो और उन लोगोंसे कहनेलगा कि हमारेपास इससे उत्तम २ भोजनहैं चलकर तुम लोगोंको झोलियां भर २ देवेंगे और हरप्रकार से तुमलोगों को प्रसन्न करेंगे तब वेदोनों मनुष्य अति प्रसन्नहुये और अपने मनमेंकहने लगे कि गुरूने आज अच्छे धर्मात्माके साथभेजाहै और प्रातःकाल किसी अच्छे का मुखदेखा है अमरू उनके नेत्रों की तरफ देख देखकर टहलनेलगा ज्योंहीं उनलोगों ने पलकबदली त्योंही कोठेपरसे नीचेउतरकर चलदिया वह दोनों मनुष्य जब भोजनकरके नीचे आये लोगोंसे पूछनेलगे कि वह मनुष्य जिसने हमसे भोजन मंगवाया है कहांगया तब उस नानबाई ने

कहा कि क्या भोजन करके दामदेना कठिन मालूम होता है मैं उसको क्या जानूं जिसके हाथ में खाना दिया है उसी से रुपये लूंगा दुकानदारने कहा कि मैं वे पांच रुपये दिये तुम लोगों को यहां से आगे न जानेदूंगा और जो अधिक बातें करोगे तो इतना मारूंगा कि जो खायाहै वह सब भूलजावोगे वे दोनों बोले कि नानबाई होकर कैसी २ बातें कहताहै क्या मारखायगा तब वह नानबाई बोलाकि कबाब खाचुकेहो केवल चासनी बाक़ीहै भोजनकरती समय तो न बोले अब दाम देती समय दुःख मालूमहोताहै और इधर उधर टहलातेहो अब अच्छी बात इसीमें है कि पांचरुपये हमारेदेदो नहीं थोड़ी देरमें मारमार के अचार निकालदूंगा और असमुर की ऐसीसूरत लेकररहजावोगे हलुवा निकल आवेगा मामा की चपातियां नहींहैं कि जब भूखलगी उठाकर घर में लेजाकर खालिया जब दूकानदार ने ऐसी २ बातें कहीं तब वे दोनों अति क्रोधवान होकर उससे लपटगये और मारनेलगे तब नानबाईने दोचार मनुष्योंको लेकर अच्छीप्रकारसे उनका हलुवाबनाया तब तो धीराहोकर प्रार्थना करनेलगे जोकोई मेरा वृत्तान्त सरहंग मिश्री तक पहुंचादेवे तो मेरेजीव की रक्षाहो किसी दयावन्तने सरहंगमिश्री से जाकर कहा कि तुम्हारे दोसिपाही और एक नानबाई से दालरोटी बटरहीहै जो अति शीघ्रही नजावोगेतो मारजूतोंके उनका दमनिकाल देगा सरहंग मिश्रीने उसस्थान पर आकर सब वृत्तान्त सुना और पांच रुपये नानबाई को देकर उनदोनों मनुष्यों को नौकरी से छुड़ा दिया अब असरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसदिन भी फिर फिराकर रात्रिको एक भुजवे भारमें जाकर सोरहा और सुबहको साधुकाभेष धारणकर के दुकान २ सैरपढ़कर भीख मांगनेलगा संयोगसे सरहंगमिश्री अपने सिपाहियों के साथ उसी मार्गसे आ निकला असरू को देखकर पहिचाना कि अवश्यकरके यह वहीयार असरू है उसके समीप जाकर एक अशरफ़ी देकर उसके हाथ को पकड़ कर लोगों को बुलाया कि दौड़ो यह असरूहै और जो असरू लरव थैली यालीका अपने हाथोंसे पहिने रहता था जब सरहंगमिश्रीने अपने यारों को पुकारा तब वह हंसकर हाथ अपना खींचकर सरहंग मिश्री का ताज लेकर एक कोठे पर कूद गया और थोड़ीही समय में छतों २ जाकर हवा होगया तब सरहंग मिश्री पागलों की तरह अतिलज्जित होकर शिरखोले हुये कोतवाली पर आया और विचारने लगा कि प्रतिष्ठाकी प्रतिष्ठागई व बादशाहकी दृष्टिसे अलगउठा और संसारमें बदनाम ऊपरसे हुआ लोगों से कहा कि जो कोई असरू को लावेगा उसको मैं अतिप्रसन्न करके बादशाहसे अपनी नायबियत की खिलत दिलवाकर तरक़्क़ी का आश्रित कराऊंगा तब सब सिपाही अपनी २ पोशाक पहिन कर सब जगहों पर जाकर

ढूढ़ने लगे परन्तु अमरू कब मिलता था दिन के समय तो एक नाले में पड़ारहा रात्रिको दोघड़ीरात्रि बीतनेपर एक साधुका भेष धारण करके एक नानबाईकी दुकानपर गया उसने पूछा किक्यों शाहसाहब कहांसे आनाहुआ और आपका नामक्याहै अमरूबोला कि बाबाफ़क़ीरोंकेनाम से क्याकामहै मैंतोतेरा मेहमानहूं इसनगरमें फिररहाहूं मेहमानका नाम सुनतेही नानबाई दुकानपर से उतरा और उसको अपने साथले जाकर अतिप्रसन्नताके साथकबाब और शराबखिलानेलगा थोड़े समयके व्यतीतहोने पर फिर पूछा कि जोनाम वनिशान बताने में आपको कुछ दुःखनहो तो बताइये क्योंकिदूसरे नगरके मनुष्यसे नाम वनिशान बताना उचितहै तब अमरूने कहा कि फ़क़ीरका पुत्रहूं और मदाइन नगरकी तरफ़से आताहूं नानबाईने कहा कि तूने कभी यार अमरूको भी देखा है वह जीताहै यामरगया अमरू बोला कि चलतीसमय कईदिन उसके स्थानपर बासकर आयाहूं और कईदिन तक मेहमानी खाआयाहूं उस नानबाई ने कहा कि यह बड़ा निमक हराम है जो मैं उसको देखता तो अवश्य दण्डदेता अमरू बोला कि उसने तेरेसाथ क्या बदी कीहै जो तेरामन उससे बिगड़ा है नानबाई बोला कि मेरेसाथ तो क्याकरसक्ता है परंतु मेरामन उससे यह बिगड़ाहै कि हमज़ाकी सहायता से उसने धन प्रतिष्ठा आदि प्राप्तकियाहै परंतु उसकी खबर नहीलेताहै कि आज इतनेदिनों से वह बादशाह मिस्रकी बन्दमें है अमरू बोला कि जोअमरू आता तो क्या करता यहां जिसनवीन मनुष्य को पातेहैं अमरू जानकर पकड़लेजाते हैं वह नानबाई बोला कि जो वह हमारेपास तक आता तो उसको हम हमज़ातक पहुंचादेते तब अमरूबोला कि मैंही अमरू हूं मुझे हमज़ाके समीप लेचल नानबाई बोला कि ऐफ़क़ीर तुझै दोही गिलासमें नशाहोगया कि सिड़ी होकर बकने लगा भला कहां तू और कहां अमरू और कहां मदाइन और कहां उसका आना यदि मैंने उसकी सूरत नहीदेखी परन्तु लोगोंसे उसका वृत्तान्तसुनाहै तब अमरू ने कहा कि अबमें वृद्धहोगया हूं इसकारण से सब प्रकार के वस्त्रआदि का पहिरना छोड़दियाहै और नानबाई की दूकान २ से रोटी मांगमांग कर भोजनकरताहूं फिर अपने कपड़े आदि पहनकरके बोला कि देखो अब मैं अमरूहूं यानहीं नानबाई देखकरबोला कि हमज़ाको बादशाह मिस्रने यूसुफ़ीनाम कारागारमें रक्खाहै चलो मैं तुमको दिखलादूं कि वह बेचारा कैसे दुःखमें है यह कहकर नानबाईने भी अपने वस्त्रपहिन अमरूको साथलेकर छिपता२ उसकी तरफचला थोड़ीही दूरजाके देखा कि एक मनुष्य दूकानपर बैठाहै नानबाईने कहा कि तू कौनहै जब वह नबोला तो तलवारलेकर दौड़ापर उसने खड्गछीनकर उस नानबाई को उठाकर दैमारा तब अमरूभी खंजर निकालकर उसपरदौड़ा जबस मीप

पहुंचा देखा कि मुक़बिल है तो गलेसे मिलाकर पूछनेलगा कि तू यहां किसप्रकार से आयाहै उसने उत्तरदिया कि मैंभी कईदिनोंसे इसीनगर में हमज़ाके लिये फिररहा हूं परन्तु पता नहीं मिलताहै उस नानबाई ने जो मिलतेहुये देखा तो कहा कि इसने तो हमको देमारा है और तुम मिलतेहो तब अमरू ने कहा कि यह मुक़बिल वफ़ादारहै जो कि हमज़ाका बड़ा मित्र व शुभचिन्तकहै और उसीकी तलाशमें फिररहाहै तबवह भी मिला और तीनों मनुष्यउसक़िलेकी तरफ़चले औरधीरा २ जाकर उसके समीपपहुंचे अमरूने एक कमन्दफेंकी परन्तु उसका सिरा मुखपर आगिरा और दूसरीबार फिर जोफेंकी वहभी न लगी तब उस नानबाईने फेंकी पर वहभी न लगी अन्तको मुक़बिलने फेंकी तो उसकी कमन्द दिवारपर चपकगई और तीनों मनुष्य उसपर चढ़कर नीचेउतरे तो देखा कि एक मनुष्य पोशाक पहिने खड़ाहै और किसी का आसरा देखरहा है जब अमरू उसके समीपगया तो उसने अमरूकी तरफ़हाथ बढ़ाया तब अमरू सन्देहमें होकर कहने लगा कि जो यहमनुष्य लोगों को बुलायेगा तो मैं तो किसीयत्न से निकलजाऊंगा परंतु येदोनों मनुष्य फसजायंगे इतनेही में उसने अमरू का हाथ पकड़कर चूमा और कहा कि मैं बादशाहमिस्र की बेटीहूं जहरमिस्री मेरा नामहै और इबराहीम अलेहुस्सलामने मुझे मुसल्मान करके मुक़बिलके साथ बिवाह करने की आज्ञादीहै और आज्ञादी है कि फ़लानेबुर्ज की ओरसे अमरू और मुक़बिल फ़लानी समय आवेंगे तू उसी स्थानपर खड़ीरहना जब वेआवें तो अतिप्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहोकर उनकी मेहमानी करना इसकारण सायंकाल से खड़ीहुई तुम लोगों को आसरा देखरही थी यह कहकर पांच सहस्र का हार गलेसे उतारकर अमरूको दिया अमरूने उसका मुख चूमा और उसको अपने पास रखलिया और मुक़बिलसे कहा कि लीजीये शकुन अच्छाहुआ ईश्वर कार्य्यसिद्धकरेगा जहरमिस्रीने पांचसहस्र अशरफ़ी और भी अमरू को देनेका इक़रार किया तब जहरमिस्री उन तीनोंमनुष्यों को साथ लेकर क़िलेकी दीवारसे नीचे उतरी और कारागार यूसुफ़ी जिसमें अमीर अपने साथियों समेत क़ैदथा गई ॥

छुटना अमीरका कारागारयूसुफ़ी से और बचना सरहंगमिस्री से ॥

क़लम नवीन २ आशयअन्धकार अप्रकट कूपसे निकालकर अंगुलियों की सहायता से अपूर्व वृत्तान्त को साफ़कागज़पर योंलिखतीहै कि जब वे चारों मनुष्य कारागार के समीप पहुंचे तो सामने से सरहंगमिस्री प्रकट होकर सलामवालेकम कहकर कहा कि ऐ अमरू इस समय मैं सोरहाथा कि इबराहीम अलेहुस्सलामने नर्ककुण्ड और बैकुण्ठ देखाकर मुसल्मान करके आज्ञादी है कि अतिशीघही जाकर उनचारों मनुष्यों के साथ होकर जो हमज़ा के छोड़ानेके लिये आयेहैं शीघही यत्नकरके

हमजा आदिको कारागारसेछोड़ा है और उसकार्य्यकोपूर्णकरके प्रतिष्ठा प्राप्तकरूं इतनेहीमें मेरी आंखनिद्रासे खुलगई और उठकर दौड़ाआया हूं अब तुम थोड़ीसमय ठहरो मैं यत्नकरलूं तब तुम लोगों को लेचलूं तब असकूने अतिप्रसन्नहोकर सरहंगसिम्रीको गलेसे मिलाय और उनचारों मनुष्योंसमेत एकस्थानपर छिपगया तब सरहंगसिम्री ने पहरेवाले को बेहोशकरके असकूको साथियोंसमेत उसकारागारपर लेगया तब असकू ने उन पहरेवालों का शिरकाट कर कुयेंका मुंहखोलकर उसमें कमन्द डालकर उतरा वहां जाकरदेखाकि वे बेचारेबैठेहुये परमेश्वरका ध्यान कररहेहैं और अपनी मौतकीघड़ी गिनरहे हैं जबअसकू को आहटपाई जानाकि बादशाहने मारनेकेलिये जल्लादको भेजाहै अबजीनेसे हाथधोवें इतनेमें असकूनेजाकर पूछाकि ऐमुसलमानोंतुममेंसे आदीकिसकानामहै आदीने डरसे कहा कि ऐयहमुझेमारने आयाहै अमीरकीतरफ़ देखकर कहा वह बैठाहै तो सब क़ैदी आदीकी बातपर हंसनेलगे तब असकू ने अपनी अवाज़ बदलकर कहा कि बादशाहने मुझे छोड़नेकी आज्ञादीहै तब आदी घबराकरबोला कि साहब आदी मेराहीनामहै मैंने हंसीकी थी असकूबोला कि सत्यहै मुझे तेराहो पतादियाहै कि वहलम्बाहै और हगर२ कर क़ैदियोंको दुःखदेताहै और कुएंको भी नष्टकरताहै सो उसे निकालकर मारो और उसकीलाश को दूरफेंकदो यहबात सुनकरआदी का दम निकलनेलगा और अतिलज्जित हुआ परन्तु अमीरने निश्चय कर के जाना कि यह असकू है और उन्हींकी ऐसी २ बातें होरहीहैं फिर अमीरने ईश्वरकाध्यानकिया तो जंजीरें डोरेकेसमान टूटगईं औरअसकूके डरानेकेलिये जंजीरलेकरदौड़े असकूने देखाकिजो जंजीर लगेगी तोमर-जाऊंगा बोलउठा किमैं असकू तेरा शुभचिन्तक और पुराना सेवक हूं अमीरनेअसकू को गलेसे लगाकर सब साथियोंको क़ैदसे छुड़ाकर कुएंसे बाहरनिकाला तब असकूने अपनासब वृत्तान्त जो उस समयतक हुआ था कहसुनाया और ईश्वरकी रचनापर बड़ाआश्चर्यकरके ऊपर जोदृष्टि की तो देखा कि प्रातःकालके तारे अमीरकी भाग्यके समान चमकरहे हैं और प्रातःकाल होनेकेनिकटहै तबअमीर असकूआदिके सहित बादशाह मिस्रकीतरफ़चले और जाकर तलाशकिया परन्तु उसका कुछ पता न मिला अमीर के साथी उसके बाग में जाकर फलफूल तोड़कर खानेलगे आदी ने जो अधिक मेवा खाया तो उसकोदस्तकी आवश्यकताहुई तो बादशाहीमकानमें जाकर दिशाफिरनेलगा संयोगसे उसस्थानपर बाद-शाहछिपाहुआ बैठाथा शिरसे पैरतक विष्टामें डूब गया जाना कि यहां भी जीव नहींबचता तब आदीके फ़ोते पकड़कर लटकरहा आदीके जो दर्दहुआ तो बेपानीलिये वहांसे उठकर भागा बादशाह मिस्रभीउसके साथलटकाहुआ चलाआया आदीने चिल्लाकरकहा कि इस नगरकी वायु

बड़ेआश्चर्यकी है कि मनुष्यकेपेटसेमनुष्य गिरताहैतब शाहबनीआदि दौड़ देखेंतो शाहमिश्रआदीके पेटको पकड़ेहुये लटकाहै हंसते२ लोट२ कर गिरपड़े और बादशाहमिश्रको नहवाकर अमीरके समीपलेगये अमीरने कहा कि ऐ बादशाह जैसा तूने किया वैसापाया अबमुसल्मान होकर कल्मापढ़नेमें देरी नकर और तेरेदेशसे मुझेकुछ प्रयोजन नहीं है तू राज-कर परन्तु मुसल्मानहोना अवश्यपड़ेगा बादशाहमिश्र जो कि अपनेसामने दूसरेको न डरता था कुछ और तौर बकनेलगा और संयोग से अमीरके समीप खड़ाथा उसने एकतलवार ऐसीमारी तो शिरधड़से अलगहोगया तब अमीरने जहरमिश्री को राजगद्दी पर बैठाकर उसका कारोबारी सरहंगमिश्रीको बनाकर खिलतदी और मुकबिलको जहरमिश्रीके साथ विवाह करनेकी आज्ञादी मुकबिलने हाथजोड़कर विनयकी कि जबतक आप मलका मेहरनिगार के साथ विवाह न करेंगे तब तक सेवकभी न करेगा इतनेमें दूतोंने खबरदी किनगरमें सबलोग मारेगयेहैं और जो बचे हैं वे जहाँ२ की दोहाई कररहेहैं अमीरनेउनलोगोंको बसने की आज्ञादी और सबकाखूनमाफ़करके आप मित्रोंकेसाथ बैठकरनाचरङ्ग करानेलगे और मुबारकबादीके डंकेबजनेलगे और शब्द उसके आसमान तक पहुंचे पश्चात् इसकेअमरूने खुसरोहिन्दऔर बहरामके क़ैदहोनेका सबवृत्तान्त कहकर वहपत्र दियाअमीर उसपत्रको पढ़कर रोनेलगा और अफ़सरों से कहनेलगा कि देखो यारो मैंने नौशेरवां के लिये बड़े २ दुःख सहेहैं और जोकुछ उसने आज्ञादी उसेपूर्ण किया परन्तु वहसदैव मेरे साथ शत्रुता करता चला आताहै अब मैं भी जो ईश्वर की कृपा होगी तो मदाइनमें पहुंचकर नगरको जलाकर उसकी बहू बेटियोंको सईसोंको दूंगा जो ऐसा न किया तो हमजा नाम मेरा न रखना और तुम सब गवाह रहना कि ईश्वरके समीपगुनहगार और संसारमें बदनाम न हूं जितने सरदार लोग बैठेथे सब एक मुख होकर कहने लगे कि सत्य है कि नेकी का फल बदी मिलता है तब अमीर ने वहां से सवार होकर अपनी सेनामें आकर कूचकी आज्ञादी, तैयारी होनेलगी जहरमिश्री ने अमीरसे जाकर प्रार्थनाकी कि दासी को मेहरनिगार के देखनेकी बड़ी इच्छा है और इस देशमें गद्दीपर बैठने से उसकी टहलुई होना उत्तम जानती हूं और उनकी टहलुई में मेरी प्रतिष्ठा है॥

दोहा॥

मेरे मन अभिलाष अस करि अंजन निजनैन। तव पद रेणुहि शुभगप्रद यश सनियत हे बैन॥

जोआज्ञाहोतो आपकेसाथचलूं और जबतकविवाह मलकासाहबाका आपके साथनहोतबतकमलकासाहबाकी सेवकाईमेंरहूं अमीरने उसकी विनय मानकर साथचलनेकी आज्ञादी और नगरका नायब कारवां को बनाकरजहरमिश्रीको साथलेकर मदाइनकीतरफ़कूचकिया अबनौशेरवां

का वृत्तान्त सुनिये कि एकदिन सभामें बैठाथा कि एकबारगी बोल उठा कि लन्धौर और बहराम को कारागार से निकालकर हमारे सन्मुख धार पर चढ़ाकर मारो बुजुरचमेहर ने कहाकि अभी इनका मारना उचितनहींहै और आपको किसीकाडरभीनहींहै कि इनलोगोंको मार डालिये परन्तु मैंने रमलमें बिचारा तो यह मालूम हुआ कि हमज़ा अभी जिन्दाहै और आपपर आजकल सितारे सखावत का घर है और मेरे विचारमें तो जोआपनगर छोड़कर थोड़ेकालके लिये बाहरचलेजावें तो अति उत्तमहोगा और जिससमय हमज़ाके मारनेकी खबरआवे उस समय इन दोनों को भी अपने सन्मुख धारपर चढ़ाकर मारियेगा तब नौशेरवांने बखतकसे पूछाकि तेरी क्या सलाहहै उसने भी कहाकि जो खाजे कहते हैं वही उत्तम है क्योंकि कबूतर छोड़ते समय अमरू कह-आयाथा इस कारणकरके मदाइनको छोड़ना अति उत्तमहै और मिस्रके तरफ़ यात्राकीजिये और रसदआदि के लिये उसतरफ़को आज्ञादीजिये और जो हमजा मारानगया होगा तो आपउसको अपने सनमुख मर-वाइयेगा और वहांसे लौटकरलन्धौर औरमुक़बिलको धारपर खिंचवा-इयेगा नौशेरवांको यहबात बहुतपसन्दआई और हारवत और मारवत को चालीस सहस्र सवारकेसाथ नगर और क़ैदियोंकीरक्षाके वास्तेछोड़-कर आप सेनासमेत मिस्रकी तरफ कूचकिया अब थोड़ा वृत्तान्त अमीर का और सुनियेकि क्रोधके कारण दो मंजिला तीन मंजिला कूचकर के अति शीघ्रही मदाइनमें आकर पहुंचा और वह सेना जो पसेफ़ौज में छावनीकिये पड़ीथी अमीर के आनेका हाल सुनकर सन्मुख हाजिर हुई और सब वृत्तान्त वहांका कहकर प्रार्थना की कि नौशेरवां मारवत व हारवत को चालीस सहस्र सवार के साथ नगर और दोनों क़ैदियों की रक्षाके लिये स्थितकरके आप नौशेरवां मिस्र को तरफ सेना सहित गयाहै और बखतकभी उसके साथ गया है अमीर ने कहा कि मुझे तो अपने कामसे कामहै देखो थोड़ेही समयमें नगरका क्या हाल करताहूं यह कह कर अमरू से कहा कि तुम जाकर हारवत और मारवत से कहो कि लन्धौर और बहराम को हमारे पास भेज देवें बादशाह को हम जवाब दे लेवेंगे तुम पर किसी प्रकार से दण्ड न होने पावेगा उन दोनों ने उत्तर दिया कि हमज़ा कौन है जिसकी आज्ञा से शाही क़ैदियों को छोड देवें अमरूने आकर उसी प्रकारसे अमीरसे कहा तब अमीर ने आज्ञा दी के युद्ध की तैयारी की जावै जो खड़ी सवारी जाकर विजय न किया तो हमज़ा नाम न रखना यहकहकर सिकन्दरी डंके पर चोट दिलवाया और उनको कहला भेजा कि युद्धका सामान करो हम आते हैं यह सुनकर नगर में बड़ा तहलका पड़ गया रात्रि तो अमीर ने दुःख व क्रोध में काटी प्रातःकाल होतेही अमीरने लश्क

बादशाही को जाकर चारों ओर से घेर लिया हारवत और मारवत ने जो देखा कि हमज़ा बड़े क्रोध से चढ़ा चला आता है और नगरको लूट पाट कर हमारा क़िला ले लेवेगा तो उन दोनों ने सलाह करके लन्धौर और बहराम को लाकर क़िले की दीवाल पर बैठाकर पुकार दिया कि जो एक परग भी आगे बढ़ोगे तो हम इन दोनों का सिर काट कर खन्दक में फेंक देवेंगे और मांस चील कौवे खावेंगे पश्चात् जो होगा वह देख लेंगे अमीर ने विचार किया कि जो इन पापियों ने ऐसाही किया जैसा कहते हैं तो वृथा लन्धौर और बहराम की जान जायगी सेना को आज्ञादी कि जबतक हम न कहैं आगे कोई न बढ़ना अमीर ने अमरू से कहा कि मेरा पैर कभी पीछे नहीं हटा अब जो लन्धौर और बहराम के लिये लौट जांय तो अति लज्जा प्राप्त होगी ऐ ख़्वाजे कोई ऐसी तदबीर करकि लन्धौर और बहराम मारे न जावें और क़िला छूट जाय तो तुझे मैं लाख अशर्फी दूंगा ख़्वाजे ने कहा यह कितनी बड़ी बात है कि इन नीचोंने जो युक्ति बिचारी है वह अतीव तुच्छ है खन्दक कूद कर हारवत व मारवत के निकट गये और कहा कि अमीर कहता है कि लन्धौर और बहराम को न मारो हम फिरे जातेहैं तुम्हारे नगर में किसी तरह का उत्पात न करेंगे और बहराम व खुसरो से चीनी व हिन्दी बोली में कहा कि अमीर ने यह आज्ञा दी है कि तुम दोनों बड़े आलसी हो कि हाथपर हाथ धरे बैठे हो आदीने चाह यूसुफ़ी में अपने बन्दक़ैद से तार अनकबूत की तरह तोड़ डाले और तुम ऐसे बलवान होके तार ऐसीदो बेड़ियां और जंजीरें नहीं तोड़सक्ते लन्धौर व बहरामको लज्जाआई और ईश्वरका नामलेकै जो बल किया तो सब बन्दरस्सी के समान टूटगये तब हारवत व मारवत लन्धौर व बहरामके मारनेको तलवार खींचकर दौड़े उन्होंने खड्ग छीनकर ऐसे मुक्के लगाये कि वे मरगये और जितने मनुष्य उस क़िलेकी दीवारपरथे सबको मारडाला इसी समय अमरूभी कमन्द लगाकर उसकेपास पहुंचा और बारहसहस्र हिंदुस्तानी मनुष्यभी क़िलेकी दीवारपर चढ़गये और युद्ध होनेलगा अमरूने क़िलेका दरवाज़ा खोलदिया सबसेना घुसगई और बादशाही सेनाको पराजयदेकर सबके मारनेकी आज्ञादेकर लूटको मार्फ़ किया और आज्ञादी कि जितने स्त्री पुरुष मिलैं सबको पकड़कर क़ैदकरो व सम्पूर्ण नगरको लूटो यहआज्ञा देकरअमीर व अमरू बादशाहके स्थानकोगये वहां मलिकामेहरनिगार को ढूंढ़नेलगे जब उसका पता न लगा तो मेहरंगेज़से पूछनेलगे तोउसने कहा कि बादशाहज़ादी मेहरनिगारको बादशाह अपने साथ लेगया है यह सुन अमीर ने उत्तर दिया कि इसबात को बुद्धि नहीं ग्रहण करती कि तुमको छोड़ मेहरनिगार को जङ्गल २ फिराये तब उसने कहा कि मुझे असत्य बोलनेसे क्या लाभहै सबस्थानमें ढूंढ़लीजिये यहसुन अमीरने

अमरूसे कहा भाई यह कार्य्य तुम्हारा है जो तुम उसको ढूंढलाओ तो बारहसहस्र अशरफ़ियांदूंगा तब अमरूने जाकर बादशाहीस्थान वसम्पूर्ण बाटिकोंमें ढूंढा परंतु उनक़ा के समान उसका कहींपता न लगा अमरू अत्यन्त संदेहमें खड़ाथा किसंयोगबसबाटिकाकेमैदानमेंउसकीदृष्टिपड़ी तब अमरूने चित्तमें विचारा कि ईश्वरकरै मलकामेहरनिगार इसी कूपमें हो फ़िर उसकेसमीपजोगया तो देखा कि उसकुएंपर बड़ीभारी लोहेकीशिला रक्खीहै औरचारौंतरफ़से हवाआनेकीसांसनहीथी और वह शिला अमरू से न उठसकी तबउसने अमीरको बुलाकरकहा कि मलकामेहरनिगार इसीकुएंमेंहै परन्तु यहशिला मुझसेनहीं उठसकती ईश्वरने आपहीको ऐसा बल दियाहै तब अमीर ने उसको हटाकर कुएंमें कूदगया पहिले तो कुयेंमें उतरती समय अंधियारेमें कुछदृष्टि नपड़ी परन्तु थोड़ीसमय केबाद एकदालान देखाईपड़ी उसकीतरफ जोगया तो देखा कि मलका सिरझुकाये बैठीहै और रोरोकर आंसुनेत्रों से पोंछ रहीहै जब मलका ने अमीर के पैरों की खटक से जो नेत्र उठाये तो अमीर को देख कर दौड़कर लपटगई और रो रो कर सब वृत्तान्त कहने लगी ॥

चौपाई ॥

मैं अब समुझ करी नहिं प्रीति । प्रीतकरी नहिं करी अनीति ॥
प्रिय संगम महं बीती बययह । बिरह प्रवेश रहा न ज्ञानयह ॥

हे हमजा ईश्वरकेलिये अब मुझे अपने साथसे जुदा न करना क्योंकि कामदेवके दुःखसे रहा नहीं जाता ॥

दोहा ॥

प्रिय बिरहानल दाहको चिन्ह जो भानु समान । ताके प्रगटन हेतुको हृदय पूर्व दिश मान ॥
प्रलय समयके प्रातके उदय करन जनुकाज । प्रिय बिरहिनको फटनामा शुभग गरेबांआज ॥

अमीर ने अपने अंगरखे के परदे से आंसू पोंछकर कहा कि हे मेरी प्यारीअबतो हमको और तुमको ईश्वरने मिला दियाहै अबक्यों रोतीहो अब चलो इसकमन्दपर चढ़कर कुएंसेबाहर निकलो और इसअंधियारे से निकलकर उजेला देखो यह कहकर प्रथमतो मलकाको बाहरनिकाला तब और जो उस कुएं में थीं सबको बाहर निकालकर आपभी निकला और उसीसमय सवार कराकर अपने स्थानपरलाया उससमय सबसरदारों ने भेंटआदि देकर आशीर्वाददिया फिर मलकाने अमीरसे बिनय की कि तुमकोमुझसे कामथा सो ईश्वरने पूर्णकिया अबनगरबासियोंको कारागारसे छुड़ाकरजाने दो अमीरने आज्ञादी कि सबक़ैदियोंकोछोड़ कर लूटकामालफेरदो अतिशीघ्रही उसकी आज्ञाके माफ़िककियागया अब थोड़ा सा वृत्तान्त आदी का सुनिये कि जिस समय अमीर ने नगर बासियोंको बधकरनेकी आज्ञादीथी उससमय आदी अपने दरवाजे पर खड़ाथाकि इतनेमेंएकबहुत स्वरूपवानस्त्री जवानदसबारह सहेलियों के

भागीचली जातीथीपरन्तु अति कोमलताके कारणचल न सकती थी थोड़ी थोड़ी दूरपर ठहर जातीथी आदीउसकी सुन्दरता और कोमलता पर लोभित होकर दौड़कर अपने स्थानपर पकड़कर लाया तो मालूमहुआ कि यह वल्लककी बेटीहै तो अतिप्रसन्न होकर कहनेलगा कि अमीरने बादशाह की बेटी पाई मैंने वल्लक की बेटी पाई कि जिसका विवाहभी अभी नहींहुआ यह कहकर उसे अपने डेरेमें लेगया और रात्रिको जब उसकेसाथ भोग करनेलगा तो वह स्त्री भयसे चिल्लाई आदीने विचारा कि जो इसकाशब्द अमीरतक पहुंचेगा तो अतिलज्जा प्राप्त होगी यहविचार कर उसके साथ भोग न किया परन्तु युवा स्त्रीको देखकर कामसे पीड़ित हुआ तो बाहर निकलकर सिकन्दरी चोब बजाने की आज्ञा दी और डेरेमेंआकर उसस्त्रीके साथ भोगकरनेलगा और उसकी कोमलता और आयुका कुछविचार न करके निर्मोहियों केसमान जोधरकर दबायातो उसने पक्षीकी तरहमुख खोलदिया और मरगई डंका सिकन्दरीका शब्द जो सेनाकेकानतक पहुंचा तोकुलसेना औरसवारोंके रिसाले और खुसरो हिन्द वखुल्लविल और बहराम आदिजितने सरदारथे कमरबांधर घोड़ों परसवार होकर आपहुंचे उस समय अमीर दलका मेहरनिगारको लिये मसनदपर बैठाथा और अमरूशराब पिलारहा था और कुछ गाताथा कि इतनेमेंजो सिकन्दरी डंकेका शब्द उसके कानोंमें पड़ा तोघबराकर उठा और अमरूको आज्ञादी कि तुम जाकर देखो कि क्यों डंका सिकन्दरी बजाहै और आपभीमसनदसे उठकर पोशाक पहिनकर बाहर निकला और खड़ाहोकर अमरूको देखनेलगा अमरू जोगया तोदेखा कि खुसरो हिन्द वुल्कविल बहरामआदि साथसब सरदार और सेनाके कमरबन्द होकर खड़ेहैं अमरूने लन्धौर और बहरामसे पूछा कि कारण तुमलोगोंके तैयार होनेका क्याहै उनलोगोंने उत्तरदिया कि औरतो हमकुछ नहीं जानते केवल सिकन्दरी तबलका शब्द सुनकर तैयारहुये और अमीरकी आज्ञाकेआश्रित खड़ेहैं और इसकोतुम जानतेहोगे और अवश्यहैकि तुमने कुछसलाहभी दीहोगी अमरूने सन्देहमें होकर उसीमार्गसे डंकेके समीप जाकर पूछा कि तुम लोगोंको किसने डंका बजाने की आज्ञादीहै उन लोगोंने कहाकि आदी कहगयाहै तब अमरूआदीके डेरेमें जोगया तो देखताहै कि आदीने एक युवा स्त्रीको मारडाला है और उसकी आगे रक्खे हुये शिरपर हाथ धरे बैठा है आदी से उसका वृत्तान्त पूछा तो उसने अपनासब वृत्तान्त कहातब अमरूने अमीर के समीपआ कर सब वृत्तान्त सुनाया अमीर ने आदी को बुलाने की आज्ञादी और कहा कि आदीको भी हम उसी स्त्रीके साथ गोर में गाड़ेंगे तब मेहरनिगार ने आदीकी बड़ी सहायताकी और अमरूनेभी प्रार्थनाकी कि आपने क़िला विजय किया उसने एक गढ़ीही तोड़ी अमीर अपने महलसे निकलकर

सेनामें गया और सब वृत्तान्त कहकर हरएक पहलवानोंसे बिनयकरके कमर खोलनेकी आज्ञादी और आप महलमें आकर आराम करनेलगा और सब सेनानेभी कमर खोली जब प्रातःकाल हुआ तो अमीरने सात दिन तक नाचरङ्ग होनेकी आज्ञादी सबसामान इकट्ठाहुआ और अभी कूचकीआज्ञा न दीथी कि आदी एकपत्र जैपालहिन्दीका अमीरकेसमीप लेगया अमीर उस पत्रको पढ़ कर बड़े सन्देहमेंहुआ और लन्धौर को दिया उसने पढ़ा तो लिखाथा कि फ़ीरोजशाह खुतानी साढ़े तीनलाख सवार लेकर चढ़आयाहै कईबार युद्धहुआ परन्तु उसकेपास सेनाबहुतहै इसकारण विजयनहुई और सबकिलेसाबरमेंबन्दहैं जोअमीरया लन्धौर याखुसरोहिन्द न आवेंगेतो इसदेशमें तुर्कियोंका राज्यहोजायगा और हमलोगोंको अतिक्लेश पहुंचेगाअमीरने आज्ञादी कि तुमजाकर उसको विजयकरो तब लन्धौरने रोनी सूरत बनाकर कहा कि मैं जान्ताथा कि अपनी अवस्था आपहीके क़दमों के नचे काटूंगा परन्तु आप सेवक को अलग करने की इच्छा करते हैं अमीर ने कहा कि ईश्वर जानता है मैंतुमको अलग करनेकी इच्छा नहीं रखता परन्तु जो इस समय न भेजूं तो सारा हिन्दुस्तान हाथ से निकल जायगा और जिस समय कि ईश्वर विजयका हाल सुनावेगा उसी समय मैं तुमको बुलाऊंगा और जबतक तुम न आवोगे मैं मलका मेहरनिगार के साथ बिआह न करूंगा यह कहकर चालीस सहस्र सवार समेत मुक़बिल को मेहरनिगार और बहर सिमी को साथ करके मक्का की तरफ़ रवाना किया और बहुत रुपया और जिंसआदि मार्गके सामानसे परिपूर्ण किया और कहा कि हमभी ख़ुसरो हिन्द को सवार कराकर आते हैं जो ईश्वर ने चाहातो बहुत जल्द तुम लोगों से मिलते हैं यह कहकर आदी को अपनी यात्रा बसरेकी ओर करनेकी आज्ञादी और कहा कि ऐसी युक्तिकरो कि अमक़ और मुक़बिल मलका मेहरनिगार और जहर सिमी को लेकरमक्के को जावें और अमीर लन्धौर और बहरामके साथसेना समेत हुये और मीर बख़्रको बुलाकर जहाजमंगवाया और ख़ुसरो हिन्दको चढ़ाकर साथ सेनाकेजहाजखोलवादिया अमीरनेप्रातःकाल होतेही बहरामसेकहाकि ऐबहराम मैं तुझे और ख़ुसरोहिन्दको अपने हाथ समझताहूं और तुम लोगोंको जुदा करनेसे अतिदुःख होता है परंतु क्या करूंजो हिन्दुस्तान के युद्धमें ख़ुसरो को न भेजता तो क्या करता इसकेसिवाय और कोई युक्ति नहीं थी और जो तुमको भी ख़ुसरो की सहायताके लियेनभेजूं तो और कौनहै जिसेजानेकी आज्ञादूं क्योंकि फ़ीरोजशाह अति बलवान है और उसके पाससेना भी अधिक है इस कारण उचित है कि तुम भी चीनमें जाकर फ़ीरोजशाहको विजय करके उसके देशको लूटमार करते हुये साथ लन्धौर और आदीके चलेआवो और जब इस कार्यको

सिद्ध करोगे तो दूसरो के साथ तुमको भी बुलालूंगा और जबतक तुम दोनों मेरे पास न पहुंचोगे तब तक मैं विवाह मेहर निगार के साथ न करूंगा तब बहराम ने प्रार्थना की कि मुझे आपकी आज्ञा मान्नी उचित है परंतु केवल आपके क़दमो के छोड़ने से दुःख प्राप्त हाता है जो आपके क़दमों की कृपाहै तो जाने में कुछ संदेह नहीं है तब बहराम सेनाके साथ उसी दिन जहाज पर सवार होकर चला और अक्सर लोग कहते हैं कि चीनमें एक शत्रु आया था उसके निवृत्त करनेकेलिये अमीरने बहरामको चीन की तरफ़ भेजा था परन्तु यह अवश्य है कि अमीर ने बहराम को रुख़सत करके सेनाके साथ मक्के की तरफ़ कूच किया है और जब कि सात मंजिल जाचुके थे साथ के सरदारों ने कहा कि यहां से दो कोस पर दाहिनी ओर एकबड़ी भारी नदीहै और उसके निकट एकस्थानजिसका नाम (अलंगजलुर्द) है अति उत्तम देखने के लायक है तब अमीर ने आदीसे कहा कि हमारा खेमा उसी स्थान की तरफ़ लेचलकर खड़ा करो आदी ने अति शीघ्रही उसी तरफ़ चलने की आज्ञादी और थोड़ेही समय में जाकर अमीर उस (अलंगजलुर्द) पर पहुंचे और रात्रिको अपने डेरे में सोरहे परन्तु प्रातःकाल होतेही जो उठकर देखा तो अति उत्तम स्थान मालूम हुआ कि एक तरफ़ जहां दृष्टि पड़ती थी तो फ़र्श हरा २ बिछा हुआ दिखाई देता है और कोसों तक हरी रंगत लहरा रही है दूसरी तरफ़ हज़ार गुल्लाला कैसा फूला हुआ नज़र आताहै कि नेत्रोंसे देखने में अति प्रसन्नता प्राप्त होती है और एक तरफ़ नदीसे मिला हुआ पहाड़ परशोभाहहै जिसपर सैकड़ों तख़्ते गुल बहार के खुले हुये हैं और अनेक प्रकारके वृक्ष और मेवे फले फूले खड़े हैं और बहुत से हरिण पाढ़ी चीतल बारहसिंगा नीलगाय आदि युट २ की छलांगें मार रहीहैं और हजारों प्रकारके पक्षी वृक्षों पर मेवा खा खा कर चहचहारहे हैं और पहाड़ पर जो सोते, झील, आदिक हैं उनके किनारे पर झुण्डके झुण्ड कारे, मुरग़ाबी, सुरख़ाब चकयी चकवा आदि अनेक प्रकार के पक्षी बैठे हुये हैं और पहाड़ के कोनोंमें तीतर, बटेर आदिक फिरते हैं अमीर इस स्थान को देख कर अति प्रसन्न हुआ और सर्वेच दिन शिकार करता रहा सायंकाल को डेरेपर आकर जो पक्षी आदिक लाया उसमें से कुछ अपने लिये रखकर शेष सरदारों और पहलवानोंको भेजवा दिया और रात्रि भर आराम के साथ सोया प्रातःकाल जब उठकर कुल्ला दतून से निश्चिन्त होकर वस्त्रपहिनकरबैठाथा और अभीकूचकी आज्ञा न दीथी कि दो सरदारोंने आकर सलाम करके विनय किया कि जोपीन काऊस सहस्र सवारलेकर आपसे युद्धकरनेके लिये आताहै और बहुतसी सेना बलवान साथ ले आताहै और कारण उसके आनेका यहहैकि नौशेरवां जो मित्र

की तरफ़ आपके मरवानेके लिये जाताथा उसने मार्गमें सुनाकि हमज़ा ने मदाइनमें आकर नगरको लूटलिया और नगरवासियोंको मारडाला है और हमारी सेनाको विजयकरके मेहरनिगारको पकड़लेगयाहै यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां मदाइन को लौट आया और जब अपने नगर को ख़राबदेखा और मलका मेहरनिगार को न पाया तो अति दुःखित होकर कहनेलगाकि यह सब बख़तकने ख़राबकियाहै कि नगरको लूट लिया और मलका को निकाल ले जाकर मेरी आबरू मिटा दी और संसारमें लज्जा प्राप्तहुई और जो मैं बुज़ुरुचमेहर के कहनेपर करता तो आजकाहेको यह गतिहोती इतनेमें बख़तकने अपने घरमें आकर पगड़ी फेंकदी और बोलाकि मेरी माताको तो अमरूने और बेटीको आदी ने मारडाला यह वृत्तान्त जो सात देशवासी शहन्शाहको पहुंचेगा तो आपको क्या कहेंगेकि एक अरबके रहनेवालेको ऐसा मुंहलगायाकि उसने सब देशों को बरबाद करदियाहै और उसकी युक्ति नौशेरवांसे न चलसकी नौशे-रवांने रोनीसूरतबनाकर कहाकि जो कुछतूने कहा वह मैंने किया परन्तु हमज़ा किसी युक्ति से बसमें नहीं आता है कि उसे मारूं और उसके साथियोंका मांस चील कौवोंको लुटादूं बख़तकने कहाकि सिवाय गुस-तहमके और कोई ऐसा नहींहै जिसे हमज़ाके साथ युद्धकरने को भेजिये बादशाह ने पत्र लिखकर गुस्तहमकोबुलवाया उसीदिन ख़बरपहुंची कि चोपीन का ऊंस सत्तर सहस्र सवार लेकर आपसे मिलने को आता है और यहां से दो कोसपर ठहराहै बादशाहने उसीसमय बख़तकको और सरदारोंके साथ उसकी पेशवाईके लिये भेजा बख़तक ने मार्गमें सर्व वृत्तान्त अमीरका बयानकिया वह बोला कि तुम निश्चिन्त रहो जो खड़ी सवारी हमज़ाको न मारातो मेरा चोपीनका ऊंसनामनरखना इसकेपश्चात् जब वह नौशेरवांकेपासपहुंचातबवह बहुतरोया और बादशाहकोबहुतसम-झाया और कहाकि मैं इसीसमयजानेकीआज्ञाचाहताहूं यहांमुझे एक क्षणभरवर्षकेसमानमालूमहोताहै जबतक हमज़ाका शिर और मलका-मेहरनिगारकोन लादिया तो संसारमेंमुख न दिखलाऊंगा तब बादशाह ने प्रसन्नहोकर ख़िलतदामादीदेकर कहाकि तुमपहलवान और सेनाके साथ जाकर हमज़ाका शिरलाओ तो मैं तेरा विवाह उसके साथ कर-दूंगा और अपना युवराज बनाऊंगा और अपने भी दो सर्दार तीस हज़ार सवारोंकेसाथ करकेभेजता अमीरने हंसकर कहा कि आज इसी स्थानपर वासकरो उसको आने दो जबतक कहो कि पहलवानलोग अ-पना डंडपेलें और नांचरङ्ग जारीरहै यह आज्ञादेकर फिर अमीर अपने आरामगाह में चलेगये और उसकाआसरा देखनेलगे सायङ्कालके समय एक गर्द उठी और सेनाके समान देख पड़ी और जब गर्द बन्द हुई तब सत्तर अलम और कई हज़ार सवार परेटके परेट देखाई पड़े चोपीन

आकरसामने डेराडालकर युद्धका सामान करनेलगा रातको नामि-
यान, और तुबियान, ने आकर अमीर से कहा कि जोपीन की सेनामें
युद्धका बाजा बजताहै अमीरने कहा कि हमारीसेनामेंभी युद्धका बाजा
बजाओ और अतिशीघ्र लड़ाईका सामानजमाहोजावे आज्ञादेतेही क-
बावेचीनी और कलावेचीनी ने अठारहमनकी तबरेजीको चोबें जो डंके
सिकन्दरीपर दैमारा तो उसकेशब्दसे जोपीनकी सेनामें कितनेहीमनुष्यों
के कानके पर्दे फटगये और सब सेना डर गई परन्तु दोनों तरफ़ रात्रि
भर युद्धका सामान हुआकिया और प्रातःकाल होतेही जोपीन सत्तर
हज़ार सवार लेकर युद्धके स्थानपर आया और दूसरतरफ़ से अमीरपांच
लाख सवार अति बलवान लेकरचले जिससमय अरबी पहलवानोंने जा-
कर युद्धका आरम्भकिया तो बेचारेडरनेलगे और भागनेकीइच्छाकरने
लगेऔर बेलदारोंने मैदानको साफ़किया और भिश्तियोंने मशकोंसेबात
की बातमें हज़ारों बिगहे ज़मीनको सींचदिया नक़ीब और जारजियोंने
जोरसे चिल्लाहकर कहनेलगेकि जिसको युद्धकरनेकी इच्छाहो वह युद्ध
के मैदानमें निकलकर लड़े और प्रतिष्ठा प्राप्त करें कि आजबलवानों की
परीक्षाहै और यही युद्धका मैदानहै यह सुनकर सबके रोयें खड़ेहोगये
और एक दूसरेका मुखदेखनेलगे और मृत्युने आकर अपना डेरा युद्धके
स्थानपर किया मानो मङ्गलग्रह हरएक मनुष्य के मस्तकपर चमकनेलगा
और हरएक मनुष्यकागला बन्दहोगया और एक दूसरे पर ताना देने
लगेऔर कहनेलगेकि आज नेकोंकी नेकी बदोंकीबदी प्रसिद्धहोजायगी
और देखें किस का पैर शत्रु के ऊपर बढ़ताहै और किसका पीछे पड़ता
है यह बातें सेनाओं में होही रहीं थी की जोपीन काऊस ने घोड़े को
मैदानमें बढ़ाकर ललकाराकि ऐ ईश्वरके पूजको तुममेंसे जिसको मरने
की इच्छाहो वह मेरे सन्मुख होकरलड़े अमीर से उसका हंसना सुन-
कर न रहा गया साहक़ैतास घोड़े पर सवार होकर सेना से बाहर
निकला और बाजेवालों की तरफ़ से जोपीन के समीप जाकर इसप्र-
कारसे कावादिया की उसका घोड़ा बीसक़दम पीछे चलागया जोपीन
यह हाल देख कर बेहवास होगया और अमीर से पूछा कि मालूम
होताहै कि हमज़ा तेराही नामहै तुही मुसल्मानी सेना का सरदार
है अमीरने कहा हां महीहूं और ईश्वर पूजकों की टहलुई करता हूं
जोपीन बोलाकि ऐ हमज़ा किसलिये अपनी जानकोदुःखमें डालताहै
और तेरा चित्त कहां है उत्तम यही है कि मेहरनिगार को मेरे साथ
करदे मैंजाकर उसके साथ विवाहकरूं और तूहमाल से हाथबांध कर
मेरेसाथ चलमैं बादशाहसे तेरीसिफ़ारिशकरके बचादूंगा अमीरनेकहा
कि ऐ नामर्द तूक्या बकता है जो नशा बहादुरीका रखता होतोअपना
नशा उतारले और अपने हौसिलेको पूर्णकरले फिरमेरी वाररोक यह

सुनतेही जोपीन एकबरछी अमीरको छातीमें लगाई उसको उसने छीन कर तोड़डाली तबउसने झुंझुलाकर गदाउठाई उसकोभी अमीरनेरोका कोई वारलगने नपाई तो अति लज्जित होकर कईवारें बराबर चलाईं अमीर जब धूलमें छिपगये तो जोपीन कहनेलगा कि देखो हमनेमारा पृथ्वी में हलजा धंसगया और कहा कि जो कोई एक किरच हड्डी की निकालदेयतो उसको पारितोषिक देकर सेनाका सरदार बनाऊं अमीर नेजो यह वार्त्ता उसको सुनीतो खाहके तासको लेकर उसके समीप आकर ललकारा कि ऐ पापीजिसको तूने मारा और खाकमें मिलाया है तेरा मारनेवाला मैं तेरे शिरपर खड़ाहूं देख अभी तुझे क्या देखाता हूं एकबार और चलाकर अपने हौसिलेको मिटाले तबउसने एक गदा चलाई अमीरने उसको छीनकर जिसतरह बहरी कबूतरको झपटतीहै उसके गरदन पर खंजर रखकर कहनेलगाकि बतावो अब उस हंसने की सजा देखावैं अबभी कुछ हौसिला बाक़ी है यह सुन जोपीन गिड़-गिड़ानेलगा और ईर्षा मनमें रखकर मुसल्मान हुआ अमीर उसकी छातीपरसे उतरकरअलगखड़ाहुआ ॥

युद्धकरना जोपीन का अमीर के साथ और दबाना अमीरका जोपीनको और खंजर रखकर मुसल्मान होना ॥

जोपीनफिर उठकरअमीरके पैरोंपरगिरपड़ाअमीरने उसको उठाया और अपनी सेनामेंले आकर गलेसे मिलाया और सेनामें विजयका डंका बाजने लगा और झंडावालोंने परचम खोल दिये और जोपीन की सेना अतिलज्जितहोकरलौटकर अपने डेरेमेंआई अमीरमुज़फ़्फ़र और मनसूर के साथ जोपीन को लेकर अपने सेना में पहुंचे मुबारकबादी के डंके बजनेलगे और बड़ोधूमधामसे नाचरंगहोनेलगा और उसीसमय भोजन तैयारहुआ अमीरने जोपीनके हाथमुंहधुलाकर अपनेसाथ भोजनकर-वाया और शराब पिलवाई तब उसने अमीर से कहाकि अब सेना में जानेकी मैं इच्छाकरताहूं कि जाकर सब सेनाको मुसल्मानकरूं और कल सवेरे सब सरदारों को आपके समीप लाकरमुलाक़ात कराऊंगा अमीरने कहा कि जाइये और सबको मुसल्मान कीजिये तब वह सेनामें आया और मक्कर व जालकी युक्ति विचारने लगा ॥

रातको लड़ाई करना जोपीनका और ज़खमी होकर न मिलना अमीर का ।

सुहृद मनुष्यका चित्तजिसे एकबार साफ़ हुआ तो साफ़ही रहता है व्यतीत विरोधोंका विचार नहीं करता है यहां तो अमीर उसपर वि-श्वास करके उसके आनेका आश्रित था उधर वह जाकर औरही युक्ति करनेलगा अपनी सेनासे कहा कि मैंतो शीवकी रक्षाकेलिये मुसल्मान

हुआहूं और एकमुसल्मानको दमदे आयाहूं तुमलोग तैयारहोउसपर इस रातिको लड़ाईकरकेमारेंगे हमारी विजयहोगी और उसकी पराजयहोगी यह सुनउसकी सेनातैयारहुई जबआधी रात्रिहुई तब सत्रह हजारसवारलेकर अमीरकी सेनापर धावाकरने चला मार्गमें शेसयमन जो चार सहस्र सवार लिये पहरे पर घूमता था घोड़ों के पैरका शब्द सुनकर ललकारा कि कौन इससमय आताहै खबरदार आगे क़दम न बढ़ाना आकर समीप जोदेखा तो मालूम हुआ कि जोपीन सत्रहसहस्र सवार और बहुतसे पैदललियेहुये लड़ाई करनेको चलाआताहै शद्दससे तलवारचली शद्दस उसके हाथसे मारागया और जोपीनमुसल्मानी सेना पर जागिरा और जोसेनाअमीरकी बेखटके सोरहीथी जब सत्रहसहस्र सवार जागिरे तो उनकी खरकसे जाग उठे परन्तु उसके आपहुंचने के कारण हथियार न लेसके जो जिसके पासथा वही लेकर दौड़ा तलवार चलनेलगी और चारोंतरफ़ शब्द होने लगा अमीरभी सोते २ शब्द की खरखराहट सुनकर जागउठा औरपूछनेलगाकिक्याशोर गुलसुनाईदेता है दूतोंने विनयकी जोपीन धावा मारने आया है तो यहसुनकरअमीर स्याहक़ैतासके थानपर जाकरलगामदेकर वेपीनका सवारहोकर आया उसीसमय अनासान मलकनामक तलवारजो उसकेहाथमें रुधिरसे भरी थी उसके ऊपर चलाई अमीरने वार खालीदेकर तलवार उसकोछीनकर उसेमार डाला दूसरेभाईने कहाकि हमजाने बड़ेआश्चर्यकी बातकी जो मेरेभाई कोवधकिया परंतु मैंभीउसेमारूंगा अमीरने कहाकि चिन्तान करतुझेभी उसीके पास भेजने का उपाय कररहाहूं तब उसने अमीर के ऊपर हथियार चलाया परंतु अमीर ने उसकी वार को रोंक कर एक तलवारमारीकि उसकेदोभागहोगये परंतु जोपीनने अमीरकेपीछे आकर एकतलवार उसकेशिरपर सावधानहोकर मारी तो चारअंगुलकाघाव होगया फिरअमीरनेभी झपटकेमारातो उसकेभी उसीतरह घावहोगया और दोतीन तलवारें मारकर घोड़ेसे गिराया तब सेनाके लोगोंने उसको उठाकर बहुतजल्दी मदाइनकीओरभागे जोपीनजो सत्रहहजारसवार लेकर आया था उसमेंसे केवल दसहजार मनुष्य बचे और सब मारेगये और उस रातिके धावेकेकारण मुसल्मानीसेनाभी बहुतमारीगई अमीर के शिरसे भी बहुत रुधिर बहाकि अमीर बेहोश होगया घोड़े स्याहक़ैतास ने देखा कि सवार मेराजख़मीहै मैदानसे निकलकर बनकी ओर चला आदी आदिक सेनापतियों ने अमीर को बहुत ढूंढ़ा जब पता न मिला तो शोककरनेलगे जितने सर्दार थे सब अपनी सेनासमेत काला वस्त्र धारण करके बहुत शोककरनेलगे तीसरेदिन आदी सबसेनाको साथ लेकरमक्केमेंपहुंचा और ख़ाजे अब्दुलमतलब औरअमरूसेसबवृत्तान्तकहा यहहालसुनकर मक्केके बासियोंनेभी कालावस्त्र धारणकरके बहुत शोक

करनलगे और चारोंतरफ़से रोनेका शब्दसुनाई देनेलगा ख़ाजे अब्दुल्मत-लबको सकताकी ऐसीबीमारी होगई अमरू और मुक़बिलने अपनागला काटडाला और मेहरनिगार ने मारमार कर अपने कपोलों को लाल करदिया और शिरके बालों को इसप्रकार से नोचडाला कि कंघी और चोटी की आवश्यकता न रही और रांडका स्वरूप धारण करलिया उससमय अमरूने कुछ विचार कर सबलोगों को चुपकिया और कहा कि नडरो अमीर जिन्दाहै क्योंकि जो अमीरको कुछ होता तो स्वाह-क़ैतास अवश्य अपनीसेना को भागआता जो अबतक स्वाह क़ैतास नहीं आयातो तुमलोग ईश्वरको जपो मैंअमीरको जाकर ढूंढ़ लाताहूं यह कहकर क़िलेको बन्दकरके हर एक स्थान पर सेना मुक़र्रर करके और मुक़बिलसे कहा कि ख़बरदार कोई नवीन मनुष्य क़िलेके समीपउतरने न पावे आप अमरू अमीरकेढूंढ़नेकोचला और उसीमार्ग होकर अलङ्ग-ज़मुर्रद के तरफ़ पोशाकयारी पहिने हुये जिस मैदान में युद्ध हुआ था रवाना हुआ ॥

आना अमीरके लेनेको अबुलरहीम नजिनी ॥
वज़ीर शहन्शाह परदेक़ाफ़ का ॥

अख़बार नवीस और नक़ल करने वालेयों लिखते हैं कि जिस समय दीवान हस्याहने शहपाल पुत्रशाह रुख़शहन्शाह परदे क़ाफ़ से युद्ध करके नगर समीन, ज़र्रीन, वकस, काक़म, क़ैसरविलौर, मीनाकाचन, कतर वयक़, क़ैसर गौहर, क़ैसर ज़मर्रद, क़ैसर याक़ूब, छल खिलून, बाग़सदा बहार, बाग़ संतुष्ट करनेवाली, बाग़हस्त बेहश्त, क़ैसर मीना बाग़ जिन्नात जिनको कि हज़रत सुलेमान ने बनवाया था छीनलिया और केवलबाग़आराम उसकेपास रहगया जिसमें कि अपने लड़केबालों को लेकर क़िलेका दरवाजा बन्दकरके बैठेथे एक दिन बादशाहको याद आयातो वज़ीर अबदुल्रहीम नजिनीको बुलाकर कहा कि वहलड़का हमज़ानाम्नी जिसको तुम मक्के से लाये थे और कहा था कि एक दिन ऐसाहोगा कि सब दूतलोग आपका देशछीनलेवेंगे केवल बाग़ आराम आपकेपास रहेगा उसीमें बन्दहोकर आपरहेंगे और यह लड़का, आप को उनलोगोंको मारकर आपका सबदेशदेवेगातो अबवह लड़काकहांहै उसको ढूंढ़नाचाहिये विचारोतो वह आजकल कहांहै और किसदेशमें उसका स्थान है तब उसने रमलसे विचारकर कहा कि आजकल वह एक बड़े युद्धमेंथा और उसके एक तलवार लगी है जो आप आज्ञादेवें तो वह आसक्ता है तब शहन्शाहने कहा कि इससे उत्तम और क्या है उसी दम मलहम सुलेमानी मंगवाकर और अनेक २ प्रकार के मेवे देकर कहाकि अतिशीघ्रही जाकर इसमलहमको उसके शिरपर लगा देना और जब घाव अच्छा होजाय तो इनमेवोंको खिलाकर अपनेसाथ

लेकर हमारे समीपलावो उसी समय अब्दुलरहमान तख़्त पर सवार होकर कईसौ जिन्साथ लेकर क़ाफ़पर्वतसे चला और थोड़ीही समय में जब उस स्थान पर पहुंचा तो चारोंओर दृष्टिकरके देखने लगा तो देखाकि हमज़ा रुधिर में डूबाहुआ उस सब्ज़ेपर बेहोश पड़ाहै उसी समय जाकर हमज़ा को तख़्त पर बैठाकर पहाड़ अबुल क़ैस के एक गढ़ेमें उठा लेगया और उसके घावको धोकर पट्टी मलहम सुले-मानी उसपर रखकर मेवोंकी डालियां चारोंतरफ़ लगादीं कि उसकी सुगन्ध से कुछ शिरमें बलहोजाय और जीवको आनन्द होजाय तीसरी पट्टीबदली थी कि अमीरने नेत्रोंको खोलदिया होश में आये तब उसने सलाम किया अमीरने सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौन हैं और कहांसे आयेहैं और आपका नाम और पताक्याहै और क्याआपही मुझे इस तख़्तपर उठा लाये हैं उसने कहा कि मैं शहपाल का पुत्र शाहरुख़ शाहनशाह परदेक़ाफ़ का वज़ीरहूं मेरानाम अबदुलरहमान है और उसकी आज्ञासे यहां आयाहूं जिसने आपको जब आप सात दिनके थे तब आपको पलंगसमेत मांगवालिया था और सातरोज़ अपने मकानपर रखके बहुत देव और भूत और जिन् का दूध पिलवाया था कि जवानी में किसीसे आंख न झपके और सुरमा सुलेमानी आंखों में लगाके घोड़ेपर लेटाके भेजवादिया था और बहुत क़ीमती साज आपके साथ भेजा था इस समय जो आपका चर्चा आया तो मुझसे पूछा कि विचार कर बतलावो कि वह आजकल कहां है मैंने जो विचार तो मालूमहुआ कि आप इस सब्ज़ेपर तलवारकेघावसे रुधिरमेंडूबे बेहोश पड़ेहैं और अपने दोस्तों और सेनासे अलगहोगये हैं यह सुनकर बाद-शाहने मलहम सुलेमानी और मेवे की डालियां देकर आप के समीप भेजाहै जोमैं यहांआया तो उसीप्रकारसे पाया जिसतरह कि विचार से मालूम हुआ था सो उसी समय आपको उठाकर इस तख़्तपर रख कर इसस्थान में लाया हूं और मलहम सुलेमानी रखकर आपका घाव अच्छा किया अब केवल शरीर में बल आना बाक़ीरहा है सो इस मेवे को खाइये ईश्वर की कृपासे बल भी शरीरमें अतिशीघ्र आजावेगा तब अमीरने कहा तुमने मुझे किस तरह से पहचाना उसने विनय किया कि अपनी बुद्धि और आपके स्वरूप को देखकर अमीर उसकी बातों से अतिप्रसन्नहुये और उसकी प्रसंशा करनेलगे तब अबदुलरहमानने और जो कईसौ जिन् साथ थे बुलाकर अमीर से भेंटकराई और कहा कि एकविनय मेरी भीहै जो आपहीके किये सिद्धहोगी ईश्वर जब आपको अच्छा करेगा तो कहूंगा अमीर ने कहा शिर और नेत्रों से आपका कहना करने को वे आपके कहेहुये मुस्तैदहूं इसमें कुछ कहनेकी अव-श्यकता नहीं है अब थोड़ा वृत्तान्त अमरूका यह है कि जब अमीर को

ढूंढता २ उस खन्दक में आनिकला तो देखा कि लाहकैतास चररहा है और इधरउधर नेत्रोंको उठाकर देखरहाहै जब अमरू उसके पास गया और पकड़ने की इच्छा की तो प्रथम तो उसने अमरू को न पहचानकर बाघके समान अमरू के ऊपर दौड़ा परन्तु जब अमरूने चिल्लाकर चुचकारा तब वह अमरूका शब्द सुनकर खड़ा होगया और कान हिलानेलगा तब अमरूने उसका मुख चूमकर पूछा कि तुम्हारा सवार कहांहै मुझे वहां लेचलो तबवह हिनहिनाकर गढ़ेकीतरफ इशारेकरने लगा परन्तु अमरूने न समझा और सर्वत्र ढूंढढांढकर विचारा किलाहकैतास को अपने मकानपर लेचलो और लोगों के आंसू पोंछाओ फिर आकर अमीरको ढूंढेंगे यह विचारकर लाहकैतास को लाकर लोगों से कहा लाहकैतास को मैं ढूंढलायाहूं अबअमीरको भी जाकरलाताहूं यह कह कर अमरू पहाड़के नीचे चला और उसगुफा के समीप गया तो मनुष्यों की घुनघुनाहट मालूम हुई उस स्थानपर ठहर गया और थोड़ेकाल सुनकर उसके भीतरगया तो देखा कि अमीर एक तख़्तपर बैठा अनेक २ प्रकारके मेवेखारहाहै जाकर अमीरके पैरोंपर गिरपड़ा अमीर ने उसका शिर उठाकर छाती से लगाया और सबका मेहरनिगार की कुशल पूछनेलगा तब अमरू ने सब वृत्तान्तकहा और हाथ बांधकर अमीर के सन्मुख खड़ा हुआ अमरू की आंखों में सुरमा सुलेमानी न था इसकारण जिन्नातनदीखपड़े और जिन्नोंने जो उसको देखातो उसके साथ हंसीकरनेलगे एकजिन्नने अमरूके दोनोंपांवपीछेसे खींचलिये वह मुहभड़ा गिरपड़ा और अमरूके शिरसे एक जिन्नने ताज उतारलिया परन्तु अमरूको कुछ देखाई न देता था क्योंकि उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी न था अमीर ने जब पूछा कि अमरू तुमनंगेशिर क्योंखड़ेहो तब अमरूने शिरपर हाथफेरा तो ताज नपाया क्रोध करके झुलझुलाने लगा तब अमीर ने जिन्नोंसे ताज दिलवाकर उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी लगादिया तब वह भी सब जिन्नोंको देखनेलगा और कहा कि भाई शहपालका पुत्र शाहरुखने अपने वजीरअबदुलरहमान जिन्नीको किसी प्रयोजन के लिये मेरे समीप भेजा है और उसीने मेरा घाव अच्छा कियाहै और यह मेवाआदि भी लेआयेहैं उनही के साथ ये जिन्नहैं जोतुम्हारे साथ हंसी करतेहैं यहसब वृत्तान्तकहकर अबदुलरहमान से मुलाक़ात करवा कर आज्ञा दी कि अब तुम मक्के में जाकर हमारे कुशल का हाल सब लोगोंसे कहो परन्तु हमारे यहां रहनेका हाल किसीसे न कहना अमरू तो मक्के की तरफ़ गया और अमीर ने अबदुलरहमान से कहा कि जोकुछ तुम्हारे स्वामीने आज्ञादीहै वह अब मुझसे कहो तब उसने कहा कि यहतो आपसे पहिलेही मैं कहचुका हूं कि जब आप सातदिन के थे तो मैंने रमलसे विचारकर बादशाहसे

कहा था मक्केमें एकलड़कापैदा हुआहै वह आपको किसीसमय में सब
सब जिन्नलोग प्रभुता करके सब देश छीन लेंगे तो वह लड़का आकर
सब को मारकर आपको फिरसे उन नगरों को देकर बसावेगा तब
बादशाह ने मेरी मारफत आपको मक्केसे मंगवाया था और सातरोज
के बाद फिर बहुत जवाहर आदि साथ करके भेजवा दिया था और
आपको देव जिन पक्षीआदिका दूधपिलवाया था कि जवानी में कोई
बराबरी न करसके और आपके पिता जिनको आपके खोजानेका दुःख
था मिटाया था सो वहीदिन आपड़ाहै इफरीतनाम जिन्नने नगरआदि
सब छीन लिया है केवल बागआराम शाहजहाँ के बस में है उसी में
अपनीसेना और लड़केबालोंकेसाथ दरवाजा किलेका बन्दकरकेपड़ेहैंऔर
उसको भी कहता है कि जल्द खाली करो इसलिये मुझे आपके समीप
भेजाहै और कहाहै कि मेरीदुआ कहकर कहना कि इस पापीसे जो
मेरे पिताके समय में एक प्यादा था और अब एक सवार होकर बहुत
से लोगोंको अपने साथकरके शतरञ्जके फरज़ीके तौरसे टेढ़ेचलना अख-
तियार कियाहै और मुझे बड़ा दुःख देरहा है और मुझे एक खान में
कि आराम गुलिस्तां उसका नामहै बन्दकर रक्खाहै और उसको भी
लियाचाहता है मैं दहिने बायें आगेपीछे कहीं हिल नहीं सकता जो
वह लड़का मेरी सहायता न करैगा तो लक्ष उलटजायगा वा जोमेरी
मात होचुकीहै शत्रुने लक्ष मेरा बिगाड़दिया है और बिसात उलटने
की इच्छा किये हैं और प्रसिद्ध है कि मैं हजरत सुलेमान की सन्तान
में से हूं और तुम हजरत इब्राहीम की औलाद हो इससे उचित है
कि एक पैग़म्बर की औलाद के लोग दूसरे की सहायता करैं और
अपनी काबूभर उसके कार्यको पूराकरें अमीर ने कहा कि जो वह देव
मुझसे माराजावे और नगर आदि छीनकर शाहजहाँ को मिलजाय
तो मैं चलने को मुस्तैदहूं अब्दुलरहमान ने कहा कि मैं रमलसे विचार
चुकाहूं और निश्चय है कि वह आपही के हाथसे मारा जायगा और
सब देश आपही का है और आपहीके हम लोग हैं और ईश्वर चाहेंगे
तो आपही के हाथसे सब दुःख दूर होजायगा अमरू का हाल सुनिये
कि अमीरके पाससे मक्केसे आकर सबलोगोंसे अमीरकी कुछकहाल
कहकर कहाकिजो तुमलोग आजकीरातको कुछ न देखोगेतो फिर कब
देखोगे तबसबलोगोंने अपनी प्रसन्नतासे जिसकी जोखुशीमेंचाया वहदिया
और हरएकमनुष्यने अपने२स्थानपर नाचरङ्ग करवाया फिर प्रातःकाल
अमीरके समीपआया और सबहाल अपने जाने और प्रसन्नताका सुनाया
तब अमीरने अमरू से कहा कि भाई एक सफर थोड़े दिनोंका और शेष
रहाहै देखें ईश्वर उससे क्या करताहै अमरूने कहा कैसाहै तब अमीर
ने जो कुछ अब्दुल रहमान से सुनाथा बयान किया अमरू ने कहा ऐ

अमीर यह तू कैसा विचार करता है कि ऐसा आराम और मलका मेहरनिगार को घरमें बैठाकर बाहर जाने की इच्छाकरता है यह बात उत्तम नहीं है अमीरने कहाकि अब उनका एहसान मेरे ऊपर है कि उन्होंने आकर दवाकी और मेरा शिर अच्छाकरके मेवा खिला-कर शरीर में बलका प्रवेश कराया है तब अबदुल रहमान ने कहाकि आपको तीन दिन जाते और तीन दिनआते और एक दिन वहां पहुंच कर स्वस्थहोने में और एक दिन उसके मारने में और पीछे एक दिन विजय की प्रसन्नता में सब नव दिन आपको लगेंगे अमीर ने कहा चाहे अठारह दिन लगेंगे परन्तु हम चलेंगे ऐसे समयमें आंख छिपाना और न जाना अनुचितहै अब अमरूने कहाकि आपकी खुशीहै चाहे अठारह दिनरहो चाहे उन्नीसदिन मेहरनिगार को लीजिये आप जानिये आप का काम जाने मैं तो अपनी राह लेताहूं अमीर ने कहा बहुत अच्छा जाओ मेरा क़लमदान ले आवोतो मैं मेहरनिगार और सेनाकेसरदारों को पत्रलिखदूं कि जबतक मैं न आऊं सब तुम्हारी आज्ञा में रहें परन्तु ईश्वर के लिये बहुत आज्ञा बार बार न देते रहियेगा और सेनापति इत्यादि अधिकारियों पर हुकूमत न रखियेगा अमरू रोताहुआ उस गुफासे निकला और मक्केकी तरफ चला जिससमय मक्केमें पहुंचा ख्वाजे अबदुल मुत्तलिब ने अमीरके परदे क़ाफपर जानेका हाल सुनातो अप्रसन्न होकर अमरूसे कहनेलगाकि किसी युक्तिसे अमीर को जानेसे मनाकरो और किसी युक्ति से यहां तक लावो अमरूने कहाकि मैंने बहुत समु-झाया परन्तु वह नहीं मानता अब जो आपके लिखनेको मानजाय तो अतिउत्तमहै ख्वाजे अबदुलमुत्तलिबने अमीरका कलमदान मंगवाकर एक पत्र लिखकर अमरूको दिया अमरू वहां से सेनामें आकर सेनापतियों को अमीर के जानेका हाल सुनाया वे लोग सुनकर रोने पीटने लगे तब मेहरनिगार के समीप आकर अमीर के जाने का हाल कहा वह पृथ्वी पर गिरपड़ी और रोने लगी अमरू ने कहा कि ऐ मलका रोने पीटने से कुछ न होगा इसमें कोई युक्ति करनी चाहिये जिस तरह से ख्वाजे अब्दुल मुत्तलिबने पत्र लिखा है उसी प्रकारसे तुम भी लिखो उत्तर में आपही साफ खुल जायगा मलका ने एक पत्र लिखा और उसमें यह भी लिखदिया कि जो तुम जावोगे तो फिर आकर मुझको जिन्दा न पावोगे नहीं तो मुझे भी साथ लेते चलो अमरू उस पत्र को भी उस पत्रके साथ रखकर चुप के अमीर का कलमदान ले कर अमीर के समीप आकर कलमदान को रख उन दोनों पत्रों को भी समीप रखदिया अमीर ने प्रथम एकपत्र अपने पिताके नामलिखा और फिर एक पत्र सेनापतियों के नाम लिखा कि जिसको २ हमारी आज्ञा माननीहै वह अमरू की आज्ञामें रहे और हम परदे क़ाफको

जातेहैं अति शीघ्रही उसके कार्य्यको पूर्ण करके आते हैं और तीसरा पत्र मलका मेहरनिगारको लिखा कि मैं अठारह दिनके वास्ते जाता हूं और ईश्वर ने चाहातो इससे अधिक न ठहरूंगा शाहनशाह परदेक़ाफ़ने अपने सेना पतिको मेरे इलाज के लिये भेजाहै उसी ने आकर मुझे अच्छा कियाहै इस कारण मुझे उसकी कार्य्य के लिये जाना उचित है और मेरी आज्ञा जो तुम मानती होतो अठारह दिन तक और सबर किये बैठी रहो और पुरुष स्त्रियों को युद्धमें नहीं लिये फिरते कि मैं तुझे साथ लेचलूं और हर स्थान पर तुम्हारा डेरा भी साथ रक्खूं हां जो केवल फिरने के लिये जाता तो लेजानेमें सन्देह नथा और जब तक मैंन आऊं अमरू को अपना शुभचिन्तक जानना इसमें बुराई कभी न होगी और इसी की आज्ञा पर रहना अमरू को पत्रों को दे कर कहा कि इनको पहुंचा कर हमारी सला (हथियार) लादो परन्तु किसी को मालूम न हो अमरू अमीर के पास से नगर में आया परन्तु पत्र किसी को न दिया हथियार लेकर अमीर के पास पहुंचा अमीर अति प्रसन्न हुआ चलने की तय्यारी होनें लगी हथियार बदन पर लगाया ॥

भाग जाना गुस्तहम का अमीरके हाथ से और छूटना उसका सेनाके साथमें ॥

भाग्यमें जोलिखा होताहै वही होताहै और जिसस्थानपर जिसकी मृत्यु होती है वह वहींपहुंच जाताहै गुस्तहमके युद्धकावृत्तान्त योंहै कि जिससमय अमीर मलकामेहरनिगार और सेनाके बहादुरों के साथमक्के की तरफ चले थे उसीसमय नौशेरवां ने एकपत्र उसके बुलाने के लिये लिखकर भेजाथा वह बेचारा दोमन्जिलें चलकर मदायन में पहुंचा नौशेरवां ने नगरके लूटने और मलका के लेजाने का वृत्तान्त कह कर कहा कि आज कईदिन हुये हैं कि जोपीनकाऊस चालीसहस्र सवार लेकर आया था उसको मैंने ऐय्याशान मलिक की तीसहजार सवार साथ करके हमज़ा को मारने और मेहरनिगार के लेआने को भेजा है परन्तु तुम भी जाकर उन दोनों सरदारों को साथ लेकर हमज़ा को मारो और मेहरनिगारको लेआओ गुस्तहम तीस सहस्र सवारलेकर मक्केकी ओर चला जब समीप पहुंचातो मालूम हुआ कि अमीर को जोपीनने तलवार मारीहै उसका पतानहींहै कि मरगया या जिन्दाहै पर जोपीन और गुस्तहम से मार्ग में मुलाक़ात न हुई क्योंकि जोपीन का रूस अलंगज मुरदकी तरफ़से गयाथा और गुस्तहम जङ्गल फौजकी तरफ़से चलाथा और रास्तेमें यह खबरसुनी कि थोड़ेसे मुसल्मान मक्के में बदहवास होकर पड़ेहैं यह सब वृत्तान्त सुनकर गुस्तहम अतिप्रसन्न हुआ और मक्के से तीन कोसपर डेरा डालकर डंका युद्ध का बजवाया और अभीतक अमीर परदेक़ाफ़ की तरफ़ रवाना न हुयेथे कि तबलका

शब्द उनके कानोंमें पहुंचा अमरूसे कहा कि देखो तो भाईयह तबल
कहांबजा क्या किसीकी सेनातो नहींआती अमरूनेयह सुनकर बाहर
निकलकर देखातो एकमेला कईसहस्र सवारोंकी दिखाईपड़ीतब लोगों से
पूछा तो मालूमहुआ कि गुस्तहम तीसहजारसवारोंसे लड़नेको आया
है नौशेरवां ने अमीर के मारने और मलकामेहरनिगार के लेजाने के
वास्ते भेजा है पहिले तो अमरू ने क़िलेपर जाकर लोगोंको दिवालों
और बुरजोंपर मुक़र्ररकिया और तीरन्दाज़ और बरक़न्दाजोंको अपने
स्थानपर मुक़र्ररकिया तत्पश्चात् अमरू ने इच्छा की कि इस वृत्तान्त
को अमीर को सुनाऊं कि गुस्तहम तीस हजार सवार से क़िले पर
आपहुंचा और लोगोंको धावा करनेकी आज्ञा दी उसीसमयकईहजार
सवारों से क़िलेपर धावाकिया और भीतर जानेकी इच्छाकी अमरूने
वह आतशबाजी जारी कि जितने आये थे वह सब जलगये शेष डरसे
भाग कर सेना में चलेगये तब गुस्तहम ने लौटने का बाजा बजवाकर
आज्ञा दी कि आज चलो कल एक दम में सबको पराजय करविनाश
करदेंगे अबहमला नहींहै तो इसछोटेसे क़िलेका लेनाकौनबड़ीबात है
और यह थोड़ीसीमुसल्मानीसेना कब हमसे विजयपासक्तीहैप्रातःकाल
खड़ीसवारी चलकर सेना मुसल्मानी को मार मलका को लेकर चलेंगे
अमरू ने जब उसको युद्ध से छुट्टीपाई तब जाकर अमीरसे सब वृत्तान्त
कहा अमीर ने आज्ञा दी कि तुम चलकर डंका युद्धका बजवावो और
प्रातःकाल सेना लेकर मैदान में जमावो मैं आकर ईश्वर चाहैंगे तो
विजय करूंगा और शाहकैतासको मेरेपास भेजकर सेना को सजुआ
देना कि अमीर भी आते हैं अब्दुल रहमान ने विनय किया कि शाह
कैतास को न मंगवाइये अगर जल्दचलना है तो इसी तख़्त पर बैठकर
चलिये अमीरने उसकी प्रार्थना मानली शाह कैतस के लाने को
मनाकरदिया और अमरू से कहा अच्छा भाई तुम जाकर प्रातःकाल
सेनाको जमाकर हमारा आसरा देखतेरहना ईश्वर चाहेगा तोआकर
उसको यहां आने का फल दिखाला देंगे अमरूने क़िले में आकर
हरएक को प्रसन्न किया और कहा कि प्रातःकाल तुमलोग अमीरको
देखोगे हमने जाकर सब हालगुस्तहम का कहाहै तब अमीरने कहा
कि तुम इसीसमय चलकर युद्धका डंकाबजवावो लड़ाई की तैयारीकरो
प्रातःकाल मैदानमें परेट जमाके हमारा इन्तिज़ार करना हम आकर
गुस्तहमको दण्डदेंगे उसका अभिमान धूलमें मिलादेंगे विजय करेंगे यह
कहकर कबाबचीनी और कलाबचीनी तबल सिकन्दरी बजाने की
आज्ञा देकर युद्धका सामान करने लगा यह हाल सुनकर सब लोग
अतिप्रसन्न हुये हर स्थानोंपर शब्बरात और शबईद होगई रात्रि भर
दोनों सेनाओं में युद्ध का डंका बजाकिया और युद्धका सामान हुआ

प्रातःकाल अमह् एक ऊंटपर सवार होकर सेनाको युद्धस्थल में लेजा-कर श्रेणीवद्धखड़ा करदिया उधरसे गुस्तहमकीभी सेनाआई जब गुस्तहम ने देखा तो मालूम हुआ कि अमीर नहीं है अमह् सब सामान कर रक्खा है तब तो अति प्रसन्न होकर सेना को बाहर करने लगा इतने में अमीर का तख़्त देख पड़ा तब अमह् ने अपनी सेनासे कहा कि देखो अमीर का तख़्त आताहै सब उसी तरफ देखने लगे और समीप आया तो देखा कि पलयीमारे सब हथियार धारण कियेहुये बैठेहैं औरमुख पर बिमारी का लक्षण कुछ नहीं मालूम होता देखकर सब लोग अपने २ घोड़े परसे उतरने लगे तब बहुत से लोगों का पैर रिकाब में फांसकर गिरनेलगे तब गुस्तहम देखकर हंसने लगा और कुछ अपनी सेना के सरदारों से कह रहा था कि अमह्ने कहा कि तू क्या बकता है तेरे जीव का गाहक अमीर आपहुंचा वह इधर उधर देखने लगा इतने में अमीरका तख़्त आसमान परसे पृथ्वी पर आउतरा तब तो वे लोग दंगहोगये और कहने लगे कि कहां का शैतान चरखा आपहुंचा दूसरा तो हंसने औरभी कुछ हाल सुनाया यह जीताकहां से आया इतनेमें अमीरने तख़्त परसे उतर कर ललकाराकि जो आया है तोसामनेआवहतो ईर्षाऔर गुस्सेभराया आतेही अमीरकीछाती में एक बरछी मारी अमीरने बरछी छीनकर उसको जो लगाई तो उसका भेजानिकल आया और पृथ्वी पर गिरके मरगया जब गुस्तहम प्यादा हुआ तो एक तलवार का वार अमीर पर किया अमीर ने अपनी तलवार पर रोका तो उसकी तलवार के दो टुकड़े होगये और केवल क़ब्ज़ा उसके हाथ में रहगया फिर जब अमीर ने तलवार चलाई तो गुस्तहमने अपना सिरझुकाया अमीरने ऐसा मारा कि दो टुकड़े हो गया यह देखकर सेना जो उसकी दौड़कर आई तो अबदुल रहमान ने अपने चार सौ दूतों को जिनको साथ लाया था आज्ञा दी कि अब क्या देखते हो इनको मारो तब चार सौ दूत दोदो मनुष्यों को उठा कर आसमानपर उड़गये इसी प्रकारसे बीस सहस्र सेना गुस्तहमकी मारी गई और तीन सहस्र पहिले दिन जब गुस्तहम ने किलेमें आने की आज्ञा दीथी अमह् ने अतिशबाजीसे जलाकर मार डालाथा सात सहस्र सेना जो तीस सहस्र सेना मेंसे शेष रहगई थी उसने अपने प्राण के डरसे गुस्तहम की लाशको लेकर मदायन की राहली तत्पश्चात् अमीर ने गुस्तहम के युद्धसे बिजय पाकर अबदुलरहमान को साथ लेकर परदेकाफ की तरफ यात्रा की और अपनी सेना को उसी स्थान पर रहने की आज्ञादी॥

अमीर का परदेक़ाफ को जाना और उसका अठारह वर्ष के बाद लौटना

इस वृत्तान्तके लिखनेवाला मनरूपी बनकोइसतरह तैकरताहै कि

सफर बहुत दूरदराज का पेशआने और गुस्तहमको साथ सेना के मारे जाने और अमीर का परदेकाफ के जाने का वृत्तान्त यों लिखता है कि जब अमीर परदेकाफ की तरफगये तो असहूने जो माल और असबाब गुस्तहम की सेनाका लूटाया उसको कुछ तो सेना को बांटदिया और कुछ आपलेकर ख्वाजे अब्दुलमुत्तलिबके पास जाकर पत्रका उत्तरदिया और मेहरनिगार का मेहरनिगार को और सेना का सेनापतियों को देकर अमीर के परदेकाफ जाने कि खबर सब छोटे बड़ों को दिया तब ख्वाजे अब्दुलमुत्तलिब ने सन्तोष किया और अमीरके लौट आनेकोदुआ मांगने लगा और विजय का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ तत्-पश्चात् सेना ने असहूसे कहा कि ऐ ख्वाजे हमलोगतो सदैव से तुम को दूसरा अमीर हमजा समझते हैं हमलोगों को हरप्रकार से आप की सेवकाई और आज्ञा माननी उचित है जो आप अग्निमें कूदने को कहैं तो कूदपड़ें यह सुनकर असहू ने सबको छाती से लगाया और सबको प्रसन्नकरके कहा कि यह क्या बातहै तुम सब अमीरके मित्रहो मुझको उचित है कि तुमलोगों के साथ भाई की तरह रहूं और जानदेने को तैयार रहूं औ सबलोग मिलकर मलका मेहरनिगार की रक्षा करें क्योंकि नौशेरवां ऐसा बादशाह उसके लेजाने की इच्छारखता है और अब जो अमीर के परदेकाफ के जाने का हाल सुनैगा तौ अवश्यकरके कोई युक्ति मलका के लेजाने की करैगा तब सरदारोंने कहा कि और तो क्या जो नौशेरवांखुद एकदफा मलका मेहरनिगारके लेनेको आवेगा तो वहभी लज्जितहोकर लौटजायगा असहूने कहा कि मुझेइससे अधिक तुमलोगोंका भरोसाहै और यही पहलवानों और बुद्धिमानोंका काम है जो ऐसा न होता तो अमीर मलका को तुम्हारे भरोसे कब कर जाते यह कहकर सेनाको क़िलेमें लेजाकर क़िलेको अच्छीतरह से बनवाकर खन्दकखोदके पनियासोतकरवाया और पुलका तख़्ता उठवाकर उसी फाटकपर कारचोबीका एक डेरा खड़ाकराकर उसके चारोंतरफकुर-सियांपत्थर की बराबरसे चुनवाकर बादशाही सामानसे अधिक सामान करके मलिकामेहरनिगार के समीपगया और विजयका हालसुनाया मेहरनिगार ने कहा कि ऐ ख्वाजे तुमको मैं पिता के समान जानती हूं और हरप्रकार से तुम्हारा कहना मानतीहूं अमीर ने पत्रलिखा है कि असहू की आज्ञा मानना और कोई कार्य्य बेसलाह उसके न करना ईश्वर उस सायत मुझे भी न रक्खे जिस सायत मैं तेरी आज्ञा से बाहर हूं ख्वाजा यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐ मलका जोकुछ मैं कहूंगा वह तेरे लिये उत्तम होगा और अमीर ने जो लिखा है वह इसलिये लिखाहै कि हम जाते हैं और स्त्रियों को बुद्धि मरदों की तरह नहीं होती है और स्त्रियों को युद्ध करना अच्छा

नहीं मालूम होता और आपके पिताने चाहता है कि वह आपको ले जाया चाहता है और मैं तो आपका सेवकही हूं मेहरनिगार ने कहा कि ऐ ख़ाने यह कौनसी बात है मैं अमीर के आगे पीछे हरसमय तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूं यह सुनकर अमक़ अपने चित्तमें अति प्रसन्नहुआ और छः मासकी जिन्स भोजनके वास्ते लेकर क़िलेमें रक्खी और कहने लगाकि अब छः मास चाहे सब देशकी सेना आवे तो क़िला न छूटेगा ईश्वरकी छायामें पनाहलीहै वही हर प्रकार से रक्षाकरेगा यह कहकर सरदारों और पहलवानोंको हर स्थानोंपर स्थित करके आप बादशाही कपड़े धारणकरके शामियाने के नीचे बैठकर अमीर के आनेके दिन गिनने लगा ॥

वृत्तान्त अमीर का जो क़ाफ़ के मार्ग में हुआ ॥

अमीर के आश्चर्यरूपी सफर का वृत्तान्त यों लिखतेहैं कि जिससमय जिन्नोंने अमीर को तख़्तपर बैठाकर उड़ाया तो इस क़दर दूर ऊपर उड़ा ले गये कि पहाड़ और क़िलेआदि भी न दिखाई देतेथे सायंकाल के समय एक बनमें तख़्त को उतारा अमीरने पूछाकि यह कौन स्थान है और इसका नाम क्या है अबदुलरहमान ने कहा कि अभी यहां तक मनुष्यहीका राज्यहै और इस बादशाहका नाम रुस्तम पुचजालहै और यह उसीका अखाड़ाहै अमीरने जब निमाज़ पढ़कर छुट्टीपाई तब उस शहरके तरफ देखनेके लिये चलागया और दो एक जिन भी साथगये उसमें एक गुम्बद देखाईदिया उसके भीतर जो गये देखा कि एकसंदूक़ बन्दकिया हुआ छतमें लटका है उसको अमीरने उतारकर खोला तो देखाकि उसमेंएककमरबन्द औएकखञ्जर और एकहलका कमानरक्खा हुआ है और पत्थर पर लिखा है कि यह असबाब रुस्तम का है और कोई इसको नहीं लेसक्ता है केवल वह मनुष्य जो साहब क़िरां और हमारे रतने का जानने वालाहोगा वही इसको उतारसकेगा अमीरने उसको सहजमें लिया और अति प्रसन्नहोकर अबदुलरहमान के पास आया उसको वह असबाब और तख़्तीदिखाई उसने कहाकि आपको सफल हो यहसगुन अतिउत्तम अकस्मात् से मिलाहै उसदिन उसी स्थानपर बासकिया दूसरेदिन सबेरे चलकर एक मुकामपर आउतरेतो देखा कि एक दीवार लोहे की बहुत पुरानी कोसों तक खड़ी है और उसके दरवाजे का कहीं पता नहीं मिलता है मनुष्य क्या जानवरोंकी भी वहांतक पहुंच नहींथी आज्ञा दी कि दरवाज़ा तलाश कियाजावे जिन्नों ने ढूंढ़कर दरवाजे का पतालगाया अमीर उसके भीतरगये तो देखाकि सब घासआदिक उपजी है और एकगुम्बद है उसमें एक साधु बैठा पूजाकररहाहै उसने अमीरको देखकर नमस्कारकिया और कहा कि ऐ अमीर दो वर्ष से आप के आसरे में बैठाहूं अमीर ने भी सलाम

करके पूछाकि आपने मुझेकिसतरह जाना और क्योंकर पहिचाना कि साहब क़िरांहै उस साधूने कहा कि मैंने सुनाथा कि यह सरहद क़ाफ़ काहै यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एकमनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपा से मैंने आपको देखा और केवल इतनीही विनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान करवाकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यहकहकर मंत्रपढ़कर प्राणको त्यागकर दियायह देखकर अमीरको आश्चर्य हुआ उसकी आज्ञानुसार उसकी मिट्टी स्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख़्त् पर सवार हुये एकरात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक बनमें उतरे अमीर ने अबदुल रहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतरने का क्या कारण है अबदुलरहमान ने कहा कि इस स्थान पर इस लिये उतरते हैं कि यहां से थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को जो इसमार्ग से आते हैं देख कर मार डालता है और जिसको नहीं देखता वह बच कर निकल जाता है इसकारण मैं यहां उतराहूं कि आधी रात्रि को निस्संदेह निकल चलेंगे कि उससे बचकर चलेजांयगे अमीर ने कहाकि हमको उसके स्थान पर लेचलो कि हमभी उसे देख लेवें और जो मन पड़ेगा तो उसको मार कर लोगों को आराम देवेंगे अबदुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान देवहै वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बतावो कि वह जिनहै यामार्ग का डाकू केवल बलवानहै अबदुलरहमान ने कहा जिनके आगे राहदार क्या चीज़है वह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिनको मारने के लिये तो तुम हमको लिये जाते हो और इसके मारने को मना करते हो तब अबदुलरहमानने माक़ूल होकर कहा कि एकबला इस राहमें और भीहै जिसके डरसे कोई इस स्थान पर नहीं ठहरता अमीरने कहा कि वह क्या है उसका क्या नाम है उसने कहा एक व्याघ्र है बड़ा लागन है अमीर व्याघ्र का नाम सुन कर अति प्रसन्न हुआ और उसीदम चला व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनीमांदसे बाहरनिकलकर चारों तरफ़ देखने लगा अमीर ने देखा तो साठहाथ का लंबाथा अति बलवान हज़ार व्याघ्रों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो वह गरजता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी कि साफ़ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिर पड़ा जिन अमीरके बलको देखकर दंग होगये अबदुलरहमान ने अमीर के बाज़ू को चूमलिया और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राहली अमीर तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा नहो कि मेरीजान के डरसे राह काटकर चलेजांय और उसके स्थान पर न लेचलें इतने में

प्रातःकाल होते उसके स्थानपर जापहुंचे परन्तु जिन्नों के शरीर में फफोले पड़गये पैर फूलगये उसके डर से उसके स्थान के समीप तख्त को रखकर सब जिन्न इधर उधर छिपगये अमीर तख्त परसे उतरकर राहदार की तलाशमें चले राहदार का हालसुनिये कि वह तीनसौ देवोंके साथ उस स्थानपर रहताथा और सदैव हाल मंगवाया करता था कि शाहनशाह परदेकाफ किस विचार में है उसी तरह से एक दिन एक देव ने आकर हाल दिया कि शाहनशाह ने अबदुलरहमान् को मनुष्यके लानेके लिये दुनियांमें भेजाहै सुनाहै कि वह बड़ा बलवान पहलवान और बहादुर है वह आकर काफ के देवोंको मारकर फिर शाहनशाह काफ को राज्य दिलवा देगा उसी दिन से वह राहदार घातमें दिनरात बैठारहता था संयोगसे उस समय भी बैठाहुआ देख रहा था कि अमीर को देखा तो जाना कि वह आदमी आया है और यह उसका साथी है उसी समय एक देव को आज्ञा दी की जाकर उस मनुष्यको जीता मेरेपास लावो देवजो अमीरके पास आया हाथ बढ़ाकर चाहा कि अमीर को उठा कर राहदार के समीप पहुंचावे अमीर ने उसका हाथ पकड़कर एक झिटकादिया तो वहघुटनोंकेबल बैठगया तब अमीरने एकघूसा उसके सिरपर ऐसामारा किमगज उसकी गरदनमें घुसगया और वह मरगया राहदारने यहदेखकर जाना कि निश्चय करके यहवही मनुष्यहै जिसे अबदुल रहमान लेने गयाथा यह विचारकर तीनसौदेवों समेतअमीरके ऊपरआया अमीरने इस जोरसे ईश्वरका नाम पुकारा कि सब बनकाबन हिलगया जिन्नों का दमसा निकल गया राहदार अपने तीनसौ देव लेकर अलग खड़ा हुआ और एक तरफ जाकर युद्धकरनेको आरूढहुआ अमीरने जोदेखा कि एक बना लम्बो करीब तीनसौगजकेथो और पचास२ हाथके समान इसकी दोड़ालियां ऐसी सिरपरहैं और बड़ा भारीमुख जिससे लार निकल रहीहै और नेत्र लालहोरहे हैं पलकें साहीके कांटा की तरह खड़ीहैं नाक एक ताबूतके समान नेत्रोंके नीचे ओठोंके ऊपर रक्खी है कमरमें शेरोंकी खालकसीहुई है उसपरपूछअपनी लपेटे जञ्जीरें केवल सोनेकी अपनेहाथपैर गलेमेंडालेहुवे अमीरके सामनेआकर कहनेलगा वे (साहब सिरदान्त पेद) तूनेमेरेदेवको क्योंमारामुझसेकुछडरानहीं अबतू किस तरहमुझसेबचकर जायगा यहकहकर एकतलवार अमीरके सिरपरचलाई अमीर ने उसकोरोका एक खञ्जर दस्तमका ऐसे जोरसे उसके पहलुमें मारा कि दूसरे पहलुकी तरफसे वहखञ्जर निकलागया उसने एकही वार में दांत निकाल दिये अमीरने खञ्जर निकालकर मियानमें किया तलवार निकालकर और जो तीनसौ देवखड़े थे उनपर दौड़े और जिस पर एकवार चलाई वह फिर न उठा अबदुलरहमानने जाकर जिन्नोंसे

करके पूछा कि आपने मुझे किसतरह जाना और क्योंकर पहिचाना कि साहब ख़ारांहै उस साधूने कहा कि मैंने सुनाथा कि यह सरहद क़ाफ काहै यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एकमनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपा से मैंने आपको देखा और केवल इतनीही विनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान करवाकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यहकहकर मंत्रपढ़कर प्राणको त्याग कर दिया यह देखकर अमीरको आश्चर्य हुआ उसकी आज्ञानुसार उसकी मिट्टी ख्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख़्त पर सवार हुये एकरात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक बनमें उतरे अमीर ने अबदुल रहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतरने का क्या कारण है अबदुलरहमान ने कहा कि इस स्थान पर इस लिये उतरते हैं कि यहां से थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को जो इसमार्ग से आते हैं देख कर मार डालता है और जिसको नहीं देखता वह बच कर निकल जाता है इसकारण मैं यहां उतराहूं कि आधी रात्रि को निस्सन्देह निकल चलेंगे कि उससे बचकर चलेजांयगे अमीर ने कहाकि हमको उसके स्थान पर लेचलो कि हमभी उसे देख लेवें और जो बन पड़ेगा तो उसको मार कर लोगों को आराम देवेंगे अबदुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान देवहै वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बतावो कि वह जिनहै यामार्ग का डाकू केवल बलवानहै अबदुलरहमान ने कहा जिनके आगे राहदार क्या चीज़है वह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिनको मारने के लिये तो तुम हमको लिये जाते हो और इसके मारने को मना करते हो तब अब-दुलरहमानने नाकूल होकर कहा कि एकबला इस राहमें और भीहै जिसके डरसे कोई इस स्थान पर नहीं ठहरता अमीरने कहा कि वह क्या है उसका क्या नाम है उसने कहा एक व्याघ्र है बड़ा लागन है अमीर व्याघ्र का नाम सुन कर अति प्रसन्न हुआ और उसीदम चला व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनीमांदसे बाहरनिकलकर चारोंतरफ देखने लगा अमीर ने देखा तो साठहाथ का लंबाथा अति बलवान हज़ार व्याघ्रों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो वह गरजता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी कि साफ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिर पड़ा जिन अमीरके बलको देखकर दंग होगये अबदुलरहमान ने अमीर के बाजू को चूमलिया और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राहली अमीर तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा नहो कि मेरीजान के डरसे राह काटकर चलेजांय और उसके स्थान पर न लेचलें इतने में

प्रातःकाल होते उसके स्थानपर जापहुंचे परन्तु जिन्नों के शरीर में फफोले पड़गये पैर फूलगये उसके डर से उसके स्थान के समीप तख़्त को रखकर सब जिन्न इधर उधर छिपगये अमीर तख़्त परसे उतरकर राहदार की तलाशमें चले राहदार का हालसुनिये कि वह तीनसौ देवोंके साथ उस स्थानपर रहताथा और सदैव हाल मंगवाया करता था कि शाहनशाह परदेशाफ किस विचार में है उसी तरह से एक दिन एक देव ने आकर हाल दिया कि शाहनशाह ने अबदुलरहमान् को मनुष्यके लानेके लिये दुनियांमें भेजाहै सुनाहै कि वह बड़ा बलवान पहलवान और बहादुर है वह आकर आप के देवोंको मारकर फिर शाहनशाह आफ को राज्य दिलवा देगा उसी दिन से वह राहदार घातमें दिनरात बैठारहता था संयोगसे उस समय भी बैठाहुआ देख रहा था कि अमीर को देखा तो जाना कि वह आदमी आया है और यह उसका साथी है उसी समय एक देव को आज्ञा दी की जाकर उस मनुष्यको जीता मेरेपास लावो देवजो अमीरके पास आया हाथ बढ़ाकर चाहा कि अमीर को उठा कर राहदार के समीप पहुंचावे अमीर ने उसका हाथ पकड़कर एक झिटकादिया तो वहघुटनोंकेबल बैठगया तब अमीरने एकघूसा उसके सिरपर ऐसामारा किमग़ज़ उसकी गर्दनमें घुसगया और वह मरगया राहदारने यहदेखकर जाना कि निश्चय करके यहवही मनुष्यहै जिसे अबदुल रहमान लेने गयाथा यह विचारकर तीनसौदेवों समेतअमीरके ऊपरआया अमीरने इस जोरसे ईश्वरका नाम पुकारा कि सब बनकाबन हिलगया जिन्नों का दमसा निकल गया राहदार अपने तीनसौ देव लेकर अलग खड़ा हुआ और एक तरफ जाकर युद्धकरनेको आरूढ़हुआ अमीरने जोदेखा कि एक बला लम्बो करीब तानसौगजकेथी और पचास २ हाथके समान इसकी दोड़ालियां ऐसी सिरपरहैं और बड़ा भारीमुख जिससे लार निकल रहीहै और नेत्र लालहोरहे हैं पलकें साहीके कांटा की तरह खड़ीहैं नाक एक ताबूतके समान नेत्रोंके नीचे ओठोंके ऊपर रक्खी है कमरमें शेरोंकी खालकसीहुईहै उसपरपूंछअपनी लपेटे जञ्जीरें केवल सोनेकी अपनेहाथपैर गलेमेंडालेहुवे अमीरके सामनेआकर कहनेलगा वे (साहिबक़िरानीके पोते) तूनेमेरेदेवको क्योंमारामुझसेकुछडरानहीं अबतू किस तरहमुझसेबचकर जायगायहकहकरएकतलवारअमीरके शिरपरचलाई अमीर ने उसकोरोका एक खञ्जर रुस्तमका ऐसे जोरसे उसके पहलूमें मारा कि दूसरे पहलूकी तरफसे वहखञ्जर निकलगया उसने एकही वार में दांत निकाल दिये अमीरने खञ्जर निकालकर मियानमें किया तलवार निकालकर और जो तीनसौ देवखड़े थे उनपर दौड़े और जिस पर एकवार चलाई वह फिर न उठा अबदुलरहमानने जाकर जिन्नोंसे

कहा कि अब तो राहदार मारागया और किसीका डर नहीं है अबचल कर अमीरकी सहायता करनी चाहिये जितने जिन् थे देवोंपर कूदपड़े और खूनी खोलकर लड़े बहुत से देव तो मारेगये थोड़ेसेबचकर भाग गये अमीरने उनकापीछा न किया और उसीदम अब्दुलरहमान को लेकर उसके मकान परगया तो वहां बहुतसा जवाहर और अनेक २ प्रकारके असबाब देखकर अमरूको याद किया कि अफसोस इससमय अमरू न हुआ और अबदुलरहमान से कहा कि यह सब माल जखिक शह पालका है उससे मुझे कुछकाम नहीं है इसको उठवाकर अपने शाहके समीप पहुंचावो कि उसका चित्त अपने मालको देखकर प्रसन्न हो जितनेजिनथे अमीरकी बहादुरी और हौसिलेकी बड़ीप्रसंशाकी कि इसकदर मालको अपने हाथसे खोताहै राहदारका शिर चारजिन्नोंसे उठवा कर अमीर अपने तख्त पर सवार होकर चले और जिस समय क़िलेकेसमीप पहुंचेसुलासल जिन्नीचालीससहस्र लेकरसवार अमीरकी अगवानीके लिये आया और क़िलेमें जाकरशाहानी दावतका सामान अमीरको दियादूसरे दिनअमीर सुलासलजिन्नीको भी साथलेकर गुलि-स्तान आरामकी तरफ रवानाहुये लिखने वाला लिखताहै कि शहपाल अमीरके आनेका हालसुनकर फूलकीतरहफूलगया और आज्ञादी कि सामान शाहनशाही तैयारहो हम हमजा को अगवानी लेनेके वास्ते जांयगेअति शीघ्रही सामान शाहीतैयारहुआ था। हनशाहकाफ बड़ेधूम धामसे अमीरकी पेशवाईके लियेचले अमीरकाहाल सुनिये कि दाहिने बांये तो अबदुल रहमान और सुलासिलके तख्तथे और बीचमें साहब किरां बातें करतेचले आते थे कि सामनेसे सैकड़ों तख्त जिन्न परियां नाचतीं और गातीं जिनको देखकर मनुष्य मोहित होजाय दिखाई पड़े तखत् पश्चात् सैकड़ों तख़्तोंपर हजारों परीजातके मनुष्यजिनके कोमल शरीरऔर स्वभावको देखकर प्रेतलगे हुये मनुष्यों समानबेहोश होजावे और किसीके हाथोंमेंगुलदस्ते शहपाल के गिरदा गिरद दिखाई दिये देखनेवालोंको बड़ाआश्चर्यहुआ वनसबखुशबूसेभरगयाथा अबदुलरहमान और सुलासल जिन्नी ने दूरसे देखकर अमीर से कहा कि शाहनशाह आपकी पेशवाई के लिये आतेहैं क्या आज्ञाहै जबतख़्त् समीप पहुंचा तख्तको पृथ्वीपर रखवाया और शहपालने भी परीजादोंसे कहा कि हमारातख्त साहबकिरांकेसमीपरक्खो साहबक़िरांने तख्तपरसे उतर कर शहपालको चूमा शाहनशाह ने भी खूबछाती से लगाया और मुखचूमकर कहा कि हमने आपको बड़ादुःख दिया परन्तु यह प्रसिद्ध है कि बड़ेही मनुष्य बड़ोंका कामकरते हैं अमीरने कहा यह कौनबड़ी बातहै जो मेरा प्राण जाताहो और आपकाकार्य हो तो मैं देने को तैयारहूं और उसमें मेरी बड़ीप्रतिष्ठा होगी यह कहकर राहदारका

फिर और सब माल जो उसका ले आया था शाहनशाह के समीप रखदिया शाहनशाह अमीर से बहुत प्रसन्नहुये और सब लोग अमीर के बल और बहादुरी पर आश्चर्य करने लगे और और अति प्रशंसा आपसमें करने लगे शाहनशाह ने उसीस्थान पर अब्दुलरहमान को खिलअतदेकर उसका ओहदादूना करदिया फिरअपनेसाथ अमीरको तख़्तपर बैठाकर गुलिस्तान अरममें पहुंचे अमीरको बारगाह सुलेमानीसे उतार कर एक जवाहिर लगेहुये तख़्तपर बैठाया और जवाहिरआदि लाकर अमीरके सामनेरक्खा और परियोंको जोड़े पोशाक़ पहिनाकर खड़ा करवाया और अमीरका स्वरूप और सुन्दरताको देख कर प्रशंसा करने लगे और शाहनशाह का यह हाल था किअमीर की तरफ देखनेके सिवा और कुछ न करताथा और अमीर सिरझुकाये हुये बैठा था शाहनशाहने जब अमीरको चुप देखा तो क़ाफके अंगूर की शराब मंगवाने की आज्ञा देकर कहा कि जब तक शराब न आवे तबतक राक्षिसपरदेदुनिया का हाल लिखा सुनावे ॥

नौशेरवां का अमीर के कोह क़ाफ की तरफ जाने का हाल सुन्ना और हमका सेना भेजना मक्के को ॥

अख़बार नवीस लोग इसतरह बयान करतेहैं कि नौशेरवां जोपीन और अब्बासका वृत्तान्तसुनकर अति व्याकुलहोथाकि इतनेमेंगुस्तहमकी भीलाश आई और हमराहियों ने सब वृत्तान्त हमजा का उसे कहा कि जिस समय गुस्तहमने अपनी सेनाको लेजाकर युद्ध के लिये आरूढ़ किया उसी समय हमजा का तख़्त आसमानसे आकर उतरा हमजा ने तो गुस्तहम को मारा और सवारों को पृथ्वी से किसी ने उठा कर आसमान पर लेजाकर वहीं से ताक २ के ऐसे निशाने मारे कि जो सेना पृथ्वी पर थी वह भी दब २ कर मरगई और इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना मारी गई परन्तु उसके मारने वाले दृष्ट न पड़े इस वृत्तान्त को सुन कर बुजुरचमेहर को बुला कर यह सब वृत्तान्त उससे पूछा उसने रमलसे विचारकरसब वृत्तान्तपरदेक़ाफ काबयान कियाकि शहपाल शाहनशाह परदे क़ाफने अमीरको अपनी सहायताके लिये बुलाया है और उन्हीं जिन्नों ने जो अमीरके बुलाने के लिये आये हैं गुस्तहम के सवारों को मारा है और हमजा जो अठारह दिन के लिये गया है परंतु अठारह वर्ष तक वहां रहेगा और क़ाफ के जिन्नों को नाशकर पृथ्वी पर आवेगा और कोई जिन्नों उससे न जीतेगा यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां अतिप्रसन्नहुआकि अठारह वर्ष तक कौन जीता और मरताहै अवश्यकरके हमजा किसी जिन्नसे मारा जावेगा इस समयमें मुसल्मानों से अपना बदला लेना चाहिये यह विचार कर बेलस और क़ैलस को जो कि उसकी सेना के सरदारों

से अति बलवान और बहादुर थे तीस सहस्र सवार देकर मक्के की तरफ भेजा और कहा कि इस समय हमजा क़ाफ़ की तरफ गया है और मैदान खाली है तुमलोग जाकर जिसतरह से उचित हो मक्के को वीरान करके मलका मेहरनिगार को मेरे सम्मुख लाओ तब वे दोनों सरदार बादशाह से विदा होकर चले अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि जब अठारह दिन वितीत होगये और अमीर न आये तो बेहोश होकर रोते २ मलकामेहर निगारके पास गया तो उसको भी बेताब देखा तब वह अमरू से कहने लगी क्यों अमरूबाबा अमीर तो अभीतक न आये अब उनका स्नेह मुझे अतिब्याकुल कर रहा है और नहीं मालूमकि उनपर क्या२ दुःख पड़ते होंगे और मुझे सिवाय विष खाकर मरजाने के और कुछ नहीं सूझता और अगर मैं मरजाती हूं जिसस्थान पर तुम्हारी इच्छा हो वहां गाड़देना तब ख्वाजे ने कहा ऐ मलका तू यह क्या विचार करती है कोई जुदाई में विष खाकर मर-जाता है और हरएक प्रकार से उसको समझा कर कहा कि अब मैं अमीर का वृत्तान्त पूछने के लिये मदायन को जाताहूं बुजरुचमेहर से विचरवा कर जल्द आताहूं आप अपने मनमें ऐसा विचार न कीजिये मलका को समझाकर मुक़बिलके समीप आया और उससे कहा कि मैंतो बुजरुचमेहर से अमीर का हाल विचराने के लिये मदायनको जाताहूं और तुम अपने चालीस सहस्र तीरन्दाजों को लेकर मलका की रक्षा करना और क़िलेके हरस्थान पर पहलवानों को स्थित करके रखना और आप अमरू भेष बदल कर फ़ैजंग की मार्ग से चला थोड़ेदिन में पहुंचकर एक बनिये की सूरत बनाकर बुजुरुचमेहर के दरवाजे पर जाकरखड़ाहुआ संयोगसे उसीसमय वेभी दरबारसे आते थे अमरू को खड़ादेखकर पूछातू कौनहै अमरूनेकहा कि आपकी जागीर का असामी हूं लोगों ने मुझे बड़ा दुःख दिया है इसलिये तुम्हारे पास फ़िरयाद लेआया हूं और जो आप न सुनेंगे तो बादशाह के पास जाऊंगा बुजरुचमेहर ने उसकी अरजी को नौकर से मंगवा कर जो देखा तो मालूम हुआ कि अमरू है बैठके में बुलवा कर गले से मिला कर सब वृत्तान्त पूछा अमरू ने कहा क्या कहूं बड़ी आपदामें हूं कि हमजा अठारह दिन का वादा करके गया था उससे अधिक बीतगया परन्तु अभीतक न आया मालूम नहीं हुआ और मलकामेहर निगार विष खाने पर तैयार है ख्वाजेने कहा सत्य है कि अठारह दिन का वादा करके गया था परन्तु अठारह वर्ष के पश्चात् आवेगा और सब देवों का बध करेगा उसे किसी प्रकारसे दुःख न होगा और इस समयके वृत्तान्त होने में तुमको भी बड़े २ बादशाही पहलवानों से युद्ध करना होगा परन्तु युद्धमें तुम्हारीही बिजय होगी आप अति शीघ्रही मक्के में पहुंच

कर अपने क़िले का सामान करो किसी से डरना नहीं नौशेरवां ने बेलम और क़ीलम को तीस सहस्र सवार से तुम्हारे मारने और मलका के लेजाने को भेजा है अमरू ने कहा कि जो हमज़ा की चिन्ता में मेरा प्राण भी जायगा तो कुछ सन्देह नहीं है यह पहिले से मैं विचार चुका हूं जहां तक हो सकेगा युद्ध करूंगा और बेलम और क़ीलम तो क्या जो जमशैद और खुरशैद फिर भी उठें और मेहरनिगार का नाम मुख से लेवें तो फिर से गाड़े जावें और इसपर क़ाबू न पावें परंतु आप एक पत्र मलका मेहरनिगार को लिख देवें कि उनको तसल्ली हो और मेरे कहने पर रहें बुज़रुचमेहर ने क़लमदान मंगवा कर एक पत्र जिसमें सब हत्तान्त अमीर के अठारह वर्ष के बाद आने का और तसल्ली मलका को देने के लिये लिख कर अमरू को दिया वह उस पत्र को लेकर फ़ौज जंगल के मार्ग से मक्के में अति शीघ्र मंजिलें तै करके पहुंचा जब मलका मेहरनिगार ने उस पत्र को पढ़ा तो रोने लगी और कहने लगी कि किस तरह से अठारह वर्ष बीतेंगे अमरू ने हर प्रकार से मेहरनिगार को समुझाया और कहा कि ये अठारह वर्ष अठारह दिन के समान बीतेंगे और साथ कुशल आनन्द के आते हैं तुम बैठ कर ईश्वर का भजन करो और हमज़ा की कुशल के लिये वर मांगो अपने दिल को खुश कीजीये ईश्वर हमज़ा को एक दिन लाकर आपसे मिलावेगा अमरू ने मेहरनिगार के समझाने के पश्चात् सेना में आकर सब सेनापतियों और सिपाहियों से कहा कि अमीर अठारह वर्ष तक न आवेंगे बुज़रुचमेहर ने रमल से विचार कर मुझसे कहा है सो जिसको जाना हो वह अपने घर अभी से जाये और जिसको रहना हो वह हमारे भाई के समान हमारे साथ रहे और मलका की रक्षा करे तब सब सेनापति और सिपाहियों ने कहा कि हम लोग जब तक प्राण रहेंगे हमज़ा को छोड़ कर कहीं न जायंगे और अब आप हमज़ा के स्थानापन्न हैं आप की आज्ञानुसार होकर रहेंगे और आपको छोड़ कर कहां जावें यह बातें अमरू सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सबको छाती से लगा कर कहने लगा कि तुम लोग सब हमारे भाई हो जब हमज़ा आवेगा तुम लोगों के साथ अति प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होगा और हर एक के ओहदे बढ़ावेगा यह कहकर सब पहलवानों को क़िले की दीवारों पर स्थित करके रक्षा करने की आज्ञा दी आप शामियाने पर आकर शाहाना पोशाक पहिन कर जड़ाऊ कुरसी पर बैठ कर उन दोनों का आसरा देखने लगा कि थोड़ीही समय पर क़िले के सामने एक गरद उड़ती हुई मालूम हुई और थोड़ीही समय पर बहुत से वीर बलवान शस्त्र धारण किये हुये दिखाई दिये अमरू ने जाना कि बेलम और क़ीलम यही हैं उन के बेवक़ूफ़ों ने आते ही सेना

को क़िले के घेरने की आज्ञादी कि मुसलमानों को मार कर मलका मेहर निगार को निकाल ले आवो कि उसके बदले में खिलअत और पारितोषिक प्राप्त करके अति शीघ्रही मलकाको साथले कर मदायन में पहुंचें और जाकर बादशाह से अपना ओहदा बढ़वावें सवारों ने उसकी आज्ञा से घोड़ों कोदौड़ाकर क़िलेके समीप पहुंचाया जब क़िले की दीवार पर चढ़ आये तब अमरूने ऐसी आतशबाज़ी कि दृष्टि की कि जो आगे बढ़े थे उनको उस आगमें जलादिया और जो पीछे थे उन्होंने मारे डरके आगे को पैर न दिया बीलम और कौलम ने जो देखा कि दिन व्यतीत हो आया है और सेनाभी घबड़ाई है डंका लौट आनेका बजवाया और क़िलेके समीपसे हटकर डेरालिया और अपनी रक्षा के लिये सेना को रौंद घूमने को आज्ञा दी अब अमरू का हाल सुनिये कि वह जिस समय से अमीर परदेशाफ़ को गये थे उसी समय से मलकाके साथ भोजन करताथा और उसको रोज़ समझाता था शामके समय भोजन करने के लिये और भोजन करने के पश्चात् दो पहर तक हाज़िर रहता और मलका के समझाने के पश्चात् उठकर सरहंग मिश्री को बुलाकर आज्ञादी कि तुम मंज़र शाह यमनी की बेटी हुमायूं ताजदारको जाकर लेआवो और इस कार्य्यके पूर्णकरने में बड़ी युक्ति करो कि वह और ज़हर मिश्री दोनों मलकाके समीप हर समयमौजूद रह कर दिल बहलावें और हर समय हंसी की बातें करतीरहें हैं यह कहकर अपनेमहलमें जाकर चैनसेसोरहाजब प्रातः-काल हुआ तो अपनी आवश्यक कृत्य से निवृत्त होकर सबको अपने कार्य्यके लिये आज्ञादी और शामियानेके नीचे कुरसी पर शाहाना पोशाक धारण करके बैठा और हर एक मनुष्य उसकी आज्ञा के अनु-सार कार्य्य करने लगे इतने में बीलम और कौलम सिपाह लेकर क़िले पर आपहुंचे और सेना को भीतर जाने की आज्ञादी तब अमरूने पहिले दिनकीतरह आतशबाज़ी पत्थर ईंटतीरआदिक क़िलेपर से मारने शुरूकियेतो सेना बेहोश होकर लौटपड़ी बीलम और किलम ने सेना को ललकारा और जो भागे जाते थे उनको पुकारा कि आगे कदमबढ़ाकर पीछे न हटाना चाहिये भागना नामर्दोंका काम है और बहादुर और दिलावरों का लड़ने में नामहै तब सेना ने फिरसे चढ़ाई की परन्तु आतशबाज़ी से आगे न बढ़सकी तब बीलम और कौलम ने जवांमरदी करके अपने घोड़े को कुदाकर क़िले की दीवार पर पहुंचाया सेना ने देखा कि सरदार हमारे दीवार पर खड़े हैं लज्जित होकर आपसमें सलाह करके घोड़े को बढ़ाकर अपने सरदारों के पास पहुंचे तब अमरूने बिचारा कि यहबात तो अच्छी न हुई कि शत्रु आपहुंचा तो अति शीघ्रही एक गोला दीवार तेलका भरा हुआ

आगलगाकर तीन चक्कर देकर बीलम की छाती पर मारा वह छाती
पर लग कर फूटगया ते। तमाम बदन जलने लगा तब हाथों से बुझाने
लगे ते। अंगुलियां भी बत्तीकीतरह जलनेलगीं और जो तेलकी छींटें दाढ़ी
परपड़ीं ते। रुईकी तरह जलगई और जब मुखपर हाथ फेरा ते। मोछें
भी जलगईं जब कीलम ने देखा कि बीलम जलता है उसे कुछ और
न बन पड़ी आकर हाथ से बुझाने लगा ते। उसका भी हाल वैसाही
हुआ यह भी अतिक्लेश मे पड़ा और दोनों भाई लोटन कबूतर की
तरह लोटने लगे सेनाने देखा कि सेनाके सरदार जले जाते हैं दौड़कर
मट्टी उड़ाने लगे इस युक्ति से वह अग्नि बुझाई वे दोनों कुरकुत पाकर
डेरे की तरफ भागे और जाकर इलाज करने लगे युद्ध का सामान
भूलगये असद चैन से फिर कुरसी शामियाने परडाल कर बैठा जबदो
घड़ी दिन बाकी रहा असदको अपने भेष का विचार आया कुरसी से
उठकर भेष की पोशाक पहिनकर नौशेरवां के अय्यार की सूरत बना
कर बीलम और कीलम के डेरे मे चलागया और बीलम और
कीलम से मुलाकात करके प्रीति युक्त बातें करने लगा वे दोनों रोने के
लगे कि देखो भाई असद ने हम लोगों का यह स्वरूप बनायाहै उसके
हाथ से हम लोगों के। बड़ा दुःख प्राप्त हुआ आतिश बोला कि सुनो
साहब अय्यारपर अय्यारजबर दस्तहोताहै न किसिपाही अय्यारसे बरा
बरी करे आप जानते हैं कि असद कैसा अय्यार है कि आज पृथ्वी पर
अपनी बराबर दूसरे को नहीं जानताहै इसी कारणसे बादशाहने मुझे
तुम्हारी रक्षा को भेजा है परन्तु तुम लोगों ने शीघ्रता की है कि मुझे
न आने दिया जलदी करके अपना कार्य्य खराब किया अच्छा जो हुआ
सो हुआ अब देखो असद को कैसा मैं बनाताहूं जो तुम्हारे साथ उसने
ऐसा कियाहै उसका मजा उसे कैसा चखाताहूं ते। वे दोनों दरद से
आहकरने लगे आतिश ने कहाकि इस समय दो चार पियाले अंगूर
की शराबके पीजिये कि बलभी हो और दरद दूर होजावे उन दोनों ने
कहाकि भला तुमसे बढ़कर कौन पिलाने वालाहै जो यही उत्तम हो
दो चार प्याले पीलेंगे असद ते। यह चाहताही था अति शीघ्रही गिलास
और सुराही हाथमें लेकर दो २ गिलास विष मिलीहुई शराब सबको
पिलाई तीसरे दौरे में दो २ चार २ प्याले पीकर लोट पोट होगये
सारा होश और हवास खो बैठे असद ने बाहर आकर सब शागिर्द
पेशों को शराबदी और उनको भी युक्ति अच्छीतरह से की जब हर
तरह से इतमीनान हो।चुका ते। प्रथम ते। सबके वस्त्र उतारलिये और
जितना असबाब उस डेरेमें था फरश तक उठाकर रखलिया और सब
की एक तरफ की दाढ़ी बनाकर दूसरी तरफ घुंघरू बांधा और गाल
में एकतरफ चूने काललके टीके दे दिये और दूसरी तरफ काजल लगा

दिया तब उलटा करके खंभेमें बांधकर एक रुक्का लिखकर कि मैं अमरू था आज तो तुम लोगोंका प्राण छोड़जाता हूं केवल दुःखही दिया है उत्तमहोगाकि तुम कूचकरके चलेजावो अपना कारखाना यहां से उटा ले जावो नहीं तो अबकी दफा प्राण भी न छोड़ूंगा बीलम के गले में बांधकर अपना रास्तालिया क़िलेमें आकर पोशाक उतारकर भोजन किया और आराम से सोरहा अपने कार्य्यसे छुट्टीपाई जब प्रातःकाल हुआ सब सरदार बेलम और क़ेलम के सलाम को आये तो सब को नंगेपांवये उस हालतको देखकर कोई मुखसे न बोलताया सबलज्जा के मारे चुपहोरहे अन्तको सबका मुख हाथ धोलाकर अपने पास से कपड़ा मंगवाकर दिया और पत्र जो बेलम के गले में बांधा था खोलकर पढ़ा तो मालूमहुआ कि आतिश न था वह अमरू था बेलम औ रकेलम लज्जित होकर मुख बन्द करके मदायन की तरफ कूच करके भागे और उसी हालसे बादशाह के सामने आकर रोने लगे॥

भेजना नौशेरवां का हरमर पुत्र अकबर अमरू के बध करने को॥

लिखनेवालालिखताहै कि जबबेलम और केलम घायल औरलज्जित होकर मदायन को चले तब अमरूने कुमहीनेके भोजनकेलियेजिन्समोल लेकर क़िले में रखवा ली और युद्ध का सामानइकट्ठाकरकेबैठा बेलम का वृत्तान्त सुनिये कि वे दोनोंगिरतेपड़तेथोड़े दिनोंके पश्चात् मदायनमें पहुंचे औरनौशेरवांकोअपनी सूरत खराबदिखलाकरअमरूकीशिकायत करनेलगे बादशाहउनकारूप देखकर हसनेलगे और कहाकिअमरू अति दुष्टमनुष्यहैदेखो किसयुक्तिसे वहपकड़ा जाताहै और हमारी सेना क्या युक्तिकरती है यहकहकर हरमरकोबुलाया और आज्ञादी कितुमक्के को जाकर अमरू को मारो और मलका मेहरनिगार को हमारे सन्मुखलावो और हरप्रकार से समझाया कि ऐसा युद्ध बादशाहों और शाहजादोंके पुण्य और प्रतापसे विजय पाया है और सरदारों ने अपने नाम और निशानकेलिये बड़ी २ आपदा उठाईहैं इसप्रकार से समझा कर चालीस सहस्र सवार और बहुत से पहलवान और बखतियार के पुत्र बखतक को भी साथकरके सबलोगों से जानदेने का इकरार करा कर भेजा जब तक ये लोग मक्केमें पहुंचें तबतक थोड़ासा वृत्तान्त अमरू का सुनाता हूं कि एकदिन अमरू ने विचारा कि बहुत दिन हुये भेष का मज़ा नहीं उठाया लिबास शाहाना उतारकर बहुरूपी पोशाक पहिन कर मदायन की तरफ चला बीसबाईस कोस गयाथा कि एक धमण्डल दिखाई पड़ा तो विचार किया कि इसमें अवश्य कोई सेना होगी तो एक भिश्ती का भेषधर कर एक मशक लेकर उसी ओर चला समीप पहुंचकर देखा कि हरमर ताजियेदार एक बड़ी भारी सेना साथलिये चला आता है जिसके धूम धाम से पृथ्वी कांपरही है

निकलती है सबका श्वास
परंतु प्यासके मारे किसी के मुखसे बात नहीं निकलती है सबका श्वास
प्याससे निकल रहाहै जब उनलोगों ने भिश्तीको देखा तो ऐसे प्रसन्न
हुये कि मानो ईश्वर मिले नेत्रोंमें तरावट आगई एक २ जलके लिये
दौड़ने लगे तब एक सरदार ने कहा कि इसको पहिले शाहजादे
के पास लेचलो कि वह सबसे अधिक प्यासा है जब उसको हरमर के
पास लेगयेतो उसने पहचाना कि यह हरमर है और प्यासके कारण
अति व्याकुल होरहा है अपना पराया किसीको पहचानता नहीं है
और पृथ्वी पर पड़ाहुआ एड़ी रगड़रहाहै और मुखका रंग बिगड़गया
है बहुतसे मनुष्य चहरताने उसके मुख की छाया किये हैं और उसकी
श्वास गिनरहे हैं अमरू ने थोड़ीसी बूंदें जलकी उसकी मुखमें टपकाईं
तो उसकेहोश और हवास ठिकानेहुये और नेत्रोंकोखोलदियाभिश्ती
को पानी लिये देखकर अति प्रसन्न हुआ और जलपीने का इशारा
किया और थोड़ीसमयके पश्चात् हाथलेलेकर पिलाया फिरसे जिलाया
जिस समय हरमर की जान में जान आई तो उठकर बैठा और एक
गिलास जल पीकर कहा कि ऐ भिश्ती तूने इससमयमें ईश्वरका काम
किया है इससे तुझे बड़ा यश होगा और यह जल तूने नहीं पिलाया
मुझको मृत्युसे बचायाहै अच्छा अबथोड़ाजल मेरेलिये रखदे शेष हमारी
सेनाकोपिलादे कि वेभी जीजावेंअमरूकेपास ईश्वरकी कृपासेचाहेकितने
मनुष्यपियें परंतु वहमशक भरीही रहतीथी अमरूनेसबसेनाकोपिलाया
और वहभरीकी भरीहीरहीइसबातपरईश्वरने दयाकीजबसबसेनापानी
पीचुकीहरमरने कई सौअशरफी इनाम देकर आज्ञा दी कि तुम हमारे
साथरहो और ऐसेमार्गसे सबको लेचलो कि राहमें जलमिले और हम
जिसको विजय करने जाते हैं जो विजय होगया तो तुमको वहां का
सरदार बनावेंगे अमरू एकऐसे बनमें लेगया कि जहां मञ्जिलों तक जल
न मिलसका था थोड़ीदूर जाकर हरमर से कहनेलगा कि हे हरमर तू
जो अमरू से युद्धकरने के लिये जाता है तो क्या बिचार कियेहैं उससे
तू क्योंकर जीतेगा वह एक बड़ी बला है देखना तुझे कैसी आपत्ति में
डालेगा हरमर बोला हे भिश्ती अमरू एकसिपाहीहै देखना जो बड़ी
सवारीउसे न मारलिया तो कुछ न किया भिश्तीयहसुनकरहंसाऔर
कूदकर हरमर से कहनेलगा हे हरमर तू क्या जो तेरापिता सातदेशों
का शाहन्शाह है अपनी सब सेना लेकर आवे तो मेरा कुछ नहीं कर
सक्ता है और तू नहींजानता कि मैंहीं अमरू हूं और इस समय तेरी
सेनामें अकेलाहूं परन्तु कोई कुछनहींकरसक्ता यहकहकरकूदकरहरमर
के शिर का ताज लेकर चलदिया और उसको नंगे शिर करदिया तब
बहुतसे सवार उसके पीछे दौड़े परन्तु किसी ने उसकी गर्दतक भी न
पाई सब व्याकुल होकर लौटआये और थोड़े से सवार जो बीलम

और कीलमके साथके टूटेफूटे आतेथे उन्होंने हरमरको अति व्याकुल देख कर उनको उसवनसे निकालकर सीधीराहका पताबताया तो इसदुःख के पश्चात् चौथेदिन शाहके सक्कमें पहुंचे डेरा डालकर युद्धका सामना करनेलगे सेना ने अपनी पंक्ति बराबर से रक्खी रात्रि को जिससमय सब सरदार लोग हरमरकेपास जाकर बैठे तो मुसल्मानों का चरचा होने लगा हरएक सरदार अपना२ विचारकहनेलगा दूनाजिरउद्दीनने हाथ जोड़कर विनयकिया कि हे महाराज असरूक्याहै और मुसल्मानी सेना क्या मालहै आपका बड़ा प्रतापहै एकदममें वहपायमाल होजायंगे जो आज्ञा हो तो इसवाणसे जो मेरे हाथ में है क़िले का दरवाज तोड़कर अपने सिपाहियों से सब मुसल्मानी सेनाके साथ असरू को मारकर मलकामेहरनिगार को निकाल लाऊं और आपको अपनी बहादुरी और बलवानी देखाऊं हरमर बोला कि मैं जानता हूं तुमऐसे नवां मरद और बहादुर युद्ध में व्याघ्र के समान हो परंतु मैं कहता हूं किसांपमरै पर लाठी न टूटे यह ऊपर से आसान भीतर कठिन है इस्को बुद्धिमानी के साथमें करो और अपनी कारवाई जगत में प्रसिद्ध करो क्योंकि एक बहरूपिये से युद्ध करना मेरे लिये अति लज्जा की बातहै कि एक छोटे मनुष्य से बादशाही सामान से युद्ध करना अति लज्जा की बातहै बख़्तियारक इस इस बात पर अति प्रसन्न हुआ और कहाकि शाहजादों और बादशाहों को ऐसाही विचार करनाचाहिये कि वेबड़े २ कार्य करतेहैं उनसे और कौन अधिक बुद्धिमान होसकता है और बोलाकि जो आज्ञाहोतो सेवक उसको समुझाकर प्रातःकाल आपके समीप लेआवे और उसे अच्छेप्रकार से सब वृत्तान्त इसका समझादेवे हरमरने कहा इससेक्याउत्तमहैतू खुद बुद्धिमान और होशियार है इसी तरह से रात्रि तो इसी विचार में काटी जब प्रातःकाल हुआ बख़्तियारक अपने खच्चर पर सवार होकर क़िले की खन्दकपर गया देखा कि असरू शाहानालिबास पहिने हुये बड़ी धूमधाम से पत्थर की कुरसी पर शामियानेके नीचेबैठाहै और उसके चारोंतरफ सब सरदार और नगरवासी हाथ जोड़े खड़े हैं और हरएक मनुष्य उसकी आज्ञाका आधितहै और मुक़बिल बारहसहस्र तीरन्दाज सहित तरकश कमरमें कमान कान्धे पर लगाये पीछेतैयार खड़ाहुआ है बख़्तियारकने जाकर सलाम किया और कहाकि ख़ाजे जो कि मैं तुझै अपना बड़ाजानताहूं इस लिये मैं तुझै समझाने आयाहूं जिसमें आपको हरप्रकारसे उत्तम होगा वह यहहै कि हमजा क़ाफको गयाहै और उसका देवोंके हाथ से बच आना अनुचित है उसके कुशलसे आनेकी कुछ आश नहीं है और तुम अच्छीतरह से जानते हो कि तमाम बादशाह और शहजादे मेहरनिगार के नाम पर लोभित हैं तो कौनहीहै कि लड़ाई न करेगा और

इस बात से रहित होगा सो इसकारण अपने को दुःख में डालना बुद्धिमानी नहीं और उत्तम है कि मेहरनिगार को शाहज़ादे हरमर को देव और उसे मक्केकी राजधानी लेवें अमरू बोला तू नहीं जानता कि जो नौशेरवां ख़ुद सब अपनी सेना लेकर आवे तो मलकामेहरनिगार को नहीं लेजासक्ता और तू मेरे सामने बातें बनाने आया है अठारह बरस तो बात कहते में बीत जांयगे कौन बड़ी बात है यह तेरी मीठी २ बातें मेरे चित्त में कब आती हैं और क़ाफ के देवोंका क्या मजाल है कि वे अमीर को दुःखदें और उसपर ग़ालिब आवें मेरे सामने से हटजा नहीं तो तलवार से मारडालूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखाऊंगा बख़तियारक की शामत जो आई कहने लगा कि देखना तेरा यह बलबला कैसा मिटाता हूं और कैसी आफत में डालता हूं जो तेरी नाक में नकेल न लगाया तो कुछ न किया अमरूने उसकी ऐसी बातें सुनकर एक पत्थरका टुकड़ा उठाकर मारा जो दो अंगुल उसके माथेमें धंसगया तब अति शीघ्रही अपना खच्चर दौड़ाकर भागा कि ऐसा न हो कि फिर दूसरा भी मारे रुधिरमें भरा हुआ हरमर के समीप आया और उसको अपनी ख़राब दशा दिखाई और मलहम पट्टीकरने के पश्चात् जब कुछ होशहुआ तो अपनी और अमरू की बातोंका सबवृत्तान्त हरमरसेकहा हरमर यह हाल अमरू का सुनकर क्रोधित हुआ और गालियां देनेलगा ॥

माहब क़िरां (हमज़ा) के पीने के लिये देवोंका अंगूर की शराब लाना॥

इस वृत्तान्त को इस तरह बयान करते हैं कि जिस समय परियोंने शराब अंगूरहाज़िर की तो उसीसमय शहपालने एक गिलास शराब अपने हाथसे अमीर को पिलाया तो अमीर का चित्त अति प्रसन्नहुआ उस गिलास को पीकर शहपालके तख़्तको चूमा और बड़ी प्रशंसा करने लगा तत्पश्चात् शराब अंगूरकी पिलाने वालोंके हाथसे ख़ूबअच्छी तरह से पीकर अपने चित्तको आनन्दित किया नेत्रोंमें डोरे पड़गये और जिस समय नेत्र उठा कर देखा तो चार सौ परियां सजी हुई ऐसी दिखाई दीं कि होश हवास उनपर मोहित होकर सब भूलगये बुद्धि उनके देखने से दंगहोगई और हर प्रकारसे सभा शराब और कबाब की ऐसी बनाईथी कि जिसे वे पिये हुये मज़ा मिलताथा और अकसर स्थानों पर ऐसी पहलवानों की तसवीरें बनाईथीं कि मानों तसवीर हाथमें लिये युद्धकर रहेहैं और वृक्षों परपक्षी ऐसे२ बनाकर रक्खेथे कि देखने वालेका चित्त अवश्य शिकार खेलनेको चाहताथा और हज़रत सुलेमान की तसवीर सरदारों समेत बना कर एक जड़ाऊ शामियाने के नीचे ऐसी सुन्दरता के साथ रक्खी थी कि मानो सब बैठे सभा में बातें कर रहे हैं और प्रत्येक मनुष्य अपना २ कार्य्य कर रहा है और

उन शामियानों में लाल वा जमुर्रद वा याक़ूत वा एलमास के तकिये लगा कर जवाहिरों के खंभोमें बांधे थे और खंभों की गाड़ों पर सुवर्ण के गिलास बांध कर लटकाये थे और ऐसी सुन्दरता के साथ बनाया था कि देखने से चित्त अति प्रसन्न होता था और बराबर से झाड़ें लटकाई थीं और चार हजार चारसौ चालीस तख्त और कुरसियां सोनहली जवाहिर से अलंकृत हुये काफ़ के प्रतिष्ठित लोगोंके बैठने के लिये उस स्थान पर बिछीहुईथी और सबके मध्य में एक तख़्त अति उत्तम हजरत सुलेमान के बैठने के लिये रक्खा था उसी पर हजरत सुलेमान बैठे थे और अबउस पर शहपाल शाह बैठा है और वह तख्त सम्पूर्ण जादूका बनाथा और चारों कोनों पर चार तख़्त जमुर्रद के रक्खे थे कि देखने से बड़ा आश्चर्य होता था कि किसी के मुख में सर्प लटकाया था कि वह कभी लीलता और कभी उगिलता था और पीठपर फूलोंके गुलदस्ते बनाकर रक्खे थे उससे ऐसी सुगन्ध आती थी कि सूंघनेवालों का चित्तप्रसन्न होजाता था और जब बादशाह उसपर पैर रखता था तो वे बोलते और ऐसी रागनी छोड़ते थे कि सुनकर लोगोंको आश्चर्य होता था और फूलोंमें यह बड़ा आश्चर्य था कि जिस प्रकारके फूलथे वैसेही सुगन्ध भी आती थी और कठरोंके सब डंडोंपर कवल लगे थे और दो कवलोंके बीचमें एक दीपक गिलास अतिसुन्दरता के साथ रक्खा था और हीरे के चार खम्भों पर एक नवगीरा जिसमें सुराही और मोतियों की झाड़ें लटकाई हुईथीं और छतमें माणिक दीपमाल लगेहुये खिचाथा और तख़्तके चारोंकोनों पर अनेक प्रकारके पत्थर के गिलास थे उन पर भी जवाहिरात जड़ेहुये थे और हरएक में गुलाब केवड़ा रक्खाथा और हरएक में पिचकारियां लगी थीं कि उनसे लोगों का चित्त अति प्रसन्न होताथा और ऐसे फूलफूले थे कि जिसकी नाकमें उनकी सुगन्ध पहुंचती थी वह हंसते २ लोट-जाता था और उस न्यायशालाके भीतर बारहसहस्र छःसौ सायेवान और बारहसहस्र खम्भे और चारसहस्र डोरियां ऐसी सुन्दर उसके साथ लगीथीं कि देखने से अति आनन्द होता था और जिसस्थानपर हजरत सुलेमान की सवारी रहती थी उसके आगे तीनकोसका घेरा था जिसमें नौबत बजती थी मानोबादल गरजता था और उस न्याय-शाला के पीछे एकस्थान ऐसा बनाथा कि जिसके देखने से चित्त अति प्रसन्न होता था और उसके सामने एक वाटिका अति सुशोभितबनी थी कि वृक्षोंपर जवाहिर के पक्षी बुल २ पिड़की कोयल तूती आदिक बैठे हुये अपनी बोली बोलरहे थे कि सुनने वालों का चित्त अति प्रसन्न होताथा और नहरें जो वाटिका के समीप थीं उन पर बकुले सुरख़ाब टिटहरी मछरंगे जवाहिर के बनाये हुये बराबर थे ·

रक्खे हुये थे और देखने से यही विदित होता था कि मानो पक्षी जानदार फिर रहे हैं और तीतर बटेर कबूतर आदिक न्यायशाला की दीवारों पर बराबर से फिर रहे थे अमीर इन सब तमाशों को देखकर बड़े आनन्द में हुये और यह सुनिये कि एक शहपाल की बेटी आसमान परी नामे शहपाल के तख्त के पीछे परदाडाले हुये अपने तख्त पर बैठी थी उसने जो परदे की आड़ से अमीर की सूरत देखीतो अति लोभित होकर उसके साथ विवाह करने की इच्छा की तत्पश्चात जब एकदिन और रात्रिव्यतीतहुआ तो अब्दुल रहमान ने शहपाल से कहा कि मैं केवल नौदिनको कहकर अमीरको लायाहूं इससे अधिक लगे तो मेरे सिरपर बदनामी है शहपाल ने अमीर से कहाकि साहब किरां जैसामैं इन देवोंके हाथसे दुःख उठारहा हूं ऐसा दुःख कभी नहीं पड़ा जो आप कृपा करके इन लोगों को मारकर मेरे दुःख को छोड़ायें तो सदैव का दुःखदूर जावे और आप की सेवामें मैं सदैव प्रसन्न रहूंगा अमीर ने कहा यह क्या बातहै जो ईश्वर की कृपाहोगी तो दमभर में एक एकका सिरकाट कर आप का देश आपके आधीन न कर दिया तो हमजा नाम न रक्खूंगा और मुझे किसी वस्तुकी अवश्यकता नहीं है आप युद्ध का डंका बजवाइये तो आपको ईश्वर की रचना का हाल देखाऊं शहपाल ने अति प्रसन्न होकर अब्दुल रहमान को आज्ञादी की वे चारों तलवार जो सुलेमान के कमर की रक्खीहुई हैं उनको उठालावो और अमीरकेसन्मुख रखदेओ जो इनके पसन्दहो वह लेलेवें अब्दुल रहमानने लाकर हाजिर किया शहपाल ने अमीर के सामने रखकर कहा कि जिसको आप पसन्द करलेवें और हरएक का नाम बतलाया कि एक का नाम समसाम दूसरी कमकाम तीसरी अक्ररब चौथी जुलहिजाम है अमीर ने अक्ररब सुलेमानी को लेकर अपनी कमर में लगाया तब सब जितने परीजात खड़े थे हंसकर शहपाल को मुबारिकबादी देनेलगे अमीरने यह हालदेख कर अब्दुल रहमानसे पूछा कियह क्या बातहै उसने कहा कि सुलेमान ने आज्ञादी थी कि जब देवोंको मारना तो इसी अक्ररबको लेकर मारना सो आपने भी उसीको लिया तो लोगोंको खुशी हुईकी वे देव अब अवश्य करके मारे जांयगे आपने भी बेजानेही उसी तलवार को उठाया तब अब्दुल रहमान ने कहा कि एक बात और शेषरही है उसको भी तैकर लीजिये अमीरने कहा वह क्याहै उसनेकहा कि चनार का वृक्ष है वह सर्वत्र परदे काफमें प्रसिद्धहै कि जोकोई इसवृक्षको अक्ररब सुलेमानीसे एकबार से काटेगा वही इनदेवों को भी मारेगा अमीरने उस वृक्ष के नीचे जाकर एक वार जो लगाया तो साबुन के तार की तरह से तलवार पारहोगई परंतु वृक्ष गिरके पृथ्वी पर न आया तो अमीरने

विचार किया कि वृक्ष नहीं कटा अति संदेह में हुये अब्दुल रहमानने अमीर को मुबारक बादी देकर कहा कि वृक्ष सब कटगया है इसको हिलाकर देख लीजिये अमीर ने एक धक्का जो मारा तो वृक्ष बड़ा शब्द कर पृथ्वी पर गिरपड़ा शहपाल ने अमीर के हाथों को चूमा और अति प्रसन्न होकर स्थानपर लाये और कहने लगे कि निश्चय है कि तू हजरत सुलेमान है और तेरे सिवाय और किसी की ताकत नहीं है कि देवों का बध करै और ऐसे प्राण के जाने के स्थान पर ऐसी बहादुरी और हौसिले से पैर रक्खे अमीर ने कहा कि जो ईश्वरने आपकी कृपा से चाहा तो केवल देव तो क्या है सब देवों का सिर काट कर इस मैदान को पाटता हूं परन्तु अब आप अपनी सेना को आज्ञा देवें कि वह गुलिस्तान अरम से निकल कर बाहर मैदान में पड़े और युद्ध का डंका बजावे और अपने युद्ध करने की युक्ति हमको देखलावे शहपाल के आज्ञा देतेही सब सेना गुलिस्तानअरम से बाहर निकल कर डेरा डाल कर पड़ी और शहपाल भी उनहीके साथ आया जबयह वृत्तान्त देव को पहुंचा कि शहपाल ने परदे दुनिया से एक मनुष्य अति बहादुर और बलवान हम लोगों के मारने के लिये बुलाया है वह आकर मैदान में पड़ा है और युद्ध का डंका बजवाता है देव ने जब यह हाल सुना एक बारगी कह कहा मार कर हंसने लगा कि चलो इसी बहाने से वह नगर से निकला और कहां मनुष्य कहां देव कहीं वह बराबरी करसकता है यह कह कर अपनी सेना को तैयार करा कर युद्ध का डंका बजवाने की आज्ञादी तब शहपाल शाहने भी अपनी सेनामें डंका युद्ध का बजवाया दोनों तरफ लड़ाई का सामान सब रात्रि कोहुआ किया जब प्रातःकाल हुआ वह देवकई लाख देव साथ लेकर निकला तो देखा कि कोई देव तो शेर की खाल कोई अजदहे की कोई हाथी की खालें गले में डाले हुये है और सिर पर फौलादी खोल दिये है ज़ंजीर तोड़ फौलादी कमर में बांधे है और गलों में खोपड़ियोंके हारडाले बलछी तलवार चकमाक आदि शस्त्र धारण किये हुये युद्ध के लिये तैयार है परन्तु शहपाल को देखकर दंग होगये कि एक तख्त परआपि सवार और एक पर साहब किरांको सवार करके देव की सेना की तरफ चला कि देव इस सामान को देख करडरे और अपने जीवनसे निरास हुयेदेवोंने जो साहब किरांको देखातो बड़े आश्चर्य रूपी खेल करने लगे कि कोईतो मैदानमें आकर चूतर पीटनेकी कला करता है कोई अपनी दाढ़ीपकड़ कर बेठकैं करता है कोई कूद कर आसमान की तरफ जाता है और वायुमें उड़ता है और वहां से कला मारते हुये पृथ्वी पर आता है और कोई दांतनिकाल कर अमीर को दिखाताहै यह सब देखकर अमीर हंसनेलगे कि देखिये कैसे पागल

पनका काम करते हैं इसके पश्चात् एक देव अहरमन अफरेतकापिता जो पांचसौगज का लंबा था मैदान में आकर ललकारा और ऐसा चिल्लाया कि तमाम परदेक़ाफ हिल गया और कहा कि वह कोचक सुलेमानी कहां है जो अपने को अति बलवान और बहादुर समझकर हमसे लडनेको परदेदुनिया से आयाहै हमारे सामने आवे कि उसको मौतका मज़ा चखाऊं अमीर शहपाल से आज्ञालेकर मैदानमें निश्चन्देह होकर आये और एक बार ईश्वर का नाम इस जोर से लिया कि सबलोग कांपगये अहरमन बोला कि तू इतनेसे रूपपर ऐसा चिल्लाताहै कि हमको इसशब्दसे डराताहै अच्छा इसकोमारदेख अमीरने कहाकि मैं तो पहिले कुछकार्य नहीं करता और यही हमारे पुश्तापुश्त चलीआती है प्रथम तू वार चलापीछे हमचलावेंगे और अपनी बहादुरी तुझे दिखला-वेंगे वह बोला कि तुझपर जो मैं पहिली वारलाऊं तो सब देव आदि हंसेंगे और तू कब बचैगी कि फिर तू मुझ पर वार चलावेगा अमीर ने कहा क्या जिससमय डीलडौलकी बांट होतीतू वहां था और सिवाय इसके तू नहीं जानताहै कि मैं तेरे मारनेके लिये परदुनिया से आया हूं और तेरेलिये मौतलाया हूं यह सुनकर हरमनने एकतलवार अमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोककर अकरब सुलेमानी कमर से निकालकर कहा ओ नापाक खबरदार हो कि मैंभी वारचलाता हूं और नापाक रुधिर से अपनी तलवार को डुबोताहूं यह कहकर एक हाथ उसकी कमर पर ऐसामारा कि दो टुकड़ेहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शहपाल ने ईश्वर का गुणानुवाद किया और परीज़ादों को बाजन बजाने की आज्ञादी अफरेतने एक आहकरके कहा कि तूने बड़ागजब किया कि मेरे पिताको मारडाला देख तुझे भी कैसा दिखाता हूं यह कह कर एक देव को जो हरमन से भी बलवान था अमीर के सामने भेजा साहबक़िरां ने उसको भी मारा यहां तक कि थोड़ेसमय में नौ देवोंको जो अतिबलवान थे मारडाला तबतो अफरेत ने कांपकर डंका लौटजानेकाबजवाया और अपनेपिताकीलोथउठाकरअपना राहलिया शहपाल जवाहर और अशरफी अमीरकी नेवछावरमें लुटाते हुये गुल-स्तान अरममें आये और अमीरकी बहादुरी की बड़ीप्रशंसा करनेलगे॥

वृतान्त ख़्वाजे अमरू का॥

अब थोड़ासा वृत्तान्त ख़्वाजे अमरू का सुनिये कि जब बख्तियारक अमरूके हाथसे घायलहोकर हरमनके पासगया तो दन्दानफ़ीलपोश ने कहाकि जो आज्ञा हो तो तबलजंग बजवाया जावे अभी चलकर अमरूको मारैं कि फिर ऐसाकभी न करे हरमनने कहाकि मुझे किसी को मारने की इच्छा नहीं है और युद्धकरने की कुछ अवश्यकता नहीं है केवल यह किया जावे कि पहरा क़िले के चारों तरफ फिरा करै कि

कोई वस्तु क़िलेमें न जाने पावे कि भूख और प्यास से दुःख उठावें और बन कटाकर रणगढ़ा और सीढ़ियां बनवाई जावें जब संयोग मिले क़िलेपर लगाकर चढ़चलें यह बात सबको पसन्दआई और सीढ़ी और रणगढ़े बनने लगे चार महीनेके बाद तैयार हुये तब हरमन ने आज्ञा दी कि रणगढ़े क़िलेके समीप गड़वादेव और सीढ़ियांभी उस स्थानपर रखकर तबलजंग बजवावो कल हम क़िलेपर चढ़ाईकरके क़िलेवालोंको अपनी तलवारसे मारेंगे यह सब वृत्तान्त अमरू ने सुना कि हरमन ने रणगढ़ा क़िलेके समीप रक्खाहै और सीढ़ी भी बनवाई हैं सब तय्यारी युद्धकी करचुकाहै कलसेनाको लेकर हमारे क़िलेपर चढ़ेगा तब अमरू नें आदीसे कहा तुमभी डंका सिकन्दरी बजवावो में थोड़ो देर सैरको जाता हूं अभी थोड़ी देरमें आऊंगा यह कहकर पोशाकशाही उतार कर बहरूपियों की पोशाक पहिनकर एक सिपाहीका भेष धारणकरके रणगढ़े के पास गया तो देखा कि चार सौ सिपाही हथियार बांधे उसके चारों तरफ फिररहेहैं जाकर कहाकि हरमनने हमको भेजाहै कि जाकर देखआओ रणगढ़ के पास कौन२ सिपाही गाफिल है और कौन होशियार है तुम सबके नाम लिखलावो जो ग़ाफ़िलहै उनको दण्ड मिलेगा और जो २ होशियारहैं उन लोगोंको कुछइनाम मिलेगा सब लोग अमरू के पैरों पर गिरने लगे कि आप जाकर कह दीजियेगा सब अपने २ कामपर होशियार हैं अमरू वहां से अपने क़िलेमें आया कई सौ मन मिठाई दारू बेहोशीमें मिलाकर बहरूपियोंकी सीसूरत बदला कर उनके ऊपर रखाकर लेआया और कि यह शरबत हरमनने तुम लोगोंके वास्ते भेजी है परन्तु मैं तुम्हारे सरदार को नहीं पहचानताहूं वही आकर सबको बांटलगादेवे एकने आकर कहाकि मैंहीं सरदार हूं हर एक का हाल जानता हूं और शातिर मेरा नाम है और यही मेरा कामहै यह अंगूठी फीरोजेकी निशानी देना आपका क्या नाम है और क्याकार्य आप करते हैं अमरू ने कहा कि मत हर अलीक़ मेरा नाम है और मैं दारोग़ा फरशख़ाने का दामादहूं बहुत से लोग मेरी आज्ञा में हैं यह कहकर वह अंगूठी उसने लेली और शरबतके घड़े देदिये सरदारने वह सबको देदिया और आप भी खाया जितने प्यादे थे सभोंने अच्छीतरह से ओठ चाटचाट कर मिठाई खाई पहिले तो बड़ा मज़ामिला परन्तु थोड़ीही समयमें सब लोटगये अमरू ने जैसे हाल सुना जाकर सबका शिर खञ्जर से काटकर रणगढ़े और सीढ़ियों को बटोरकर अग्निमें भस्मकरके अपने क़िलेमें आकर निसन्देह होकर सोरहा और रात्रिभर में जितनी सीढ़ियां और रणगढ़े थे सब जलकर राखहोगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर चारहाथी के तख़्तपर सरदारों और सेनाके साथ इस विचार से कि आजहल कर सीढ़ीलगा

चार क़िले में सरदारों को ओर सेनाको चढ़ाकर मुसलमानी सेनाको मारकर मलका मेहनिगार को निकाललावें थोड़ीदूर जैसे आगे बढ़ा था कि दूतों ने आकर हालदिया कि रणगढ़ा और सिढ़ियां जली पड़ीहैं और सब चौकीदारों के शिरकटे पड़ेहैं यह सुनकर हरमर अति क्रोधित हुआ और बख़्तियारक से कहने लगा देखते हो अमरू ने चार महीने की मेहनत मेरी सब मिट्टी में मिलादी बख़्तियारक बोला कि आप अच्छीप्रकार से जानते हैं जैसा वह है कि उसकी युक्ति को कोई नहीं पहुंचता है अब सवार तो होहीचुके हो चलके क़िलेपर युद्धकरो शायद विजय होजाय हरमर ने क़िले के समीप आकर दस सहस्र सवार क़िलेके चारों तरफ़ घेरने की आज्ञा दी अमरूने जो देखा कि बड़ी सेना है इस्से हम युद्धसे विजय न पावेंगे तो उसने भी चारों तरफ से तीर फ़ाकूरे कंकर पत्थर मारने का आरम्भ किया और ऐसा आतिशबाज़ी का मेह बरषाया कि उसकी सेना अग्नि से घबड़ा गई और हज़ारहों जलकर राखहोगये और शेष पीछेको हटी तब हरमर दराज़िदापोश से कहा कि तुम जो उसदिन कहते थे कि जो आज्ञा होतो अभी जाकर इसी तौरसे मुसल्मानों को मारकर मलका मेहर निगार को निकाल लेवें सो आज जावो और मुसल्मानी सेना कोमार कर मलका को ले आवो तब उसने कहा कि आपने कब आज्ञा दिया है और मैंने नहीं किया तुरतही अपने चारसौ सवार लेकर क़िलेकी खन्दक पर जापहुंचा आप वह घोड़े को कुदाकर दरवाजे पर होरहा परंतु शेष सवार अग्नि के कारण न जासके तब अमरू ने आतिश-बाज़ी उड़ाकर सिपाहियों को तो हटा दिया परंतु दराज़िदहपोश अपनी जवांमरदी से दरवाजे पर खड़ारहा और पैर पीछेको नहटाया बख़्तियारक ने कहा कि दराज़िदहपोस बड़ा बहादुर और दलेर हक़ीक़त में हैं उसने जो कहा था सो किया परंतु क्या करैवह अकेला उसकी सेना अमरू की आतिशबाज़ीसे आगे नहीं बढ़सक्ती है यह उन्होंने अच्छीबातनहीं की अब आप अपनी सेनाको आज्ञादें कि वहजाकर उसकी सहायता करें और इससमय मरनेसे न डरें नहींतो वहमारा जायगा और जो आपकी सेना सहायता करेगी तो अभी क़िला विजय होजायगा हरमरने अपनी सेनासे कहा देखो वह कैसा अपनीबात पर अड़ाहै तुमलोग जो सहायता करो तो अभी क़िला विजयहोजाय यह सुनकर जितने सरदार थे सबोंने घोड़ोंको दौड़ाकर खन्दक पर पहुं-चाया परंतु उसे आगे न बढ़सके अमरू दीवार के ऊपर आकर दराज़ से कहनेलगा कि हे बहादुर तू क़िला तो लेचुका और हमारी विजर हुई अब मैं तुमसे विनय करताहूं कि मुझे शाहज़ादेके पास लेचल और मेरा अपराध क्षमा करादे तो मैं तेरा बड़ा गुण मानूंगा और क़िला

खालोकरके मेहरनिगार को तेरेसाथ करदूंगा दजाहनेउत्तरदेनेकेलिये ढालको मुखके आगेसे हटाया और घोड़ेको थोड़ा सावढ़ाना चाहा कि अमरू ने एकपत्थर का टुकड़ा नोकीला चरखीपर घुमाकर ऐसा मारा कि उसका प्राणनिकलगया और मरकर खन्दकमेंगिरपड़ा तब जो उसके सिपाही खड़े थे उसकी लाथ लेकर हरमरकेपास पहुंचे तब वह देखकर अति व्याकुल होगया कि बड़ा बहादुर सरदार मारागया और व्याकुलहोकर बख्तियारक से कहनेलगा अब क्या करूं कि अमरूसे विजय पाऊं बख्तियारक ने कहा इससमय सेना व्याकुलहोगई है लौट चलिये कलफिर कोईउपाय विचारकर विजय कीजियेगा तब हरमर ने डंका लौटका बजानेकी आज्ञादी सारी सेनाने रास्तालिया और हरमर भी गिरता पड़ता अपनेडेरे में आकर एकपत्र में सब वृत्तान्त लिखकर बादशाह नौशेरवां के पास भेजा जब वह पत्र बादशाह के पास पहुंचा पढ़कर बुजुर्चमेहर से कहनेलगा कि देखते हो अमरू ने मेरे कैसे २ पहलवानों को माराहै और मुझे जराभी नहीं डरता बुजरुचमेहर ने कहा कि सत्यकरके वह बड़ा दुष्ट है वह इसबातको कुछ नहींविचारताहै परंतु आप शाहजादेको लिखभेजें कितुम लड़ोभिड़ो नहीं किसीतरहसे अमरू को पकड़लावो यह बातचीत होहोरही थी कि सरदारों ने नौशेरवांके सामने आकर कहना शुरूकिया कि देखिये बीलम और कीलम और दजाह पहलवानों को बध करना और हर प्रकार से लज्जित करना उचित नहींथा अब जबतक हम इसकाबदला न लेंगे और उसकोदण्ड न देलेंगे तबतक हमको नींद न आवेगी बादशाह ने उनलोगों को समझाकरकहा कि देखो अखजर फौलगोशहमलोगोंका अतिबलवानसरदार है सत्तर सहस्र सवार के साथ हरमरकी सहायताके लिये भेजाहै और हरमर को लिखदिया है कि तुम घबराकर लौटने की इच्छा न करना और किसी तरहसे न डरना हमने तेरी सहायताके लिये अखजरफौलगोशको भेजा है और उनको हर प्रकार से समझा दिया है तत्पश्चात् नौशेरवां दरबार से उठकर रात्रि के समय महलमें गया तो महरअंगेजने बादशाह को व्याकुल देखकर पूछा कि आप क्यों व्याकुलहैं तब बादशाह ने कहा कि तुम्हारी बेटी के कारण सदैव व्याकुल रहता हूं कि हरमर को हमनें भेजा है उसे अमरू तीनबार पराजय करचुका और कैसे २ पहलवानों को उसने मारा है कि मेरा जीव जानता है महरअंगेजने कहा कि बादशाह यह युक्ति उसके वध करनेकी उत्तम नहीं है ख्वाजे निहाल को सौग़ात लेकर जिसने मलका को पाला है भेजिये और एक पत्र उसको लिखिये कि बड़े रंजकी बात है कि तुमारे माता पिता तुमारी प्रीतिसे मररहे हैं और कुछनहीं सूझता कि एक दफा हमलोगोंको अपनी सूरत देखलाजावो कि हमारी जानबचे और

अमरू के लिये कुछरुपया भेजो कि वह लोभमें आकर क़िले में जानेदेवे और जिससमय क़िलेके भीतर पहुंचे कुछदिन रहकर उससे मिलकर विषदेवे और दरवाजा क़िलेका खोलकर सेनाको बुलाकर मुसल्मानों को मारडाले और मेहरनिगारको लेकर चलेआवें और हमको तुमको इसजुदाई के दुःखसे छोड़ावे बादशाहने इसबात को पसन्दकिया और ख़ाजेनिहाल को तोहफा और नक़दरुपये देकर मक्केको रवानाकिया॥

जानाख़ाजे निहालका मलकामेहरनिगार के लानेको मक्केकी तरफ और उसका माराजाना अमरू के हाथसे॥

लेखक लोग लिखते हैं कि जिससमय बादशाह ने ख़ाजेनिहाल को मक्के की तरफ भेजा उसीसमय एकपत्र लिखकर कि ऐ पुत्र हरमर परसों मैंने अखुजरफैलगोश को सत्तर सहस्र सवारके साथ भेजाहै और आज ख़ाजेनिहाल को इसप्रकार से समझाकर भेजता हूं इसप्रकार से पत्र लिख एक सिपाही के हाथ हरमर के पास मक्के को भेजा और उसमें यहभी लिखदिया था कि किसी युक्ति से ख़ाजेनिहाल को क़िले के भीतर पहुंचादेना और जब वह पहुंचजावे तो तुम अखुजरफैलगोस को साथ लेकर क़िलातोड़ कर मलका को निकाल कर चलेआना अब ख़ाजेनिहालका वृत्तान्तसुनिये कि वह अखुजरफैलगोशके एकदिनपीछे चला परन्तु अति शीघ्र चलकर अखुजरफैलगोश से जाकर मिला और उससे सब वृत्तान्त बयान किया और दोनों साथ मिलकर चले और तीनमहीने के बाद मक्केमें पहुंचकर हरमर से मुलाक़ात की और सब पत्र बादशाह को देकर जबानी भी सब बयान किया हरचन्द कि वह सब वृत्तान्त उस पत्रसे जो सिपाही के हाथ बादशाह ने भेजा था सुन चुके थे परन्तु इन पत्रों को पढ़कर उन लोगों को खिलअत देकर अति प्रतिष्ठा के साथ बैठाकर बहुत प्रसन्न किया और वे लोग जो मार्गके थके थे शीघ्र उठकर अपने डेरेमें आकर आराम करने लगे यह वृत्तान्त अमरू के दूतोंने उसजगह पहुंचाया तब अमरू ने अपने दिलमें विचार किया कि देखें कौन अबकी बार सरदार सेनाका है धोबी की सूरत बनाकर हरमर की सेनामें गया और जहां दो चार मनुष्य बातें करते थे वहां खड़ाहोकर सुनने लगा यहांतक कि एक स्थान पर चार पांच सिपाही बातेंकरते थे कि अबकी दफा नौशेरवांने अखुजरफैलगोश को सत्तर सहस्र सेना के साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है निश्चयहै कि अबकी क़िला विजयहोकर अमरू माराजावे एकने कहा कि ख़ाजेनिहाल भी आयेहैं दूसरे ने कहा कि वह युद्धकरने को नहीं आया परन्तु बादशाह ने उसे भेजा है कि तुम किसी तरह से क़िले में जाकर अमरूको मिलकर विषदेकरमारडालो और मलकाको निकाल लावो तो तुमको बहुत इनाम और खिलअत दीजायगी तबसब

सिपाही कहने लगे कि यह युक्ति अमरूके मारे कब होनेपावेगी वह ऐसा असामी नहीं है कि किसीके जालमें आकर माराजावे और अबगरफैलगोय चाहे कुछ युक्तिकरे परन्तु ख़ाजेनिहाल की युक्ति न होने पावेगी यह सुनकर अमरू आगे बढ़ा और धोबीका भेषबदलकर साईस का रूप धरकरके तोबड़ा हाथमें लेकर पुकारनेलगा कि भाई ख़ाजेनिहालका डेरा बतादो घोड़ेको दानालेने आया था अब रात्रि को रास्ता नहीं पाता घोड़ादाने के लिये टापता होगा कोई कृपाकरके मुझे वहां पहुंचादेवे एक मनुष्य ने कहा चलभाई तुझे ख़ाजेका डेरा बतादूं उठ कर थोड़ीदूर जाकर बतला दिया कि देख वह डेरा ख़ाजेनिहाल का दिखाई देता है जिसकी तालाशमें तू व्याकुल था अमरूने अपना असली रूप धरके ख़ाजेनिहाल के डेरे पर जाकर चोबदार से कहा कि ख़ाजे को खबरदो कि अमरू तुमारी मुलाक़ात को आया है और एकपैग़ाम तुमको लेआयाहै ख़ाजे यह सुनकर अतिव्याकुल होगया कि इससमय अमरू क्यों आयाहै परन्तु उठकर अमरू को लेआया और अपने बराबर मसनदपर बैठाकर कहा कि आपने बड़ी कृपाकी है कि इसनीच मनुष्य के पास आये परन्तु जो आप आज न आते तो कलमें आप की मुलाक़ात को क़िले में आता और आपका सब सामान देखकर प्रसन्न होता क्योंकि ठिकाना जिन्दगीका कुछनहीं है मित्रोंसे मिलना उचितहै अमरूने रोनीसूरत बनाकर कहाकि क्याकरूं ख़ाजेमें बड़े दुःखमेंपड़ाहूं कि प्राण गयाचाहताहै ख़ाजेनिहालनेकहा क्याहै बतलाइयेतो अमरू बोलाकि कृपाकरके मेरावृत्तान्तसुनिये और इसके दूरहोनेकी कोई युक्ति बतलाइयेवृत्तान्त यह है कि हमज़ा अठारह दिनका वादाकरके परदे क़ाफको गयाहै परन्तु उसको इतनेदिनहुये मालूमनहीं होताकि वह मारागया या जिन्दाहै और अब मलकामेहरनिगार अकेली व्याकुल रहतीहै अब मुझे कुछ नहीं सूझता उसे हरमन को सौंपदेता हूं तो डरता हूं कि मैंने बहुत से लोगोंको माराहै बादशाह काहे को जीता छोड़ेगा और जो बादशाह अपनी दयालुतासे मेरा अपराध क्षमा भी करेगा तौ भी बख़्तियारक और बख़्क के मारे काहेको मेरा प्राण बचेगासो आज विचारकर आयाथाकि चलकर हरमरके पैरोंपर गिरकर अपना अपराध क्षमाकराकर मलकाको उनको सौपदेवें और हम जिधर सुभीता होगा उधर चले जांयगे परन्तु सेना में आकर आपके आनेका हालसुना सो आपके समीपआयाहूं सो अब आप मेहर निगार को लीजिये मैं जिधर सुभीता होगा उधर जाऊंगा ख़ाजे निहाल यह बात सुनकर अति प्रसन्नहुआ और ख़ाजे अमरूको छाती से लगाकर कहनेलगाकि किसीका जोरहै कि हमारे तुम्हारे विषयमें बादशाह से बुराई करे और बादशाह को तुम्हारे तरफसे नाराज़करे और

यह मैं जिम्माकरताहूं कि तुम्हारा अपराधक्षमाकराकर सभी की गद्दी तुमको बादशाह से दिलवाऊंगा और मुझे इसपर सत्यसमझना अमरू ने कहा आपसे मैं इससे अधिक भरोसा रखताहूं यह कहकर झोली से खुरमे निकालकर दिये और कहाकि यह मक्केका परसाद है इसको आपखाइये ख़ाजे निहाल की जो मौत आई तो बेसन्देह खागया और यह कहकर कि मैं घरजाता हूं और मलका मेहरनिगार को तुम्हारे पास ले आताहूं बाहर आकर सबशागिरद पेशा के लोगोंको मक्केका परसाद देकर उसी जालमें फंसाया ख़ाजे निहाल अपने चित्तमें कहने लगा कि तेरा बड़ा प्रताप है किधर बैठे सब कार्य सिद्ध होगया थोड़ी देर के बाद बाहरतो सिपाही और डेरेमें ख़ाजे निहाल बेहोश होगये अमरू ने जेबसे छुरी निकालकर सब संदूकचोंको तोड़कर जो रुपया था अपनी जेबमें रक्खा और छोटासा संदूक जो अच्छीतरह से बन्दथा उस को जो खोलातो उसमें एक पत्र बादशाह की तरफसे मलका के नाम था उसको भी लेकर जेबमें रक्खा और सब संदूक बन्दकर के ताले लगा दिये और ख़ाजे निहाल को एक गढ़ा खोदकर जीता उसी में गाड़ दिया और आप उसीकी सूरत बनकर उसके पलंगपर सोरहा और सब अपना कार्य पूर्ण करलिया हरमर का हाल सुनिये की प्रातःकाल उठकर बख्तियारक से कहा कि आज मैं अखुजरफैलगोश और ख़ाजे निहालकी मेहमानी करनेको विचार करता हूं उसने कहाकि इससे क्या उत्तमहै यही आपको उचितहै तब हरमरने जशनकी तैयारी की और महेमानी का सामान इकट्टा करने की आज्ञादी और अखुजर फैलगोश और ख़ाजे निहालको बुलवाया तो अखुजरफैलगोश साथ अपने सरदारों के आया और थोड़ी देरके बाद बनाहुआ ख़ाजे निहाल भी जाकर साथ अदबके शाहजादे के सामने सलाम करके खड़ा हुआ हरमर उसकी बातों से अति प्रसन्न हुआ और खिलअत देकर बड़ी कृपासे कहा कि हे ख़ाजेनिहाल अदब तू अब करचुका अब आकर सभा में बैठो तब फिर उस बहुरूपियेने कहा कि मेरा मुंह है कि आप के सामने बैठूं हरमर ने हाथ पकड़कर खींचकर अपनी बराबर कुरसी पर बैठाला और कहा इससमय अदबको ताक़के ऊपर रक्खो तब गाने बजानेवालोंनेअपने२ नाचरङ्ग करनेका आरम्भकिया और सभावालोंको अपने शब्द और गतिसे लोभा में लगे और सबका मन उसी नाचरङ्ग में लगारहा और जब रातहुई मशालचियों ने मोमकी बत्तियां दोशाखों तिशाखों पन्जाखों में चढ़ाकर रोशनकिया तब हरमर ने एक गिलास शराब का अखुजरफैलगोशको अपनेहाथसे उंडेलकरदिया उसने भी एक गिलास हरमर को दिया उसदिन यह था कि जो एकमनुष्य दूसरे को पिलावे तो दूसरा भी उसको पिलावे इसी तरह से प्रत्येक दूसरे को

पिलाने लगे जब पहर रात्रि बीती बने हुये ख़ानेनिहालने विनय करके कहा सेवक इस समय सब लोगों को शराब पिलाया चाहता है यह सभा इस समय अति उत्तम है हरमर ने कहा आपही को मुबारक रहे तुमही साक़ी बनकर सबको पिलाओ ख़ानेनिहालअसली ने गिलास और सुराही हाथमें लेकर प्रथम हरमरको एक गिलासपिलाया और अपनी युक्तिसे उसे बेहोशकिया तत्पश्चात् सभा में घुसकर सबको दोबार तक तो वही शराब पिलाता रहा तीसरी बार बेहोशी दारू पिलाकर सबलोगों को बेहोश किया जब उसने देखा कि अब सभाभर बेहोश होगई है गिलास और सुराही लेकर बाहर निकला और सब शागिर्दपेशों को पिलाकर बेहोश किया तब डेरेमें आकर सब असबाब शागिर्दपेशे को बोरीतक उठाकर अपने जेबमें किया और अख़ज़रफ़ैलगोशकी दाढ़ी मोछ मूड़कर सातरङ्ग के टोके जिसतरफ़की मुंड़ीथी देकर दूसरी तरफ मोछमें घुंघुरू बांधदिया और गालोंमें स्याही बाल लगाकर एकखाल उढ़ादिया बलक की मोछ दाढ़ी मूंड़कर सेंदुर की टिकुली देकर स्त्री का स्वरूप बनाकर दोनों पैर गले में बांधकर अख़ज़रफ़ैलगोश को एक पलंगपर लेटाकर उसको भी उसी के गोद में लेटादिया और सब सरदारों की दाढ़ी मोछ मूड़कर मुख में कारिखा लगाकर सतूनों में बांधकर आप ख़ानेनिहाल की सूरत बनाहुआ अपने कार्यसे खुशी पाकर निःसन्देह होकर अपने क़िले में आकर बैठा अख़ज़रफ़ैलगोश का हाल सुनिये कि जब उसकी नींद से आंख खुली तो देखा कि एकस्त्री नंगी उसकी गोद में सोरही है और अपने हाल से बेख़बर है उसने विचारा कि शायद हरमर ने कृपा करके मेरा थका उतारने को लिये इसको भेजा है मैं रातभर सोकर ऐसी अच्छी वस्तु को हाथ से खो दिया प्रातःकाल सबके सामने कहेगी कि अख़ज़र हिंजड़ा है जो स्त्री की चाह नहीं है अभीतो सबेरा नहीं हुआ इस मज़ेको चखना चाहिये ऐसा विचार करके अख़ज़र ने जो धरकर दबाया तो बख़्तियारक ने एक ऐसी चीखमारी कि सब जो सोतेथे जागकर उठे और अपना रूप देखकर अति लज्जित हुये और जो दरबार के लोग खंभों में बंधे थे वेतो न उठ सके पर चोबदार आदि दौड़कर डेरेमें आयेतो देखा कि एक मरद स्वरूपवान स्त्री के ऊपर चढ़ा भोगकर रहाहै और किसी तरहसे डरतानहीं वे लोग उनदोनोंको मारनेलगेकि यह शाहज़ादे का डेरा है तुमने ऐसा काम इसमें क्योंकिया तुमको अवश्यदण्ड मिलेगा इस प्रकार से शागिर्दपेशेके लोग दौड़के बख़्तियारकको प्राण बचा उठ करभागा और अख़ज़रसे मारपीट होने लगीकोई मनुष्य अख़ज़र मुक्कों से मरगये जब उजाला हुआ लोगोंने देखा कि अख़ज़र है और सरदार लोग डेरोंके खंभोंमें बांधे हुये उलटे लटकेहैं तब उन

लोगों ने आकर सब लोगोंको खोला परंतु मारे लज्जाके कोई मुखसे न बोलता था तब उनके मकानों से कपड़े लाकर उनलोगों को पहिनाये और उनके हाथ मुख धोये तब आदमी की सूरत हुई बख्तियारकभी हाथ मुंह धोकर अख़ुजरके पास आकर कहनेलगा कि यह सब असद्दू के सिवाय और कोई नहीं कर सक्ता है अख़ुजरने क्रोध करके मुख पर हाथ फेरा कि असद्दू है कि मैं हूं देखो तो मैं अब उसे कैसे सिखाता हूं जो उसने हम लोगोंके साथ ऐसा काम किया है इतने में घुंघुरू बोला और मालूम हुआ कि मुंह पर एक तरफ मोछ दाढ़ी नहीं है और एक मोछम घुंघुरू बंधा है तो वह और क्रोध में हुआ तब बख्तियारकने कहा देखना चाहिये कि हमारी तुम्हारी तो यह गति है हरमर और ख़ाजे निहाल का क्या हालहै और जो रात्रिको शराब पिलाताथा वह असद्दूथा यक़ीनहै कि ख़ाजे निहालको मारकर उसकी सूरत बनकर असद्दू आयाथा ढूंढ़ा तो नतो अपने डेरेमें ख़ाजे निहाल है और न उसका कुछ असबाब है और हरमर को भी उठा ले गया है यह बड़ा दाग़ हमको दे गया है अख़ुजर ने झुंझला कर तबलजंग बजवाने की आज्ञादी और कहा कि जो क़िलेकी ईंटसे ईंट न बजवाई और उसकी लोथ काटकर चील कौवेंको न खिलाई और मुसलमानों को काटकर रुधिरकी नदी न बहवाईतो अख़ुजर मेरा नाम न रखना और मुझको एकदम वे इसके लियेकल न आवेगी आख़िरकार दूसरे दिन सवेरे सत्तर सहस्र अपने और तीस सहस्र हरमर के सवारों को लेकर क़िलेको घेर लिया और सेना से प्राण तक देनेका वादा लिया असद्दू ने उस समय ज़नबिल से हरमरको निकाल कर देखा तो बेहोश है तब दो तीन बून्द सिरके की शरबत के उसके मुखमें डाले जब वह पेटमें पहुंचे तो नेत्रोंको खोल दिया देखा कि असद्दू शाहाना लिबास पहिने बैठाहै और उसके चारों ओर सरदार लोग और नगर बासी हाथ जोड़े खड़े हैं और मुक़ाबिल बारह सहस्र तीरन्दाज़ लैस किये अपने पहरेपर खड़ा है और हरएक स्थानों पर पहलवान लोग मुरचों पर खड़े हैं और बरक़न्दाज़ आदिक क़िले की दीवारोंपर खड़े हैं और अपने को गिरफ़्तार देखकर जीवका न भरोसा देखकररोनेलगा और डरसे व्याकुल होकर इधरउधर देखने लगा जब असद्दूने उसको व्याकुल देखा तो उसको समझाने लगा कि हे शहज़ादे तू न डर मैं तेरे साथ किसीतरह की बदी न करूंगा तुझे किसीतरह का दुःख नदूंगा परन्तु तीन प्रश्न मैं करताहूं उसमेंसे एकको भी तू मानेगा तो मेरेलिये उत्तम होगा उसने कहा वहक्याहै बतलावो तो मैं सुनकर उनका उत्तर दूंगा असद्दूने कहा प्रथम तो यहहै कि तू मुसल्मान होकर मुसल्मानी सेनाका सरदार बनकररह हरमरनेकहा यह मुझसे न होगा कि पुराने

धर्मको छोड़कर नया अख़्तियारकबूं अमरूने कहा कि तुम मुसल्मान होना उत्तम नहीं समझते कि इस संसारमेंभी अच्छी तरहसे रह कर बाद मरने के भी क़बरमें जाकर आरामसे सोवें दूसरा प्रश्न यहहै कि तू जाकर बादशाहको समझादे कि जबतक अमीर हमज़ा परदेक़ाफ से न आवे तबतक वह मुझसे युद्धकरने को किसीको न भेजे क्योंकि हमज़ा मलकामेहरनिगार को मुझे सौंपगयाहै मैं उसके आनेतक उसकी रक्षा करने में किसीप्रकार से कोताही न करूंगा जब वह आवेगा तब जैसा जी बादशाह का चाहेगा वैसा करैगा और जो न मानेगा तो नहीं मालूम कि क्या मुझसे बदख़्वाही होजावे कि बादशाह नाराज़हों और इससमय तेरे साथ जोजीचाहे वह करूं किसीका डर नहीं है हरमर ने कहा दूसरा सवाल तेरा होसकता है बादशाह मानलेवे अमरू ने कहा मैं जानता हूं कि बादशाह इसको न मानेगा और जो बादशाह माने भी तो बख़्तक और बख़्तियारक न मानने देवेंगे और क्यों अपनी बदज़ाती से बाज़आवेंगे इसलिये इसको भी मैं छोड़ताहूं तीसरासवाल मेरा यह है कि अब तुम मुझसे कभी युद्ध करने का नाम न लेना और जो करोगे तो फिर शिकायत न करना हरमर ने कहा कि मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि तुझसे कभी युद्धकरनेका नाम न लूंगा इतनीबातें होहीरहीं थी कि अख़ज़रफ़ौजगोश सिपाही लेकर क़िले के सामने आ पहुंचा अमरू ने देखकर हरमर को क़िले की दीवारपर खड़ा कराकर अख़ज़रसे कहा किजो एक सिपाहीभी कदमआगेबढ़ावेगा तो मैंहरमर का शिर काटकर इसी ख़न्दक में डालदूंगा पीछे जोचाहे वह होगा बख़्तियारकने अख़ज़रसे कहाकि जो वह करताहै उसका कुछ आश्चर्य नहींहै जो हरमरको मारडाले इससे उत्तमहै कि डंकालौटका बजवा कर फिरचलें नहीं तो हरमर के मारडालने का डर है तब वह डंका बजवाकर अपने डेरेकीतरफ फिरगया अमरूने एकख़िलअत उसके योग्य पहिना कर घोड़ेपर सवार कराकर उसकी सेनामें भेजदिया और आप अमरू मेहरनिगारकेपास आकर सबहाल उससे कहा मेहरनिगार ने प्रसन्नहोकर कहा कि ऐबाबा मैं रात दिन तेरी विजय का बरमांगा करतीहूं कि मैं उनलोगोंकी अधिक सेनासे डरतीहूं हरमर का हाल सुनिये कि सेनामें जाकर अख़ज़र और बख़्तियारक से कहा कि मैंने अमरूसे वादाकियाहैऔर उसनेमुझसे इसबातमेंसौगन्धलियाहैकि आज से मैं तुझसे युद्धकरनेकी इच्छा नकरूंगा और बादशाह को भी समझा दूंगाकि जब तक हमज़ा न आवे तब तक आप अमरू से युद्ध न करें पसतूभी बख़्तियारक अपनी दगाबाज़ी छोड़ दे उसने कहा मैं आप की आज्ञामें हूं जैसी आज्ञा हो वहीमैं करूंगा और आप की आज्ञा से बाहर न हूंगा परन्तु अख़ज़र ने कहा कि हम तो क़िला तोड़ने

और मुसल्मानों को मारकर शक्का मेहरनिगारको लेजानेके वास्ते आये हैं जबतक कार्य्य पूर्ण न होगातबतक न जायंगे हरमरको उसकी बातें प्रसन्नन आईं और उसका कहना न माना और बोला कि मैं अच्छी तरह से देख चुका हूं कि जिसका बदन बादी होता है मोटाई के कारण कोई काम बहादुरी और जवांमरदी का नहीं होसकता है ऐसा मनुष्य जो काम करता है उसमें धोखा पाता है अख़ज़र हरमर की यह बातें सुनकर बहुत नाराज़ हुआ और कहने लगा कि शाह-ज़ादे बहादुरों की आवाज़ जिससे न सुनी जाय और दिलावरों की तलवारों की चमक जिससे शत्रुके नेत्रोंमें चकाचौंध लगे आपको दिखाई नहीं पड़ती इस कारण से आपके दिलमें यह बात नहीं समाती है और शाहज़ादों और बादशाहों को सिपाहीसे नाराज़ होना उचित नहीं है हरमरने उसकी बातों से नाराज़ होकर उसी समय डंका बजवा कर मदायन की तरफ़ कूच किया परन्तु अख़ज़र ने डंका युद्ध का बजवाया और बदज़ाती से बाज़ न आया अमरू तबल जंग की आवाज़ सुनकर व्याकुल हुआ कि यहक्या बातहै कि अभी हरमर मुझ से वादा कर गया और जाकर फिर तबलजंग बजवाया यह हाल क्या है अमरू क़िले से निकल करके हरमरकीसेना की तरफ़ गया तो मालूम हुआ कि वह अपनी सेना समेत मदायन को कूच कर गया परन्तु अख़ज़र हरमरसेबिगड़कर रहगयाहै उसनेयहतबलजंग बजवाया है और मुझ से युद्ध करेगा अपने सिपाहियों से वादा लिया है कि कल या मरेंगे या क़िला विजय करेंगे अमरू ने यह हाल सुन कर दिन तो इधर उधर में बिताया रात्रि को एक सिपाही की सूरत बना कर अख़ज़र की सेना में गया तो देखा कि हर एक सरदार युद्ध का सामान कर रहा है तब अमरू छिपता२अख़ज़रके डेरेके पास पहुंचा तो देखा कि कई मशल दरवाज़े पर रोशन हैं परन्तु सब चौकी-दार बेहोश होकर सो रहेहैं एकतरफ़से परदा उठा कर अन्दर डेरेके गया तो अख़ज़र को सोताहुआ पाया और चिराग़ बराबरसे जलरहे थे चिरागों को चहर से बुझा दिया केवल एकही रोशन रक्खा बगल में बैठ कर आठबन्द जोड़ कर अबीर बेहोशी उसमें भर कर नेत्रों से लगा कर जो फूंकातो सब अबीर बेहोशीकी उसके दिमाग़में समागई एक बार चीख मार कर बेहोश होगया अमरूने वहां से उठकर टह-लुवों को भी बेहोश किया और सब असबाब की गठरी बांध कर जन बीलको दिया और अख़ज़र को गठरी बांध कर कन्धे पर उठाया और एक डेरे का खम्भा लेकर बाहर आया और उस खंभे को सेना के चौराहे में गाड़कर अख़ज़र का कान काटकर उसीमें बांधकर और तमाम बदन उसका काला कर सातरंग के टीके देकर

लटका दिया और एक बीते भरको लेखू पूछ की तरह लगादी फरे के स्थान पर एक ताव कागजपर सातरंग का कुछ लिखकर उसपर चपका कर अपने क़िलेकी राहली फिरकुछ उसकी प्रभुता और सेना का डर न किया क़िले के दरवाजे पर आकर देखा कि कुछ लोगघोर" गुलकर रहे हैं यह देखकर व्याकुल हुआ कि क्या मामिला है फिर खन्दक के पार कूदकर गया तब पहरे वालेने पुकारा कौन है, अमरू ने कहा मैंहूं अमरू ने पूछा कि खन्दक के उसपार भीड़ कैसी है पहरे वाला बोला कि सरहंग मिश्री सत्तरसहस्र तसल और बहुतसी वस्तु तीनसौ सिपाहियों के साथ तुह्मारे पास सौगात लेकर आया है अमरू यह हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सरहंग मिश्री को बुलाकर मिला और सबमाल और असबाब लेकर क़िलेमें आकर दाखिलहुआ इसकी मुलाक़ात और माल असबाब के लेआने से अति प्रसन्न हुआ और प्रातःकाल होतेही सरहंग मिश्री को एक बड़ी खिलअत जिसमें जरबफ्त और ताज जड़ाऊ जिसमें हीरा मोती लगे थे देकर साथ उस असबाब के जहर मिश्री के पास भेजा और जहर मिश्री उन असबाबों को मलका मेहरनिगार के पास लेगई और हर एक चीज उसको पृथक् २ दिखलाई मेहरनिगार ने अमरू को बुलाकर सब असबाब उसको सौंपा और जो लिबास और जेवर पहिने थी वह सब उतार कर जहर मिश्री को दिया अमरू ने अखबार फैलगोश का हाल जो मलका से बयान किया तो मलका हंसकर बोली कि ईश्वरने तुम्हें मुसलमानी सेनाका सरदार किया है और तुमपर चालीस वलियोंका साया रहता है तुम्हारी सदैव विजय हुआ करैगी और कभी किसी से अविजय न पावोगे तब अमरू इन बातोंसे प्रसन्न होकर मेहरनिगार को आशीर्वाद देनेलगा और मेहरनिगार से कहा कि मैं चाहताहूं कि इस सत्तर सहस्र अशर्फी में से तीस सहस्र की जिन्स मोल लेकर क़िलेमें रखदूं कि सब लोगों के भोजन के लिये रहे और चालीस सहस्र देकर सरहंग मिश्रीको बारह हज़ार हबशके गुलामोंके सामान युद्ध के लिये गोली बारूद आदिक मोललेने को भेजूं उनसे बड़ २ काम निकलेंगे और उनको मैं सबतरह का फन सिखलाऊंगा फिर देखना कि इससेना से बढ़जांयगे मेहरनिगार ने कहा बाबा तुम्हारी राय बहुत अच्छी है तुमसे अधिक कौन बुद्धिमान् है अब थोड़ासा वृत्तान्त अखबार फैलगोश का सुनिये कि वहतो सब रात्रि पूछलगाये बंधापड़ा रहा और वह सुतून उसी तरह से खड़ा रहा और सेनामें युद्ध का बाजाबजा किया प्रातःकाल होतेही सेना तैयारहोकर डेवढ़ीपर प्राप्त हुई कि सन्मुख देखा तो चौराहेपर एक मनुष्य खंभेमें उलटा लटकाया है निकट जाकर देखा तो सिर से चरण तक कारिख लगी है और

पीले श्वेत काले रङ्ग टीके दिये हैं एक आश्चर्य रूप मनुष्य बना हुआ है और एक कान कटा है बहुत ध्यान करके देखा कि पहिले कभी इसे देखा है परंतु न पहिचान सके पर एक कागज जो उसके शरीर में चिपका था उसमें लिखा था कि अखुजार तू हरसर से बहस करके मुझे मारने और क़िला तोड़के मेहर निगार को ले जानेके वास्ते रह गया है इस कारण यह दण्ड तुझे दिया है कि तेरा एक कान काट लिया और तेरी गुदा में पूंछ लगाकर ऐसा आश्चर्य रूपी मनुष्य बनाया है अब सावधान हो दुष्टता छोड़कर मेरे हाथसे अपने जीवकी रक्षाकर नहीं तो तुझे सब मनुष्य मित्रघातक कहैंगे ऐसेही सबलोग मुझसे डरतेहैं कदाचित् तू अपने ऐसे कामोंको न छोड़ेगा तो इससेभी अधिक दण्ड पावेगा उस पत्रके जो उसके देहमें चिपका था पढ़नेसे विदित हुआ कि यह अखुजार फैलगोश है अति शीघ्रतासे उसे खोलकर खीमे में लाये और उसके शरीरके सब दाग़ छुड़ाकर उसे कपड़े पहिनाये तब वह कहने लगा कि अब क्योंकर मदायन में जाकर लोगोंको मुंह दिखलाऊंगा यह कह कर एक खंजर अपने पेटमें मारकर मरगया और संपूर्ण सत्तर हजार सेना अखुजार की लोथ उठाकर मदायनकी तरफ चलीगई जब यह हाल अमरूको पहुंचा कि अखुजार अपने हाथसे खंजरमारकर मरगया और उसकी सेना लोथ लेकर मदायन को चली गई तो अति प्रसन्न हुआ और उसी समय काबे में जाकर निमाजपढ़ी और क़िलेका दरवाजा खोलकर यह वृत्तांत मेहरनिगार से जाकर कहा उसने भी सुनकर अति प्रसन्न होकर अमरू की विजय की मुबारकबादी देनेलगी तब अमरूनेनगर वासियोंको बुलाकर सबकी मेहमानदारी की और कहा कि आप लोग कृपा करके तीसहजार अशरफी की जिन्स भोजनके लिये मंगवादेवें उन लोगोंने कहा ईश्वर आप को सदैव विजय किया करे जिन्स हम लोग अति शीघ्रही मंगवादेवेंगे परंतु हम लोगों को इतना डर है कि जिस समय नौशेरवां अखुजार फैलगोश की लाश देखेगा नहीं मालूम कितनी सेना भेजेगा या खुद चढ़ आवेगा उस समय हम लोगों को सिवाय प्राण देनेके और न सूझेगा उनसे कौन युद्ध करेगा इस कारण से आप किसी दूसरे क़िलेमें जिन्स रखवाकर रहिये और हम लोगों का प्राण बचाइये कि सब लोग आपको आशीर्वाद देवें और छिपे २ सहायता भी जो होसकेगी करते रहेंगे तब अमरूने अबदुल मुत्तलिबसे कहा कि इसप्रकारसे नगरबासी कहतेहैं उसने कहाकि जो कुछ ये बिचारे कहतेहैं वह सत्यहै उनको हर प्रकारसे दुःखहोगा अमरूने बिचारा कि ख्वाजेकी भी यही सलाहहै कि इस नगर से दूसरे स्थान पर चलकर रहैं कि मक्के के बासी नौशेरवां से छुट्टी पावैं तब अमरू ने अपने सेनापतियों से वृत्तान्त कहकर पूछा कि कहां चलना

चाहिये आदी ने कहाकि अभीतो चलकर क़िले तंगमें बास कीजिये फिर और कोई दूसरा क़िला देखकर ले लिया जावेगा असकूने उसी समय सेना को क़िले से बाहर किया और दो पहर रात्रि व्यतीत होने पर मेहर निगार को महाफ़ेमें बैठा कर क़िले से बाहर किया और सरदारों और नगर बासियोंको उसके साथ करके रवाना किया और सब रात्रि वह सेना मलकाकी रक्षा करते हुये चली गई प्रातःकाल होते सेनाको असकूनेएक स्थानपर उतारकर दानापानी घोड़े बैलोंकेलिये और सेना के भोजन आदिक के लिये सामान बटोरा और उस बनमें डेढ़ पहर दिन चढ़े तक वह सेना ठहरी रही और मुक़बिल और सरदारों को मलकाकी रक्षामें करके आपएक साधुका रूप धर कर क़िले तंगकी की तरफ़ चला और दो पहर होते क़िलेके समीप जाकर पहुंचा परन्तु बालू धूप से जलरही थी उसी में धूप के कारण अति व्याकुल होगया और प्यास के मारे इधर उधर घूमने लगा परन्तु जाते जाते एक स्थान पर दूरसे कुछ वृक्ष सायेदार दिखाई दिये तो अति प्रसन्न होकर उनकी तरफ़ दौड़ा जाकर समीप देखा कि एक चरवाहा कमरी बिछाये उस स्थान पर बैठाहै उसने इनको देखकर सलाम करके पूछाकि आपकहांसे आतेहैं और क्या प्रयोजन है असकूने उत्तर दियाकि माता पिता के पेट से आया हूं आदमी का स्वरूप हूं उसने कहाकि वहां से तो सब आये हैं केवल आपहीने यह मरतबा नहीं पाया है परन्तु बतलाइये तो कि आप कहां से आतेहैं और कहां जाइयेगा साधु बनकर ऐसा दुःख क्यों उठातेहैं असकू ने कहा बाबा रूमसे आताहूं मदायन को जाता हूं वहां पहुंचकर आराम पाऊंगा पर इस समय क्षुधा के मारे अति व्याकुल हूं और प्राण निकल रहाहै उसने थोड़ीसी बकरियों का दूध दूहकर कहा कि बाबा यही इस समय मेरे पास है और कुछनहीं है असकू बोला कि बाबा साधु हरदम ईश्वर के भजनसे युक्त रहताहै और ईश्वरही का दिया हुआ भोजन करता है केवल तेरी परीक्षा लेता था कि तू साधु मित्र है या नहीं ईश्वर तेरा भलाकरै और इसका बदला देवे थोड़े समयके पश्चात् उससे एकअज्ञान मनुष्योंकी तरह पूछने लगा कि भला इस क़िलेमें कौन रहता है और उसके अधिपतिका क्यानाम है वह साधुओं को मानता है या नहीं साधुने कहा ऐ बाबा आगे तो इसमें ईश्वर पूजकों का राज था परंतु जबसे असकू नाम एक मनुष्य बाग़ी हुआ है तबसे बादशाहने सब स्थानोंपर अपने सरदार भेजेहैं उसी तरह यहां भी एक सरदार है जिसका नाम हमरा जर्री है असकू यहहाल सुनतेही व्याकुल होगया और कहने लगा कि ईश्वरने बचाया कि मैं मलका को यहां न लाया नहीं तो मुफ़तही हाथ से जाती यह बिचारकर एक मैं निकाली और उसचरवाहेके आगे रखदी चरवाहा

उसको देखकर कहनेलगा कि शाह साहब मेरे पास भी एक नै थी परन्तु वह ऐसी उत्तम न थी और वह अब थोड़े दिनोंसे गुम भी होगई थी अमरू बोला कि कृपाकरके बजाइयेतो और यह अबलें आपको अपनी निशानी दे जाताहूं परन्तु आपका बजानातो सुनेंकि चित्त प्रसन्नहोवे देखेंकिस प्रकार बजातेहैं तबउस चरवाहे ने निःसन्देह होकरअपने मुखके समीप उस नै को लगाकर जोर से फूंका तो सब जहर उसके मुखमें चला गया और बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू ने उसी स्थान पर एक गढ़ा खोदकर उसको गाड़दिया और आप उसकी सूरत बनाकर क़िले के दरवाजे पर जाकर रोनेलगा और अपना ऐसा हाल बनाया कि सबको आश्चर्य मालूमहुआ और बहुत से मनुष्य उसके समीप आकर जमाहो गये और एक सिपाही ने जाकर हमरां से उसका हाल कहा वह उसे बहुत जानता था आज्ञादी कि जल्द मेरे पास लावो उसका हाल मुझे देखावो कि उसको धीर्य दें कि वह अपनी बीमारी से छुट्टी पावे क़रीब ग्रामके सिपाही लोग उसे उठाकर लाये हमरां उसे देखकर रोने लगा तब तो अमरू ने अपनी और खराब सूरत बनाई और पृथ्वी पर लोटने लगा तब हमरांने पूछाकि सत्य तू बता तुझे क्या बीमारी है उसने कहा क्या बताऊं सेवक अपनी बकरियां चरा रहा था और बनकी ठंढी २ वायुकी सुगन्ध ले रहाथाकि तीसरे पहर को एक सेना काबेकी तरफ से आई और उसमें एक डोली थी जिसके चारों तरफ बहुत से सरदार लोग पहरे पर मुक़र्रर थे आकर मेरे पास कहनेलगे कि हम मक्केसे आतेहैं और भूखे हैं तुम्हारी बकरियों को खायंगे जब हमने मनाकिया तो हमको बहुत पीटाकि थोड़ी देर तक बेहोश पड़ा रहा और बोटी २ में दरद होरही है हमरांने पूछाकि फिर वे मनुष्य किधर गये बने हुये चरवाहे ने कहा कि वे अमन की ओर गये हैं तब तो हमरा ने प्रसन्न होकर कहाकि अमरू या मक्के के बासियोंने नौशे-रवां के डरसे अपने नगर से निकाल दिया होगा अब वह मेहरनि-गार को लेकर क़िले अमनकी तरफ जाताहोगा यह विचार करके कि चलकर मलिका को छीनकर बादशाह को देकर प्रतिष्ठा प्राप्तकरैं यह कहकर अपनी सेना को साथ लेकर दौड़धाया तब अमरू ने क़िले से निकलकर अपनी राहली और सेना में जाकर सुलतान बख्तमगरबी को हमरा की सूरत बना कर सेना समेत क़िलेमें प्रवेशकरके क़िले वालोंको मारकरके अपना प्रबन्ध करके और मुलका तख्त उठाकर आराम से बैठा और बहुरूपियेपन में अपना नाम प्रसिद्ध किया अब हमरां का हाल सुनिये कि बीस बाईस कोस तक धावा किये चला गया और कहीं पता न मिला तो लाचार होकर पलट कर अपने क़िलेकेसमीपजो आयातो क़िलेपरसे अतशबाजी और तीरआदिकछूटने

लगेतो बहुतसे सिपाही मारे गये हमरां बड़े आश्चर्य में होकर कहने लगा कि यह क्या बातहुई कि क़िला वाले हमारे शत्रु होगये तब किले के समीप से हटकर दूरबीन लगाकर देखातो कोई अपना सिपाही न दिखाई पड़ा सब नवीनही मनुष्य दिखाई पड़े पीछे को विदितहुआ कि कलजोचरवाहा हमारेपास आकर गेताथा वहअमरू था उसनेइस युक्तिसे हमको निकालकर क़िलेको लेलिया और अब अपना प्रबन्ध करके बैठा है तब सरदारों ने कहा कि अबआप धीरज धरके क़िलेको चारोंतरफ से घेरे पड़े रहिये और जिन्स कहींसे नजाने पावे जब जिन्सक़िलेमें नहींहोगीतोआपही क़िलाछोड़कर भागजावेगा क्योंकि कोई मनुष्यबिना भोजन के एक दिन भीनहीं रहसक्ता है तब हमरां ने कहा कि इतने दिनों तक कौन आसरा देखेगा उत्तम यहीहै कि नौशेरवां के पास चलकर सब वृत्तान्त उनसे कहैं जैसी वह आज्ञा देवेंवहफिरआकर करेंगे यहविचार करके मदायनकी तरफचला और थोड़ेदिनोंके पश्चात् जाकर पहुंचातो उससमय बादशाहअपनी सभामें बैठाहुआ देशोंकाप्रबन्धकर रहाथा अब हरमरका हालसुनिये कि वह सभामेंजाकर बादशाहके पैरोंपर गिरपडा तोबादशाहने उसको छाती से लगाकर सबवृत्तान्त पूछा तब उसने सबवृत्तान्तकह कर विनय किया कि मेरे निकट यही उत्तम है कि जबतक हमज़ा न आवें तबतक आप अब चुप रहिये बादशाह क्रोधित होकर कहनेलगा कि तुम ऐसा नपुंसक मैंभी बनूं तो चुपहोकर बैठरहूं तब बुज़ुर्चमेहर ने कहा कि ऐ महाराज यह नपुंसक नहीं है परंतु अति बुद्धिमान् है और दो कार्य्यों के कारण पलट आये हैं एक यह कि एक सिपाहीसे युद्धकर के अपनी प्रतिष्ठा राज कुमार होकर क्यों खोवें दूसरे बहुत दिनों से गये थे आपके स्नेह के कारण चले आये हैं तब बादशाह ने बख़्तक की ओर सम्मुख होकर कहा कि बखतियारक जो गया था उसकी भी कोई युक्ति न चलसकी उसने भी अमरू के हाथसे धोखा उठाया तब हरमर ने कहा कि उसकी दाढ़ी मोछें पेशाबसे मुड़कर स्त्रीका स्वरूप बनाकर नेवस्त्र करके फैलगोश की गोदमें बांधकर लेटा दियाथा उसने नशे की उतारमें बेजाने हुये उसके सायस्त्री जानकर भोगकरने की इच्छा कीथी बादशाह इसको सुनकर बहुत हंसे और अमरू की चलाकी पर बड़ाआश्चर्य किया तब बुज़ुरचमेहरने कहा कि महाराज फैलगोश ऐसापहलवान आपके सेनामें कमहोगा और वह वहां ठहराहै तो अवश्य अमरूको दंड देगा दूसरे सरदारों ने सुना कि बुज़ुरच मेहर फैलगोश की प्रशंसा करता है तब वे लोग भी मिल कर खाजे की प्रशंसा करनेलगे और बादशाह जबसभासे उठकर शबिस्तान हरम में हरमर समेत गया तो तीन दिन तक नाचरंग करवाता रहा

और चौथे दिन महलसे न्यायशाला में आकर सबसरदारोंके आने की आज्ञादी कि थोड़ी समय में किसी ने अदालत की जंजीर को खट खटाया और दोहाई देने लगा बादशाह ने कहा कि देखो तो कौन है उसको यहां बुला लो आज्ञा पातेही सिपाहियोंने उनको लाकर हाजिर किया तो देखा कि एक मुरदा उनके पास है और सब दुखित हैं बादशाह ने पूछा कि क्या हुआ तो उनलोगों ने कहा कि यहअबु-लफ़ैलगोश की लोथ है और इसी से सेना ने कालावस्त्र धारण किया है तब बादशाह ने पूछा कि यह क्योंकर मारा गया तब साथियों ने सब वृत्तान्त वर्णन किया तो बादशाहने क्रोधित होकर कहा कि इस पापी ने बड़ा दुःखदिया है और अपने को बड़ा बहादुर समझता है अच्छा अब हमारा अगुवानी खेमाचले और सेना एकट्ठी की जावै हम आपही अब जाकर उसको मारेंगे तब नौलाख सेना समेत अगुवानी का खेमा रवाना हुआ और बादशाह ने कूच न किया था कि इतनेमें खबर आई कि जोपीन काबुली फिरसेना लेकर आता है तो थोड़े से सरदारों को आज्ञादी गई कि अगुवानी लेकर हमारे समीप लावे कि हमभी उसको देखकर चित्तको प्रसन्न करें इतनेमें हामरा जरीं ने सन्मुख आकर सबवृत्तान्त क़िलेके छूटनेका सुनाया बुजुरचमेहरने कहा कि विदित होता है कि मक्केके बासियों ने अमरू को निकाल दिया अब अमरू को पराजय करना कुछ बड़ी बात नहींहै जो जायगा वही विजय पावेगा बादशाह आप खुद अब अपने ऊपर दुःख न देवें बाद-शाहने बुजुरचमेहर से कहा कि उत्तम है हमारा खेमा लौटा लिया जावे और सबसेना अपने २ स्थान पर जाकर आराम करे परन्तु तुम शाहजादोंको लेकर जावो और अमरूको परास्तकरो उसने कहा मैंतो आपका सेवक हूं जानेको आरूढ़ हूं तब बादशाहने बुजुरचमेहर को चालीससहस्र सेना देकर सब शाहजादों समेत अमरूके पराजय करने को और मेहरनिगार के ले आने के लिये खिल्अत देकर भेजा जिस समय यह सेना क़िले तंगरवाहिल पर पहुंची तो जोपीन ने देखा कि क़िलेके दरवाजेपर एक नमगीरा अतलस का जड़ाऊ खींचाहै और सब बादशाही सामान उसमें रक्खाहै और उसके नीचे अमरू एक जड़ाऊ कुरसी पर शाहाना पोशाक पहिने बैठाहै और सब छोटे बड़े यथा उचित खड़े हैं और मुक़बिल भी बारह सहस्र तीरन्दाज लिये बराबरसे पीछे खड़ाहै और सब सरदार लोग कुरसियों पर बैठेहैं और सब सिपाही बराबर से हथियार लिये हुये क़िले की दीवारों पर युद्ध करनेको तैयार हैं शाहजादों ने बुजुरचमेहर से पूछाकि कौनसी युक्ति करनी चाहिये कि यह हाथआवे ख्वाजेने कहा कि इस समय युद्धक-रना उचितनहीं है क़िलेको चारोंतरफसे घेरकर पड़े रहिये जब इन

के पास जिन्स न रहेगी तो युद्ध करके किला ले लेना होगा तब शाह-जादों ने बख्तियारक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है उसने कहा कि जो ख्वाजे कहते हैं वह अति उत्तम है परन्तु इतने दिनों तक कौन पड़ा रहेगा इससे यही उत्तम है कि क़िले पर धावा किया जावे तब शाहजादों ने जोपीन से धावा करनेकी आज्ञा दी जोपीनने सेनाको धावा करने की आज्ञा दी तब तक अमरू बैठा तमाशा देखा किया जब सेना शाहजादोंकी क़िलेपर पहुंचगई तब अमरूने ललकारकर कहा कि अब दौड़कर मारलेवो एकभी न जाने पावे तब अमरूकी सेनाने अतशबाजी और तीरमारकर हजारहों सेनाकेमनुष्योंको मारडाला पीछे शाहजादों की सेना भागकर चली आई तब शाहजादों ने बख्तियारक से पूछा कि अब क्या करना उचितहै तब उसने कहाकि अब डंका लौटका बज-वाकर चलकर क़िलेको घेरकर पड़ेरहिये जब क़िलेमें जिन्स न रहेगी तो कुत्तों की तरह बुलाकर सबको मारलेवेंगे तब शाहजादों ने डंका लौटका बजवाकर सेनाकेपलटनेकी आज्ञादी और बख्तियारकके कहने पर पलटकर अपने खेमों में आकर उतरे अमरू का हाल सुनिये कि जिस समय शाहजादों ने युद्ध करना बन्दकरके क़िले को घेरलिया तो अमरू ने अपनी सेनाके सरदारों को आज्ञा दी कि इस क़िले में रहकर शत्रु से बचना दुर्लभ है क्योंकि सेना शत्रुके पास अधिकहै इससे तुम लोग इस क़िलेकी रक्षाकरो मैं दो तीन दिनमें दूसरा क़िला ढूंढ़कर आता हूं तो तुमकोभी लेचलूंगा यहकहकर भेषबदलकर क़िलेसे निकला जाते२ दूसरेदिन क़िले शिकोहपर पहुंचा जो कि क़िलेतग इहिलसे सातकोस पश्चिम था जाकर जो देखा तो क़िलेमें जानेका कहीं रास्ता न दिखाई पड़ा जानेकी युक्ति सोचरहा था कि इतनेमें एक घसियारा क़िले मेंसे घास लिये निकला तो अति शीघ्रही आप घसियारा बनकर उसके पासगया और पूछनेलगा कि तू घास बेचेगा उसने कहा कि साहब मेरा काम क्याहै अमरूने पूछा कि तू इसी क़िले में रहता है उसने कहा कि हां साहब इसी क़िलेमें रहताहूं फिर अमरूने पूछा कि इस क़िले का स्वामी कौनहै और उसका स्वभाव कैसा है उसने कहा कि दाराब और सोहराब दो भाई हैं परंतु बड़े नोक टोक के मनुष्य हैं अमरू घसियारेसे यहबातें कररहाथा कि इतनेमें एकओरसे सोहराब की सवारी आनिकली अमरू ने देखकर पूछा कि यह सवारी किस कीहै उसने कहा कि सोहराब मियां यही हैं अमरू सोहराब का नाम सुनकर अति प्रसन्न होकर कहने लगा कि तू यहीं खड़ा रह मैं अभी आता हूं यह कहकर एक वृक्ष के ओटमें जाकर अपना असली रूप बनाकर सोहराब के पास जाकर अति नम्रता के साथ सलाम करके खड़ाहुआ और रोनेलगा तब सोहराब ने उसके स्वरूपको देख

कर जाना कि कोई प्रतिष्ठित मनुष्य है दुःखके मारे रोरहा है घोड़े को खड़ाकरके पूछा कि आप कौन हैं अमरूने हाथजोड़ कर कहा कि आपने सुना होगा अमरू का नाम सो मैंहीहूं आपके समीप आयाहूं कुछ प्रयोजन है मलिकामेहर निगार ने मुझको आपके पास भेजा है आज्ञा होवे तो आप से कहूं सोहराव मेहरनिगार का नाम सुनकर अतिप्रसन्न होकर सबलोगोंको हटाकर कहनेलगा कि जोकुछ कहना हो अब कहो अमरू ने रूमाल से आंसूपोंछकर कहा कि आपने सुना होगा कि हमजानाम एक अरवके रहनेवालेने मेहरनिगारको तलवार के बल से नौशेरवां के घरसे निकाल कर अपने घरमें रक्खा था लेकिन हैसिला पूरा नहोने पायाथा कि एक प्रयोजन ऐसापड़ा कि अठारह दिनके लिये परदेशकाफ को मलकामेहरनिगार को मुझे सौंपकर गया था और मुझको आज्ञादे गयाथा कि जब तक मैं न आऊं मलका की रक्षा करने में कोताही न करना परंतु अब कईवर्ष व्यतीत होगये और उसका कुछ पता नहींमिला कि मारागया या जीताहै सो अबमेहर-निगार ने मुझसे कहा है कि अब तुम मुझे किसीके पास करदेनानहीं तो कोईतुमसे छीनकर लेजावेगा मुझकोभी लज्जाहोगी और तुमकोभी सोमैं उसकी तलाशमें आयाहूं और आपका स्वरूपहमजा के समान देखकर मुझे रोआई आगईहै और पांचहजार अरबीमेरी तलाशमें फिररहेहैं कि मुझको मारकर मेहरनिगार को छीन कर नौशेरवां के पासलेजावैंसो जो आपमेरीरक्षा हमजाकी तरहकरें और यहइक़रार करें कि पीछेसेतुमकोपकड़कर नौशेरवांकेपास न भेजेंगे तोमैं मलकाको लाकर आपको सौंपकर आपकी आज्ञामें होकर रहूं सोहराब मेहर-निगारका नाम सुनतेही घोड़परसे उतरपड़ा और अमरूको छाती से लगा कर कहने लगा कि नौशेरवां क्या मालहै जो सारी दुनियां चढ़ कर आवे तौभी मुझ से मेहरनिगार को न पासकेगा और तुम को मैं हमजा से भी अधिक मानूंगा किसीप्रकार से दुःख न होनेपावेगा और यह क़िलासिकन्दर कावनवायाहै ऐसा पुष्ट बनाहै कि कोई इसमें प्रवेश नहीं पासक्ता है चलो हम तुमको सब क़िला के स्थानों को देखा देवें यह कह कर अमरू को साथ ले कर क़िले में आया जब अमरू क़िले में पहुंचा सो ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा और कहनेलगा कि अब ईश्वर के प्रताप से क़िला मिलजावैगा और सोहराव कोभी धोखा दूंगा क़िलेके स्थानोंको देखकर अति प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐसा क़िला मैंने संसार में कहीं नहीं देखाहै तब सोहराबने अमरूको दीवानखाने में लेजाकर बैठाकर सब सामान उसकेलिये इकट्ठा करके अपने भाई दाराव से अमरू के आनेका हालकहा और कहनेलगा कि मेरी बड़ी भाग्य है कि मेहरनिगार ऐसी स्वरूपवान स्त्री और अमरू

ऐसा सिपाही मिला दाराब उससे बुद्धिवान था उसने सुनकर कहा कि विदित होता है कि तेरी भाग्य उलटगई है कि तू असरू के जाल में आगया देखना असरू तुमको कैसा धोखा देगा परंतु सोहराब असरू के दमसें ऐसा आया था कि उसका समझाना उसके चित्तमें न आया और अपने नेकबद पर दृष्टि न की और असरू की बातों से सब सत्यही मालूम करके कहा आप भी बुलाकर पूछलीजीये और उसके असत्य और सत्य को विचार लीजिये दाराब ने कहा कि अच्छा बुलवावो हम भी देखलेवें सोहराब ने असरूको दाराबके सन्मुख बुलाया असरूने दाराब के समीप आकर नम्रता के साथ सलाम करके प्रशंसा करनेलगा तो दाराब भी उसके दममें आगया और उठकर असरू को गले से मिलाया असरू ने जब देखा कि दाराब भी मेरेदममें आगया है उठकर सलाम किया और कहा कि अब आज्ञाहोवे तो जाकर मल-का मेहरनिगार को लेआऊं परंतु द्वारपालकों को आज्ञा दीजिये कि जिससमय मैंआऊं चाहे दिनहो या रात्रि मना न करें तब दाराब ने द्वारपालकों को बुलाकर आज्ञादी कि खबरदार जिससमय असरू आवे बिना हमारी आज्ञा सेनासमेत आनेदेना और आजसे क़िलेका स्वामी असरूहै जो इसका कहना न मानेगा वह दण्डपावेगा नौकरोंको क्या चारा पासबानोंने स्वीकार किया और एक दूसरेको आज्ञा सुनादिया तब सभोंने स्वीकारकिया और बाहरनिकलकर सोहराब ने दाराबसे कहा कि हम भी असरू के साथजांयगे नहीं तो कोई रास्ते में मलका को छीनलेवेंगे हाथसे ऐसी उत्तम वस्तु निकलजावेगी दाराब ने कहा कि तुमारे जानेकी कुछ अवश्यकता नहींहै असरू बड़ायत्नीहै वहकिसी युक्तिसे लेआवेगा परन्तु उसने न माना पश्चात् जब असरूके साथ चला और पांच कोस क़िला तंग वाहिल बाकी रहा तबही सोहराब को ठहरा कर कहा कि आप यहीं रहियेहमजाकर मलिकाको लेआयेते हैं उसको धोखादेकर क़िलेमें पहुंचा और सब वृत्तान्त सरदारोंसे कह कर विचारकरने लगा किसीयुक्तिसे सोहराब को मरवाडालना उचित है परन्तु कोई युक्ति विचार में न आई पीछे को विचार करके जासूसों कि सूरत बनाकर हरमर की सेना में कोतवाली चबूतरे से होकर जा निकला सिपाहियों ने जासूस समझ कर पकड़ लिया और उससे पूछने लगे कि तू कौनहै और कहांसे आताहै वह भांय२ करने लगा कुछ उत्तर न दिया तब कोतवाल ने जाकर बुजुरचमेहर से कहा कि एक जासूस आयाहै सिपाहियोंने उसको गिरफ़तार कियाहै परन्तु कुछ बोलतानहींहै बहिरोंकी तरह भांय२ करताहै और पूछनेसे कुछ उत्तर नहीं देताहै ख़्वाजेने बुलवाकर अरबी, फारसी, तुरकी, कशमीरी आदि भाषाओं से पूछा कि तू कौनहै और किसनेतुझको यहांभेजाहै तुझसे

सत्य २ बताते। मैं तुझको पारितोषिक देऊंगा और अनेक प्रकारसे प्रसन्न करके छोड़दूंगा जबकुछ न बोला तो पहलवान जो ख़ाजेके समीप बैठेथे उन्होंने कहा कि सीधी अंगुलीसे घी नहीं निकलता है मोम बे अग्नि पिघलता नहीं टिकठी में बधवाकर मरवाइये तो अभीसब बतला देगा ख़ाजेने कहानहीं जो यहबतला देवे तो यहा खिलअत जो हमबादशाह की दीऊई पहिनेहैं उतारकर देदेवें और पांचतोड़े अशरफी और देंगे यहकहकर उसको प्रसन्न किया और कहा कि अबतू सत्य २ हमसे कहदे मैं नौशेरवां के शिरकी सौगन्धखाकर कहता हूं कि तुझको छोड़दूंगा और अनेक प्रकार से तुझको प्रसन्न करूंगा यह कहकर खिलअत और अशरफियां देकर अमरूके मुंहमें पानीभरआया तब उसने पश्चिमीभाषा में कहा कि मैं क़िलेकरगिस्तान की लेनेकी युक्तिमें हूं कि वहां जाकर धाराअपाऊं इसलिये सोहराब को यहां लेआया हूं और मैं अमरू हूं भेषबदल कर आपसे कहने आयाहूं कि आजवह आपकी सेनापर छापा पड़ेगा सो किसी युक्तिसे उसको मारडालिये या पकड़लीजिये कि मेरा कार्य सिद्ध होजावे ख़ाजे ने अमरू को सहस्र अशरफी और देकर जाने की आज्ञादी और हरमर से जाकर कहा कि आज एक भेदिया हमने पकड़ाया तो मैंने उसको लोभ देकर पूछा तो विदित हुआ कि अमरू सोहराबको अपने जालमें फंसाकर लायाहै सो आज वह हमारीसेना पर छापा मारेगा तब शाहज़ादों ने पूछा कि आपने कौनसी युक्ति विचारीहै उसने कहा कि सरदारोंको बुलाकर आज्ञादीजिये कि आज सबेरे खा पीलें और चारघड़ी रात्रि व्यतीत होने से जाकर पहाड़ के निकट छिपकर बैठरहें जब छापा पड़े और लूटने लगे तो निकल कर शत्रुको मारलेवें या सोहराब और अमरूको जिन्दा पकड़लेवें तो अति उत्तमहै हरमरने उसीसायत सरदारोंको बुलाकर आज्ञादी कि तुमको जो कुछ ख़ाजे आज्ञादेवें वही करो। अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि क़िलेमें जाकर अपनी सेना के सरदारों को आज्ञादी कि सवारियां सायंकाल से तैयार होकर आवें और सब कमरबांधे तैयाररहें जब मैं आऊं उसीदम सबको लेकर चलूंगा सब युक्तिकरनेके पश्चात् सोहराब के समीप मुंहबनाकर गया तो उसने पूछा कि कुशलतोहै क्यों दुःखी हो अमरूने कहा कि क्याकहूं कुछ कह नहींसक्ता कि क्या हालहै कि जब मैंने जाकर सब हाल आप का मलिका से कहा तो वह भी आप का हाल सुनकर अति मोहितहुई और जोंहीं मैंने इच्छा की थी कि मलिका को मियाने में सवार कराकर आपको समीपलेआऊं इतने में एक सिपाही ने आकर ख़बर दी कि एक सेना क़िले के बाहर पड़ी है परन्तु विदित नहीं होता कि क्यों आई है और किसकी सेना है मैंने जाकर लोगोंसे पूछा तो विदितहुआ कि बादशाह ने बुजरुचमेहर को

मलिका के लिये भेजाहै कि तुम जाकर समझाकर लेआवो सो उसी समयसे मैं बड़े सन्देहमें हूं कि ऐसा नहा कि मलिकाउसके कहने पर चलीजावे सो मेरे पास हजार सिपाही भी होंतो मैं उसको छापा मारकर हटादेता सोहराब ने कहा कि तुम सन्देह न करो मुझ को चलकर उसकी सेना दिखा देतो मैं उसको हटादूंगा यह सुनकर अमरू प्रसन्न होकर श्रोर उसकी प्रशंसा करने लगा कि बड़ी भाग्य मलिका की हुई कि आप ऐसा पुरुषमिला तब तो सोहराब श्रोर भी फूलगया श्रोर सेना को साथ लेकर अमरू के साथ हुश्रा जब क़िले के समीप पहुंचे तो अमरू सोहराब को उसीस्थान पर ठहरा कर हरमर की सेनामें गया तो देखा कि सब खेमे खालीपड़े हैं वहां से पलट कर सोहराब को बुलाकर हरमर को सेना के खेमे दिखाकर आप चला गया सोहराब ने जो जाकर देखा तो सब असबाब पड़ाहै श्रोर काेई मनुष्य नहीं दिखाईपड़ा तब उसने विचारा किमेरे डरसे सुनकर कहीं जाकर छिपेहोंगे सब लूटलाट के चलने की इच्छा कीथी कि हरमर को सेनाने आकर चारोंतरफ से घेरकर बहुतों को मारकर सोहराब को थोड़े सरदारों समेत पकड़कर क़ैदकिया अब अमरू का हालसुनिये कि वहां से आकर मेहरनिगार को स्त्रियों समेत डोलियों में सवार करवाके सेनाके साथ क़िलेमें निकाल कर क़िलेकरगिस्तानकी तरफ जो पश्चिम की श्रोरहै चला मैंभी थोड़ेसमय में आताहूं यह कहकर सेना कोतो भेजदिया श्रोर अपनी सूरतका एक पुतला बनाकर अपने स्थान पर खड़ाकर कईसौपुतला श्रोर बनाकर क़िलेकी दीवारोंपर खड़ेकरके हाथोंमें तीर रखदिया दोकुत्ते एकी स्थानपर बांधदिया कि एक दूसरे को देखकर भुकरताहै श्रो एकगधा क़िलेके दरवाज़े पर बांधकर उसके ऊपर झूलडालदिया श्रोर बहुत से मुर्दे ताखों पर बराबर से बैठाकर आप क़िलेकी खन्धकका तखता उठाकर वायुके समानकूदके पार चला गया श्रोर अपनी सेना की तरफ की राहकी कईकोस जाकर सेना से मिला श्रोर रात्रिहीको सेनाको भगाकर लेगया श्रोर दोघड़ी रात्रि बाकीथी कि क़िलेकरगिस्तानके दरवाजे परपहुंचकर सरदारोंसे कहा कि मैं जाके क़िलेका दरवाज़ा खोलवाता हूं श्रोर तुम को यह युक्ति बतलाजाता हूं कि जिससमय क़िले का दरवाजा खुलजावे तुम लोग स्त्रियों को लेकर भीतर चलेआना श्रोर सब लोगों को एक तरफ से मारना केवल उन लोगोंको छोड़कर जो मुसल्मान होजावें श्रोर किसी प्रकार से डर नहीं है सरदारों से यह कहकर आप क़िले पर आया श्रोर दरबान से कहा कि मैं अमरू आयाहूं मलकामेहरनिगार दिल आरी सोहराब को साथलेकर, दरवाजा खोलदेव वह तो पहिलेही से जानेथा क़िलेका दरवाजा खोलदिया सब सवारियां साथ सेनाके क़िले

के भीतर चली गई तब अमरू अपनी इच्छापूर्वक कार्य्य करके मलकाको एक स्थान में बैठाकर सरदारों का पहरा करके आप सेना लेकर क़िले वालोंको मारने लगा और केवल उन्हीं लोगोंको छोड़कर जो मुसल्मान हुये दाराब ने यह हाल देखकर जाना कि अमरू आया क़िला हाथ से गया देखें सोहराब का क्या हाल हुआ अमरू ने जब दाराब के मारनेकी इच्छाकी तब उसने कहा ऐ ख़्वाजे मैं मुसल्मान होताहूं मुझे न मार मैंने कलमा पढ़ा अमरूने उसको छातीसे लगया और कहाकि मैंने तेरे देश क़िलेसे कुछ प्रयोजन नहीं केवल जबतक हमज़ापरदेक़ाफ से न आयेगा तबतक मैं मलकाकी रक्षाके लिये इस तेरे क़िलेमें रहूंगा तत्पश्चात् मुझसे तेरे क़िलेसे कुछ वास्ता नहीं है तुम अपना क़िलालेना मुझमें तुमसे कुछ शत्रुता नहींहै तब दाराब उसीसमय कलमापढ़कर मुसल्मान हुआ और क़िलेवालों का बलहीन होकर क़िला अमरू के हाथमें आगया अब थोड़ा वृत्तान्त सोहराब का सुनिये कि वह हरमर की सेनामें क़ैदहोने से अमरूकी चालसे बचरहा था बख़्तियारक और जोपीन ने हरमर और बुजुरचमेहरसे कहा कि अब अमरूने क़िलेकार-गिस्तान में पहुंच कर उसको अपने आधीन कर लिया होगा प्रातःकाल होतेही सिपाहियोंको भेजा कि जाकर देखआवो कि क़िलातंग खाली है या उसमें कोईहै सिपाहियोंने देखकर आकरकहा कि आदमी बराबर क़िले की दीवारों पर फिररहे हैं और सबप्रकार के पक्षी कबूतर मुर्ग आदि बोलरहे हैं और एक गदहा दरवाज़े पर बांधा है कुछ आसार ख़ालीका नहीं पायाजाता क्योंकर कहें कि ख़ाली है बख़्तियारक ने हरमर से कहा यह झूठहै आप तबलजंग बजवाकर देखलीजिये जो मैं कहता हूं वह सत्य है यह झूठ हरमर ने बुजुरचमेहर को क़ैदियों की रक्षाके लिये छोड़कर आप तबलजंग बजवाकर चला समीप पहुंच कर जोपीनने बख़्तियारक से कहा कि देख कहां क़िला खालीहै वहां सब सामान मौजूद है सब लोग क़िलेपर खड़ेहैं अमरू शस्त्रलिये खड़ाहै और हरएक निशानगड़ेहैं बख़्तियारक ने फिरदेखकर कहा कि यह अमरू नहीं है यह अमरूने पुतले बनाकर खड़ेकिये हैं वह देख वायु से हिल रहेहैं फलाखनके पत्थरकी डोरियां एकदूसरेसे लगरहीहैं जोपीनके आगे बढ़ासंयोग से एक पत्थर का टुकड़ा उसके उसीघाव पर जहां अमरू ने मारा था फिर लगा तब तो उसे और निश्चयहोगया किये पुतले नहीं परन्तु अमरू है जो पत्थर माररहा है उसस्थान से रुधिर में डूबा हुआ भागा बख़्तियारक ने कहा ऐ जोपीन क्यों भगाजाता है और लोगोंके सामने लज्जाउठाता है तुम ऐसे डरपोक मनुष्य कपकाबिस के कुल में उत्पन्न नहोना चाहिये था कि उनकी बहादुरी का नाम डुबाता है और मरदहोकर तुझेलज्जा न आई जोपीन ने कहा कि यहभी आश्चर्य

की बातहै कि अमरू सामनेसे पत्थर माररहा है और तू कहताहै कि अमरू नहीं है तो बतावो कि किसने यह पत्थर मारा है बख़्तियारक बोला यह भी एकसंयोग की बातहै कि वायुके बहनेसे पत्थर गिरके तेरे शिरपर पड़ाहै और तेरा शिरटूटगया और जो अमरूहोता तो अबतक ऐसेपत्थर बरसाता कि हमलोगों के दमफूल जाते और भागते न बनता और दीवारों परसे ऐसी आतिशबाजी की दृष्टिकरता कि लोग वे मारे मरजाते और भुजवेकेभाड़की तरह चनेके समान जलजाते जाकर दरवाजे को तोड़ मेरेकहने पर यक़ीन जान पसलाबार होकर जोपीन खन्दक के पार गया और दरवाजे को तोड़कर हरमुज जाफरांसरजको बख़्तियारक और २ सरदारों को साथलेकर क़िले के भीतर गया तो देखा कि दरवाजे पर एक गधा बंधाहै और अन्दरताखों पर बराबर से कबूतर व मुरगाबी चुनेहैं और बोल रही हैं और क़िले पर बराबर से कागजके पुतले खड़ेहैं जोपीनने जाके अमरूके पुतलेके पेटमें एक बरछी मारी तो उससे एक गीदड़का बच्चा निकलकर भागा तो जोपीन ने बख़्तियारक से कहा कि इस क़िले में तो बड़े २ तमाशे दिखाई देते हैं बख़्तियारक ने कहा कि यह अमरू का ग्राम है कोई जाकर पकड़ लावे यह सुनकर सबलोग हंसनेलगे और जबही याद आवे तभीहंसने लगें तत्पश्चात् हरमुज ने सेनामें जाकर बख़्तियारक से पूछा कि अब क्याकरना उचितहै यह दोबड़े आश्चर्य की बातें हुईं कोई युक्ति करनी चाहिये उसने कहाकिअमरूकापीछाछोड़ना उचितनहीं है औरसिवाय इसकेअभी वह नये क़िलेमें गयाहै अभी अच्छे प्रकारसे उसका सामान जुटाहोगा हरमुजने कहायही उत्तमहै तब तो हरमुजने बुजुरुचमेहर को बुलाकर कहा कि ख़ाजेतुमतो सोहराबको लेकर बादशाहके पास जाकर जो कुछ देखा बयानकरो और मेरीपर्ची देकर कुछआज्ञा लेना बुजुरुचमेहर सोहराबको लेकर मदायनको रवाना हुआ और हर-मुज जाफरांसरज जोपीन और बख़्तियारक अस्सी सहस्र सेना लेकर क़िले गुरस्तान पर गये वहां जाकर क़िलेको घेरा और रसद न जाने की आज्ञा दी अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसने छः महीने भोजन के लिये जिन्स मोल लेकर क़िलेमें रखवाली और क़िलेको अच्छी तरह से बनवाकर बन्दरके दरवाजेपर एक शामियाना खड़ाकर के उसी में जड़ाऊ कुरसियां बराबर से रखवाकर बादशाह से भी अधिक लि-बास पहिनकर बैठाकि इतनेमें हरमुज जाफरांसरज सेना लेकर पहुंचे और बख़्तियारक की सलाह से क़िले पर चढ़ाई की अमरू ने जो देखा कि सेना समीप आगई है अपनी सेना को आज्ञादी कि देखना जाने न पावें हर एकको इसी स्थानपर मारो इतनेमें हरमुज की सेना पर तीर कलूरा पत्थर आतिशबाजीका मेंह बरसाने लगे कि हर

एक मनुष्य प्यासके मारे मरने लगे कई सहस्र सवार मारे गये शेषके पैर आगे न उठसके पीछेहीको हटनेलगे बख्तियारक हरमन जफर मर्जसे कहने लगाकि यह युक्ति युद्धकरने की नहीं है जो इसप्रकार से युद्ध कीजियेगा तो सब सेना मारी जायगी और कभी विजय न पाइ- येगा तब तो दोनों शाहजादे नाराज़ हुये कि क्या बकता है तेरेही कहने से चढ़ाई की और तूही अब यह कहता कितू क़ाबिल दण्ड पानेके है वह बोला अच्छा बुराई क्याहुई यहीन कि हजार सवारमरे आप उनकी पालन करने से बचे और क़िले वाले को मालूम हुआकि शाहजादा बड़ी सेना साथ लेकर हमसे युद्धकरने को आयाहै और वे सीधे अपने बैकुण्ठ को चले गये अब इस समय डंका लौटका बजवाकर चलकर किसी बराबर पृथ्वीपर डेरा लेकर घोड़ोंको दाना और साथ वालों को कुछ खाने पीनेको दीजिये और जब क़िलेमें जिन्स न रहेगी और बाहरसे भी न जाने पावेगी तो आपही क़िला खालीकरके चले जायगे शाहजादे ने डंका लौटका बजवाकर डेरा डालकर इसी अ- सरे में पड़ारहा बुजुरुचमेहर का वृत्तान्त सुनियेकि जिसदिन मदायन में पहुंचा उसीदिन सीधा सोहरावको साथ लिये बादशाहके दरबारमें जाकर सलाम करके बैठा और सोहराब को सामने करके सब हाल खराबी का कहकर हरमन की बिनय पत्री दी पहिले बाद- शाह ने सोहराब से कहाकि तू जो अपना प्राण बचाना चाहताहैतो सच २ अपना हालकह मैं तुझे दण्ड न दूंगा सोहराबने अमरूके बह- काने और अपने क़ैद होनेका सत्य २ हाल कहकर बिनयकिया किजो यह अपराध बादशाह मेरा क्षमाकरके प्राण को छोड़ दीजिये तो अब सदैव आपकी सेवामें रहूंगा बादशाह ने उसका अपराध क्षमाकरके हरमर की बिनय पत्री को पढ़वा कर सुना तो उसमें लिखा था कि मुझे आपकी आज्ञासे चार बरस से अमरू से युद्धकरते हुआ और एक दिन भी विजय की सूरत नज़र न पड़ी इस से निश्चय है कि अमरू के युद्धमें हम लोगोंको विजय न मिलेगी और दिन रात्रि ही डर रहता है कि कहीं अमरू सोतेमें मार न डाले या पलंगपर से उठाकर किसी और दुःखमें डाले इसकारण से आपका इसतरफ आना अवश्य है और आपके आने से अधिक सेना देखकर उसके सहायक लोग भी न आवेंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि वह खुद आकर आपके पैरों पर गिरे और अपना अपराध क्षमाकरावे और इस तरहसे वृथा सेना मारी जातीहै और हम लोग भी हलाक होतेहैं आगे आप मालिक हैं जिसतरह से आज्ञा दीजियेगा वैसा हम लोगकरेंगे बादशाह ने पहिले यह पत्र पढ़ कर बख्तक से पूछाकि तुम्हारी क्या सलाह है उनको बुलालेना अच्छा है या नहीं बुजुरुचमेहर से पूछाकि तुम क्या कहते हो उसने कहाकि

जो पहिले मैं कहचुकाहूं कि आपका अमरूसे युद्ध करनेके लिये जान आपकी प्रतिष्ठा से बाहर है और जो शाहनशाह सुनेगा तो वह भ नाराज होगा कि एक सिपाही से युद्धकरने के लिये खुद बादशाह गया और सिवाय इसके हर एक मनुष्य आपका रोब न करैगा और जो संयोग से हरमरकी तरह आपको भी उठालेगया तो जो उसने आप को जीताभी छोड़दियातो बड़े लज्जाकी बातहोगी और जो मारडाला तो सातों देश अनाथ होजांयगे और जिसतरह का वह बदबलाहै वह तो आप जानतेही हैं इससे आपको जाना उचित नहीं है यह बातें सुनकर बादशाह कांपगया और आज्ञा दी की बख्तकको मेरे सम्मुख से गरदन पकड़कर निकालदेव यह इसीतरह से सदैव मुझको बहका-कर खराब करता है और आपभी बदनामी लेता है बख्तक को तो गरदन पकड़कर निकला दिया और बुजुरचमेहरकी सलाहपर कारन फीलगरदन जो बड़ा बहादुरथा और अकेला हजार सवारोंसे सामना करता था एक लाख सवार साथकरके आज्ञादी कि तुम जाकर अमरू को साथ उसके सहायकों को जीते पकड़ लावो ॥

कारनफील गरदन का अमरू को पकड़ने को जाना और
उसका भाग जाना नकाबदार के हाथसे ॥

लिखनेवाले लिखते हैं कि जब कारनफीलगरदन ने हरमरकी सेनामें पहुंचकर उससे मिला उस समय उसको अति प्रसन्नता प्राप्तहुई तब रात्रिको दोनों सेनाके सरदारों को बुलाकर शराब पिलाना शुरूकिया और ज्योंही एक गिलास शराब भरकर शाहजादे को दिया उसी समय कारनने हरमर से कहाकि आप जोबहुत दिनोंसे इस स्थानपर पहाड़के समान पड़े हैं परन्तु एक सिपाही को न मारसके न पकड़सके किसी तरह की क़ाबू उसपर तुम्हारी न चलसकी जो कोई सुनेगा वह क्या कहेगा हरमर ने कहाकि अबतो तुमभी लाख सवार और पैदल सायलेकर आयेहो और तुमभी जैसे बहादुर और बलवान हो वह भी जगत में प्रसिद्ध है जब तुम उसको मारलेना या पकड़ लेना तब हम तुम्हारी-प्रशंसा करेंगे और तुमभी ऐसी २ बातें कहना और अभी तो मार्ग के थके थकाये आयेहो थोड़े दिन तक आराम करलो तब हम तुम दोनों मिलकर देखेंगे तब कारननेनाराज़होकर कहाकि हम तो सिपाही हैं हमको क्या सुस्ताने का कामहै केवल इतनी रात्रि व्यतीत हो जाने दीजिये सवेरे सवार होकर आप दूरसे तमाशा देखिये हम खड़ी सवारी क़िला ख़ाली करालेतेहैं या नहीं यह कहकर अपनी सेना में तबलजंग बजवानेकी आज्ञादी और आप युद्ध का सामान करने लगा और तुरन्तनफीरी, क़ुनजनफ़री, गावदुम, शेरदुम, कोसहरबी बजनेलगे तब सिपाहियोंने तबलजंगका शब्द सुनकर जाकर अमरू से कहा उस-

मैं भी यह आज्ञादीकि तबलसिकन्दरी बजेकि इसका शब्दसुनकर कुछउसके भी कान खड़े हों इसीतरह से सब रात्रि दोनों सेना में तबलजंग बजा किया और पहरे फिराकिये प्रातःकाल होतेही हरमर और जोपीन जो अमरू के हालसे आगाह थे क़िले सदूर अपनी सेनालेकर खड़े हुये कि हम पर और हमारी सेनापर किसी तरह का दुःख न होवे और कारनअपना दलेरीका फलपावे परन्तु कारनने अपनी सेना के चारभाग करके घोड़े दौड़ाते हुये जाकर क़िले को चारों तरफ से घेरलिया जब अमरूने देखाकि बड़ी सेना क़िलेके चारोंतरफ आगई और बड़ी बहादुरी देखा रहीहै तब सरदारों को बुलाकर आज्ञादीकि आज शत्रु बड़ी सेना लेकर आया है आज तुम लोगों का भी इम्तिहान् है देखें कौन जवांमरदी और बहादुरी देखलाता है उचितहै कि सिवाय कदम आगे बढ़नेके पीछे न हटनेपावे चाहे वहीं मरजावे यह आज्ञा पातेही उसी स्थानपर मुक़ाबिलने अपने बारह हजार तीरन्दाजों को तीरचढ़ाने की आज्ञादी और लेकर आगे पड़कर तीरका छोड़ना शुरूकिया तो एकएक बार२ पांच २ मनुष्योंको मारा एक सायतभरमें कई हजार सिपाही मारे गये और जो शेष रहगये थे वे उलटे पीछे को भागे और फिर युद्ध का नामतक भी न लिया दूसरी तरफसे पत्थर फेंकने वालोंने जो पत्थरके टुकड़े काटे हुये चरखियों पर घुमाकर मारने लगे तो एकबारगी दश दश लोट जानेलगे इसी तरहसे कई हजार मारेगये और बाक़ी व्याकुल होकर उलटे पैर फिरे और तीसरी तरफसे बरकन्दाजों ने इसी प्रकार से मारकर हटादिया और चौथीतरफसे आतिशबाजों ने ऐसा आतिश का मेह बरसाया कि कई हजार मारेगये और शेष भागगये और इसी प्रकार से कारन की कई सहस्र सेना मारी गई और घायल हुई परंतु तिसपर भी कारनफ़ौलगरदन ढालसे अपना मुंह बचाता हुआ क़िलेके दरवाजेपर आपहुंचा और प्राणका न भरोसा करके क़िलेका दरवाजा तोड़ने लगा अमरू यहहाल देखकर व्याकुल होगया परंतु थोड़ी समयके पीछे सरदारोंकोबुलाकर आज्ञादी कि जाकर दरवाजेपर छिपे खड़ेरहो जिससमय वहदरवाजातोड़कर हाथ भीतर खोलने को डाले उसीसमय हथियार पकड़ खींचलो अच्छीतरह से मारो कोई प्राणजानेका न डरे इसमें ईश्वर सहायहोंगे सबलोग एक चित्तहोकर उससे वरमांगो जो आकर सबकी सहायक भेजेतो निस्सन्देह बिजय होगी नहीं तो केवल मरने और मारनेके और कोई उपाय नहींहै ज्योंही सबलोग एकचित्त होकर ईश्वरका नाम लेनेलगे थे कि सामने से एक सेना आते दिखाई पड़ी इतने में अमरूने सबसे कहा कि तुम्हारी मनसा पूरीहुई किईश्वर ने सहायता के लिये भेजा और भीचेझुकार कहनेलगा देख तेरेप्राणका गाहक आपहुंचा वह अभी तुझे मारकर नर्ककुण्ड में पहुंचावेगा तब

उसने शिर उठाकर देखा तो चालीस निशान दिखाई दिये उसको देख कर तो वह भी व्याकुल होगया इतने में एक नकाबदार अपने घोड़े को कुदाकर खन्दक पार आकर उसके सामने खड़ा हुआ तो सबलोग डर गये पूछा कारनफीलगरदन और अमरू इस क़िले में कौन है और तू क़िले के दरवाज़े पर क्यों खड़ा है कारन ने कहा इस क़िले में जात का मुसल्मान मुजरिम बादशाह नौशेरवां का है और इनको न कुछ डर है न पाप है क़िले का दरवाज़ा तोड़कर माराचाहता हूं अब आप बतलाइये कि कौन है और किसको डराता है नक़ाबदार बोलों मैं मुसलमान की सहायताकेलिये यह सेनालेकर आयाहूं सो पहिले हमसे युद्ध करलेव तब दरवाज़ा तोड़कर क़िलेके भीतर जाना और जब हममारेजांय तो उनसे बदलालेना कारन ने कहा भला तू लड़का होकर मेरी तलवार की वार कब सम्हालसकेगा तब नकाबदार ने झुंझलाकर कहा ऐ पापी तू क्या बकता अभी खन्दक पार आकर तुझे दिखलाऊंगा तब तो कारन लज्जित होकर कूदकर खन्दक पार खड़ा हुआ तब नकाब ने कहा ला अपनी वार चला अभीतो तेरे आनेका मजा चखाताहूं तब तो कारनने क्रोधकरके एक बरछी उसके ऊपर चलाई बरछी को आड़कर एक तलवार अपनी कमरसे निकालकर उसके शिरपर चलाई कि नेत्रों में अंधियारी छागई तिसपर भी उसने एकतलवार चलाई परंतु उसकी तलवार ने दम न लेनेदिया शिर से काटती हुई घोड़े के तङ्गतक पहुंची कारन चार टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना ने यह हाल अपने सरदार का देख कर चारों तरफ से कारन को आकर घेर लिया नक़ाबदार की सेना नेभी तलवार मियान से निकाली तलवार चलनेलगी अमरू ने देखा कि नक़ाबदार के पास केवल चालीसहज़ार सेना है और हरमरके पास पौनेदोलाख इससे अपनी सेनाको भी क़िले के बाहर निकाल कर नकाबदार कि सहायता के लिये भेजदिया तब उस दिन ऐसा युद्ध हुआ कि सत्तरहज़ार सेना हरमर की मारीगरी और नक़ाबदार की सेना में किसी के एक हलका घाव भी न लगा और हरमर की सेना व्याकुल होकर भागगई तब अमरूने नक़ाबदार से पूछा कि आपका क्या नाम और निशान है अपना हाल बतलाइये कि हमज़ा जिससमय परदेक़ाफ से आवेंगे तो आपका सबहाल उनसे कहेंगे कि इस समय क़िले के तोड़ने और हमलोगों के मारेजाने में कुछ सन्देह नथा परंतु आपने आकर हमलोगों का प्राण बचाया नक़ाबदार ने कहा जिस समय हमज़ा आवेगा वह खुद मेरा नाम और निशान जान लेंयगे अभी बताना कुछ अवश्य नहीं हमको कुछ अपनी नामवरी की आवश्यकता नहीं है तुम प्रसन्नता के साथ क़िले दारी करो और किसी प्रकार से अंदेशा न करो जिस समय प्रयोजन

पड़ेगा उसी समय हमको ईश्वर तुमारी सहायत के लिये भेजेगा यह कह कर नक़ाबदार तो जिस तरफ से आया था उसी तरफ यह कह कर चला गया और अमरू सब जिन्स खेमा और डेरा आदिक लूटकर अपने क़िलेमें दाखिल हुआ और ईश्वर की कृपासे उसको सब तरह से आराम प्राप्त हुआ अब थोड़ासा वृत्तान्त हरमर का सुनिये कि वह जो नक़ाबदार से विजय न पाकर भागा तो बारहकोस तक भागता चलागया और कहीं एक दमभी आराम न किया उस स्थानपर ठहर कर बख़तियारक की सलाहसे एक विनयपत्र बादशाह को लिखा कि हमको इस प्रकार से दुःखपड़ा है कि नतो हमारेपास वस्त्र है न खेमा आदिक रहने को है तब नौशेरवां ने एक पहलवान नामी के साथ डेरा और खज़ाना बेटेके वास्ते रवानाकिया और एक रुक़्क़ा भी लिख कर दिया कि इस क़दर रुपया तुम्हारे पास भेजाहै और थोड़े दिनके बाद बहुतसी सेना और खज़ानाभी तुम्हारे पास भेजते हैं ख़बरदार अमरू का पीछा किसी तरह से न छोड़ना हरमर को बादशाह के पत्र के पढ़ने से धीरज हुआ चालीस सहस्र गिरे पड़े सिपाही बटोर कर फिर अमरूके क़िलेके समीप आकर डेरा गाड़करपड़े अब मुसल्मानी सेना का वृत्तान्त सुनिये कि जब क़िलेमें ग़ल्ला बाक़ी नरहातो सब सेना ने मिलकर आदी अकरब से कहा कि ग़ल्लातमाम होचुकाहै जोअब भोजनको नमिलेगातो हमलोगोंका भीकाम तमाम होजायगा अब जोअन्नहै वह चारिदिनसे अधिक नहोगा फिर सबलोगभूखों मरेंगे इससे पहिले चलकर अमरू से कहना चाहिये आदीने कहा तुम सब लोग आवो तो हम भी साथ चलकर अमरू से कहैं और जो मैं अकेला जाकर कहूंगा तो उसको विश्वास न आवेगा और जानेगा कि कुछ मेरा प्रयोजन है वृथा मुझ से नाराज होगा तब सब सेना आदी के समीप आई और वह भी साथ होकर अमरू के पास गये और सब वृत्तान्त विनय करके कहा यातो ग़ल्ला मंगवाया जावे या क़िला खोल दीजिये कि हमलोग जाकर शत्रुकी सेनापर धावा करके यातो मारें या मरजांय अमरू ने सेना से कहा कि अभी जो चारदिन के वास्ते है उसको खावो और ईश्वर का भजन करो मैंने खेत बोया है उसमें बहुत रुपया खर्च किया है थोड़े दिनमें उसमें बहुतसा ग़ल्ला पैदाहोगा सेना जाकर अपने स्थान पर बैठी अमरू के कहने का विश्वास जाना अमरूने थोड़ी देरके बाद एकछलसोचकरबहरूपिये वस्त्र पहिनकर उठा और एक तरफ़ की राहली और सेना को होशियार करके एक पहाड़ के दरमें गया और जंबीलपर हाथ रखकर करामात तलबकिया तो उसका चालीस गज का क़द होगया और दो हाथ की दाढ़ी सुफ़ेद बन गई तब अपनी खड़ाऊं पहिन कर हरमर को सेना की तरफ

बकता हुआ चला और बगल में एकशेर की झोली डालली इसीतरह चारोंतरफ देखतेहुये जोपीन के खेमे के समीप जानिकला तो अमरूका क़द और सूरत देखकर बड़े आश्चर्य में होकर बहुत डरा क्योंकि उसने कभी ऐसा मनुष्य न देखा था कांपते २ पास आकर सलाम कर बड़ी आधीनता के साथ हाथ जोड़कर पूछने लगा कि आप कहां से आते हैं और इसतरह किस प्रयोजन से आये हैं और सेना की तरफ को क्या आप बार बार देखते हैं अमरू ने कहा तूकौन है कि पूछता है तुझ को पूछने से क्या प्रयोजन है और तेरा क्या नामहै उसने कहा हरमर की सेना का सरदार और बादशाह नौशेरवां के दामाद का भानजा कनार काबुली करके प्रसिद्ध हूं और बादशाह की बड़ी कृपा रहती है अमरू ने कहा मेरा नाम सादजुल्माती है और मैं सिकन्दर जुल्माती बादशाह जुल्मातका छोटा भाई हूं और इसतरफ एक बड़े प्रयोजन के लिये आयाहूं कि जो हमज़ा नामी मनुष्य शाहपाल बादशाह परदे काफ की सहायता को गया था वहां अफरेत नामे देव ने युद्ध करके मारा गया है उसीकी हड्डियां शहपालने हमारे भाई के पास एक चमड़े की थैली में रखकर भेजी थी कि तुमारे राजसे मनुष्यों का देश मिला है तुम इसको नौशेरवां बादशाह के पास भेज देना कि वह इस की मिट्टी खार्थ करदेवे सो यह बहुत दिनों से रक्खी थीं कि कोई मनुष्य उसतरफ से आवे तो भेजदेवें परन्तु अबतक कोई मनुष्य इसतरफ को आने वाला न मिला तो भाई ने हम से कहा कि लेकर जाओ तुम को बड़ा पुण्य होगा इस कारणसे मैं उसकी हड्डियां लेकर आया हूं और इधर उधर देखता हूं कि यही मदायन का क़िलाहै और हमज़ा की यहीसेनाहै या नहीं इसीसन्देहमें कई दिनोंसे व्याकुल इधरउधर घूमताहूं किनारइसहालकोसुनकर अतिप्रसन्नहुआ औरकहनेलगा कि हज़रत यह नौशेरवांके दामाद और बेटोंकीसेना है चलिये आपको ले चलकर मुलाक़ात कराढूं वह बोला इससेक्याउत्तमहै अच्छा बस दो नेत्र चाहता है कनार ने उसको अतिप्रसन्नता के साथ जोपीन के समीप ले आकर सब वृत्तान्त बयान किया जोपीन उसको अति प्रतिष्ठा के साथ सनमुख होकरजवाहरकी कुरसीपर बैठाल कर सब वृत्तान्त पूछनेलगा तबउसनेजो किनार से कहा था वही फिर बयान किया जोपीनने उस पर बड़ीकृपा करके कहा कि कहांहै वह थैली मुझेदीजिये और मुझसे उसकी रसीद लीजिये मैं यहसब वृत्तान्त लिखकर वह थैली बादशाह के समीप अति शीघ्रही भेज दूंगा अमरू ने वह थैली अपनी झोली से निकाल कर जोपीन को दिया और उसने कहा कि आपने एक बड़ा भार मेरे सिर से उतारा अबआप उसको बादशाह केपास भेजदीजिये जा मैं अब जाताहूं तब जोपीन बहुत प्रकार से कहने लगा कि आप

कुछ दिवस यहां वास कीजिये कि मार्ग की थकावट भी दूर होजाय और हम लोगों के ऊपर कृपा कीजिये परन्तु उसने न माना वहां से चलकर अपना असली स्वरूप बनाकर क़िले में आया तब सरदारों ने फिर जिन्स के लिये कहा अमरू ने कहा कि बीज बो आयाहूं दो तीन दिन में जाकर काट लाऊंगा तब तुम लोग अपने आराम से बसर करोगे जोपीन का हाल सुनिये कि उस थैली को लेजाकर हरमर जाफ़रांमर्ज को दिखला कर सब वृत्तान्त बयान किया हरमर यह हाल सुन कर अति प्रसन्न हुआ परन्तु बख़्तियारक हंसकर बोला कि मुझे अमरू की चालाकी मालूम होतीहै कि उसके क़िलेमें ग़ल्ला नहीं रहा है इसीसे वहयह जाल तुम लोगों परफेंक रहाहै और जो हमज़ा मारा गया होता तो निश्चय है कि परीजादें आकर अमरू को खबर देते और यह तो बालीस हाथ का मनुष्य था परन्तु अमरू हजार गज तक कदवना सकता है जोपीन ने कहा कि इस पर चार सौ बादशाह काफ की मोहरें हैं क्योंकर तेरा कहना मानें बख़्तियारक ने उत्तर दिया कि मुझे तो सत्य नहीं मालूम होता और तुम जोचाहे वहकहो तब जोपीन ने कहा अभी चुप रहोमैं क़िलेसे हाल मंगवाता हूं वहां जो मालूम होगा वही ठीक जानना उसी समय सिपाही को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम लोग जाकर क़िले के चारों तरफ घूम कर देखो कि अमरू और उसके सरदार लोग किस हालतमें हैं प्रसन्न हैं या हमज़ा के मरने के कारण सन्देहमें हैं अमरू का हाल सुनिये कि उसने उसी दिनसे नौबत का बजाना बन्द कर दिया था और क़िले में सन्नाटा होरहा था जोपीन के सिपाही तीन दिन तक क़िले के चारों ओर फिरा किये न तो नौबत बजते सुना न और कोई प्रसन्नता का कार्य्य होने पाया नहीं तो सदैव पांच बार नौबत बजती थी और हर एक मनुष्य प्रसन्न रहते थे यह सब हाल सिपाहियों ने आकर जोपीन से कहा बख़्तियारक ने कहा जो यह हालहै तो अवश्य करके कुछ हुआहै यह सुनकर हरमर जाफरांमर्ज बखतियारक जोपीन और सब सरदारों को ईदकी तरह खुशी होगई और सब दुःख दूर होगया अमरू ने उसी दिन आधीरात्रि को सब सेना से कहा कि तुम लोग जोरसे चिल्लाकर रोवो कि हाय साहब किरां हाय साहब किरां इसी तरह से सब सेना आधीरात्रि को चिल्लाकर कहने लगे और हरमर जोपीन बखतियारक तो कान लगाये थे इन लोगों का रोना सुन कर अति प्रसन्न हुये और डंका खुशी का बजवाने लगे और सब लोगों को प्रसिद्ध हुआ कि अमीर मरागये उसी दिन अमरू रोते पीटते सिरपर राखडाले हुये जोपीन के डेरे के समीप जाकर चोबदारों से कहा कि शाहजादे को खबर देव कि अमरू आपकी मुलाक़ात को आयाहै चोब-

दारों ने जाकर जोपीन से कहा कि अमरू सिर पर खाक डाले नंगे पैर आपको मुलाक़ात को आया है जोपीन ने कहा उसको हमारे पास ले आवो अमरू जाकर उसके पैरों पर गिर पड़ा जोपीन ने पूछा यह क्या हाल है कौनसा दुःख तुझ पर पड़ा बतला तो अमरू ने रोकर कहा क्या कहूं अब मैं बेखामी का होगया और मेरा सब सामान आराम का खोगया पांच दिन हुये कि परीज़ादों ने आकर हालकह दिया कि हमज़ा कोहकाफ़ में अफ़रेत देव के हाथ से मारा गया चार दिन तक तो मैं छिपाये रहा परन्तु कल सब पर जाहिर होगया उसी समय से सब छोटे बड़े दुःख से दुखी हो रहे हैं और क़िले में हर एक प्रकार से तहलका पड़ा है इस कारण से अब मैं आप के समीप आया हूं कि मलका को तो आपको सौंपदूं और मैं जाकर किसी पहाड़ पर सिर टेमार कर मरजाऊं और शहज़ादे के पास मैं मुंह दिखलाने के लायक़ नहीं हूं कि उसको समीप जाऊं क्योंकि हमज़ा के साथ रहने से कोई ऐसी बुराई और बेअदबी नहीं है जो मुझसे न हुई होगी और अब हमज़ा ऐसा मित्र कहां पाऊंगा कि उसके पास जाकर रहूंगा इससे मरना उत्तम है जोपीन ने अमरू को गले से लगा कर कहा ऐ अमरू कहां तेरा ध्यान है मैं तुझे अपने गले का तावीज़ बनाकर रक्खूंगा किसी तरह से तेरी सहायता करने से उठा न रक्खूंगा अमरू ने कहा मुझे इससे भी अधिक आपका भरोसा है कि आप बादशाही कुल के हैं परन्तु बख़तक और बख़ुतियारक की शत्रुता से डरता हूं कि ऐसा नहो कि आपको बहकाकर मुझ से नाराज़ करादेवें और अपनी कार गुज़ारी दिखावें जोपीन ने कहा वाह क्या करसक्ता है जो कोई तुम्हारी तरफ़ बुरी दृष्टि से देखेगा उसको उसी समय में मारडालूंगा तुम जावो और अति शीघ्र ही मेहरनिगार को मेरे पास ले आवो अमरू ने कहा कि मैं तो अभी जाकर लाता परन्तु सरदार सेनाके कहेंगे तुमतो मलका को देकर शहज़ादे से अपने प्राण की रक्षा करा लोगे और हम लोग हर प्रकार से दुःख उठावेंगे इस कारण वे लोग न लाने देवेंगे जोपीन ने कहा तुम जाकर उन लोगों से कहोकि हम उनको हमज़ा से अधिक मानेंगे समुझाकर हमारे पास लावो अमरूने कहा वे लोग मेरे कहनेपर यक़ीन न करेंगे आप एक पत्र सरदारोंके नाम लिखदीजियेकि हम ले जाकर उन लोगोंको देकर साथ ले आवें जोपीनने कहा एक क्या दश पत्र कहिये लिखदेवें उसी समय क़लमदान मंगवाकर एक पत्र लिखकर अमरूको दिया अमरू उस पत्रको लेकर अपने क़िले में आया और उस पत्रको सरदारोंको देखाकर कहाकि अब खेतपका है काटने वाला चाहिये अब तो पहिले चलकर मेहमानी खावो फिर देखलिया जावेगा सब सरदार अमरू के साथ हुये केवल मुक़ाबिल

मुक़बिल चालीस सहस्रसवार लेकरक़िलेकी रक्षाको रहगया और सब लोगोंकी जबान देही अपने ऊपरकी अबजोपीनका हालसुनिये कि उसने जाकर हुरमुज़ जाफ़रांमर्ज से यह सब हत्तान्त कहा बख़्तियारक सुनकर बोला कि जो ऐसी बात हो तो बड़ी ईश्वर की कृपाहै परन्तु जो अमरू सब सरदारों के साथ आवे तो अवश्यकरके कोई न कोई दुःख हम लोगों पर डालेगा वह बड़ा चालिया और मक्कार है जो थोड़ीसी देर भी क़िलेमें सांस पावेगा तो बड़ादुःख देगायह कहकर जोपीनको समुझाने लगाकिजोपीन वहचालाक फरेबी है उसकेफरेबमें तुमन आना और उसकी चालाकीसेधोखा न खाना निश्चयकरकेजानोकिउसके किले में जिन्स नहीं रही इसी कारण वह अब अपनी युक्तिकर रहा है कि आपको मिलाकर हम लोगोंको दुःखदेवे और अपना कार्य्य पूर्णकरलेवे जोपीन ने क्रोधितहोकर कहाकि ऐ बख़तकाटू चुपरहमें जानूंकि अमरू जाने वह पहिले से कह चुकाहै कि बख़्तियारक के मारे यह न होने पावेगा बख़्तियारक ने कहा यह क्यों न वह कहे मेरा और उस का एकही मनहै अच्छा मैं कुछ न बोलूंगा तुमजानो और अमरूजाने उससे क्या कहे जो किसी का कहना नहीं मानता जब कुछ बुरा कार्य होते देखूंगा उसी समय यहां से चला जाऊंगा जोपीनने डेरेमें जाकर सामान मेहमानी का बटोरा और सिपाहियोंको भेजाकि जाकर देखो अमरू सबका मेहरनिगार को लेकर आताहै या नहीं सिपाहियों ने जाकर देखा अमरू चार सौ पहलवान साथ लिये जिनको देखकर डर मालूम होता है आता है सिपाहियोंने आकर जोपीनसे कहाकि चार सौ पहलवान लिये आताहै जोपीन ने सुनकर शाहज़ादे के पासजाकर कहाकि अमरू चार सौ पहलवान मेरी आज्ञामें करने के लिये लेकर आता है मालूम होताहै कि सत्यहै बख़्तियारक तो सुनतेही सुन्नहो गयाकि देखें क्या होता है अमरू का इतने मनुष्यों के साथ आना बेढब है इतनेमें अमरू साथ सरदारों के जोपीन के डेरेके समीप आपहुंचा तब जोपीन अगवानी लेकर सरदारों को अपने डेरेमें ले आकर बैठाला और अमरू की कुरसी अपने समीप बिछवाई और सब लोगों से बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सनमुख हुआ और थोड़ी समय के पश्चात् साकियोंको आज्ञा दी कि सब लोग शराब ले आकर सब सरदारों को पिलवावो इतनेमें आदी अज़्ज़रब बोला कि ऐ शहज़ादे एक मसला है कि प्रथम भोजन उपरान्तवार्त्तासे पहिले भोजन कराइये पश्चात् शराब पिलाइये तबशराब भी स्वाद देयगी आज्ञा होतेही बावरचीने खाना सामने लाकर रक्खा और सबसे पहिले आदी अज़्ज़रबको दिया तब उसने कहा और रखदेव काबल ने क्रोधकरके कहाकि केवल आपही को परसूं या और कोई है तब आदी ने कहा पहिले मैं अपना पेट भरलूंतो और को देना

काबलने आदीके आगे ढेर का ढेर रखदिया यहांतक कि सब उसी के आगे रखदिया और आदी खानेलगा जब सब खागया तब उठकर खड़ा होगया जोपीन बैठा देखरहा था बोलाकि और कुछ मंगवाया जावे या नहीं आदी ने कहा अब तो खाचुका परन्तु मुझको साधूका शापहै कि कितनाही तू खायगा तेरा पेट न भरेगा और खाने से हाथ न उठावेगा जोपीन ने और खाना मंगवाकर आदी के आगे रखवाया आदी वह भी सब चख गया और पानी तक न पिया जोपीन ने फिर पूछाकि और मंगवायाजावे या आप खाचुके आदीने कहा जो क़लिया रोटियां हों तो थोड़ासा और मंगवाइये जोपीन ने कहा आप खूब खाइये मेरे यहां से भूखे न जाइये यह कहकर कई मनकी रोटी और क़लिया मंगवाई उसको भी आदी चखगया जोपीन ने फिर चाहा कि पछे इतने में बख़्तियारक ने जोपीन से कहा भला तू इसका पेट भर सकेगा और हरमर ने भी आंख मारी बख़्तियारक कहने लगा कि असमहने यही तो युक्तिकीहै कि सबजिन्स चखकरखालेवे जब उसकीसेना भूखों मरने लगेगी तो आपही भाग जायगी तब तो जोपीन ने कहाकि अभी तो खाना होरहाहै कहिये तो जबतक बाजार से कुछ मंगवाऊं आदीने कहा मैं ऐसा मरभुक्खा भी नहीं हूं कि आपसे बाजारसेमंग-वाऊं उठकर हाथ धोकर पलंगपर जाके लेटगया तब जोपीनने दूसरा खाना बनवाकर और बाक़ी लोगों को खिलवाया जब सब खा पी चुके तब शराब मंगवाकर पिलवाने लगे और नाच रंग की भी सभा गरम हुई और जब सब लोग प्रसन्न हुये जोपीन ने कहा अब मलका मेहर-निगार के लेआने में क्या देरीहै असमहने कहा सरदार लोग कहतेहैंकि इसतरह से मलका मेहरनिगार को देना उचित नहीं है शहजादा बिवाह का सब समान करे किले में चलकर बिवाह करै तब जोपीन ने कहा इसमें क्या देरी है असमह ने कहा कुछ रुपया चाहिये क्योंकि इस में सब रुपयेही का काम होता है जोपीन ने कहा सब मौजूद है जो आप चाहिये वह ले जाइये और अपने दिल से इसका सामान कीजिये तब असमह तीन दिन तक साथसरदारों के जोपीनके मेहमान रहे और सहस्र रुपया असमह को दिया और थोड़ा २ रुपया सरदारों को भी दिया सब लेकर अपने क़िलेमें आये और क़िले को अच्छीतरह से चनवाकर छः महीने के लिये जिन्स मोललेकर फिर उसी सामान से बैठे जोपीन का हाल सुनिये कि सात दिनतक उबटना लगवाया किया और मोटे होने के लिये अच्छे २ भोजन किया किये और हर प्रकार से नाच और रंगमें मज़बूत रहे और सब सेना को मेहमान रक्खा और अपना मन मलका के पाने को प्रसन्न रक्खा जब सातदिन व्यतीत होगये और असमह एक दिन भी जोपीनके पास न आया तब

तो व्याकुल होगया बखतियारक ने ज़ोपीन से पूछा अब तो लगन चढ़ चुकी अब विवाह कब करने को बरात लेजाइयगा कि मलका मेहर निगार को लाकर मढ़ेउड़ाइये ज़ोपीनने तब बहुतसी गालियां बख़्तियारक को दीं और सिपाहियों को अमरू के पास भेजाकि जाकर देख आवो अब क्या देरीहै वहां तो सब सामानबटोराहै और सात दिनभी व्यतीत होगये हैं जब सिपाही वहां गये तो देखाकि क़िलाभी पहिले से चुनाहै और सब सरदार लोग भी अपने २ कामपर पहरा दे रहेहैं और अमरू उसीतरहसे शामियाने के नीचे कुरसी जड़ाऊ पर शाहाना लिबास पहिने बैठाहै सिपाहियों ने दूरसे जाकर सलामकिया और ज़ोपील का संदेसा कहा तब अमरूने जवाबदियाकि अब तो छः महीने तक तुम्हारी और हरमर की सेना क्या मालहै जो ग़मशेद और अफ़रासियाभी क़बुर से जीकर युद्ध करने को आवे तो हम भी कुछ नहीं डरते हैं यह सुनकर सिपाही वहां से उलटे पैर फिरे और सब हाल आकर ज़ोपीन से कहा तबतो ज़ोपीन अतिलज्जित होकर दांत चबाने लगा कि इसचालाकने मुझको बड़ा धोखादिया और वहां से लाचार तकलज्जाऊई परन्तु क्याकरैं चुपहो रहा न तो उससे बदला लेसक्ता था न दुख दे सक्ताथा अब अमरू का वृत्तान्त सुनियेकि क़िलेको बन्दकिये हुये दरवाज़े पर बैठकर चारों तरफ़ की सैरकर रहाथा कि संयोग से एक वनकी ओर दृष्टिगई तो देखाकि बड़ावनहै और वहां बहुतसे जीव वास करते हैं दारान से पूछाकि इस वनमें व्याघ्र आदिक बहुत होंगे उसने कहा केवल व्याघ्रकई सहस्रहोंगे और इससे अधिक और किसी वनमें व्याघ्रनहीं हैं और पक्षी आदिक भी इसक़दरहैं जैसाकहीं न होंगे अमरू को जोचालाकी सूझी तो सिपाहियोंको बुलाकर आज्ञादी कि इसवनसे लकड़ी काटकर तीनोंतरफ़ जलाकरो और केवल एकतरफ़ से हरमर की सेनामें जाने का रास्तारहने देव और वृक्षोंके ठूंठोंमें नफ़्ज़ रोगन लगाकर अग्नि लगादेव कि सब लोग तमाशा देखैं सिपाहियों ने उसकी आज्ञानुसार वैसाही किया सब सिपाहियोंने दो पहर रात्रि गये जाकर उस वनमें तीन तरफ़ घेर कर ठूंठों में रोग न लगा कर अग्नि लगादी सब जानवर अग्निसे व्याकुलहोकर एक स्थान पर बटुर कर हरमर की सेना की राहसे भागे जो सामने मनुष्य पड़ा उसका शिकार किया इसी तरह से सैकड़ों मनुष्य मारे गये और सब व्याकुल होकर इधर उधर फ़िरने लगे और ज़िरा पहिन कर घोड़े कसने लगे तो कोई किसी को पहचान न सके आपसमें युद्ध करनेलगे इस बिचार से कि अमरू आकर छापा मारेगा ऐसे सबरात्रि आपसमें कुछ युद्धकर के और कुछ व्याघ्रों से मार खाकर बराबर होगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक साथ सरदारों के जो इस आफ़त

से बचे ये लोथों को देखने के लिये गये तो देखा कि सब अपनीही सेना कटी पड़ी है और कहीं जंगल के जानवर भी कटे पड़े हैं और दूसरी तरफ के एक भी नहीं हैं तो जोपीन हरमर और सरदार लोग देख कर बड़े आश्चर्य में हुये कि क्या माजरा है बख़्तियारक ने कहा यह अमरू की एक छोटीसी चालाकीहै कि उसने जंगलमें तीन तरफ आग लगा दी है और केवल इस तरफ को निकलने का रास्ता रक्खा सब जानवर अग्नि की गरमी से भागेहैं वे इसीतरफ होकर आप की सेना पर आगिरे हैं और उनहीं से सब मारे गयेहैं यहकह कर सिपाहियों को जो तालाश करने को भेजातो सत्य पाया अमरू का हाल सुनिये कि उसने जो दूरबीनलगा कर देखा तो मालूम हुआकि हरमर की सेना बड़े दुःख में है तब उसके दिलमें यह बात समाई कि आज रात्रि को शत्रु की सेनापर छापा मारे आदी अकरबको बुलाकर कहा उसने कहामैं आपका सेवकहूं जो आज्ञाहोवे वही करूं अमरूने सरदारोंसे सब हाल कहकर आदी से कहा कि तुम जोर से चिल्लाकर लन्धार २ पुकारना तब तो सब सरदार लोग अपने कील कांट से होशियार हो गये और जब आधी रात्रि बीती अमरू अपनी सेना को लेकर क़िले से बाहर आया और शत्रु पर छापा मारा आदी ने तलवार खींच कर पुकारना शुरू किया कि लन्धौरपुत्र सादान कहां है हरमर जोपीन आकर मेरी तलवार की चासनी चक्खें अपना सिर मेरे पैर पर रक्खें तब तो बहुत से लोग जो डरपोकने थे वे घोड़ोंके आगे जो घास के गट्ठे रक्खे थे उसमें नेचदबाकर छिपगये और बहुतसे लोग खेमे में जा छिपे सब इधर उधर प्राण बचाने के लिये छिप गये हरमर जोपीन भी जागकर बखतियारक से पूछनेलगे कि लन्धौर इससमय कहांसे आया उसने कहा यह भी अमरू की चलाकीहै और लन्धौर कहां है हजारों सेना हरमर की मारीगई चारघड़ी रात्रिबाकी थी कि अमरूके सिपाहियों ने हाल दिया कि ऐ भाई जोपीन के जहांदार काबुली और जहां गीरकाबुली बादशाह की आज्ञासे हरमर की सहायता के लिये बड़ी भाड़ी सेना ले कर आते हैं कि सामने से देखिये कि गरद के मारे दिखाई नहीं देते हैं अमरू ने नेत्र उठा कर देखा तो उसी तरह बहुतसी सेना आती हुई दृष्टि पड़ी तो देखतेही अमरू के भी छक्के छुट गये और कहने लगा कि आज इस सेना से बचना अति कठिन है भला मैं हमजा को क्या उत्तरदूंगा और इसमें उससे क्या कहूंगा परन्तु अमरू बड़ा युक्ती और प्रतापी था जब कोई युक्ति न चल सकी तब ईश्वरको स्मरणकरने लगा चालीस बार स्मरणकरनेके पश्चात् तीनसौ पहलवान आपहुंचे तो उसी समय डंका बजवाकर अमरूने पुकारा कि ओ पहलवानों आज शत्रुकी सेना एक भी न बचे ऐसी बहादुरीसे अड़ कर युद्ध करना इसमें प्रह-

लवानों का काम होता है और यह जो सामने गरद दिखाई देती है यह सेना बहराम बादशाह खाकान और चीन की मेरी सहायताके लिये आरही है शत्रु की सेना यह वृत्तान्त सुनकर अति व्याकुल होगई और कहने लगी कि इससे प्राण बचना दुर्लभहै यह विचार करके सब सेना भागी और किसी का पैर युद्ध में न अड़ा यह हाल देख कर बख्तियारक डंका बजवाकर सेना से कहने लगा कि थोड़ी समय और ठहरो प्रातःकाल हुआ जाता है कौन जानता है जो यह सेना हमारीही सहायता को आती हो परन्तु किसी ने उसकी बातों को न सुना सब भाग गई तब हरमर जोपीन बख्तियारक भी उन्ही के पीछे फेरने को दौड़े तब असद ने जाकर अच्छी तरहसे लूटकर अपने क़िले में आकर सब वृत्तान्त कह कर क़िले को फिर से मरम्मत करवा कर सब सामान युद्ध का करके सब सेना को आराम से बैठने की आज्ञादी और आप भी लिबास शाही पहिन कर शामियाने के नीचे कुरसी डाल कर बैठा॥

बादशाहनौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार क़ाबुली और जहांगीर क़ाबुली भाई ज़ोपीन शाहज़ादे जहंगीरका जाफरांमर्दकी सहायता को ॥

लेखक लोग लिखते हैं कि सब सेना व्याकुल हुई भागी चली जाती थी कि दूतों ने आकर ख़बर दी कि जिसको असद ने बहराम की सेना जान कर भरोसा किया था वह जहांदार और जहांगीर काबुलियोंकी सेनाहै जिसकी बराबरी करनेवाला इससंसारमें दूसरा नही है बादशाह ने शाहज़ादे की सहायताके लियेभेजीहै अब ईश्वरकी कृपा से विजय होगी इतने में जहांदार और जाहांगीर काबुली भी आ पहुंचे जोपीन से मिलकर शहजादे के पास जाकर उनको बड़ा भरोसा दिया और कहने लगेकि इतनी देर आपने अडसके कि हम पहुंचकर शत्रुको पराजय देते बख्तियारक ने कहा मैं बहुत समझाता और मना करता रहा था परन्तु किसीने मेरा कहना न माना मुझको भी लज्जित करवाया और सब असबाब भी लुटवाया और आपभी लज्जित हुये तब जहांगीर काबुली और जहांदार क़ाबुलियों ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ अब हलचलकर कड़ी सवारी क़िलेको विजय करके सब मुसल्मानों को मारकर मलका मेहरनिगार को निकाल लाते हैं यह कह कर क़िले की तरफ फिरे और ज्योंही क़िले के समीप पहुंचे असद अग्नि की वृष्टि करने लगा और अतिशबाजी बाण आदिकचारों तरफ से मारने लगा और अतिशबाजी न बढ़ सकी परन्तु जहांदार और जहांगीर ढालको मुख से लगाये हुये खन्दक पार कूद गये और चाहते थे कि बलकी लगाकर दरवाज़ा तोड़कर क़िले के भीतर जावें कि इतने में लशामदार साथ चालीस सहस्र सेना के आपहुंचा अपना

घोड़ा कुदा कर खन्दक पार होकर ललकारा कि ऐ जवान पहिले मुझसे युद्ध करले तो क़िले का दरवाज़ा तोड़ नहीं तो अभी वह गत बनाऊंगा कि सब भूल जायगा यह सुनकर वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर दोनोंकी तरफ़ तलवार लेकर दौड़े नक़ाबदारने दोनोंकी तलवारें छीन कर उनकी कमर के पटके पकड़ कर उठालिया परन्तु उन की मृत्यु न थी पटके टूट गये और वे दोनों हाथ से छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े तब सेना ने उनको उठा कर भागना उत्तम जानकर भागी और नक़ाबदार भी साथ अपनी सेना के उनकी सेनापर जागिरा और निश्चय थी कि अब सेना शत्रुकी मारी जावे कि बख़तियारकने कौट का डंका बजवा कर उस समय चला जाना अच्छा जाना तब नक़ाबदार जिधर से आया था विजय करके चलागया और शत्रु की सेना भी रोते पीटने अपने स्थान आकर उतरी और असद् अपने विजय के डंके बजवाने लगा और सब लोगोंने मुबारक बादियां दीं दूसरे दिन भंडारी ने आकर आदी से कहा कि अब क़िले में जिन्स भोजन का नहीं है तब आदी ने आकर असद् से कहा असद् ने कहा कि अब चल कर कोई दूसरे क़िले में रहना चाहिये दाराबने कहा कि यहांसे एक मंज़िलपर एक क़िलारशकगुलिस्तां है और वह ऐसा बना हुआ है कि जो बादशाह अपनी सेना लेकर आवे तो न विजय पासके और उसके स्वामी का नाम निसतान है तब असद् ने सरदारों और सरहंग मिस्री से कहा कि तुम सब लोग क़िले की रक्षा करोमैं जाकर कोई युक्ति करूंगा और जिस दिन तुमको हमबुलावें उसी रात्रिको घोड़े से लंगूर बन्दर पकड़ कर पीनसों पर बैठाकर इस्सर की सेना की तरफ़से निकलना और मलका मेहर निगार के साथ और स्त्रियों के पिछवारे के रास्ते से निकाल कर अति शीघ्रही लेकर चले आना और इस बातको कोई जानने न पावे यह कह कर असद् दो सिपाही को साथ लेकर क़िले निसतानकी तरफ़चला और किसी से अपने मनकीबात न कही दो घड़ी दिन शेष रहे उस क़िले के समीप जापहुंचा देखा तो ऐसा बना हुआ है कि ऐसा क़िला उसके समीप और कोई नहींथा चारों तरफ़ फिर कर जो देखा तो सब दरवाज़े बन्द पाये और खन्दक पनिया सोत किसी तरह से भीतर जानेका रास्ता नपाया इसी सन्देह में दोघड़ी रात्रि बीतेतक इधर उधर घूमा किया संयोग से पांच छः कुत्ते उस क़िले के भीतर से निकले और क्षुधा के मारे व्याकुल थे तब असद् ने उन कुत्तों को अच्छे प्रकारसे रोटीखिलाई जबवे अपने स्थानकी तरफ़ फिरे असद् भी उनही के साथ चला और सुरंग में घुसकर क़िलेके भीतर गया तब उस समय केवल पहरे वाले जागते थे और सब आराम से सोरहे थे तब तो असद् उनसे छिप कर एक वृक्ष जो दीवार के समीप था उसपर

चढ़ कर कोठे पर गया और सीढ़ीसे उतर कर बारादरी में गया तो देखा कि बादशाह नेसतान पलंगपर सोरहा है और खिदमतगार भी फ़र्श पर बेखबर सन्नाटे मार रहे हैं परन्तु बत्तियां शेमकी बराबर जलरही हैं चादर से सब बत्तियों को बुझा दिया केवल एक बत्तीबलने दिया और उसको पलंग के पास बैठाकर विष बेहोश करने वाला ले कर उसकी नाकमें लगाकर फूंका तो वह चिल्लाकर बे होश होगया उसको तो उसस्थान से उठवादिया और आप उसका भेष धारण कर के उसी पलंग पर सोरहा और प्रातःकाल उठकर हाथ मुख धोकर जब गद्दी पर आकर बैठा तो सरदारोंसे कहा कि आज मलका मेहर निगार नौशेरवांकी बेटी का पत्र मेरे नाम आया है कि वह मुझ पर आशिक़ है इस लिये मैंने आज उसको बुलवाया है सो उसके आने में किसी तरह से रोक न करना सब दरवाजों को खोलकर हमारे पास ले आना कि हमारी मुलाकात कर के प्रसन्नता उठावे तब बहुतों ने तो जान लिया और बहुतोंने कहा कि उसके साथ अमरू एक बड़ा मक्कार और आलिया है वह इसी तरह से क़िले को ले लेगा और आपको निकाल देगा तब अमरू ने सैकड़ों को क़ादकर लिया और दारोगाको अपने मकरसे दरवाजा खोलाकर मलकाके आनेकी आज्ञा दी और अमरू जो दो यारों को दरवाजेके बाहर छोड़आया था उनसे यह सब भेद बता आया था जब उन दोनों यारोंने दरवाजे खोलनेकी खबर पाई तो मालूम किया कि अमरू क़िलेपर काबिज होगया तब उन दोनोंने कहा कि बादशाह से कहो कि दो सिपाही मलका मेहर निगार के पास से आपको कुछ पैग़ाम ले कर आये हैं अमरू ने हाल पाकर उनको अपने पास बुलाकर एकान्तमें ले जाकर यह सब वृत्तान्त कह कर उन दोनों सिपाहियोंसे कहा कि तुम जाकर सरहंग मिस्री और सरदारोंसे कहो कि जिस तरहसे हम बता आये थे उसी तरह से आज रात्रि को चलकर यहां आवें और किसी प्रकारसे देरी न करें और अब मैं क़िले पर क़ाबिज हूं किसी तरह से डर नहीं है यह सब समझाकर उन दोनों को भेजा तबवे दोनों आकर क़िलेमें पहुंचे और अमरू की आज्ञानुसार सरहंग मिस्री और सरदारों से सब वृत्तान्त कहा तब वे लोग तुरन्तही तैयारी करने लगे और सब सन्देह दूर हो गया रात्रि होतेही बहुत से पीनसोंमें व्याघ्र लंगूर के बच्चे बांधकर जोपीनके डेरे की राहसे सिपाही साथ करके रवाना किये और मल-मेहरनिगार को उसी तरफ़ से जिधर से अमरू कह गया था लेकर सब सरदारों के साथ चले महाफाके क़िलेसे निकलतेही एक सिपाही ने देख कर जोपीन के पास दौड़ कर खबरदी कि मलका मेहर निगार को लिये जातेहैं यह हाल सुनकर जोपीन बड़ी प्रसन्नताके साथ डेरेसे

निकालकर दौड़ा और देखनेलगा एक व्याघ्रका बच्चा उसमेंबंधा देखकर चिल्लाकर भागा परन्तु सिपाहियोंको आज्ञा दी कि सब पीनसोंको अच्छी तरह से देखलो तब सब सिपाही खोल कर देखने लगे तो सबमें व्याघ्र लंगूर आदिक बंधे पाये और चिल्लाकर भगे इतने में एक सिपाही ने आकर खबर दी कि क़िला खाली मालूम होताहै यह हाल सुनतेही घोड़ा मंगा कर सवार हुआ और दौड़ा कर मेहरनिगार के महाफे तक पहुंचाया मेहरनिगार का हाल सुनिये कि वह मार्गमें जाकर महाफे से निकल कर मुखपर मेहराडाल कर घोड़ेपर सवार होकर चली जाती थी कि जोपीन उसके समीप जाकर घोड़े परसे उतर कर मलकाका घोड़ा पकड़ कर खड़ा होगया और अपनी मुहब्बतकी बातें करने लगा तब मलका ने हटा दिया परन्तु उसने न माना तब दिक्क होकर एक तमंचा निकाल कर मारा तो वह भगकर अलग खड़ा हुआ और एक तीर निकाल कर फिर मारा तोवह भगा परन्तु वह भी लगा तब चिल्ला कर भगा इसी समय में सेना भी पहुंच गई और मलका के साथ लेकर अति प्रसन्नताके साथ क़िले नेसतानीमें दाखिल हुये अमरू के शत्रुओं से हर प्रकार से इतमीनान हुआ तब जिस ने कि मुसलमान होना क़बूल किया उसके तो प्राण छोड़ दिये नहीं तो सबको मार डाला इसी तरह थोड़ी समय में सब क़िलेपर क़बज़ा हो गया तत्पश्चात् खुसरो नेस्तान के अपनी जनबील से निकाल कर सब हाल दिखाया फिर कहा कि तुम मुसल्मान न होगे प्राण दोगे उसने विचारा क़िला तो अबहाथ से जाचुका है अब सिवाय मुसलमान होने के और कोई युक्ति नहीं है कि प्राण बचे तब कलमा पढ़ कर मुसल-मान हुआ और अमरू ने अपने गले से मिलाया और कहा कि बाश तुमारा क़िला तुम को ईश्वर बनाये रक्खे मुझको तुमारे देश और क़िले से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं तो थोड़े दिनका मेहमान हूं तत्पश्चात् जहां ईश्वर ले जायगा वहां जाऊंगा अब तो हमारा आपका कुछदिन का साथ है फिर कभी मुलाक़ात करूंगा यह कहकर क़िलेको अच्छी तरहसे चारों तरफसे बन्द करके दरवाजे पर शामियाना खड़ा करा कर जड़ाऊदार कुरसियां बिछा कर बैठा और सब सन्देह दूर होगया जोपीन का हाल सुनिये कि वह घाव से व्याकुल होकर घोड़े परसे पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसका घोड़ा छोड़ कर बनकी तरफ भागगया औअपने मालिकका साथ न दिया और हरमर जाफरांमर्ज भी क़िले के खाली होने और जोपीन के पीछा करने का हाल सुन कर जहां दार काबुली और जहांगीर काबुली के साथ सेना समेत मुसलमानी सेना का पीछा करने के गये तो मार्ग में जोपीन के घायल पड़ा देखकर बड़े सन्देहमें हुये और कहनेलगे कि देखो अमरू ने कैसा दुःख इसको

दिया है आख़िरकार उसको उठाकर पीनस में बैठाकर ले गये कि उसकी दवा करके अच्छा करें तब सिपाहियोंसे मालूम हुआ कि अमरू अपनी सेना समेत किले निस्तान में जाकर रहा है तब जाकर किलेसे दूर डेराडालकर पड़े कि आतिशबाज़ी वहांतक न पहुंचसके जब अमरू ने देखा कि बड़ी भारी सेना आकर पड़ी है तब उसके दिलमें आया कि कुछ चालाकी करनी चाहिये जब जर्राह की सूरत बनकर किसबत बग़लमें लेकर जोपीनके खेमे की तरफसे जानिकला सिपाहियोंने उसको देखकर जोपीन से जाकर ख़बर की कि एक जर्राह इधर से जारहा है जोपीनने कहा कि अतिशीघ्र उसको हमारे पास लेआओ सिपाहीलोग अमरूको बुलाकर जोपीनके पास लगये उसने अपना घाव दिखलाकर सब वृत्तान्त कहकर कहा ऐजर्राह जितनीही शीघ्र तू अच्छा करैगा उतनाही अधिक मैं तुझे इनाम दूंगा और अच्छीतरह से प्रसन्न करूंगा अमरूने कहा घाव तो शीघ्रही अच्छा हो जायगा परंतु इसमें बड़ी युक्ति है जो आप थोड़ी समय के लिये दुःख उठावें तो मैं पांच पहरमें आपके घावको अच्छा करदूं जोपीन ने कहा इस दुःखको थोड़ी देरके लियेक्या करूंगा तब अमरू ने कहा जो आप की ऐसीही इच्छा है तो आप अपने नौकरों को आज्ञा देदेवें कि पांच पहर तक हम कैसेही बुलावें और चिल्लायें परंतु कोई मनुष्य समीप न आवे जोपीन ने सब लोगोंको अपने खेमे से हटादिया तब अमरूने डेरेका परदा डालकर जोपीन को उलटा टांगदिया और उस घावको छुरे से चीरकर बड़ा किया और उसमें हरताल और चूना बत्ती में लपेट कर भरकर ऊपरसे हरताल और चूनेका मलहम भरदिया तबतो जोपीन क्रोधके मारे चिल्लानेलगा बाहरके लोगोंने जाना कि जर्राह अपने कार्य्य में होगा इस समय वहां जाना उचित नहीं है और पहिले ये मना करचुके हैं आख़िर कार जोपीन बेहोश होगया तब अमरू सब असबाब लेकर डेरे का परदा काटकर बाहरचला आया वह सब असबाब लेकर अपने क़िले में आकर बैठा जब पांच पहर व्यतीत होगये तो लोग खेमेमें गये देखें तो जोपीन टंगा है और बेहोश होरहा है बड़े आश्चर्य से होकर जल्दीसे छोड़कर घावोंको धोकर काफूरकी बत्तियां उसमें लगाकरनवीन मलहम बनाने लगे फिर दूसरे दिन जब जोपीन को कुछ होशहुआ सबहाल बयान किया बख़्तियारक ने सुनकर कहा वह जर्राह नहीं अमरू था जो शाहज़ादे की ऐसीगति बनागया है इतनेमें ख़बरपहुंची कि हकीम समन्दक को बादशाह ने ख़ज़ाना और अच्छी वस्तु लेकर भेजाहै सो आया चाहता है हरदम जाफरालम ने अति प्रसन्न होकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुलीको बहुतसे सरदारों के साथ इसमानी लेनेके लिये भेजा अमरूको जो यह ख़बर पहुंची तो वह भी

फ़ौजीन के सिपाहियों की सूरत बनाकर अपने मनमें विचारा कि चल कर इसको भी कुछ अपना मक्कर दिखला कर लज्जित करूं पांच कोश तक गया होगा कि उसकी सवारी दिखलाई दी और उधरसे ये दोनों भी पहुंचे तब तीनों मनुष्य उतर कर मिले और प्यारी २ बातें करते हुये खीमेकी तरफ़ चले तब अमरूने देखा कि सिवाय सवारियोंके कुछ माल असबाब दृष्टि नहींपड़ता निश्चयहै कि माल असबाब पीछे आता होगा यह विचार कर उसी स्थानपर ठहरगया और किसीसे कुछ न कहा पहर रात्रि बीते उठ और छकड़े खज़ानों से लदे हुये पांचसौ सवारों के पहरे में आपहुंचे जिस समय वेलोग अमरू के समीप आये अमरू ने अति प्रसन्न होकर एक सवार से पूछा कि तुम्हारा सरदार कौन है और उसका नाम क्या है उसने कहा वह जो काली पगड़ी बांधे चलाआता है वही हमलोगों का सरदारहै अमरूने उसके समीप जाकर सलाम करके कहा कि मुझे शहज़ादे ने भेजा है मैं बड़ी देर से आप लोगों के आसरे में खड़ा हुआहूं और कहा है कि खज़ाना और असबाब आता है उसको रक्षा के साथ लेआना और जोरात्रि अधिक होजाय तो वहीं रहजाना सवेरे उठकर आना सबलोग बोले अच्छा तो है आज यहीं बास कीजिये सवेरे चलना होगा और किसी तरह से डर चोर आदिकका नहीहै तब सरदारने उसीस्थानपर बास करने की आज्ञादी अमरू ने कहा मैं जाकर शाहज़ादे से ख़बर करूं सबलोगों ने कहा कि उत्तम है आप जाइये अमरू जंगल में अपने यारों को बैठाये था उनके पास आकर कहारों की सूरत बना कर थोड़ासा भोजन जिसमें शराब बेहोशी मिलीहुईथी उनके ऊपर रखवाकर आप वैसेही बनकर उनके पास लेगया और उनलोगों से कहा कि शहज़ादे ने यह भोजन तुम लोगों के वास्ते भेजा है इसको भोजन करो सरदार ने लेकर सबको दिया और आप भी भोजन किया और किसी तरह से संदेह न किया और कोई उसके खाने से न बचा जब सबके सब उसके खानेके पश्चात् बेहोशहुये तब अमरूने सब खज़ाना और असबाब संदूकों में से निकाल कर जनबील में रक्खा और कंकर पत्थर जानवरों की हड्डियां भरकर बन्दकरदीं सब असबाब और खज़ाना लेकर अपने क़िले में आराम से आकर बैठा प्रातःकाल जब वेलोग चैतन्य हुये और सब ले कर वहां से चलेतो पहर दिन चढ़े शाहज़ादे की सेना में आकर पहुंचे तब हरमर जाफ़रां मर्दने संदूकों को मंगवाकर हकीम मनदूक से कुञ्जीलेकर खोला तो उसमें खज़ाने सौग़ात के बदलेमें कंकर पत्थर मरे जानवरोंकी हड्डियां भरीथीं देखकर बड़े आश्चर्यमेंहुआ तब बख़्तियारकने कहा कि अमरूसा चालाकभी संसारमें नहोगा यह चालाकी और मक्करमें ईश्वर की बराबरी करता है कि सेनाकी वह सूरत बनाई

बोपीनको ऐसा दुःखदिया इरसर ने पहरे वालों से पूछा कि हमको कोई मनुष्य मार्गमें मिलाया और कुछ बातचीत हुईथी उनलोगों ने कहा कि केवल वही सिपाही मिला था जिसको बोपीन ने भेजा था और उसीसे हमलोग कहकर उस स्थानपर रहगये थे और दूसरे जो आपने कुछ खानेकेलिये लेकर भेजाथा उसके साथ कहार सब होशि-यार थे तब बखतियारक ने कहा जो पहिले गयाथा वहभी और जो कहारोंके ऊपर खाना रखवाकर गयाथा वहभी दोनोंवार अमरू था इसीने यह चालाकी की है और दण्डदेने के लायक था तब शहजादों और सरदारों को बड़ारंज हुआ परंतु क्याकरैं कुछ बस नहीं आखिर कार सब वृत्तान्त लिखकर बादशाह के पास अपनी विनयपत्रीको भेजा

अफरेत पिशाच का महरिस्तान में पहुंचकर पनाहलेना अपनी माताकी मतिसे ॥

प्रथम उन वृत्तान्तो के सिवाय अब थोड़ासा वृत्तान्त अमीर हमजा का सुनाता हूं कि प्रथम बयान कारचुके हैं कि अफरेत का पिताअमीर के हाथ से बध किया गया था और अति लज्जित होकर उसके शोक में बैठकर रोदनकिया था कि एकनदी उसके आंसू से बही थी उसके पश्चात् शहपाल ने सातदिन तक उसीकी प्रसन्नता में नाचरङ्ग कराया था और इसतरह से उसने सामान किया था कि सब मनुष्य प्रसन्न हो-जातेथे आठदिन के पश्चात् अमीर ने पूछा कि इनदिनों मालूम नहीं होता कि अफरेत किस विचार में है कि वह युद्ध करैगा या नहीं जो वह युद्धकरना नहीं चाहता तो आपही डंका युद्ध का बजवाइये और उसको आप रोबदिखलाइये मैं केवल अठारहदिनका वादाकरके आया था परन्तु मुझेइतना कालव्यतीत होगया नहींमालूम क्या हाल होगा और वादेपर न पहुंचने से हरएक मनुष्य को बड़ा दुखहोगा दूसरे यह कि नौशेरवांबादशाह से शत्रुता है वह भी युद्ध करने के लिये आरूढ़ है तब शहपालने युद्धका डङ्का बजवाने की आज्ञा दी बाजेवालों ने आज्ञा पातेही बारह सौ जोड़ी सोने की और बारहसौ चांदीकी निकालकर बजाने का आरम्भ किया परन्तु नगारा सुलेमानी था उसका शब्द तीन मंजिलतक सुनाई देता था और अफरेत तो नज़दीकही था उसने भी डङ्का का शब्द सुना तो अपने यारों को बुला कर कहने लगा कि देखो भाई अभी पिताके काम काज से छुट्टी न पाई थी कि वह फिर लड़ने को आरूढ़ हुआ और आपलोग निश्चय करके जानें कि वह मेरे मारने को आयाहै यह कहकर बहुतरोया और एक पिशाचको बुलाकर एक पत्र अपनी मांके बुलाने के लिये लिखी और कहा कि बहुत शीघ्रजाकर बुलाला वह दुष्टा कि जिसका नाम मलाशूना जादू था हाल सुन-तेही वायु के समान उड़ी और तुरन्तही आकर उसके निकट पहुंची अफरेत उसके गले से लगकर रोया और अमीर का हाल सब उसको

सुनाया उसने विचारकर कहा कि सत्यहै वह सब पिशाचों के मारनेके लिये आयाहै इसलिये उत्तम है कि जादूका मकान जो मैंने बनवाया है उसमें चलकर कुछदिन बासकर और जब वह मनुष्य परदेदुनिया को चलाजायगा तब शहपाल से समझलेनाहोगा अफ़रेत को अपनी माता की सलाह बहुत पसन्द आई और उसीसमय अपनी माता के साथ तिलस्मात सहरिस्तान जर्रीं की राहली और इसभेदको किसीसे न बतलाया सब सेना उसकी बहुत व्याकुलहुई इधरउधर ढूंढ़कर बहुतों ने तो अपने घरकी राहली और बहुतों ने आपसमें यह सलाह की कि शहपाल हमलोगों का पुराना स्वामीहै चलकर उसीसे अपना अपराध क्षमाकराकर रहैं जिसप्रकारसे वह रक्खे उसीतरह से रहैं अबसिवाय इसके और कौनहै जहां चलकर रहैं किसी न किसीप्रकार से शहपाल कोप्रसन्नरक्खें शहपाल और साहब क़िरां तख़्तोंपर सेनासमेत सवार होकर युद्ध के लिये चले कि मार्ग में पिशाचों ने आकर ख़बर दी कि अफ़रेत तबलजंग का शब्द सुनकर साहबक़िरां और बादशाहपरदेकाफ़ की डरसे भागगया और अपने पिताके मारेजाने से बड़े दुःखमें है और उसकी सेना थोड़ीभी तो आपके दरवाजे पर आकर खड़ी है और शेष इधरउधर चलीगई और जो सेना आपके दरवाजेपर खड़ीहै वह आप से अपराध क्षमाकराकर आपके समीप रहा चाहती है और हाथबांधे शिरझुकाये दरवाजे पर खड़ी है बादशाह इसको सुनकर अति प्रसन्न हुआ और रुपये अशरफ़ी लुटातेहुये क़िले गुलिस्तानमें आया इस ख़बर से कि अफ़रेतकी सेना बादशाह की आधीनहोने आईहै नगरवासियों ने भेंटदिया और बहुतसा ख़जाना लुटाया और कईदिन तक नाचरङ्ग हुआकिया जब सबसे छुट्टीपाई अमीरने शाहपाल से कहा कि अब मुझे जाने की आज्ञादीजिये मेरा बड़ा हरज होताहै और दुनियां का हाल न मिलने से मुझे बड़ा दुःखहै शहपालशाह ने कहा कि ऐ साहबक़िरां आपका और मेरा यही इक़रार है कि आप अफ़रेत को मारकर तब दुनियां को जाइये और अफ़रेत अभी मारा नहींगया जो आप बेमारे जांयगे तो फिर वह आपके जाने पर मुझे दुःख देगा तब फिर आप को बुलाना पड़ेगा इससे यहीबात अच्छी है कि आप उसको मारकर तब दुनियां को जाइये अमीर ने शिरनीचे करलिया थोड़ीदेर के बाद शहपालशाह से कहा कि आप का कहना हमको मानना हर प्रकार से उचितहै परंतु यहभी तो मालूमहो कि वह कहां भागकरगयाहै वहीं चलकर मारैं शहपालशाहने कहा कि उसका पता कसरबिल्लौर जानेसे मालूम होगा अमीर ने कहा वहां चलने में देरी क्याहै मैं तो तैयारहूं शहपाल ने उसी दिन ख़ेमा आगे भेजा और दूसरेदिन अमीरको साथ लेकर उसी तरफ़ को चले जब कसरबिल्लौर में पहुंचे वहां के वासियोंने

शहपालशाह को भेंट आदिक देकर हरप्रकारसे सेवामें संयुक्त रहे और कहा कि अफरेत अपनी माता जादूगरनी के साथ आकर तिलस्मात नरीमें जो शहरिस्तान में उसने बनायाहै उसीमें छिपाहै और उसमें सब कारखाना जादूका है केवल वायुका बना हुआ है अमीर ने कहा मुझको जानेकी आज्ञादीजिये ईश्वर मालिकहै देखलिया जायगा जाकर उसको उसकी मासमेत मारूं और जो वह वहां अकेला है मैं भी अकेला जाऊंगा और ईश्वर की कृपा से विजय पाऊंगा बादशाह ने यह बातें सुनकर अब्दुर्रहमान की तरफ देखा तब उसने कहा आपकिसी तरहसे सन्देह न कीजिये इनको खुशीके साथ जानेकी आज्ञादीजिये मैं अच्छीतरह से विचारचुका हूं जातेही उसको मारकर विजय पाऊंगा तब बादशाहने चार परीजादोंको जो उड़नेमें अतिशीघ्र और बहुततेज थे बुलाकर आज्ञादी कि अमीरको तखत् पर बैठालके बहुत आरामके साथ लेजाकर वहां पहुंचावो परीजादोंने उसीसमय तखत् उड़ाया और तीनदिन रात्रि उड़ाये चलेगये जाकर एक बनमें उतारा अमीरने पूछा यह कौन स्थानहै यहां क्यों उताराहै उनलोगोंने कहा यह एक पहाड़ जहरमोहरा नामेहै और यहां एकप्रकारकेनवीन मनुष्य रहतेहैं अमीरने पूछाकि तुम जानतेहो कि इसस्थानसे शहरिस्तान कितनीदूरहै उनलोगों ने कहा कि छःकोस यहांसे है तब अमीर ने कहा यहीं क्यों उतरे वहीं चलकर ठहरते उनलोगोंने कहा कि इस पहाड़के नीचेसे छःकोस तक सब जादूका कारखाना है जो हमलोग जांय तो जल जांयगे और जो सामने दिखाई पड़ता है उसी में वह है तब अमीर उस रात्रि को उसी बनमें आराम से रहे जब सबेरा हुआ निमाज पढ़कर परीजादों को उसी स्थान पर छोड़कर उनलोगों से कहा कि किसीतरह से सन्देह न करना हमारी आवाज सुनते रहना हमजातेहैं परन्तु तुम लोगोंको एक बात बताजाता हूं कि मैं तीनबार चिल्लाकर शब्द करूंगा एक जब युद्ध करने को चलूंगा, दूसरा उसके मारने पर तीसरा बिजय का, जब तीसरीबार न सुनना तो जानना कि मैं अफरेतकेहाथसे मारागया शह-पालशाहसे मेरेमरनेकी खबरकरना यहकहकर जरीं पहिनकर अकार बसुलैमानी को हाथमें लेकर आंसू रूमालसे पोंछताहुआ पहाड़से नीचे उतरा परन्तु अंधियारे के कारण आगे न बढ़सका इसी तरह से कई बार ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपर आया गया परन्तु जब नीचे गया तो अंधियारा मालूम हुआ और ऊपर चढ़जावे तो फिर रोशनी तब परीजादों ने पूछा कि क्याआपके दुनियांमें युद्धके पहिले इसी प्रकारसे कसरतकरतेहैं अमीरने कहा मैंकसरत नहींकरताहूं परंतु जबपहाड़के नीचेजाताहूं तो अंधियारेके कारण आगेनहीं बढ़सकताहूं लाचार होकर लौट आताहूं और जब ऊपर जाताहूं तो फिर रोशनी दिखाई देतीहै

इसी सन्देह में पड़ाहूं कि क्या ईश्वर की रचना है परीजादों ने कहा यह अफरेत की माताने यहां से अपने स्थानतक इसी तरह से जादू बनाये हैं यह सब उसी की करामातहै जिसके देखनेसे आपको आश्चर्य मालूम होताहै अमीर ने यह सुनकर कहा अच्छा ईश्वर मालिकहै मैं इसी अंधियारे में जाऊंगा यहकर पहाड़ के नीचे उतरा और थोड़ी दूर गया था कि आकाशवाणीहुई कि ऐ अमीर खड़ाहोजा मुझको आनेदे तबतक अमीर यह सुनकर खड़ाहोगया कि इतने में सलासलपरीजादने एकतख़्त हाथ में लिये आकर सलाम करके कहा कि यहतख़्ती अब्दुलरहमान ने दी है और कहाहै कि बे इसके देखे कोई काम न करना नहीं तो बड़ा दुःख उठावोगे यह सबकहकर सलासल तख़्ती देकर जिधर से आया उधरको चलागया अमीरने उसतख़्तीको जो देखा ईश्वर के नामकेपीछे यह लिखाथा कि ऐ अमीर ईश्वर ने तेरे ऊपर कृपाकीहै कि यह तख़्ती तुझेदीहै अबतेरीविजयहोगी तू इसको पढ़ताचलाजा तब अमीरने उसको पढ़कर आकाश की ओर मुख किया तो सब अंधेरा जाता रहा और रोशनी प्रगटहुई तब अमीरको निश्चय हुआ कि अब मेरीविजय होगी तब अमीरने ईश्वर की रचनापर गुणानुवाद किया और उस तख़्तीको हाथमें लेकर आगेचला जब क़िलेके दरवाज़ेपर पहुंचे तब देखा कि एक अजदहा मुखनीचे और पैरऊपरकियेपड़ाहै उनको देखकर बड़े सन्देहमें हुआ इतनेमें आकाशवाणीहुई कि ऐ अमीर तू किसीतरहसे सन्देहनकर अजदहेके मुखमें चलाजा अमीर ने तख़्तीको निकालकर देखा तो उसमें लिखाथा कि निस्संदेह अजदहे के मुखमें कूदपड़ना वह अजदहा नहीं है केवल धोखेका अजदहाहै ज्योंही अमीरआंखको मूंदकर अजदहेके मुखमें कूदा त्योंहीं शोरगुल होनेलगा थोड़ी समय के पीछे जब आंखको खोला तो न तो अजदहा निकला कुछभी न दिखाईदिया सिवाय एकबाग़को अतिशोभायमान दिखाईदिया कि जिसमें हरप्रकार के फलफूल थे और मेवोंके वृक्ष मेवोंसे लदेथे और हरप्रकारके पक्षी बनेहुये मीठे२ बाणी के शब्द बोलरहे थे उसी बाग़में अमीर एक नहरपर बैठकर सैर करने लगे इतनेमें बाग़की बारादरीसे एकशब्द सुनाईदिया कि कोई ईश्वरका जन नहींहै कि मुझे इसक़ैदखानेसे छुड़ाकर प्राणको बचावे अमीर यह शब्द सुनकर बारहदरी में गया देखा तो एक अतिस्वरूपवान युवास्त्री तख़्तपर बैठीहै हाथ और पैरोंमें लोहेकी ज़ंजीरें पड़ीहुई हैं और बड़े दुःखमें बैठी है अमीर को उसको देखकर बड़ीदया मालूम हुई समीप जाकर उस से पूछा कि ऐ सुन्दरी तू कौन है और किसने तुझे यहां कारागारमें डालाहै उसने कहा प्रथम आपअपना नाम और निशान और किसउपाय से आप यहां आये हैं बतलाइये तो मैं अपना हाल बतलाऊं अमीरने कहा मैं सहायक शहपाल बादशाह परदेक़ाफ का

अमीर हमज़ा नामे ईश्वर पूजक अफरेत के बध करने को आया हूं उसने कहा मैं सोसनपरी सर्जोश काज़ी की बेटीहूं अपने दुःख का हाल क्याकहूं कि अफरेत ने मेरे ऊपर अतिमोहित होकर मेरे पिता से मेरा विवाह अपने साथ करने को कहा जब उसने न माना तब अफरेत ने मेरे पिता को सेना लेकर पराजित किया तब मैंने अपने पिता से कहा कि आप मेरा विवाह उसके साथ करदें मैं धोखा देकर बांधलूंगी तो तुम पकड़ कर शहपालशाह के समीप भेजदेना वह शत्रु के क़ाबू में आने से तुम से बहुत प्रसन्न होगा और तुमको और बहुत सा रुपया और देश देगा परन्तु मेरा मकर उसकी माता को प्रसिद्ध होगया उस ने मुझे बांधकर यहां डाल दिया है तब से मैं यहां पड़ीहूं इससे मरना उत्तम है अब जो आपमुझे इस कारागार से छोड़ा देवें तो मैं चलकर अफरेत का स्थान जहां वह रहताहै दिखाऊं और अच्छीतरहसे आपको बतलाऊं अमीरने उसको कारागारसे छोड़ाकर मानों फिरसे प्राणदान किया तब वह अमीर को साथ लेकर एक दूसरे बाग में आई और अफरेतका स्थान दिखलाया अमीरने देखा तो बारह सौ पिशाच पहरे पर बराबर से खड़े हैं एक बारगी सोसनपरी अमीर के सामने पृथ्वीपर गिर कर इसम सहरा पढ़ कर आकाश पर वायु के समान उड़ गई अमीर का गुन न माना और जब थोड़ी दूर ऊपर गई तो पिशाचों से पुकार कर कहने लगी कि क्या देखतेहो अफरेत का मारने वाला और जादू का बिगाड़ने वाला तुम्हारे सामने खड़ाहै इसे किसी युक्ति से मारो तब अमीर उसके छोड़ाने से अति लज्जित हुये और उसकी बेवफाई पर बड़ा आश्चर्य किया इतने में सब देव चारोंतरफ से अमीरको मारने के लिये हथियार लेके दौड़े अमीरने अक़रब सुलेमानी को मियान से निकाल कर जिसदेव पर एकबार चलाई उसका सिर अलग हुआ परन्तु जितनी बूंदें रुधिरकी गिरती थी उतनेही नये देवबनजाते थे अमीरका हाथमारते२थकगया इतनेमें तख्ती यादआई उसमेंदेखा तो लिखाथा कि सोसन जादूको क़ैदसे छुड़ाना जो छुड़ावोगे तो बड़ा दुःख पावोगे और जो शायद ऐसा हो जाय और देव तुमसे लड़ने लगें तो इसको पढ़ कर तीर से मारकर सब दूर करदेना तब अमीरने वैसाही किया सब थोड़ी देरमें दूरहोगया जो शोर गुल होरहाथा सब बन्द होगया और एक नया शब्द सुनाई दिया कि लेना चाहिये मैं भी आपहुंचा बाद इसके अमीरने देखा तो न सोसनपरी है न कोईदेव है औरबाग़ की दीवारकेपीछेसे क़ाफ़क़ेलोगोंकाशब्द ऐसासुनाईदेताहैअमीरने उसतरफ़ जाकरदेखा तोएक नईबागहैउसमें एकस्त्रीयुवा अतिस्वरूपवान औरएक मनुष्यइ़काफ़क़ीसूरत का बैठाहै और चारसौदेव उसकेसाथ सबक़ैदमें पड़ेहैंअमीरको उसलोगोंनेदेखकर कहा ऐजवान तुमुझको इसक़ैदसे छुड़ा

दे बड़ा सवाब होगा अमीर उसे पहिले की तरह जाना कि शायद यह भी वैसाही हो कि पीछे को मुझे दुःख देवे (और सत्य है कि दूध का जला माठा फूक २ पिये) तलवार निकाल कर दौड़े कि इसको अवश्य मारिये यह न जाने पावे तब उस बुड्ढे ने रोकर कहा हे अमीर मारिये को क्या मारना है पहिले मेरा हाल सुन लीजिये तब चाहे मारिये चाहे छोड़ दीजिये मेरा नाम जनीद शाह सब्ज पोश है और शहपाल शाह का बड़ा भाई हूं और यह मेरी बेटी है रहियाम परी इसका नाम है और क़ाफ में मेरा स्थान है जब अफरेत ने शहपाल को पराजय किया था तो मुझसे कहा था कि अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ करो मैंने जब न माना तो मुझे पराजय करके मुझे मेरी बेटी और इन चारसौ देवों समेत पकड़कर यहां लाकर कैद किया है अब तुम्हें अख़्तियार है चाहे मार या जिला अमीर ने तख़ती देखी तो उसका कहना सत्य पाया तब अमीर को दया आई और उनको कैद से छोड़ा कर जाने की आज्ञा दी और कहा कि शहपाल से मेरा सलाम कहने के पश्चात् कहना कि मुझे दुःख बड़ा पड़ा परन्तु अब बहुत जल्द अफरेत को मार कर आता हूं और कहना कि सब संदेह छोड़ कर ईश्वर से मेरे विजय पाने का वरमांगें लिखा है कि जिस समय जनीद सब्ज़पोश को अमीर ने कैद से छोड़ा कर जाने की आज्ञा दी उसके पश्चात् आगे को चले तो एक अतिशोभाय मान स्थान दृष्टिपड़ा उसके सहन में जल भरा हुआ तालाब मालूम हुआ उसको देख कर बड़े संदेह में हुये फिर एक संदूक दिखाई दिया अमीर ने पैर आगे बढ़ाया कि देखें कि यह जल है पैर रखने से मालूम हुआ कि जल नहीं है परन्तु तख़ती बिल्लौरी है और यह जलसे भी अधिक साफ है अमीर ने चाहा कि इस संदूक को देखें कि इसमें क्या है अवश्य है कि इस में भी कुछ जादू का कारखाना होगा ज्योंही अमीर संदूक की तरफ़ झुके त्योंही एक देव जो उसमें लेटा था कूद कर अमीर के गले में लिपट गया और अपना बल दिखाने लगा अमीर ने एक हाथ से संदूक का किनारा पकड़ा दूसरे हाथ से लंगर जमाकर तख़ती को देखा तो उसमें लिखा था कि ऐ अमीर खबरदार २ इस संदूक में न जाना इस दुःख से अपने प्राणको बचाना जो गया तो जीता न निकलैगा इस देव के शरीर में एक रग न बाल है वह रगी नहीं है एक शनजाल है उसमें एक तख़ती बन्धी है उसको सीने से तोड़ कर बहादेना तो उससे तेरा प्राण बचेगा और तेरा कार्य सिद्ध होगा तब अमीर ने एकतीर ईश्वर का नाम लेकर जो मारा तो उसमें से बड़ा तमाशा मालूम हुआ और सब संदेह ईश्वर की कृपा से दूर होगया अमीर ने तख़ती को बालसमेत छाती से जुदा किया उसके टूटने पर ईश्वर का धन्यवाद दिया और एकतीर संदूकमें मारा

तो उस देवने सीधे जहन्नुम की राहली तीर के लगतेही एक बड़ाशोर गुल होने लगा और वह संदूक जलने लगा और ऐसा शोर और गुल हुआ कि उसका शब्द आकाश तक पहुंचा और सर्वच शब्द होने लगा कि मनुष्य पिशाचों का मारने वाला आहुंचा इस शब्द के पश्चात् जो अमीरने देखा तो न कहीं न तखुताहै न मकान केवल एकमैदान दिखाई पड़ता है और उसमें एक रुधिर का तालाव है और उस तालाव के बीच में एक चर्ख खड़ा है और उसमें से रुधिर होकर एक दरार में जाता है परन्तु उसका कुछ हाल नहीं मालूम होता है उसे देखकर बड़े सन्देह में हुये थोड़ी दूर और गये तो देखा कि एक बाग़ दिखाई पड़ा और उसके दरवाजे पर एक लड़का खड़ा पाया तब अमीरने कई बार उससे पूछा कि तू कौन है अपना हाल बता परन्तु वह न बोला जा अमीर अन्दरचला तो उसलड़केने पुकारकर कहा कि ऐ देव खबर दारहो मारने वाला देवोंका और बिगाड़ने वाला जादू का आपहुंचा तब अमीर ने फिर कर एक तलवार मारी वह दो टुकड़े होगया और ज्योंही अमीर थोड़ी दूर आगे गया त्योंही उसका सिर उड़कर अमीर के पैरमें लगा तब वह फिर जीउठा तब अमीरने बड़े संदेह में होकर तखुती में देखा तो उसमें लिखा था कि दरबान को कभी न मारना वह कभी न मरेगा उस पर तेरी वार न चलेगी परन्तु जो छाती में तीर मारोगे तो अलबत्ता मारा जायगा और फिर न जियेगा और मुबारक हो कि अफरेत तक आपहुंचा अमीर ने जो उसको पढ़ कर एक तीर उसकी छातीमें मारा तो सर्वच अंधियारी छागई और चारोंतरफ से लूक और बाण गिरने लगे और बड़ा शोर गुल होने लगा तब अमीर तखुती को नेत्रों पर रख कर बैठ गये कि नेत्रों को कुछ दुःख न पहुंचे इन सब आंधी आदिक के दूर होने के पश्चात् जो नेत्र खोल कर देखा तो कोसों तक मैदान दृष्टि पड़ा और हर स्थान पर ऐसे २ शोभायमान फूल फले हैं कि देखने से चित्तको बड़ा आनन्द प्राप्त होता है और उसमें बहुत से परीजादें गा बजा रहे हैं और अनेक २ प्रकार के अपूर्व तमाशा कर रहे हैं अमीर जो समीप उस स्थान के पहुंचे तो एक परी शराब और गिलास लेकर दौड़ी और कहने लगी कि लो साहब किरां इसको पीकर मार्ग के श्रम से रहितहोकर थोड़ी समय हम लोगों के साथ बैठ कर गाना बजाना सुनकर चित्तको प्रसन्न करो अमीर ने तखुती में देख कर शराब उसके हाथ से लेकर उसी के सिर पर छोड़ दी जैसा तखुती में लिखा था वैसाही किया तब उसके बदन से लौ निकलने लगी और बड़ा शोर हुआ कि सिकन्दर तिलस्मने असरार जादूगरनीकोभी मारा और उसके साथियोंको बड़ा दुःख दिया तत् पश्चात् अमीर ने जो देखा तो एक बड़ा भारी पहाड़

दिखाई पड़ा और उसके आगे एकटीला निराधार खड़ाहै और उसके भीतरसे नौवतके शब्द अतिप्रिय सुनाई दिये तब अमीर उसके भीतर गया तो अफरेतको देखा बेखबर सोरहाहै और उसके श्वासा का शब्द अति प्यारा मालूमहोताहै परंतु देखनेसे अतिभयानक मालूम होताहै अमीर ने अपने मन में विचारा कि सोते को मारना एक नामरदी है इसको उठाकर मारना चाहिये तब एकखुञ्जर उसके पैरमें मारी तो उसनेपैर देमारा कि मच्छरों के मारे निद्रा नहीं आनेपाती नहीं मालूम इतने मच्छर कहांसे आये तब तो अमीर बड़ेसंदेहमें हुयेकि इसवार को तो यह मच्छर समझता है तो और क्या असर करेगा तबदो हाथोंसे उस पत्थर को दबाकर एकबार ईश्वर का नाम लेकर ऐसा चिल्लाया कि पहाड़ और जंगल हिल गये अफरेत ने भी उसके सुनने से जाना कि पृथ्वी या आकाश फटगया है उठकर जब खड़ाहुआ तो अमीरको सामने खड़ा देखकर व्याकुल होगया और कहने लगा कि मैं तो अब माराही जाऊंगा परंतु तेरा भी प्राण न बचेगा और मैं तो वहां से भागकर यहां छिपा था तूने यहां भी मेरा पीछा न छोड़ा तो अब तेरे युद्धसे क्या भागूं यह कह कर एक तलवार जिसमें पत्थर भी लगे थे लेकर अमीर के ऊपर चलाया अमीरने उसकी वारको रोककर अक्षा- रव सुलेमानी कोनिकाल कर मारा तो दो टुकड़े होगया और फिर हिल न सका परंतु थोड़ासा प्राणबचा था ॥

मारा जाना अफरेत शाहदेवों का अमीर के हाथ से और शीश काटने से सैकड़ों देव बनकर अमीर से युद्धकरने को आना ॥

तब अफरेत ने कहा अब तो मैं मारागया हूं यह भी जो श्वास रह गईहै इसको भी एक तलवार मार कर निकाल दे अमीर ने उसके कहने पर एक तलवार और लगाई तो ज्योंहीं उसका धड़ जुदा हुआ त्योंही दोटुकड़े आकाश पर उड़कर दो देव बनकर अमीर के सामने आखड़ेहुये इसीप्रकारसे दो पहारमें हजारों देव उत्पन्नहुये तब अमीर इस आश्चर्य को देखकर बड़े सन्देह में हुये और मारते २ हाथ भी थक गया इतने में दाहिने तरफ से शब्द ऐसा आया कि कोई सलाम कर रहाहै अमीर ने फिरकर देखा तो हजरत अखुजर अलेहुस्सलाम हैं तब तो सलाम करके कहने लगे कि मारते २ हाथ थकगया है परंतु बड़े आश्चर्य की बातहै कि जिसको मारता हूं एकका दो होकर युद्धकरने को अरूढ़ होताहै और एकभी इनमें नहीं मरता है तब हजरतअख- जरने कहा कि तुम अपने हाथसे यह सब दुःख सहरहे हो कि-यहां जादूहै और हरएक कार्य बेतखती में देखेहुवे करते हो और जादूको नहीं डरतेहो अब मैं एकबात बताढूं इसके अनुसार तुमकरोतो अभी सब बला दूर होजावे कि यह मंत्र जो मैं तुझे बताता हूं पढ़ कर

तीरसे उसदेवके शिरपर जिसके माथेपर लाल चमकरहीहै मारतो सब बला अभी दूरहोजाय तब अमीरने उनकी आज्ञानुसार किया तब केवल वही अफरेत पड़ाहुआ दिखाईदिया और सर्वत्र मैदान बड़ापाया परंतु शिर अफरेत का उस स्थानपर न था हज़रत अखुजर ने साहबकिरां से पूछा कि तुम इन देवों के उत्पन्न होने का कारण जानते हो अमीर ने कहा मैं क्याजानूं ईश्वरजाने या आप पैगम्बरहैं जानें दूसरा कौनजान सक्ता है उन्होंने कहा अफरेत की माता उसका शिरलिये इसी घरमें बैठीहै वह जादूसे अग्नियें की पत्ती उसके रुधिरमें डुबोकर आकाश में फेंकती है उसे दो देव बनकर तुमसे युद्ध करने को आतेहैं अब ग़ार में चलकर उसकोभी मारकर नरककुण्ड में पहुंचाबो तब दोनों मनुष्यसाथ होकर उसग़ारमें गये उस दुष्टाकी माता जादूगरनीने जो हज़रतअख़ज़र को अमीर के साथ देखा तो क्रोधितहोकर बोली कि यहसब तूही कररहाहै कि मेरेपुत्रको मरवाकर अपनी ईर्षा मिटाई परंतु मैं तुझको भी जीता न छोडूंगी यहकहकर जादूकरनेलगी तब हज़रतअख़ज़र ने एक मंत्रपढ़कर फूंका तो सीधी नरककुण्ड को सिधारगई ॥

अना ख़्वाजेहअरतअलेहुस्सलाम का अमीर के पास और इनकी आज्ञानुसार
तोड़ना जादू का और माराजाना अफरेतकी माता का
हज़रत के मंत्र से और लूटना तिलस्म का ॥

तत्पश्चात् सब जादू दूरहोगई और दोनों मनुष्यों के चित्त प्रसन्नहोगये और हज़रत अमीरको विजयकी मुबारकबादी दी बल औरहिम्मत की बड़ी प्रशंसा की और आज्ञादी कि अफरेत के शिरकामुकुट उतार ले और ऐसाही तुझे एक और मिलेगा जब सपेद देव तेरेहाथसे मारा जायगा तू इनदोनोंको अपने ताजमें लगाना इनसे बड़ाफल प्राप्तहोगा और एक गिलाफ जिसमें साढ़ेतीन मन शरबत असाता था दिया कि यह तेरी सभामें काम आवेगा और इससे बड़े २ आश्चर्यरूपी तमाशा देखोगे तब अमीर ने कहा हज़रत इससमय मैं अति भुखावन्त हूं कुछ भोजन को दीजिये कि खाकर भूख मिटाऊं हज़रत ने एक भोजन का पात्र निकालकर दिया अमीर ने उसमें से निकालकर खाया परंतुवह पूराही रहा तब हज़रत ने एकचिलहरा पान का दिया कि पान खाकर चित्तको प्रसन्नकरै और कहा कि इनदोनों वस्तुओं को अपने पास रक्खो कि जबतक क़ाफमें रहो भूखप्यास से दुःख न उठावो कि दूसरेसे मांगो और जब ये दोनों वस्तु तुम्हारेपास खोजांय और ढूंढ़े न मिलेंतो जानना कि अब थोड़ेदिनोंके उपरान्त दुनियांको जांयगे और तुमक़ाफ से बहुतदिनोंके पीछे जाओगे यहकहकर हज़रत तो चलेगये और अमीर ने जो कईदिनों के बाद भोजनकिया आलस्य आगई और उसी चट्टान पर जहां अफरेत सोता था जाकर लेटगये और थोड़ीही समयमें सोगये

इस कारण से तीसरी बार शब्द न किया तो परीज़ादों ने जो जहरमो-हरापर खड़े शब्द सुननेके आश्रित थे जब शब्द न सुना तो शहपालकेपास जाकर अमीर के मारेजाने की खबरदी और सब वृत्तान्त अमीरकाशह-पाल को सुनाया तब शहपाल अमीरके मारेजानेका हाल सुनकररोने लगा और अब्दुलरहमान से कहा कि मैंने इब्राहीम के पुत्र का पाप अपने ऊपर लिया कि उसको वहां जानेदिया तब अबदुलरहमान ने विचारकर कहा कि अमीर अफरेत और उसकी माताको मारचुके हैं थोड़ासा कार्य और बाक़ी रहाहै उसको भी पूरा करके अति शीघ्रही आतेहैं और इसीसे तीसरी बार शब्द नहींकिया चलिये उनको लेआवें कि सबलोग देखकर प्रसन्नहों और आप किसी तरह से सन्देह न कीजिये यह सुनकर शहपाल ने बड़ी खुशी की और सफ़रका सामान करके सहरिस्तान को चला इस प्रसन्नतासे परीज़ादों ने ऐसे सिंहासन से तख़्तको उड़ाया कि अति शीघ्र जहां अमीर सोरहे थे आपहुंचे तो देखा कि साहब क़िरां एक ग़ारमें सोरहेहैं और मुखपर धूपआगई है और धूपसे स्वरूप बदलगया है असमानपरी ने एक परसे छांहकरली और दूसरे परसे वायु करनेलगी और हरप्रकारसे सुख देनेलगी अमीर को जो आराम मिला आंखको खोलदिया और दृष्टि उठाकर देखातो असमानपरी एकपरसे तो छांह किये है और दूसरे से वायु कररही है तबतो उठकर उसे गलेसे मिलाकर मुख को चूमा और हरप्रकार की प्रिय बातें करनेलगा और उसपर अति मोहित होकर अपने गोदपर बैठालकर बहुतप्यारकिया और पूछा कि इस समयके तेरेयहां आनेका क्या कारणहै मुझे बड़ाआश्चर्य मालूमहुआ कि तू यहांआई उसने कहा आपकी विजय का हाल सुनकर अति प्रसन्नहोकर दौड़ीआईहूं तबतो अमीर औरही अधिक प्रसन्नहुये उसने फिर कहा कि एक खुशख़बरी भी लाईहूं कि शहपालशाह भी पीछे आतेहैं और आपके विजय और शत्रुओंके बधकरने से अति प्रसन्न होकर आते हैं यह सुनकर अमीर अतिप्रसन्नहुये थे कि उसीसमय शहपालकी सवारी आपहुंची अमीर तख़्त देखकर उठकर खड़ाहो गया शहपाल भी तख़्त पर से उतरे और अमीर के हाथ मुखको चूमकर तख़्तपर बैठाल कर क़िले गुलि-स्तानको लेआये और अपने सब कार्य से रहित होकर नाचरङ्गकी सभा करकेहर एक सरदार और नगरबासियों ने अमीर की न्योछावर में बहुतसा रुपया अशरफ़ी पुण्य की और हरप्रकार से खुशी करने लगे तब बादशाह ने अबदुलरहमान से कहा कि तुम कहते थे कि हमज़ा आसमान परीके साथ विवाह करने के योग्य है सो अब क्या देरी है और इस समय से उत्तम समय न आवेगा कि सब सरदार और नगर बासी इस अपूर्व बस्तु के देखने को आये हैं और सब छोटे बड़े हमज़ा

की प्रबलता से अति प्रसन्न हैं तो अब विवाह करने में देर न करो तब तो अबदुल रहमान ने उठकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अति नम्रता के साथ सलाम किया अमीर ने पूछा यह क्या कारण है कि तुम ऐसे प्रसन्न हुये तब उसने कहा कि आप बादशाह के जामाता हुये और हम लोगों के स्वामी अमीर ने कहा कि मैं ऐसी बात मुसाफिरत में नहीं करता क्योंकि जो हम आसमानपरीके साथ विवाह करेंगे तो दुनिया को न जा सकेंगे और इसी स्थान पर काम के लोभ से रहजायगे और दूसरी बात यह है कि हम मलका मेहरनि-गार नौशेरवां की बेटी से प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि जब तक तुम्हारेसाथ विवाह न करलेंगे तब तक दूसरी स्त्री के साथ विवाह न करेंगे इस कारण से मैं अपनी प्रतिज्ञा से बिपरीत नहीं कर सक्ता तब अबदुल रहमान ने कहा कि आपने वह प्रतिज्ञा परदे दुनियां में की थी यहां नहीं की इसमें किसी प्रकार से आपकी प्रतिज्ञा से अनुचित नहीं होता और दुनियां में पहुंचाने का तो मेरा कार्य है मैं आपको दुनिया में पहुंचा दूंगा अमीर ने पूछा कब तक पहुंचावोगे तब फिर अबदुल रहमान ने कहा कि आप यह कुछ सन्देह न कीजिये यह परदे काफ़है जो हम कहते हैं मान लीजिये परन्तु हम यह कह सक्ते हैं कि एक वर्ष के पश्चात् आपको परदे दुनियां में पहुंचादेवेंगे और सब लोगों को आपको दिखला दूंगा अमीर ने बिचारा कि बिना इनकी सहायता हम दुनियां को जा नहीं सक्ते आखिरकार मान लिया और शहपाल शाह विवाह की तैयारी करने लगे और बादशाहों को नेवता भेजने लगे थोड़ी समय के पश्चात् सब बादशाह लोग अपने अपने नेवते लेकर गुलिस्तान अरम में आये और उस विवाह की सभा में मिलकर प्रसन्न हुये और अफरेत देव और उसकी माता जादू गरनी के मारे जाने की खबर सब देवों को पहुंचगई थी उसीमें देव समन्दर जिसके हजार हाथ थे सुन कर अति क्रोधित होकर कहने लगा कि देखो बादशाह शहपाल ने एक मनुष्य परदे दुनियां से बुलवाकर अफरेत और उसकी माता जादू गरनी को मरवाकर हमारी हज़ारों वर्ष की मेहनत जादू के कारखाने को तोड़वाकर वृथा करवा डाला और मुझसे कुछ न डरा और उसको गुलिस्तान अरम मेंले आकर अपनी बेटीका विवाह किया यह कहकर सपेददेव को बुलाया और आज्ञादी कि तुम चारसौ देवों समेत अति शीघ्र जाकर बादशाहसे कहो कि उसमनुष्यको हमारे पास भेजदो कि उसको मारकर अफ़रेतका बदलालेवें और उसकी हड्डियों को काट कर देवों और कौवों को बांट देवें यह सब बातें कहकर भेजा संयोग से उसी दिन विवाह की तैयारी थी कि बादशाह सभामें सुले-मानी तखतपर बैठे थे और सब सेनापति आदिक यथा उचित अपने२

स्थान पर बैठे थे और अमीर उस तख़्त पर जो हज़रत सुलेमान ने अति उत्तम शोभायमान और विचित्र अपने वज़ीर के लिये बनवाया था बैठे थे और उसमें हज़ारों प्रकार के जवाहिर जड़े थे और सब सरदार लोग अपने २ स्थानों पर यथा उचित बैठे थे और हर प्रकार के नाचरंग के तमाशे होरहे थे कि इतने में सुपेद देव चार सौ देवों समेत शस्त्र सब प्रकार के धारण कियेहुये निडर होकर बराबर चला आया और बादशाह से सलाम करके कहने लगा कि ऐ बादशाह समन्दर सफ़्फ़ कारने कहा है कि बादशाह ने देवों को एक मनुष्य परदे दुनियासे बुलाकर बड़ा दुःख दिया है और अफ़रेत ऐसे सरदार को उसके माता पिता समेत मरवाडाला यह बात अच्छी नहीं की है परंतु अब उचित है कि उस मनुष्य को हमारे पास भेजदेव कि उसके बदले में उस मनुष्यको हड्डियां और बोटी २ काटकर देवोंको बांटदेऊं अमीर यह बातें सुनकर अति क्रोधित हुये और कहने लगे कि ऐ पापी क्या बकता है अधिक बोला तो तुझे भी दण्डदूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखादूंगा और उससे जाकर कहदे कि जो अफ़रेत से मुलाक़ात करनी होतो मेरे पास आवे उसे भी वहां भेजदूं सुपेद देव अमीर की बातें सुनकर क्रोधित हुआ और कहा कि मालूमहोता है कि तुही है ये चार सौ देव तेरेही पकड़ने के लिये आये हैं तुझ को मेरे सरदार ने बुलाया है यह कहकर अमीर कीतरफ़ हाथ बढ़ाया कि अपना बल दिखावे अमीर ने ईश्वरको स्मर्ण करके उसका हाथ पकड़ कर ऐसा झिटकादिया कि वह दोनों पैरोंके बल बैठगया और कमर से खंजर निकालकर उसके पेटमें ऐसा मारा कि एक बार आहकरके प्राण को त्याग करदिया ईश्वर की कृपासे मनोरथ पूरा होगया तब तो सब देव व्याकुल होकर भागगये और सबजितने उसस्थान पर बैठेथे अमीरके बल को देखकर बड़े आश्चर्य में होकर प्रशंसा कर लगे और बादशाह ने बहुतसा रुपया और अशरफ़ी कंगालोंको अमीर की नेवछावर में लुटाया और सुपेद देवकी लोथ को बनमें फुंकवादिया कि मरनेके पश्चात् भी उसको इस प्रकार से लज्जित किया और उसदिन विवाह होने के कारण से कई कोसों तक रोशनी की और सड़कों पर आतशबाज़ी गाड़कर छोड़वाते थे और एक फुलवाड़ी फूलोंकी ऐसी चुनवाई कि जो कोई देखता था वही जानताथा कि फूलोंके वृक्ष लगेहैं और देखकर अतिप्रसन्न होताथा और जिस समय अमीरको ख़िलअत बादशाही पहिनाईगई थी और बारगाह सुलेमानी से हरम सराय शाही की तरफ़ लेचले और सामान उत्तम एकट्ठा था और सरदार और नगर बासी क़ाफ़ के अमीर के चारों तरफ़ मिलेहुये चलेजाते थे और गाने बजाने वाले आगे गाते बजाते और परियां हाथोंपर नाचतीं

हुई चली जाती थीं और गुब्बारे आकाश से छूटकर पृथ्वी पर गिरते तो यही मालूम होताथा कि सितारे टूट२ कर गिररहेहैं इसीप्रकार से अपूर्वतमाशे होतेथे परंतुअब अधिक लिखनेसे बड़ाकाल व्यतीतहोता है इसलिये संक्षेपमें लिखाहै इसीधूम धामसे दुलहा दुलहिन के स्थान पर पहुंचा और अबदुल रहमान ने पहररात्रि व्यतीत होनेके पश्चात् विवाह किया और दोनों से प्रतिज्ञा भी और दोनोंका मनोरथ पूरा हुआ शहपालशाहने आसमान परीके दहेज में कई देश दिये और भी उत्तम२ वस्तु दीं और जिससमय अमीर महलमेंगये तो सबकार्योंसेछुट्टी पाकर असमान परीको पलंगपर लेटालिया और उसकेसाथभोगकिया ईश्वर की कृपासे उसके उसी रात्रिको गर्भ रहगया देव और मनुष्य का स्वभाव मिलगया प्रातःकाल जब अमीर स्नानकरके पोशाक पहिन कर सभामें जाकर बैठे तब उसदिन से और अधिक प्रतिष्ठा होनेलगी और हरप्रकार का सामान उनकेलियेआने लगा परंतु अमीर रात्रिदिनगिना करतेथे कि कब वर्षसमाप्त होगा कि हमजाकर दुनिया में सबसे मिल कर यहां की बातें कहेंगे औरबहुतसी अपूर्व वस्तु यहांसे लेजाकर देकर प्रसन्नता उठावेंगे ॥

अब अमीरका वृत्तान्त छोड़कर थोड़ासावृत्तान्त सेनापति खुर्शेदहिन्द मलिक लन्धौर पुत्रसादान का संक्षेप पूर्वक लिखते हैं कि जब लन्धौर अमीर से आज्ञालेकर नवका पर सवार होकर चले उसके दूसरे दिन बहराम से भी मुलाक़ात हुई तो बातों से मालूम हुआ कि अमीर ने इसको भी हमारी सहायताके लिये भेजाहै यह सुनकर अतिप्रसन्नहुये और अमीर ने ईश्वर का धन्यबाद किया पांचवेंदिन एक तूफानआया उसके कारण तीनदिन तक नवका इधर उधर फिरा की चौथे दिन जाकर तीरलगी और लोगोंका प्राणबचा परंतु जिसनौका पर बहराम सवार था उसका पता न मिला तब तो लन्धौर बड़े सन्देहमें हुआ कि अमीर ने हमारी सहायता के लिये भेजा है उनसे क्या कहेंगे हमको बड़ी लज्जा प्राप्तहोगी बहराम का हालसुनिये कि नौका जो तुफान से बढ़ती२ टूटगई तो बहरामएकपटरेपर बैठहुये बहकर तीरजालगे और पृथ्वी पर जाकर ईश्वरका धन्यबाद किया और एकतरफ को पैदलचला और कई दिनोंसे अन्नजल न पाया था तीनकोस जाके एक सौदागरका डेरा पड़ा था उसी के समीप जाकर एक वृक्ष के नीचे चुपचाप जाकर बैठा कि ऐसानहो कि इसमें कोई मुलाक़ाती मिले कि इस मेरीबुरी हालत को देखकर लज्जित करे परंतु संयोग से सरदार उस डेरे का घूमताहुआ बहराम के समीप आनिकला तो बहराम से पूछा कि तू कौनहै और कहांसे किसकार्य के लिये आताहै और कहांजायगा बहरामने कहा सौदागर हूं मेरी नाव तूफानमें डूबगईहै परंतु मेराप्राण

बचगया कि एक पटरेपर बहकर किनारेलगा हूं और वहांसे उतरकर यहां आयाहूं अबदेख जो ईश्वर देखावेगा वह और देखूंगा उसनेकहा ऐप्यारे पासद्रव्य अधिकहै परंतु पुत्र नहींहै इसीसे उदास रहताहूं अब तू मेरे साथ चलतुझे अपना पुत्रबनाऊं और सब द्रव्य और असबाब का स्वामीकरूं और मेरे पास इतनी द्रव्यहै जो किसी बादशाहके पास भी नहीं है तब बहराम उसके साथ गया उसने स्नानकराकर अच्छीपोशाक पहिना कर सब द्रव्य और असबाब दिखलाया और अपने साथ लेकर वहां से कूचकिया और सब माल असबाब का उसे मालिक किया बहराम ने सौदागरसे पूछा किसतरफ जाओगे और किसनगरमें वास अपना करोगे उसने कहा मांड देश में जो सरनद्वीप के समीप है और राजधानी मलिक शर्वांकी है वहीं चलकर मार्ग के श्रमसे आराम लेंगे तब तो बहराम अति प्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा होगी तो दिलआराम से अति शीघ्रही मुलाक़ात होगी पस कई दिनों के बाद मांड नगर में पहुंचकर सराय में असबाब उतार कर उतरे और दूसरे दिन सौदागर ने बहराम को साथ लेकर स्नान किया और पोशाक बदलकर बाज़ार की सैर को गया तो वहां उसको एक तमाशा दिखाई दिया कि चौराहे में एक चौकुण्ठा चबूतरा है उस पर एक चौकी पर एक कमान और अशरफियों के तोड़े रक्खे हैं बहरामने पहरे वालोंसे पूछा कि यह कमान और तोड़ कैसेहैं इसका हाल मुझसे बतलावो उनलोगों ने कहा कि जगीस नाम हमारे बादशाह का एक सेनापति बड़ा बुद्धिमान और बलवानहै यह कमान उसकाहै और वह इसे खींचनहीं सका इसलिये तोड़े और कमान यहां रखवादिया है कि जो कोई इस कमान को खींच लेवे वह इन तोडों को लेजावे और जो जी चाहे वह करे बहरामने पूछा कि कहोतो मैं इस कमान को खींचूं और अपना बलदिखलाऊं उन पहरे वालों ने कहा भला तू बेचारा इसे क्या खींच सकेगा तुममें ऐसा बलकहां है बहरामने कहा ऐ यारो बल ईश्वरका दिया हुआहै इसमें अमीर और गरीबका कुछभाग नहीं लगाहै और न किसी के इच्छा से मिलता है यह तेरी बातें वृथा हैं बहराम से पहरे वालों से बात चीत होती थी कि नेकराय वजीर शईब शाह की सवारी बड़ी धूम धाम से आनिकली बहराम देख कर बड़े आश्चर्य में हुये दूतोंने जाके नेकराय से बहराम की तरफ सन्मुख होकर पूछा कि ऐ जवान तू इस कमान को खींचेगा बहराम बोला कि (हाथ कंगन को आरसी क्या) परीक्षा लेकर देख लीजिये नेकरायने कहा अच्छा खींचो हम भी देखें बहराम ने ईश्वर का नाम लेकर कमानको उठा कर कबजे के अपने कमर में कर लिया और कमान को चढ़ाकर खूब बल दिखलाया लोगोंने उसके बलको देख कर बड़ी प्रशंसा की परन्तु

अगीम के नौकरों को अच्छा न मालूम हुआ आपस में बकने लगे और सिड़ियों की तरह झाड़ कर नेलगे बहराम ने क्रोधित होकर कई एक को मुक्कों से मारडाला तब नेकराय ने उनको वहांसे धमका कर हटा दिया और बहरामको लेकर अपने स्थानपर चला आया जगीमने जब यह सुना कि सौदागर कमान खींचकर अशरफियों के तोड़े भी उठा लेगया और मेरे कई नौकरों को मारडाला है तिसपर नेकराय उसको अपने स्थानपर लेगये हैं और मेरा कुछ भी विचार न किया कि उसको अपने स्थान पर लेगया यह कहकर हथियार धारण करके बहराम के मारने के वास्ते चला और जबबहराम उसेदिखाईपड़ा तो अति क्रोधित होकर उसे मारनेको तलवार लेकरदौड़ा और यह कहने लगा कि ऐ गली बेचने वाले तुझेभी बलहुआ कि मेरा कमान खींचकर अशरफी के तोड़े उठाले गया और मेरे नौकरोंको भी मारडाला अबले तुझे भी मार कर बदला लेता हूं यह कहकर दौड़ा कि इसे मारकर बदलालेलूं कि बहरामने तलवार उसके हाथसे छीनकर एक ऐसाघूंसामारा कि वह मरगया यह खबर बादशाह को पहुंची उसने तुरन्तही नेकराय समेत बुलाने की आज्ञादी जब बहराम सामने गया तो बादशाह शईब ने क्रोधितहोकर बहरामसे कहाकि तूने हमारे इतने बड़े नामी सरदार को क्यों मारडाला बहरामने कहा आपने क्यों ऐसा निर्बलवजीररक्खा है कि एक घूंसे के मारने से मरगया बादशाह को बहराम की बातें बहुत पसंद आईं और उसीसमय खिल्अत वज़ारतकी देकर जगीमके स्थान पर बैठने की आज्ञादी बाहराम ने दोतीन बार उस कमान को बादशाह के सामने खींचकर सिपाहियों को आज्ञादी कि इस कमान को उसी स्थान पर तोड़ोंसमेत लेजाकर रक्खो और जो कोई इसेउठावे उसे हमारेपास लेआवो बादशाह इनबातों को देखकर अति प्रसन्नहुये और अपनी बेटीका विवाह उसके साथ करदिया और बिवाह में बड़ी धूमधामकी और आधादेश अपना उसको देकर कहा कि दोपहरतक तुम तख़्तपर बैठकर हुकूमत कियाकरो और दोपहरभर हमहुकूमत राजसिंहासन पर बैठकर करेंगे अब थोड़ा सा वृत्तान्त लन्धौर खुसरो हिंदुस्तान का सुनिये कि जब लन्धौर बन्दरसरनद्वीपमें पहुंचा तो वहां पर नावको लंगर डालकर आपसेना समेत पृथ्वीपर उतरकर एक शो-भायमान स्थानपर डेराडालकर पड़े और कुछदिन वहां रहकर सेनाको आरास्ता किया और जिसमनुष्यको जो लायकसमझा वैसी आज्ञादेकर क़िले सबरसुबूर की तरफ रवानाहुआ और वह हालसबपर प्रसिद्धहै ॥

क़िले सबरसबूर पर ॥ पहुंचना खुसरो हिंदुस्तान मलिक लन्धौर पुत्र सादान का क़िले सबरसबूर पर ॥

लिखनेवालालिखताहै कि नैपूरशाह जिसको मलिक लन्धौर खुसरो हिंदुस्तान राजगद्दीपर बैठालकर अमीर के साथ मदायनकी तरफ चले

गये थे और उसको अपना स्थानापन्न बनाआये थे परन्तु बहुत दिनों से मलिक सारिफ़फ़ीरोज़ तुर्क और अहबूक खारजमी और मह्लील सगलियार इन सब लोगोंके मारे क़िला अपना बन्दकिये हुये बड़े दुःख में पड़े रहे आख़िरको सेनाने कहा कि क़िलेमें बन्दहोकर कबतक दुःख उठावें बाहरनिकलकर युद्धकरने को अरूढ़होवें मरें या मारें दोमें एक होगा इससे बैठरहना मरदानगी का कामनहीं है जैपूरशाह ने कहा कि जैसी तुम लोगों की खुशीहो हमको हरप्रकारसे मंजूरहै तब उसी समय शत्रुके पास एक दूतभेजा कि क़िले से हटकर पड़ो हमारे तुमारे युद्ध होगा तब तो उन लोगोंने अतिप्रसन्न होकर जैपूरकी आज्ञानुसार किया और दोनों तरफ युद्धका सामान होकर डंकायुद्ध का बजनेलगा और प्रातःकालको दोनोंतरफकी सेनायुद्धके खेतमें आकरयुद्धको अरूढ़हुई और प्रथम मह्लीलसगलियार खेत पर आकर युद्धकरनेको अरूढ़हुआ और उधरसे जैपूरशाह भी युद्धके खेतमें घोड़ा बढ़ाकर खड़े हुये परन्तु किसी की वार न चली थी कि एक बवंडल सामने से ऐसा उठा कि सर्वत्र अंधियारा होगया और उसके दूरहोने के पश्चात् एकसेना लन्धौर सम्हस्त की दिखाई दी कि जिसके देखनेसे सबलोग व्याकुल होगये आगे लन्धौर हाथीपर सवार सब शस्त्र धारण किये हुये भयानक रूपबनाये बैठाथा कि जिसके देखने से लोगों को बड़ा आश्चर्य होताथा जब उस स्थानपर आपहुंचा तो उतरकर मह्लील संगसार को ललकारा और ईश्वरका नामलेकर बोला कि मैंतेरा प्राणका गाहक आपहुंचा देखअभी मैं तुझको मारताहूं उसने यह सुनकर गुरज लन्धौरपर चलाया लन्धौरने रोककर एकवार ऐसीमारी कि फिर उसने सिर न उठाया और फिर लोगोंको ललकारा कि जिसको युद्धकरने की इच्छाहो वह आकर खड़ा होवे और अपनी बहादुरी दिखावे परन्तु यह हाल देखकर किसी ने कुछ उत्तर न दिया और किसी का मन न हुआ कि इसके सम्मुख जाकर खड़ेहोवे तब लन्धौरने एक बारगी हल्ला बोलदिया और सब सेना शत्रु की सेनापर जागिरी बहुतसी सेना शत्रुकी मारी गई और शेष सेनाने भागकर अपना प्राण बचाया और लन्धौर की सेना को बहुत खज़ाना और मालमिला कि हरएक मालदार होगया और खुसरोहिन्द अति प्रसन्नता के साथ क़िलेमें गया सब सन्देह मनसे दूर होगया और सभा नाचरंग की करवाई तबफिर मलिक सारिज और अहबूकखार जामी दो पहलवानों को तीनलाख सेनासमेत लेकर युद्धकरने को आकरपड़ा एक पहलवान का नाम फ़िरासफ़ीलदन्दां था दूसरे का मंगलवफ़ील जोर था और वे दोनों ऐसेथे कि हरएक मनुष्य देखकर डरता था युद्ध का डंका बजवाकर युद्धकरने को उपस्थितहुये लन्धौरने भी डंकेका शब्द सुनकर अपनी सेनासे भी डंका बजाने की आज्ञादेकर युद्ध का सामान

एकट्ठा करने लगे और प्रातःकाल होतेही दोनोंतरफ की सेना युद्धके
खेतपर आकर खड़ीहुई तो हिरासफील जोर ने आगेबढ़कर ललकारा
तब लन्धौर ने भी अपने हाथी आगे बढ़ाये और उसके सन्मुख आकर
कहा दुर्गाके साथ कहा कि लो अब वार चला देखूं कैसा बलतेरेहै तब उसने
एक तलवार जो चारसौ मनकी थी निकालकर लन्धौरके सिरपरमारी
खुसरो ने उस वार को बचाकर अपनी तलवार मियान से निकालकर
ललकार कर कहा कि खबरदार हो नहीं तो पीछे से कहो कि धोखे
से मारा अब मैं तलवार चलाताहूं रोको ऐसा कहकर वारचलाई तब
उसने ढालसे रोका और अपना सिपाहपना देखलाया परन्तु वहढाल
काटतीहुई कलेजे के पास आनिकली और उसने फिर सिर न उठाया
एकही वारसे प्राण निकलगया उसके भाईने जो देखा कि भाई हमारा
मारागया उस समय अपने घोड़ेको दौड़ाकर लन्धौर के सामने आया
और अति दुःखित होकर कहा कि तूने बड़ा ग़ज़ब किया जो मेरे
भाईको मार डाला देख तेरा प्राण अबकब बचताहै तेरी हड्डियों को
वैसा काटता हूं लन्धौर ने कहा कि संदेह न करो तुम को भी उसीके
पास भेजतेहैं कि तुम दोनों साथजाकर रहो अब वार चला उसने एक
तलवार खुसरो को खूबजोर करके मारी खुसरो ने उसको रोककर
वही रुधिरसे भरीहुई तलवार कमरसेनिकालकर जोमारी तो दोटुकड़े
होकर पृथ्वीपर गिड़पड़ा और तलवार साफ अलगहोगई अहबूक और
सारिजने जो देखा कि दोनों पहलवान मारे गये सब सेना लेकर एक-
बारगी शत्रुकी सेना पर आगिरे और उधरसे हिन्दकी सेनामें धावा
किया दोपहर बराबर तलवार चलाकी तब अहबूक और सारिज ने
बिचारा कि सेनामारी जाती है और शत्रु दबाये चलाआता है इस
समय यहांठहरना अनुचितहैतबडंका लौटनेका बजवाकर वहांसे भाग
कर और अपनी पराजयसे लज्जित होकर अपने स्थानपर चलेआये और
मलिक लन्धौर भी विजयका डंका बजवाते हुये अति प्रसन्नता के साथ
क़िलेमें दाखिल हुये और मलिक सारिज अतिव्याकुल हुआ महलमें जो
गयातो उसकी स्त्री और बेटीने कारण व्याकुलताका पूछा उसने कहा
कि लन्धौरके हाथसे प्राण नहीं बचा चाहता और किसी सरदार का
दिल उससे युद्धकरनेको नहीं चाहता कि प्रथम बारतो उसनेउस प्रकार
से पराजकिया कि जिसकी प्रशंसा नहीं करसक्ते ऐसी बहादुरी की कि
हम चारबादशाह मिलकर युद्ध करने को गयेथे परंतु विजय न पासके
और बहुतसी सेनामारीगई और दूसरे युद्धमें किमैंने तीनलाख सिपाह
लेकर चढ़ाई की थी परंतु लाख सेना और दो पहलवान मारे गये कि
उसके कारणसे अब एकसिपाही भी युद्धकानाम नहींलेताहै तिसपर भी
विजय न मिली सो अब पेटमारकर मरजानेके सिवाय और कोई युक्ति

नहीं सूझती है इनबातोंके सुननेसे उसकी बेटीको बड़ादुःख हुआ और कहने लगी कि जो आज्ञा होतो मैं लन्धौरको अपनी युक्तिसे बांधलाऊं और आपकोअपनी युक्तिदिखलाऊं सारिजने पूछा तू क्योंकर ऐसेकाम को करलावेगी उसनेकहा आपसे इससे क्या वास्ता जो मेरा जी चाहेगा वहकरूंगी परंतु उसकोपकड़ लाऊंगी उसने कहाकि इससे क्या उत्तम तूजा मुझे मंजूर है तूनेमसला नहींसुनाकि (अन्धाकेवलदोनेत्रचाहताहै) तब उसने एक खेमा जंगल के समीप खड़ा करवाया और अपने बदन को अच्छी तरहसे साफकरके अनेक २ प्रकारके कपड़े और जेवर पहिन कर चारसौ सहेलियों समेत उसखेमे में जाकर परी की तरह बैठी और सब सहेलियोंको गाने बजाने की आज्ञा दी और मलिक लन्धौर के दिलमें यहबात आई कि शत्रु तो अब पराजय पाकर चला गया है जब तक वह फिर न आवे तब तक जंगल में चल कर शिकार में चित्त को बहलावें इस विचार से क़िले से निकल कर जंगल की तरफ गया तोवहां जाकर देखा कि एकबड़ा भारी खेमाखड़ाहै और उसमें स्त्रियां गारही हैं समीप जाकर पूछा कि यह किसका खेमा है लोगोंने कहा कि सारिज की बेटी चित्त प्रसन्न करने के लिये आईहै लन्धौर उसके देखने के लिये एक पत्थर परजो उसी स्थान पर पड़ा था बैठगया और उसी की तरफ देखने लगा उसने परदेके आड़से लन्धौर की सूरत देखकर एक अति स्वरूपवान युवा स्त्री के हाथ एक गिलास में शराब उसके पीनेके वास्ते भेजा तब लन्धौरने पूछा कि उसने मुझे क्योंकर पहचाना उस स्त्रीने कहा कि जिस दिनसे युद्धस्थल में देखाहै उसी दिनसे आपके ऊपर मोहितहै यह सुनकर लन्धौर अतिप्रसन्न हुआ इतनेमें एक दूसरी लौंडी आई कि आपको मलका साहबा बुलाती हैं जल्दी चलिये नहींतो वे खुद आवेंगी तबतो लन्धौर अति प्रसन्न होकर खेमेके भीतर गया तोवहांदेखा कि एकस्त्री चौदहवर्षकी जवान अपना स्वरूप बनाये हुये तख़्त पर बैठी शराब पीरही है और चारसौ सहेली चारोंतरफ जिस प्रकारसे चन्द्रमाके चारोंतरफ तारे चमकते हैं उसी प्रकार से वे चारसौ सहेलियां बैठीथीं और परियां नाचगारहीथीं और हरप्रकार की प्यारी २ बातें कररहीथीं लन्धौर यह हाल देखकर चारों तरफ देखनेलगा तब उसने उठकर लन्धौरको तखतपर अपनी बगलमें बैठाल लिया अर्थात् फसानेका जालबांधा और कई गिलास शराब अपने हाथ से पिलाया और हरबार अपना लोभित होना उसको जिताया तब लन्धौर ऐसा काम के बस होकर बेहोश होगया कि किसी का कुछ विचार न किया और उसके गले में हाथ डालकर कहने लगा कि ऐ प्राणप्यारी तूमेरे क़िलेमें चलवहां तुझको बड़ा सुख मिलेगा यहां क्यों दुःख उठारही है उसने कहा इस समय दिनहै रात्रिको मैंचलूंगी और

सबरात्रि आपकेपास रहकर सुखको प्राप्त हूंगी लन्धौरने मंजूर किया और रात्रिको अपने पास बुलाया और हरचन्द वहांसे दिल उठने को न चाहताथा परन्तु लाचारीसे उठकर अपनेस्थानपर आया और अपने खेमेको सजाने की आज्ञा दी और आप रात्रिके आनेकी आशयमें बैठा जब रात्रिहुई लिबासपहिनकर उस मकानके पासगया और कामसे लोभित होकर व्याकुल होगया तब उसने दोगिलास शराब बेहोशी की पिलाकर बेहोशकिया तब चाहा कि बांधकर पिताके पासभेजें किवह अपना बदलालेवे परन्तु उसकी मृत्युनथी ईश्वरने उसके मनको फेरदिया कि संदूकमें बन्दकरके खारी समुद्रमें जो वहांसे समीपथा उस संदूकको डालदिया और अपने पितासे जाकर कहा कि मैंने तुम्हारे शत्रुको मार कर नदीमें फेंकवादिया और उससे तुम्हारा बदलालिया तबतो उसने अतिप्रसन्नहोकर युद्धका बाजाबजवानेकी आज्ञादी और युद्धका सामान इकट्ठाकिया और प्रातःकाल जब दोनों सेना युद्धके खेतमें आकर खड़ी हुई उससमय हिन्दकी सेना ने लन्धौर को जो उसस्थानपर न देखातो सब अतिव्याकुलहुये और लड़नेसे जी टूटगया और सारिजने युद्धमेंबि-जय पाकर बहुतसे मुसल्मानों को मारडाला और और सेनासे अपना बदला लिया और जैपूरशाह ने देखा कि सेना लन्धौर के न होने से व्याकुलहोरहीहै कि बिजय नहीं मिलसक्ती लौटनेका डंका बजवाकर फिर अपने क़िलेका दरवाजाजाकर बन्दकरलिया और लन्धौरकोढूंढ़ने लगे लन्धौर का हाल सुनिये कि वह संदूक जलपर लहर के धक्केखाता हुआ इधरउधर बहताचलाजाता था संयोगसे एकसौदागरकी नाव जो सिन्धसे आती थी मल्लाहों ने उस सन्दूकको पकड़लिया और वे खोजे सौदागरके हाथ बेचडाला उस अहमक़ने लेकर जो खोला तो उसमें एकमनुष्य बेहोशपाया उसको निकालकर पलंगपरलेटाकर चैतन्यकिया तब लन्धौर ने आंख खोलकर देखा तो नावपर एक पलंग पर बहुत से कपड़े बदनमें लपेटेपड़ाहै और न तो वह खेमाहै न वहस्त्री देखकर बड़े आश्चर्यमें होकर उस मनुष्यसे पूछा कि तूकौनहै और यह कौनस्थानहै और यहां मुझको इसनावपर कौनलेआया तब उसनेकहा मैं सौदागर हूं सिन्धसे माल बेचनेके लिये लेजाताहूं और आपसंदूकमें बहे चलेजाते थे मल्लाहोंने संदूकपकड़लिया हमने उससेलेकर खोला तो आपको उसमें बेहोशपाया निकालकर पलंगपर लेटाकर चैतन्यकिया इतनागुण मैंने आपके साथ कियाहै अब आपबतलाइये कि कौनहैं और किसने आपके साथ यह सलूककिया है लन्धौरने अपना सबवृत्तान्त उससेकहा तबवह भी मुसल्मान अपने धर्म में पक्काथा उसके पैरोंपर गिरपड़ा और कहा कि मैं आपको बहुतजल्द सरन्दीप पहुंचादूंगा और आपको किसी प्रकारसेदुःख नहोनेपावेगा लन्धौरने पूछा कि अबतुम कहांजावोगे और

मैं सानजूद्वीप को जाऊंगा
वहांसेफिरकर कबआवोगे सौदागरने कहा मैं सानजूद्वीप को जाऊंगा
और वहां कुछदिन रहूंगा इसप्रकारसे कईदिनों के पीछे नवकासानजू
में जाकर पहुंची नावको नदी में लङ्गरडाल उतरकर सौदागर सानजू
नगरमें जाकरठहरा संयोगसे एकदिन बाजारमें खुसरो सैरकेवास्तेगया
तोउसी रास्तेसे जहां वह कमान और अशरफियों के तोड़ेरक्खेथे और
सिपाही पहरेपर थे जानिकला तो सिपाहियों से पूछा यह कमान
किसकाहै और यहां क्योंरक्खाहै सिपाहियों ने कहा यह कमान बह-
रामका है जोकोई इसकमान को खींचेगा वह इन तोड़ों को पावेगा
और संसारमें प्रसिद्धहोगा लऋौर बहरामका नाम सुनकर अतिप्रसन्न
हुआ और पहरे वालोंसे कहा कि बहराम जिसका नाम है वहमेरा
नौकर है बहुतदिनोंसे उसका पता नहीं मिला था आज उसका पता
मिला यह कहकर कमानको उठाकर दोतीन बार घुमाकर अशरफि-
योंके तोड़ोंको लेकर उसीस्थान पर कंगालोंको लुटादिया पहरे वालों
ने जाकर सबहाल बहरामसे कहा बहरामने यहसुनकर कि वह कह-
ताहै कि बहराम हमारा गुलाम है क्रोधित होकर कई सिपाहियों
को भेजा कि जाकर उसको हमारेपास पकड़लावो जब वेलोग थोड़ दूर
गये तोदेखा कि वह आपही आताथा तबतो लौटकर बहरामसे कहा
कि वह खुदी आरहा है आपका इक़बाल उसको खींचेलाता है बह-
राम बैठक से निकलकर थोड़ीदूर आगेगया तोदेखा कि लऋौर चला
आता है दौड़कर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख
हुआ खुसरोने उसको छातीसे लगाया और अतिप्रसन्नताकेसाथ उसके
पेशानी को चूमलिया और दोनों खुशीसे बेहोश होगये मलिकशाईबयह
सुनकर कचहरीसे निकलकर उनकेपास आयातो देखा कि दोनोंबेहोश
थे तब गुलावआदिक छिड़ककर उनको होशमें किया तब बहरामसे सबहाल
पूछा बहराम पहिले तो अपनाहाल छिपाये था परंतु उस समय सब
अपना और खुसरो का सत्य बयान किया और उस छिपे हुये भेदको
खोलदिया शईबशाह ने जो खुसरो का नाम सुना तो उसके पैरों को
चूमकर अति प्रतिष्ठा के साथ अपने बैठके मेंलेआकर खुसरोको तख़्त
पर बैठाला और आप एक कुरसी पर अलग बैठा और नाचरंग का
सामान इकट्ठा करके सातदिन तक करवाते रहे सातदिन के पश्चात्
खुसरो बहरामको साथलेकर और बहुतसी सेनाभी साथलेकर सामान
के साथ सरन्दीपके साथ तरफ रवाना हुये ॥

वृतान्त साहबक़िरां (हमज़ा) का जिस समय मे परदे काफ को गये थे ॥

कि जब वर्षपूराहुआ तब असमानपरीके एककन्या उत्पन्नहुई जिसका
स्वरूप सूर्य्य के समान था उसे देखकर बादशाह और सब सरदार
लोग अति प्रसन्नहुये परंतु अमीर कन्याके होनेसे अतिलज्जित हुये तब

बादशाह ने खिलअत सुलेमानी देकर अमीर से कहा कि यह ईश्वर की रचनाहै इसमें मलाल की कुछ बातनहीं पुत्रया कन्या दोमेंसे एक ईश्वर देताहै यह आपका विचारबुद्धिसे विरुद्धहै तब अब्दुलरहमानने कहा कि ऐ साहबक्रिरां यह कन्याबड़ी प्रतापीहोगी किसब देवइसकी आज्ञामें रहेंगे और यह साहबकिरां काफकहलावैगी औरबड़ानाम होगा इन बातोंके सुनने से अमीरका सब मलालदूर होगया और चित्तअतिप्रसन्न हुआ और बादशाहने नातिनकेहोनेसे कईमहीनेतक नाचरंग करवाया और कङ्गाल फकीरआदिको रुपया अशरफी लुटाया और जब वह लड़की छःमहीने की हुई तो एकदिन अमीरने बादशाह से कहा कि जो कुछ आपने अबतक कहा उसको मैंने किया अब कृपाकरके मुझे परदेशनियां को भेजकर अपने वादेको पूराकीजिये तब बादशाहने कहा ऐ साहब-क्रिरां आपकी आज्ञासे हम बाहर नहींहैं और हर प्रकार से आपकी खातिरदारी हमको उचितहै और तुमारे रुखसत करनेमें कुछइनकार नहींहै परन्तु क्रिलेसईमें जो क्राफसे उत्तर तरफहै और हमारा कदीम क्रिलाहै उसमें दो देवखरचाल और खरपालनामसे दशसहस्र देवों समेत रहते हैं और दोनों बहादुर हैं जो मेरी विनय मानिये और आपका चितचाहे तो उनको मारकर मेराक्रिला छोड़ाते जाइयेनहीं जैसीआज्ञा आपदेवें वैसा हम लोगकरें हमलोग आपके सेवकहैं और किसीतरहसे बाहर नहींहैं अमीरने कहा कि हम आपके सेवक और मित्रहैं आपका कहना हमको हरतरह से मानना उचितहै लाइये सवारी मंगवाइये ईश्वर मालिक है वहां भी जाकर उनपापियों को मार कर आवें कि वह भी अपने ठिकानेलगें बादशाहने तखत मंगवाकर सबसामान इकट्ठा करके दशसहस्र देवोंसमेत तखतपर सवारकरवाकर सब देवोंको अमीर की सेवाकरने की आज्ञादे करभेजा अमीर वहांसे चलकर एक मैदान उत्तम देखकर जहांसे पांचकोस वह क्रिला बाक़ी था उतर पड़े और कहा कि यह मैदान युद्धकरने के योग्यहै जब यह खबर खरचाल और खरपालको पहुंचीतब वेदोनों बीससहस्र देवोंकी सेनालेकर युद्धकरने को आये अमीरने जबसेनादेखी तो उसमें दोदेव सेनासे हटकर खड़े थे जिनके रूप देखनेसे आश्चर्य मालूमहोताथा कि एकका कान तो गधेकी तरहथा और दूसरे का रूपही गधेकाथा पीछेसे मालूम हुआ कि यही दोनों सेनाके सरदारहैं इतनेमेंखरचालने शस्त्रधारण करके खेतमेंआकर ललकारा कि वह अफरेतको मारनेवाला कहांहै मेरेसन्मुखआवे अपनी बहादुरी दिखावै कि मैं उसे एकहीवार में मारकर काफके देवों का बदलालूं तब अमीरने उसके सन्मुख जाकर कहा कितू अपनी बहादुरी दिखला तबतो वह हंसकर कहनेलगा कि तुमपर पहिले मैं क्याबहा-दुरी दिखाऊं कि लोग देखकर हंसे और मुझे लज्जितकरें अमीरने कहा

इसी छोटे रूपपर तोमैं अफरेतका और उसके माता पिता का मारने
वाला कहताहूं और तू नहीं जानता कि मैं तेरे प्राणका गाहकहूं
और इसी तरवार से तुमारा प्राण जायगा यही बात तेरी भाग्य में
है तब तो उसने झुलझुलाकर एक तलवार अमीर के सिरपर मारी
अमीर ने तलवार को रोककर एक अकरब सुलेमानी की ऐसी वार
मारी कि वह देव तलवार समेत चार भाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा
खरचाल अपने भाई को मरा देखकर तलवार लेकर अमीरको मारने
को दौड़ा अमीर उसकी तलवार छीनकर कमर बन्द पकड़ कर दैमार
कर उसकी छातीपर खड़ा होगया और चाहा कि इसको भी मारकर
यमपुरीको पहुंचावैं परंतु उसने प्रार्थना की कि जो आप मेरा प्राण
छोड़ देवैंतोमैं सदैवआपकी आज्ञामें रहूंगा अमीरने उसका प्राणछोड़
कर कहा कि ऐ खरचाल तू मुझे परदे दुनियामें पहुंचा देगा या नहीं
उसने कहा कि आपकी आज्ञा सिर आंखोंसे मंजूर है परंतु आपथोड़ी
समयके लिये किले समीन में चलकर आराम कीजिये फिर जहां आज्ञा
दीजियेगा वहीं पहुंचादूंगा और जो आपकहियेगावहीकरूंगाअमीरतब
वहांसे चारदेवों के द्वारा बादशाहके समीपविजय पानेकाहाल भेजकर
आपशेषदेवों समेत किलेसमीनको गये तो वहांदेखकर अति प्रसन्नहुये
और एकबागके नहरमेंजाकर स्नानकिया और उसीमें तलवारका रुधिर
धोया और फिरजाकर तख़्तपर बैठकर कुछ मेवे खाये और उसबाग के
मेवोंको देखकर अतिप्रसन्न हुये आलस्य जो आई तख़्तपर पैर फैलाकर
बेखबरहोकर सोरहे खरचालने देखा कि अमीरइससमय बेखबर सोरहा
है अब मारनासलाहहै यहविचारकर तलवार सुलेमानी अमीरकेबगल
से उठाकर मियान से निकालकर अमीरपर एक हाथमारा परंतु वह
तलवार किनारे परलगी जैसाएक मसला है (कि जिसकोईश्वर न मारे
उसको कौन मारता) और जिसेईश्वर न जिलावे उसेकौन जिलासक्ताहै
और अमीरनेउसीसमय करवटलीतब खरचालने जाना कि अमीरउठते
हैं तलवार मियानमेंकरके अमीरके डरसेभागा अमीरजब जागेतो देखा
कि वहां नतो कोई देवहै और अकरबसुलेमानी भी नहीं दिखाईपड़ता
और हालबुरामालूमहोता है व्याकुलहोकर देवोंको बुलाकर पूछा कि
खरचाल और खुरदजाल कहां है बतलाया कि जंगलमीना में हैं परंतु
वहां कोई जा नहीं सक्ता बहुतप्रकारसे अमीरने देवोंसे कहा कि मुझको
वहां पहुंचादेव परंतु किसीने न माना और उसक़िलेका पता न दिया
आखिरकार सब देवोंको छोड़कर अकेले पैदल उसओतरफ चले सातवें
दिन वहां जाकरपहुंचे तो देखा कि एकपहाड़ बड़ाऊंचाहै जिसपरकोई
चढ़नेकी शक्तिनहीं रखता उसके पत्थरोंका रंगपुखराज की तरहलाल
है सूर्यकी रंगत उसके सामने लज्जित होती है और हरियाली ऐसी

शोभा देती है कि जिसतरह से किसीने बराबर से जमादी है और देखने से चित्त को अति आनंद होता है और उस पहाड़ के नीचे कोसों तक मैदान है और उस मैदान में एक चबूतरा बिल्लौर का है और उसकी सफाई जल से भी अधिक है उसपर खरचाल बेखबर बगल में अक़ारबसुलेमानी रक्खे हुये सो रहा था गोया उसकी मौत की निशानी रक्खी हुई है पहिले तो जाकर अक़ारबसुलेमानी को उठाकर हाथ में लिया तत्पश्चात् एक शब्द ऐसा किया कि पहाड़ आदिक हिलगये और खरचाल भी जागकर मारे डरके कांपने लगा और चाहा कि भागकर अपना प्राण अमीर के हाथ से बचावे त्योंही अमीर ने एक हाथ बढ़ाकर ऐसा मारा कि दो भाग होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और प्राण वायु की तरह उड़गया तब अमीर उसको मार कर तलवार को तकिया रखकर उसी चबूतरे पर बैठ रहा और उधर दो देवों ने यह वृत्तान्त बादशाह से जाकर कहा तो बादशाह ने अतिव्याकुल होकर अबदुलरहमान से कहा कि ऐसे समय में अमीर की सहायता करनी चाहिये तब वहां से कई देव तख़्त पर सवार होकर अमीर को ढूंढ़ते २ कई दिनों के बाद उस स्थान पर पहुंचे तो देखा कि खरचाल की लोथ दो भाग होकर पड़ी है जाकर अमीर से सलाम किया और बादशाह का संदेशा देकर हाथ पैर को चूमकर तख़्त पर बैठालकर गुलिस्तान अरम को ले आये बादशाह ने अतिप्रसन्नता के साथ अपने गले में लगाकर अमीर से कहा कि अब छः महीने के बाद आपको अच्छी तरह से दुनिया को भेजवा देंगे अमीर सहलसराय में गये और बादशाह के कहने पर सबर करके दिन गिनने लगे ॥

वृत्तान्त अमरू और हम्मरजाफ़गांमज़का ॥

लेखक और बड़े २ बुद्धिवान लोग उनलोगों का वृत्तान्त यों लिखते हैं कि जब क़िलेनिस्तान में भी भिक्षा चुकगई अमरू बड़े सन्देह में होकर कि अब किसी युक्ति से कहीं से भोजन की तदबीर करनी चाहिये ख़ुसरो नेस्ताजी से पूछा कि कोई और भी क़िला है कि वहां चलकर इनलोगों के हाथ से बचकर अपने साथवालों के बचाने की कोई युक्ति करूं उसने कहा कि यहां से पचास कोस पर एक रेहतासगढ़ क़िला है और उसके दो स्वामी हैं एक का नाम तहमुरसशाह है और दूसरे का साबित है और वह क़िला ऐसा मज़बूत बना है कि उसमें कोई क़ाबू नहीं पासक्ता है और वे दोनों सरदार भी बड़े बहादुर और लड़नेवाले हैं तब तो अमरू ने मुक़बिल से बुलाकर कहा कि तुम क़िले की रक्षा करना मैं क़िले रहतास के लेने की तदबीर में जाता हूं कोई युक्ति से उसको लेता हूं यह कहकर लिबासशाही उतारकर और बहुरूपियों की पोशाक पहिनकर क़िले से निकलकर उसी तरफ़ की राह ली डेढ़ पहर में क़िले रेहतास के समीप पहुंच कर कईबार क़िले के चारों तरफ फिरा परन्तु भीतर जाने की कोई युक्ति

नपाई तब वहांसे हटकर एकटिकरीपर बैठकर क़िलेमेंजानेकी तदबीर विचारने लगा कि किसयुक्तिसे क़िले में जाने का रास्ता पाऊं इतने में एक घसियारा कमरमें जाली खुरपा बांधे एक टट्टू पर सवार क़िले से बाहर आया तब अमरू साधु का भेषधारण करके उसके पीछे २ चला गया और कुछ न बोला जब वह घसियारा देखेसे पर जाकर टट्टूपरसे उतरकर घासछीलने लगा तो अमरूने पीछेसे ईश्वरका नाम लिया तब उसने फिरकर सलामकिया और पूछा कि आप क्यों ऐसा दुःख उठाते हैं और कहांसे आतेहैं अमरू ने कहा मुझको इसीमें आराम है तुझसे इसके पूछने से क्या प्रयोजन है हमको जहां ईश्वर आज्ञा देता है वहीं जाते हैं ईश्वरने तेरेपास आनेकी आज्ञादीहै अमरू तुझपर ईश्वरकी बड़ी कृपाहुई है अब सब तरहसे तुझे सुख प्राप्तहोगा यह कहकर दोखुरमे झोलीसे निकालकर उसको दिये और कहा कि ईश्वर का नाम लेकर इसको पाजा इससे तुझे बड़ासुख मिलेगा उससादे मनुष्यने उसको खा लिया दोघड़ीके बाद उस खुरमेने बेहोशकरदिया तब अमरूने और दारू बेहोशीकी उसको दी कि तीनचार दिन तक होश न आवे और घास के ढेरमें छिपाकर आपउसी टट्टूपर सवारहोकर जाली खुरपा कमरमें बांध कर क़िले की तरफ चला और जब दरवाजेके समीप पहुंचा तो थरथरा कर कांपनेलगा थकेमांदे की तरह हांफने लगा तब दरबान् ने दरवाजा खोलदिया और उसको किसीतरहसे न रोका तब अमरूने टट्टू की बागढीली करदी कि वह अपने घरकी राह पहचानता होगा तब वह टट्टू घसियारों के महल्ले में जाकर एक झोपड़ी के पास खड़ा हुआ तब अमरू टट्टूपरसे गिरपड़ा और कांपनेलगा घसियारे की जोरू झोपड़ी से निकलकर पूछने लगी कि मुनुवाके बाप खैरतोहै तब अमरू ने कहा कि जूड़ीआई है तब उसने अमरूको उठाकर बोरिये पर लेटाकर हाथ पैर दबाना शुरूकिया अमरूने दिनको तो सोकर काटा रात्रिको पसा- बनपीकर नवीनरूप धरा और आधीरात्रि तक वहां रहकर औलिषधर कर पहरेवालोंसे छिपता २ कैसतहमुरसशाहकी दीवारके समीप पहुंच करकमन्द लगाकर महलमेंदाखिलहुआ इतनीसमयके दुःखऔर फरेबसे अपना मनोरथ पूराकिया जाकरदेखा कि तहमुरस शाह दुशालाओढ़े एकपलंगपर सोरहा है (सत्यहैकिसोताऔरमुरदाबराबरहोताहै)और चिराग़ बराबरसे जलरहेहैं अमरूने केवलएक चिरागरहने दिया और सब बुझाकर उसके समीप जाकर दुशालेका आंचर जोउसके मुखपरसे उठाया तब उसने अमरूका हाथपकड़लिया अपना बदन न छूने दिया अमरू जो अपने हाथोंमें सदैव भालेमचरब पहिने रहता था इसीलिये उसका दुःख सहताथा हाथ खींचतेही भाला तहमुरस शाहकेहाथ में रहगया अमरू हाथ छोड़ाकर दश क़दमपर जाखड़ा हुआ तब तहमु-

रस शाहने कहा ऐ ख़ाजे अमरू तू मुझसे किसी प्रकार से सन्देह न करो मेरे पासचले आवो कि अभी ख़ाबमें हज़रत इबराहीमने मुझको मुसलमान करके तुम्हारे आने की ख़बर दीहै और तुम्ही अपने दिलमें विचारो कि मैं क्योंकर जानता और कौन तुमको इस रूपसे पहचान सक्ताहै वे बतलावें तुम्हारानाम जानसक्ताहै तब अमरू उसके पासगया मिलकर उसने कहाजो आज्ञाहै वह मैं करूं कि आपकीकृपा मेरेऊपर होवे तब अमरू ने सब अपना वृत्तान्त उससे कहा तब उसने कहा कि आपबेखबर महर निगारको इस क़िले में लेआइये और किसीतरहसे सन्देह न कीजिये यह क़िला आपहीकाहै सबरात्रि इसीप्रकार की बातों में काटदी और जबप्रातःकाल हुआ ततहमुरस शाहने अपने सरदारों से कहा कि आजमुझको हज़रत इबराहीमने मुसलमानकिया और यह क़िला मैंने अमरूकोदिया जिससमय उसकी सेनाआवे कोई मनानकरै वे हमारी आज्ञासे दरवाज़ाखोल देवेंतब अमरू अति प्रसन्नता के साथ विदा होकर अपने क़िलेमें आया और सब हाल सरदारों से कह कर मलका आदिकको सवार कराकर सुरंगकी राहसे निकलकर क़िलेर-हतासकी तरफचला परन्तु तहमुरसशाह को मुसलमान होनेकी ख़बर और अमरूके बुलाने का हाल साबितशाह ने जब सुनातो समीमवज़ीर को बुलाकर सब वृत्तान्त पूछा तो उसने भी वही सब हाल बयानकिया तबतो तहमुरसशाह को मुसलमान होने के कारण मारडाला और वज़ीर समेत दरवाज़ेपर सेनालेकर अमरूके आनेकी आसरे में बैठा कि जब वह आवे तो मारकर मलका मेहरनिगार को छीनलेवें अमरूइस हालसे बेख़बर सवारीपर मलका आदिक को सेना समेत क़िलेके दर-वाजे तक चलाआया जब अति समीपपहुंचगया तो आप अमरू आगे दरवाज़ा खोलनेकेलिये जोगया तो क़िले के दरवाज़े परसे बलकी तीर तलवार बाण आदिक मारनेलगे तब अमरू ने कहा मैं अमरू हूं तह-मुरस शाहने मुझे बुलाया है और मेरे साथ सुलह किया है शमीमने पुकारकर कहा कि ऐ दगाबाज़ यहां भी मेरे साथ फरेबकरने आया है तहमुरस शाह तो तेरे फरेब में आकर मारा गया ख़बरदा जो आगे क़दमबढ़ावैगा तो तू जानेगाजो मेराकहना न मानेगा तो तूभी मारा जायगा अमरूबड़े सन्देहमें हुआ कि पहिलाक़िला भी हाथसेगया और यह भी हाथ न आया लाचार होकर पलटा और विचारा कि जोहर-मर जाफरांमरज अभी पीछाकरेतो इतने दिनोंकी मेहनत वृथाजावे और शत्रु को प्रसन्नता प्राप्तहो लाचारपलटनेके सिवाय और कुछ न बनपड़ा बीचमें मेहरनिगारका खेमाखड़ाकिया और सिपाहियोंको सरदारोंसमेत उसकेपहरेपर मुक़र्रर किया दूसरेदिन शमीमने साबितशाहसे कहा कि एकपत्र हरमर जाफरांमर्जको लिखकर इसहालको जनाइये कि वहभी

आवैतो हम और वह दोनोंमिलकर अमरूको मारकर मलका मेहर-
निगारको छीनलेवें कि उसकीप्रशंसा होवे साबितशाह को उसकी बात
पसन्दआई और एकपत्र हरमरकेनामलिखकर सयादनाम सरदारको
दियाकि इसकोलेजाकर हरमरसेअतिशीघ्रही उत्तरलेआवो संयोगसेवह
सरदार तैहमुरसकाया तहमुरसने लड़कपनसे लेकरउसको पुत्रकीभांति
पालाथा इस सबबसे जिससमय से वह मारागया था लोहूके घूंटपीकर
रहता था परंतु साबितशाहके डरसेकुछ न कहताथा वह पत्रलियेसीधा
अमरूके पासचला आया उसपत्रको देकर सलामकिया अमरूने पत्रको
पढ़कर उसको गलेसेलगाया और अतिप्रतिष्ठाके साथ सम्मुखहोकरकहा
कि डरोनहीं हम साबितशाहको मारकर तुमको इस क़िलेका बादशाह
बनावेंगे और सब देशतुम्हें दूंगा अमरूने हरमज जाफरांसवर्की तरह से
पत्रका जवावलिखा कि आपनेबड़ा कठिनकार्य्य सिद्ध किया इसके बदले
में बादशाहनौशेरवांसे हमआपको बहुतकुछ दिलावेंगे और आजहम
कतारह काबुलीको भेजतेहैं कि यहरात्रिको क़िलेकी रक्षाकरें क्योंकि
अमरू बड़ाहोशियार और फरेबी है उससे बचालें और थोड़ी समय में
मैंभी आताहूं इस प्रकारसे लिखकर शाहज़ादोंकी जाली मोहरकरके
उसपत्रको सरदार को देकर आप कतारह काबुलीका भेष धारण करके
उसीके साथ क़िलेमेंजाकर सलाम करके साबितशाहके सामनेबैठा और
जब उस सरदारने पत्र साबितशाहको दियातो साबितशाहने पूछाकि
यह कौन हैं जो तुम्हारे साथ आयाहै और तू क्यों इसको ले आया है
उसनेकहा कि यह शाहज़ादोंके सिपाहियोंका सरदार है और शाह-
ज़ादे काबुलका मानजाहै और कतारहकाबुली इसका नामहै और यह
बड़ाबहादुर और लड़नेवाला तब साबितशाहने उसको अपनेगलेसे लगा
कर अपने समीप बैठाकर यथाउचित मेहमान्दारीकी जबरात्रि हुई तो
उसने साबितशाहसेकहाकि शाहज़ादोंने मुझसे कहाहै कि रात्रिकोतुम
आप क़िलेकी रक्षाकरना सोअब मैं जाकर दरवाजेपर बैठकर रात्रि भर
रक्षाकरूंगा और कलतो शाहज़ादेआपहीसेनासमेत आवेंगेयह कहकर
सय्याद सरदारको अपने साथलिया और जाकर दरवाजे पर बैठा जब
आधीरात्रिहुई तो सबपहरेवालोंको मारकर अपनीसेनाक़िलेमेंले आया
और सबको मारना शुरूअकिया जो मुसल्मान हुआ उसका प्राणबचा
शेष मारेगये शमीम और साबितशाह को मारकर उस क़िलेकी राज-
धानी सय्याद सरदार को दी और आप चारों तरफ से जिन्स मंगवा
कर आरामके साथ क़िले के बुरजों और दीवारों पर सिपाही रखकर
साथ आरामके निःसन्देह होकर बैठा हरमरका हाल सुनिये कि जब
सिपाहियों ने खबर दी कि क़िला खालीपड़ाहै कोई सिपाही दरवाजे
परभी नहीं दिखाईदेता नहीं मालूम आपही मरगये या क्याहुयेअमरू

सुरङ्गकी राहसे क़िले रहतासकी तरफ़गयाहै तब शाहज़ादे क़िलेमेंगये वहां किसीको न देखा तब वहांसे पलटकर खेमे में आकर एक बिनय पत्र बादशाहके नामलिखा कि हमको आठवर्षसे अधिकहुआ कि अमरूके पीछे ख़राबहैं अब या तो आप खुद आइये या किसी औरको भेजिये कि अमरूको उसके साथियोंसमेत आकर मारैं और मलकाको लेजावें यह सब हाल लिखकर बादशाहके पास सासनीको लेकर भेजा और आप क़िले रहतासकी तरफ चला कि चलकर अमरूसे युद्ध करैं वहां जाकर देखा तो ऐसा बना था कि पक्षी भी उड़कर नहीं जासक्ता और मनुष्य क्याहै लाचार होकर चारोंतरफ से क़िले को घेरकर उतरपड़े कि थोड़े दिन यहांरहकर अमरूका पतालेवें परंतु अमरूके डरसे सेना के लोग दिनको बारी२ से सोतेथे और रात्रिको सब जागते रहतेथे और उसके छापा मारनेसे बहुत ख़बरदार रहतेथे एकदिन हरमर बख़्तियारक सरदारों समेत शराबपीरहे थे अतारह सरदार गश्तघूमताहुआ उसी तरफ़सेआनिकला बख़्तियारकने उससेकहा कि अमरू इसप्रकारसे चालाकी करता है तुमसे यहभी नहींहोसक्ता कि अमरूको मकरकरके बांधलाओ उसनेकहा कि आज मैं अवश्य अमरूको बांधकरलाऊंगा जब रात्रिहुई तो क़िलेके पासगया परंतु कहींजानेकी राह न पाई आख़िरकार एकबुर्जकी तरफ गया तो वहां किसीका शब्द न सुना तो जाना कि पहरेवालेसो रहेहैं उसीतरफ कमन्दलगाकर ऊपर चढ़गया तो देखा कि सब पहरे वाले सोरहेहैं सबको मारकर नीचेउतरकर बरामदे में गया तो अमरू का पलंग बिछाथा परंतु उससमय अमरू मलका मेहरनिगार के साथ खाना खानेगयाथा आकर पलंगपर सोरहा और वह बहुरूपिया पलंगके पायेमें लिपटा पड़ाथा जब अमरू अच्छीतरह से सोगया तो निकलकर अमरूके पास आकर दारू बेहोशीदेकर अमरूको बेहोशकिया औरएक गठरी में बांधकर उसी रास्ते से जिधरसे आया था लेकर उतरा और हरमरके पास लेजाकररखदिया और कहाकि देखो मैं आजमें चालाकी करके अमरू को बांधलेआया अबतो मुझे शाबाशदीजिये तबतो हरमर चोपीन और बख़्तियारकको बड़ी खुशीप्राप्तहुई और मारेखुशीके कूदनेलगे और उसको ख़िलअ़तदेकर बड़ीप्रतिष्ठा और मानसन्मानसे आदरकिया और उसी सायत लुहार को बुलवाकर अमरू के पैरों में बेड़ियां और ज़नजीर से बंधवाकर कारागारमें डालदिया और प्रातःकालतक कोई न सोया जब अमरू सबेरा होते होश में आया अपने को क़ैद में पाया देखकर कहने लगा राम राम कैसा बुरा स्वप्न देखता हूं हरमरने सुन कर कहा ऐ पापी यह स्वप्न नहीं है सत्य है तू जागता है यह तेरी मक्कारी का फलहै हज़ारों मनुष्यों को तूने दुःखदिया है देख कैसाबदला पाता है अब तेरा प्राण कब बचता है अमरू ने कहा आपजानते नहीं

कि मैं बली हूं मैं कब कैदमें रहताहूं और कौनमुझे कैदकरसक्ता है तू अपने वास्ते कांटे बोता है आराम से बैठा नहीं रहा जाता अब जब मैं छुटूंगा तो एकको भी जीता न छोडूंगा हरमरने कहा अबभी तुझे बचने और छूटने का भरोसाहै कौन तुझे मेरे हाथसे छोड़ावैगा अमरू ने कहा मैं ईश्वर के भरोसेहूं वही आकर मुझे छोड़ावैगा मैं तुमलोगों से किसी तरह से नहीं डरता जो तेरे जीमें आवै वह तूकर कुछ मेरे साथ नेकी न कर हरमर ने अमरू की ऐसीबातें सुनकर क्रोधितहोकर जल्लादों को बुलाकर आज्ञादी कि इसको अभी लेजाकर मारो और इस के सिरका बोझा उतार देवो॥

आना नारंजीपोश देव का और अमरू को क़ैद से छुड़ाना॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जिससमय जल्लादअमरूको मारनेके लिये चबूतरे पर लेगया और तलवार मियान से निकालकर उसके समीप आया तब अमरू ने देखा कि अबकोई सूरत बचनेकी नहीं है तबमनमें हज़रत खिज़र का स्मरणकिया और कहा कि इस समय जो मेराप्राण बचावै तो पांचकौड़ी की रेवड़ियां लेकरनदी के तीर जाकर चढ़ाऊंगा बख़्तियारक ने जो अमरू के ओंठ हिलते देखे तो हरमर से कहा कि आप जल्लाद को शीघ्रही आज्ञा दीजिये कि अतिशीघ्रही उसको मारे नहीं तो मंत्रपढ़कर छूटकर भागजावेगा फिरहम लोगों को बड़ा दुःख देगा देखिये वह मंत्रपढ़ रहाहै उसके मंत्र में बड़ागुण है फिर उसको किसी का दुःख न रहजायगा हरमर ने जल्लादों से दूसरीबार आज्ञा दी तब जल्लाद ने जाकर अमरू से पूछा कि जो कुछखाना पीनाहो खा पीले थोड़ी देरमें तू माराजायगा मारनेवाला आता है अमरू ने कहा कि इस खाने के बदले दुःख और क्रोध खाचुके अबकुछ खाने पीने की इच्छानहींहै तुमअपना कार्य्यकरो और कुछबातें न करो जल्लाद तीसरी बार आज्ञा लेकर अमरू के मारने को आया अमरू तो सिर झुकाये बैठाथाउस समय कहाकिऐ जल्लादतीक्ष्ण तरवारसे मुझेमार कि एकही बारमें कटजावे कि मुझको दुःख नहोवे तेरीतलवार की धार तो मुड़ी है तू क्या मुझे मारेगा जल्लाद अपनी तलवार देखनेलगा अमरूने सांस पाकरहाथ पृथ्वीपर टेककर दोनोंलात फैलाकर ऐसी दोलत्ती मारी कि लोटन कबूतर कीतरह लोटगया औरउसकेदुःखसे उठनसका और चारों तरफ से शब्दहोनेलगा कि मारा२ हरमरने जाना कि अमरू मारागया बख़्तियारक ने कहा नहीं साहब अमरूने जल्लादको मारा है जल्लाद हारकर मारागया हरमरने कहा कि बड़ा दुष्ट और चालाक है कि मरते२ एकको लेडाला देखोतो जल्लादको कैसाबनायाहै हरमरने दूसरे जल्लादको भेजा वह तलवार लेकर अमरूको मारने आया और तल- वार मारनेके लिये उठाई तब उस समय प्राणसे निरास होकर नेत्रोंमें

आंसु निकल आये और मुख सुपेद होगया इतने में एक सिपाही हरमर के पास आया और सलाम करके कहा कि मैं खाम जीम सुलतान मुचनाल शंमाम नादू बादशाह तुरकिस्तान का सरदारहूं नौशेरवां ने हमको खबरदेने को भेजा है कि बादशाह हमारे आपकी सहायता के लिये अति शीघ्रही आते हैं तबतो हरमर बहुत प्रसन्नहुये और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की यह सब बातें कहकर उसने अमरू की तरफ देखकर पूछा कि वह कौन है जो तलवार के नीचे सिरझुकाये हुये अपने प्राण को देकर बैठा है हरमर ने कहा यही अमरू मक्कार है जिसका तुमने नामसुना होगा इसने हमलोगों को बड़ादुःख दिया है कल ख़तारह सरदार चालाकीकरके इसको बांधकर मेरेपास बहुदिनोंके दुखउठाने के पश्चात् लेआया परन्तु इस समय भी जल्लाद का प्राण एक दोलत्ती मारकर लिया है अबदूसरे जल्लाद को भेजा है कि उसको मारै तब उस सरदार ने कहा उसके मारने में भी बड़ी युक्ति है कि नतो कोई हथियार इसकेपास है न और कोई वस्तु परंतु प्राणके देनेका दलहै इससे जो बनपड़ेगा वही करेगा परंतु मैंने ऐसे मनुष्यों को माराहै कि हजारों मनुष्यों ने देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया है मुझे आज्ञा होजावे तो एकही बारमें मारकर अपने बल और युक्ति का तमाशा आपको दिखाऊं हरमर ने कहा बहुत अच्छा उस जल्लादको अमरूके पास से बुलालिया और उसको मारनेके लिये भेजा उस सरदार ने अमरू से कहा कि सिरझुका अमरू ने कहा कि सिरतो मैं झुकाये बैठाहूं तू समीप आकर मार उसने कहा क्यामैं भी उस जल्लादकी तरह पागलहूं कि तेरेपास जाकर प्राणदूं तू उसीतरह मुझे भी लातोंसे मारतो मैं क्या करूंगा तब अमरू बड़ेदुःख में हुआ कि यह अवश्यकरके मारेगा यह विचार करके प्राणसे अतिनिरास होकर रोनेलगा तब उससरदार ने यूनानी भाषामें कहा कि मैं नक़ाबदार की सेनाका सरदारहूं तुझे छोड़ाने के लिये आयाहूं दुःख न कर मैं अभी तुझको छोड़ाकर लेचलताहूं पहिले तो पैरोंको फैला कि तेरी बेड़ियां काटकर इस दुःख से छुड़ाऊं फिर तुझे गरदन पर बैठालकर यहां से निकालले चलूं और देख कैसी युक्तिसे लेचलताहूं यह सुनकर अमरूके प्राणमें प्राण आया मानों फिरसे उत्पन्नहुआ अमरूने ईश्वरका धन्यबाद करके पैरको फैला दिया उस सरदार ने एक तलवार ऐसी मारी कि दोनों पैरों की बेड़ियां एकदफ़ा कटगईं और फिर अमरू को गरदनपर लेकर भागा इस शीघ्रता से भागा कि उसका चिन्हभी न विदित हुआ सेनामें बड़ा शोरहुआ चारोंतरफसे सवार औ पैदलतलवार खींचकर दौड़े परंतु उस सरदारने खड्गलेकर जिसको एक हाथमारा फिर उसने शिर न उठाया और अमरू को इसतरह शत्रु की सेनासे लेभागा कि उसकी गर्दभी न

मालूम हुई जिससमय जंगलमें आया अमरूको कान्धेसे उतारकर कहा कि अब ईश्वर मालिकहै तुम अपने क़िलेमेंजाओ और मैं अपनेघरजाताहूं और प्रणाम करताहूं अमरूने कहा थोड़ीदेर ठहरो मैं भी तुमारे साथ चलताहूं वह बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धिनहीं जो तुमारे पास एकक्षण भी ठहरूं अगर थोड़ीदेरमें तू नक़ाबदारका पता पूछै तो मैं क्याबतला दूंगा तुमसे अपना पीछा क्योंकर छुड़ाऊंगा यह कहकर जंगलकीतरफ चलदिया और अमरूको वहांसे बिदाकिया अमरू अपने क़िलेमें निस्सन्देह पहुंचा देखैं तो सब छोटे बड़े ईश्वर से प्रार्थना कररहे हैं कि हे ईश्वर अमरू को कब दिखलावेगा इतने में तो सबकी दृष्टि अमरू पर पड़ी तो ईश्वरको धन्यबादकरके जोजो मानता मानीथी पूरीकी मक्का-मेहरनिगार जो अमरूके पकड़जानेसे अत्यन्त दुखीथी इसके आनेसे इस तरह प्रसन्नहुई जिसतरह मुर्दासजीव हो मानो यहांतो देशका राज्य पागई अमरूको निकट बुलाकर रोनेलगी और उसके ऊपर जवाहिर नेवछावर करके ग़रीबों को बांटे और एक सप्ताहतक ख़ुशीका नाचरंग करवाया हरमरने बख़्तियारकसे पूछा कि वह कौनथा जो अमरू को लेगया और मुझको धोखादेगया बख़्तियारक ने कहा कि अमरू सत्य कहता था कि ईश्वरके भक्तमारे नहीं जासक्ते और किसीके बन्धनमें भी नहीं आसक्ते उनकी सहायता ईश्वर आपकरताहै और प्रत्येक स्थानपर उनके रक्षक रहते हैं तब हरमर चुपहोरहा क़िलेवालों का वृत्तान्त सुनिये जब उनके पास भोजनमात्र को भी न रहा तब आदीसरदारके सायहोकर अमरूसे कहा कि हमारे पास अब कुछ नहींहै तब अमरूने कहा अब और कोई क़िला लेना चाहिये सय्याद ने कहा कि यहां से सलासल हिसार नामे एक क़िलापांच मंज़िल पर अतिउत्तम है और वहां के बादशाह का नाम सलासल शाहहै बहबड़ा शूरबीर है अगर जीचाहै तो वहां जाकर रहिये अमरूने कहा कि अच्छामैं जाताहूं तुम इसक़िलेमें होशियार रहना मैं विचार करके उसके लेनेकी कुछ युक्ति निकालता हूं यह कहकर पोशाक बादशाही उतारकर और पुराना पहिनकरक़िलेसे बाहरआया और ऐसीशीघ्रतासे चला कि एक रात्रि दिनमें सलासल हिसारमें जापहुंचादेखा तो क़िला बहुत उत्तमहै और असबाबक़िलेमें इकट्ठाहै तब विचार करनेलगा किसयुक्तिसे इसक़िलेको पावें इतनेमें एकजवान चौदहपन्द्रहबर्षका घोड़ेपरसवार शाहानालिबास पहिनेहुये हाथपर बाज़लिये निकला और सौ सवार और पैदल और सरदारआदि सबसाथ अच्छी२ बातें करतेचलेजातेथे अमरूनेबुद्धिसेबिचारा कि अवश्य यह यहांका शाहज़ादा है जब देखा कि सवारी दोकोस क़िलेसे बढ़गई अमरूने साधूका भेष धारणकिया और सुथानी की टोपी देकर चारपांच छड़ी हाथमें लेकर सवारी के पीछे लंगोट बांधकरचला

और शाहजादेके सामने जाकर यों कहा कि आजईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि उनकेभक्तोंसे मुलाक़ात हुई आजकुछ साधुको भी मिलजायगा शाहजादा साधुको देखकर अतिप्रसन्नहुआ और घोड़ेको रोककरपूछने लगा कि आप कहांसेआते हैं और कहां जाइयेगा साधूने कहा न पृथ्वी से न आकाशसे एक नवीन दुनियां से, साधूकाभी कहीं स्थान होता है आज यहां कल वहां जो कुछ ठिकाना हो तो बाबा आप को बताऊं शाहजादे ने कहा जोआपने अपने मुखारविन्द से कहा वह सब सत्यहै परंतु संसारमें आकर कोई अवश्य स्थान होताहै रात्रिके वासकेलिये दो हाथ पृथ्वी अवश्य चाहिये बनेहुये शाह साहब बोले कि साधू तो सदैव बे नाम और निशानके होतेहैं इनबेचारोंको स्थान कहांप्राप्त होता है परंतु नामके लिये बुग़दादमें मेरीकुटी है तब शाहजादे ने पूछाआपका नाम क्याहै उसनेकहा कि मुझेलोग शादानीकलन्दर कहते हैं परंतु मैं सौदाई कलन्दर हूं तबतो शाहजादा साधू की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि शाह साहब आप चलकर कुछ दिन मेरे स्थानपर रहिये यह देशभी देखनेके योग्यहै साधूनेकहा बहुतअच्छा साधूको क्या जहां चित्त लगजावे वहीं रहजाता है तब पूछा कि बाबा तूने तो मेरा नाम निशान पूछलिया अपनाभी बतलाइये उसनेकहा कि मेरा नाम महमूद है सलासल शाहका पुत्रहूं उसी की कृपासे यहसब है तबतो साधुने कहा कि बाबा तू सैर और शिकारकर आमैं चलकर क़िले के दरवाजेपर बैठूंगा और तेराआसराकरूंगा जहबगतो उसीजगहसेउस साधूको लेकरपलटा और क़िलेमें आकर अपने दीवानखानेमें साधूका आसन लगवाया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होकर कहा कि आप बैठिये मैं एक कार्य को जाताहूं अभी थोड़ी समय में आताहूं आपको हुक्का पानी की आवश्यकता होतो मेरेनौकर आपकेपास रहेंगे इनसे मांगलीजियेगा साधूनेकहा बहुतअच्छा आपजाइये परंतु आनेमें अधिककाल न व्यतीत कीजियेगा और ऐसाकौनसा कार्य्य है कि साधू से भी नहीं बतलानेके योग्य है जो कुछ सन्देह नहो तो बतलाइये कि मैं भी उसे जानूं बहमनने कहा कि मैं इस समय दोचार गिलास शराब के पीता हूं और आप जानते हैं कि अमल एक शत्रु है परन्तु आपके सन्मुख पीना अनुचित है इसलिये जाता हूं और अतिशीघ्रही पीकर आताहूं तब उसबने कहे साधुने कहा कि बाबायहीं मंगवाइये मैंभी दो चारगिलास लेऊंगा और अपने चित्तको प्रसन्नकरूंगा और साधुके लिये तो इधहै कभी २ उसको पीलेते हैं तब उसने शराब मंगवाकर दोएक गिलास उस साधूको दिये और शेष उसनेपिये साधू जो पीकर मज़ेमें आया तो अपने इतारेको झोलीसे निकालकर गाने और बजानेलगा और सबको लुभानेलगा और प्रसिद्धहै कि अनहूका बाजा

मुर्देको जिलादेताथा सब लोग अतिप्रसन्नहुये और हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करनेलगे संयोगसे मनसूर सरदार दोसिपाहियों समेत उसी रास्तेसे आनिकला शाहज़ादे को सलाम करके पूछा कि ऐ साधूकहां से आतेहो और कौनहो और किसदेशसे आये हो बहमनने सब हाल बयानकिया तब पूछा कि इनका नाम क्या है और यहां क्यों ठहरे हैं बहमनने कहा कि शयदानी कलन्दर इनका नाम है साधू है जहांजी चाहता है वहां रहते हैं मनसूर दौड़कर उससे लपटगया और अपने सिपाहियोंसे कहा कि मुशकैं इसकी बांधलो और इसको अपने आधीन करके हमारेसाथ लेचलो उन सिपाहियोंने अपने स्वामीकी आज्ञामान कर उसको बांधलिया शाहज़ादे ने बहमनसे कहा क्यों बाबासाधुको घरमें टिकाकर ऐसेही मेहमानी की जाती है वाह बड़ी कृपा आपने की इसीका नाम इन्साफ है तब शाहज़ादेने क्रोधकरके मनसूरसे कहा कि इस साधू ने तेरा क्याबिगाड़ा है जो इसको पकड़ कर यह दुःख दे रहा है मनसूर ने कहा कि नहीं जानते यह वह साधु है कि जिसने सैकड़ों अमीरों को फ़क़ीरकरदिया है आपने सुना होगा अमरू मक्कार यही है नौशेरवां बादशाह का नाकमें दम है आख़िर कार बादशाह सलासलके पासलेजाकर कहा कि अमरूमक्कार हाज़िरहै जो आज्ञाहो वह कियाजावे सलासल ने कहा उसको मेरेपास लेआवो जब अमरू आयातो सलासल शाहने कहा कि ऐ अमरू मैंतेरेगानेकी बड़ीप्रशंसा सुनताहूं बहुतदिनोंसे तेरा गानासुननेकी इच्छा रखता थाआजतो सुना अमरूने कहा कि मेरे हाथतो बंधेहैं क्योंकर दोतारा बजाऊंगा बादशाहने हाथखोलवादिये तब अमरूने दोतारा बजाकर ऐसागाया कि सब मोहित होगये तब बादशाहने मनसूर को आज्ञादी कि इसको अपने पास रक्खो कुछ हाथबांधने की ज़रूरत नहीं और इसको दुःख न देना कलजब हम इसको बुलावेंतो लेआना मनसूरने अमरूको लेजा कर एक कोठरीमें बन्दकिया तब अमरू अपने चित्तमें विचारने लगा कि हमारी तो यह गति है क़िले में सेना की नहीं मालूम क्या गति होगी इसी विचार में था कि आधीरात्रि को मनसूरने दरवाज़ा खोल कर अमरूको निकाला और उसके पैरों पर गिरपड़ा कि जसाकीजियेगा मैं आपको पहचानता न थाँ परन्तु जिसदिनसे इबराहीम ने मुझे मुसल्मान किया है और आज्ञा दीहै कि अमरू यहां आवेगा और तू उसके देखने से बड़ा सुख पावेगा इसलिये तू उसकी सहायता करना तभी से आपकी तालाश में रहता था और जो मैंने यह दुःख आप को दियाहै केवल इसीलिये कि अच्छीतरहसे जानलूं कि अमरूहै या और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आप का सेवक हूं जैसी आज्ञादीजिये वह करूं तब अमरूने उसको छातीसे लगाकर कहा कि

किसी युक्तिसे यह क़िला लेनाचाहिये कि मेरा मुसल्मानी यहां आकर थोड़ेदिन आराम से रहें तब मनसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाहको पकड़कर क़िलेको अपने आधीन करलीजिये अमरूमक्कारी लिबास पहिनकर मनसूर के साथहोकर सलासलशाह के सोनेके स्थान पर गया और उसको बेहोशकरके मनसूर को सौंपा और आज्ञादीकि खबरदार इसको अपने पासरख भागने न पावे यह सोनेका पलंगहै और आप उसका रूपधारणकरके छपरखट पर सोरहामानो खुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहिले लहमन से कहा ऐ पुत्र आज रात्रिको हजरतइब्राहीम ने मुझको मुसल्मान कियाहै तूभी मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा परन्तु उसने न माना तब अमरू ने उसको सूलीदिया तत्पश्चात् सलासलशाह को एकान्तमें बुलाकर कहा कि तू मुसल्मान हो तेरेलिये अच्छा होगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरीसूरत का मनुष्य गद्दीपर बैठाहै और मुझको बेधर्म करताहै शायद मेरी राजधानी लेनेकी इच्छा रखताहै अमरूसे कहने लगाकि तू कौन है अपना वृत्तान्त बतला और मेरीगद्दीपर क्यों बैठाहै किसने तुझे यहां आनेदिया है अमरूने कहा और तो मैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मानहोकर अपना प्राणबचा तबतो वह बुरी २ बातें कहनेलगा तब अमरू ने उसको भी उसी समय सूली दी और मनसूरको अपना नायबबनाकर गद्दीपर बैठाला और छोटे बड़ोंसे नजरें दिलवाकर आज्ञा दी कि जोकोई मनसूरशाह की आज्ञा में न रहेगा वह माराजायगा तब सब मनसूर के बस होगये और अमरू ने सब राजधानी मनसूर को देकर आज्ञादी कि तुम चारोंतरफ से गल्ला मोल लेकर क़िलेमें इकट्ठा करो मैं जाकर मलकामेहरनिगारको सेनासमेत लेकर आताहूं अमरू तो अपने क़िलेकी तरफगया मनसूरने अमरूकी आज्ञानुसार गल्लामोल लेकर क़िलेमें रक्खा अमरूने क़िलेमें आकर सब सरदारोंसे क़िलेलेनेकी खुशखबरी सुनाकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रिगये सबसेना समेत क़िलेसे निकलकर क़िलेसलासलहिसार की राहली पांचदिन की राह दोदिन रात्रिमें जाकर पहुंचे और क़िले में दाखिल होकर क़िलेको बन्दकरके आरामसे बैठे तीसरेदिन हरमर के सिपाहियोंने हालदियाकि अमरू मलकाको सेनासमेत क़िलेसलास-लहिसार में दाखिल हुआ और इसक़िले को छोड़दिया हरमरने इस हाल को सुनकर बड़ा दुःख किया और मुन्शी को बुलाकर अपना सब हाल और अमरूका क़िलेसलासलहिसार में जाने का लिखवाकर एक सिपाहीके हाथ बादशाह नौशेरवांके पासभेजा और अतिशीघ्रही जाने की आज्ञादी ॥

अमीरका आना पहाड़काफ से दुनियां में ॥

पहिले इसक़दरबयान होचुकाहै कि अमीरने खरपाल और खरचालके

मारनेके पीछेबादशाहकी बिनयसे लाचारीहरजे छःमहीने और रहना क़बूलकिया था एकदिनरात्रिको आसमानपरीके साथमहलमें पलंगपर सोरहेथे स्वप्नमेंदेखा कि मलकामेहरनिगार सूखकर कांटाहोगईहै और सबस्वरूप जातारहाहै और उसकीआंसूसे नदीबहरहीहै रोरोकरअमीर से कहती है कि क्यों साहब मैंने कौनसा अपराध किया था जो आप मुझे दुनियासे छोड़कर परदेशक़ाफ़पर जाकर परियोंके साथमज़ाउठाते हो अफसोस कहां पृथ्वी कहां आसमानजो परहोतेतो मैं भी उड़जाती और इसदुःखसे आरामपाती अमीर उचककर जागउठे और कहनेलगे देखोकहां परदेशक़ाफ़औरकहां दुनिया और मैं मेहरनिगार यह कहकर ज़ोरसे चिल्ला २ कर रोने लगे और प्राण को देने लगे आसमानपरी भी अमीरका रोना सुनकर चौंककर जागउठी और अमीरसे पूछनेलगीकि क्या हुआहै जो इसतरहसे रोतेहो और दुःख उठातेहो अमीरने कहा मैं अपना हाल क्याकहूं ऐसा दिलचाहता है कि अपना गलाकाटकर प्राणको त्यागकरदूं तब उसनेकहा कुछतो बतलाइये क्यादुःख आपकोहै अमीरने कहा ऐ आसमानपरी ईश्वरकेलिये अति शीघ्र मुझेपरदेदुनिया को भेजदे जिस सूरतसे हो मुझे वहां पहुंचादे इस समय मैंने मेहरनिगारको अतिव्याकुल पाया है और मेरीजुदाईसे उसे बड़ादुःखहै आसमानपरी ने पूछा कि मेहरनिगार कौनहै उसका हाल तो मुझेबतावो अमीरने कहा कि नौशेरवां बादशाह की बेटी और मेरी प्राणप्यारी है जो स्वरूप और नम्रता में संसारमें एकहै और मेरे ऊपर मोहित है तबतो आसमानपरी ने कहा यह बातहै किसी और सेभी आप फंसेहैं तब क्यों न जाना २ पुकारिये और उसके लिये क्यों न प्राण दीजियेगा सुनोतो अमीर सत्यकहना क्या मेहरनिगार मुझसे भी अधिक स्वरूपवान और सुन्दर है तुम मेरे होते उसकी इच्छाकरते हो और हर प्रकार से उसपर मोहितहो अमीरके मुखसे निकलगया कि उसकी तो सहेलियां तुमसे अधिक स्वरूपवानहैं और महासुन्दरहै तबतो आसमानपरी क्रोधितहोकर कहनेलगी क्या तू मुझेमेहरनिगारकी सहेलीसेभी निकृष्ट जानताहै भला तू यहांसे जायगा तो जानूंगी अब तू किसीतरह से मुझसे छूटकर जानेपाता है तब अमीर ने कहा जो तू मुझे रोकेगी तो तुझको मारकर किसी न किसी तरहसे मैं वहां जाऊंगा आसमानपरीने कहाकि यह घमण्ड आप न कीजिये कि मैं इबराहीमपैग़ंबरकी औलादहूं मैं भी हज़रतसुलेमान की औलादमेंसेहूं तुमसे किसीप्रकार से कमनहीं हूं जब तुम मुझे मारने की इच्छाकरोगे तो मैं भी तुमको मारूंगी अमीरको इसबातके सुनने से बड़ाक्रोध हुआ तलवार खींचकर आसमानपरीपर दौड़े वहभी तमंचा खींचकर अमीरके ऊपरआई और मारनेको हाथ उठाया सहेलियोंने बीचबचावकरके दोनों को हटादिया

यह हाल बादशाह को पहुंचा बादशाह व्याकुल होकर दौड़कर आये और अपनी बेटीपर क्रोधितहुये कि तू उसकी बराबरी करतीहै ईश्वर सेभी नहीं डरतीहै और न मेराही डरहै सामनेसे दूरहो बेटीको डांट कर अमीरको अपने महलमेंलेगये और कहा कि आपको सवेरे दुनियां को भेजदूंगा जब प्रातःकालहुआ बादशाहने सब सामानमार्गका देकर अमीर को तख़्त् पर बैठालकर चारदेव अतिशीघ्र उड़नेवालोंको बुला कर आज्ञादीकि अतिशीघ्र अमीरको परदेदुनियामें लेजाकर पहुंचाओ यह हाल आसमानपरीको पहुंचा कि बादशाह ने अमीरको परदेदु-निया मेंजानेकी आज्ञादी है और सब सामान समेत यह अभी जाता है तब वह बेटीको गोदमें लेकरआई देखा कि अमीर तख़्त्पर सवार है रोरोकर कहनेलगी कि ऐ अमीर आपको मेरा मोह नहीं है तो इसबेटीका भी मोहनहीं लगता ईश्वरके लिये मेरा अपराध क्षमाकरो अब ऐसा कभी न होगा अमीरने कहा मैं तुमसेभी नाराज़ नहीं और बेटीसेभी मोहब्बत है परन्तु मुझे दुनियामें जाना बहुत अवश्य है कि मैं केवल अठारह दिनका वादाकरके आयाथा और यहां इतनेवर्ष व्यतीत होगये और इसीकारण मैं किसीको साथ भी नहीं ले आया सब लोग बड़ेसन्देहमें होंगेकि अमीरमरगये याजीतेहैं और फिर जब तुम बुलवा-ओगीतो आवेंगे और तुमतो आपही मेरेपास आसक्तीहो जब दिलचाहे तभी मेरे पास चलीआना और अपने साथ बेटीको भी लेतीआना यह कहकरसबको सलामकरके रवानाहुआ आसमानपरी मकानपर आकर रोने पीटनेलगी संयोग से उसीसमय सलासल परीज़ाद उसके पास आया और आसमानपरी को व्याकुल देखकर पूछनेलगा कि क्यों तूने ऐसी सूरत बनाई है उसने रोकर कहा किआज बादशाहने हमज़ाको परदेदुनिया को भेजदियाहै जो तुम जाकर देवोंसे धमकाकर कहदेवो कि अमीरको लेजाके बियाबान हैरतमें छोड़देवें और दुनिया को न लेजावें तो मैं बहुत खुशहूंगी और जो मेरी आज्ञा नमानेंगे तो खाना पीना छोड़दूंगी और जो हमज़ा तुमारेआनेकाकारण पूछै तो कहना कि आपसे बिदाहोने आयाहूं आपको छुपाने खींचलिया है सलासलने वैसाही कियादेवोंको समुझादिया और देवोंने आपसमें सलाह की कि जो असमानपरीकी आज्ञानमानेंगेतो परदेकाफमें रहना कठिनहोगा और इसकी आज्ञा न माननेसे लोग लज्जितकरेंगे राचिहोते बियाबान हैरतकेपास तख़्तको उतारकर सबने आरामकिया अमीरने पूछायहां क्यों तख़्त उतारा है देवोंने कहा कि भूखे प्यासेहैं कुछ खापीलें तोचलें अमीरने कहा अच्छा तुम कुछ खापीलो और हम भी निमाज़ पढ़लेवें कि ईश्वर के कामोंसे छुट्टीपावें अमीरने हाथ मुंह धोकर निमाज़ पढ़ कर तख़्तपर बैठकर देवोंका आसरा देखनेलगे कि आवें और तख़्त

को उठाकर ले चलें परन्तु देवोंका पता न मिला भरदिनभर बैठे देखा किये जब प्रातःकाल हुआ निमाज़ पढ़कर फिर बैठकर देवोंका आसरा देखने लगा जब पहरदिन आया तब अमीरने विचार किया निश्चय है कि आसमानपरीके डरसे मुझे यहां छोड़कर भागगये अब नसीबमें पैदलही चलना बदा है किसी प्रकार से दुनिया में पहुंचना चाहिये जैसे एक मसला है कि (जैसी पड़े अवस्था वैसीसहै शरीर) यहकहकर वहांसे चले और उस बनसे बाहर आये तो दोपहरके समय ऐसे मैदानमें आये कि जहां न तो दृक्ष थे न जल मिलसक्ता था और मनुष्य तो क्या पक्षी आदि का उस समय जाना दुर्लभ था बालूसे हरस्थानपर लौरें निकलरही थीं और लूक इस प्रकारसे चलरहीथी कि उसका हाल लिखूं तो जबान और कलम में फफोले पड़जावें और किताबके सफे जलजावें और सूर्यकी तपनसे वह मैदान जलरहा था कि सब हथियार अमीरके ऐसे गरम होगये थे कि छूने से हाथमें छाले पड़ते थे और नाम लेनेसे जीभ जलती थी अमीरने सब हथियारोंको फेंकदिया और उस भारसे अपने को बचाया और प्यास इस प्रकारसे लगी कि प्राण ओठोंपर था और निकटथा कि प्राण निकलजावें और बैकुण्ठमें जाकर बासकरैं कि बालूका गढ़ा खोदकर उसी पर पेट रखकर लेटगया तो कुछ तरी पाकर चित्तठिकाने हुआ जब वह भी गरम हुआ इच्छा की कि और खोदकर बैठरहें कि फसफसाकर बैठगया और अमीरके हाथ पांव उसीमें दबगये निकल न सका संयोग से एक दिन बादशाहने अब्दुलरहमान से पूछा कि बिचारोतो अमीर परदे दुनिया में पहुंचकर सबलोगों से मिलेहोंगे और देखकर प्रसन्न हुये होंगे अब्दुल रहमान ने बादशाह के सामने तखत रखकर बिचारा तो मालूम किया कि अमीर बालूमें दबेपड़ेहैं इसके सुननेसे बड़े दुःखमें हुआ और अफसोस करके कहनेलगा कि हमजाकी जवानी दृथागई बादशाह से कहा कि अबकोई आपका इतबार न करेगा और काहेको आज्ञा मानेगा कि हमजा ऐसे मनुष्यको जिसने आपके शत्रुओं को मारकर फिरसे बादशाह बनाया आपने बेसबब ऐसी बुराई की कि इसफलको प्राप्त हुआ बादशाहने जिन देवोंपर तखत रखवाकर भेजाथा उनको बुलवाया और उनसे क्रोध करके पूछा कि तुम हमजाको कहां छोड़आये उन्होंने कहा कि आसमान परी की आज्ञा से बियाबान हैरत में छोड़आये हैं और जो दुनिया में पहुंचाते तो शाहजादी की आज्ञा से सब जानवरों से मारेजाते या निकाल दियेजाते इसबात के सुनने से बादशाह बड़े क्रोध में हुये और आसमान परीकी तरफ देखकर कहा कि तू बड़ी दुष्टिन है उसने कहा कि मुझे हमजाका दुनिया में भेजना मंजूर नहीं है उसकी जुदाई में मुझसे दमभर भी नहीं रहाजाता है और मैं अभी आप जाकर हमजाको ढूंढ़ लातीहूं बादशाहने कहा तू अहूंपना सिरढ़लावेगी तू कहां पावेगी यहकह

कर बादशाह खुद जाने को तैयार हुये और सवार होकर बियाबान हैरतमें जापहुंचे देवजिनऔरपरियोंको आज्ञादी कि इसमैंढूं ढ़ोजिसस्थान पर वह फंसा है उसको वहां से छुड़ानाचाहिये जो कोई ढूंढ़ लावेगा उसको जवाहिर के परदूंगा और उसकाओहदाबढ़ाऊंगा सब ढूढ़ते २ हमजाके हथियार इधर उधर पड़ेपाये वहलेकर बादशाह को दिये बादशाह ने देखकर बड़ाशोचकिया और फिर उन लोगों को ढूंढ़ने के लिये भेजा जिससमय सब लोग ढूंढ़कर हारगये और कहीं पता नहीं लगा तो आसमान परी रोनेलगी औरमोतीसेआंसूबहाने लगीसंयोग से एक परीजाद उस गढ़े के पास जानिकला जिसके नीचे अमीर दबे हुये पड़ेथे और ईश्वरकी कृपासे वायुसे उससमय वहांकी बालू उड़करऔर तरफ होगईथी मानो अमीरके निकलने की राह बनाईथी परीजाद ने अमीर को चमक की तरफ देखलिया उस ढेरके तले दबेहैं तब उसने बालूको हटाकर देखा तो अमीर बेहोश आंखोंको बन्दकियेपड़े हैं और उठनेकी शक्ति नहींहै किउठें तब उसनेपुकारकर कहा कि ऐबादशाह काफ़ वह मुसाफिर यहां बालूमें दबापड़ा है उसका शब्द जो शहपाल ने सुना तुरन्तही नंगेपांव दौड़कर उस स्थानपर आया औरअमीरको गढेसे निकालकर हाथोंहाथ लेजाकर अपने तखतपर लेटाया औरसु-गन्धितवस्तु अमीरके चारोंतरफरखवाया और हरप्रकारकी सुगन्धसुंघाई थोड़ीदेर के बाद होशमें आया तो अमीर ने बड़ाआश्चर्यकिया देखाकि तखतपर लेटाहूं और बादशाह मेरे सामने बैठा है और बहुत उदास है तुई तकरके उठा और बादशाहसे कहा कि ऐ बादशाह मैंने आपके साथ कौन बुराकाम कियाथा जो आपने मुझे यहदण्डदियाहै शहपाल ने कहा ऐ साहबक़िरां मुझको आपके प्राण और हज़रत सुलेमानकी सौगन्धहै मैंनेइसमें कुछभी सहारादियाहो आपकोदुःखदेनेसे क्या मिले-गा आपने तो बड़ी नेकियां मेरेसाथकी हैं मैं आपका सेवकहूं यह सब आसमानपरी ने कियाहै यहउसीका पागलपनहै कि आपको यहदुःख पहुंचा आसमानपरी दौड़कर अमीरके पैरोंपर गिरी और कईबार फिर कर परिक्रमाकिया और हाथजोड़कर कहा कि सत्यहै मुझसे बड़ाअप-राध हुआ अबकी और मेराअपराध क्षमाकरो मुझसे अपनादिलसाफ करो और सहरिस्तानजर्री में चलकर कुछदिन आरामकरो क्योंकि आप को बड़ादुःख पड़ा छःमहीने के पीछे आपको अवश्य परदेदुनियाको भेज दूंगी इसकहने को पूराकरूंगी अमीरने कहा तेरेकहनेका कुछबिश्वास नहींहै तू अपनीबात कभीनहींरक्खेगी आसमान परीनेहजरतसुलेमान अलेहुस्सलाम की सौगन्धखाई और छःमहीनेकेवास्ते सहरिस्तानजर्री में ले-आई शहपालकी सेना वहींपड़ीरही अमीरका शरीर हृष्टपुष्टहुआ और जब छःमहीनेव्यतीतहोगये और जानेकीरुख़सत न पाईतो फिरएकदिन

रात्रिको वैसाही स्वप्नमेंमेहरनिगारको देखाकिव्याकुलहै औररोरोकर कहतीहै कि ऐ साहबक़िरां अठारह दिनका आप वादाकरके गये थे अब अठारहवर्ष व्यतीतहोगये अब इससे अधिक मुझसे नहीं रहाजाता आप अति शीघ्रही आइये नहीं तो मुझको जीता न पाइयेगा पीछे को पछताइयेगा अमीर यह स्वप्नदेखकर चौंकेतो देखा न तो मेहरनिगार है न वह मकानहै परदे क़ाफ़में बैठाहूं और दूसरे को बसमेंहूं रोकर ठंढी सांसभरने लगा आसमान परी की जो आंखें खुलींतो देखा कि अमीर रोरहेहैं उठकर रूमालसे अमीरके आंसू पोछनेलगी और पूछा कि क्या हुआ क्यों इसप्रकारसे दुःखित हो अमीरने कहा कुछनहीं सब अच्छाहै आसमानपरी ने हर एक भांति से पूछा परन्तु अमीरने कुछ जवाब न दिया एकबारगी चुपहोरहा औरप्रातःकाल तकरोयाकिया और वह रूमालसे आंसूपोछाकिया और जबबादशाह महलसे आकर बैठके में बैठे तो अमीरने जाकर सलामकरके कहाकि यह वादा भी आपका पूराहोगया अबतो सेवकको जानेकी आज्ञादीजिये बादशाह ने उसी समय अमीरको तख्तपर बैठाकर चार देवोंको बुलाकर आज्ञा दी कि अमीरको परदेदुनियांमें पहुंचाकर जोहरीरसीद अमीर की ले आओ और इनको अच्छीतरह से पहुंचाना तब वे तख्तको लेकर उड़े और आसमानपरी ने फिर अपना हाल वैसाही किया और सलासल परीजाद को बुलाकर आज्ञादी कि किसी युक्तिसे जाकर देवोंको मेरी आज्ञासुनाओ कि वे अमीरको रास्ते में छोड़कर चलेआवें इसीमें उनके लिये अच्छाहोगाकि तीन दिनतक अमीर उसी बनमें इधर उधर घूमा करें नहीं तो मैं उन देवोंको बाल बच्चोंसे मार डालूंगी सलासल उड़कर अमीर के पास पहुंचा और सलामकिया जाहिरमें बहुत दुःखित हुआ अमीर ने पूछाकि तुम यहां क्यों आयेहो तुम्हारा आना अच्छा नहीं हमारे पास न आवो अपना मुख हमको न दिखावो उसने कहा मैं तो आपको बिदाकरने के लिये आयाहूं अब ईश्वर जाने कब आप से फिर मुलाक़ात होगी तब अमीरने कहा अच्छा अब मुलाक़ात हो चुकी आप जाइये दुःख न उठाइये सलासलने फिरती समय उन देवों को शहजादी की आज्ञा सुनाई और उन देवोंने छोड़ने का इक़रार किया सब दिन देव उड़े चले गये जब सायंकाल हुआ तो एक स्थानपर तख्तको उतारा शहजादी की आज्ञानुसार किया अमीर ने कहाकि इस बनमें तख्तको क्यों उतारा उन देवोंने कहाकि रात्रि अंधयारीहै इससमय चलनेके योग्यनहीहै और कछ भोजनपानभी करैंगे इस रात्रि को आराम से सोइये दिनको फिरचलेंगे अमीरने कहाकि आगेके देवों कीतरह न करना कि तुमहमको छोड़कर चलेजावो और हमख्राबहों उन्होंने कहा नहीं साहब ऐसी नमकहरामी हम लोगों से न होगी

अमीर चुपहोरहे देवोंने तखत वहांरखदिया और आपशिकारकेहीले से गुलिस्तान अरमकी तरफचलेगये और अमीर रात्रिभर तखतपरबैठे रहे सबेरे मालूमहुआ कि वैसी दशादेकर अपनेदेश को चलेगये अमीर ने अपने दिलमें विचारा कि बादशाह काफ तुझको इसी तरह से घुमायाकरेगा और परदेदुनियांमें न जानेदेगा अबतू चल जो ईश्वरकी कृपाहोगी तो गिरता पड़ता दुनियामें पहुंच जायगा यह विचारकर वहांसे चला जब थकजावें तो थोड़ी समय वृक्षके तले बैठकर सुस्तालेवें और फिर उठकर चलताथा और बादशाह काफकी दशाबाजी और अपनीनेकीपर अफसोस करताथा इसीप्रकारसे दिनभर चलाकिये परन्तु रात्रिको फिर उसी स्थानपर पहुंचगये जहां देवोंने छोड़ाथा अमीर बड़े सन्देहमें होकर आश्चर्य करनेलगे कि मैंने तमामदिन कष्टउठाया चलने से थकगया परन्तुजहांसे सबेरेचलाथा वहीं शामको फिरपहुंचा यहबात क्याहै आखिरकार लाचारहोकर उसरात्रिको भी वहींरहे और दूसरे दिन दूसरी तरफ़ को चले परन्तु उसदिन भी वैसाही हुआ इसीतरह से तीनदिन तक बराबररहे चौथेदिन दोपहरतक चलकर थकगया और धूपनेसताया एकओर दोचार वृक्षदेखे चाहा कि जाकरउनके नीचेबैठ करआरामकरें जाकरदेखा तो एकसंगमरमरका आठकोनेका चबूतरा बनाहै और बायु भी ठंढी आती है जो दमभर वहां ठहरता है उसका चित्तप्रसन्न होजाताहै अमीर उस चबूतरेपर तकिया लगाकर जाकर बैठे कि थोड़ी समय के बाद बनमें शोरगुलहोने लगा इतनेमें एक बड़े भयानकरूपका मनुष्य उसबनसे तलवार लियेहुये निकला और अमीर से कहनेलगा कि किसबवंडरमें तू उड़कर यहां आयाहै और कौन ले आयाहै अबतू भला मुझसे बचकर जानेपावेगा यह कहकर एक वार तलवारकी चलाई अमीरनेभी अक़रब सुलमानी उठाकर एकबार उस परमारा परन्तु उसके न लगा तब वह देवभागा और थोड़ी समय के पश्चात् एक अजगर हाथमें लेकर आया और एकबारगी ललकारकर कहा कि खबरदार होजा मैं वारचलाताहूं यह कहकर अजगर उठा कर अमीरकोमारा अमीरने उसकोभी एकतलवारसे मारकर दोभाग करदिये और उसकी कमरपर मारा परन्तु उसके यह वारभी नलगा और तलवार उसके बदन से ऐसी उछलती थी जैसे खलियानमें मुगरी उछलतीहै तब वह देवफिर भागगया तीसरे वारफिर वह देव आया तो अमीरने अपनी शक्तिभर तलवार उठाकर मारी परन्तु उसके कुछ न मालूमहुआ तब अमीरने लाचारहोकर ईश्वरका स्मरण किया इतने में हजरतख़िज़र एकतरफसे आकर प्राप्त हुये और उसदेवको मारकर जिसतरफसे आयेथे उसीतरफको चलेगये अमीर उसदेवके मारेजानेसे अति प्रसन्नहोकर बैठे और सब सन्देह दूरहोकर नदीकेतीर लहरदे-

खुलनेलगे एकबारगी जो ठंढी वायु आई तो अमीर उसी चबूतरेपर सो गये उस आराममें सब दुःखभूलगये तब अमीरने स्वप्नमेंदेखा कि मेहर निगार खड़ीरोरही है अमीर चिल्लाकर जागउठे आहमारके रोनेलगे तो देखा कि उसी बनमें बैठेहैं तब नदीकी लहरें देखकर अपने दिलमें कहनेलगे कि देखें क्योंकर ईश्वर दुनियामेंपहुंचाताहै और मेहरनिगार को देखता है तत्पश्चात् अमीर ने अपने चित्तमें विचार किया कि अब किसीयुक्तिसे इसबनसे निकलनेकी युक्तिकरनीचाहियेयहविचारकरदृक्षों की लकड़ियां तोड़कर एकठाठबनाया और उसीपर सवारहोकरनदी में चला जब आधीदूर तकगया तो लहरसे धक्काखाकर फिर किनारेपर लैाटआयाइसीप्रकारसेलिखनेवालालिखताहैकिएकसप्ताहमें१२बहत्तर बार वहठाठछोड़ाऔरपलटआयातबअमीरनेनदीकेतीरउतरकोरनमाज पढ़कर ईश्वर का स्मरणकिया और बड़ी देरतक ध्यान करके ईश्वर से प्रार्थना की किहे ईश्वर मुझको किसीप्रकार से इस बलासे बचा संयोग से उसीसमय अमीरको निद्राआगई तो स्वप्नमें देखा कि एक दृद्ध हरे वस्त्रपहिने हुये आकर कहतेहैं कि बेटेमैं नूह पैगम्बरहूं और इसनदीसे मेरा नेजाहै इसलिये वह अपने ऊपरसे जानेनहीं देता जो वस्तु इससे जातीहै उसे रोकलेताहै तू आधीनदी में जाकर इसमंत्रको पढ़ वहनेजा तुझको प्राप्तहोगा और इस मंत्रसे तू इसके पार उतर जायगा अमीर अति प्रसन्नहुये और उसीसमयमें हज़रत नूहके पैरोंपरगिरे और जिस समय जागे तो दिलअति प्रसन्न होगयाथा सुगन्धित स्थान पर सोने से उठकर उसी ठाठपर सवार होकरचले और उसमंत्रको पढ़नेलगे जब आधीनदीमें पहुंचे तो जलउठामानो लहरेंबढ़ीं तत्पश्चात् एक संदूक नीचेसे निकलकर ठाठकेसमीपबहकरआया लहरने उसको अतिसमीप करदिया अमीरने सन्दूकको उठाकर निसंदेह रखकर खोला तो देखा कि एकनेजा लपेटाहुआ उसमेंरक्खाहै फिर अमीरने उसको अच्छीतरह से विचार करके देखकर संदूक में से निकाल कर उसके बन्दकाट कर सीधाकिया तबतो बहुत बड़ा होगया अमीर अति प्रसन्नहोकर उसी नेजेसेखेतेहुयेचले और जब क्षुधालगती तो उसी झालीमेंसे जो हज़-रतइब्राहीम देगये थे निकालकर खाते थे और जब निमाज़ की समय आवे तो तीरपरठहरकर निमाज पढ़तेथे और फिरउसीपर सवारहो-कर चलतेथे परन्तु न लेटतेथे नसोते थे बस इसीभांतिसे बीसदिन बरा बर चलेगये इक्कीसवें दिन एक अति शोभायमान बनमें जाकर पृथ्वी पाई तब ठाठसे उतरकर पैदलचले दोतीन कोस न गये थे कि सात भेड़िये दिखाई पड़े जो कि अतिबलवान और भयानक रूपके थे और उनमें से एक भेड़िया सपेद रंग का और सबसे बड़ाथा और पशममें उसकी पृथ्वी तक लटकी थीं लोग कहते हैं कि वे सातें भेड़िये सुलेमानी कहलाते

थे और जो कुछ उसबनमें मिलताथा वही खातेथे उन सातों भेड़ियों को हजरत सुलेमान ने पालकर छोड़ा था और उसी बनमें रहने की आज्ञादी थी भेड़ियोंने जो अमीरको देखा तो चारों तरफ़ से दौड़ कर अमीरको घेरलिया अमीरने एक वृक्षके आड़में होकर खंजरसुलेमानी मियान से खींचकर जो सामने आया उसको दो भाग करदिया इसी प्रकार से सातों को मारकर उनकी खाल खंजर से निकाल कर मृग-छाला की तरह गले में डाललिया और अपने चित्त में विचारा कि अब सफरक़ाफ़काहै इसमें यह बड़ा गुण करेगा यह विचारकरके वहां से छालोंको लेकर चले रात्रिको एक पहाड़ की खोह में लेटकर सोरहे जब प्रातःकालहुआ उठकर निमाज़ पढ़ी और वहां से चले गरमी के दिनथे दोपहरकेसमय सूर्यकी तपन से व्याकुल होकर छाया ढूंढनेलगे संयोग से एकबाग़की दीवार दिखाई पड़ी अमीर दौड़कर उसके पास पहुंचा परंतु उसका दरवाज़ा बन्दपाया तब चारोंतरफ रास्ता उसमें जाने की ढूंढने लगे जब कहीं न पाया तो ताला खंजर से तोड़ कर उसके अन्दर गये तो देखा कि बाग़ अति शोभायमान है हर प्रकार के मेवे और फूलके वृक्ष लगे हुयेहैं और दोचार स्थानभी रहनेके लियेबनेहैं और सब सजेहुये हैं अमीर एक स्थानमें गया देखा कि संगमरमर के तख़्तपर गद्दीलगी है और मसनदतकिया रक्खीहुई है अमीर उसपर जाकर बैठे मानो उनही के वास्ते बिछाथा ईश्वर ने उन्हींको भेजा था अमीरअपनेमनमें कहरहेथे कियहमकान हज़रतसुलेमानके बनायेहुयेहैं जबसे वे यहांसे चलेगये तबसे जिसका दिलचाहा वहइसमें आकररहा इतनेमें बाहरसे शब्दआया अमीर व्याकुलहोकर बाहर आया कि देखूं कैसा शब्द होरहाहै तो देखा कि एकदेव लोगोंको सतारहा है जिसने मेरे बाग़का दरवाज़ा खोला है उसेपाऊं तो जीता खाजाऊं अमीर ने ललकारकर कहा इधरआ तू नहींजानता कि मैंने अफरेत और उसके माता पिताको मारकर सबदेवोंका नाशकरदिया है तू कबमेरेसामने आसक्ता है तब उसरादददोसिर नामेदेवनेकहा किऐमनुष्य तूक़ाफ़केबाग़ और देवोंको बिगाड़कर मेरेबाग़में आयाहै मैंनेसुना है कि तूने हज़ारों देवोंको मारकर यमपुरी को भेजाहै अब देखें जो तू लाखपांव भी रखताहोगा तो इसस्थान से तेरा प्राणनबचेगा यहकहकर एकतलवार फौलादी जो उसके हाथमें थी अमीर के शिरपर मारी अमीर ने वह उसरादददोसिरके हाथसेछीनली और ऐसीदिलावरी और बलदिखलाया कि वह अमीर के आगेसे भागा और युद्धकरनेकी शक्ति नरही अमीर दौड़कर उसके पास पहुंचे तब उसने विचारा कि यह मनुष्य बलवान भीहै दौड़ताभी अधिकहै राहमेंएककूआ था उसीमेंकूदपड़ा और उस समय उसे कुछ न सूझा तब अमीरभी उसकूपकी जगतपर बैठगये कि

कभी तो इसमेंसे निकलेगा तीनपहर तक बैठरहे तबतो उनका चित्त न लगा इतनेमें अलसाकर सोगयेतो अगस्ने स्वप्नमें आकर कहा कि ऐ हमजादइसतरहसे। तू ऊपर भरबैठा रहेगा तोवह न निकलेगामें एक उपाय बताताहूं कि यहजो तालाब है इसकाजल काटाकरकूपको भरदे तबवह व्याकुलहोकर निकलकरभागेगायह स्वप्नदेखकरअमीरकी आंखें खुलगईं खञ्जर से एकनाली खोदकर कूपको तालाब के जलसे भरा तब वहघबराकरनिकला ऋौरचाहाकि अमीरकेआगेसे भागजावे किप्राणबचें परंतुअमीरनेदौड़करएकतलवार ऐसीमारीकिकटकर दोटुकड़े होगया एकसायत न बीतीथीकिएकदेवजादबुढ़ियारोती हुईआई ऋौर अमीर सेकहनेलगी कि तूनेमेरेपुत्रको जिसकीउमरकुलतीनसौ वर्षकीथी ऋौर अभी दूधकेदांत भी न उखड़थे तूने मारडाला बड़ागजब किया तूनेयह न विचारा कि इसका ऋौर कोईवारिसहै अबतेराप्राण भी मुझसे न बच करजावेगा यहकहकर जादूकरनेलगी अमीरने जो मंत्रपढ़ातोवहअपनी जादू भूलगई अमीरने कदमबढ़ाकर उसके भी दो भाग करके यमपुरी को भेजा ऋौर स्नानकरके निमाज दोबारपढ़ी जो ईश्वरने ऐसे पापियों के हाथसे उसकाप्राण बचाया ऋौर दिलमेंविचारा कि सफरबहुत दूर का है आज इसी स्थानपर ठहरकर आराम करें उसरात्रिको वहीरहे प्रातःकाल वहांसे चले तो चलते २ तेरहवें दिन अमीरके पावोंमें छाले पड़गये तब छालोंके दुःखसे चल न सके एकवृक्षके नीचेबैठगये ऋौर मन में विचार करने लगे कि अभी दिल्लीदूर है ऋौर हम थक गये इतने में एकगरद सामने दिखाईदी जबवह गरदबन्द होगई तो देखा कि एक घोड़ादौड़ाचलाआता है ऋौर अमीरके समीप आकर खड़ा होगयातब अमीरनेयहविचाराकि यह सवारीईश्वरने मेरेवास्तेभेजीहै यहकहकर ईश्वरका धन्यवादकिया ऋौर उठकर ज्योंहीघोड़ेपरसवारहुयेत्योंहीवह वायुकेसमानलेकरउड़गया कितनाहीअमीरनेरोका परंतुवहनरुकातीन दिन रात्रि बराबर चलागया कहीं एकसायत दम न लिया चौथे दिन अमीरको एकबागकी दीवारदिखाईपड़ी तबतोकुछ अमीरका चित्तठि-काने हुआ वह घोड़ा उसके अंदरगया तो वहां वैसे बहुतसे घोड़े चर रहेथे वहभी उन्हीके साथचरने लगा अमीर इसहालको देख कर बड़े आश्चर्य में हुआ फिरजोदेखा तो एकसी चौदहवर्षकी अति स्वरूपवान घोड़ेपर सवार फिररहीहै ऋौर जवाहिर लगीहुई छड़ी हाथमें लिये घोड़ोंको चरारही है ऋौर कभी हंसतीहै ऋौर कभी रोतीहै हरसमय एक नवीन भेषधारण करती है अमीर को देख कहने लगी कि क्या तू बिहुत थकाथा जो इस घोड़े पर सवार होकर चला आया उसने कहा कि मैं इस तरहसे थकाथा कि उठभी नहीं सक्ताथा इसकोमैंने जाना कि ईश्वर ने मेरेऊपर कृपाकरके भेजा है तो सवार हुआ परंतु यह

घोड़ा मुझे ऐसा लेकरउड़ा कि यहां लाकर डालदिया तब अमीर ने पूछा अब तुमतो बतावो कि तुमकौन हो और यह किसकी बाग है उसने कहा कि यह सुलेमान का जादूघर है इसमें केवल जादू है जिसके देखने से तुमको आश्चर्य मालूम होता है और आजतक यहां आकर कोई जीता नहीं बचकर गया जो आया वह मारागया इतना कहने पाईथी कि घोड़ालेकर दूसरी तरफ चलागया और गायब होगई कि फिर दिखाई न परी दहिनीतरफ फिरकर जो देखा हज़रत खिज़रखड़े हुयेहैं तबतो सलाम किया हज़रत खिज़रने भी सलाम का उत्तरदिया और कहा कि ऐ अमीर जिस घोड़े परतुम सवारथे उसके गलेमें एक तख्ती बंधी है उसको तुम खोलकर अपने पास रक्खो और उसीको देखकर सबकाम करना खबरदार भूलना नहीं यह जादू घर है जब इसमें मनुष्य फंसजाता है तो कभी नहीं छूटकर जाने पाता हज़रतखिज़र यह कहकर चलेगये अमीरने घोड़े के गलेसे तख्ती खोल कर देखातो उसमें लिखाथा किऐ मुसाफिर ईश्वरने बड़ीकृपा तुमारे ऊपर की कि यह जादू की तख्ती तेरे हाथ आई तूने अपूर्व वस्तु पाई है यह स्त्री जोकभी हंसती और कभी रोतीहै जिस समय हंसने लगे उसीसमय एकतीर मंत्रपढ़कर मारदेखना कैसी अपूर्ववस्तु दिखाई देती है अमीरने जब वह हंसनेलगी तो मंत्र पढ़कर तीरलेमारा तीर तो निकलकर पारहोगया और उसके शरीरसे एक लौ निकलने लगी और घोड़ों के अयाल और पूंछोंमें आगलगादी तो सब घूमकर गिर-कर जलगये और सब नाश होगये केवल वही घोड़ा जिसपर अमीर सवार होकर आये थे रहगया तब अमीर ने देखातो न वह बाग़ है न घोड़ेहैं चारों तरफ से शब्द सुनाई देता है जिसके सुन्ने से बड़ा आश्चर्य मालूम होता है और एक बनबड़ा भारी देखाई पड़ा जिसका कहीं वारपार नहीं मिलता तब वह घोड़ा अमीरको लेकर निकलाथोड़ी दूर आगेगया कि एक बाग की दीवार दिखाई पड़ी जो कि पहिले से भी उत्तम थी अमीर जो उसके अंदरगये तो देखकर अति प्रसन्न हुये और इस प्रकारसे मेवे आदिकके वृक्ष थे मानो बैकुण्ठ है और उसके मध्यमें एक ऐसावृक्ष जादूकामोटाथा कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर रंग२ के पक्षी बैठेहुये अपनीबोली बोलरहेथे और अपनी भाषासे लोगोंको मोहित कररहेथे और मध्यमें एक पक्षी गलेमें हार डाले हुये बैठाथा जब उसने अमीर को देखातो सब पक्षियों को लेकर पांचसौ गज ऊंचा उड़कर चारोंतरफसे अमीरको घेरलिया और रोरो कर शब्द करनेलगे कि मनुष्य क्या जो पत्थरहो उसको भी अवश्य दया आजातीथी अमीरउनका रोनासुनकर आपभी रोनेलगे और उनकेदुःख पर बड़ा रंजकिया परंतु मसला है कि दूधका जलामाठा फूंक २ पिये

अपने चित्त में विचारा कि शायद ये पक्षी भी जादूके हों और मुझको किसी दुःख में डालें तख्तीको निकाल देखा तो उसमें लिखाथा कि खबरदार २ इस वृक्ष के नीचे खड़ा न होना नहीं तो फंस जाओगे ये पक्षी जादू के बने हैं फिर यहां से कभी न छूटने पावेगा इस मंत्र को पढ़कर तीरसे जादूको ऊमा को मारडाल अमीर ने मंत्र पढ़कर तीर को कमानमें लगाकर ज्योंहीं मारना चाहा त्योंहि जादूकी ऊमा वृक्षसे उड़कर जाया चाहताथा कि अमीरने मंत्रपढ़कर तीरमारा कि उसके सीनेमें लगावह तड़प कर गिर पड़ा और उसके बदनसे लपट निकली और वह बाग सब पक्षियों समेत जलगया तबतो सब सन्देह अमीर का दूर होगया और शोर गुलके पश्चात् अमीर एक दूसरे बागमें पहुंचे तो वहां भी अपूर्व तरह के तमाशे दिखाई दिये कि एक सेना सोने की बलछी लिये हुये खड़ीहै और उनका रूप देवोंकी तरह अपूर्व तरहका था अमीर को देखकर कहने लगेकि ओ मनुष्य देश घूमनेवाला तू यहां क्यों आया और कौन ले आया यह कहकर सब बलछी लेकर दौड़े अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी लगाई कि सब एकबारगी मारे गये प्रत्येकके दो२ भागहोगये परन्तु जो पृथ्वीपर गिरातो एकके दोहो गये पहिले से दूने होकर अमीरपर दौड़े और चारों तरफसे घेरलिया इसीप्रकार से दो पहरमें देवों से बाग पूर्णहोगया तब तो अमीर बड़े सन्देहमें हुये परन्तु ईश्वरकी कृपासे किसी का वार अमीरके न लगता था और एक बड़ा आश्चर्य यह मालूम हुआ कि हर एक अपना भेष बदल २ कर आवेकि सिरतो पेटमें और दोनों हाथ दो सींगकी तरह ऊपर को उठे हैं पश्चात् अमीर के चित्तमें आयाकि तख्तीमें देखेंतो क्या है जब देखातो उसमें लिखाथा कि यह सेना तलवारसे न मरेगी गोल सपेद के मस्तकमें एक खाल लालहै वह जादूहै तीर के लगनेसे दूर हो जायगी और तू इससे बचकर चलाआयगा अमीरने देखातो उनमें एक गोल सपेदथा और उसके मस्तक पर एक खाल लालरंगकी थी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर एक तीर उसके खालपर मारातो चारों तरफ से शोर गुलहोने लगा और आकाश से पत्थर गिरने लगे और बादल गरजने लगा थोड़ी समयके पश्चात् वह सब फसाद दूरहोगया फिर देखा तो एक स्थान अपूर्व दिखाई दिया तब अमीर उसके भीतर गयेतो एक बाग अति शोभायमान दिखाई पड़ा और उसके मध्यमें एक हौज जल से भरामिला और उसमें लहरें उछलरही हैं और उसके किनारे पर एक तख्त बिछाहै उसपर एक देव तकिया लगाये बैठाहुआ है और उसके आगे एक स्त्री बंधीहुई पड़ीहै उसके ऊपर एक जिन खन्जरलिये बैठाहै और उसको बड़े ज़ोरसे दबायेहै वह स्त्री अमीर को देखकर बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर रोरो कहनेलगी कि ऐ जगतके घूमनेवाले मुझे इसके

होयसेवक था तबतो जिनने उसस्त्रीका सिरकाटकर देवके गोदमें फेंकदिया और उसनेजलमेंडालदिया उस बेचारीको इसतरहसे दुःखदिया इतनेमें वहसिर हौजसे निकलकर फिर उसस्त्रीके धड़में जुड़गया और वह स्त्री फिरवैसेही कहनेलगी जिनने फिरसिर काटकरदेवकी गोदमें डालदिया देवने उठाकर हौजमें डालदिया तब वह सिर फिर उड़कर उसस्त्री के धड़में लगगया और वहस्त्री उसीतरहसे फिर अमीरसे रोरोकर कहने लगी अमीर ने इसको देखकर बड़ा आश्चर्य किया और कहनेलगे कि बड़ा तमाशाहै तब तख्तीको निकालकर पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि जिससमय वह जिनस्त्री का शिरकाट कर देव की गोदमें दे उसीसमय उस देवके गलेमें तीर मार इसमंच से सब जादू दूर होजायगा अमीर ने वैसाही किया झट एक तीर उसदेव के गलेमें मारा तो उसी समय एक बड़ा शोरगुल होनेलगा उसके पश्चात् अमीरने देखा कि एक बन है जिसकी हद्दका कहीं पतानहीं है अमीर उसतरफ़चले थोड़ीदूर गये तो एक क़िला स्याहपत्थर का दिखाई दिया और एक नवीन प्रकारसे बनाहुआहै अमीर जब दरवाजेपर गयेतो दरवाजा क़िलेका खुलापाया और कोई दरबान भी न था परन्तु बोलचाल मनुष्यों की सुनाई पड़ी तब अमीर क़िलेके अन्दर गये तो देखा कि बराबर से दूकानलगी हुई हैं और सब लोग बैठेहैं परन्तु न कोई हिलसक्ताहै न बोलसक्ताहै बहुत प्रकारसे अमीर ने पुकारा परन्तु कोई भी न बोला तब बाज़ार की सैर करते हुये नगार खानेकी तरफ़गये तो वहां भी बहुतसे लोग बैठेपाये परन्तु वही हाल उनका भी था आगे जो गये तो स्थान बनेहुये पाये और उसमें पहरेवाले चोबदार खिदमतगार आदि दरवाजे पर बैठेहैं और सबको चुपचाप पाया जिससे अमीरने पूछा कि यह क़िला किस काहै उसने जवाब नदिया और न कुछ बोला थोड़ी दूर आगे गये तो दीवान मिला उसमें एक मकान जड़ाऊ बनाथा उसके भीतर जो गये तो देखाकि एक तख्त जड़ाऊ बिछाहै उसपर बादशाह लिबासशाही पहिनेहुये बैठाथा और आसपास सरदारलोग बराबरसे बैठे थे अमीर ने बादशाहके समीप जाकरसलामकिया और जब जवाब नपाया और कोई न बोला तो अमीरने क्रोधितहोकर कहा कि क्यातुम्हारे यहांकी यही चालहै कि जो कोई आवे उससे न बोलें और सलाम का जवाब भी न देवें यह कहकर अमीर बाहरचले आये तो जिधरसे गयेथे वह रास्ताही भूलगये लाचारहोकर फिर बादशाहके पासआये कि उससे रास्ता पूछा तो आकर बादशाह के हाथ में एक पत्र था उसको हाथ बढ़ाकरले लिया बादशाह तब भी कुछ न बोले अमीर ने उस पत्रको पढ़ातो लिखाथा कि ऐ मुसाफिर यह सुलैमानकी सभा की नकल है और वैसेही सब बना हुआ है जो लोग दरबार में हाज़िर थे उनकी

सूरतें बनीहुई हैं और जो जिसस्थान पर बैठती था उसी तरहसे बैठा हुआ है और जो सूरतें तूने देखी हैं ये लोग इसी क़िले में रहते थे इस कारण पुतलियां क्योंकर बोलसक्ती हैं अमीर इसमें बड़े सन्देह में पड़ेथे कि हज़रत सुलेमानके तख़्तके बराबर एक और तख़्त दिखाई दिया उसपर एक युवास्त्री चौदह वर्ष की सब जेवर पहिनेहुये बैठीहै और स्वरूपमें परियों से हज़ारगुना स्वरूपवान है और चारसौ सखियां उसके तख़्तके पीछे हाथबांधे खड़ीहैं जिनकेहाथों और गलोंमें सोनेकी जंजीरें पड़ीथीं अमीरने उसके बराबर आकर सलामकिया उसनेसलाम का जवाबदेकर कहा कि ऐप्यारे तू इसस्थानमें क्योंकर आयाकि कोई मनुष्य इसमेंनहीं आसक्ताहै अमीरने कहामेरा वृत्तान्त अधिकहै क्यों- कर सुनाऊं जिसका परायान न होसकै वह क्याकहूं परन्तुतुमअपना हालबताओ कि कौनहो और क्योंकर यहां आईहो उसनेकहा ऐप्यारे मैंभी हज़रतसुलेमान की जोरूहूं मेरानाम अलीमयरा है मुझको जिस समय हज़रतसुलेमान ने इस दुनिया को छोड़ा और अहपाल ने सब देवोंको अपने आधीनकिया उसने परदेगुल्मात की राजधानीदीहै और मैंने उनकी आज्ञानुसार किया परंतु थोड़ेदिनों के बाद जब अफ़रेतपुत्र अहरमन ने युद्धकिया और आपके देवोंको अहपालसे छीनलिया और सब राजधानी लेलिया तब धीरे २ गुलमात पर भी दख़ल किया और संदेसादिया कि तू मेरे साथ विवाह कर नहीं तो तुझे भी मार- डालूंगा तब मैंने विचारा कि जब अहपालशाह इससे विजय नपासका तो मैं कबपाऊंगी क्योंकि उसकेपास बड़ी सेनाहै और आपभी अतिब- लवानहै वृथा अपनी इज़्ज़त खोनाहै तब मैं विचार करके वहांसेभाग कर यहां आईहूं और इस जादूमें अपनेको क़ैदकियाहै इस विचार से कि यहां वह न आसकेगा और इस स्थानपर केवल हज़रत सुलेमान की सूरत देखकर दिन काटतीहूं और दिनराति ईश्वरका ध्यानकिया करती हूं और ये चारसौ मेरी सहेलियां है इनको मैं अपने साथ ले आई थी अब आप अपना हाल बताइये कि कौनहैं और कहांसे आये हैं और क्योंकर इसमें आये हो अमीर ने कहा कि मैं सहायक बाद- शाह आप अहपाल पुत्र इब्राहीम पैगम्बरकाहूं और हमज़ा मेरानाम है और परदेदुनिया में मैं रहताहूं अहपालने अपनी सहायताके लिये बुलायाथा उनकीख़ातिरसे मैंआया और सबदेवों आफरेत और उसके माता पिता समेत सेनाको मारकर सब देवईश्वरकी कृपा और अपने बलसे दिलाकर फिरसे बादशाह बनाकर सब जादूके कारखाने बिगाड़ करके आताहूं अब तुम खुशीसे जाकर राजकरो और वहांकी मलका बनो उसनेकहा कि इसमें तो मैं अपनी इच्छासे आईथी परंतु निकल नहींसक्तीहूं क्योंकि जो यहां आताहै वह निकल नहींसक्ताहै अमीरने

कहा कि मैं इसको तोड़कर निकालदूंगाइतनी पुरुषकरूंगा परंतु एक बात तो मेरीमानो उसने कहा क्याबातहै कहो जोकरनेके योग्य होगी तो क्यों नमानूंगी पहिले सुनलूं तो इक़रार करूं अमीर ने कहा कि यहां से छुटनेके पश्चात् परदेनियामें मुझे पहुंचादे मेरादेश मुझे दिखादे उसने कहा कि सिर और आंखोंपर मैं खुद लेचलकर पहुंचा आऊंगी इतना आपका कार्य अवश्य करूंगी अमीरने तख़्तीको निकालकरदेखा तो उसमें कुछ भी न लिखा था तब तो बड़े आश्चर्यमें हुये कि इसमेंसे निकलना दुर्लभ अवहुआ तब तो तख़्ती को रखकर हाथ मुंह धोकर निमाजपढ़ कर ईश्वरका ध्यान करनें लगे तब एक स्वप्नकी तरह देखा कि हजरतसुलेमान मेरा सिर छाती से लगा कर कहते हैं कि ऐ बेटे दुःखित न हो बदिउलमलिक नामे तेरा पुत्र इस जादू घरको तोडेगा इसकी पराजय उसीके हाथसे है और जो तुम निकलनेकी इच्छाकरते होतो इस मंत्रको पढ़ते हुये दरवाजे की तरफजावो दरवाजा तुमको मिलजायगा और जब दरवाजे के बाहरजाना तोभी इस मंत्रको पढ़ते रहना और एक हरिन तेरे सामनेसे आकर भागेगा तूभी उसीकेपीछे मंत्रपढ़ते हुये आगे चले जाना और जब वह हरिन दिखाई न देवे तो जानना कि जादूसे ईश्वरने निकालदिया अमीरने जब ध्यानसे नेत्रोंको खोला तब सबहाल मलिकासे कहकर ईश्वरका धन्यवाद करनेलगे और मलिकाने कहा कि जब हम यहां से निकलें तूभी मेरे पीछे दौड़ीचली आ मेरी आज्ञा मान अमीर वही मंत्र पढ़तेहुये दरवाजे की तरफ गये देखा तो दरवाजा खुलाहुआ है और जब दरवाजे से बाहरनिकले तो देखा कि एक हरिन कूदता फांदता अमीर के आगेसे अच्छी तरह से सजाहुआ निकलकर मैदान की तरफ भागा अमीर भी वही मंत्रपढ़ते हुये उसी हरिन के पीछे २ दौड़ते हुये चलेगये और विचारा कि यह वही हरिन है जिसका हाल स्वप्न में हजरतसुलेमान ने मुझ से बयान किया था और यह मंत्र सिखलाया था मलिका भी अपनी सहेलियों समेत पीछे २ अमीरके दौड़ी इतने में क़िले में एक बड़ा शोरगुल होने लगा कि क़ैदी भागेजातेहैं अब मिल नहीं सकेंगे परन्तु कौन सुनताहै किसीने फिरकर भी न देखा गिरतेपड़ते उसक़ैदसे सबबाहरआकर सबने ईश्वरका धन्यबादकिया आगे जाकर दो पहाड़मिले हरिन उसपहाड़ में जाकर अमीरके आगेसेगुप्तहोगया और फिर उसको किसीने नदेखा तब अमीरने जाना कि ईश्वरकी कृपासे जादूसे बाहर आये उसपहाड़ से निकलकर दूसरे पहाड़ पर उतरकर डेराडाला और उस दौड़धूपके दुःखसे आराम लिया और मलका भी उसी स्थानपर ठहरी अमीर के साथ वह भी निसन्देह होगई और चारसौ परियों से सब सामान मंगवाकर अमीर कीमेहमानी की और सब तरहसे अमीरकी सेवाका

सातदिनतक इसी स्थानपर अमीर नाचरंग देखा किये और परियों के कटाक्ष लोभाने के देखकर प्रसन्नहुए आठवेंदिन मलिकाने अपनी सहेलियों से सलाह पूछी कि हमको आसमानपरी के साथ्व्याहाहै इस कारण कोई इसको दुनियामें नहीं पहुंचाताहै उसकेडरसे इनको कोईनहीं लेजाताहै और मैं हमजा से इक़रार करचुकी हूं कि तुम को दुनिया में पहुंचा दूंगी पस तुमलोगोंकी इसमें क्या सलाहहै कौनसी युक्तिकरनी उचित है इन्होंने कहा कि यह समुझलो कदाचित् आकाश परीको मालूम होगा कि किसीने हमारेपतिको पृथ्वीपर पहुंचादियाहै तो वह तुमको जीता न छोड़ेगी वह अपने मातापिता से तो डरती नहीं तुम किसगणना में हो तुम इसके वृत्तान्तको भले प्रकार जानतीहो ऐसाकरनेसे वह तुमको बहुत तंगकरैगीऔरबहुत दण्डदेगी इससे उत्तम यह है कि इसमनुष्यको चारसौ परियोंके साथ इसी स्थानपर छोड़ कर चलेजावैं और आकाश परी की आज्ञाके विरुद्ध न करो यह सम्मति वहांके बुद्धिमानोंको पसन्द आई और इसने भी अपनाबचाव इसीमेंजाना अमीर को सोता छोड़ कर कुछ परियों को साथलेकर उड़के जुल्मात को चलीगई और अमीर से प्रतिज्ञा तोड़दी प्रातःकाल जब अमीर सोके उठा तो देखाकि सब्जी-सावरावका कहीं पतानहीं है विचारकिया कि आसमानपरी के डर से इसने भी मुझको पृथ्वीपर नहीं पहुंचाया अमीरने कहा कि जो ईश्वर कृपाकरेंगे तो दुनियामें पहुंचना कुछ कठिन नहींहै यहकर पहाड़ के नीचे २ ईश्वरका ध्यानकरते चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर नव रातिदिन चलतारहा और जब भूखलगती तो खिज़िरके दियेहुये कलीचे को खाते और बलीहोकर फिरचलते तत्पश्चात् पृथ्वी या पहाड़ या नदी जहां कहीं कलीचा फेंकदेते फिर उन्हीं के पास आजाता और उसको खाकर फिर अपना कामकरते दशवेंदिन शमशाद वृक्षकेनीचे पहुंचकर भेड़ियों का चमड़ा बिछाकर सोरहे प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर जंगलसेनिकलमैदानका राहली थोड़ीदूरजाकरक्या देखतेहैं किपहाड़के निकटसे एक ज्वालारहि २ कर उठती है परन्तु उसका कुछ वृत्तान्त नहीं विदितहोता जब अमीरने निकटजाकर देखा तो वह एक अपूर्व पहाड़ है वहां की अपूर्व वस्तुओं को देखकर अत्यन्त विस्मित हुआ कि झिरनों से पानी झररहा है और मैदानमें जो हरीघास है वह मानो मखमल पर मोतियोंकी फरशसी सुशोभित होती थी और वह मैदान बहुत हराभरा है और फलिया पहाड़ में सोने चांदी की ईंटों और जवाहिरात से बनीहुई एक चारदीवारी है जिसके देखने से नेत्र प्रका-शित होतेहैं और जगह२ उत्तम२ जानवर फिररहेहैं और उसपहाड़ के नीचे एक खोह ऐसीहै कि जिसकी गहराई असमाप्तहै उसके मुंह पर एकदेव बैठा हुआ शरनीऊंट और हाथी का कबाब बना २ करखा

रहाहै और जो धुआंनिकलता था वह सीधाआकाशको जाता था और इस देवने अपने तईं ईश्वरकारके काफकी राहसे प्रसिद्धकिया था और उसखोह और अगारोंको अपना दोजख बनायेथा और उसमें चारसौ देवरक्षा करते थे इसको देखकर अमीरने इच्छाकी कि जाकरपूछें कि यह क्या बातहै जो कुछ समुझमें नहीं आतीहै देखनेसे आश्चर्य मालूम होताहै संयोग से एक देवकी दृष्टि अमीर पर पड़ी देखकर कहने लगा कि मेरे पास कबाब नहीं था सो ईश्वर ने कृपाकरके इसको मेरे पास भेजाहै यह कहकर वहांसे उठकर अमीरको चुपकेसे यह कहकर बुलाने लगा कि ओ मनुष्य धीरे २ चलाआ नहीं तो कोई दूसरा देव तुझको देखकर खालेगा और तू मेरेहाथसे निकलजावेगा अमीर उसकी बातों पर हंसनेलगे अमीरका हंसना जो बुरामालूम हुआ तो वह अमीरकी तरफ दौड़ा कि पकड़कर खाजावें अमीरने अक्रबसुलेमानी मियानसे निकालकर जो मारी तो वह दोभागहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उसको मरते देखकर सबदेव अमीरके ऊपर हथियार ले२ कर दौड़े तब अमीर अक्रबसुलेमानीसे सब देवोंको मारनेलगे तो बहुतसे तो मारेगये और थोड़ेसे डरकर भागगये उसस्थानसे देवोंका नाशकर दिया जब अमीर ने देखा कि अब कोई देव यहां नहीं रहाहै पहाड़पर जाकर स्वर्गपुरी को देखनेलगा तो देखकर अतिप्रसन्नहुआ और उसमें एक जमुर्रदतख्त अति उत्तम बिछाहै अमीर उसपर बैठगये और इच्छा की कि थोड़ी समय इस पर बैठकर आराम करें फिर दिल में विचारा कि ऐसा न होवे कि हम सोजावें और वे देव जो भागकर गये हैं अपने स्वामी को बुलाकर लावें और मुझको दुःखदेवें इससे सोना उत्तम नहीं यह बुद्धि नहीं है उनदेवों ने जाकर अपने स्वामीसे कहा तो उसने पूछाकि अब वह कहांहै देवोंने कहाकि स्वर्गमेंनिःसन्देहजाकर फिररहाहै आरनाईस सुनकर आगहोगया और कहनेलगा कि वह कहांसे आयाहै और मेरे रक्षकों को मारडाला है मैंभी चलकर उसकी अच्छीगत बनाताहूं यह कहकर कई सहस्रदेवों समेत वहांसे उड़कर आपहुंचा और किलेको घेरकर कहनेलगा कि जाकर तुम सब उसको पकड़लावो देवोंने कहा कि हमलोगोंसे तो वह न पकड़ाजावेगा आप जो जावैं तो पकड़ाजावेगा और आज आपकी भी बहादुरी देखेंगे यह सुनकर आरनाइस क्रोधित होकर अमीरके पासजाकर कहनेलगाकि ओपापी तूने बड़ागजबकिया कि हमारेरक्षकोंको मारडाला अब तूभी बचकर न जानेपावेगा तू मुझको न डरा यह कहकर हथियार लेकर अमीरके ऊपर दौड़ा अमीरने कूद कर उसका हथियार छीनकर उसको पकड़ कर पृथ्वी पर दैमारा तो उसने इच्छा कीकि भागजावे इतनेमें अमीर कूदकर उसकी छातीपर खड़ेहोगये और खञ्जर निकालकर उसके मारने की इच्छाकी तो वह

रोकर कहनेलगा कि ऐ जाफ़ के जादू तोड़नेवाले तू मेरा प्राणछोड़ दे तो मैं बड़ीनेकी करूंगा अमीरने कहा जो तू मुसल्मान हो तो मैं छोड़दूं और अपना सब हत्तान्त मुझसे कहकर मेरे आज्ञाधीन हो तब उसने मुसल्मान होकर कहा कि मैं सुलेमान के समय में सेरदारोंमें बड़ा मातबिरथा और अनेक प्रकारसे मुझपर कृपा करते थे जब उनका बैकुण्ठबास हुआ तो सब लोगोंने जहां पाया अपना अमल करलिया उसीप्रकार से मैंने भी इस क़िलेको लेकर अपनेको यहांका स्वामी बनाया था अब आपने आकर मुसल्मान करके अपनी कृपासे मेरा प्राणछोड़दिया अब आपका सेवकहूं और जो आज्ञा दीजियेगा वही करूंगा यह कहकर मकान से बाहर आया और अपनी सेनासे कहा कि मैं अब मुसल्मान हुआ तम मेंसे जिसको मुसल्मान होना होवे वह रहे नहीं अपने घरकी राह लेवे मैं उनसे नाराज़हूं क्योंकि मैं ईमानदार हूं और तुम बेईमानहो बहुतों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया और बहुतों ने अपने घरकी राहली आरनीस फिर अमीरके समीप आया और कहनेलगा कि जिनदेवों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया उनको तो मैंने अपने पास रहने दिया और जिन्होंने स्वीकार नहीं किया उनको मैंने दूर किया अमीरने सुनकर कहा कि बहुत अच्छा किया परन्तु बड़ीनेकी यह है कि मुझको दुनिया में पहुंचादे क्योंकि मैं बहुतदिनों से तुम्हारे देश में फिररहा हूं उसने कहा कि दुनिया में पहुंचना आपका दुर्लभ नहीं है परन्तु आसमान-परीके डरसे आपको कोई पहुंचा नहीं सक्ता सब उससे डरते हैं परन्तु मैं आपके लिये उसकी आज्ञासे विरुद्धहोकर दुनियामेंपहुंचादूंगा जो आपमेरा कार्य पूर्णकरदेवें अमीर ने पूछा कि वहक्याहै उसने कहाकि मैं जिस क़िलेमें रहता हूं अक़ीक़निगार उस क़िले का नाम है उसके समान संसार में और कोई क़िला नहीं है उसके समीप एक जमुर्रद हिसारनामे क़िलाहै उसका बादशाह लाहूतशाह अति नीतिवान है उसकी बेटी लानिसनामे है उसके ऊपर मैं मोहित हूं जो आप कृपा करके उसको मुझसे मिलादेवें तो मैं आसमानपरी से विरुद्ध होकर आपको दुनियामें पहुंचादूंगा अमीरनेकहा कि यह कौनसी बड़ीबात है तुम हमको वहां तक पहुंचा देवो आरानिसा ने कहा कि आइये मेरी पीठपर सवारहोकर चलिये तब अमीर उसकी पीठ पर सवार होकर चले ॥

दूसरा भाग सम्पूर्ण हुआ

तीसरा भाग ॥

हमज़ा का वृत्तान्त ॥

विदितहो कि जब आरनीस देव अमीरको ज़मुर्रदहिसार की तरफ लेचला तो सायंकालके समय एकस्थानपर जाकर उतरा अमीरने पूछा कि यहां क्यों उतरा उसने कहाकि अब रात्रि होगई है रात्रिभर यहां पर बासकरके प्रातःकाल उठकर आपको लेकर चलेंगे तब अमीरने कहाकि यह तो अति उत्तमहै परन्तु हज़रत खिज़रने आज्ञादी है कि परदे क़ाफके देवोंका बिश्वास न करनाअे हम तुमको एक वृक्षमें बांध कर सोवेंगे उसने कहाकि मैं तो आपके साथ घात न करूंगा परन्तु आपकी इच्छा हो तो मुझको बांध कर सोइये तब अमीर उसको एक वृक्षमें बांधकर आप चरम बिछा कर सोरहे तब रात्रि को आरनीसने बिचार किया जिसके लिये हमने सब वस्तुछोड़ कर इसका साथ किया सो यह मेरा बिश्वास भी नहीं करता तो और क्या करेगा इस प्रकार से बिचार करके वृक्ष समेत वहां से उड़ कर भागा प्रातःकाल को जब अमीर जागे तो न कहीं वह देव है न वृक्ष देखकर अति व्याकुल हुये कि पहिलेही वासा फिर हुआ या वृक्षमें बांधनेसे क्रोधितहोकर चला गया होगा पीछे निमाज़ पढ़कर एक ओर को चले और दो पहरको जब गरमी से व्याकुल हुये तो एक स्थान पर थोड़े से वृक्ष देखकर उस की तरफ जो गये तो चित्त अति प्रसन्न हुआ चर्म बिछाकर लेटगयेतो थोड़ी समयके पश्चात् बनसे एक देव अमीरके सम्मुख आकर कहनेलगा कि तू मुझकोनहीं डराकि यहां पर बैठकर आरामकरने लगा अमीर ने कहाकि मैं यहां के देवों से नहीं डरता हूं तब उसने एक पत्थर उठाकर अमीर के सिरपर दे मारा अमीर ने उसको रोक कर उस देवके दो भागकर दिये और जब गर्मी कम हुई तो वहां से उठकर चले तो थोड़ीही दूरपर जाकर देखा कि अरनातीस को चारसौ जिन मारते हुये लिये आते हैं अमीर को देखकर दोहाई देने लगा अमीर ने जाकर उसको छोड़ाकर पूछा कि तूने क्यों मुझको वहां पर छोड़दिया था उसने कहाकि यह उसीके बदलेमें दण्डमिला आपचलिये आपको ले चलूं तब अमीर फिर उसकी पीठ पर सवार होकर चले और रात्रिको एक स्थानपर उतरकर एक वृक्षमें बांधकर सोरहे तो वह

फिर छत्र समेत उड़कर चला गया प्रातःकाल को अमीर ने जो उसको न पाया तो अपने चित्त में विचारा कि देवोंका स्वभाव ऐसाहीहोताहै ये किसी के साथ नेकी नहीं करतेहैं यह कहकर निमाज पढ़कर एक तरफ को चले और सात दिन तक बराबर चले गये आठवें दिन एक क़िलेके समीप जाकर पहुंचे तो देखाकि बहुत से देव उस क़िलेको घेरे हैं और दो देव कोठेपर बैठे ईश्वर २ कररहे हैं और एक देव क़िलेका दरवाज़ा तोड़ रहाहै अमीर ने जाकर उसको ललकारा कि ओ पापी प्रथम मुझसे लड़ले तो फिर जाकर तोड़ यह सुनकर अमीरके तरफ़दौड़ा और कहनेलगा कि तूतो हमारा भोजनहै तू क्या है जो लड़ेगा अमीर ने कहाकि तू क्या बकता है मैंही अफरेतआदि देवों का नाशकरताहूं तब उसने कहाकि तबही तेरी मृत्यु मेरे पास ले आई है आज तू बच कर न जाने पावेगा यह कहकर अमीर के मारने को दौड़ा अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि वह दो भागहोकर पृथ्वी पर गिर पड़ा इसी प्रकार से थोड़ीही देरमें सबदेवोंको मारकर भगादिया तब लाहूतशाह क़िलेसे निकलकर अमीर के पैरोंपर गिरकर अपने क़िलेमें ले जाकर अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुखहुआ अमीरने पूछाकि तुम्हारा क्या नामहै उसने कहाकि लाहूतशाह मेरा नाम है और इस क़िलेका स्वामी हूं अमीरने तब उससे कहाकि मेरा एक प्रयोजन आपसे है तब उसने कहाकि मैं जो आज्ञा हो करने को आरूढ़हूं अमीर ने कहाकि तुम अपनी बेटी लानिसा का विवाह आरजातीस के साथ करदेवों में उसे क़ौल हारगयाहूं तबउसने ऊपरी मनसेकहाकि मुझेस्वीकारहैपरन्तु चित्तमें अति क्रोधित हो अमीर से अतिप्रसन्नता से कहने लगाकि उठ कर चलकर गद्दी पर आसन कीजिये और तख़्त को एक कूपके ऊपर बिछवादिया था अमीर उठकर जबगये और उस तखतपर बैठनेलगेतो उलटे सिर कूयेंमें चले गये तब उसने एक पत्थर ऊपर से रखवाकर दो सौ जिन्नोंको रक्षाके लिये मुक़र्रर किया यह खबर लानिसा को पहुंची तो वह अति क्रोधित होकर बादशाहके पास आकर कहनेलगी कि तू बड़ा पापीहै कि उसने तेरेसाथ नेकीकीहै तूने उसके वधकरनेकी युक्तिकी उसने कहाकि वह कहता है कि अपनी बेटीका विवाह आरजातीसके साथ मेरी आज्ञानुसार करो इसी से मैंने उसको कैद किया है तब उस समय लानिसा चुपहोरही कुछ उत्तर न दिया रात्रि को लिबास मरदाना पहिनकर हथियार बदनपरलगाके कूपकेसमीप अमीरकेनिकालनेकी युक्तिमें आई और पत्थर हटाकर कुंयेमें निस्सन्देह उतरकरगई अमीर ने देखाकि एक स्त्री चौदह वर्षकी मरदाना रूपधरे हुये मेरे सिर पर खड़ी है अमीरने पूछाकि तू कौनहै वह बोलीकि लानिसा मेरा नाम है आपके छुड़ानेके लिये आई हूं आप कुछ सन्देह न करिये आपको

छोड़ाने के लिये आईहूं अमीरने ईश्वरका धन्यवाद दिया और कमन्द पकड़कर कुंयेसे बाहर आये और उसकी बड़ी प्रशंसाकरने लगे परन्तु पकड़ने वाले बहुत क्रोधित हुये तो लानिसा तलवार लेकर उनको मारने लगीतो बहुतसेतो मारेगये और बहुतेरे भागकर बादशाह लाहूत के पास गये और इस वृत्तान्तको जाकर बादशाहसे बयानकिया लाहूत शाह सुनकर सुन्नहोगया और लानिसा पर बहुत क्रोधित हुआ यहां अमीर लानिसा से रुखसतहोने लगे तब उसने कहाकि मैं आप की लौंड़ी सेंतकी हूं अब आपको छोड़कर कहां रहूं जहां आप जाइयेगा साथ चलूंगी अब आपको न छोड़ूंगीअमीर नेबहुत प्रकार से उपदेश किया परन्तु उसने न माना अपने विचार अमीरकेसाथमेरहना उत्तम जाना तब अमीर के साथ चली और कई मनजिल तक पैदल चली आखिर को थकगई चलनेकी सक्ति न रहगई तबतो अमीर बड़े सन्देह में हुये और उसके साथ होनेसे बड़ा दुःख पाने लगे और मनजिल को चार चार पांच पांच दिनोंमें तैकरनेलगे कई दिनोंके बाद एक पहाड़ बहुत साफ दिखाई पड़ा और उसकी तराई में सैकड़ों कोसतक हरियाली दिखाई पड़ी और उसके मध्यमें एक नहर है कि जिसका जल मोतीसे भी अति स्वच्छहै और चारों तरफ से ठंढी २ वायु आती है जिसके कारण चित्त अति प्रसन्न होताहै तबतो वहां अमीर बैठकर उसकी तीर पै सैर करने लगेकि इतने में एकहरिन सामनेसे आतेहुये दिखाई पड़ा और सीधा अमीर के समीप निसन्देह चला आया परन्तु जब अमीर पकड़ने लगे तब जंगल की तरफ भागा अमीर ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और लानिसा से कहाकि ले ईश्वरने तेरी सवारी के लिये इसको भेजाहै ईश्वर को तेरे दुःख से दया लगी पस जिस समय वहां से चलने लगे लानिसा को उसपर सवार कराकर नाथ में रस्सी लगाकर उसके हाथमें दिया दुःखसे आराम हुआ परन्तु थोड़ी दूर जाने पर हरिन लेकर जंगलको तरफ भागा उन्होंरोका परन्तु न रुका और एक सायतमें हवाहोगया औरउसकाकहीं पता न मिला अमीर बड़े दुःखको प्राप्तहुये और जिसतरफ को वह हरिन भागा उसीतरफ को अमीर भी चले परन्तु कहीं भी पता न मिला दो पहर के पश्चात् एक पहाड़ की तराई में पहुंचे तो एक बाग अति शोभायमान देखा और उसमें एक गुम्बज बनाथा जिसमें कि बराबर से जवाहिर जड़े थे और चारों तरफ जड़ाऊ शामियाने गड़ेथे अमीर जो उसके दरवाजे पर गये तो दरवाजा भीतर से बन्दपाया और भीतर जाने की कोई रास्ता दिखाई न पड़ी इतनेमें भीतरसे शब्द सुनाई पड़ाकि एक मनुष्य विनय करता है कि मुझे क़बूलकर दूसरा कहता है कि बिष्टा खाना अंगीकार है परन्तु तेरे साथ बिबाह करना अंगीकार नहीं है अमीर

दरवाजा खोलदे मैं तेरे पास आने
ने पुकारकर कहा कि अन्दर कौनहै दरवाजा खोलदे मैं तेरे पास आने
की इच्छा करताहूं जब किसीने न सुनातो अमीरने एक लातमारकर
दरवाजा तोड़ डाला और भीतर चलेगये तो देखा कि लानिसा तखत
पर बैठोहै और आरनातीस हाथ जोड़े सामने खड़ा है और प्रार्थना
कर रहाहै अरनातीसने जब अमीरको देखा तो अमीर के पैरोंपर गिर
कर कहनेलगा कि देखिये साहब मैं इसके पैरों पर गिरपड़ा परन्तु
यह मेरे साथ विवाह नहीं करती आप इसको समुझाइये कि मेरे
साथ विवाह करे तो आपकी सेवकाई से जीतेजी मुंह न फेरूंगा और
जहां आप कहियेगा वहां आपको पहुंचाऊंगा अमीरने कहाकि तूने
दो बार मुझे बनमें छोड़दिया है अब तेरी बात का कुछ बिश्वासनहींहै
उसने कहाकि आप मुझे बांधकर सोरहे तो मैं भाग गया अब मेरा
अपराध क्षमा कीजिये अब सदैव आपकी चरणों की सेवा में रहूंगा
अमीरको उसके रोनेपर दयालगी लानिसासे कहाकि अब अरनातीस
मुझे दुनियामें पहुंचानेका वादाकरता है मेरे कहने से तुम इसके साथ
बिवाहकर लेवो यह तुम्हारे मोहमें मरताहै लानिसाने हाथ जोड़कर
अमीर से कहाकि यह तो देवहै आपजो मुझे गधेकेसाथ बिवाह करने
को आज्ञादेवें तो मैं करलूं आपकी आज्ञासे मैं बिरुद्ध नहीं होसक्तीहूं
परंतु मैं भी इससे यह इकरारकरतीहूं कि यह आपको दुनियामें अवश्य
पहुंचादेवे फिर अपनी बेईमानीसे दगा न देवे उसने हर प्रकारसे सौ-
गन्दें खाकर इकरार किया अमीर ने बिबाहकरने के पश्चात् लानिसा
का हाथ आरनातीस के हाथमें पकड़ा दिया आरनातीस ने सलाम
करके कहाकि अब आज्ञाहो तो इसको साथ ले जाकर क़िले निगार
में बिबाहकरूं और अपना हौसिलामिटाऊं किसी तरह से मेरा और
उसका हौसिला बाकी न रहजावे क्योंकि जब मैं आपको दुनिया में
पहुंचाकर फिर यहां आऊंगा तो आसमानपरी अवश्य मुझे मारडा-
लेगी और ऐसानहीं कि जो वह न जाने इसकारण सब मनका हौसिला
मिटाकर तीसरेदिन आपके पासआकर पहुंचूंगा और आपकी आज्ञा
मानूंगा अमीरने उसको जानेकी अज्ञादेकर कहाकि तीन दिन तक
तुमारा आसरा देखेंगे और जो तीसरे दिन न आवोगे तो अपने किये
हुयेका फलपावोगे और पीछेको पछितावोगे तब आरनातीस लानिसा
को गरदनपर सवारकरके क़िले निगारकी तरफगया आधी दूरगयाथा
कि एक मैदान दिखाई पडा जहां तालाब और दोचार स्थानभी अपूर्व
प्रकार के बनेथे वहस्थान उसे प्रसन्नआया उसीतालाबके तीर लानिसा
को गरदनसे उतारकर बैठादिया और उससे कहाकि तू इसीतालाब
पर बैठीरह मैं जाकर कोई सवारी तेरे लिये ले आऊं पैदल ले चलना
उचितनहींहै यह कहकर क़िले निगारकी तरफ चला और लानिसा

को जो गरमी मालूमहुई तो कपड़े उतारकर तालाब में न्हानकरने लगीकि गरमी मिटजावै मनको प्रसन्नता प्राप्तहोवेएकसायत न व्यतीत हुई थी कि एक घोड़ा अरने भैंसे की तरह मोटा आकर तालाब के किनारे खड़ाहुआ तब लानिसाने उस घोड़ेको देखकर तालाबसे निकल कर चाहाकि कपड़े पहिने कि वह लानिसा की तरफ दौड़ा और ला-निसा डरसे पत्थर पर गिर पड़ी तब तो उस घोड़ेने अच्छीतरहसे उस के साथ भोगकरके अपने दिलका हौसिला मिटाया ईश्वर की अपूर्व रचना से उसीदिन उसके गर्भ रहगया और पीछेसे उसके घोड़ा उत्पन्न होगा और बड़ा तेज होगा और उसका नाम अबकरदेव जाद रक्खा जायगा और वह बहुत दिनों तक अमीर की सवारी में रहेगा और जो उसे देखेगा वह उसकी बड़ी तारीफकरेगा पस जब वह देव अपने मनका हौसिला मिटाकर भोग करचुका तो पृथ्वीपर लोटकर अपना रूपधारण करलिया तब लानिसाने कहा कि यह तूने क्या किया क्या उसरूप के धारण करने में अधिक सुख मिला आरनातीस ने कहा कि ऐ लानिसाकल नहीं मालूम क्याहो हमने आजही अपना हौसिला मिटालिया संसारमें एक सायतका कुछ ठिकाना नहींहै हरमनुष्यको प्रत्येकदिन एक कार्य लज्जाका करनापड़ताहै अपने मनको तेरे साथभोग करनेसे प्रसन्नकिया यह कहकर उसको अपने कन्धेपर सवारकरके चला और क़िले निगारमें लेजाकर नाचरंग जैसा उचित था सामान करके करवाने लगा दिनको तो नाचरंगमें रहता रात्रिको लानिसाको बगल में लेकर सोता और उसके साथ भोगकरता अब इसका वृत्तान्त छोड़ कर थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एकदिन प्रातःकाल सुरखपोशाक पहिनकर नेत्रोंमें काजलदेकर तख़्त पर मोहनीरूपबना कर बैठी और सब मुसाहिबोंको बुलाया और सबके आनेके लिये बड़ी ताकीद की आकर जिसने उसका रूपदेखा वहीं दंगहोगया और हर एक मुसाहब डरने लगे कि कहीं हम लोगों पर मोहित न होजावे बैठे २ अब्दुलरहमान की तरफ सनमुख होकर कहने लगी कि हमने अमीर को बियाबान सरगरदांसे छोड़वादिया था देखोतो अब जिन्दा है या मरगया और किसयुक्तिमेंहै अबदुलरहमानने हाथबांधकर विनय किया कि मलिकासाहबा रमलके विचार से तो यह मालूम होता है कि अमीर आजतक उसीमें इधरउधर घूमरहे हैं परन्तु आरनातीसदेव ने इक़रार किया था कि आप लानिसा से मेराविवाह करवादीजिये तो मैं आपको दुनिया में पहुंचादूंगा सो अमीरने लानिसा का विवाह आरनातीस के साथ करवादिया है वह अब क़िले निगारमें सुखसे भोग कररहा है आजके दूसरे दिन अमीर को दुनिया में लेकर जावेगा जो उसने इक़रार किया है उसे पूराकरेगा आसमानपरी यह सुन क्रोधमें

जलमेलगी और कहनेलगी कि आरनातीस का भी यह मुंहहुआ कि मेरे पतिको मुझसे अलगकरने की शक्ति रखताहै और मुझे नहीं डरता इसके बदले में उसे कैसा दण्डदेतीहूं यह कहकर बड़ेक्रोधसे कई सहस्र देवोंको साथ लेकर तख़्तों पर सवार होकर क़िले अक़ीक़निगार की तरफचली और क्रोधसे जलतीहुई वहां जाकर पहुंची तब दूतोंने ख़बर दी कि इससमय आरनातीस लालिसा को लियेहुये पलंगपर सोरहाहै इसीसमयमें उसको बांधकर देवोंके बस कीजिये आसमानपरीने जाकर दोनों की मुश्कें बांधलीं और गुलिस्तान अरम में लेआई और अपने दिलका संदेह दूरकिया और उनको लेजाकर कारागार सुलेमानी में जहांकि जहांनके क़ैदीआकर रक्खेजाते थे और कभी न छूटतेथे उनको खूब मार पीटकर उसीमें बन्दकिया और नगरमें ढिंढोरापिटवादिया कि जो कोई हमज़ा को बिना हमारी आज्ञा लेजाने की इच्छा करेगा उसको इसीप्रकारसे दण्डमिलेगावरञ्च इससे भी अधिक अब अमीर का वृत्तान्त सुनिये कि जब तीनदिन व्यतीत होगये और आरनातीस न आया तो अमीर अपने दिलमें कहने लगे कि कोई देव हमज़ा तुझको दुनियामें न पहुंचावेगा ये सब बड़े दुष्टहैं और जो कोई वादाकरता है वह अपना प्रयोजनकरनेके पश्चात् धोखादेकर चलाजाताहै अब पहुंचा वेगा तो ईश्वरही पहुंचावेगा नहीं तो कोई न पहुंचावेगा यह कहकर मेहरनिगार को सोचकर रोनेलगे कि इतनेमें एक तरफसे शब्द सलाम का सुनाईदिया अमीरने फिरके जो देखा तो हज़रतख़िज़र हैं उठकर खड़ेहुये और कहनेलगे कि हेईश्वर क्यामैं अब इसी में रहूंगा कब तक इस बनमें दुःखउठाऊंगा कि जो कोई मुझे पहुंचाने का वादा करता है वह पूरा नहीं करता देखिये कि आरनातीस देवने किस २ प्रकार से सौगन्धेंखाई थीं परन्तु पूरा नहीं करता तब हज़रतने कहा कि यह सायत का फलहै घबरा नहीं ईश्वर तुझको दुनियामें पहुंचादेगा और तुम सब से जाकर मिलोगे परन्तु थोड़े दिन और दुःख उठावोगे बहुत गई थोड़ीरही यह सबबातसत्य है और आरनातीस देवका अपराधकुछ नहींहै वह अपने कहनेपर तैयार था और उसकी इच्छा थी कि आप को दुनियामें पहुंचादेवे परन्तु आसमानपरीने अब्दुलरहमानसे पूछकर उसको क़िले अक़ीक़निगार से पकड़कर दोनोंको गुलिस्तान अरम में लेजाकर दण्डदेकर सुलेमानी कारागार में डालदिया है इस बात पर आसमानपरीने उसबेचारे को बड़ा दुःखदिया है यह कहकर हज़रत ख़िज़र जिधरसे आये थे उधरही को चलेगये अमीर इसबात के सुनने से ऐसे व्याकुल हुये कि उनको मालूम भी न हुआ कि किधर गये अमीर वहांसे आगेकोचले सतरहदिन तक बराबर चलेगये अठारहवेंदिन एक पहाड़ के नीचे पहुंचे तो उसकी चोटीपर एक मंडपबिल्लौर पत्थरका

दिखाईपड़ा गिरतेपड़ते वहांतक गये तो उसके ऊपर जो कलश रक्खा था वह इसप्रकारसे चमकता था कि जो सूर्य आंखमिलावें तो चकचौंधी लगे तब तो अमीरने अपने दिलमें विचारा कि इसके समीप से जाकर देखें तब पहाड़पर चढ़गये तो एकबाग़ देखा जिसके चारोंतरफ़ दीवार उठीथी परन्तु दरवाज़ा उसका बाहरसे बन्दथा और कोई वहांदिखाई न पड़ता था अमीर निडरहोकर उसताले को तोड़कर भीतर चले गये तो देखकर कहनेलगे कि जिसदिन से मैं क़ाफ़में आयाहूं अबतक ऐसा स्थान कहीं नहीं देखा और फिर जो कलश को दृष्टिकरके देखातो एक मोतीका शबचिराग़ रक्खा है और उसपर एक लालजड़ा है अमीर ने हाथ लपकाकर कलश से गौहर शबचिराग़ को अपने से जो मिलाया तो एकरत्ती का भी फरक न पड़ा अमीर अति प्रसन्न हुये कि यह भी सौगात क़ाफ़कीहै संसारमें काहेको ऐसे किसीबादशाह या शाहनशाह ने देखेहोंगे किसीने स्वप्नमें भी न देखाहोगा तत्पश्चात् मंडप के भीतर जो गये तो देखा कि एक तख़्तजड़ाऊ बिछाहै और जिधरही नेत्रउठा कर देखा उधरही हर प्रकार की वस्तु अपने स्थान पर अपूर्व प्रकार की दिखाई दीं तब इच्छा की कि इस पर थोड़ीसमय ठहरकर आरामलेवें परन्तु फिर विचारा कि ऐसानहो कि कोईआकर कहै किसकीआज्ञा से तू इसके भीतर आया है इसकारण यहां ठहरना अनुचित है और इस स्थानसे निकल चलना उचित है इस विचार से मंडप से निकलकर रविशपर रूमाल बिछाकर बैठगये और आसेकी तकिया लगाली तब थोड़ीही समय के पश्चात् एक आंधी ऐसी आई कि मालूम होता था कि सब दृक्षगिरजा चाहतेहैं तत्पश्चात् एक सुपेददेव जो लंबाईमें पांच सौगज का था क्रोधसे भरा हुआ अमीर के सामने आकर पुकारा कि ओ चोर कहां है जिसने गौहर शब चिराग़ कलश में से निकाल के लुप्त करदियाहै और बड़ाशोर ग़ुलकरनेलगा अमीरने ईश्वरका नाम लेकर सामने आकर ललकारा कि ओ खोटदेव तूक्या बकताहै किसको ढूंढ़ता है मुझको भी जानताहै या नहीं मैंदेवों का मारनेवाला और जादूका नाशकरनेवालाहूं और जो न जानताहो तो सामने आ बतलादूं मैं सहायक बादशाहक़ाफ नाशकरता अफ़रेतऔर बधकर्त्ता अहिरमन हूं उसने कहाकि आजमालूमहुआ कि काफ़केबागको आपही ने बरबाद कियाहै देखउसका बदलामैं अबतुझसेलेताहूं और जो हजार प्राण भी तेरेहोगा एकभी मेरेसाम्हने से लेकर न जाने पावेगा अमीरने कहाकि बकता क्योंहै जो मरेहुयेदेवोंका मित्रहै और उनकेपास जानेकी इच्छा रखता है तो आतुझको भी उन्हीके समीप भेजदूं कि जाकर मिल मेरे सन्मुख आ और अपनी बहादुरी दिखा तब उसने अपनी तलवार लेकर अमीर के शीशपर मारी जिसमें कि कईटुकड़े पत्थर के लगेये और

जानाकि इसी वारसे अमीर समाप्त होजांयगे तब अमीर ने अकरबसुले-
मानीसे उसके दोभाग करदिये और कमरबन्द पकड़कर देवों को पृथ्वी
पर देमारा और छातीपर सवारहोकर खञ्जर रुस्तमी उसके गले पर
रखदी तब तो वह देव रोनेलगा और कहा कि आप मेरा प्राणछोड़
दीजिये तो सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीरने कहा कि जो मुस-
ल्मानहोजावो तो मैं छोड़दूं और तुझको नमारूं नहीतो अभी इसीखंजर
से तेरा प्राणलेताहूं तब उसदेवने कहाकि इस पहाड़की तराईमें मेरे
शत्रुहैं जोतू उनको मारडाले तो मैं मुसल्मानहोता हूं अमीरने पूछा
वे कौनहैं उनका तो हाल मुझसे बतला देवने कहा कि इसपहाड़ के
नीचे हज़रतसुलेमानकी सैरगाह है वहीं बैठकर चित्तको प्रसन्न करते
थे अब उसीस्थान पर सातदेवसुलेमानी रहतेहैं और वे ऐसे बलवान हैं
कि सबलोग उनसे डरतेहैं और उनकी सेवाकरतेहैं जो उनको मारिये
तो मैं बड़ा गुण मानूंगा और आपकी आज्ञानुसार होकर रहूंगा
अमीरने कहा कि तू मुझको वहां लेचल तब वह देव अमीरको पहाड़
पर लेगया और उनका स्थान दिखादिया अमीरने देखा कि कोसों तक
अपूर्व प्रकारका मैदानहै और मध्यमें एक नहर दोसौ गज चौड़ी और
लंबाई का कुछ हद्दनहीं और उसका जल ऐसा स्वच्छ है कि जिसकी
प्रशंसा करनी शक्ति से बाहर है और हौज के बीचमें एक बिल्लौर का
चबूतरा पचास गज़ का ऊंचा और पचासही गज लंबा चौड़ा था और
उसमें पुखराज के कड़े उसके चारों ओर लगेथे और कड़ों मेंभी जवा-
हिर जड़े थे और उसके मध्य में एक तख्त सजा हुआ बिछा है और
सुन्दरता में अद्वितीय है अमीर कूद कर उसके ऊपर गये और चारों
तरफ देखकर सपेद देवसे पूछा कि तुम्हारे शत्रु कहांहैं उसने कहाकि
इसीमेंहैं आप पुकारें वे बोलेंगे और आपके समीप आवेंगे अमीर ने
पुकारकर कहा कि ऐ नेस्तान तुम कहांहो और क्या खातेहो तुम्हारी
मुलाकात के लिये आया हूं आकर बाहर अपना रूप दिखलावो
वहांसेशब्दआया कि हमलोगजाफरां अर्थात् केसरखातेहैं बैठो अभीहम
आतेहैं तत्पश्चात् सातोंनिस्तानआकरअमीरके सन्मुख बराबरसे हथियार
लेकर खड़े हुये अमीरने जो देखातो धड़तो मनुष्य की तरह और दांत
ऐसे तेजसेतेजथे कि जो मक्खी बैठे तो दांतकीनोक घुसजावे और दांतों
की नोकें तरवार की धारसे भी अधिक तीक्ष्ण थीं तब अमीर ने अकरब
सुलेमानी को हाथमें लिया और उनके बीचमें जाकर सातों को मार-
डाला और तलवार ने उनके रुधिर से अपना पेटभरा तब अमीर ने
सपेददेवसे पूछा कि अबतो तुम्हारे शत्रुओं का नाश होगया अब तुमको
कुछ संदेह नहीं रहगया तब तो वह देवमारे खुशीके चूतड़ पीटर कूदने
लगा और अमीरसे कहा कि तूनेतो मेरे शत्रुओंको मारा परंतु मैं तेरा

शत्रु अभी मैाजूदहूं और यह हम लोगों को उचित है कि भलाई के बदलेमें बुराई करें उसके पापसे न डरें यह कहकर एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर अमीर के ऊपर फेंका अमीर ने उसको रोकलिया और तलवार खींचकर दौड़ा परंतु वह ऐसा भागा कि फिर उसका पता नमिला हरचन्द अमीरने बुलाया परंतु वह न ठहरा और कहनेलगा कि ऐसा पागल नहींहूं कि तेरे समीप आकर अपना प्राणदूं जब कभी तुझे ग़ाफ़िल पाऊंगा उस समय तुझको मारडालूंगा यहकहकर आकाश पर उड़गया अमीर ने दिलमें विचारा कि अब यहां रहना अनुचित है क्योंकि सपेददेव अबमेरा शत्रुहै नहीं मालूम कबआवै और मुझको मारडाले यहविचारकर वहांसेचले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर सातदिनराति बराबर सपेददेव के डरसे चलेगये कहीं एक साअत सुस्ताने को भी नहीं ठहरे आठवें दिन एकनगर दिखाई पड़ा उसका भी अपूर्व वृत्तान्त है कि वहांके मनुष्य केवल आधेधड़के थे जबदो मनुष्य खड़ेहों तो एक संपूर्ण मनुष्य बने और उनका नाम नीमत नथा और वे सदैव इसी प्रकारसे रहतेथे और वहां के बादशाह का फ़तूह नीमतन नाम था परंतु बड़ा प्रतापी और दयावानथा जिससमय उसने अमीरके आने की खबर सुनी उसी समय आकर अगवानी मिलकर अमीर को अपने नगर में लेजाकर कईदिनों तक मेहमानी की और सब तरह से प्रसन्नकिया तब अमीरने उसबादशाहसेकहा कि आप मुझको दुनिया में पहुंचासक्तेहैं उसने कहा कि हमआधे मनुष्यहैं हम अपने सरहदसे बाहर किसी तरहसे नहीं जासक्ते तब अमीर उससेआज्ञालेकरआगेको चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरने उसमैदान को दसदिन में बड़े श्रमसे तै किया ग्यारहवें दिन एक नदीके किनारे पर पहुंचे तोदेखा कि वह नदी बढ़ीहुई है और वहां न कोई नाव है न और कोई वस्तु कि जिससे उतर कर पार जावें और नावका उसमें उतरना दुर्लभ था लाचार होकर उसीस्थानपरनींद आगई और स्वप्नमें रोरोकर मलिका को समझाने लगे और कहनेलगे कि अब हम दुनियां में न पहुंचसकेंगे सपेददेवतो अपनी घातमें लगाही था अमीरको सोतेहीमें पत्थर समेत उठाकर उड़गया दोकोसउंचाईपरगयाथा कि अमीरकेनेत्र खुलगये तो देखाकि सपेददेवउड़ायेलियेजाताहै अमीरने कहा हेदेव मैंने तेरे साथ नेकीकी तू मेरेसाथ बदीकरताहै ईश्वर से भी नहीं डरता उसनेकहा कि मैंनेतुझसेपहिलेही कहदिया है कि हमलोग नेकीके बदलेमें बदीकरतेहैं यहीहमलोगोंका स्वभावहै और सदैव यहीकरतेरहे अबयहबताओ कि तुझको पहाड़पर फेंकूं या नदीमें अमीरने विचारा कि देवलोग उलटी मतकरतेहैं जो कहूंगा उसके विरुद्धकरेगा अमीरने कहा कि जो तू बदलालेताहै तो मुझे पहाड़पर फेंकदे इसीप्रकारसे अपना बदलाले सपेद

देवने कहा कि नहीं मैं तुझको नदीमें फेंकूंगा कि तू डूबकर मरजाय फिरमेरे साथ दुष्टता न करे यह कहकर उसे पत्थर समेत नदी में फेंक कर उड़गया तब हजरत इलियासखिजरने ईश्वरकी आज्ञापाकर दोनों तरफ़ हाथ अमीरको उठाकर नदीके पार रखदिया अमीर ने दोनों पैगम्बरों को सलाम किया और रोकर कहा कि ऐ हजरत आसमानपरी ने मुझको बड़ा दुःख दिया कि मुझको दुनिया में नहीं जानेदेती कि इस दुःखसे छूटो हजरतखिजर ने कहा कि व्याकुल न हूजिये आबदाने के आधीनहै जब आबदाना यहांसे उठेगा तबतुमजाओगे और अपने लश्करमें जाकर सुखपाओगे थोड़ेदिन और दुःखपाओगे फिर तुम्हारे दिन अच्छे आवेंगे ईश्वरपर भरोसा करके बैठेरहो अब थोड़ासा वृत्तान्त शहपाल और आसमानपरी का सुनाताहूं कि एक दिन शहपाल दरबार में तख़्तपर बैठाथा कि आसमानपरी सुर्ख पोशाक पहिनेहुये दरबार में आई और अपने तख़्तपर बैठकर अबदुल रहमानसे पूछनेलगी कि देखोतो आजकल अमीरकहां हैं जिन्दा हैं या मरगये और उस समय अठारहलाख सरदार दरबारमें बैठेथे सबइसरूपको देखकर कांपने लगे और मारेडरके हरदेवने अपना मुखढांकलिया कि आजआसमानपरी गजबीहै और क्रोधमें भरीहै देखेंकौन अपने प्राणसे जाताहै इतनेमें अबदुल रहमान विचारकर रोनेलगे और शहपाल से कहा कि आपके साथ हमजाने क्या बुराई की है जो आप उसको यह दुःखदेरहे हैं तब बादशाहने व्याकुलहोकर पूछा कि क्याहुआ कुशलतो है किस दुःख में अमीरपड़ेहैं मुझसे अति शीघ्रही बताओ कहा कि जहां दया न होवहां कुशल कौन पूछताहै तुमबेपरवाहहो तुमको उनकी क्याखबर है सफेद देवने अमीरको अखजरनदी में फेंकदिया है अबदेखें अबजीते निकलते हैं या नहीं जो इसनदीमें डालदिया जाताहै उसके जीनेका कुछभरोसा नहींरहता बादशाह यहहालसुनकर व्याकुलहोगयेऔर आसमान परीभी बाल अपने सिरके नोचकर रोने पीटने लगी तब उसी समय बादशाह छोटेबड़ों समेत तख़्तों पर सवार होकर नदी की तरफ चले एक सायतमें उसनदीपर पहुंचेतो उससमय अमीरख्वाजे अखजार और महतर इलियासके साथ निमाजपढ़चुकेथे कि बादशाह आसमानपरी को साथलिये पहुंचे अमीरने दाहिनी तरफ जो मुखकियातो शहपाल को खड़ापाया मुंहफेरकर बाईंतरफ कियातो आसमानपरी खड़ीथीतब अमीरने उसकी तरफसे भी मुखफेरलिया दोनों की तरफ न देखा तब बादशाह और आसमानपरी हजरत अखजर के पैरोंपर गिरपड़े और कहनेलगे कि अब हम आपके सौगन्धखातेहैं और यह इक़रारकरतेहैं कि छः महीने के पश्चात् अमीर को दुनियामें पहुंचादेवेंगे और जो न पहुंचावेंतो आपके और ईश्वर के गुनहगार होवें और जिस प्रकार से

ईश्वर चाहै दंडदेवे अबकी बारमेरा अपराध क्षमाकराइये मेरे ऊपर कृपा कीजिये तब हज़रत ख़िज़रने अमीरको समुझाया कि जहां नौवर्ष व्यतीतहुये उसी प्रकारसे छ:महीने इनके कहनेपर और रहो और जो ईश्वरने भागमें लिखदिया है उसकोसहो आसमानपरी और शहपाल सौगन्धें खाते हैं अबकी यह भी देखलो जो कोई इक़रार और सौगंध करता है उसेमानना उचित है अमीरने सिरझुका कर कहा कि आप पैगंबर हैं आपकी आज्ञा मुझे माननी हर प्रकार से उचितहै जो आप कहतेहैं तो छ:महीने और रहेंगे तबआसमानपरी और शहपालशाह दोनों अमीरके पैरोंपर गिरपड़े और अपने अपराधों पर लज्जित हुये और क्षमाकराने को सौगन्ध दी अमीर लाचारहोकर हज़रत ख़िज़र और अलियाससे आज्ञालेकर शहपालशाह और आसमानपरीके साथ तख़्तपर बैठकर गुलिस्तान अरम की तरफ़चले गये ॥

वृतान्त ख़ुसरो हिन्द लन्धौर पुत्र सादानका क़िलेसरन्दीपमें पहुंचना और पराजय देना महलीलसंगसार, मलिक अहबूक और बहराम बादशाह ख़ाक़ान चीनको और चीनमें जाकर राजगद्दीपर बैठना ॥

लिखनेवाला लिखताहैकि महलील संगसार और मलिक अहबूक बहुतदिनोंसे किलेसरन्दीपको घेरेपड़ेथे और कईबारक़िलेसे युद्ध किया एक दिन तबलजंग बजवाकर क़िलेपर धावाकरनेकी आज्ञादी तबसेना मुसल्मानी ईश्वरका नाम लेलेरोनेलगी कि इतनेमें एक बारगी जंगल की तरफ़से गरदउठी और जब वह गरद बन्द होगई तो अलम और निशान आदिक दिखाईदिये और नवीन २ मनुष्य भी दिखाई पड़े तब क़िले वालोंनेदूरबीनलगाकर देखातोमालूमहुआकिख़ुसरोहिन्द अपनी सेनासमेतआतेहैं और बहराम बादशाह ख़ाक़ान चीन घोड़ेपर सवार अपने देश की तरफ़ चला गया और लन्धौर अपनी सेना समेत इधरको आया तबतो क़िलेमें ख़ुशीके डंके बजने लगे मलिक अहबूक और महलील संगसार डंके का शब्द सुनकर बड़े आश्चर्य में हुये कि ऐसे दु:ख में डंका ख़ुशीका बजवारहेहैं और हमारी सेनाका और हमारा कुछ डरनहीं करतेकि इतनेमें ख़ुसरो लन्धौर संगसारोंकी सेनापर आगिरा और मारनेलगा और जैपूरने जो देखाकि ख़ुसरोहिन्द युद्धकर रहा है क़िलेका दरवाजा खोलकर अपनी सेनाभी लेकर मिला और उनके साथहो युद्ध करने लगा मलिक अहबूकने अपना हाथी बढ़ाकर ख़ुसरो के हाथीके बराबर जाकर खड़ा किया और एक तलवार ख़ुसरो पर मारी उसने रोकली परन्तु हाथी के लगी और वह घायल होगया तब ख़ुसरो कूदकर अलगखड़ाहुआ तब फिर अहबूकने एकबार चलाई ख़ुसरोने रोककर उसके हाथी की सूंड़पकड़कर ऐसा दबाया कि वह चिल्लाया और रुधिर की नदी बहनेलगी और मलिक अहबूक हाथी से

उतरकर खुसरो के सन्मुख खड़ा हुआ तब खुसरो ने उसका कमरबन्द पकड़कर उठालिया और पृथ्वी पर देमारा तो उसके छठी का दूधतक भी गिरपड़ा और पीछे दोनों टांग पकड़कर चीरकर फेंकदिया उसी समय में ऐसा बादल और बिजली चमकी कि मालूमहुआ कि पृथ्वी और आकाश फटगया और इसके बन्द होने के पश्चात् आकाश से एक छोटासा बच्चा आया और खुसरो को लेकर उड़गया यह देखकर संग-सारोंने एकबारगी धावाकर दिया तब सेना हिन्द ने भागकर अपना किला बन्दकर लिया और संगसार की सेना ने चारों तरफ से घेरकर डेरा डालदिया अब इस वृत्तान्त को छोड़कर थोड़ासा हाल मलिक लन्धौर का सुनाता हूं कि जो बच्चा लन्धौर को उठाले गया था वह शाशदरिजली बादशाह अवेज परदे काफ की बेटी थी उसने खुसरो का बल और बहादुरी देखी तो विचारा कि इसको लेजाकर सफेददेव को मरवाना चाहिये कि उसने राशदपरी पर मोहित होकर विवाह करनेकी इच्छा की थी जिस समय उसने क़बूल न किया और कहा न माना और उसके बदले में दो चार गालियां भी दीं उसको पकड़कर एक खोह में उसके स्थान के समीप था क़ैद किया और राशदहपरी के पकड़ने की घात में हुआ कि उसको भी पकड़कर अपने बस में करके अपना हौसिला मिटावे राशदहपरी यह हाल सुनकर गुलिस्ताने अरम की तरफ गई कि असमानपरी से सलाह करके इस सफेददेव को मरवावे वहां जाने पर मालूम हुआ कि आसमानपरी किसी देश को गई है तब वहां से पलट कर दुनिया की तरफ सैर करने को चली आई घूमते २ सरनदीप में लन्धौर का बल देखकर उठा लेगई और उसको अति प्रसन्नतासे अपने बागमें उतारा और आप सजकर खुसरो के सामने आई तो लन्धौर देखतेही उसपर मोहित होगया और उसका रूपदेखकर व्याकुल होगया और पूछाकि मुझेइसबागमें कौनलेआया और यह कौनदेश है राशिदपरी ने कहा-यहदेश परियों का है और मैंही आपको लेआईहूं कि एवादेवने मेरेपिताको क़ैदकिया है और मेरेसाथ विवाह करनेकी इच्छाकरताहै परंतु मैंनहींमानतीहूं और हमारे बादशाह नेभी एकमनुष्य परदेदुनिया से बुलवाकर हजा-रहों देवोंका नाश करवाकर अपनादेश फिरसे अपनेआधीन किया है और उसकी सहायतासे अपनेशत्रुओंसे अच्छा बदलालियाहै और अपनी बेटीभी जोकि अतिस्वरूपवानहै उसकेसाथ विवाहकरदियाहै सोमैंअपनी सहायता के लिये आपको लेआईहूं जो आप उसदेवको मारकर मेरा दुःखछुड़ादीजिये तो मैंभी आपके साथ विवाहकरके सदैव आपको आ-शाकारी करूं राशदपरी ने खुसरो को सफेद देव के स्थान पर भेजवा दिया जिससमय खुसरो वहां पहुंचा तो पहरेवालों ने अपने सरदार से

जिसका नाम सुआरायब्रह्मनथा जाकर कहा कि एकमनुष्य आयाहै और
नहींमालूम कि किसप्रकार से आयाहै सुआरायब्राह्मन खुसरोको देखकर
दौड़ा कि इसको पकड़कर सपेददेव के पास लेजाऊं कि उसको देखकर
पायितोमिलकेऊं लम्बौरके पकड़नेको हाथबढ़ाया तो उसने हाथपकड़
कर ऐसा दैमारा कि उसकाहाथ टूटकर अलगहोगया तो इससे यह
डरकरभागा और सपेददेव लम्बौर के ऊपर तलवारलेकर दौड़ेबहुतोंको
लम्बौर ने तलवारसे मारडाला और किसीकी तलवार उसपर नलगी
तब सबदेव भागगये और लम्बौर राबदजिन्नी को लेकर वौमरांकैद से
चलागया उस स्थानपर लेआनेसे राबदजिन्नी खुसरोसे अतिप्रसन्नहुआ
और कईदिनोंतक नाचरङ्ग करवानेकी आज्ञादी खुसरोने उसी नाचरङ्ग
के समय ख्वाजे अब्दुल रहीम से कहा कि अपने बादशाह से कहो कि
मैं उसकी बेटीपर मोहितहूं उसका विवाहमेरेसाथकरदेवे और मुझसे
जिसप्रकारसे चाहे वैसा इक़रार करालेवे ख़्वाजेने बादशाहसे खुसरोका
संदेसा कहा तब बादशाह ने वज़ीरसे कहा कि तुममेरीतरफ़से खुसरो
से कहोकि मुझेअपनीबेटीका बिवाहकरनेसे बड़ीप्रसन्नताहै परंतुपहि-
ले सपेददेवको मारकर क़िलाके सरसर को उससे छीनकर मेरे आधीन
करदेवें फिर मेरीबेटी के साथ बिवाहकरके प्रसन्नता के साथ वास करें
लम्बौर ने अङ्गीकारकिया और रात्रिको तो सोरहा प्रातःकाल उठकर
सपेददेवके मारनेके लियेगयाअब सपेददेवकाहालसुनियेकि देवदखसर
से जाकर सपेददेवसे कहाकि आजएकमनुष्यने आकरतुम्हारे पहरेवालों
को मारकर राबदजिन्नीको छुड़ाकर बायुकेसमान लेकर उड़गया और
तुमकोभीढूंढ़ताथा बहपापी सुनतेही आगहोगया और कहनेलगाकि
वह दूसरामनुष्य कहांसे आया एकमनुष्य जो आयाथा उसको तो मैंने
अबुलनदी में फेंकदियाथा वह मरगयाहोगा घरमें आकरदेखा कि
एकमनुष्य राबदपरीको गोदमें लिये बैठेहैं और इसप्रकारसेप्यार
कररहा है सपेददेव यहहाल देखकर तलवार लेकर लम्बौर पर दौड़ा
लम्बौरने रोककर तलवार छीनली और एकघूंसा ऐसामाराकि वह
पृथ्वीपर लोटगया तब खुसरो ने उसकी मुश्कें बांधकर अपने वश कर
लिया और उसका हौसिला तोड़दिया और सबदेवोंको मकानसे नि
कालदिया और मकान अपनेक़ब्ज़ेमें करदिया एककोभी वहां न रहने
दिया तत्पश्चात् सपेददेवको लाकर राबदजिन्नी के हवालेकिया राबद
जिन्नीनेखुसरोको गलेसेमिलाया और बहुतसी अशरफी और रुपयान्यो-
बछावर किया और सपेददेवको एकखोहमें जो दो पहाड़ोंके मध्यमेंथा
क़ैदकरके कईहज़ारदेवोंका उसपरपहराकिया और आज्ञा दी कि खूब
खबरदारीसे रखना यह भागने न पावे और बिवाहका सामानकरके
लम्बौरके साथ अपनीबेटीका बिवाह करदिया और कईदिनोंतक सेड

मानदारी और नाचरङ्ग हुआ किया तत्पश्चात् लन्धौरने देवोंको सैसर मरमर से निकालदिया और उसको अपनेआवर्णमें करलिया और राघद परीके साथ दिनरात्रि सुखकरनेलगे और उसीपर मोहितहोगये एक दिन गर्मीके दिनोंमें सङ्गमरमरके चबूतरेपर दृक्षोंकीछायामें सोरहाथा कि इतनेमें देवपलंगसर ने जोसदैव घातलगाये रहताथा संयोगपाकर सपेददेव के खोहसे निकालकर कहा कि इससमय खुसरो निःसन्देह सोरहा है इस समय उसको पकड़ना उचित है सपेद देव लन्धौर को अति शीघ्रतासे उठाकर अपनेघर लेगया तौक्ष और जंजीरपहिनाकर कारागार में डालदिया इस उपायसे उसको क़ैद करलिया तत्पश्चात् राघदपरी के पकड़ने के लियेगया कि उसकोभी पकड़कर अपनाबदला लेवे परंतु वह इसीके डरसे जादू अबलीचिसाल में जो सेहसवलीदेव ने बनायाथा जाकरछिपी सपेददेव ने यहहाल सुनकर इच्छाकी कि जा-कर उसकोभीपकड़लावे और अपने आधीनकरे परंतु देवनेनिषेधकिया कि आप उसमें नजाइये क्योंकि उसमें जाकर कोई जीता नहींनिकला तब सपेददेव सरदारों के साथ लेकर जादूको घेरकर पड़ारहा और उसका हाल देखाकिया और सुन २ कर डरनेलगा अब थोड़ासा हाल संगसारों का बयान करतेहैं उनका वृत्तान्त तुमको सुनातेहैं कि जिस समय वह बच्चा लन्धौरको उठालेगया और सेनाने क़िलाबन्दकरलिया तब बहुतदिनोंतक क़िलेवालोंको बड़ादुःख दिया जैपूरने लाचारहोकर मह्लीलसंगसार से एक मास की छुट्टी मांगी और एक पत्र बहराम बादशाह खाकानचीनको लिखा कि हमबड़ेदुःख मेंहैं हमारी सहायता करनी आपको उचितहै नहीं तो हमलोग बरबादहोतेहैं वहपत्र देखते हीबादशाहचीन सेनासमेत सरनदीपकी तरफ रवानाहुआ और जिस समय बङ्गाले में पहुंचा तो वहां दो भाई जादखां और समन्दखां जो आतिशबाजीकी विद्यामें पूर्णथे बहरामसे मुलाक़ातहुई तब कहा कि जो मुझे साथ चलने की आज्ञाहोवे तो चलकर संगसारों को एक बारगी फूंकदेवें और ऐसाजलावेंकि सबका नाश होजावे मनुष्य तो क्या कोई स्थान न रहजावेगाखाकानइसबातके सुननेसे अतिप्रसन्नहुये और उनको खिलअतदेकरअपने सेनामेंकरलिया और बड़ीप्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहोते थे औरइक़रार किया कि विजयहोने के पश्चात् तुमलोगोंके साथ अच्छे प्रकारसे सन्मुखहोंगेसंगसारोंकावृत्तान्तसुनिये कि जब वादा पूराहोगया तो फिर मुसल्मानमानी सेनाको दुःखदेने लगे तब मुसल्मानमानी सेना ईश्वरका स्मरणकरके कहनेलगी कि हे ईश्वर इनदुष्टोंके हाथों से हम लोगोंका प्राण बचा अब तूही हम लोगोंका रक्षक है इतने में शत्रुकी सेना न आई थी कि बहरामकी सेना आपहुंची ईश्वरने उनकी सहा-यताकेलिये भेजदिया और युद्धहोनेलगा तब जादखां और समन्दखां ने

ऐसी आतिशबाजी की दृष्टि की कि संगसार अड़ न सके और बहुत से जलभुनकर राखहोगये और जो बचे वे ऐसी शीघ्रता के साथभगे जिस प्रकारसे बेनकेल का ऊंटभागे और आतिशबाजी से ऐसा डरे कि जब कभी लूकटूटते देखते तो यही जानते कि आतिशबाजी की बरसारहा है और डरके भागते इसीप्रकार से उनका हियाव छूटगया और सब भागगये और बहराम अति प्रसन्नताके साथ क़िले सरन्दीप और क़िले वालोंको बड़ा आनन्दप्राप्त हुआ परंतु लन्धौरके न होनेसे बड़े सन्देहमें हुआ और चारोंतरफ लन्धौरके ढूंढ़ने के लिये सिपाहियोंको भेजाकि उसको ढूंढ़कर लेआवें कि बहराम उसकेदेखनेसे प्रसन्नहोवे अबथोड़सा वृत्तांत राअदपरी का सुनिये कि जब वह सपेददेव के डर से जादू अबिलिमाल में गई थी तब उसके गर्भथा नौमहीने के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्नहुआ तो उसकानाम आरशिवपरीजाद रक्खा और उसके उत्पन्न होनेका वृत्तांत नामसमेत लिखकर जादूके बाहर फेंक दिया कि पिता मेरे पुत्र होने का हाल जानलेवे संयोग से एक परीजाद ने उसपत्रको पाया और लेजाकर राअदजिन्नीको दिया राअदजिन्नी ने उसपरीजाद से कहा कि इसपत्र को सरनदीप में लेजाकर जो आशिवोपरीजादों में से बड़ाहो उसको देना अतिशीघ्रही इसपत्रको वहां पहुंचा परीजाद ने सरन्दीप में जाकर बहराम के गोद में डालदिया तब बहराम ने पत्र को खोल कर चाहाकि उस पत्र को कोई पढ़ कर सुनावे परंतु वह जिन्नीभाषामें था उसको कोई न पढ़सका लाचार होकर उस पत्र को अपनेपास रखलिया कि कभी तो कोई इसका पढ़नेवाला मिलेगा एक दिन खुल जावेगा अब आरशिवपरीजादे का हाल सुनिये कि जब वह आठवर्ष का हुआ तो अपनी मातासे पूछनेलगा कि तुम दुःखीक्यों रहतीहो तुम अपना हाल मुझसे कहो तब उसने सबहाल कहा और कहा कि ऐ पुत्र मैं अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये यहां आई हूं इस यत्नसे मैंने अपनेको निकालाथा परंतु अबजीतेजी इससे निकलना बहुतकठिन है इसदुःखसे मैं अत्यन्त व्याकुलहूं और तेरा बापभी सपेद देवकेबन्धनमें है कदाचित् वह छूटाहोताती किसीयत्नसे इसजादूगृहको तोड़कर हमको छुड़ाता आर्शिव ने कहा कि इसजादूके छुड़ाने का यत्न भी किसीके पासहोगा उसका पतालगाना चाहिये तब राअदाने एक पत्र यत्नके ढूंढनेकेलिये तीरमें बांधकर जादूकेबाहर अपने बापके नाम फेंकदिया तो राअदजिन्नोंके रक्षक जिन्नोंने उसपत्रकोलेकर अपनेस्वामी केपास पहुंचादिया राअदजिन्नी ने अपने बलके अनुसार यंत्रकोतलाश किया जबकहीं पतानलगा तो एक खत राअदापरी के नाम लिखकर एकपरीको दिया कि इसको उसजादूघरके भीतर जहांसे इसकोलाया था फेंकआ तथाच उसने इसकी आज्ञाका पालनकिया कि उसखतको

ञानदारी ऋोर नाचरङ्ग ज़ुआ किया तत्पश्चात् लख्खीरने देवों को कैसर सरमर से निकालदिया ओर उसको अपनेआधीन में करलिया ओर राग्रद परीके साथ दिनरात्रि सुखकरनेलगे ओर उसीपर मोहितहोगये एक दिन गर्मीके दिनोंमें सङ्गमरमरके चबूतरेपर वृक्षोंकीछायामें सोरहाथा कि इतनेमें देवपलंगसर ने जोसदैव घातलगाये रहताथा संयोगपाकर सपेददेव को खोहसे निकालकर कहा कि इससमय खुसरो निःसन्देह सोरहा है इस समय उसको पकड़ना उचित है सपेद देव लख्खीर को अति शीघ्रतासे उठाकर अपनेघर लेगया तौक़ ओर ज़ंजीरपहिनाकर कारागार में डालदिया इस उपायसे उसको क़ैद करलिया तत्पश्चात् राग्रदपरी के पकड़ने के लियेगया कि उसकोभी पकड़कर अपनाबदला लेवे परंतु वह इसीके डरसे जादूश्रवलीबिसात में जो सेहरम्रलीदेव ने बनायाथा जाकरछिपी सपेददेव ने यहहाल सुनकर इच्छाकी कि जा-कर उसकोभीपकड़लावे ओर अपने आधीनकरे परंतु देवनेनिषेधकिया कि आप उसमें नजाइये क्योंकि उसमें जाकर कोई जीता नहींनिकला तब सपेददेव सरदारों को साथ लेकर जादूको घेरकर पड़ारहा ओर उसका हाल देखाकिया ओर सुन २ कर डरनेलगा अब थोड़ासा हाल संगसारों का बयान करतेहैं उनका वृत्तान्त तुमको सुनातेहैं कि जिस समय वह बच्चा लख्खीरको उठालेगया ओर सेनाने क़िलाबन्दकरलिया तब बहुतदिनोंतक क़िलेवालोंको बड़ादुःख दिया जैपूरने लाचारहोकर महलीलसंगसार से एक मास की छुट्टी मांगी ओर एक पत्र बहराम बादशाह खाक़ान चीनको लिखा कि हमबड़ेदुःख मेंहैं हमारी सहायता करनी आपको उचितहै नहीं तो हमलोग बरबादहोतेहैं वहपत्र देखते हीबादशाहचीन सेनासमेत सरनदीपकी तरफ़ रवानाहुआ ओर जिस समय बङ्गाले में पहुंचा तो वहां दो भाई जादखां ओर समन्दखां जो आतिशबाज़ीकी विद्यामें पूर्णथे बहरामसे मुलाक़ातहुई तब कहा कि जो मुझे साथ चलने की आज्ञाहोवे तो चलकर संगसारों को एक बारगी फूंकदेवें ओर ऐसाजलावें कि सबका नाश होजावे मनुष्य तो क्या कोई स्थान न रहजावेगाखाक़ानइसबातके सुननेसे अतिप्रसन्नहुये ओर उनको खिलअतदेकरअपने सेनामेंकरलिया ओर बड़ीप्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहोते थे ओरइक़रार किया कि विजयहोने के पश्चात् तुमलोगोंके साथ अच्छे प्रकारसे सन्मुखहोंगेसंगसारोंकावृत्तान्तसुनिये कि जब वादा पूराहोगया तो फिर मुसल्मानमानी सेनाको दुःखदेने लगे तब मुसल्मानमानी सेना ईश्वरका स्मरणकरके कहनेलगी कि हे ईश्वर इनदुष्टोंके हाथों से हम लोगोंका प्राण बचा अब तूही हम लोगोंका रक्षक है इतने में शत्रुकी सेना न आई थी कि बहरामकी सेना आपहुंची ईश्वरने उनकी सहा-यताकेलिये भेजदिया ओर युद्धहोनेलगा तब जादखां ओर समन्दखां ने

ऐसी आतिशबाज़ी की दृष्टि की कि संगसार अड़ न सके और बहुत से जलभुनकर राखहोगये और जो बचे वे ऐसी शीघ्रता के साथभगे जिस प्रकारसे बेनकेल का ऊंटभागे और आतिशबाज़ी से ऐसा डरे कि जब कभी लूकाटूटते देखते तो यही जानते कि आतिशबाज़ी की बरसारहा है और डरके भागते इसीप्रकार से उनका हियाव छूटगया और सब भागगये और बहराम अति प्रसन्नताके साथ क़िले सरन्दीप और क़िले वालोंको बड़ा आनन्दप्राप्त हुआ परंतु लच्चौरके न होने से बड़े सन्देहमें हुआ और चारोंतरफ़ लच्चौरके ढूंढ़ने के लिये सिपाहियोंको भेजाकि उसको ढूंढ़कर लेआवें कि बहराम उसकेदेखनेसे प्रसन्नहोवे अबथोड़सा वृत्तांत राशदपरी का सुनिये कि जब वह सपेददेव के डर से जादू अबिलिचाल में गई थी तब उसके गर्भथा नौमासहोने के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्नहुआ तो उसकानाम आरशिवपरीजाद रक्खा और उसके उत्पन्न होनेका वृत्तांत नामसमेत लिखकर जादूके बाहर फेंक दिया कि पिता मेरे पुत्र होने का हाल जानलेवे संयोग से एक परीजाद ने उसपत्रको पाया और लेजाकर राशदजिन्नीको दिया राशदजिन्नी ने उसपरीजाद से कहा कि इसपत्र को सरनदीप में लेजाकर जो आशिवोपरीजादों में से बड़ाहो उसको देना अतिशीघ्रही इसपत्रको वहां पहुंचा परीजाद ने सरन्दीप में जाकर बहराम के गोद में डालदिया तब बहराम ने पत्र को खोल कर चाहाकि उस पत्र को कोई पढ़ कर सुनावे परंतु वह जिन्नीभाषामें था उसको कोई न पढ़सका लाचार होकर उस पत्र को अपनेपास रखलिया कि कभी तो कोई इसका पढ़नेवाला मिलेगा एक दिन खुल जावेगा अब आरशिवपरीजादे का हाल सुनिये कि जब वह आठवर्ष का हुआ तो अपनी मातासे पूछनेलगा कि तुम दुःखीक्यों रहतीहो तुम अपना हाल मुझसे कहो तब उसने सबहाल कहा और कहा कि ऐ पुत्र मैं अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये यहां आई हूं इस यत्नसे मैंने अपनेको निकालाथा परंतु अबजीतेजी इससे निकलना बहुतकठिन है इसदुःखसे मैं अत्यन्त व्याकुलहूं और तेरा बापभी सपेद देवकेबन्धनमें है कदाचित् वह छूटाहोताता किसीयत्नसे इसजादूगृहको तोड़कर हमको छुड़ाता आर्शिव ने कहा कि इसजादूके छुड़ाने का यत्न भी किसीके पासहोगा उसका पतालगाना चाहिये तब राशदाने एक पत्र यत्नके ढूंढनेकेलिये तीरमें बांधकर जादूकेबाहर अपने बापके नाम फेंकदिया तो राशदजिन्नीके रक्षक जिन्नोंने उसपत्रकोलेकर अपनेस्वामी केपास पहुंचादिया राशदजिन्नी ने अपने बलके अनुसार यंत्रकीतलाश किया जबकहीं पतानलगा तो एक खत राशदापरी के नाम लिखकर एकपरीको दिया कि इसको उसजादूघरके भीतर जहांसे इसकोलाया था फेंकआ तथाच उसने इसकी आज्ञाका पालनकिया कि उसखतको

साहज़ादे के पास पहुंचादिया तब उसने पत्रको पढ़कर आर्शिव से कहा कि तुम्हारे बापने लिखा है कि मैंने यंत्रको बहुत ढुंढवाया परंतु कहीं पता नलगा वह यंत्र इसी जादू घर के भीतर है शायद ढूंढने से मिलजावै आर्शिव अपने और माताके दुःखको देखकर रोनेलगा संयोगसे उसी समयमें सोगया तो स्वप्नमें देखा कि एक वृद्ध मनुष्य कहता है कि तू क्यों दुःखितहोता है तेरे मकानके सामने जो मण्डप है उसीमें एकदेव बन्द है उसीके गलेमें एक तख्ती याकूतकी लोटे हरफोंमें लिखी है तू उस पत्र के अनुसार कर जो कोई भयानक रूपभी दिखाई देवेतो न डरना वह देव अपने हाथसे देदेवेगा और आपचलाजायगा और तेरी इच्छा पूर्ण होगी और ईश्वर की कृपासे इस जादूको तू तोड़ेगा आर्शिवने जाग कर सब समाचार अपनी माता से कहा और मण्डपका दरवाजा जा कर खोला तो देखा कि एकदेव है और उसके गलेमें याकूत की एक तख्ती बंधीहुई है और जो जो बातें स्वप्नमें देखीथीं वही सब दिखाई पड़ीं आर्शिवने तख्तीको जो देखा तो उसमें लिखा था कि ऐ जादूके नाशक इसमंत्रको पढ़तो यह देव तुझको तख्ती देकर चलाजावे और इससे तेरा मनोरथ सिद्धहोगा परंतु जिस समय वह फिरे तो तख्ती उसके सिरपर मारतो वह मरजावेगा इससे तू छुट्टीपा जावेगा परंतु दो हाथी मस्तानेतेरे सामने लड़ते हुये आवेंगे और तुझको खूब डरवावेंगे परंतु तख्तीको दोनोंके बीचमें डालदेना वेदोनों आपसमें खूब अड़कर युद्ध करेंगे दांतोंमें से दोनों के अग्नि निकलेगी जलकर मरजावेंगे और तुझपर किसीप्रकारसे क़ाबू न पावेंगे आर्शिव पत्र के आज्ञा-नुसार करके बाहर निकला तो देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है कि जिस के देखने से मनुष्य घबराजाता है और एक वृक्ष देवसार का था उसके पत्तों पर ऐसी सुन्दरता थी कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर एक पक्षी बैठा है जो डील डौलमें हाथी के समान है इस रूपका पक्षी संसार में हमने दूसरा नहीं देखा और चोंच साखूके लट्ठे के बराबर है और पैरोंको खाजे असलकी जंजीर समझना चाहिये आर्शिव ने पत्र को देखकर मंत्र पढ़कर ऐसा तीर मारा कि तीर के लगतेही पृथ्वी पर गिरपड़ा तो उसके गिरतेही एक बड़ा शोर गुल एक बारगी होने लगा और ऐसी आंधी उठीकि रात्रि होगई दूसरा कौन देखसक्ता था और शब्द आता था कि इसका प्राण बचकर न जानेपावे जादू देवको इसने मारडाला है देखें तुममें से कौन इसको मारता है तत्पश्चात् आर्शिवआगे जो बढ़ा तो एक तालाब पाया उस में संगमरमर की सीढ़ियां थीं और उसके ऊपर बहुतसी स्त्रियां युवा अति स्वरूपवान् हाथों में शराब के गिलास सुराहियां लिये बराबरमें खड़ी हैं आर्शिवने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि इतने में हज़ारों

स्त्रियां गिलासलेले दौड़ीं और सोह मोह कर बातें करने लगीं तब तो आरशिव और भी सन्देहमें हुआ कि किसकी शराबलें और किसकोनलें इसी विचार में था कि तख्ती को देखने लगा तो उसमें लिखा था कि खबरदार किसी स्त्री को न छूना यह सब जादू है केवल उसस्त्री को जो खाटपर स्याहपोशाकपहिनेबैठी है वही जादूकी सरदारिनी है उसका सबहाजादूनामहै उसके हाथसे शराबका गिलासलेकर इसमंत्र को पढ़ कर शराबका गिलास उसके सिरपर मारकर देखा तो कैसा अपूर्व तमाशादिखाईपड़ताहै परन्तु इसका विचार रखना कि शराबकी छींट तेरे ऊपर न पड़ने पावे नहीं तो तेरा भी वही हाल होगा तब आर-शिवनेजाकर प्यालाउसके हाथसेलेकर उसी मंत्रको पढ़कर उसको मार कर आप पचास कदम कूदकर अलगहो रहातो ज्योंही उसके मुखपर शराब पड़ी त्योंही उसके शरीर से लौवैं निकलने लगीं और इधर उधर ऐसी घूमी जितनी स्त्रियां उसतालाब पर थीं सब जलने लगीं और रो पीट कर दो घड़ी में सब जलकर राख होगई इसबात पर उसने ईश्वर का धन्यवाद किया और फिर तख्तीको देखातो उसमें लिखा था किऐ नाशकर्ता जादू अबतेरे सामने से बहुत से परीजादे गाते बजाते आवेंगे और उनके साथ एकाध मनुष्य होगा वहतेरे साथ सलाम करकेमीठी मीठी बातें करैगा परन्तु खबरदार तू उससे कुछ न बोलना तख्ती को आईने की तरह देखा करना इसे न भूलना तख्ती को देखकर वे सब भाग जावेंगे और तेरा कार्य्य पूर्ण हो जायगा। आरशिव ने इसी प्रकार से जादू का नाश किया तब तो उसकी माता अति प्रसन्न हुई और आरशिव को गले से लगाकर जादूसे बाहर निकली तो सब लोग देखकर अति प्रसन्न हुये और परीजादे जो राशद जिन्नी की तरफ से पहरादेतेथे राशद परीको देखकर बड़े आश्चर्य्य में हुयेकि यहइस जादूसे क्योंकर निकली और दौड़कर बादशाहको उसके आनेकीखबरदी राशद जिन्नीने उसीसमय तख्त मंगवाकर और सवार होकर जाकर दोनों मा बेटों को गलेसे लगाकर रुपया अशरफी लुटाता हुआ अपने तख्त पर सवार कराके कैसराबेग में लेआया और ईश्वर का धन्यवाद करके आरशिव ने अपने नानासे पूछा कि सपेददेवने मेरे पिताको किसस्थान में कैद कर रक्खाहै कृपा करके मुझे उस स्थान को दिखा दीजिये तब राशद जिन्नी ने आरशिव को अपने साथ लेजाकर सपेद देव का स्थान दिखाकर सब वृत्तान्त सुनाया अबथोड़ासा वृत्तान्त लम्बौरपुत्रमादानका सुनिये कि उसदिन अपनी भाग्यपर बहुत रोया तो उसी समयमें एक तरफ सलाम का शब्द सुनाई दिया तो उसने जवाब देकर देखा तो हज़रत खिज़रखड़ेहैं तब लम्बौरने रोरोकर कहा कि ऐ हज़रत मैं कब तक इस दुःखमें रहूंगा हज़रत ने कहा कि मैं ईश्वरकी आज्ञासे तुझे

छुड़ाने के लिये आया हूं यह कह कर सब बन्द खोलकर अन्तर्ध्यान होगये तब मलिका लम्बौरने खोहसे निकलकर बाहर देखा तो राअद जिन्नी और राअद परी तख्त पर सवार खड़े हैं और लम्बौरकी तरफ देख रहे हैं और राअद परीके गोदमें एकलड़का बैठाहै लम्बौर जाकर राअद जिन्नीके पैरोंपर गिरा और राअदपरीसे मिलकर पूछा कि यहपुत्र किसकाहै यह वृत्तान्त तो मुझसे बतावो राअद परीने सब हाल कहकर अपने पुत्रको खुसरोके पैरोंपर गिराया खुसरो ने उसको प्यार किया और राअदजिन्नीको साथलेकर कैसरावैल की तरफ़चला गया॥

जाना ख़्वाजे अमरू का क़िले क़याम से क़िले देवदो में साथ मलिका मेहरनिगार मुसल्मानी सेना के॥

लेखक लोग लिखते हैं कि एकवर्षकेपीछेसरदारोंने अमरूसे कहा कि अब भोजनहम लोगोंकेलियेनहींरहा है सबलोगक्षुधासे व्याकुलहैं ख्वाजेने सय्यादसेपूछा कि कोईऔर क़िला इसकेसमीपहै कि वहां जाकर अपनी सेनाको आराम देवें उसनेकहा कि यहांसे दोमनजिलपर एकक़िला जमशैदका बनवायाहुआ देवदो नामहै जोकि ऐसापुष्टबनाहै कि उसपरकोई क़ाबूनहीं पासक्ता और चारपहाड़ उसके चारोंतरफहैं जिसमें जमशैद ने लोहेकी जंजीरों से कलाबी बराबर से बंधवा दिया और ऊपरसे लोहे के तख्तोंसे पटादियाहै और चार हाथकीदूरीपर लोहेकी दीवार बनवाकर बालू उसमें भरादिया और क़िला इसक़दर चौड़ा है कि उसमें खेतीभी ऐसी होतीहै कि वहांके रहने वाले भोजनके लिये मोल नहीं लेते और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु दरवाजा उस क़िलेमें एकहीहै और वहभी ऐसा है कि केवल एक मनुष्य जा सक्ता है यह नहींहै कि दोमनुष्य बराबर साथ चलेजावें अमरू क़िलेका वृत्तान्त सुनकर अति प्रसन्नहुआ और सरदारोंको बुलाकर कहा कि तुम इसकी ख़बरदारी करो मैं दूसरे क़िलेकी तालाशमें जाताहूं और तुम लोगों के सुखके लिये युक्ति करता हूं यह कहकर पोशाक शाही उतार कर लिबास सक्कारी पहिनकर क़िलेके बाहर निकला और कूदताफांदता क़िले देवदो में पहुंचा तो क़िलेको देखकर आश्चर्य करने लगा और अपने दिलमें कहनेलगा कि मैंने ऐसाक़िला अबतक कहीं नहीं देखा यह कहकर दो तीन बार क़िलेके चारों तरफ घूमा परन्तु कोई रास्ता भीतर जानेका न दिखाई दिया तब लाचार होकर एक टिकुरेपर बैठ कर युक्ति सोचने लगा कि किसी युक्ति से इसके भीतर जाना चाहिये इतनेमें एक सूराखसे देखा कि एक मनुष्य कुयेंमें से जलभर रहाहै तब अमरूने बिचाराकि इससे और कोई युक्ति न मिलेगी उस मनुष्यसे छिप कर कुयेंमें कूदपड़े और जाकर उसीके डोलमें बैठ गये जब वह मनुष्य डोल खींचने लगा तो उसे बहुत भारी मालूम हुआ तब उसने झांक-

बार देखा तो मालूम हुआ कि एक मनुष्य डोलमें बैठा है उसने समझा कि यह जल मनुष्य है ईश्वर ने मेरे ऊपर कृपा करके इसको भेजा है अब मुझको बहुतसा खजाना प्राप्त होगा यह बिचारकर धीरे २ डोलको खींचनेलगा कि ऐसा न होकि गिरपड़े जब डोल चरखीतक पहुंचा तो उसने पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया कि उसको डोलमें निकालले इतने में अमक़ू कूदकर ऊपर आया और उसका हाथ पकड़कर जलमें फेंक दिया तब वह दो एक बार डूब उतराकर मरगया और उसका भेष धारणकरके पानी भरने लगा परन्तु जब मशकभर चुका तो बिचारने लगाकि नहीं मालूम कहां २ वह पानी भरताथा मशक रखकर उसी कुयेंपर लेटगया और जब और भिश्ती जलभरनेको आयेतो उनसे पूछने लगाकि मियां फत्तूक्या हुआ अमक़ूने कहाकि भाई तपचढ़ाहुआ है कृपा करके मेरेघरमें कहदेनाकि मुझे उठा लेचलें एक भिश्तीने जाकर उसके घरमें कहाकि फत्तू झिल्ली दीवालपर तपमें पड़ा कांपरहा है दौड़कर उसे उठा ले आवो उसके लड़के बाले सुनतेही दौड़कर उठा ले आये और सब उसका हालदेखकर दुःखितहुये परन्तु अमक़ू आरामसे सोने लगा आधी रात्रिको फत्तूकी स्त्रीने जगाकर कहाकि कुछ खावोगे थोड़ा सा कुछ खालो अमक़ूने कहाकि भखनहीं है तब फिर उसने कहाकि गोलेघिया बनाई है थोड़ासा खालो अमक़ूने कहा अच्छा तुमारी खुशी है तो ला थोड़ासा खिला दे उसने लाकर खिलाया और हाथ धुला- कर हुक्का भरदिया जब अमक़ू हुक्का पीनेलगाकि इतनेमें बाहरसे एक मनुष्यने पुकारा कि मियां फत्तू जागतेहो या सोते हो यहां तो आवो तुमसे कुछ कहनाहै अति शीघ्रही आवो तब तो अमक़ू बहुत डराकि नहीं मालूम कौनहै ईश्वरही इससे बचावे फत्तूने जोरूसे कहाकि पूछ तो इस समय रात्रि को क्या काम है और कौन है उस स्त्रीने पूछा कि साहब आपकौनहैं और ये तो बहुतबीमारहै बाहरनहीं निकलसक्ते क्या आपका कुछ प्रयोजनहै उसने कहाकि मैं बादशाह के सिपाहियों का सरदार हूं मुझे कुछ बात कहनी है अमक़ू मक्कारका नाम सुनकर बड़ा सन्देह में हुआकि इसने तो आकर घेरलिया उस स्त्रीसे पूछाकि यह और कभी आयाथा तूने कभी इसको पहिले भी देखा था उसने कहा कभी नहीं तब तो अमक़ू के औरही होश उड़गये कि पहिले मक्कारही से मुलाक़ात हुई यह तो अच्छी बात न हुई तब लाचार होकर उठ- कर बाहर चला और कहने लगा कि हे ईश्वर तूही रक्षक है यह कहकर बाहर निकला तब सरदार ने देख कर कहा कि शाहअय्यारां अलैकुमअस्सलाम तब अमक़ू ने कहा कि साहब यह घर तो फत्तू भिश्ती का है शाहयारका घर आगे होगा तब उसने कहाकि ऐ ख्वाजे मुझसे क्यों छिपतेहो मैंभी मुसलमान हूं और आपसे मिलने को आया हूं

दो महीनेसे आपके आनेका आसरा देख रहा था यह कहकर अमरू के पैरों पर गिरपड़ा अमरूने उठाकर छातीसे लगाया और हरप्रकार की प्यारी २ बातें करनेलगा हम्जादेवतूरने कहा कि चलिये बादशाह को पकड़ लीजिये जिसकार्यके लिये आप यहां आयेहैं उसको सिद्धकीजिये फिरदेखाजावेगा और जो कुछहोगा उससे मैंसीझूं तब वे दोनों उसी अंधियारी रात्रिमें पहरेवालोंसे छिपते२ बादशाहके स्थानमें कमंद लगा कर पहुंचे वहां जाकर देखा तो बादशाह अतलस के शामियाने के नीचे दुशाला ताने हुये पलंग पर सोरहे थे और सब खिदमतगार आदि भी बेखबरसोरहे थे अमरूने एकाएक जाकर बादशाहके मुखपर से दुशाला उठाया बादशाह ने अमरूका हाथ पकड़लिया तब अमरू झिझककर अलग खड़ाहुआ और अमरू के हाथका भाला बादशाह के हाथमें रहगया तब अमरू ने चाहा कि भागकर अपनी राहले इतने में बादशाह ने कहा कि ऐ ख़ाजे मुझसे न भाग एकबात सुनले तोजा कि इब्राहीमने इसी समय मुझे मुसलमान करके तेरे आने की खबरदी और आज्ञादी कि अमरूकी सहायताकरो और नहीं तो हम क्योंकर तुमको पहचानते अमरू यह सुनकर खड़ा होगया बादशाहने उठकर अमरू से मिलकर बैठाया और हर प्रकार की बातें करके कहा कि सबेरे तुमजाकर मलिका मेहरनिगारको सेनासमेत लाकर इसीक़िले में आरामसे रहो और यह क़िला आपही का है जो जमशेद भी उठ कर आवें तो इस में नहीं आसक्ते हैं अमरू उसी समय बादशाह से आज्ञा लेके अपने क़िले में आया और सब सरदारों से क़िलेके पानेकी खुश खबरी सुनाकर दिनभर तो आरामसे बैठेरहे दोपहर रात्रिबीते मलिका को महाफे में सवार कराकर सेना समेत क़िले देवदा को तरफ रवानाकिया और आपका,लोकी सूरतें बनाकर क़िलेमें पहरेपर रखकर पीछे से गया दोदिन के पश्चात् क़िले देवदा में जाकर आराम से निस्संदेह हुये बादशाहने पहिलेही से सबको मुसलमान करके हाकिमों को आज्ञादी थी कि जिस समय अमरू आवे क़िले के दरवाजे को खोलकर आने देना जब अमरू आया तो दरवाजा खुलापाया और निःसन्देह सेना समेत भीतर चला आया और अपना प्रबन्ध क़िले में करके आराम से बैठा और सब अपने साथियों को आज्ञादी कि जाके अपने आसनपर आराम करो अब हरमर की सेना का वृत्तान्त सुनिये कि तीसरे दिन एक सिपाहीने जाकर हरमर से खबरदी कि क़िला खाली मालूम होताहै वह उसी समय सवार होकर क़िलेमें गया तो देखा कि वही गधा और कुत्तेबंधेहैं और दीवारोंपर काग़ज़ की सूरतें खड़ीहैं बख्तियारकसे कहा कि और कोई क़िला इसके समीपहै उसने कहाकि क़िले देवदाहै उसीमें अमरूगयाहै और वह क़िला बड़ापुष्टहै

पलट कर शाहजादों ने बादशाह नौशेरवां के नाम विनयपत्रिका लिखी कि अमरू इसक़िले से निकलकर क़िले देवदों में गया है और यहकार्य बे आप के आये न पूर्ण होगा और जो कोई कहे कि हम इसको विजय करलेवेंगे तो दुर्लभहै व आपके यहांतक आये हमलोगों को बड़ादुःख है और इस्के शाखवचनेका कुछ भरोसा नहींहै यह लिखकर बादशाह के पास करगस-सानी के हाथ भेजा और आपसेना समेत चलकरके क़िले देवदों की तरफ चला तीनदिन के पीछे पहुंचकर क़िले के पास डेरा गाड़कर पड़ा बादशाह नौशेरवां ने जब उसपत्रको पढ़ा तो आगकीतरह जलकर कहनेलगा कि देखो बड़ा दुष्टहै कि हमारे लड़कों को ऐसा दुःख देरहा है और हाथ नहींआता यह कहकर बख़ुतियारक की तरफ सन्मुख होकर कहनेलगा कि अब अवश्य उसको दण्डदेना चाहिये उसनेकहा कि आप खुद चलकर उसपापीको जो दृथा इसप्रकारसे शाहजादोंको दुःखदेरहाहै चलके मारकर मलिकाको पकड़लेआयें और आपका चलना अनुचित नहीं तब बादशाह ने बुजुरुचमेहर से पूछा कि आप क्या सलाह देते हैं उसने कहा कि जो पहिले कहा था वही अबभी कहूंगा कि जो आप वहांगये और उसने अपनी दुष्टता से कोई ऐसी उपाय की कि आपको उठालेगया तो अतिलज्जा हमलोगों को होगी आगे आपकी बुद्धि सबसे बड़ी है जो आप आज्ञा दीजिये वही हमलोग करेंगे नौशेरवांको जो अमरू की दुष्टता याद आई तो कांपनेलगे और बख़तियारक से कहा कि तू बड़ा दुष्टहैसदैव मुझको धोखा दियाकरता है और आपभी लज्जित होताहै संयोगसे उसीसमय दूतोंने आकर बादशाह से कहा कि चीनकाखरा जोपीन का भाई दो लाख सेना समेत आपसे मुलाक़ात करनेको आताहै नौशेरवां यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कई सरदारों को उसकी अगवानीके लिये भेजा कि जाकर उसे लेआवो जब उसने आकर तख़्तको चूमकर बादशाह को सलाम किया तब बादशाह ने अति प्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुख होकर खिलअत देकर नाचरंग करवाने की आज्ञादी और उसकी मेहमानदारी यथाउचित की तत्पश्चात् उसने बादशाहसेपूछा कि हजूरआजकल जोपीनजहांदार जहांगीर कहांहै उनका दृत्तान्त तोमुझसे बतलाइये नौशेरवांने आहकरकेकहा कि क्या बताऊं वे तीनोंभाई हरमरके साथमें अमरूपरकर हमजाके पकड़ने की घातमेंहैं और नौबर्षसे वे लोग उसीके पीछेपड़े हैं परंतु किसी के हाथ नहींआता आजइसक़िलेमें तो कलदूसरेमें इसीप्रकारसे घूमाकरताहै और सबको दुःखदिया करताहै उसनेकहा कि जो आज्ञाहो तोजिसक़िलेमें वह हो आपकी कृपासे ईंटसे ईंट बजाकर अमरू को मलिकासमेत खड़ी सवारी पकड़कर लेआऊं और ऐसा दुःख देऊं कि सब अपनी मक्कारी भूलजावे बादशाहइसके सुनने से अतिहीप्रसन्नहुआ और कहनेलगा कितुमऐसेहीहो बादशाह ने खिलअतदेकर जानेकी आज्ञादी शेजन कामरांने दो लाखसेना

समेत क़िले देवढ़ू की तरफ़कूचकिया और थोड़ेदिनोंके पश्चात् क़िलेदेवढू के समीप पहुंचे तब हरमरने आनेकी खबर सुनकर जहांदार और जहांगीरको उसकी अगवानीके लिये भेजा कि उनका चित्त प्रसन्न होवे और जिससमय हरमरकी सेनासेंआकर पहुंचेतो हरमरने बड़ी तैय्यारीके साथ मेहमानदारीकी औरजोकुछ उसनेकहा उसेकियाबीजनने जोपीनसे सभामें बैठेहुये कहा कि क्यों जोपीन तुमतो दावा करतेहो कि हम बादशाह के दामादहैं परंतु एक सिपाहीको न पकड़सके जोपीनने कहा कि भाईसाहब आप सत्य कहते हैं परंतु आप उससिपाहीका हालनहीं जानतेहैं अबआप भी आयेहैं जाननाओगे कि वह केवलअकेला लाखसिपाहियों से युद्धकरता है और किसीसे कुछ बननहीं पड़ती वहऐसा सिपाहीहै बीजनने कहा कि यहभी कहीं होसक्ता है कि वहअकेला लाखसवारों का सामना करे और विजयपावे अबमेरे नामसे तबलजंग बजवाया जावे और सबसेना युद्ध करने को तैयार होवे हरमरने तबलजंग बजवानेकी आज्ञादी और सबको युद्धपर आरूढ़ किया जब तबलजंगका शब्दकिलेमें सुनाईपड़ा उसीसमय अमरूने भी आज्ञादी कितबल सिकन्दरीपर चोबदीजावे इसीप्रकारसे रात्रिभरदोनों सेनाओंमें डंके बजाकिये समान युद्धका हुआ किया प्रातःकाल होतेही हरमर जाफ़रांमर्ज तख़्तपर सवार हुये सबसरदार अपनी २ सेना लेकर शाहजादोंके साथ चले और युद्धके खेतमें आकरपरेट जमाया और बीजन कामरांभी अपनी दो लाखसेना लेकर एक तरफ से युद्धकरने को आरूढ़ हुआ और सेनामें शोरगुलहोनेलगा और हरमरकी सेनातो अमरूकाहालजानती थी किसीने आगे क़दम न बढ़ाया कि ऐसानहो कि अमरू अग्नि कीवृष्टिकरे परंतु बीजन कामरांकी सेना आगेकोबढ़ी और किलेके समीप जाकर पहुंच गई तबतो किलेपरसे अग्नि की वृष्टि होनेलगी और हरएक व्याकुल होकर भागे किसीका पैर न जमा बीजनने सेनाका ढंगदेखकर जोपीनसे कहा कि इस सेनासे विजय न प्राप्तहोगी ये तो अग्निके डरसे भागते हैं चलो हमतुम किलेका दरवाजा तोड़कर किलेमें चलकर सबको मारैं जोपीनने कहा कि चलिये इसमें मुझे इनकारनहीं तबतो दोनोंभाई अपने २ घोड़ोंको कुदाकर खन्दकके पारकिया और क़िलेके दरवाजेके समीप पहुंचगये और किलेसे आतिशबाजीके धुयेंसे ऐसाअंधियारा होरहा कि किसीको अपनाहाथभी न दिखाई देता था जब क़िलेवालोंने हाथ रोकलिया तो थोड़ी समय के पश्चात् उजियाला हुआ तो देखा कि जोपीन और बीजन दोनों भाई किलेके पास खन्दकमें घोड़ोंपर सवारखड़े हैं और दरवाजा तोड़रहेहैं अमरू उनके मारने की युक्तिमेंथा कि नकाबदार चालीस सहस्र सवार समेत आ पहुंचा और और उनदोनोंके बराबर आकार कहा कि तुमकौनहो जो मुसलमानीसेना सेयुद्धकरनेको आयेहो क्यों अपनेहाथ से अपना प्राणदेते हो वे बोले कि तू कौनहैजो हमारे और क़िलेवालेके बीचमें दखलदेताहै और हमारे शत्रु

को सहायता करताहै नक़ाबदारने कहा किमैं तुम्हारे प्राणका गाहक हूं और निश्चयकरके जानो किमैं तुम सबको यमपुरी में पहुंचाऊंगा नक़ाबदार की ऐसीबातें सुनकर दोनोंभाई तलवार लेकर नक़ाबदार के मारनेके लिये दौड़े उसने तलवार तोछीनली और दोनोंको कमरबन्द पकड़कर अपने सिर के बराबर उठालिया और पूछनेलगा कि अब पृथ्वीपर फेंकूं या नदी में हर-मरने यह हाल देखकर सेनासमेत दौड़कर धावाकर दिया और नक़ाबदार के चालीससहस्र सवारोंने भी तलवार खींचली और खूब मरदुमी से युद्ध किया और अमरू भी क़िले से अपनी सेना लेकर मारनेलगा इसधावे में दोनों भाइयों के कमरबन्द टूट गये और घोड़ों के नीचे गिरकर भाग गये और ऐसा युद्ध हुआ कि उसीदिन अस्सी सहस्र सेना हरमर की मारी गई और बहुतसे बलवान सरदार भी काम आये और नक़ाबदार और अमरू की सेनाका एक सिपाही भी न मारागया और बहुतसा माल और रुपया मुसलमानी सेना के हाथ आया तब अमरू दौड़कर नक़ाबदार के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आजतो आपने वह काम कियाहै जो रुस्तमसे भी नहोसकाहोगा औ ऐसी बहादुरीका तो नाम भी किसीने न सुना होगा यह कहकर कहा कृपा करके आप अपना नाम बतला दीजिये और सेहरा उठाकर अपना स्वरूप दिखलाइये नक़ाबदार ने कहा कि ऐ अमरू आज तक कोईकार्य्य ऐसामैंने नहीं कियाहै कि अपनानाम बतलाऊं और स्वरूप दिखाऊं जब अमीर कुशलसे आवेंगे तो नामभी मेरा सुनलेना और स्वरूप भी देखलेना अब अपने क़िले में सबलोग आराम से बास कीजिये और मुझे हरसमय अपना सहायक और सेवक समझिये यह कह कर अमरू कोतो क़िलेमें भेजदिया और आप जिधर से आयाथा उसी तरफ चलागया परंतु किसी ने न देखा कि वह कहां गया और अब हरमस फरांमरज़ ने एक विनयपत्रमें सबवृत्तान्त लिखकर बादशाह के समीप रवाना किया और उसमें यह लिखदिया कि अतिशीघ्र खेमा औ खज़ाना भेजिये नहीं तोदिन को धूप और रात्रिको ओसमें रहनेसे बीमार होजावेंगे और खाने के आने में जोदेरी होगी तो उपासकरतेर मरजावेंगे और आपही विचार कीजिये कि जब अन्न न मिलेगा तो क्या खायंगे जब हरमर और जाफरां मरज़ का विनय पत्र बादशाह के पास पहुंचा और बादशाह ने यह सब वृत्तान्त सुनातो बख़्तकसे कहा कि तूजो सदैवकहा करताहै कि आप जो कहें तो मैं अमरूको उसके सहायकों समेत पकड़लूं सो तेरा पुत्र बख़्तियारक जो नौवर्षसे शाहज़ादोंके साथहै उस दुष्टनेक्या बनालिया और तूक्या बनावेगा तूभी उसके हाथसे धोखा उठावेगा तेरे कहनेसे मैंने वृथा अपनेको बरबाद और लज्जितकिया और शत्रुओंका हौसला बढ़ाया ख़बरदार आजसे मेरे दरबारमें आकर अपना स्वरूप मुझेनदिखलाना नहीं तो दण्डपावेगा बख़्-तक रोतापीटता अपने स्थानपर आया और एकपत्र अपने पुत्रकेनाम लिखा

कि ऐ दुष्ट तूनोवर्षसे शाहजादोंके साथहै और आजतक तेरीकोई युक्ति न चली कि अमरूको मारता और इसीकार्य्यके लिये तूभेजागयाहै तूने सब बड़ोंका नामधराया और मुझकोदोनों लोकसे खोया और तेरेही कारण बादशाहकी सभासेमैं निकालागया मैंने इसकाममें बड़ादुःखउठाया उत्तम यहीहै कितू इस कार्य्य को पूराकर नहीं तो मैं आज से तुझे अपना लड़का न समझूंगा और तुझे अपनेसन्मुखकदापि नआनेदूंगापरतुझसे कुछ भरोसा नहींहै कितू इस कार्य को पूरा करैगा मालूमहोता है कितू मेरे वीर्य्यसे नहीं उत्पन्नहुआ मैं जानता हूं कि तू किसी शाहकारके वीर्य्य से उत्पन्न हुआ है बख्तियारक पत्रको पढ़कर बड़े सन्देहको प्राप्त हुआ कि ऐसी कौन युक्तिकरैं कि पिता के निकट प्रतिष्ठितहों दिनभर तो बड़े सोच विचारमेंरहा संध्याको एक उत्तम यत्न सोचकर सिपाहाना वस्त्र पहिनकर क़िलेके चारों ओर कईबार फिरा परंतु कार्य्य न सिद्धहोनेसे बड़ा पश्चात्ताप किया संयोगसे अन्तरदेव दूईकाबेटा अर्वाव एकबुर्जपर बैठा मदिरा पीरहा है औरसबचौकीदार निश्चिन्त सोरहेहैं उसने बख्तियारककीआहटपाकर ललकारा कौनहैकिसवास्तेयहांआयाहै उसनेउत्तरदिया किमैंबखतियारक हूं आपसे कुछप्रार्थना करनेआयाहूं उसनेनशेकीतरंगमें निस्संदेह कमन्द के द्वारा क़िलेपर चढ़ालिया उसने एकजाली खतदेकरकहाकि यहखतनौशे-रवांने तुमको दियाहै अर्वावने लिफाफेपर नौशेरवांकीमुहर देखकर निश्चय किया कि यहउसीका लिखाहै उसमेंलिखाथा किअगरतू इसक़िलेकोथोड़े दिनकेलिये मेरेआदमियोंके सुपुर्दकरदे औरअमरूको पकड़ कर मेरेनिकट भेजदेतो अग्निदेवताकी सौगन्दखाकर कहताहूं कि यह क़िलाभी तुझे दे दूंगा और २ भी तेरे साथमित्रता करूंगा और तेरी प्रार्थना स्वीकारकरके अपने संगरक्खूंगा अर्वाव खतके हालसे प्रसन्नहुआऔर बादशाहको आशी-र्वाद देनेलगा औरबखतियारकसे कहा कि अपनीभीसाक्षी इसपर करदे-जोकोईदेखे इसपर विश्वासकरै बखयारकने कहामेरीसाक्षीक्या चहिये शाह जादोंकीगवाहीकरवादूं निदान उसकोबहकाकर शाहजादोंकेपासलेआया उनके सन्मुखकहा कि यहपत्र जो बादशाहने भेजा है इसपर आपलोग भी अपनी २ मुहरैंकरदें शाहजादोंने जाना कि बखतियारक कोईहोशियारी कर रहाहै कहा कि इसपर मोहरकरके एक और दूसराखत अपनी ओर से लिखदेते हैं और इसके सिवायजोकुछ तुमकहोगे मंजूर करादेंगे अन्तको शाहजादोंने उसपर अपनी मुहरकरदी और बहुतसी फरेबकी इधर उधर कीबातेंकीं तबख्वाजहअर्वावनेकहा किआपकेडेरेके भीतर एकसुरंगकादर-वाजा है और दूसरादरवाजा मेरेमकानमें है इसकोआपखुदवाइये उसको जामें मैं खुदवाताहूं कि इतनी रात्रि और सबदिनमेंगरमी भी उसकी नि-कलजावै और वायु भी स्वच्छ आजावे आपकल रात्रिको सुरंग की राहसे आकर क़िलेमेंवास कीजिये और मेहमानदारी भी खाइये और दो पहर

रात्रि व्यतीत होनेपर मुसलमानोंको मारकर अमरू और मलिकाको पकड़ लीजिये परंतु पहलवान अच्छे २ साथले आइयेगा कि वे बहादुरी के साथ लारें तब शाहजादोंने ख्वाजे अरबाबको खिलअत देकर जानेकी आज्ञादी और अपनी सेनाको इनकार्योंके लिये आज्ञादी वह जिस प्रकारसे किलेसे आया था उसीप्रकारसे चलागया और बेलदारों को बुला कर सुरंग का दरवाज़ा खोलनेकी आज्ञादी तब बेलदारोंने प्रातःकाल होते२ सुरंगका दरवाजाखोल-दिया और आप शहजादों की मेहमानदारी के लिये भोजन आदि तैयार करानेमें संयुक्त हुआ और अपने सरदार को भी आज्ञादी संयोगसे दिलावर नाम उसकी बेटीनेपूछा कि आजयह कैसी धूमधाम होरही है मुझको भी बतलाइये तब अरबाबने उसको अपनी बेटीजानकर सब वृत्तान्तरात्रि का उससे कहा और यह भी कह दिया खबरदार किसी से यहबात न कहना परंतु दिलावर ने इस विचारसे कि वृथाइतने मुसलमानोंका पाप इस दुष्टके सिरपर होगा एक पत्र अमरूके नामलिखकर अपनी दाईको दिया कि तुम इस पत्रको अमरूके पासलेजावो वह तुझे बहुत कुछ देगा परंतु इसपत्र को कोई देखने न पावे उसदाईने जाकर अमरूको पत्रदेकर कुछ जबानी भी कहा तब अमरूने दाईको बहुत कुछ इनाम दिया और दिलावर की बड़ी प्रशंसा करनेलगा उसके जानेके पश्चात् आपतखतपर बैठा और सब सरदारों को दरबारमें आनेकी आज्ञादी जब सब आकर बैठे तो पहिले आदी सर-दारसे कहा कि आजएक स्थानपर नेवताहै तुम सबकोसाथ ले जाकर बहुत अच्छी तरह से भोजन करवाऊंगा परन्तु श्रमभी करना पड़ेगा और जो न करसकैगा तो तेरे पेट से एक एक दाना चीरकर निकाललूंगा और बड़ा दण्ड दूंगा आदीने कहा कि हमतो आपके सेवक हैं जो आज्ञा दीजियेगा वही करेंगे देखिये जबसे अमीर गयेहैं केवल इक्कीसमन आटाचावल दोनों जूनमें मिलताहै और मैंएकही जूनमें चखजाता हूं तिसपरभी क्षुधा से तृप्ति नहीं होती परन्तु किसीसे आपके डरसे कुछ कहता नहीं जबतक अमीर न आवेंगेतबतक इसीप्रकारसे गुज़रकरूंगा और जो आपमुझे पेटभर भोजन करादीजिये तो देखिये कैसी जवांमरदी करता हूं कि आप भी देख कर प्रसन्न होजावें अमरू चारघड़ी दिनरहे से सरदारों समेत ख्वाजे अरबाब के स्थानकीतरफ चला जब ख्वाजेने सुना कि अमरू की सवारी आतीहै तबतो अति व्याकुल हो गया और कुछ बोल न सका इतने में अमरू की सवारी आपहुंची तब ख्वाजे अरबाबने घरसे निकलकर अमरूको सलामकिया और अनेक प्रकार की बातें करने लगा परन्तु दिलसे कांपरहा था कि अब मेरा प्राण न बचेगा अमरूनेपूछा कि मैंने सुनाहै कि आज आप मुसलमानों की मेहमानदारी करेंगे हजरत इब्राहीमकी पूजाहै तो निश्चयहै कि हमलोगों कोभी आज अच्छा अच्छा भोजन मिलेगा ख्वाजे अरबाब इसके सुनने से और भी डरा परन्तु क्याकरै सब सामान होही रहा था इनकारकर नहीं सका

था लाचारहोकर कहाकि आपतोवलीहैं सब जानतेहीहैं सत्यहै मैं प्रातः-
कालसेभोजनकी तैयारीकरारहाथा इसीकारण आपके पास नहीं आसका
अब आपको कहलाभेजता परन्तु बहुत अच्छाहुआ कि बेबुलाये आपहीआये
यह कहकर उसी स्थान में जिसमें शहजादों के लिये तख्त बिछवाकर सज-
वायाथा अमरूको तख्तपर बैठाला और सबसरदारोंके लियेकुरसी आदिक
बैठनेको दियाथा उचितसबको बैठाया तबअमरूने भोजन मंगवाकर पहिले
आदीको अच्छीतरहसे खिलवायातत्पश्चात् और सब सरदारोंको खिलवाया
तब सायंकाल के समय जब अंधियारा होगया सरदारों को आज्ञादी कि
ख्वाजे अरबाब की मुश्कें बांधलो उनलोगों ने आज्ञानुसार बांध लिया तब
ख्वाजे अरबाबने अमरूसे कहा कि कौनसा अपराध मैंने ऐसा कियाहै कि
जो आपने मेरीमुश्कें बंधवालीं अमरूने कहा किनेकीका बदलाबदीपरन्तु
अपनी समुझ में मैंने अच्छा किया है तब उसको तो एक कोठरी में बन्द
करने की आज्ञादी और आपसरदारों समेत सुरंगका दरवाजा ढूंढनेलगा
और आदीसे कहाकि वह समय आपहुंचा ऐसा न होकि सुस्तीकरो
और कार्य्य न सिद्धि हो आदी ने कहाकि आप बतलादीजिये तो मैं
अपने श्रमका तमाशा आपको दिखलाऊं अमरू ने ढूंढ़कर सुरंग के
दरवाजे पर बैठा दिया और आज्ञादी कि जो कोई इसमें से सिरबाहर
निकाले उसका गला पकड़कर दबाकर बाहर निकाललेना और शेष
सरदार यहीं खड़े रहेंगे वे भी उसीप्रकार से गलादबाकर कारागार
तक पहुंचावेंगे खबरदार कोई छूटकर जाने न पावे नहीं तो जैसा
खाया है वैसेही बकरी की तरह पेट फाड़कर निकालाजावेगा आदी
नानबाइयों की तरह पलथी मारकर सुरंगके दरवाजेपर बैठगया कि
जो कोई सिर निकाले उसे पकड़कर खींचलूं जैसी अमरू ने आज्ञादी
है वैसेही करूं अब थोड़ासा वृत्तान्त शहजादों का सुनिये कि दो घड़ी
दिन रहे दससहस्र सवार और चार सौ पहलवान लेकर सुरंग में घसे
जिसप्रकार से कोई किसीके यहां बुलानेसे मेहमानदारी खाने जाताहै
निःसन्देह होकरचले और अमरूकी चालाकी सब भूलगये जबसमीपआये
आदीने अमरूसे कहाकि मनुष्यों का सब्द सुनाईदेता है और खटका भी
विदितहोता है अमरूने कहा खबरदार कोई न छूटनेपावै इतने में एक
मनुष्यने सुरंगके बाहर सिर निकाला आदी ने उसका गलापकड़ कर
ऊपर खींचलिया और दूसरे सरदारको सौंपदिया उसने उसीप्रकारसे
कारागार तक पहुंचाया दूसरेने सिर निकाला उसकी भी वहीगति
हुई इसी प्रकारसे चार सौ पहलवान एक सायतमें आदीने पकड़कर
अपने सरदारों को सौंपा और वे उसीप्रकार से कारागार में ले गये
और बेड़ियां डलवाकर सिपाहियों को पहरादेने की आज्ञा दी और
सबको सुरंगमें आनेका फलदिया जोपीछे था उसने विचाराकि कुछ

कारखाकुआ होगा नहीं तो चार सौ पहलवान अन्दर गये हैं कोई तो आता इस विचारसे थोड़ासा सिरसुरंगसे निकालकर देखनेलगा आदी ने उसका सिरपकड़ा परन्तु उसकेगरदन न निकालीथी इसकारण न पकड़ सका और सिर भी हाथसे छूटगया तब कोपीन ने अपने दिलमें कहाकि यह जियाफत नहींहै अदावत है तब उसने सुरंगकी दीवारसे पैर अड़ाकर एक एकका नामलेकर पुकारनेलगाकि भाई दौड़ो मेरा सिर पकड़कर कोई ऊपरको खींचताहै वीचनने दौड़कर कोपीनके पैरों को पकड़कर इस ज़ोरसे खींचाकि उसका सिर आदीकेहाथसे छूटगया परन्तु कानकोपीनके आदीके हाथमें रहगये और वह छूटकरभागगया तब उसने सब मनुष्योंसे इस भेदको कहा और सबको पलटनेकी आज्ञा दी आदीने वह कान अमरूको दिया तब अमरूने बिचाराकि अब सब जानगये हैं निश्चयहै कि पलटजावेंगे तबतो सुरंगमें आतिशबाजी लगवा कर फुंकवाने लगा दस सहस्र मनुष्य जो उसके भीतर घसे थे सब जल-कर रहगये केवल दोनों शाहज़ादे और थोड़े से सरदार बचकर भाग-गये प्रातःकाल अमरूने चार सौ पहलवानोंकोख़ाजेअबीब सनेतफांसी पर चढ़वाकर खिंचवालिया किसी को जीता न छोड़ा और सुरङ्ग का दरवाज़ा शीशे से बन्दकरवाकर सब रास्तेबन्दकरवादिये और हरमज़ा और जाफ़रांबर्जमे यहसब वृत्तान्त एक विनयपत्रिकामें लिखकर आबरु नसदपोश के हाथ बादशाह के पास भेजकर अपनी किताब में भी सब हाल लिखलिया॥

अब थोड़ा सा वृत्तान्त अमीर का सुनिये कि आसमानपरी ने ख़ाजे खिज़र और मेहतरइलियास के सन्मुख सौगन्धेंखाईथीं कि छःमहीने के पीछे मैं आपको परदेदुनिया को भेजदूंगी अब किसीप्रकारसे उनकी बात वृथा न करूंगी जब छःमास व्यतीतहुये अमीरने आसमानपरी से कहा कि अबतो छःमहीने व्यतीत होगये हमको अब परदेदुनिया को भेजदे तब उसने कहा कि एकवर्ष और बासलीजिये तो मैं आपको पहुंचादूंगी इसके सुननेसे अमीरने क्रोधितहोकर कहा कि ऐ आसमान परी तुझे ईश्वरका भी कुछडर है या नहीं कि तूने दोपैगम्बरोंके सन्मुख वादाकिया था कि आपको छःमासके पीछे दुनिया को भेजदूंगी और आज फिर कहती है कि एक वर्ष और बास कीजिये तिसपर भी तू कहती है कि मैं बड़ी सचीहूं आसमानपरी ने कहा कि जो मैं झूठ बोलूंगी तो आपको क्या तब अमीर क्रोधित होकर बादशाह के पासआये और कहा कि ऐ शहनशाह परदेकाफ मैंने कौनसी बुराईकी है जो आपमुझे यहदुःखदेरहे हैं कि मैं अठारह दिन का वादा करके आया था इतनाकाल व्यतीतहोगया कि आजतक अपने बालबच्चों की कुछहाल न पाई ईश्वरजाने कि वे किसदुःखमें पड़े होंगे कि नौशेरवां

बादशाह मेराशत्रुहै वह भी अपनी घात पाकर दुःख देताहोगा आप और आसमानपरी ने दो वलियों के सन्मुख सौगन्धें खाईथीं छः मास के पीछे अवश्य आपको परदेदुनिया को भेजदेंगे वह वादाभी आपकापूरा होगया परंतु अब आसमानपरी कहती है कि एकवर्ष औरबास करो तो मैं तुमको भेजदूंगी सोवही आपसे पूछताहूं कि मेराग्राम छोड़ियेगा या नहीं बादशाहने अमीरको समझाया और उसीसमय चारदेवोंको बुलाकर अमीरको तख्तपर सवारकराके उनको आज्ञादी कितुमलोग अमीरको अच्छीतरह से दुनिया में पहुंचाआवो और किसी प्रकार से दुःख न होनेपावे यह हालआसमानपरी को पहुंचा वह अपनीबेटीको लेकर अमीरकेपासआई और कहनेलगी कि आपको अपनीबेटीकी भी दयाहै कि इसनेकुछ आपकोदुःख नहींदिया अमीरने कहा कि जबतुम आना तबइसकोभी साथलेतीआना और तुम्हाराआनाजानाकुछ कठिन नहींहै जब जी चाहे तब चलीआना और जब मुझको बुलावोगी तो मैं भीआऊंगाइससमय मुझेजानेदे यहकहकर देवोंसे तख्तउठाकर चला आसमानपरी रोती हुई अपनेस्थान परगई और रज़वानपरीजादे को बुलाकर कहा कितू अमीरकेपास विदाकरनेकोलिये जाकरदेवोंसे कह आ और मेरी आज्ञासुना कि वे अमीरको दश्तअजायबमें छोड़कर चले आवें नहींतो बालबच्चोंसे मारेजायंगे वह अतिशीघ्रता के साथ उड़कर अमीरके पास जापहुंचा अमीरने उसको देखकर जाना कि आसमान परीने कुछकहनेके लिये देवोंसे इसेभेजाहै देवोंसे कहा कि तख्तपलटा करफिर शहपालके पास चलो देवोंने कुछ सन्देहकिया तबतो अमीरने तलवार मियानसे निकाललिया किजो न पलटाओगे तो इसी तलवार से तुम सबको मारडालूंगा तब वेलाचार होकर अमीरको बादशाहके पास लेआये बादशाह ने अमीर को देखकर कहा कि कुशलतो है क्यों आपपलटआये अमीरने कहा कि ऐ बादशाह मुझे दुनिया में पहुंचना है या फिर किसी दुःख में डालनेको भेजते हैं बादशाह सौगन्धें खाने लगा किमैं अतिप्रसन्नहूं कि आपदुनिया में जाकर अपने बालबच्चोंके देखनेसे प्रसन्नहोवें अमीर ने फिर कहा कि जो आपको मुझे भेजने की इच्छा है तो देवोंसे हज़रत सुलेमान की सौगन्ध लेकर मुझे दुनिया में पहुंचाने के लिये भेजिये बादशाहने जोदेवोंसे सौगन्धखानेको कहातो देवोंने इन्कार किया कि हमलोगोंको आसमानपरी की आज्ञानहींहै कि अमीरको दुनियामें पहुंचावें और उसकी आज्ञाके विरुद्ध हमलोग नहीं करसक्तेहैं बादशाहने आसमानपरीसे पूछा कि क्योंतूसदैव अमीर को दुःखदेती है उसने कहा आपको क्या मेरा पुरुषहै मैंनहीं जानेदेती अमीरने तख्तपरसे उतरकर एकशब्द ऐसे जोरसे किया कि परदेकाफ हिलगया और कहाऐआसमानपरीतूनेवलियोंकेसामने सौगन्धेंखाईथीं

थीं और अब फिर मुझे धोखा देती है यह अच्छी बात नहीं है ईश्वर तुझे अवश्य दंड देगा यह कहकर रोते हुये सिड़ियों की तरह जंगल की तरफ़ चले शाहपालशाह ने आसमानपरी से कहा कि तूने मुझे परदेशों में झूठा करदिया अब मेरी बात को कोई न मानेगा आसमानपरी ने कहा कि आपका लज्जित और झूठा होना मुझे क़बूल है परंतु अमीर की जुदाई नहीं यह कहकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि अमीर नगर से बाहर गया है जो कोई उसे बास देगा या उसको देश में पहुंचाने की इच्छा करैगा तो उसको मैं दंड दूंगी अब अमीर का हाल सुनिये कि गुलिस्तान अरम से निकलकर सात दिन जंगल में बराबर चलेगये आठवें दिन क्षुधा के कारण गिर कर बेहोश होगये दूसरे दिन होश में होकर उस कलीचे में से जो हज़रत ख़िज़र ने दिया था निकाल कर भोजन करके मैदान की तरफ़ देखने लगे तो थोड़ी समय के पश्चात् देखा कि एक देव अपूर्व रूपका चला आता है जिसके डर से पृथ्वी कांप रही है अमीर के समीप आकर सलाम किया अमीर ने पूछा कि ऐ देव यहां से दुनिया कितनी दूर है मुझे बता उसने कहा ऐ अमीर जो मनुष्य पैदल जाने की इच्छा करै तो पांचसौ वर्ष में पहुंचेगा और देव छः महीने में और देव पैकर चालीस दिन में और मुझ ऐसा देव सात दिन में ले जासक्ता है अमीर ने कहा जो तू मुझको मेरे घर पहुंचावे तो बड़ा गुण मानूंगा उसने कहा कि जो मुझे फिर इस देश में न आना हो तो अपने स्वामी की आज्ञा से विरुद्ध करूं क्योंकि आसमानपरी ने ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुंचावेगा उसके बालबच्चों तक न छोड़ूंगी अमीर ने उसको अपने समीप बुलाकर सब वृत्तान्त सुनाया देव ने कहा कि मैं ऐसा पागल नहीं हूं कि जो आपके पास आऊं और आप मेरे ऊपर सवार हो बैठें और कहैं कि मुझे दुनिया की तरफ़ ले चल तो उस समय क्या उत्तर आपको मैं दूंगा परंतु लाचार हूं यह कह सलाम करके उड़गया अमीर निराश होकर मन में कहने लगे कि हमजा तुझको कोई दुनिया में न लेजायगा अब तू पैदल चल ईश्वर तुझको पहुंचा देवेगा यह कहकर जंगल की राह लेकर कभी हंसते कभी रोते चले पन्द्रहवें दिन एक क़िला दिखाई पड़ा जिसपर जिन्न शिर खोले ईश्वर का ध्यान कररहे हैं और एक देव क़िले को चारों तरफ़ से घेरे है अमीर को क़िलेवालों पर दया आई उस देव को ललकारकर कहा कि ओ पापी क़िलेवालों को क्या घेरे है ख़बरदार हो मैं तेरे प्राण का गाहक पहुंचगया उसने जो देखा तो जाना कि सहायक और नाशकर्त्ता जा पहुंचा तलवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने आते ही अक़्बर सुलेमानी से उसके दो भाग करदिये और सेना में घुसकर मारने लगा आधे से अधिक सेना को मारा शेष भाग गई बादशाह क़िले से निकलकर अमीर से मिले और हाथ पकड़कर क़िले में जाकर तख़्त पर बैठाकर अति प्रतिष्ठा के साथ सन्मुख हुये

और कहा कि मैंवही जिन्नी सबूजक़बा शहपाल काभाई हूं कि जिस को आपने शतरञ्ज सुलेमानी जादू से छोड़ाया था और मेरा प्राण बचाया था यह कह कर क़िले सबज़निगार में ले जाकर सब छोटे बड़ों से मुलाक़ात करवाई और जो न जानतेथे उनसे अमीर का सब वृत्तान्त बयानकिया और नाचरंगकरवाकर अमीरकी मेहमानदारीकी अमीर ने कहा कि मुझे आपसे भी डरहै क्योंकि आप भी तो शहपालशाह के भाईहैं जैसे वेहैं वैसेहीआपभीहोंगे उसनेकहाकि आपक्या कहतेहैं मैं आपकासेवकहूं प्राणमेरा जो आपकेकाम आवेतोदेदूं अमीरने कहा कि ईश्वर आपकोबनायेरक्खे मित्रोंसे ऐसे कार्य्यसिद्धहोतेहैं,यहकहकरकहा कि प्राणकेबदलेमें केवलयही कीजिये कि मुझे मेरेदेशको पहुंचा दीजिये तो आपका जबतक जीऊंगा तबतक गुणमानूंगा बादशाह ने सोचकर ख़ाजेहूफ़को बुलाकरकहा कि तुमअमीरसे कहो कि हमारी बेटी प्राण प्यारी जोतुमपर मोहितहै उसकेसाथ बिवाहकरो तोमैं आजके नवेंदिन आपको परदेहुनियांको भेजदूं इसका मैंवादाकरताहूं अमीरने पहिले तो न माना परंतु पीछे को बादशाह से पहुंचानेका इक़रारकरवाकर क़बूलकिया तबबादशाहने बड़ीधूमधामसे तैयारीकरके दोनोंका विवाह किया और उसको अपना दामाद बनाया रात्रि को जब रैहानपरी और अमीर एकपलंगपर लेटे तो अमीर बीचमें तलवार रखकर दूसरी ओरको मुखकरके सोरहे औरकिसीतरहका काम न किया रैहानपरी ने जाना कि अमीर के देशमें पहिले दिन ऐसाही होता होगा संयोग से उसदिनअमीरने स्वप्नमेंमेहरनिगारको देखा चौंककर जागउठा और जंगल की राहली प्रातःकाल कोदादानपरी रैहानपरी की माता जो आई उसनेदेखा कि बेटीअकेली पलंगपर सोरहीहै जगाकरउससे पूछा कि अमीर कहांगये उसने कहा मैं नहीं जानतीहूं रात्रि को तलवार बीचमेंरखकर सोयेथे फिर मैं नहींजानती कि वे कहांगये मैंभी सोरही थी उसने क्रोधित होकर बादशाहसे जाकरसबहाल कहा तो वहभी क्रोधितहुआ और कहनेलगा कि उसेयही करना था तो विवाह क्यों किया कि मुझको क़ाफ़भरमें लज्जित किया कि अमीर सबज़क़बा की बेटीकेसाथ विवाह करके एकदिन के पश्चात् छोड़कर चलेगये कुछ ऐब होगा नहींकोई एकदिनकी व्याहीदुलहिन छोड़करजाताहै उसीसमय देवोंको बुलाकर आज्ञादी कि तुमलोग जाकर अमीरकोढूंढ़कर लेआओ उनके लेआनेमें देर न करना अथथोड़ा वृत्तान्त आसमानपरीका सुनिये कि एक दिन सुर्ख़ पोशाक पहिनकर बादशाह के दरबार में गई और अबदुलरहमानसे पूछनेलगी कि देखोतो आजकल अमीरकहां हैं उसने रमल सेविचारकर और कुछ तो न कहा केवल यहीकहा कि जंगल२ घूमकर दुःख उठारहे हैं तुम्हारी कृपासे परंतु वह भी समीप बैठीथी

और रमल जानती थी देखकर कहनेलगी कि हे ईश्वर जिन्नी सब्ज़क़बा ने मेरा कुछडर न माना और अपनी बेटीका विवाह मेरे पतिके साथ करके अपनी बेटीको मेरी सौत बनाया अच्छा इसका बदला मैं उसको जाकर देतीहूं जोमैंने सबकोमारकर उसकेदेशका नाशन करदिया तो आसमानपरी मेरानाम नै रखना यह कहकर सेनाको साथलेकर क़िले सब्ज़निगार की तरफ़ तख़्त पर सवार होकर चली ॥

जाना आसमानपरी का सेनासमेत क़िले सब्ज़निगारको और नगरलूटकर पराजय करके पकड़ लाना बादशाह सब्ज़क़बा उसकी बेटी रैहानपरी समेत और क़ैद करना कारागृह सुलेमानी में ॥

लिखनेवाला लिखता है कि जिससमय आसमानपरी क़िले सब्ज़निगार के समीपपहुंची तब सब्ज़क़बा कुछसौग़ात लेकर उसकी अगवानी के लियेगया और बड़ीप्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होकर अपने क़िलेमें लेआया तब आसमानपरी ने क़िलेमें पहुंचकर अपने सरदारोंको आज्ञा दी कि सब्ज़क़बा और रैहान परी की मुशकें बांध लो लोगोंनेउसकी आज्ञामान कर बांधलिया आसमानपरी नगरको लूटती हुई गुलिस्तान अरममें उनदोनों को लेकर पहुंची और कईदिनोंतक हज़ार २ कोड़े दोनोंके लगवाकर कारागार सुलेमानी में क़ैदकिया यहहाल बादशाह शहपाल को पहुंचा कि आसमानपरी ने इस प्रकार से सब्ज़क़बा की दुरमतली है तब तो बादशाह रोता हुआ दौड़ा और जाकर उसको छुड़ालाया और उससमयआसमानपरी अपने स्थानपर चलीगईथी बादशाह ने उसको अनेक प्रकार से समझाया कि इसने आपको नहींदुख दिया परंतु मुझकोदिया हरप्रकारसे शहपाल ने समझाया परंतु उसके दिलसे क्रोध न मिटा क़िलेके बाहर आकर पागल की तरह पुकार २ के कहनेलगा कि हे ईश्वर जिस प्रकार से आसमानपरीने मुझको हया दुःखदिया है ऐसाही मेरेबदले में तू उसको दे यहकहताहुआ रोतेहुये अपने क़िलेमें आया ॥

अब आसमानपरी दुष्टाका हाल सुनिये कि क़ाफ़के सातदेशोंमें एक रदशतिरनामे जो हज़रतसुलेमान के पैकरोंमें था और वह बड़ा बहादुर और लड़ाका था और हज़रतसुलेमान के जो सातनदियोंका देश प्रसिद्धहै उसीमें जिससमय कि हज़रतसुलेमान ने प्राण त्यागकियाउस समय से जाकर वहां रहनेलगा और वहां दो क़िले बनवाये एक का नाम तो स्याहबूम रक्खा दूसरे का सफ़ेदबूम और कुछ जादूका भीकारखाना बनवाया सो अब उसको यह ख़बरपहुंची कि शहपालशाह ने दुनिया से एकमनुष्य बुलवाकर अफरेतदेव को उसकीमाता समेत और बहुतसे देवोंको मरवाकर जादूके कारख़ाने तोड़वाकर सबदेश बसालिया है और गुलिस्तानक़ाफ़ को भी बरबादकरवादिया इसके सुनतेही आग

होगया और हज़रतसुलेमान का माल जो किसी युक्तिसे उसको मिल गयाथा लेकर क़िलेसफ़ेदबूम से उड़कर गुलिस्तानअरम में आकर सबको बांधलिया और अपने साथियों से उनको दुःख देने के लिये आज्ञा दी परंतु केवल अबदुलरहमान अपने स्थानपर चला गया था इसकारण से बचगया और जितने थे कोई उसबला से न बचा यह हाल अबदुल-रहमान कोपहुंचा तबतो वह बड़े सन्देहमें हुआ और रमलसे विचा-रा तो विदित हुआ कि अमीर क़िलेके उत्तरदिशा पर हैं उसी तरफ तख़्तपर सवारहोकर अमीरकेलिये ढूंढ़नेके लियेगया अमीर का हाल सुनियेकि वे जब क़िले सब्ज़निगार से निकले तो कईदिन जंगलघूमते २ एक पहाड़की खोहमें जो अबदुलरहमान के स्थानके समीप था आकर बैठे थे कि इतने में अबदुलरहमान को तख़्त पर सवार आते हुये देखा और अबदुलरहमानने भी देखा तख़्त से उतर कर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उठाकर छातीसे लगाया और पूछनेलगा कि अब बादशाहने तुम को क्यों जुदा किया है तब उसने सब वृत्तान्त शहपाल शाह आसमानपरी उकरेशा और सब सरदारों के क़िले सफ़ेदबूम में क़ैदहोने का सुनाया तब अमीरने कहा कि यह झूठ सौगन्ध और मेरे दुःखदेने का बदला शहपाल शाह और आसमानपरी को ईश्वरने दिया अबदुलरहमान ने हाथ जोड़ कर कहा कि आप सत्य कहते हैं यह उनको ईश्वर ने झूठ सौगन्ध खाने का बदलादियाहै परन्तु आसमानपरी आपकीस्त्रीहै इसमें आपही की बदनामी है और जो अपराध किया है वह आसमानपरी ने किया है परन्तु उसकी नेवछावर में सबको छोड़ाइये कि ये बेचारे इस दुःख से प्राण बचाकर आवें प्रथम तो अमीर ने इनकार किया परन्तु पीछे को अबदुलरहमानकी विनय से कहा कि अच्छा वह क़िला कहांहै और वहांतक मैं क्योंकर जा सक्ताहूं कि उसक़िले पर जाकर छोड़ाऊं अबदुलरहमान ने कहा कि वह सातनदियों के पारहै और वहां शाहसीमुरग़के सिवायऔर कोईपार नहीं जासक्ता वह ऐसा स्थानहै अमीर ने पूछा कि वह कहां है अबदुलरहमान ने कहा कि शाहसीमुरग़ के स्थानतक मैं आपकोपहुंचाढूंगा और उसका पता भी आपको अच्छीरहसे बतलाढूंगा इसप्रकारसे अमीरको समझाकर प्रसन्न किया और अपने तख़्त पर सवार कराकर क़िले में लेगया और अनेक प्रकार से मेहमानदारी करके प्रसन्न किया अमीर ने उस क़िले को देखकर कहा कि एकबार और हम इस क़िलेमें आये थे और उनदिनों में यह क़िला लाऊसशाह लानिसाके पिताके पास था अबदुलरहमानने कहा कि सत्यहै वह मेरा नायब था और बड़ा बुद्धिवान था तत्पश्चात् अबदुलर-हमानने अमीरको तख़्तपर सवारकराकर चारदेवोंको आज्ञादी कि अति शीघ्रताके साथ अमीरको शाहसीमुरग़के स्थानपर पहुंचाओ तब उनचारों देवोंने तख़्त उठाया और केवल जलहीमें सातदिन रात्रिबराबर उड़ाकर

आठवेंदिन चारघड़ी दिनचढ़े नदीके पारजाकर तखतको उतारा और जो चलते २ थकगये थे आराम करनेलगे अमीरने नदीको जो देखा तो उसकी लहरें आकाशतक ऊंची उठतीहैं और मनुष्यतो क्या पक्षी भी देखकरव्याकुल होजातेहैं और नदीकेतीरे ऐसेबड़े२ वृक्षथेकिजिनकीडालियां आकाशतक पहुंचीथींऔर उनकीछायापांचयोजनतकपहुंचतीथी औरवृक्षोंके ऊपरएक क़िलाबनाथा और वह क़िला अच्छीतरह से सजाथा अमीरने उनजिन्नोंसे पूछा कि इस क़िलेको किसने बनवायाहै जो गुलस्तान अरमसे भी उत्तमहै उन जिन्नोंने कहा कियह क़िला नहींहै यह उसी सीमुर्गका स्थानहै अमीर इस बातके सुन्नेसे बड़े संदेहमें हुये तखतके लानेवाले जिन तो अपने स्थान को चले गये और अमीर एकवृक्षकेनीचे बैठकर जंगलका तमाशादेखनेलगे कि थोड़ी समयके पश्चात् एकवृक्षपर शोरगुल होनेलगा अमीर उसवृक्षकेनीचे जाकर देखनेलगे तो विदितहुआ किसी मुर्गके बच्चेशोर गुलकररहेहैं सीमुर्ग के बच्चोंको जो देखातो उनका धड़ हाथी के तुल्यहै परन्तु सब इकट्ठे होकर चिल्लारहे थे तब अमीर बड़े संदेह में हुआ कि किसवस्तुको यह देखकर डरतेहैं देखते२ जो देखा तो एक अजगर उसीवृक्षपर चढ़ा जाताथा अमीर ने उसको तीरसे मारकर बल्लो की नोकसे छेद२ उसके मांसको बच्चों को खिलाया और उनका प्राण उस अजगर से बचा था उन बच्चों का जो पेट भरगया तो जाकर सोगये क्षुधासे तृप्तहोगये दोघड़ीके पश्चात् सीमुर्ग जोड़े समेत अपने बच्चोंको भोजन लिये हुये आये तो उस समय बच्चोंको न देखा तो विचारा कि आजबच्चोंको कोई खागया और सदैव जबवेआनेकी आहट पातेथे तो झोंझसे बाहर सुख निकालकर देखने लगते थे अमीर को वृक्षके नीचे सोते हुये देखकर दोनों आपसमें कहने लगे कि विदित होता है कि यही मनुष्य हमारे बच्चोंको खाजाताहै और हमको दुःखदेताहै और आज भी यही खागया नहींतो बोलते इसको मारडालना उचितहै यह एक बच्चे नेसुना और व्याकुल होकर बाहर आकर अपनी भाषामें सब वृत्तान्त सीमुर्गसे कहा और उस अजगरके मारे जाने की उसे खबरदी तब तो सीमुर्ग अमीरसे अतिप्रसन्न हुआ और अमीरके ऊपर जो धूपआगई थी एक परसे धूपकी आड़की और दूसरेसे वायु करने लगा अमीर को जो आराम मिला तो नेत्र खुलगये तो अमीरने उनके मारने के लिये तीर और कमान लेकर सम्हला तब उसने कहा किऐ अमीर अभीतो आपने मेरेबच्चोंका प्राणबचा कर मेरेऊपर अपना यह सलूककिया और अबआपमुझे मारनेकी इच्छा करतेहैं अमीरने पूछा कितू कौनहै और तूनेमेरानाम क्योंकर जाना उसने कहा कि मैंने सुलेमान से सुनाथा कि एक मनुष्य परदे दुनिया से किसी समयमें आवेगा वह अजगर को मारकर सीमुर्ग के बच्चोंकी रक्षा करेगा और आदिल क़ाफ उसका नाम होगा और सब देवोंका नाशकरेगा और जो कोई क़ाफ में उससे युद्ध करेगा वही मारा जायगा तब पीछे लोग उसे

जुलजलाल आक्र करेंगे और उसकी बहादुरी से आश्चर्य करेंगे अमीरयह बातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ अमीरने पूछा कि यह कौनसा स्थानहै उस ने कहाकि इस स्थानका नाम कजाक़दर है और यह परदेक़ाफ की सरहद से बाहर है और यहां परियों की राजधानी नहीं है अमीर ने कहा कि मुझे तुझसे बड़ा कार्यहै इसी कारण मैं तेरे पास ऐसा दुःखउठाकर आया हूं उसने कहा कि मैं सेवक हूं जो आज्ञा दीजिये वही करूं और आपकी कृपा प्राप्तकरूंगा अमीरने कहाकि रद्मातिरदेवने शहपाल और आसमानपरीको सेनापतियों समेत ले जाकर क़िले सपेद बूममें क़ैदकिया है इसकारण से तू मुझको वहां लेकर पहुंचादे उसने कहा परदे क़ाफके देव मेरे शत्रु होजायंगे परन्तु मैं आपको अवश्य वहां पहुंचादूंगा इतना कार्य्य आपका मैं करूंगा परन्तु आप सात दिनके लिये भोजन और जल मेरी पीठपर रखलीजिये कि जिससमय भूखलगे तो एक घूंट जल और भोजन मेरे मुखमें छोड़दीजियेगा तब अमीर ने जंगल में जाकर सात नील गायका शिकार किया और उनकी खाल खींचकर मशक बनाई और उसमें मिष्ट जल भरकरके नील गायसमेत सीमुर्ग़की पीठपर रखकर सपेद बूमकी तरफ़ चला तब सीमुर्ग़ने अमीरसे कहाकि आप कोई लोहेका शस्त्र अपने पास न रखियेगा नहीं तो मार्गमें चुम्बक पहाड़ मिलताहै वह लोहे के कारण हमको खींच लेगा अमीरने कहा कि फिर मैं इनको क्या करूं उसनेकहाकि यहीं छोड़चलिये और एकछोटासा शस्त्रजो मोजेमें समासके रखलीजिये तब अमीरने केवल तमंचा सोहराब का रखकर शेषसीमुर्ग को सौंपदिया उसने अपने परोंमें छिपालिया और अमीरको लेकर आकाशकी तरफ उड़ा अमीरने ऊपर से जो देखातो पृथ्वी एक सुंदरी के तुल्य दिखाई पड़ी और सर्वत्र जलही जल दिखाई पड़ता था तब अमीरने सीमुर्ग़से पूछा कि इस नदीका क्या नामहै उसने कहाकि सात नदियोंमें यह पहिलीनदी है और अभी छः शेषहैं और अति शीघ्रता के साथ उसके तैरने में श्रम करताथा जब आधी नदीमें पहुंचा तब उसको क्षुधालगी अमीर से कहाकि ऐ अमीर अति शीघ्रही मेरे मुखमें भोजन छोड़ो मेरा ज़ोर घटा जाताहै क्षुधा दबाये आतीहै तब अमीर ने एक नील गाय और एक मशक मिष्ट जल की उसके मुखमें छोड़दी उसने खाकर एक दिनमें उस नदी को पार किया दूसरी दिन दूसरी नदी पर पहुंचा अमीर ने सीमुर्ग से उसमें अंधियारा देखकर पूछा कि इसमें अंधियारा क्यों है उसने कहाकि यह नदी ख़ाककी है और जब आधी नदीमें पहुंचा तो फिर उसी प्रकार से भोजन मांगा अमीरने वही एकनीलगाय और एक मशकजलकी उसकेमुखमें छोड़ दी और जिससमय उस नदी से पारगया उसी प्रकार से खाते हुये तीसरी और चौथी नदीको पारकिया जो कि रुधिर और सिमाब के नामसे प्रसिद्ध थी इसी प्रकारसे जब चुम्बक नदीपर पहुंचा तो वह सीमुर्गको अपने तरफ

खींचने लगा तबतो सीमुर्गने अमीरसे कहाकि आप अति शीघ्र उस तमंचे को जो आपके मोजे मेंहैं फेंकदीजिये उसीके कारण चुंबकामुख खींचेजाता है तब अमीरने लाचार होकर उस तमंचेको फेंकदिया और सीमुर्ग उससे पार होकर सातवीं नदी जो अग्निकी थी पहुंचा तब आधी नदी में जाकर अमीरसे अन्न जल मांगा अमीरने वही लोलगाय और एक मशक जल की उसके मुखमें छोड़ी परन्तु अग्निकी लपक से हाथ को अति शीघ्रही हटा लिया और वह सीमुर्ग के मुखमें न गया नदीमें गिरकर जलगया तत्पश्चात् उसने फिर मांगा तब अमीरने कहाकि अमीतो मैं तुमको खिलाचुका अब मेरे पास कहांहै अब तो सब समाप्त होगये तब उसने कहाकि मेरे पेटमें तो नहीं गया और यही समय अलकरने का है जो न खाऊंगा तो थोड़े काल में गिरपड़ूंगा अमीरने देखाकि जो इसको नहीं कुछ खिलाते तो यह हमकोलेकर अभी अग्निकी नदीमें गिरपड़ेगा अपनाकालिचा निकाल कर उसके मुखमें छोड़कर उसको क्षुधा से तृप्तकिया तब वह उड़कर उस नदी से पृथ्वी पर पहुंचा और उतर कर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीरको अति प्रसन्नता प्राप्तहुई परन्तु शस्त्रोंके फेंकदेने से दुःखित हुये कि इतनेमें दाहिने तरफसे हजरत अखुजरने आकर सलामकरके सब शस्त्र जो सीमुर्ग के स्थानपर छोड़ आयेथे और उस तमंचे समेत जो चुम्बक नदी में फेंकदियाथा लाकर सामनेरखदिया तबतो अमीर अतिप्रसन्न होकर हजरतके पैरोंपर गिरपड़े और शस्त्रों को उठाकर धारणकिया तबतो हजरत उसीसमय चलेगये और अमीरने मैदान कीतरफजो देखातो दोपहाड़अपूर्व प्रकारके दिखाईदिये अमीरने सीमुर्गसे पूछाकिये पहाड़ कैसे दिखाई पड़ते हैं उसने कहाकिय पहाड़नहीं हैं ये वही दोनों क़िलेहैं एक,जो प्रातःकाल कीतरह सपेद विदित होता है वह सपेद बूमहै और दूसरा जो रात्रिकी तरह विदित होता है वह स्याहबूम है तब अमीर ने सीमुर्गसे कहा अब तुमजाओ ईश्वरमालिकहै तबसीमुर्ग ने तीनपरदेकर कहाकिएकपरतोआप दुनियांमें पहुंचके अपनेघोड़े में लगाइयेगा और दूसरा अमरू मक्कारको मेरी तरफ़से दीजियेगा और तीसरा जोआपको मेरेबुलानेकीआवश्यकतापड़ेतो इसको अग्निमें डाल दीजियेगातोमैं आपके पास आकर पहुंचजाऊंगा जो मैं कहताहूं यही कीजियेगा यह कहकर सीमुर्ग तो अपने स्थान की तरफ उड़गया और अमीर उन क़िलों की तरफचले थोड़ी दूर जानेपर एक व्याघ्र अमीरकेऊपरदौड़ा अमीर ने अक़रब सुलेमानी से उसके दोटुकड़े करदिये और उसकीखालइसविचारसे खींचकरगलेमें डाललो कि दुनिया में पहुंच कर इसका लबादा बनवावेंगे क्योंकि कहीं सुनाथा कि रुस्तमके गलेमें व्याघ्र की खाल उसको देखकर लोग डरतेथे इसी प्रकार से जब अमीर क़िले स्याहबूमके दरवाजेपर पहुंचेतो वहां देखातो नकोई रक्षक दिखाई पड़ता है न और कोई केवलचारसौ देवदरवाजे पर बैठे हैं कि कोई नवीनमनुष्य

न आने पावे संयोगसे उनदेवों के सरदारने अमीरको देखलिया और एक बारगी चिल्लार कर कहने लगा कि बड़ा गजब हुआ कि बुलबुलाल बाफ यहां भी पहुंचा हमलोगोंका प्राण न छोड़ेगा यह कहकर एक तलवार लेकर अमीरके ऊपर ऐसीमारी कि पृथ्वी हिलगई परन्तु अमीरने उसको रोककर एक तलवार ऐसीमारी कि उसकेदो भागहोगये देवोंने जब अपने सरदारको कुत्तेकीमौतकीतरहमरते देखातो सबअपनाप्राणलेकरभागगये और इस समय रद्यातोर शिकार खेलने को गया था उसी तरफ को सब भागे कि उसको जाकर खबरदेवें और अमीर दरवाजे पर खड़े होकर विचारने लगा कि यह नहीं विदितहोता कि शहपालशाह और आसमान परी खाहकूम में हैं या सफेदकूम में इतने में आकाशवाणी हुई कि शहपाल शाह और आसमानपरी सफेदकूममें क़ैदहैं अमीर उस क़िले कीतरफचले जब दरवाजे पर आये तो देखा कि उसक़िलेमेंसौबुर्जहैं औरबुर्जपरकोईदेव तो व्याघ्र का शिर कोई घोड़े का कोई सांप आदिक का शिर कियेहुये रक्षा कररहे हैं और दरवाजे पर एक अजगर है जिसके मुखसे ऐसी लौ निकलती है कि जंगलका जंगल जलजाताहै और उसका मुख इतनाबड़ा है कि उसीकेकारण दरवाजेका रास्ता बन्दहै अमीर व्याकुलहुये कि इसके भीतर क्योंकर जावैं इतने में आकाशवाणी हुई कि ऐ हमजा इसजादू का नाशकर्त्ता तू नहींहै तेरा एक पोताकस्सास दूसरा उत्पन्नहोगा वहीइसका नाश करेगा तब अमीर अति व्याकुलहुये कि अभी तो मैं खुदही लड़काहूं जब मेरेपुत्रहोगा और उसके फिर पुत्रहोगा तबतक ये बेचारे इसी क़ैदही में पड़ेरहेंगे क्योंकर दुःख सहसकेंगे इतनेमें फिर आकाशवाणी हुई कि तू क़ैदियोंको छोड़ासक्ता है परन्तु जादूका नाशनहीं करसक्ता है इस मंत्रको पढकर अजगर के मुखमें चलाजा तू पार होजायगा अमीर ने जो उसमंत्र को पढ़ा तो अजगर दरवाजे परसे हटगया और अमीर दरवाजेसे होकर क़िलेमें गये तो वहां देखा कि एक बागहै उसीमें शहपालशाह सरदारों समेत बैठेरोरहे हैं अमीर को देखकर लज्जित होकर शिरनीचे कर लिया अमीर ने सबको क़ैदसे छोड़ाकर आराम दिया और शहपालशाह से पूछा कि आसमानपरी कहां है उसने कहा कि सामने के बुर्ज में क़ैद है अमीर उसका दरवाजा तोड़कर भीतर गये तो देखा कि आसमानपरी नीचे को शिर ऊपरको पैर कियेहुये लटकाई है और थोड़ासा प्राणरहगया है और उसकी बेटी अपनी माता के सन्मुख खड़ी रोरहीहै तब अमीर ने उसको भी क़ैदके बन्दकाटदिये और सबको लाकर बादशाह के पास इकट्ठा किया तब तो आसमानपरी अतिलज्जित होकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ी और कहनेलगी कि हे अमीर अबकी बार मेरा अपराध क्षमाकरो अब छःमास व्यतीत होनेपर अवश्य आपको दुनिया को भेजदूंगी अमीर ने कुछ उत्तर न दिया और उसके कहने पर कुछभरोसा न किया सबको साथलेकर क़िलेसे

बाहरनिकला तो देखा कि रदशतीरकईसहस्र देव साथलिये ऊये गरजता चलाआता है कि जिसकेडरसे पृथ्वी हिलरही है अमीर के सन्मुख आकर कहनेलगा कि ऐ मनुष्य तूनेसब काफ़केबागोंका नाशकर दिया और यहां भी आकर मेरे कैदियोंको छोड़ाये जाता है अब तेरा प्राण न बचेगा अब मेरेहाथसे क्योंकर बचकर जासक्ता है यहकहकर एकपत्थर उठाकर अमीर को मारा अमीरने उसको रोककर ऐसाएकघूसामारा कि वह उसीस्थानपर मरगया तब उसकेसाथके देवोंनेलाश लेजाकर देव समुन्द कि जिसकेसहस्र कर थे दिया अमीर सबको साथलेकर गुलिस्तान अरम को चलेआये और सबतरहआरामसे रहनेलगे और जब छःमहीनेव्यतीतहोगये तो एकदिन फिर रात्रिको स्वप्नमें मेहरनिगारको देखकर चौंकउठे औररोनेलगे आसी मानपरी भी रोना सुनकर जागउठी और अमीर से पूछने लगी कि क्या है कुशलतो है अमीरने कहा कि अब तुमुझको दुनियामें भेजदे उसने कहा कि एक वर्ष और बासकीजिये अबकी अवश्य भेजदूंगी अमीर यह सुन- कर क्रोधितऊये और उठकर बादशाह के पासआये और सब अपना हाल कहा बादशाहने उसीसमय अमीरको तखतपर बैठाकर चारदेवोंकोआज्ञा दी कि अमीरको लेजाकर परदे दुनियामें पऊंचा आवो हमारी आज्ञाको पूर्णकरो जब अमीर तखतपर सवारहोकर दुनियाकी तरफचले उसीसमय आसमान परीने एक परीजादेसे कहा कि तुम अमीरके समीप अतिशीघ्रही जाकर देवोंसे कहआवो कि खबरदार अमीर को लेजाकर सैरगाह सुले- मानीमें छोड़आवो और जो दुनियामेंपऊंचावोगे तो दंडपावोगे अबमार्गमें अमीरके पास वह देव पऊंचा तो अमीरने जाना कि इसको आसमान परी ने देवों से कुछ कहनेकेलिये भेजाहै तब अमीरभी तखत पलटाकर शहपाल शाह के पास चलाआया और आसमानपरी की बुराई करनेलगा उससमय आसमान परी भी वहीं थी बादशाहने क्रोधित होकर कहा कि तुमउचित तो नहीं होतो और बार बार वही बात किये जाती है आसमान परी ने कहा कि आपमेरे बीचमें पड़कर दुःख न दीजिये मैं आपके कहने से बसा बसाया घर उजाडूं अमीर यहसुनकर उठखड़े ऊये और आसमानपरी को शाप देते ऊये जंगल की तरफ चले गये और बऊत से लोग लिखते हैं कि अमीर ने उसी दिनसे आसमान परी को शाप देकर छोड दिया था और बऊतेरे नहीं मानते और लिखनेवालालिखता है कि अमीरकेजाने के पीछे शहपालभी साधूबनकर पहाड़में जाकर बैठगये और आसमानपरी राजगद्दी पर बैठकर राजधानी करनेलगी और काफ़केनगर भरमेंढिंढोरा पिटवादिया था कि जो कोई अमीरको दुनियामें पऊंचानेकी इच्छा करेगा उसकोमैंबड़ा दण्डदूंगी तत्पश्चात् अबदुलरहमानसे पूछा कि देखो तो वह स्त्री जिस पर हमज़ा मोहितहै अधिक खूबसूरत है उसने विचारकर बतलाया कि वह खूब ऐसी खूबसूरतहै कि उसकी सहेलियां भी आपसे कहीं ज़ियादा खूबसूरत हैं और

वह आजकल क़िलेदेवटू में है आसमानपरी ने उसक़िलेकी तसवीर खिंच-
वाकर कईएक देवों को देकर आज्ञादी कि इसरूपके क़िलेमें जाकर जहां
मेहरनिगारहै उसको उठालेआवो परीज़ादे आज्ञा पातेही क़िलेकी तस-
वीरलेकर दुनियाकी तरफ़ रवानाहुये अबजबतक वे मेहरनिगारको आस-
मानपरीके समीप लेआवें तबतक थोड़ा वृत्तांत मलिक लन्धौर पुत्र सादान
का लिखताहूं विदित हो कि जब मलिकलन्धौर क़ैदसे छूटकर आया तब
नाचरंग होने लगा उसी समय में एक देवने देवसपेद के आने की खबरदी
लन्धौर ने सभासे उठकर सपेददेव के पास जाकर उसको मारडाला लिखने
वाला लिखता है कि उसीयुद्धमें लन्धौर ने ऐसाशब्दकिया था कि वह शब्द
अमीर के कानतक पहुंचा था और सब पहाड़ आदिक कांपउठे थे और
अमीर ने भी उसी समय देवशानिरके युद्ध में शब्द किया था जो लन्धौर के
कानोंतक पहुंचा था परन्तु दोनों व्याकुल थे लन्धौर कहता था कि यहां
अमीरकहां और अमीर कहताथा कि यहां लन्धौर कहां जब लन्धौरसपेद
देव को मारचुका तब बादशाह से कहा कि अबमुझे मेरेदेशको भिजवा
दीजिये अबतो आपका वादा पूर्णहुआ बादशाह ने उसी समय लन्धौरको
एकतख़्तपर सवारकराकर आरशिबपरीज़ाद समेत दुनिया की तरफ भेज
दिया और देवों को दुनिया में पहुंचाने की आज्ञा दी बहराम खाक़ान
शाहचीन का हाल सुनिये कि संगसारों से विजय पाकर दिन रात्रि इसी
विचारमें रहते थे कि लन्धौर को कौन लेगया यहदाग़ हमलोगोंको लगा
गया उसदिन भी यही बातचीत होरही थी कि बड़े आश्चर्य की बातहै कि
लन्धौर का अबतक पता न मिला उनको कहां ढूंढें कि इतने में खुसरो
हिन्दका तख़्त आकाश से आकर क़िलेमें उतरा बहराम दौड़कर लिपट
गया और सब मनुष्य आकर लन्धौरके पैरोंपरगिरे और क़िलेमें खुशीका
बाजा बजनेलगा और नगारे बादलके समान गरजलगे और नाचरंग होने
लगा बहराम ने उसीसमय में लन्धौर से कहा कि एकपत्र आकाशसे कोई
फेंकगयाहै परन्तु वह किसीसे पढ़ानहींजाता तब लन्धौरने कहाकिलाओ
देखें तो जो हमसे पढ़ाजावे तो पढ़ें बहराम ने पत्र मंगवाकर खुसरो को
दिया परन्तु उससेभी न पढ़ागया तब आरशिब ने लेकरपढ़ा और कहा
कि पत्र मेरीमाता ने लिखकर जादू से तुम्हारे पास फेंकदिया था बहराम
आरशिब को छातीसे लगाकर अति प्रसन्नहुआ और जितनेलोग उस समय
बैठेथे बहुत प्रसन्न हुये और सब उसकी प्रशंसा करनेलगे और कहनेलगे
कि मानो सरंद्वीप आज फिरसे बसायागया ॥

लोप होना जहरमिश्री का कैनरक़िले से और पहुंचना आसमानपरी केपास परदेक़ाफपर॥

अब थोड़ासा वृत्तान्त अति दुःखी मलीन विरह संयुक्त मलिका मेहरनि-
गार हमज़ास्त्री का सुनिये कि दिनरात्रि अमीर की जुदाईसे रोती पीटती
थी और न कुछ खाती न पीती और मैले कुचैले छपरखट पर सोतीथी और

जब जहरमिश्री या और कोईसहेली मुंहहाथधोनेको कहतीथी तब रो२कर धोती थी और जबकोई सिंगारकरनेको कहे तो उसके बदलेमेंरोतीथीऔर सहाविलाप करतीथी रूरदारोंने देखा कि ऐसा नहो कि इसीप्रकारसे यह पागलहोजावे उसके दिलबहलानेकी उपायकरनेलगे औरयहीकहतेथे कि ऐ मलिकाबड़ततगई थोड़ीरही अबईश्वरकीकृपासे आकरतुम्हारेदुःखको छुड़ाते हैं पोशाक बदलकर भोजनकरके चित्तको आनन्द कीजिये जो आपने प्राण त्यागदिया तो कौन बड़ीबातकी अमीर आकर किसको देखेंगे और कौन अमीरको देखेगा कृपाकरके कोठेपर चलिये ठण्डी २ वायु से चित्तको प्रसन्न कीजिये ईश्वरकेलिये हमलोगोंको दुःख न दीजिये इस प्रकारसे कह सुनकर कोठेपर लेगये और हरियाली खेतोंकी दिखलानेलगे और इधर उधर की बातचीत करने लगे कि मलिका का चित्त प्रसन्नहोवे इतनेमें थोड़ी समय न व्यतीतहुई थी किएक आंधी आई और बादलगरजनेलगा तत्पश्चात् एकबच्चा आकाश सेउतरकरजहरमिश्री को जो मलिकाके सामने खड़ीथी उठालेगया कोई तोभागकर सीढ़ियोंपर मुखकेबलगिरपड़ा और कोईआंख बन्दकरपृथ्वी परबैठगया सबव्याकुलहोगये किसीको किसीकी खबर नरही जबसब आंधी पानी बन्द होगया और लोग चैतन्यहुये तो देखा कि जहरमिश्री नहीं है तब तो सब औरही दुःखितहुये अब थोड़ासा वृत्तान्त जहरमिश्रीका सुनिये कि जब उसने देखाकि मैं तखत्पर बैठीहूं और तखत् आसमान पर उड़-जाताहै और सर्वत्र वस्तु मुझको काली दिखाई पड़ती है तब उन देवों से पूछा कि तुम कौनहो और कहां मुझको लियेजाते हो उनलोगों ने कहा कि आसमानपरी हमज़ाकीस्त्रीने हमलोगोंको आज्ञादेकरभेजाहै कि तुम लोगजाकर मलिकामेहरनिगार नौशेरवांकी बेटीको हमारेपास लेआवो सो हमलोग तुमको उसके आज्ञानुसार लिये जाते हैं तब तो जहरमिश्री ने बिचारा कि विदितहोता है कि हमज़ा ने परदेकाफ में दूसरा विवाह कर लियाहै सो उसीस्त्री ने मलिकाको मारनेके लिये मंगवाया है परन्तु ये उसे पहचानते न थे मुझीको मेहरनिगार जानकर उठालाये हैं अच्छीबात हुई कि ईश्वरने उसको बचादिया मैंही उसके बदलेमें मारीजाऊंगी इसीप्रकार से जहरमिश्री जब गुलिस्तानमें पहुंची तो सुरमासुलेमानी उसकी आंखोंमें आसमानपरी ने लगवादिया तब वह सब को देखनेलगी जिससमय उसको आसमानपरी के सन्मुख लेगये तब आसमानपरी उसके स्वरूप को देख कर व्याकुलहोगई और कहनेलगी कि तब क्यों न हमज़ा इसीको जुदाई के दुःख से व्याकुलहो और फिर जहरमिश्री की तरफ सन्मुख होकर पूछने लगी कि मेहरनिगार नौशेरवांकीबेटी तूहीहै जो सुन्दरतामें प्रसिद्ध है और जवानों को मोहितकर लेतीहै जहरमिश्री ने अदब के साथ सलाम करके कहा कि नहीं मैं तो अबदुल बज़ीर बादशाह मिश्री की बेटी और मक़बूलवफादार सेकर हमज़ा की स्त्रीहूं मैं कब मेहरनिगार की बराबरी करसक्ती हूं और

मेरानाम जहरमिश्री है और मुझऐसी चारसौ सहेलियां उसके साथमें हैं आसमानपरी जहरमिश्री की बातोंसे अति प्रसन्न हुई और पूछने लगी कि सत्य कहना जहरमिश्री तुझे हजरतकी निरकी सौगन्दहै मैं स्वरूपवान हूं या मेहरनिगार तेरेसमीप दोनोंमेंसे कौन अधिक स्वरूपवानहै जहरमिश्री ने हाथ बांधकर कहा कि अपराध होता है नहीं तो आपकी सुन्दरता तो मेहरनिगारकी सहेलियोंके बराबर भी नहीं है कहां सूर्य कहां एक तारा आसमानपरी उसकी बातोंपर अति क्रोधितहुई और जल्लादों को बुलाकर आज्ञादीकि इसको लेजाकर फांसीदो यहबड़ी बेअदब सभाके योग्यनहींहै संयोग से करीमा जो उन दिनों में सातवर्ष की थी परंतु सुन्दरता और बुद्धिमानी में प्रसिद्ध थी उसतरफ से आनिकली आदमियों का जमावा देख कर हाथमें तमंचा लिये जहरमिश्री के पासगई जल्लादोंसे पूछा कि यहकौन है और कौनसा अपराध किया है जो पहरा देतेहो उनलोगों ने कहा कि हम कुछ नहीं जानते कि यह कौन है और कौनसा अपराध किया है परंतु महपरियों ने आज्ञादी है करीमा ने जहरमिश्री से पूछा कि तू कौन है उसने सब अपना ब्योरेवार वृत्तान्त सुनाया तब तो वह क्रोधितहोकर भुलभुला गई और जहरमिश्री को साथ लेकर आसमानपरी के पास आई और उससे क्रोधितहोकर पूछनेलगी कि इसने कौनसा अपराधकिया है जो परदेदुनियासे इसको मंगवाकर बधकरातीहै विदितहोताहै कि जो मलिकामेहरनिगार आती तो उसको भी बधकराती न अमीरसे डरती न ईश्वर से वहभी एकप्रसिद्ध मनुष्य है और तुमसे लाखगुनाप्रतिष्ठा और बलआदिक में बढ़ा है और वह अमीर की प्रथम स्त्रीहै सब बातोंमें तुमसे उत्तमहोगा क्याकरूं ईश्वरसे डरतीहूं कि तू मेरी माताहै नहीं तो एकतमंचा मारकर दोटुकड़ेकरदेती और कभीकिसीसेनडरती आसमानपरी करीमाकोक्रोधित देखकर डरगई कुछ न बोली यहांतक कि करीमानेउसीसायत जहरमिश्री को तख़्त् पर सवारकराकर उनही देवों को जो लेआये थे आज्ञादी कि जहांसे लेआयेहो वहीं इसको लेजाकर पहुंचाआवो मेरी आज्ञामानो तब वे तख़्त् को उठाकर रवानाहुये संयोगसे उसीसमयमें देव मसुन्द जो उसके मार्गमें पड़ता था अपने सरदारों समेत बैठाहुआ शराबपीरहा था उसकी दृष्टि तख़्त्परपड़ी तो अपने सिपाहियोंसे आज्ञादी कि दौड़कर उसतख़्तको अतिशीघ्र हमारेसमीपलेआवो कौनहै इसको कहां लियेजातेहैं जब तख़्त को उसके समीप लेआये तब जहरमिश्री से पूछा कि तू कौनहै और कहां जातीहै और तेरा इतनाबड़ा मकदूर कि देवोंसे तख़्त् ढोवातीहै तब उसने सब अपना वृत्तान्त कहा तब देव मसुन्दने परीजादोंको तो मारडाला और जहरमिश्रीको आज्ञादी कितू हमारेपुत्रका पलनाभुलायाकर और उसको किसी प्रकारसेदुःख न होनेपावे लाचारहोकर वह पलना भुलानेलगी और अपनी भाग्यपर रोनेलगी अब ख़ाजेअमरूका हाल सुनिये कि जब घोर गुल

होनेलगा महलमेंगया तो विदितहुआ कि एकबच्चा आकाशसे आया और जहरलिज्जी को उठालेगया क्रोधितहोकर मलिकामेहरनिगार के पास गया और कहने लगा कि हजार बार मैंने आपको समुझाया कि कोई कार्य ब मेरे पूछे न करना परंतु तुम नहीं मानतीहो जो तुमही को उठा लेजाते तब तो हमारी बारहवर्ष की मेहनत वृथाजाती और लोगोंसे लज्जितहोते यह कहकर तीनकोड़े मलिकाकी पीठमें ऐसी मारी कि वह बेतावहोकर पृथ्वी पर लोटने लगी और अमरू से बहुत नाराज हुई और अपने चित्त में बिचार करनेलगी कि जो हमजा से मित्रता न करती तो अमरू मुझे क्यों मारता कि इससे बड़े २ मेरे पिता के यहां पैकर हैं यह विचार करके उस समय तो कुछ न बोली परंतु आधीरात्रि को कमन्द लगाकर क्लिलेसे बाहर उतरी और कुछ दूर अपने भाईके खेमेकी तरफगई परंतु फिर अपने चित्त में विचारा कि भाइयों के पास जानाउचित्त नहींहै एकघोड़ा हरमजका रुजा हुआबंधा हुआथा और साईस सोरहाथा मरदानारूप धारण करके मुखपर मेहराडालकर घोड़ेपरसवार होकरजंगलकी तरफचली और प्रातःकालहोते पचासकोस निकलगई अमरूका हाल सुनिये कि कोड़े मारकर महल से अपने स्थान पर चलेआये और बिचारा कि सबेरेजाकर मलिका से अपना अपराध क्षमाकरवाकर उसे प्रसन्न करलेंगे परंतु उसीरात्रि को अमीर ने स्वप्नमें कहा कि ऐ अमरू तूने मलिकाको ऐसा दुखदिया कि तेरे कारण क्रोधितहोकर जंगल की तरफ चलीगई अमरू यह स्वप्नदेख कर चौंक कर उठा और मलिकाके महलमें गया तो देखा कि पलंगखाली बिछा है और मलिका उसपर नहींहै तबतो इधरउधर ढूंढ़नेलगा परंतु कहीं पतानलगा तब तो अतिव्याकुल होकर क्लिलेकी दीवारपर जो गया तो देखा कि एक तरफको कमन्दलगी है तब तो अमरूको विदितहुआ कि मलिका इसतरफ से उतर कर गईहै परंतु यह विदित न हुआ कि किधर को गई अमरू भी कमन्द से उतरकर नीचेगया और मलिकाके पैरोंके चिन्हसे हरमज के खेमे तकगया और वहांजाकर देखा तो कुछ पता न लगा परंतु एकसवार हाथ में बागडोर पकड़े सोरहा था तब अमरू ने जाना कि मलिका यहां तक आई और यहां से इसी घोड़ेपर सवारहोकर कहीं चलीगई तब अमरू ने उससाईस से जगाकर पूछा कि घोड़ा तेराक्या हुआ तब वह उठकर इधर उधर ढूंढ़नेलगा परंतु कहीं पता न लगा तब उसी घोड़ेके सुमके चिन्हसे चला कि इसको कहीं ढूढ़ना चाहिये मेहरनिगार का वृत्तान्त सुनिये कि वह प्रातःकाल होते पचासकोस चलीगई एकाएक बंदशाह एलयासतर सलातपूजक हाथ पर बाजलिये हुये आनिकला मलिका एक वृक्षके आड़में होगई परंतु उसने देखलिया कि एक सवार सेहरामुहपर डाले आता है इसको देखकर वृक्षके आड़में होगया समीप जाकर पूछा ऐ मनुष्य तू कौन है कहांसे आताहै और इस जंगल में किस प्रयोजन के लिये आया है और

तेरा नाम क्या है मेहरनिगार ने कहा कि मुसाफिर हूं भाग्य से यहां भी आगया हूं बादशाह ने कहा कि हमारी नौकरी करेगा उसने कहा कि मुझे नौकरी करने की कुछ आवश्यकता नहीं है बादशाहने बोलीसे बिदित किया कि यह स्त्री है हाथ बढ़ाकर सेहरा मुखपरसे हटाकर देखा तो वह ऐसी स्वरूपवान स्त्री थी कि जो एकबार सूर्य भी दृष्टिसे देखनेकी इच्छा करे तो चकचौंधी लगे तब बादशाह ने उसीसमय घोड़ेपर से उतरकर एक महाफे में सवार कराया और अनेकप्रकार से फुसलाते हुये अपने स्थानमें लेजाकर एक अतिस्वच्छ और बिमलस्थानमें उतारा और सबतरह आराम का समान इकट्ठाकरवा कर उसके चित्त को अतिप्रसन्न किया और जिस समय उसके समीपजाकर इच्छाकी कि मेहरनिगारके शरीर को छुवे मेह-रनिगारनेकहा कि खबरदारजो और किसीबातकीइच्छा करेगा तो मुझसे बड़ादुःखपावेगा तब बादशाह लचारहोकर चलाआया और अफसोसकरने लगा कि ऐसी स्वरूपवानपरी हाथ भी लगीसो मेरे हाथसे जायाचाहती है संयोगसे उसीदिन ख़ाजा निहाल सौदागर जो पहिले बादशाह नौशे-रवांके पास नौकरथा और उसने मलका मेहरनिगारको गोदमें लेकर खिलाया था और उससे बड़ा लाभ हुआ था बादशाह के समीप सौ-गात लेकर आया उसने बादशाह को दुःखित देखकर पूछा कि आप दुःखित क्यों हैं बादशाह ने सब अपना वृत्तान्त कहा कि एक परी मुझे जंगल में मिली है परन्तु वह मुझसे राजी नहीं होती और मैं उसके मोहमें फंसकर मरताहूं खाजे निहालने कहा कि जो मैं उसे देखूं तो एकमंत्र पढ़कर आपसे राजीकराढूं तब बादशाहने प्रसन्न होकर उसी समय खाजे को अपने साथ लेजाकर उस स्थान को देखाकर कहा कि इसी स्थानमें वह स्त्री है खाजेनिहालने दरवाजेके दरसे देखकर पहचान लिया कि मलिकामेहरनिगारहै और एक बारगी नाम लेकर पुकारा तब मलिकानेभी पहचानकर दरवाजा खोलदिया और भीतर आनेकी आज्ञादी खाजे भीतर मलिकाके पासगया और सर्व वृत्तान्त विदित करके चुपकेसे मलिकासे कहा कि अब आपदुःखित न हूजिये हम किसी युक्तिसे आपको निकाल लेचलेंगे कि इसपापीके हाथसे आपका प्राणबचे मलिका को इस प्रकारसे समुझाकर आप बादशाहके समीप आया और उससे कहा कि आप अपने रक्षकों को आज्ञा दे दीजिये कि मुझे रात्रि दिन इस स्त्री के पास जाने से निषेध न करें आपकी कृपासे आजके तीसरे दिन आपसे राजी कराढूंगा बादशाहने अति प्रसन्नहोकर खाजेनिहालको खिलअत देकर अतिप्रसन्न किया खाजे वहां से आकर बाजारमें सौदा-गरों की दुकानों में घोड़े तलाश करनेलगे पश्चात् दो घोड़े अति शीघ्र दौड़ने वाले लेकर उस स्थान पर जिसमें मलिका रहती थी दरवाजे पर लेगया और उसी रात्रिको एकपर मलिकाको सवार कराया और

एक पर आप सवार होकर नगर से बाहर निकलकर रात्रि भर चला गया प्रातःकाल बादशाह ने ख्वाजेनिहाल को बुलवाया तो वह न मिला और उसी समयमें सिपाहियोंने आकर खबरदी कि वह स्त्री जो आप लेआयेथे वह आज नहीं दिखाई पड़ती मकान खाली पड़ाहै तबतो बादशाहने विचारा कि निश्चयकरके ख्वाजेनिहाल उसको लेभागा उसी समय सेना साथलेकर उसके पीछे रवानाहुआ दोपहर होते मलिकाने गरद गुब्बार देखकर ख्वाजे निहाल से कहा कि ऐ ख्वाजे बादशाह आ-पहुंचा घोड़ेको बढ़ा ख्वाजा तो उसी गरद गुब्बार को देखता रहगया परन्तु मलिका जंगलमें जाकर छिपगई कि इतनेमें बादशाहकी सवारी ख्वाजेनिहाल के समीप आपहुंची ख्वाजेनिहाल जिस प्रकार से खड़ाथा वैसेही हक्काबक्काहो रहा तब बादशाहने आकर ख्वाजेको तो मारकर अपना बदला लिया और मलिकाको इधर उधर ढूंढ़कर जब न पता लगा तो लाचार होकर पलटगया और मलिका दूसरे दिन तक बहुत दूर चलीगई परन्तु क्षुधासे अति व्याकुल होगई जातेजाते एक साधु की कुटी पर पहुंची तबतो चित्त ठिकाने हुआ उससे एक तरबूज मांगा उसने लाकर कई तरबूज दिये और जब मलिकाने सब खालिया और चित्त प्रसन्न हुआ तब उसने कहा कि ऐ प्यारी जो तू मेरे पास रहेतो मैं तुझको अच्छी तरहसे रक्खूंगा और जो तू मांगेगी वहीदूंगा मेहरनिगार व्याकुल हुई कि यह पागल क्या बकता है इसको क्या सूझी है उससे पूछा कि तेरे और कोई है उसने कहा कि मेरे दश बेटे ग्यारह-बेटी और एक स्त्री है तब मेहरनिगार ने कहा कि तेरी स्त्री है तो मैं तेरे पास क्योंकर रस सक्ती हूं उसने कहा मैं स्त्री को छोड़ दूंगा तब मेहरनिगार ने कहा कि अच्छा तुमजाकर उसे छोड़आवो मैं यहीं बैठी हूं जब वह अपनी स्त्री को छोड़ने के लिये अपने घरको गया इधर मेहरनिगार सरदे के दाम उसकी कुटीपर रख आप घोड़ेपर सवार होकर चलीगई जब वह अपनी स्त्री को छोड़कर आया और उसपरी को न पाया तो चिल्लार२कर कहनेलगा कि हायपरी २ तू मुझको छोड़कर चलीगई स्त्री उसकी जिमींदारको लेकर आई कि उसको चलकर समुझावे यहां आकर देखा कि वह हाय२ करके एक स्त्री के लिये रो रहा है सब लोगों ने जाना कि इस पर कोई पिशाच या भूत चढ़ा है उसकी स्त्री और लड़कोंसे कहा कि इसकीऔषधिकरो नहीं तो यहसिड़ी होजायगा मेहरनिगारजो वहांसे चलीतो उसको एकजंगलमें रात्रिहुई उसमें बहुत से व्याघ्र लंगूरबन्दर आदिक थे जोकि मनुष्य को देखतेही खाजाते थे तब मलिकाने घोड़ेको तो एक वृक्षमें बांधदिया और आप एक वृक्ष पर चढ़ गई प्रातःकाल एकव्याघ्र आया और मेहरनिगार के घोड़ेको मारकर उठालेगया तब मेहरनिगार ने वृक्षसे उतरकर पीन

तो दृक्षसे बांधदी और आप पैदलचली और सायंकाल को एक नगरी में पहुंची उसमे बाहर निकलकर एक बड़ा भारी तालाब था उसके समीप एक दृक्षथा मलिका उसी वृक्षपर चढ़कर रात्रि भर बैठी रही प्रातःकालको उसनगरी के चौधरीने अपनी टहलुई को तालाबसे जल स्नान करने के लिये ले आने को भेजा तब उसने जलमें मेहरनिगार की स्वरूपकी परछाहीं देखकर जाना कि मेरीही परछाहीं घमण्डसे घड़ा लेकर पलटगई कि मैं ऐसी स्वरूपवानहोकर पानी भरूंगी जब चौधरी ने पूछा कि जललेआई तब उसने कहा कि वाह साहब मैं आपके स्नान करने केलिये ऐसीस्वरूपवान होकर तालाब से जलले आऊंगी चौधरीने फिर उसको धमकाकरभेजा कि अतिशीघ्रही जाकरजललेआ मुझे स्नान करने के लिये विलंब होताहै वह फिर तालाब परगई मेहरनिगारकी परछाहीं देखकर फिर लौटआई और पहिले कीतरह फिर कहनेलगी तीसरी बार फिर चौधरी ने धमकाकर भेजा और फिर पलट आई तब मेहरनिगार ने सोचा कि यहां से अबचलदेनो उचितहै नहीं तो अबकी अवश्य कुछ फसाद यह बरपा करेगी दृक्ष पर से उतरकर एक तरफको राहली और उसने फिर जाकरवही कहा तब चौधरीने उस को एक आईना दिया कि इसमें तो अपना स्वरूपदेख जब उसने आईने में देखा तो उसे काला स्वरूप दिखाई पड़ा तब चौधरीने कहा कि इसी स्वरूप पर कहती है कि मैं स्वरूपवान हूं उसनेकहा कि तालाब में तो चलकर देखिये तब वहां से चौधरीभी और दो चार मनुष्य समेत उस के पीछे २ तालाबपर आये तब उसने अपना स्वरूप वैसाही देखा जैसा कि आईने में देखा था बेहयाई से वह कहती गई मैं इस प्रकार से स्वरूपवान होकर ऐसा निकृष्टकार्य करूंगी तब लोगोंने कहा कि इस को कहीं भूत लग गया है इसकी औषधि करनी चाहिये और मेहर-निगार जो दृक्षसे उतरकरचली तो दूसरेदिन एकसाधुकी कुटीपर जा पहुंची और वह साधू चारसौ जमातका स्वामी था मलिकाको देखकर पूछनेलगा कितूकौनहै मेहरनिगारनेकहाकिमुलाहेकी बेटीहूं मेरेपिताने दृद्ध अवस्था में विवाह किया है सो मेरी सौतेली माताने मुझे निकाल दियाहै वह साधू बड़ा दयावन्त था मेहरनिगार का हाल सुनकर अति दुःखित हुआ और कहा कि मैंने तुझको अपनीबेटीबनाया तू साधुओं के भोजनकाभाग लगाकरदियाकर औरप्रसन्नताकेसाथमेरे स्थानपरबासकर यह कहकर उसको अपने भण्डारेका स्वामी बनायामेहरनिगार ईश्वर का धन्यवादकरके वहां रहनेलगी अब असदका दृत्तान्तसुनिये कि मेह-रनिगार को ढूंढ़ने को जोचला तो कईदिन के पश्चात् उस बादशाह के नगरमेंपहुंचा जो मलिका को जंगलमेंले गया था वहां भी ढूंढ़ढांढ़कर उस साधूके खेतमेंआयातो वहांहायपरी हायपरी जो उसकेमुखसे सुना

तो जानाकि यहांभी मलिका आईथी वहांसे उस जंगलमें पहुंचा जहां घोड़ेको व्याघ्र ने मारडालाथा और जीनको वृक्षमेंबांधकर मलिकाचली आईथी अमरूने जीनको उठाकर जनबीलमें रक्खा वहांसे चलकर उस चौधरीकेनगरमें आया और वहांसे चलकरसाधूकीकुटीपरआया फिरतेर पीछे को अपने कार्यको सिद्धकिया दूरसे जाकर देखा कि मेहरनिगार साधुओं को छांदा बांटरही है आप भी अमरू उनही के साथ जाकर बैठगया जब मेहरनिगार उसको भी छांदादेनेलगी तब अमरूनेरोकर कहाकि मैं साधू नहींहूं मैं आपकापैकर अमरूहूं और अपने अपराध करने के कारण इतना दुःख उठाचुका देशदेश की राखउड़ाता आता हूं कि इसजीनेसे मरनाउत्तमहै मलिकाने जो अमरूको देखातो लिपट कर रोनेलगी साधूने दौड़कर कहा कि बेटी ऐसी क्योंरोती हो कुशल तो है उसने कहा कुछ नहीं मेरा पिता यहीहै तबतो साधु उसे सम-झानेलगा कि ऐ मनुष्य पुत्रीकोकोई इसप्रकार से रखताहै अमरूने कहा क्याकरूं इतनासामान कहांपाऊंकि इसका विवाहकरूं साधुने पांचसौ रुपया देकर कहा कि अति शीघ्रही जाकर इसकाविवाह करदे कि इससे तू उऋणहोजावे अमरू रुपय और मेहरनिगारको वहांसेलेकरचला मार्ग में पहुंचकर रुपयेको जंबील में रखकर मेहरनिगार को बेहोशकरके एक गठरीमें बांधकर अपने सिरपर रखकर चलाकि इसको क़िलेमें पहुंचा कर आरामसे बैठे परंतु शहजादों नेभी सिपाहियों से खबरपाईथी किराचिको मेहरनिगार क़िलेसे निकलकर हमारे खेमेतक आकर मरदाना भेषधारण करके चौकीके घोड़ेको लेकर सवारहोकर चलीगई परंतु यह नहीं विदित होताकि किधर गई और अमरू भी उसके ढूंढ़ने के लिये गया है तब तो सब लोगों ने सलाह की कि इस पहाड़ के रास्ते के सिवा और कोई मार्ग इसदिशाको आनेलिये नहीं इसलिये चारसौ सेना उसपहाड़मेंजाकर छिपी रहे और बराबरसे डाक दूतोंकी बैठादीजावे कि जिससमय अमरू मलिका को लेकरआवे मलिकाको छीनलेवें और अमरूको मारडालें और जोजीता पकड़ लेआवे तो अतिही उत्तमहोवे और हमलोगों को उसी समय खबर देवे तो हम भी सेनालेकर पहुंचें और सहायता देवें कि उनको खटका न होवे और जिनलोगों को साथ लेजानेके लिये सुना था उनको आज्ञादी थी कि सदैव कमरबांधेतैयार रहें और घोड़ोंकी बदलीहुआकरे तथाच अमरू जब गठरीबांधेहुये पहाड़के समीप पहुंचा तो उसी पहाड़से चारसौ सिपा-हियोंने निकलकर चारोंतरफ से घेरलिया और अमरूको दुःखदेनेलगे तब अमरूने भी तलवार निकाली कि इतनेमें शहजादोंने जो अमरू के घेरेजाने की खबर सुनी तो उसीसमय सेनासमेत दौड़आये अमरूने जब शाहजादों को सेनासमेत आतेदेखा तब तो व्याकुल हुआ कि एक तो मैं अकेला दूसरे बोझालिये हूं इससे लाचारहूं यह कहकर ईश्वर २ करनेलगा कि इतने में

नक़ाबदार चालीस सहस्रसेना समेत आपहुंचा और जहांदार और जहांगीरकाबुली और जोपीनको लारकर हरमज़ वजाफरांसरकी सेनाको व्याकुल करदिया और बहुत से मारे गये और बहुत से भागगये तब शाहज़ादे जहांदार और जहांगीरकी लोथ को लेकर रोते पीटते अपने स्थानपर चले गये और नक़ाबदार अमरूको क़िलेतक पहुंचाकर अपने स्थानको जिधरसे आया था उधरी चलागया अमरू क़िले में जाकर मलिका को महल में करके अपनाअपराध क्षमाकरवाकर आरामसे बैठा अबइनका वृत्तान्तछोड़कर अमीरकाहालसुनातेहैं कि जबअमीर गुलिस्तानसेनिकलेतो चालीसदिनतक विक्षिप्त की भांति जंगल २ फिराकिया इकतालीसवें दिन सावधान होकर एक क़िले के निकट पहुंचे लेकिन क़िले का दरवाजा बन्द था और उसके चारोंओर देवघेरे हुयेखड़े थे अमीरने जाकर ऐसे जोरसे शब्द किया कि क़िला हिलने लगा और सुनने वाले बधिर होगये और जो सन्मुख खड़े थे भागगये और देवोंके सेनापतिने अमीरको देखकर पहिचाना और सन्मुख आके कहनेलगा कि हे बलबुद्धिनिधान आप परदेशक़ाफके बागोंकोउजाड़कर और देवों का नाशकरके यहां भी आपहुंचे मैं तुमको अच्छेप्रकार जानता हूं परंतु आज तुम मेरे बशमें आयेहो अब जीते न जानेपावोगे यहकहकर एक खड्ग अमीरके शिरपर मारापर अमीरने उसको रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि उसदेव का एक हाथ शिर अर्द्धकटि तक कटि के पृथ्वी पर गिरपड़ा और शेषसेना उसको देख डरकर भागगई और उसक़िलेमें गाव पावोंकी जातिके लोग रहते थे जिनके बादशाह का नाम तुलूया क़िले से बाहर निकलकर अमीर को बड़ी प्रतिष्ठासे सन्मुखहोकर अपने स्थानमें ले गया और बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की अमीरने मेहमानदारी के पश्चात् उससे पूछा कि तू मुझको मेरे स्थानपर पहुंचासक्ता है उसने कहा कि पहुंचा क्यों नहींसक्ता परंतु आसमानपरीने यह ढिंढोराफिरवायाहै कि जो कोई अमीर को दुनियामें पहुंचावैगा उसको मैं बड़ादण्ड दूंगी लेकिन मेरी कन्या के साथ आप अपना विवाह करैं तो यह भी स्वीकार है उसने कहा कि मुझे यहांके लोगोंका कुछविश्वास नहीं है इसवास्ते मैं विवाह नहीं करूंगा तब बादशाहने कहा अगर विवाह नहीं करते तो मेरे शत्रु रुखपक्षी को मारकर मुझे आनन्दित कीजिये इन दोनों बातों में से एकपर भी आप आरूढ़हों तो मैं आपको पृथ्वीपर पहुंचा कर आसमानपरी की बदनामी अपने ऊपर लेसक्ताहूं अमीर ने उत्तर दिया कि दूसरी बात मुझे मंजूर है चलके उसका स्थान मुझे दिखा तुलूने अपने आदमियों को अमीर के साथ करके आज्ञादी कि इनके साथ जाकर दूर से रुखका स्थान दिखाआवो अमीरने जाकर एक सफ़ेदकूचा देखकर पूछाकि यह कूचा कैसा है उन लोगों ने कहा कि यह उसी पक्षी का अण्डाहै जो तुलू बादशाहका शत्रुहै और उसीके डरसे बादशाह व्याकुलरहताहै विदित

हुआ कि इससमय वह कहीं चरने को गया है तब अमीर उसके अण्डे के समीपजाकर बैठरहे कि जब आवे तो पकड़ने की कोई युक्ति करें जब वह पक्षीआकर अपने अण्डेपर बैठा और उसके ऊपर परफैलालिया तब अमीरने अपने चित्तमें विचारकिया कि यहबहुत बड़ाबलवानहै इसका वशमेंआना दुर्लभहै और निश्चय है कि यह दुनियामें भी जाताहोगा इससे यही अच्छा है कि इनके पैर में लिपटकर जोरसे शब्दकरें तब यह व्याकुल होकर दुनियांकी तरफ उड़कर जावेगा इसीके साथ हमभी दुनियांमें पहुंचजावेंगे यह विचार कर अमीर उसकेपैर में लिपटगये और वह बहुत जोरसे उड़ा परंतु जब अखजर समुद्रके मध्यमें पहुंचा तो अमीरके हाथ में इस जोर से चोंचमारी कि अमीरका हाथ उसकी टांगसेछूटगया और दुनियाके पहुंचा ने की इच्छा रहगई और अमीरका नीचे पहुंचना था कि ख्वाजे अखजर और ख्वाजेअलयासने ईश्वरकी आज्ञासे हाथोंहाथलेकर पृथ्वीपर लेटादिया कि आरामपावे किसी प्रकार से दुःख न उठावे परंतु अमीर उसके दुःखसे बेहोश होगये अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन उसने अबदुलरहमान से पूछा कि देखो तो अमीर दुनियामें पहुंचगये या हमारे देशमें हैं अगर दुनियामें पहुंचे तो किसप्रकार से अबदुलरहमान ने रमलसे विचरकर कहा कि अमीर गावपावों के क़िलेतक गया था तो देखा कि तुलूबादशाह को देवोंने चारोंतरफ़ से घेरलिया था अमीरने सब को मारकर हटादिया तब बादशाह तुलूने क़िलेसे बाहरनिकलकर अमीर की बड़ी प्रशंसाकी और हाथपकड़ कर अपने क़िलेमें लेजाकर कई दिन तक मेहमानदारीकी तत्पश्चात् एकदिनअमीरने कहाकि तू मुझकोदुनियामें पहुंचासक्ताहै तब उसने आपकी आज्ञासुनाकर कहा कि मैं आसमानपरी की आज्ञाके विरुद्धनहीं करसक्ताहूं परंतुजोआपमेरी बेटीकेसाथविवाहकरें लेकिन अमीरने स्वीकार न किया तब उसने फिर कहा कि जो आप मेरी बेटीके साथ विवाह करना स्वीकार नहीं करते तो मेरा एकशत्रु रुखनाम पक्षीहै उसीको मारडालिये तो मैं आप को दुनिया में पहुंचादूंगा अमीरने दूसरी बात स्वीकार की और कहा कि तुम हमको उसका स्थान चलकर दिखलादेवो तथाच उसने अमीर को उसके स्थान तक पहुंचादिया परंतु अमीरने वहांजाकर विचाराकि यह दुनियाकी तरफ भी अवश्यजाताहोगा इससे इसीके पैरको पकड़ कर दुनिया की तरफ उड़कर चलेजावें जब वह आया तो अमीर ने उसका पैर पकड़ कर ऐसे जोरसे शब्द किया कि वह व्याकुलहोकर उड़ा और जब समुद्र अखजरमें पहुंचा तो ऐसेजोरसे अमीर के हाथमें चोंचमारी कि उसका पैर अमीरके हाथसे छूटगया और अमीर समुद्रमें गिरपड़े यह सुनकर आसमानपरी बहुतरोई और उसीसमयकरी-शहको आज्ञादी कि तू सेना लेकर गावपावों को जाकर मारडाल और तुलूबादशाहको पकड़ला और आपअखजर समुद्रकी तरफचली परंतु हम-

रत अखजर औ अलयास के सामने लज्जित होकर अमीर के समीप गई जब अमीर सावधान हुये तो हजरत अखजर से आसमानपरी का बड़ा गिला किया तब उन्होंने कहा कि अमीर बहुत गई थोड़ी रही अब न घबराइये अभी आसमानपरी आई थी परंतु हम लोगों को देखकर लज्जित होकर पलटगई तब अमीरने कहाकि आपलोग मुझको कृपाकरके क़िलेगावपासें पहुंचादेवो उन्होंने अमीर की आज्ञानुसार वैसाही किया जब अमीर वहां गये तो देखा कि सब नगर वीरान पड़ाहै एक पक्षी भी नहीं दिखाईपड़ता तब अमीरने हजरत से पूछा कि हजरत इसक़िले के सब मनुष्य कहां गये कि नहीं दिखाई पड़ते इसके देखने से तो चित्त व्याकुल होताहै ख़्वाजे खिज़रने कहाकि यह सब दुःख जो तुमपर पड़ाहै यह सब अबदुलरहमान ने आसमानपरी से कहा है सो उसीने करीमह को भेजकर इस नगर को फुकवादिया और जितने मनुष्यमिले सबको ढूंढकर मरवाडालाहै यहकह कर हजरतखिजर तो वहीं से अन्तर्ध्यान होगये और अमीर तीनदिन तक अकेले उसनगर में रहकर चौथेदिन एक जंगल की तरफ़ चले और सात दिनतक बराबर चलेगये आठवेंदिन एकनगरके क़िले में पहुंचे समीपजाकर देखा तो विदितहुआ कि मदायनका क़िलाहै और उसीप्रकारसे सबस्थान बनेहुये हैं परंतु मनुष्य कोई नहीं दिखाई देता तब तो बड़े आश्चर्य में हुये कि मनुष्य यहांसे कहां चलेगये वहांसे निकलकर मेहरनिगारके स्थान पर गये तो अपने हाथके दोहेतक लिखेहुये दीवारों पर देखे परंतु कोई मनुष्य न दिखाईपड़ा वहां से चलकर जबबागमें आयातो देखाकि एक देव बड़ा भारीखड़ाहै अमीरको देखकर हंसकर कहनेलगाकि ओ मनुष्य मुझ को इसक़िलेमें मनुष्योंके बसानेकीइच्छाहै और रातदिन इसी विचारमें रहता हूं कि इसक़िलेको मदायन एक क़िला दुनियांमेंहै उसी तरह से बनवाया है और मनुष्योंसे आबाद करूंगा और दोमनुष्य मैंदुनियांसे लायाहूं परंतु तू आपही आया इसकारण तुझको इस क़िलेका बादशाह करूंगा और सबदेश तुझकोदूंगा अमीरनेपूछा कि यह कौनदेशहै उसनेकहा कि क़ाफ़ तब अमीरने कहा कि तूमुझको भी जानता है कि मेरा नाम क्या है उसने कहा कि मैंने केवल आजही तुझको देखाहै किसतरहसे पहचान सक्ता हूं अमीरने कहा कि जुलजुलालक़ाफ़ मेराही नाम है और मेरा बल जगत में प्रसिद्धहै तब उसने पूछा कि अफरेत और उसके माता पिता को तूही ने माराहै अमीर ने कहा कि अफरेत क्या मैंने सब देवों का नाश किया है तो उसने कहा कि तो तू इसक़िलेका भी नाशकरेगा इसे मैं तुझको मार कर क़ाफ़के देवोंका बदलादेता हूं यह कहकर एक पत्थर लेकर अमीरके ऊपर देमारा तब अमीरने उसको रोककर एक हाथ ऐसा मारा कि वह समाप्त होगया वहां से चलकर एकदालान में गया तो वहां देखाकि दो लड़के अति स्वरूपवान बैठेहैं अमीरने पूछा कि तुम कौन होउन्होंने कहा

कि हम एक सौदागरके पुत्रहैं पिता हमारा मरगया है यह देव जिसका यह स्थानहै हमको उठाले आयाहै और इस दुःखमें डालदियाहै अब आप बतलाइये किआपकौनहैं अमीरनेकहा किमेरानामहमज़ाहै परन्तुलोग जुल जुलालक़ाफकोचकसुलेमान कहतेहैं और बलवीरतामें प्रसिद्धहूं दुनिया से आकर मैंने सब परदेक़ाफके देवोंका नाशकरदिया है और इस देवको जो तुमको उठालायाहै अभी मारकर आतेहैं अब तुम लोग निःसन्देहरहो तुम को हमदुनियामें पहुंचादेवेंगे इतनातुम्हाराभी कार्यकरेंगे तब तो वे लड़के अतिप्रसन्नहोकर अमीरके पैरोंपर गिरपड़े अमीर ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्याहै एकने कहाकि मेरानाम ख्वाजे आसोचहै दूसरे ने कहाकि मेरानाम ख्वाजेवहलोलहै अमीरने कहाकि ईश्वरकी कृपासे दुनियामें पहुंचकर एक को वज़ीरबनाऊंगा दूसरेको बख्शीकरूंगा उन्होंने कहाकि जब दुनिया में पहुंचजावेंगे तबवज़ीर और बख्शी कहलावेंगे पहिले तो हम लोगों का दुनियामें पहुंचनादुर्लभहै इसीदुःखमें मरजावेंगेअमीरने उनको समझाकर कहाकि ईश्वरकी कृपासे अतिशीघ्रही तुमकोलेकर दुनियामें चलेंगे इसदुख से छोड़ावेंगे यहकहकर उनकोसाथलेकर चला और क़िलेसेबाहर निकल-कर एकवृक्षके नीचे बैठकर उनलड़कोंकोभी भोजनदिया और आपभीखाया तबतो वे लड़के अति प्रसन्नहुये और दोघड़ी तकबैठेरहेकि इतनेमें एकदेव तलवार हाथमें लियेहुये अमीरके सम्मुखआकर कहनेलगाकि ऐ मनुष्य तू बड़ा दुष्टहैकि मेरेरक्षकको मारकर इन दोनों लड़कोंको लेकरचला जाताहै और मुझको न डरा तू मेरा नाम नहीं जानताकि सुमारदेवहै मुझसे अधिक बलवानदेव क़ाफमें नहींहै अमीरने पूछाकि यह क़िला मदायन के तुल्य तूने बनवाया है उसने कहा यह क्या जितने स्थान हज़रत सुलेमानके परदे क़ाफमें हैं वह सब मेरेही हाथके बनवाये हुयेहैं और ये कारखाने सब मैंने बनाये हैं अब तू बतला कि तेरा क्या नाम है और यहां क्यों आया अमीरने कहाकि आसमानपरी जो परीज़ादों के बादशाहकी बेटीहै उसका मैं पतिहूं और जुलजुलालकोचक सुलेमान मेरा नामहै और मेरी प्रबलता और बहादुरी तुम्हारे जगत् में प्रसिद्ध है तब उसने कहाकि क़ाफ के बागोंका आपहीने नाशकिया है परन्तु आपकी मृत्यु हमारे हाथमें थी वही आपको खींचले आईहै यह कह-कर एक तलवार अमीरके सिरपर मारी अमीर ने रोककर एक हाथ अकरब सुलेमानी का ऐसा माराकि उसके दो भागहोगये लड़कों ने जो अमीरकी बहादुरी देखी तो प्रसन्नहोकर कहनेलगे किवाह साहब आपतो बड़े बलवानहैं अब हम लोग आपहीके साथरहेंगे जहां चलोगे वहीं चलेंगे और आपही की आज्ञामें रहेंगे विदित होताहै कि आप अपने मामों के प्रतापसे ऐसे २ देवोंको मारसक्ते हैं नहीं तो मनुष्य को इतनी शक्तिकहां होसक्तीहै कि देवोंसे जीतसके हम अपना भी यही

नाम रक्खेंगे इसीप्रकार से बातें हसने की करतेहुये लड़कों समेत चले वे लड़केभी अमीरसे अतिप्रसन्नहुये तब अमीरने उसव्याघ्रकी खालजिसको किले स्याहकूममें माराथा दोभागकरके दोनोंको देकरएककाजहांदार कलन्दर दूसरे का जहांगीरकलन्दर नामरखकर दोनोंकी प्रतिष्ठासमान रक्खी जब अर्ध भूगोल पर पहुंचे तो अमीर व्याघ्रछाला बिछाकर लेट गये और ठण्डी२ वायुमें निद्राआगई थोड़ी समयमें सोगयेतब वे लड़के एक नदीपर जो उसी वृक्षके समीपथी जाकर स्नानकरने और खेलनेलगे अचानक एक देव जंगलसे निकला तो उन लड़कोंने कहाकि वह मंच याद्है चलो इसदेवकोमारें नदीसे निकलकर ललकारकर कहाकि ओ देव कहां आताहै अभी तेरा नाशकरदेता हूं तू जीतान जाने पावेगा हम ईश्वरके सेवकहैं तुम लोगोंको अच्छीतरह से जानते हैं यह कहते हुये उसकी तरफ चले और जब देखाकि यह देव कुछ हमारी बातों को सुनकर डरतानहीं और बराबर चला आताहै तबतो डरगये और दौड़कर अमीर को जगादिया और सब हालकहा अमीर ने देखाकि एक बड़ाभारी देव चलाआताहै जब अमीरके समीपआया तब अमीरने ईश्वर का नाम लेकर उसकोदेमारा और छातीपर चढ़कर एकखंजर मारकर दो टुकड़ेकरदिये और उसको उठाकर फेंकदिया और लड़कोंसे कहाकि खबरदार फिरकभी ऐसासाहस न करनानहीं तो व्यर्थतुम्हारा प्राण जायगा इनदेवोंके हाथसे किसीप्रकारसे न बचोगेयह कहकर सब दिशाकोचले पांचवेंदिन नदीके तीर एकनाव मालसे पूर्ण देखकर उसके समीपजाकर मल्लाहोंसे पूछा कि यहनाव किसकीहै और कहांजायगी उन्होंनेकहा कि यह नावसमीद सौदागर की है दुनियाकी तरफ जाती है अमीरने कहा कि हम तीनमनुष्यभी दुनियाको चलेंगे नावपर सवार कराओ जो कियायामांगो वह हमदेवें उनलोगोंने कहा कि आपलोगों को चढ़ाकर दुनियामें पहुंचाना यह मेरे आधीन नहीं हमारा ख्वाजी बैठाहै उससे जाकर यह बातचीत कीजिये वह आपलोगोंको नाव पर सवार करा लेवेगा तब अमीरने आकर ख्वाजे समीदसे वही बातें कहीं ख्वाजेने कहा कि किराया क्याहै आप मेरीबेटीके साथ बिवाह करलो हमआपको दुनियामें पहुंचा देवें और किसी प्रकारसे दुःख आपको न होने पावेगा अमीरने कानों पर हाथ रखकर कहा कि यह मुझसे न होगा तब तो सौदागर उसकी बातें सुन प्रसन्न हुआ और अमीरभी उठकर चले आये परन्तु उनदोनों लड़कोंने सौदागरसे कहा कि जोतुम हम लोगों काभी बिवाह कर दो तो हम अमीर का बिवाह तुम्हारी बेटी के साथ करवादें सौदागर ने कहा कि मुझे यहभी स्वीकार है तब लड़कोंने आकर अमीरसे कहा कि आपबिवाह क्यों नहींकरते कि एक स्त्रीभी पाते हो और सेंतमें दुनियामें पहुंचते हो वहां पहुंचकर कैसे २

मुझे भावोगे अमीरने कहा कि हम बिवाह न करेंगे उन लड़कोंने कहा कि आपको बिवाह करनापड़ेगा अमीरने कहा क्यातुम्हारी जोरावरी से बिवाह करना पड़ेगा अमीर उनकी बातें सुनकर हंसने लगे और कहा कि अच्छा जो तुम लोगोंको दुःख न होवे तब तो वे लड़के अति प्रसन्नताके साथ उस सौदागरके समीप दौड़गये और उससे कहाकि आप सब सामान बिवाहका इकट्ठा कीजिये अमीरको आपकी बेटीके साथ बिवाहकरना स्वीकारहै तो सौदागरने उसी समय सब सामान करके अमीरका बिवाह अपनी बेटी के साथ और उन दोनों लड़कोंका बिवाह एक दूसरेकी लड़कियोंके साथकर दिया तीनों मनुष्य अपनी २ स्त्रीके साथ रात्रिको सोये प्रातःकाल उठकर देखा तो आसमान परी अमीरके बगलमें सोरहीहै और वह सौदागरजो था वह अब्दुलरहमान है अमीर इसको देखकर बड़े आश्चर्य्यमें हुये और पहिलेएकबेर अमीर ने आसमान परीको तलाकदेकर छोड़दियाथा इसकारणअब्दुल रहमानने फिरसे आसमान परीका बिवाह अमीरके साथ करा दिया तब आस-मानपरी अमीरके पैरोंपर गिरकररोनेलगी कि मेराअपराध क्षमाकरो और अब्दुलरहमान भी अमीर के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि अब तक जो अपराध हुआ वह क्षमा कीजिये अब जो अपराध होतो दण्डदीजियेगा और आसमानपरी कहनेलगी कि अबआपको अवश्य दुनियाको भेजदूंगी इसीप्रकारसे प्रार्थनाकरके अमीरको लड़कों समेत गुलि-स्तानअरममें फिरलौटालेआये और छःमहीनेतक आसमानपरी के साथसुख उठायाकिये तत्पश्चात् एकदिनअमीरने आसमानपरीसे कहाकिअब मुझको तू दुनियामें भेजदे यहां बड़ादुःखहोताहै वहां जाकर अपने लड़केबालोंको देखकर चित्तको प्रसन्नकरूं आसमानपरी ने कहाकि ईश्वर की कृपासे कल प्रातःकाल आपको रुखसत करूंगी और यह तो बतलाइये कि फिर कभी यहां आकर अपना स्वरूप मुझको देखलावोगे यानहीं अमीरने कहा कि हे मलिकाआफ जिस प्रकारसे यहांसे मेहरनिगारके देखनेकी इच्छा होती है उसी प्रकारसे वहांसे तुमारेदेखने की इच्छाहोगी आसमान परी अमीर की बातों से अति प्रसन्नहुई और प्रातःकाल तख्त पर बैठकर उन्हीं चारों देवोंको जो सदैव अमीरको लेजायाकरतेथे बुलाकर पारितोषिकदेकर आज्ञादी कि अमीरको लेजाकर दुनिया में पहुंचा आवो और इनको किसीप्रकार से दुःख न होने पावे यह आज्ञा देकर सब उत्तम २ वस्तु तख्तपर रखवाकर अमीरने इच्छाकी कि तखत पर सवारहोकर चलें कि इतनेमें चारसौदेव और जिनजो शहपालशाह केपासथे रोतेपीटते आकाशसे आकर उतरे आसमानपरी यह हालदेखकर व्याकुल होगई और पूछनेलगीकि कुशलतो है उन देवोंने कहाकि शहपालशाह स्वर्ग बासहोगबा हम लोग आपके पास चलेआये यह सुनकर आसमानपरी

तखतपर से नीचे गिरपड़ी और सबकाफके वासी खाशपोशहोगये और शोरगुलहोने लगा रोते २ सबबेहोश होगये आसमानपरीने हाथ जोड़ कर अमीर से कहाकि जिसप्रकार से आप सत्तह वर्ष यहां रहे उसी तरह से चालीस दिन और रहिये जब मैं शहपाल की क्रिया कर्म से छुट्टीपाऊंतो आपको चालीसदिनके पश्चात्आकर विदाकरूंगी अमीरने कहा कि अच्छा तुमजावो मैं यहांरहूंगा जो तुमकहतीहो वहीकरूंगा आसमानपरी ने कहा कि ऐसा नहो कि तुम दुखित होकर कहींचले जावो और मुझको फिर दुःख उठानापड़े सलासलपरीको आपकेपास छोड़ जातीहूं जो चित्तनलगेतो इससे कुंजियां लेकरसुलेमानकेअजायब खाने में जाकर चित्त बहलाना यह कहकर शहपाल शाह की लोथ लेकर सेहरिस्तान नगरी की तरफ रवानाहुई वहां पहुंचकर सब छोटे बड़े जाकर इकट्ठाहुये और चालीसदिन तक मातम पुरसीकरकेकाले वस्त्र पहिनेरहे अमीरका हालसुनिये कि दोतीन दिनतो रहे चौथेदिन घबराकर बाहरजाने की इच्छा की तब सलासलपरी ने अमीरसेकहा कि जब तक आसमानपरी न आवे तब तक आप आजायबखाने सुले- मानी में जाकर दिल बहलाइये यह कहकर एक कुञ्जी अमीरको दी और कहाकि आप आजायबखाने सुलेमानीमें जाकर सैरकीजिये अमीर तालाखोलकर अन्दरगये तो अन्दरजातेही दरवाजा अंधियारे से बन्द होगया एक सायतके पश्चात् अंधियारा दूरहोगया तो एकबड़ा भारी मैदान दिखाई पड़ा तब उस मैदान की तरफ जो गया तो एक तखत जड़ाऊ दिखाईपड़ा और उसपर एक गुलदस्ता आधालाल और आधा सुर्ख रक्खा था अमीरने उठाकर जोसूंघातो बेहोश होगया और तखत पर गिरपड़ा स्वप्नमें देखा कि एक बड़ा भारी किलाहै और उसमें बड़ेर स्थान बनेहैं उसकिलेमें जो गयेतो देखा कि एकबन अति उत्तमहै और उसमें एकस्त्री युवाअति स्वरूपवानहै लिबास पहिनेहुये तखतपर बैठी है अमीर उसको देखकर अति मोहितहोगये तबउसनेचारसौ परियों को नाचनेगानेकी आज्ञादेकर हरएक प्रकारसे अमीरके दिलकोप्रसन्न किया इतनेमें उसके पिताकी आमद हुई तब उसने अमीरसे कहा कि अब मैं कहां जाकर छिपूं अमीरने कहा कि क्यों डरतीहै जिसप्रकार से बैठीहै उसी प्रकारसे बैठी रह पिता तेरा आता है तो आनेदे कुछ सन्देह न कर इतनेमें पिता उसका आया और अपनीबेटीको अमीरके पास बैठे हुये देखकर अमीरके कदमोंपर गिरकर सलामकिया अमीर ने उसको छातीसे लगाकर पूछा कि आपने मुझको क्योंकर पहचाना है उसने कहा कि मैंने बड़ोंसे सुनाथा कि जलजलालकाफ किसी समय में यहां आकर सुलेमानी अजायबखानेकी सैरकरेगा और बहुतसेदेवों का नाशकरेगा और मनुष्यको कहां शक्तिहै कि यहांआवेऔर देवोंका

नाश करे अमीर उससे अति प्रसन्न हुये और उसकी बेटी के साथ अपना विवाह किया और सात वर्ष तक अमीर वहां रहे इसीमें दो पुत्र भी हुये एक दिन अमीर अपनी स्त्री समेत उस नहरके तीरपर बैठे ठंढी २ हवा ले रहे थे कि उसने अमीर से कहा कि हे अमीर इसमें मेरी हवेल गिरी है तुम जाकर निकाल लेआवो तो बड़ी कृपाकरो अमीर उसमें डुब्बी मारकर जो निकले तो वही कोठरी है और सलासलपरी सामने खड़ीहै अमीरने व्याकुल होकर कहा कि मैं फिर उसी कोठरीमें जाऊंगा वहां मेरे दोपुत्रहैं उन्हीं में मेरा प्राण लगा है और सात वर्ष तक वहां रहा नहर में डुब्बी मारता न यहां आता सलासलपरी ने कहा कि किसके लड़के किसकी लड़कियां वह सुलेमानी अजायबात है और केवल एक पहर आपको गये हुआ चलिये सायंकाल हुआ अब भोजन कीजिये वह सब जादू थी उसमें ऐसी २ बातें दिखाई पड़तीहैं उन सबको अपने चित्तसे दूरकर दीजिये कलदूसरी कोठरीमें जाकरदेखिये इसप्रकारसे अमीरको समुझाकर महलसरायमें लेआई और भोजनकराकर चित्तको प्रसन्नकिया प्रातःकालउठकर अमीरअपने नित्यनेमय से छुट्टीपाकर एक दूसरी कोठरी में गये थोड़ीदूर जाकर मैदानमें एक तख्त पड़ा हुआ देखा और उसपर एक मूर्ति रक्खीहुई थी उसको उठाकर देखने लगे कि इतनेमें बेहोशहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े सुधबुध सब जातीरही उसी बेहोशीमें देखा कि एक बागहै और उसमें बहुतसी स्त्रियांजमाहैं और वही स्त्री जिसकी तसवीर देखकर बेहोशहोगये थे नाचरही है और स्त्रियां गा बजारही हैं और बहुतसी स्त्रियां एक तरफ़ जुदा खड़ीहैं अमीरको देखकर बल्ली ले ले दौड़ीं और अमीर भी अकरब सुलेमानी लेकरदौड़े तब वे सब व्याकुल होकर भागीं इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो न कहीं स्त्रियां न नाच न राग न वह बागहै सलासलपरी केवल सामने खड़ीहै अमीर उसेदेख कर बड़े आश्चर्यमें हुये और महलसराय की तरफ देखने लगे कि इतने में सलासलपरी भी उस कोठरी को बन्दकरके सामने आकर खड़ीहुई अमीर ने भोजनमंगवाकर खाया और रात्रिको आरामसे सो रहे तीसरे दिन तीसरी कोठरी की सैर को गये तो थोड़ी दूरजाकर राह भूलकरएक रेगिस्तान में जापड़े और सूर्य की गरमी से व्याकुल होगये और सात दिन तक उसीमें हैरान रहे आठवें दिन नईतरह का एकदेव दिखाई पड़ा जिसने अमीर को उड़ाकर कहसाके बराबर लेजाकर पृथ्वी पर छोड़ दिया इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि न कहीं रेगिस्तान है न देव है वही स्थान और सलासलपरी सामने खड़ीहै तब अमीरने सलासलपरीसे सब हाल कहा तब उसने कहा कि इनकोठरियों में इसी प्रकार की अपूर्व वस्तु विदित होती है कि मनुष्य देख कर व्याकुल हो जाता है परंतु किसी प्रकार से दुःख नहीं पाता इसीप्रकार से अमीरने उन्तालीस दिनमें उन्तालीस कोठरियों की सैर करके अपूर्व २ वस्तु देखकर चित्तको प्रसन्न किया चालीसवें दिन अमीर ने

सलासल परी से कहा कि चालीसवीं कोठरी को भी खोलदे कि इसके भी तमाशे को देखकर चित्तको आनन्द करूं उसने कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है इसको मैं नहीं खोल सक्ती हूं कि यह जिन्दान सुलेमानी है अमीरने धमकाया तब उसने फिर कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है परंतु अमीरने सहजोरी से उसके हाथ से सब कुंजियों को छीनकर उसको खोलकर भीतर गये और सलासलपरी आसमानपरी के पासदौड़ी गई और कहा कि अमीर ने सहजोरी से हम से कुंजी छीन कर चालीसवीं कोठी में गये हैं मेरा कहना नहीं माना रावी लिखता है कि जिस समय अमीर चालीसवीं कोठी में गये तो देखा कि हजारहों देव और परीजाद क़ैद हैं सबोंने आकर अमीरसे सलाम करके कहा कि जुलजलालकाफ आप कृपा करके हमलोगों को इसकारागार से छोड़ादूये अमीर ने पूछा कि क्योंकर तुमलोगों ने हमको पहचाना कि हमी जुलजलालकाफहैं उनलोगोंने कहा कि इसमें बहुत से हजरत सुलेमान के क़ैदी हैं और यहां का कैदी कभी नहीं जीताछूटता है परन्तु एकदिन हजरत सुलेमान ने अपने मुखारबिन्द से कहा था कि किसी समय में जुलजलाल काफ दुनियां से आकर हमारे कैदियों को छोड़ावेगा इस कारण हमलोगों ने जाना कि आपही हैं सो कृपाकरके ईश्वरकेलिये हमलोगोंको इसकारागारसे छुड़ाकर पुण्य लीजिये अमीरको उन सब पर दया आई तो एकतरफ से सबकी बेड़ियां काट२कर छोड़दिया तब हरएक अमीरके कदमोंपर गिर २ कर अपने २ स्थानको चले गये उसकेबाद आकस्मात अमीरके कानमें एकघोड़ेकी टापका शब्दपहुंचा तो अमीर उस तरफगये तब देखा कि एकबछेड़ा अति शोभायमान चित-कबरे रंगका चररहाहै अमीरको देखकर कूदने फांदनेलगा अमीर उसको देखकर अतिप्रसन्नहुयेवह घोड़ा पीछेकोकूदते२ अमीरको एकलातमारकर भगातब अमीरबेताबहोगयेफिर क्रोधितहोकर उसकेपीछे दौड़ेवहभागकर एक मकानमें घुसगया अमीर भी उसीके पीछे चलेगये परन्तु उस स्थान में अंधियाराथा तिसपरभी शजर चिरागहाथमें लेकरचले थोड़ी दूरके जाने पर एक शब्द आया कि हेस्वामी अब बड़ा दुःख हुआ अब आकर हमको इससे छुड़ाओ तब अमीर जो उसकी तरफ गये तो देखा कि आरनातीस और लानिसा बैठेहुये रोरहेहैं अमीरने कहा कि तुम ठहरेरहो अभी हम आकरतुमको क़ैदसे छोड़ाते हैं इसबछेड़ेने हमको लातमारीहै इसको मार कर अभी आते हैं तब लानिसा और आरनातीसने कहा कि यह आपको जानता नहीं था यह मेरा पुत्र है आप इसका अपराध क्षमा करें तब तो अमीर सन्देहमें होकर कहनेलगे कि तुम देव और तुम्हारी स्त्री परी घोड़ा क्योंकर तुम्हारा पुत्र है इसका वृत्तान्त मुझको सुनावो तब उन्होंने सब वृत्तान्त सुनाकर कहाकि इसका नाम हमने असकररक्खाहै फिर आरना-तीसने उसकोबुलाकर अमीरके क़दमोंपर गिराकर अपराध क्षमाकरवाया

फिर अमीरने उनको क़ैद से छुड़ाकर आज्ञादी कि तुम यहीं बैठे रहो हम आगे सैरकरके आतेहैं यह कहकर आगे जोगये तो देखा कि एकमकान में दो परीज़ादे उलटे टंगे हैं अमीरने उनकोभी छोड़ाकर आगेबढ़े तो देखा कि रहियानपरी और कमरचेहरा जिसके साथ अमीर ने विवाह किया था वहभी उसी स्थान में क़ैदहै और दुःखकेमारे व्याकुल है अमीर भी देखकर रोनेलगे तब उनको वहां से छुड़ाकर लानिसा और आरनातीसको भी साथलेकर कोठरीसे बाहर आये और उसरात्रिको आसमानपरीके बिस्तरे पर उनदोनोंको साथलेकर सोयेईश्वरकी कृपासे दोनों उसीरात्रिको गर्भिणी होगईं रावी लिखता है कि रहियानपरी से जो पुत्र उत्पन्न होगा उसका नाम दुरदुरपोश होगा और कमरचहरे के पुत्रका कमरजादा नाम रक्खा जावेगा और उसका बयान आगे लिखा जावेगा फिर अमीर उनदोनों परीज़ादोंको रुखसत किया और वे अपने स्थानकोगये अमीरने आरनातीस से पूछा कि अब तो मुझे दुनियांमें पहुंचादो उसने कहा कि हम तैयार हैं चलिये तब अमीर लड़कोंको लेकर तख़्त पर बैठे और वे दोनों कन्धे पर रखकर आकाशकी तरफ उड़े और पहर दिन रहे जाकर एक नदीके तीर उतरे तो वहां अमीर ने एक स्थान अति उत्तम बना हुआ देखकर अति प्रसन्न होकर उसमें जाकर वास किया फिर मालूमहुआ कि यह हज़रत सुलेमान का सीसमहल है और संसार में प्रसिद्ध है और इसमें रात्रि को दीपककी कुछ आवश्यकता नहींपड़ती इसीभांतिकी बातचीत करते२ चार घड़ी रात्रि रहे सबलोग सोगये लेकिन अशकर बनकी तरफ चरनेको चला गया उसको वहांरहना न प्रसन्न आया अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि जब आसमानपरीने चालीस दिनके पश्चात् शहपालशाहकी क्रिया कर्म से छुट्टीपाकर सब छोटे बड़ों को यथाउचित पारितोषिक और खिलअत देकर रुखसत करके गुलिस्तान अरमको आतीथी मार्गमेंसलासल परीने सलामकरके विनयकिया कि अमीरने सुलेमानी कारागारमें जाकर सब क़ैदियोंको छोड़दिया और मेरा कहना नहीं माना तब आसमानपरी ने कहा कि अति उत्तम किया अब हज़रत सुलेमान की आज्ञानुसार हो गया फिर उसने कहा कि आरनातीस और लानिसा कोभी छोड़दिया तब भी आसमानपरीने कहा कि अच्छा हुआ तब फिर सलासलपरीने कहा कि रहियानपरी और कमर चेहरे कोभी छोड़ दिया इस पर आसमानपरी ने कहा कि यह बुराकिया मेरे शत्रुओंको न छोड़ता तो अच्छा करता फिर पूछा कि क्याहुआ सलासलपरीने कहा कि मेरेसामनेतो इतनीहीबातेंहुईथीं और ईश्वर जाने क्या हुआ होगा इतने में दूसरी परीने आकर खबरदी कि आपके पलंगपर अमीर रहियानपरी और कमरचेहरेको साथ लेकर सोये और रात्रि को खूब मज़ा उठाया और उनको रुखसत करके आप लानिस- और आरनातीससे तख़्त उठवाकर दुनियां की तरफ गये यह सुनकर आसा

मानपरी क्रोधके मारे जलने लगी और कहने लगी कि मैंने तो खुद इच्छा कीथी कि अब अमीर को दुनियां में भेजदूं परन्तु उसने न माना और मेरी सेजपर मेरी सवतियोंको लेकर सोया तो अब मैंभी उनको अच्छी तरह से दुःखदूंगी जैसा वेमुझे जलारहेहैं यह कहकर सेना समेत तखतोंपर सवार होकर अमीरको ढूंढनेको चली जाते २ जब सीसमहलमें पहुंची तो विदित हुआ कि अमीरइसी में हैं लानिसा और आरनातीस की जो सौत आई थी तो आसमानपरीने पहिले उसी स्थानमें जहां वे दोनों सोतेथे जाकर दोनों को मारकरअपनेहौसिलेको पूराकियावहांसे उसीतरहरुधिरसे तलवारभरे हुये अमीरकेपासआकरइच्छाकीकि अमीरकोभी इसीतलवारसे मारे परन्तु करअपने तलवारछीनलिया और क्रोधितहोकर कहनेलगीकितूमेरीमाताहै नहींतोइसखंजरसे तेरी आंतोंको ढेरकरदेती तेरा इतनाबड़ामुंह कि मेरे सामनेमेरे पिताके सिरपर तलवार चला यहसुन आसमानपरी चुपहोरही और एक पत्रलिखकर अमीरके पलंगपर रखके गुलिस्तानअरमको चलीआई और एकदिन भी वहां न ठहरी प्रातःकाल जब असकर जंगल से चरकर आया तो अपने माता पिताको मराहुआ देखकर रोने लगा उनके दुःख में अपना प्राण देनेलगा इतने में अमीर भी जागउठे तो देखा कि लानिसा और आरनातीस के शिरकटे हुये अलग पड़ेहैं तब बहुतप्रकारसे असकरको समुझाकर कहा कि ईश्वरकी रचना अपूर्वहै उसमें किसीका कुछ बसनहीं है ईश्वर की आज्ञा में किसीका चारा नहीं जो मुझको विदित होता कि किसने माराहै तोमैं अभी जाकर उसको मारता तेरेमाता पिताका अवश्य बदला लेता अबतू अपना माता पित मुझीको समुझमैं तुझको अपने पुत्रकी तरह रक्खूंगा किसीप्रकार से दुःख न होने पावेगा तिस पीछे देखा कि एक पत्र पलंग पररक्खा हुआ है उसमें लिखाहै कि इसबार मैंने आपही इच्छा की थी कि तुम को दुनियां की तरफ भेजदूं और अपनी बात को पूर्ण करूं परंतु विदित होता है कि अभी आपका आबदाना क़ाफ से नहीं उठा न उठेगा और इन आपके दोनों कामोंने मुझको बड़े दुःख दिये एक तो मेरे पलंगपर मेरी सवतोंको लेकर सोनादूसरे मुझसे छिपाकर दुनियांकी तरफ जाना सो पहिले के बदले में मैंने इच्छा कीथी कि आपको भी आरनातीस और लानिसा की तरह एकबारगी मारडालूं परन्तु आपकी पुत्री करअह से मजबूर हुई कि आपके बदले में युद्धकरने को आरूढ़होकर मेरे हाथ से तलवार छीनकर मेरे साथ बहुत बुरीतरह से सम्मुख हुई और दूसरेके बदले में मैंने आरनिसा और लानिसाको मारकर अपना बदला लिया और अब आपको देखती हूं कि दुनियां को क्योंकर जातेहो कौन पहुंचाता है अमीर पत्रको पढ़कर सुन्नहोगये और सातदिवस तक वहीं लानिसा और आरनातीसके दुःखमें ठहरेरहे और आठवें दिन नेत्रोंमें आंसू भरकरकहने लगेकि अबहम दुनियांमें न जासकेंगे आसमानपरीके हाथसे बचकर जाना दुर्लभहै

विदित होताहै कि इसीक़ाफमें पड़ा रहूंगा और यहींमेरी मृत्युहोगीअग्र-कारनेसुनकरअमीरसे कहाकिआपक्योंमलीनहोतेहैंमैं आपकोदुनियांमेंपहुंचा दूंगा आसमानपरीसे न डरूंगाआप मेरीपीठपरसवार होकर चलियेअमीरने कहा कि इन दोनों लड़कोंको क्याकरूं उसने कहा कि इनकोभी अपनेसाथ सवार करलीजिये अमीरने दोछीके बनाकर उन दोनों लड़कों को बैठा कर रकाब की तरहदोनों तरफलटकाकर आपउसकी पीठ पर सवारहुये अग्र-कार अमीर को लेकर दिनभरमें हजार कोस लेजाताथा और एक सायतमें एक मंजिल तैकरजाता था इसीप्रकारसे नदीके पार होगया जब पृथ्वीपर पहुंचा तो अति शीघ्रता से दौड़ा चलागया पहर दिन रहे नूर पहाड़ पर पहुंचा तबवहांअमीर लड़कोंको लेकरउतरपड़े तोदेखा कि उसी खोहमेंसे हजरत खिजर और अलियास इन्हीं की तरफ चले आतेहैं अमीर दौड़कर उनके क़दमोंपर गिरपड़े और अपना वृत्तान्त कहकर कहाकि ऐ हजरत मैं आसमानपरीसे बहुत दुःखितहूं यहां अब मेराचित्त नहीं लगता उन्होंने कहा कि हे अमीर अब न घबरावो अब की अवश्य दुनियां में जाकर अपने बालबच्चोंको देखकर चित्तको प्रसन्नकरोगे चलोहमारी माता कि जिसका नाम बीबी आसफावासिफ़ है आपको बिदा करने को बुलाया है आपके ऊपर उन्होंने बड़ी कृपा कीहै तब अमीर दोनों लड़कों समेत पहाड़ पर गये तो देखा कि पहाड़पर एक मंडफहै और उसमें रोशनी आपही आती जातीहै उसके भीतर जोगये तो देखा कि एक वृद्धास्त्री हाथमें माला लिये हुये बैठीहै और ईश्वरकाभजन कररहीहै अमीर उसकोदेखकर बड़ेसन्देह में हुये और नम्रताके साथ प्रणामकरके उसके समीप बैठे तब बीबी आस-फाने सिरछातीसे लगाकर कहा कि ऐपुत्र मैंतेरे देखनेकी बड़ीइच्छा रखती थी बड़ी बात हुई कि तू मेरे पास आया और अपना सब हालसुनाया अब ईश्वरकी कृपासे अति शीघ्रही दुनियां में पहुंचेगा यह कहकर एकसवागज की कमन्द देकरकहा कि यहकमन्द मेरीतरफसे अमरूको देकर कहदेना कि यह कमन्द मेरे हाथ की बनी हुई है इसको अच्छी तरहसे अपने पास रखना इससे तुझको बड़ा सुख होगा और अनेक प्रकारके तमाशे यह दिख-लावेगी जब इच्छा करेगा तो इससे देवोंको बांधलेगा यहहर प्रकार से सहायक होगी और जब इसको मंत्र पढ़कर फूंकेगातो हजार रंगकी होजावेगी यहकहकर फिर कहा कि आज तुम हमारे यहां रहकर मेहमानदारीखावोअमीरने अंगीकारकिया प्रातःकाल जब अपने निमाज पढ़नेसे छुट्टीपाई तो ख्वाजा खिजरने कहाकि ऐ अमीर इसघोड़ेके पैरों में नाल अवश्य चाहिये नहींतो यह काफके जंगलोंको तैनकर सकेगा यह कहकर अग्रकारके दोनों पर काटकर उसीकी नाल लगाकर कीलें जड़ दिया अमीरने कहा कि ऐ हजरत यह परकी नाल कब तक रहेगी इससे क्या पुष्टताहोगी ख्वाजेने कहा कि यहआपकी जिन्दगीभर इसके

पैरोंसे न छूटेगी और जब इसके चौथे पैरकी लाल गिरे तो जानना कि अब हमारी अवस्था समाप्तहुई अब अवश्य हमारी मृत्युहोगी और एक जीन अमीरको देकर कहा कि यहजीन इसकेऊपर कसो कि सिकन्दर बादशाहने सात देशोंका कर लगाकर बनवाया था तब अमीरने लेकर उसजीनको अशकरपर कसकरचलनेको आरूढ़हुये औरहजरतकी कृपा पर बहुत ईश्वरका धन्यवादकिया अब थोडासाहत्ताल आसमानपरीका सुनाता हूं जिस समय आसमानपरी सीसमहलसे गुलिस्तान अरमको पलटकरगई तो कईदिनों के बाद सुर्खपोशाक पहिनकर तख्तपर बैठकर अबदुलरहमानसे पूछा कि कुछ हमजाका हालबतावो कि कहांहै और क्या कर रहा है उसने रमल में विचार कर कहा कि अमीर जाते २ पहाड़ नूर पर पहुंचे और वहां से बीबी आसफा की इच्छाहै कि अमीर को दुनियां पर भेजे यह सुन कर आसमान परी क्रोध से लाल होगई और कहने लगी कि वह मेरी सवत होकर मेरे पुरुष को बिना मेरी आज्ञा दुनियांको भेजने की इच्छा रखती है यह कहकर तख्त मंगवा कर सवार होकर हवा की तरह से जाकर कोहनूर कोघेर लिया और तलवार लेकर बीबी आसफाके सन्मुख जाकर कहा कि क्यों बीबी तुझे कुछ मेरा डरनहीं है कि तूने बिनामेरी आज्ञामेरे पुरुषको दुनियां की तरफ भेजने की इच्छाकी तुमनहीं जान्तीहो कि मैं बड़ी क्रोधवन्तहूं कि मैंने अपने हठोंको थोड़ीसी बातमें बेहुरमतकर डालाहै और तुमको तो मैं कुछ समझतीही नहीं बीबी आसफाने उसकी इस प्रकार की बातें सुनकर कहा कि वो पगली क्या बकती है मैं तुझे क्याजान्तीहूं तू कुछ मेरा कर सक्ती है जातेरा शरीर भस्म होजावेगा जो तू ईश्वर से नहीं डरती है और मुझ से ऐसी २ बातें करती है बीबी आसफा ने ज्योंहीं यह मुखसे कहा कि उसके शरीर से अग्निकी लपकें निकलनेलगी और वह चिल्लाने लगी अबदुल रहिमान ने दौड़कर कारशिया से कहा कि तू अति शीघ्रही जाकर अमीर के पैरोंपर गिरकर विनय कर कि वे आ- समानपरी का अपराध बीबी आसफा से कहकर क्षमाकरावें नहीं तो थोड़ेही कालमें आसमानपरी जलकर खाक होजायगी तब वह जाकर अमीर के पैरोंपर गिर पड़ी और कहने लगी कि बाबाजान ईश्वर के लिये माताका अपराध क्षमाकरो और यह मेरा कहना करो अमीरने जाकर आसफा बीबीसे उसका अपराध क्षमाकरने के लिये प्रार्थनाकी तब उसने अमीर के कहने से अपनी वज़ू का पानी आसमान परी के ऊपर छिड़का तब उसका प्राणजलने से बचा और व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी तब परियोंने उसको तख्तपर लेटालिया और गुलिस्तान अरम को उठालाई फिर बीबी ने उसदिन भी अमीरको नजाने दिया और प्रातःकाल होतेही हजरत खिजर से कहा कि तुम जाकर हमजा

को रुधिर की नदीसे पार कर आवो इतनी मेरी आज्ञा मानों फिर अमीर ने बीबी से प्रणाम करके लड़कों को छींकोंमें लटकाकर आप अश्व-कार पर सवार होकर हजरत खिजर के साथरवाना हुये और चौदह पन्द्रह कोसतक चलेगये तब नदी दिखाई पड़ी कि उसका दूसरा कि-नारा किसी को न दिखाई पड़ता था और देखने से लोग व्याकुल हो जाते थे हजरत खिजर ने अमीर से कहा कि रुधिर की नदी जो तुम सुनते थे वह यही है तुम लोग अपने नेत्रोंको मूंदलो इस तरफ न देखो तब अमीर ने लड़कों समेत अपनी २ आंखों को बन्दकर लिया हजरत खिजर ने सातपरग जाकर कहा कि अब आंख खोल दो तब अमीर ने नेत्रों को खोलकर देखा तो विदित हुआ कि नदी से पार उतर आये और हजरतखिजर नहीं हैं लिखने वाला लिखता है कि अमीर चा-लीसदिन तक बरा बर कूच करते चले गये एकतालीसवें दिन अखजर नदीपर पहुंचे तो देखा कि एकअपूर्वप्रकार की नदीहै कि कोईदूसरा किनारा नहीं विदितहोता और डरकेमारे कोई वहां एकसायत नहीं ठहरता तब तो अमीर किनारे२ दसदिन तक चलेगये तब एक क़िला दिखाईपड़ा तो वहां ठहरकर उसक़िले को देखने लगे,विदित हुआ कि यह गबसाका क़िलाहै इतनेमें एकमनुष्यने अमीरको देखकर पहचाना और जाकर अपने बादशाह से अमीर के आने की खबर की तब वह बादशाह जिसका समरात नाम था क़िलेमे बाहर निकल आया और अमीरके क़दमोंपर गिरकर अमीरको अपने क़िलेमें लेजाकर कईदिनों तक मेहमानदारी की तत्पश्चात् अमीरने एकदिन उससे कहा कि तुम हमको इस नदीके पार उतार सक्ते हो उसने कहा कि हम क्यों नहीं उतारसक्ते परंतु जो आप मेरी बेटी आरदाना के साथ बिवाह करें तो आपको मैं इसनदी से पार उतारदूं अमीरने इनकार किया परंतुउन दोनों लड़कों ने समरातशाह से कहा कि तुमबिवाह का सामानकरो हम अमीरको राजीकरलेवेंगे बादशाहने अपने सरदारों को बिवाहके सामान इकट्ठा करनेकी आज्ञादी और लड़कोंने अमीरको समझाकर उसके साथ बिवाहकरवा दिया और रात्रिको जब वह अमीर के साथ पलंगपर सोई तो उसनेचाहा कि अमीरकेगलेमें हाथडालकर बोसालेवें कि अमीर ने एकऐसा घूंसामारा कि उसके अगलेदांत टूटगये तबवह रोतीहुई अपनी माताके पासजाकर सब वृत्तान्त कहा तब बादशाहने उनदोनोंलड़कोंको बुलाकरकहनेलगा कि यहअमीरने क्याकिया कि वृथा मेरीबेटीका दांततोड़डाला उनलड़कोंने कहा कि आपनहींजानते हमारे देशमें यही रस्महै कि पहिलीरात्रिको जब स्त्री पुरुषकेसाथ सोतीहै तब दो दांत तोड़कर दूसरेदिन आधीनदी में जाकर उसकेसाथ भोग करते हैं कि सदैव यादगारी रहै तब उनदेवोंने जाना कि सत्य होगा इनके

देशमें ऐसेही होताहोगा उसीसमय एकनाव मंगवाकर सब सामान रखवाकर अपनी लड़की को सवार करवाकर लड़कों से कहा कि तुम जाकर अमीरसे कहो कि वेभी सवारहोवें तब वे दोनोंलड़के अतिप्रसन्न होकर अमीरके पास आकर यह सब वृत्तान्त उनसे कहकर कहा कि चलिये नावपर सवार हूजिये अमीर लड़कोंकी बातें सुनकर हंसनेलगे और साथजाकर सवारहुये जब नाव आधी नदी में पहुंची तब आरदाना ने अमीरके साथ सोनेकी इच्छाकी तब अमीरने उसकेहाथ बांधकरनदी में डालदिया और वह नदीमें डूबगई और मल्लाहों सेकहा किअतिशीघ्र ही नावको पारकरो नहीं तो तुमसबको मारडालूंगा मल्लाहों ने डरके मारे अति शीघ्रही चारपांच पालें मस्तूल पर उड़ाकर अमीरकी आ-ज्ञानुसार पारकिया अमीर लड़कों समेत पृथ्वीपर उतरकर घासकीखा-लपर बैठकर कलिया खिजरको निकाल कर दोनों लड़कों को भी दिया और आपभीखाके सावधान होकर वहांसे आगेको चले जो क्षुधालगी तो कहा कि आज तो कोई चटपटी चीज भोजन करनेकी इच्छाहोती है इससे तो अब मनभर गयाहै यह कहतेहीथे कि सामनेसे एक हिरन निकला अमीरने उसको मारकर कबाबबनाकर आप खाया और लड़-कों कोभी खिलाकर उसीस्थान पर रात्रिको सोरहे प्रातःकाल उठकर सवार होकर रवाना हुये॥

वृतान्त ख़्वाजे अमरू का॥

लेखक लोग यों लिखते हैं कि जब अमरू को डेढ़बर्ष क़िले देवदूमें व्यतीत हुये तो एक दिन अन्तरदेवदू बादशाह क़िलेसे पूछा कि यहांसे समीप और कोई किला है कि जहां चलकर थोड़े दिन आराम से रहें उसने कहा कि यहांसे बीस कोस पर एक क़िला तलवावहर नामे पहाड़ पर है तीन तरफ उस क़िलेके नदीहै और केवल एक दिशा को मार्गहै और वहभी ऐसाछोटाहैकि किसीप्रकारसे दोमनुष्यबराबरनहीं जासक्तेहैं औरसिवाय इसके जो एकमनुष्य ऊपरसे पत्थर ठेलदेवेतो हजारों मनुष्य दब कर मरजावें और जो बादशाह नौशेरवां आपही जाकरउस क़िलेको लियाचाहै तो केवल लज्जितहोने के और कुछ न पावे लज्जित होकर पलट आवे तब अमरूने कहा कि उस क़िले का लेना कुछ दुर्लभ नहीं परंतु यहांसे जाना दुर्लभ है और हम अकेले भी नहीं जासक्ते हैं तब अन्तरदेवदू ने कहा कि इस क़िले में एक सुरंग है उसीमें होकर निकलजाइये तब अमरूने मलिकाआदिको सवारियों पर सवारकराके सेना समेत उसी सुरंगसे निकलकर क़िले तलवावहर की राह लेकर सबको प्रसन्नकिया और दूसरेदिन पहररात्रि व्यतीतहुये क़िलेकेसमीप पहुंचा फिर अमरू क़िलेके भीतरचलागया परंतु कोई युक्ति न करपाई कि क़िलेमें अपना बसपावे और विचारा कि युद्धकरनेसे भी हाथ न

आवेगा तब तो लज्जितहोकर कहनेलगा कि अमरू तूने बड़ी नादानी की कि बिनाक़िलेकेलिये गोतू सबछोटेबड़ोंको इसक़िलेके समीप ले आया जो अभी हरमजव जाफ़रांमर्जजो सेनालेकर आवे तो इथा सबको मार कर मलिका को पकड़लेजावे इससे कोई युक्ति विचारना उचित है कि इस क़िलेको अपने आधीन करूं विचारते २ यह विचार में आया कि चारसौ पहलवानों को संदूकोंमें भरकर आपसौदागर बनकर क़िले के सामने ऊंटोंमें लादकर जाकर उतरे तब क़िलेवालों ने दीवार पर से पूछा कि तुमकौन हो कहांसे आयेहो और कौनवस्तु लेआयेहोअमरू ने कहा कि मैं सौदागर हूं नौशेरवां ने जुलमात की तरफ़ असबाब खरीदने को भेजाथा वहींसे लेकर आयाहूं और मेरेपास नवीन२ प्रकार की वस्तुहैं कि आजतक किसीनेन देखाहैं न देखेंगे यहसबहाल सिपाहियों ने जाकर बादशाह से कहा तब उसने हामाननामीअपनेवज़ीर को आज्ञादीकि तुमजाकर देखोकौनहै और कहांसे आताहै औरक्यार वस्तु लायाहै उसने अमरूके खेमेके पास आकर कहा कि जाकर अपने स्वामीसे कहो कि बादशाह का वज़ीर आपकी भेंटको आया है और बादशाह ने तुमको बुलायाहै तबअमरूने सुनकर कहा कि कहदेवइस समय आराम से हैं आनेकी फ़ुरसत नहींहै वज़ीर बेचारा दोघड़ीतक खड़ारहा पीछेको कहा कि अच्छा भाई कहदेना कि इससमय मैंजाता हूं फिर आकर मुलाक़ात करूंगा जो बादशाह कहेगा वह आकर कहूंगा जब अमरूने सुना कि अबजाताहै तब कहला भेजा कि कहदेव अबजागेहैं आपठहरिये थोड़ीसमयकेपीछे अमरूने अपने खेमेमें बुलाकर अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख होकर अपने पास बैठाया उसने देखा कि इद्ध मनुष्यमसनदलगाये हुये अपने सरदारोंसमेत बैठाहै और मोमकी बत्तीजलरहीहैं उसनेजाकर सलाम किया परंतु अमरू ने पहिलेही से उसकाहाल जानलियाथासलामकाउत्तरदेकरपूछाकिआपकौनहैंऔर आपका नाम क्या है हामान ने कहा मैं नसमैदशाह का वज़ीरहूंऔर हामान मेरा नामहै अमरूने पूछा कि क्या तू रहिमानका बेटाहैउसने कहा जी हां फिर पूछा कि वह कहांहै उसनेकहा कि मेरे तो माता पिता दोनोंका बैकुण्ठ बास होगया यह सुनकर अमरू रोनेलगा और हाय२ करके कहनेलगा जब भाई मरगये तो अब मैं जीकर क्याकरूंगा यहकह खञ्जरलेकर पेटमारने को आरूढ़हुआ तब उसने हाथसे खञ्जर छीनकर पूछा आपका नाम क्या है अमरूने कहा कि ख़ाजेशहपालपुत्र कारबल मेरा नामहै और तेराजन्म उन्हीं दिनों में हुआथा जिस समय मैं नौशेरवां ने मुझको जुलमात को असबाब खरीदने के लिये भेजाथा और अब जोआयातो यहतूने सुनाई कि भाईका बैकुण्ठबासहुआउसने कहा किईश्वरकीमहिमाअपूर्वहै उसमें किसीकीकुछ शक्तिनहींजो होना

था वह होगया अब सब्र कीजिये इस दुःख को अपने शिर पर रखिये और क़िले में चलकर आराम कीजिये तब अमरू ने सब असबाब आदमियों से उठवाकर उसके साथ क़िले में चला राह में वज़ीर ने अमरू से पूछा कि कौन२ उत्तम वस्तु आप लेआये हैं अमरू ने कहा कि सब वहां की उत्तम वस्तु हैं परंतु दो स्त्रियां ऐसी स्वरूपवान लेआया हूं कि लोग देखते ही मोहित होजाते हैं हामान ने कहा कि हमारा बादशाह भी आशिक़ मिज़ाज है जो स्त्रियों को उसके समीप भेज दीजिये तो अति प्रसन्न होगा बहुत कुछ आपको देवेगा अमरू ने क़िले में जाकर दोनों यारबच्चों को सौगात समेत डोलियों में बैठाकर हामान के पास भेजदिया तो वहां अति प्रसन्नता के साथ अपने बादशाह के समीप लेगया बादशाह भी देखकर अतिप्रसन्न हुआ और शराब मंगवाकर उन्हीं के हाथों से लेलेकर पीने लगा जब दो तीन गिलास पीचुका तब उन्होंने दारू बेहोशी मिलाकर दी तब वह बेहोश होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और इधर अमरू ने पहलवानों को संदूक से निकालकर पहिले तो हामान को पकड़कर बांधलिया ततपश्चात् सब क़िले वालों को मारने लगा और जिसने अपने प्राण की रक्षा चाही उसे मुसल्मान करके छोड़दिया और जब बादशाह भी होश में आया तो उसने भी अपने प्राण की रक्षा के लिये मुसल्मान होना अंगीकार किया तत् पश्चात् हामान ने भी देखा कि अब तो बादशाह भी मुसल्मान हुआ और जो मुसल्मान नहीं होते तो प्राण नहीं बचता लाचार होकर मुसल्मान हुआ और प्रातःकाल होतेही अमरू ने क़िले पर सब प्रकार से अपने प्रबन्ध करके अपनी आज्ञानुसार क़िले को सजाकर शामियाना खड़ा करके आप शाहाना रूप धारण करके आराम के साथ बैठा अमरू के आने के पश्चात् शाहज़ादों को खबर मिली कि अमरू क़िले देवदूं को छोड़कर तलवाबहर में जाकर सब क़िले वालों को मुसल्मान करके अपना प्रबन्ध करके क़िला बन्द है यह सब हाल बादशाह नौशेरवां को लिखकर भेजकर आपसेना समेत जाके क़िले तलवाबहर के समीप खेमा गाड़कर पड़ा अब थोड़ासा वृत्तान्त बादशाह नौशेरवां का लिखते हैं दरबार में बैठाथा कि हरमज़ और फ़राममर्ज़ की विनय पत्री पहुंची और समाचार सुनकर कहने लगा कि यारो कोई युक्ति ऐसी करो कि अमरू पकड़ा जावे या मारा जावे कि हम सबोंको उस पापी से आराम मिले बख़तक ने कहा कि आप तो मेरा कहना नहीं मानते बुज़रुचमेहर के कहने पर चलतेहैं इसी कारण वह कार्य्य सिद्ध नहीं होता और वह मज़हब के विचार से आपको ख़राब कर रहा है कि हमज़ा काफ़ में कब मरगया है परन्तु बुज़ुरुचमेहर के कहने से जीता है अच्छा आप मेरी और बुज़ुरुचमेहर की परीक्षा लीजिये देखिये कौन सत्य वक्ता है बादशाह ने कहा कि यह तुमने अच्छी बात

कही उसी समय दोनों से रमल में विचारवाकर कहा कि अपने २ विचार को लिख कर सुनाओ संयोग से जिस समय यहां विचारा जाता था उसी समय में अमीर को दो सौ कोस की ऊंचाई से रुख-पच्ची ने अखुजरनदी में फेंकदिया था बख़तकन विचारमें यही लिखाकि अमीरकोएकपच्चीने दोसौकोसकी ऊंचाईसे एकनदीमें फेंकदिया है वह उसीमें मरगया होगा और बुजरुचमेहरने लिखा कि अमीर कुशल से थोड़ेदिनोंके पश्चात् आकरसंसार में सबसे मिलते हैं पहिलेबख़तक का विचार सुनायागया तब बादशाहने ख़ाजे से पूछा तो उसने कहा कि सत्यहै अमीरको रुखपच्ची ने अखुजर नदी में फेंक दिया परंतु हजरत खिजर और अलियासने हाथोंहाथ उठाकर पृथ्वीपर रखदिया है जब ख़ाजे का विचार सुनायागया तो बादशाह ने बख़तक की तरफ देखा उसनेकहा कि हमशाहै कहांजो दुनियामें आवेगा और आपहीअपनी बुद्धिसे विचारकीजिये कि दोसौकोससे गिरकर मनुष्यका प्राणबचसक्ता है और क्राफतो दूरहै आपएक गाभिन गऊमंगवावें हमदोनों आदमी विचारकर बतलावें किसरंगका बच्चा उसके पेटमें है फिर आप उसका पेट फड़वाकर देखें परंतु उसमें यह शर्त्त है कि जो बुजरुचमेहर का विचार सत्य होवेतो आपहमको उनकेहवालेकरदेवें जो उनकाजीचाहे वह करें और जो हमारासत्य होवे तो जो हमारा जी चाहै वह हम करें बादशाह ने ख़ाजे से पूछा कि यह क्या कहता है उसने कहा कि अच्छातो कहताहैपतिज्ञादेनेम कबमैंडरताहूंतबउसीसमय एकगाभिन गऊ मंगवाई गई बख़ुतकन विचारकरकहा किइसके बच्चेका स्याहरंग और सुपेदहै बुजरुचमेहर ने कहा कि रंगतो स्याह है परंतु माथा भी कालाहीहै और चारों पैर सुपेद हैं गायका पेटफाड़कर बच्चा निकाला गयातो संयोगसे झिल्ली उसके माथेपर आगईथी इससे माथासुपेदविदित हुआ और सबलोग कहनेलगे कि बख़तक बाजीजीता और बुजरुचमेहर हारा अबवह इसको मारडालेगा तब बख़तकने बुजरुचमेहरको अपने स्थानपर लेजाकरइच्छाकी कि इसकोमारडाले परन्तुउसकी छीनेमना-किया तब उसकाप्राणबचा परंतु उसपापीने एकप्रकारकीसलाई उसके नेत्रोंमेंफेरकरअन्धाकरदियासंयोगसेउसीदिनसादजरी औरआसादजरी तुकशनौशेरवां की मुलाक़ातकोआये उसगायकेबच्चेको देखकर पूछाकि यहक्याहैऔर यहकिसका बच्चाहै तबबादशाहने सब वृत्तांत उससेकहा तबसादानजरीने खंजरकी नोकसेउसके मस्तककी झिल्लीकोलडाली तब सबोंनेदेखाकिमस्तकभी कालाहै सुपेदीका कहीं एकदागभी नहींहैबुज-रुचमेहरकाकहनासत्यहैबादशाहनेउसीसमयबख़तककोबुलाकरकहाकि तूबाजीहारगया और बुजरुचमेहरजीता अबउसकोहमारेसन्मुखलेआवो उसनेकहाकि मैंनेतो अपनी बाजीजातीजानकरउसको अन्धाकरदियाहै

बादशाहने हाथ पटककर कहा कि हेपापी तूने बड़ाबुरा काम किया कि ऐसे मनुष्यको अन्धाकरदिया तब उसको खंभेमें बंधवाकर इतनेजूते लगवाये कि उसका शरीर धूसउठा उठनेबैठने की शक्ति न रही और आप बादशाह सवारहोकर बखुतक के घरपर जाकर बुजरुखमेहरको प्रतिष्ठाके साथ सन्मुखहोकर कहा कि ख़ाजे तुमने बातजोगीती थी परंतु होनहार से धोखा पड़गया अब जो कहिये वह दण्ड बखुतक कोदूं ख़ाजेने कहा कि उसे दण्डदेने की कुछ आवश्यतानहीं है मेरा भाग्यमें जो लिखाथा सो हुआ ईश्वर की होनहार में किसीका चारा नहीं हमजा जब आवेगा तो दोवस्ते वहांलेलेने आवेगा उसीसे हमारे नेत्र फिर अच्छेहोजावेंगे और मैंफिर उसीतरहसे देखनेलगुंगा अबमुझको आप आज्ञादेवें तो जबतक हमजा नआवें तबतक बसरामें जाकररहूं और आपसे कहे जाताहूं कि सत्रह वर्ष तक आपको सब प्रकार की बुराइयों से बचाया अब देखियेगा क्या होताहै निश्चय करके जानिये कि आप अब अमरूके हाथसे बड़ा दुःखउठावेंगे और संसारमें बदनाम होंगे और जिस दिन हमजा आवेगा तो सीधा आपही के पास चला आवेगा और एक घोड़ा उसीदिन धावामारेगा और दूसरे दिन असीर आपको पराजय करके बड़ादुःख देवेगा इतना कहकर ख़ाजा चले गये और वहांसे बसरा की ओर गया और बखुतक जो जूतियोंकी मारसे बेहोश होगयाथा बादशाहने उसको मकानसे बाहर फेंकवादिया और जब उसको होश हुआ अपने स्थानको चलागया और बहुत दिन तक अपनी औषधि करतारहा और जब अच्छाहुआतो फिर दरबारमेंगया नौशेरवांने कहा इसको सभामें आनेकी आज्ञा किसनेदी हमारे सन्मुख यह क्यों आया जब सभासद लोग उसकी सदूकरने लगे तब बादशाह ने सभामें रहनेकी आज्ञादी तब वह कुछदिन तो चुपचापरहा पश्चात् फिर बादशाह को अमरू से लड़ने की सम्मति देने लगा निदान धीरे २ बादशाहके भी चित्तमें यह बातआईकि बखुतक सत्यकहता है बिना मेरे गये यह कार्य्य सिद्धनहोगा इसीप्रकार अमरू सबकोदुःखदिया करैगा यह विचारकर एकलाख सवार और पैदललेकर तलवाबहरके किलेकी ओर यात्राकी जब उसके निकट बादशाहपहुंचातो हरमज व जाफ़रासमर्ज व कौपीनआदिक राजकुमारोंनेअगवानी मिलकर बादशाहकोले जाकर खेमेमें उतारा और सब बहुत प्रसन्न हुए रात्रिको सभामें बादशाह ने कहा कि इतने दिनोंसे तुम सब यहां हो परंतु एक मनुष्य को जीत न सके अब देखो मैं उसका और उसके साथियोंका क्या२हाल करताहूं तब सभासद लोग एक मुख होकर कहने लगे कि आप और हम में बड़ा अन्तर है आपके सन्मुख हमारी क्या गणनाहै यह सुन रात्रिको तो बादशाह सोरहा प्रातःकाल उठकर नित्यकर्मकर सेनाको साथ ले

युद्धकरनेको आरूढ़ हुआ और आप अकेला जाकर क़िलेके चारों ओर फिरतलगाकर देखने लगा तो उस समय अमरूशामियाने के नीचे जवाहिर की कुरसी पर बैठा था और सब सरदार लोग बराबर से खड़े थे जिनके हथियारोंमें जवाहिर जड़े थे और मुरचों पर हर एक मनुष्य अपने २ कार्य्य पर आरूढ़थे अमरूने तीर बादशाह की तरफ घुमाकर कहाकि हे अग्निपूजक तू या तो अभी भागजा नहीं तो तेरी क्या गति करताहूं तेरी भी वैसी गत बनाताहूं और जो मैं अमरूहूंकि तेरी छाती का दूध निकालकर तुझे इसका मज़ा चखाऊं बादशाह अमरूकी बातें सुनकर कांपनेलगा और बखतकसे कहाकि सुनताहै अमरू क्या कहता है उसने कहाकि दूरसे जो चाहै वह कहे जबान उसकी उसके मुखमें है लेकिनकर कुछ नहीं सक्ताहै इधर पुकारहा है सेनाको आज्ञादीजिये कि युद्धकरनेको आरूढ़होवे और एक बारगी धावाकरके क़िला अमरू से छीनलेवें तब बादशाह की आज्ञानुसार सेनाबढ़ी और क़िले तक जा पहुंची तब क़िले पर से आतशबाज़ी छूटनेलगी और थोड़ेही काल में हज़ारोंही पहलवान मारेगये और शेष युद्धके खेतसे भागखड़ेहुये किसी ने किसी का साथ न दिया तब लाचार होकर बादशाह भी सेनाके पीछे २ भाग कर खेमेमें आकर लाचार होकर बैठे तो बखतक कहने लगा कि कहीं इस प्रकार से भी क़िलाहाथ आता है इधर हज़ारों सिपाही भी मरवाये और लज्जितहोकर पराजयपाई तब नौशेरवां ने कहाकि ऐ पापीतूहीने तो कहा कि अब सेना को आज्ञा दीजिये कि क़िलेपर धावा करके इसीयुक्तिसे लेलेवें और तूही अब यह भी कहता है तब उसने कहा कि हां मैं भूलगया जो हुआ सो अच्छा हुआ अमरू को यह तो विदित हुआ कि बादशाह बड़ी सेना लेकर मुझसे युद्ध करने को आयेहैं हजार पहलवान मारे गयेतो अच्छाहुआ बादशाहने कहा कितू बड़ादुष्टहै कि एक बातपर स्थिरनहीं रहताहै कभी कुछ कहताहै कभी कुछ अब थोड़ासा अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि अपने क़िलेवालों से कहा कि तुम लोग ख़बरदारी से रहना हम बादशाह नौशेरवां को भी अपनी मक्कारी का मज़ा चखाआवें यह कह कर लिबास शाहाना उतारकर मक्कारीकी पोशाक पहिनकर एकनटकाभेष धारणकरके दो अपने शिष्योंको जो मक्कारीमें बड़े बुद्धिमानथे स्त्री का भेषधारणकराकर साथ लेकर क़िलेसे बाहर निकला और अपने गलेमें एक फटा ढोल डालकर बजाता हुआ जाकर बादशाह नौशेरवां के खेमे के समीप एक कमरी तानकर आप ढोलबजाकर उनदोनोंको नचाने गवाने लगा थोड़ीही समय में बहुत से मनुष्य आकर देखने लगे और उसी समय में जोपीन और व चीन सवार चले आतेथे भीड़ देखकर वेभी उसीतरफ गये जाकर देखा तो एक अपूर्व तमाशा होरहाहै उनदोनोंकी आखें जो इनसेमिलीं तो अपने

करफनसे लोभानेलगा यहांतक कि दोनोंभाई मोहित होगये एकने स्याह-पोश को प्रसन्न किया दूसरेने सब्जपोश को और दोनोंने आपस में सलाह करके बादशाह के समीप जाकर उनके गाने बजाने और सुन्दरता की बड़ी प्रशंसाकी तो बादशाहभी मोहित होगये और उनके बुलानेकी आज्ञा दी और जब वे आयेतो अमरूने ऐसा ढोल बजाया और यार बच्चोंने गाया कि जितने लोगथे सब मोहितहोगये और नौशेरवांने मोहित होकर उन्हींको शराब पिलानेकी आज्ञादी तब सबन उन्हींकेहाथसे गिलासमें लेकर शराब पी तो थोड़ीहीं समय के पश्चात् सब लोग बेहोश होकर गिरने लगे और इकबारगी सब लोग बोल उठे कि चलो यारो नदी में गोता लगावें यह कह कर सब एकबारगी बेहोश होकर चुप होगये और अमरू ने बाहर आकर शागिर्द पेशोंकोभी बेहोश किया और खेमे में आकर सब असबाब उठाकर जनबील में रखकर अपनी चालाकी करने लगा कि नौशेरवां की दाढ़ीमोछ उस्तरेसे मूड़कर हाथपावोंका तो नीलसे रंगा और मुख काला करके चून के टीके दे दिये और बखतक बखतियारक की दाढ़ी मोछ मूड़ कर सात सात बाल सिरपर रहने दिये और बखतियारक के सिरमें सेंदूर भरकर टांगें उसकी बखतक के कमर स बांध दीं और बखतियारक की गुदामें एक मेखठोककर फैली करदी और जोपीन व बेचीनके साथभी यही मामिला किया और इसीप्रकारसे सब लोगोंकी गत बनाई और शाहजादों कोभी नंगाकरके सात रंगके टीके दिये और इसीप्रकारसे जितने सरदारथे सबको गत बनाई और पीछे को एक पत्र लिखकर कि ऐ जवानमहाने२ दाढ़ी मोछ काकर मेरे पास भेज दिया कर नहीं तो एक बाल न रहने पावेगा और इसीप्रकारसे लज्जित आ करैगा और यहभी विदितहो कि इस बारतो इसविचारसे कि अमारहमजाके आप सु हैं प्राणछोड़करकेवलयही गतबनाई है लिखकर नौशेरवांके गलेमें बांधदिया और आपदोनों मक्कारों समेत अपनेकिलेमें चलाआया। और जब प्रातःकालहुआ तो सबसावधानहुये बखतकको जो मज़ामिला तो चांजानके धक्के देनेलगा। और नेत्रोंके बन्दरहनेसे कुछ मालूम नहुआ और बखतियारकको जो दुःखमालूम हुआतो चिल्लाकर कहने लगा कि पिताजी यह क्या काम मेरे साथ कररहे हो लोग यह सुन कर चारों तरफसे दौड़कर आये तो देखा कि बाप बेटे में यह मामिला हो रहा है तो सब एक दूसरे को रूप देखकर हसने लगे और अपने रूप का कुछ विचार न रक्खा कि हमारारूप कैसा है नौशेरवां ने प्रातःकाल जो उठकर आईने में अपना स्वरूप देखा तो अति लज्जित हुआ और उसी प्रकार से सब का हाल देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ इतने में गलेका पत्र देख कर पढ़ा तो विदित हुआ कि अमरूनेयह सब की गतिबनाई है तत् पश्चात् स्नान करके पोशाक बदल कर गद्दी पर बैठकर बखतक को बुलवा कर सभा में उसकी मुशकें बंधवाकर ऐसी जूतियां लगवाईं कि बेहोश हो

गया और जब सब सभासद लोग सई करनेलगे तो बादशाहने उत्तरदिया कि इसके बारे में अब हम किसी की रुई न मानेंगे क्योंकि यह सब गति इसी ने करवाई और इसी की बात पर मैं यहां आया अफसोस कि मैंने बुजुरचमेहर की सलाह पर कार्य न किया जो उसकी बातपर स्थितरहता तो क्यों ऐसा गत सब लोगों की अमरू बनाता लोगों के कहने से पीछे उसको कारागार में डाल दिया और एक पत्र हामान के पास एक सिपाही के हाथ इस समाचारका लिखकर भेजा कि अमरू बड़ा दुष्टहै इससे खबरदार रहना और अपने किसी सरदार को किला सौंप कर हमारे पास आप शीघ्रही चले आवो और इसी समाचार का एकपत्र कारावां बादशाह शेरशाह के समीप भेजा तो पहिले मावर नमदपोश हामानशाह के पास पहुंच कर अति शीघ्रही उत्तर लेकर बादशाह के पास पहुंचा तो उसने लिखा था कि अमरू तो क्या देव भी हमारे क़िले में बसनहीं पासक्ता और मैं भी अतिशीघ्रही आपकेपास सेनासहित पहुंचताहूं आपकिसी प्रकार से सन्देह न कीजिये समावा जबपत्र शेरशाहके समीपले कर पहुंचा तो उसने भी इसीप्रकारसे उत्तर लिखकर उसेकहा कि एकबात मैं अपनी तुझसे कहता हूं परंतु किसीसे कहनानहीं और उनकी युक्तिकरो उसनेस्वीकारकिया तब बादशाहने कहा कि बहुतकाल व्यतीत हुआहोगा कि मैंने मेहरनिगार की तसवीर देखी थी उसी समय से मैं मोहित होगया हूं और सदैव उसके देखने की इच्छा रखताहूं जो तू किसी युक्तिसे मेहरनिगार को मेरे समीप लावै तो मैं आधा राजदूंगा उसने कहा कि मैं केवल मुखसे कहनेसे नहीं मानता आप ईश्वरको गवाहकरके मुझे लिखदीजिये तो मैं जाऊं चाहे मरूं या जीऊं तब शेरशाह ने उसीसमय एक इक़रारनामा लिखकर उसको दिया और सब प्रकार से कहदिया तब समावा वहांसेचलकर क़िलेके पास जाकर भीतरजाने की उपाय ढूंढनेलगा तो पृथ्वी की मार्गसे तो जाने का रास्ता न पाया परंतु एक नावपर सवारहोकर पहाड़तक पहुंचा तो वहां से देखा कि सब सिपाही खबरदारी से रक्षा कररहे हैं जाते २ केवल एक बुर्जमें सन्नाटा मालूमहुआ तब उसने एक ढेला उसके ऊपरफेंका तोकिसी ने उत्तर न दिया तो मालूम हुआ कि इसपर या तो कोई है नहीं या सब सोतेहोंगे कमन्द डालकर बुर्जमेंगया और उसीकी सीढ़ियोंसे नीचेउतरा तो रात्रिभर तो एक कोन में बैठा रहा और प्रातःकाल होते इधर उधर रहनेके लिये स्थान ढूंढनेलगा पीछेको जबकहींठिकाना न पाया तो स्नानके स्थानपर गया और एककोने में बैठकर स्नानकरनेलगा संयोग से उसीसमय में बुलखलीफा उसी स्थानपर पहुंचा जो कि मेहरनिगार का अति शुभचिन्तक और दिलसे शत्रुथा कि सदैव उसीस्थानपर जाकर अग्निपूजा करता था उसदिन भी स्नानकरके पूजा करनेलगा कि इतनेमें समारानी ने सन्मुख आकर प्रणाम किया तबतो खलीफाबुलबल बहुत डरे कि जो यहसब मेरा

हाल अमरूसे कहदेवेगा तो अमरू मेराप्राण न छोड़ेगा यह बिचार करके उस्से मित्रताकरनेलगा तब समावाने पूछा कि तुम्हारा क्यानामहै औरकिस आहदेपर यहां हैं उसने कहा कि मैं मेहरनिगारका शुभ चिन्तकहूं भाई ईश्वरके लिये मेरा हाल किसीसे न कहना उसने कहा कि आप सन्देह न करें मैं यहां नहीं रहताहूं मैं तो बादशाहनौशेरवांके सिपाहियों कासर दार हूं और मेहरनिगार के लेजाने के लिये और बहुतसी उत्तम२ वस्तु ले आयाहूं आप कृपा करके इस कार्य में सहायता करें तो सिद्ध होजावेगा और मुझ को अति प्रसन्नता प्राप्त होगी खलीफा बुल्ला ने कहा कि मैं तो आपही सदैव इसी उपाय में रहता हूं कि किसी प्रकार मेहरनिगार को नौशेरवां के पास पहुंचाऊं सो ईश्वर ने आपही को यहां तक भेज दिया आप मेरेसाथ चलकर बावर्चीखाने में ठहरिये तब तो उसने प्रसन्नता से उसकेसाथ होकर बावर्ची खाने में जाकर भोजन में दारू बेहोशी मिलाई और जब वह भोजन सब लोगों ने खाया तो सब थोड़ी ही समय के पश्चात् बेहोश होगये परन्तु अमरू ने उसदिन भोजन न किया और न महल में गया जब सब बेहोश हो गये तब सादानी ने मेहरनिगार को एक गठरी मे बांध कर अपने ऊपर लाद कर खलीफा बुल बुल समेत उसी बुर्ज से जि धर से आया था निकला और जब सादानी किले से निकल कर बन की तरफ चला तो खलीफाने पूछा कि बनमें क्यों जाताहै वहां तेरा क्या प्रयो जन है उसने कहा कि गरशाह ने मेहरनिगार को मांगा है सो मैं उन्ह के पासलिये जाताहूं तबखलीफाबुलबुलनेकहा कि यहतो अभी न होगा तूने कहाथा कि मैं नौशेरवांके समीप लेजाऊंगा और अबइसवेके पास लिये जाताहै अब तो तेरी बातोंपर मुझकोक्रोध लगता है दोनोंमें युद्ध होनेलगा तबसादानीने एकखंजर खलीफा को ऐसा मारा कि उसका प्राणनिकलगया और सादानी मलिका को लेकर उसीतरफ चला अब थोड़ासाहाल अमरूका सुनिये कि वह बेखबर पड़ासोरहाथा कि स्वपने में अमीरने आकर कहा कि वाह तुमतो खूबरखा करते हो बतावो तो मेहरनिगार कहांहै तुमको नहींबिदित होता कि वह किसदुखमें पड़ी है इतनादेखकर अमरूचौंककरउठा और मेहरनिगारकेमहल जोगया तो देखा कि पलंग खालीहै इधरउधर ढूंढ़करकिलेकी दीवारपर गया तो विदित हुआ कि कोई कमन्द लगाकर निकाललेगया तबतो अति शीघ्रताके साथमक्कारीपोशाक पहिनकर उसीकमन्दकीराहसे उतरकर कदम पर कदम रखतेहुये चलाजब थोड़ीदूरगया तो देखाकि खलीफा बुलबुल मारा हुआ पड़ाहै तबतोजाना कि शत्रु से मलिकाको छीनकर लेगया राहछोड़कर दूसरी ओरसे आगेजाकर एक साधुका रूपधर करके एक घड़े में दारूबेहोशी रखकर बैठा कि इतने में समावा मेहर निगारको एकगठरीमें बांधेहुये जाकर पहुंचा और अमरू से कहा कि

बाबा प्यास बड़ी लगी है तब अमरू ने कहा कि घड़ेमें जल रक्खा है निकालकर पीलो जब वह घड़ेके पासगया और उसने देखा तो विदित हुआ कि इसमें दारू वेहोशी मिली है कूदकर अलग खड़ा हुआ और कहने लगा कि तू मुझसे जाल करने चलाहै तेरी जान मुझसे न बचेगी यह कह कर अमरू के आगे से भागा अमरू खंजर निकाल कर उस के पीछे दौड़ा और एक बारगी कूद कर उसके आगे हो रहा तब वह भी गठरी को पृथ्वीपर रखकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तब अमरूने कमन्द कमर से निकाल कर ललकारा कि देखते क्या हो दौड़कर मारलो तब उसने जाना कि इसके सिपाही भी आपहुंचे पीछे फिर कर देखने लगा इतने में अमरूनेकमन्द उसके गलेमेंडारकर खींचलिया और वह औंधे मुंह पृथ्वीपर गिर पड़ा तो अमरू ने गठरी को तो कन्धे पर रखलिया और उसको मुशकें बांधकर अति शीघ्रही चलकर क़िलेमें आकर पहुंचा तो सभावा को तो कारागार में भेज दिया और मेहरनिगार को सावधान किया मलिका ने देखा कि मैं बंधीहूं अमरू से पूछा कि बाबा मुझे क्योंबांधा है तब अमरूने सब हाल कहकर छोड़ दिया और बाहर आकर सभावा को मरवा डाला नौशेरवां ने जब सुना तब उसने अमरूकी बड़ी प्रशंसा की और चित्तसे अति प्रसन्नहुआ और जब शेरशाहने सुना तो सभामें कहने लगा कि अमरू बड़ा भाग्यवान है उसे कोई विजय न कर सकेगा तबही इतने दिनों से नौशेरवां से बराबर विजय पाता चला आता है और जो उससे युद्ध करने की इच्छा करता है वही लज्जित होकर पलट आताहै और मेराचित्त चाहता है कि अमरू से जाकर मुलाक़ात करूं इतने में पिरान नाम सेनापतिने कहा कि अमरू को मैंआज पकडूंगामैं उसका बीड़ा उठाताहूं और देखियेगा कैसी सुन्दरता के साथ विजय पाता हूं आप मेरे नामसे बादशाह नौशेरवां को लिख दीजिये कि मेरे नामसे तबल जंग बजवावे जाकर खड़ी सवारी क़िलेको लेलेताहूं या नहीं बादशाहने उसी समय एक विनयपत्रिका में बादशाह नौशेरवांको लिखकर सब वृत्तान्त मग़रबी सिपाही के हाथ भेजा ॥

पहुंचना अमीर का देव समुन्द के स्थान पर और छोड़ाना जहर मिस्री का कारागार से ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर हरिन का कवाबखाकर अखुजर नदीसे जब चले तो दसवेंदिन एक क़िलेकेसमीपपहुंचेतोख़ाजे आशोब से कहा कि तुम जाकर देख आओ कि इस क़िलेमें आबादी है या वीरान और स्वामी मुसलमान है या काफ़िर ख़ाजे आशोब तमंचा हाथ में लेकर क़िले के भीतर जो गया तो देखा कि बराबर से दूकानें लगी हैं और लोग फिर रहे हैं ख़ाजे ने एक दूकानदार से पूछा कि इस क़िले का स्वामी कौनहै और कैसा है उसने कुछ उत्तर न दिया दूसरी

वार फिर पूछा तौ भी कुछ न बोला तब ख़्वाजे ने कहा कि क्या तू बे-
हरा है या गूंगा तौभी वह न बोला चौथीबार तमंचा लेकर उसको मार
डाला तबतो सब दौड़े और ख़्वाजेको चारों ओर से घेर लिया तब ख़्वाजे
आशोबने अमीरको पुकारा कि दौड़िये मेरी सहायता कीजिये अमीर
उसका शब्द सुन कर क़िले में आये और उन लोगों से युद्ध करने लगे
करते २ क़िलेके दरवाज़े तक पहुंचे लेकिन वे तीनों अभी भीड़में खोगये
तब अमीर उस क़िलेके भीतर गये परन्तु युद्ध करने वाले भीतर न गये
बाहर से चिल्लाया कि ऐ अमीर अब क़िले में आकर तख़्त पर बैठतो
एक ओर से शब्द आया कि अफ़सोस हमारी तो यह गत हुई नहीं
मालूम अमीर की क्या गतहुई होगी यह सुनकर अमीर जो उसतरफ़
गया तो देखा कि वेतीनों उसीमें क़ैद हैं और एकमनुष्य औरभी उन्हीं
के साथ शाहाना पोशाक पहिने क़ैद है अमीर ने पूछा कि तू कौन है
उसने कहा कि मैं इसी क़िले का बादशाह हूं ख़लख़ाल देवने मुझे क़ैद
करके क़िला छीन लिया है अमीरने उसको क़ैद से छोड़ाकर तख़्तपर
बैठाया और हरप्रकार से उसकी सहायता की जिन्होंने जब अमीरको
देखा कि हमारे बादशाह के साथ बड़ी नेकी कर रहा है तब तो सब
चुप होकर अमीर के क़दमों पर गिरने लगे और वह देव उस समय
शिकार को बाहर गया था जब उसने यह सब हाल सुना तो क्रोध के
मारे जलने लगा और अमीर के सामने आकर ललकारकर मारने को
दौड़ा अमीर ने उसकी वार रोक कर एक हाथ अक़राबसुलेमानी का
लगाकर दो भाग कर दिये तब तो उसके साथी अमीर के बलको देख
कर भाग गये और बादशाह ने सात दिनतक नाचरंग करवाया और
हर प्रकार से अमीरको प्रसन्न किया आठवें दिन अमीर वहां से चले
तो इक्कीस दिन तक बराबर चले गये तो एक चार दीवारी अपूर्व प्र-
कार की दिखाई पड़ी परन्तु दरवाज़े में ताला लगाथा तब अमीर ने
बलकी से तोड़ डाला और उसके भीतर जो गये तो देखा कि एक बड़ा
भारी सुनसान मैदान है और चार दीवारी संगमरमर की है उसके
भीतर जो गये तो एक अति उत्तम बाग दिखाईपड़ा कि जिसके देखने
से बड़ा आनन्द हुआ और ऐसा बाग क़ाफ़ भरमें कहीं न देखा था तब
अमीर तो एक वृक्ष के नीचे व्याघ्र चर्म बिछाकर बैठ गये परन्तु लड़के
इधर उधर घूमते २ एक बारहदरी में पहुंचे तो वहां देखा कि एक
देव तीनसौ गज़ का लम्बा सो रहा है और एक स्त्री अति स्वरूपवान
पंखे की डोरी खींच रहीहै लड़कोंको देखकर कहनेलगी कि ऐ लड़को
तुमयहां कहां आये जल्द यहांसे भागजावो नहीं तो अभीयह जागेगा
तो तुम लोगों को खाजावेगा क्षुधा के मारे रोते २ अभी सोगया है
लड़कों ने कहा कि हम हैंनतअक़्लह साहब क़िरां के साथ हैं हमइसको

क्या इसके बापको भी नहीं डरतेहैं जहर मिश्रीने अपने चित्तमें विचारा कि शायद जिसके ये लड़केहैं हैवतअल्लाह कहतेहैं वही साहब क़िरांहो उन लड़कों से कहा कि तुमलोग जाकर उस मनुष्यसे जो तुमारेसाथहै कह देव कि जहर मिश्री यहां कैदहै तब खाजे अयोब और बहलोलने अमीर से आकर कहा कि उस बाग में एक बारहदरी है उसमें हम-लोग जोगये तो देखा कि एक देव तीनसौगजका लंबा पड़ा सो रहाहै और एक स्त्री अति स्वरूपवान पंखेकीडोरी बैठी खींचरहीहै हमकोदेख कर बड़ी नम्रता और मोहब्बत से कहने लगी कि तुम यहां से भाग-जावो नहीं तो अभी यह जागेगा तो तुमको खायगा इसके दया न आवेगी तब हमने कहा कि हमारे साथ मियां हैवतअल्लाह हैं हम इससे क्या इसके बाप से भी नहीं डरते तब उस स्त्री ने कहा कि तुम जाकर उस मनुष्यसे जिसके साथ तुमहो कहदेना कि जहर मिश्रीयहां कैद है अमीर जहर मिश्री का नाम सुनतेही व्याकुल होकर दौड़े कि जहर मिश्री का तो यह हाल हुआ मेहरनिगार का नहीं जानते कि क्या गतिहुई होगी बारहदरी के भीतर जो गया तो देखा कि जहर-मिश्री बैठी है उसको देखकर रोने लगी अमीर ने सब हाल पूछा तो उसनेसब अपनाहालसुनाकरकहा अबइसदेवकी कैदमेंहूं जो दुःखपड़ता है उसका बयान मुझसे नहीं हो सका जो अमीर आते तो मेरा प्राण बचता नहीं तो अब प्राण न बचेगा जिस दिन इसका पिता क्षुधावन्त होगा उसी दिन खालेगा इस दुःख में मैं आपही मरजाऊंगी अमीरने कहा कि तुम साहबक़िरां को पहचानती हो उसने कहा कि क्यों न पहचानूंगी मैं तो उनकी दासीही हूं उन्होंने मेरी पालना कीहै तब अमीरने मुखसेपरदा हटादिया तो देखतेहीजहरमिश्रीरोकर अमीर के पैरोंपर गिरपड़ी देव बच्चा रोनेका शब्द सुनकर जागउठा तो देखा कि कई मनुष्य खड़ेहैं क्षुधाके मारे झुलझुलाकर अमीर को पकड़ने को दौड़ा कि लेकरखाजाऊं अमीरनेपकड़कर उसेबांसके समानचीरडाला और बाग की क्यारीपर बैठकर जहरमिश्रीसेकहनेलगा कितूने मुझको नहीं पहिचाना उसनेकहा कि तबआप जवानथे और अबआपकीडाढ़ी के बालसपेद होगये हैं फकीरी भेष विदित होताहै दासी क्योंकर पह-चानसके अमीर उससेबातेंकरही रहेथे कि इतनेमें देव समुन्दसहस्रकर आंधीकी तरहसे उड़ता हुआ अमीरके सिरपर चला आपहुंचा और दरवाज़ा खुला देखकरक्रोधित तो हुआहीथा जब अपनेपुत्रकोभी मरा देखातबतो जलकरअग्निहोगया और अमीरसेकहनेलगा कि ओ पापी मनुष्य तू किस आंधीमें यहां उड़कर आया तुझको यहांकौन ले आया अमीर ने कहा कि मैंतो किसी आंधीमें उड़कर नहींआयाहूं अपनीखुशी से तेरेमारनेको आयाहूं अवपुरी में देवता ले आया हूं और मैंजो अफ-

रेत और अहरमन आदिदेवोंका नाशकरके तुझेमारनेआयाहूं औरथोड़ी समय में तुझको उन्हींके पास भेजता हूं यह सुनकर देवसुन्द ने सहस्र करों से सहस्र पत्थर उठाकर अमीरके ऊपरडेमारे तो अमीर अक्रब सुलेमानी लेकरकूदकर उसकेशिरपर जाकर एकतलवार ऐसी लगाई कि एक तरफ का अंग पांचसौ करोंसमेत कटकर अलगहोगया तब सब हाथों को बटोरकर भागा और थोड़ीसमय के पीछे सब कर संयुक्तहोकर फिर आकर अमीर से युद्धकरने को आरूढ़हुआ तो अमीरने फिर पांचसौ कर एकओर के काटडाले इसीप्रकार से दोतीन बार अमीरने उसके कर काटे औरवह फिर जोड़कर अमीर के पास आकर युद्ध करने को आरूढ होता तब बड़े आश्चर्य में होकर ईश्वरका ध्यान करनेलगे कि इतने में एक ओरसे हजरत खिज़र ने आकर सलाम किया तो अमीर ने उत्तरदेकर कहा कि हजरत इस देवने तो बड़ा दुःखदिया कि मैं मारडालता हूं और वह फिर जीकर आता है और युद्ध करने को आरूढ होता है हजरतखिज़र ने कहा कि इसबागमें एक चश्माहै कि ईश्वरने उसमें ऐसी शक्तिदीहै कि जिनघावपर उसका जलपड़े वह भरआता है और किसी प्रकारसे दुःख नहीं होताचलो हम तुमको दिखाकर उसका लोप करदेवें कि वहदेव तुम्हारे हाथसेमारा जावे कि फिर आकर दुःख तुमको न देवे अमीर हजरतखिज़र के साथ जो गये तो देखा कि उसका जल मोतीसे भी स्वच्छहै और देखने से सब जल लज्जितहोतेहैं हजरतखिज़रने पैररखकर उसतालाबका लोपकरदियाऔर दोपत्ते एकवृक्षके अति स्वच्छ तोड़करदिये कि इसको ख्वाजेबुज़ुर्ग़जमेहरको देना कि जो बख्तक ने उसको अन्धाकरदिया है इनपत्तों को अरक नेत्रोंमें डाललेवे तो फिर उसीतरह से देखनेलगेगा अमीर ने उन पत्तों को रखकर कहा कि अब कृपा करके मुझे उसी स्थान पर पहुंचा दीजिये तब हजरत अमीर को उसीबागमें पहुंचादिया और वहींसे अन्तर्ध्यान होगये अब की बार जो देवसमन्द उसतालाब पर गया और उसकापता न पाया तो सिर पटक २ कर मरगया तब अमीर ने उसबागकी कोठरियों को खोलकरदेखा तो उनमें अनेक २ प्रकार के जवाहिरात दिखाईपड़े उससे उनको बड़ाआनन्द हुआ लड़कोंने कहा कि थोड़ासा जवाहिर यहांसे लेतेचलना चाहिये वहां ये कहांमिलेंगे अमीर ने हंसकर कहा कि जो तुम दुनिया में लेजाकर लोगोंको देखाओगे तो असद नामे एकमेराभाईहै वहसब तुमसे छीन लेवेगा और एकभी न देगा इसी प्रकार से दोदिन वहां रहे और तीसरे दिन लड़कों ने छींके में लटकाकर ज़हरसिम्री को पीठ पर सवार करके आप सईसों की तरह चले ग्यारवें दिन सुलैद नदीके निकट पहुंचे सन्देह में थे कि किस प्रकार इसके पार उतरें इसी विचारमेंथे कि हजरत खिज़र ने आकर पार उतार दिया दूसरे दिन उस लोहे की चार दीवारी के निकट पहुंचे कि जहां बड़े साहस और वीरता से राहदेव को मारा था उसका

दर्वाजा खुला देख कर जाना कि आज जुम्मा है क्योंकि उसका दर्वाजा वृहस्पति के दिन के सिवाय और दिन नहीं खुलता तब सालिम की समाधि पर जाकर मतके अनुसार मंत्र पढ़कर प्रसन्न किया और वहांसे यात्रा करके कहने लगे कि ईश्वर की दयासे क़ाफ की सीमा पूर्णहुई श्रीकरुणा निधान ने आरामके दिन दिखाये यही विचारकरतेहुये पर्वतके नीचे२ प्रसन्न चित्त छाया में चले जाते थे और मेवे तोड़ २ के लड़कों और जहर मिश्री को खिलातेथे संध्याको उसीपहाड़केकिनारे खड़ेहोकर रहने की जगह ढूंढते थे इसी अन्तरमें एक वृक्षसे सलाम का शब्द सुनाई दिया इधर उधर देखा तो किसीका पता न लगा सन्मुख देखा तो एक वृक्ष दृष्टिपड़ा उसमें मनुष्य की सूरत के फल लगे हैं और उसी वृक्ष से आवाज आती है और ईश्वर की रचनाका तमाशादिखातीहै और अमीरने इस ईश्वरकी रचनापर धन्यवाद करके नमस्कारका जवाब दिया उसी वृक्षसेफिर आवाज आईकि मेरा नाम दाकहै एक रात्रिकोसिकन्दरशाहनेभी मेरी छायामेंबासकियाथा इसी स्थान पर आप भी सुख पूर्वक बासकीजिये और यहां के तमाशेसे अपने चित्तको आनन्ददीजिये इसबार्त्ताके पश्चात् उसीवृक्षसेएकउत्तम फल अमीरकी गोद में गिरा अमीर ने उसको काटकर आप खाया और बाक़ी जहर मिश्री और दोनों लड़कोंको दिया उस फलके खानेमें ऐसा स्वादपाया कि जिसका वर्णननहींहोसका फिर उसी वृक्षके नीचे हर्षसे बासकिया और सम्पूर्ण रात्रि वह वृक्ष अमीरसे वार्तालाप करतारहा और अपनी मिष्टवाणी से अमीरको प्रसन्नकरता रहा और कहाकि जिस स्थानमें आप बैठे हैंइसी जगह सिकन्दर भी ठहराथा और मुझसे यह भी पूछाथाकि मेरी मृत्यु कब होगी तब मैंने उसको यह उत्तर दियाकि जब लोहेकी ज़मीन और सोनेका आकाश होगातबतुम इससंसारको छोड़ोगे उसके दोतीनदिनके पश्चात् इफ़्लागर्दिश सुलैमानी के जंगलमें जो यहां से थोड़ीही दूर है कि उसमें वृक्षका नाम भी नहीं है पहुंचा तो वहां सूर्य्यकी गरमी से अत्यन्त व्याकुल होने लगा तो उसके साथियोंने लोहे काज़िरहें बिछाकर ढालकी छाया की लेकिन उसी समय में उसका बैकुंठ बास होगया अमीर ने पूछा की हे वृक्ष मुझको तो बतला कि मैं कब मरूंगा उसने उत्तरदिया कि जब अघकरके किसीपैरमें नाल न रहजाय तब तुम जानना कि अब मेरी अवस्था संपूर्ण होगई है अब कुछदिन में बैकुंठबास होगा परन्तु अभी बहुत दिन शेष रहेहैं इसी प्रकार से रात्रि भर वह वृक्ष अमीर से बातें करता रहा और प्रातःकाल होतेही वहां से उठकर रवाना हुये और दो पहर के समय जब रेगिस्तान में पहुंचे तो वह सूर्यकी तपिशसे जलनेलगा तब तो सब गरमीसे व्याकुल होने लगे परंतु अमीरके पास हज़रतखिजर की दी हुई मशक थी उसीमें से आप भी जल पीतेथे और लड़कोंको भी पिलातेजाते और रात्रिको उसीमें पड़रहते थे इसीप्रकारसे सातदिन कठिनताकाटे आठवेंदिन एकनगरमें पहुंचे वहां की

अधिपति एकस्त्री अतिदयाल और सुशील शीरीनाम थी अमीरको अगवानी लेकर अपने नगरमें लेजाकर कईदिनोंतक मेहमानदारी की अमीरने देखा कि स्त्रियोंके सिवा यहां पुरुषका कहीं नामनहींहै उसस्त्रीसे पूछा कि यह क्या कारणहै कि यहां पुरुष कहीं नहीं दिखाईपड़ते उसने कहा कि इस नगरमें स्त्रियोंके सिवा पुरुष नहीं उत्पन्न होते अमीरने पूछा कि फिर गर्भ क्योंकर रहताहै उसने कहा कि इसनगरके बाहर एक वृक्षहै उसमें न फल लगताहै न फूल जब स्त्री युवाहोती है तो उसी वृक्षमें जाकर लिपट जातीहै और थोड़ीसमयके पश्चात् चोखमारकर गिरकरबेहोशहोजातीहै फिरहोशमें आकर चलीआती है तभी उसके गर्भ रहजाता है और लड़कीही उत्पन्न होतीहै अमीरने स्त्रियोंका स्वरूप और उनका यह हाल देखकर ईश्वरका धन्यवाद किया लड़कोंने अमीरसे कहा कि यहां की स्त्रियां अतिस्वरूपवान हैं इनको लेचलना चाहिये शीरीने कहा कि यहांकी स्त्रियां कहीं जानहीं सक्तीं और जो कोई लेजाता है तो एक चौकीदार ईश्वर ने यहां करदिया है वह फिर उठाले आताहै तब लड़कों ने कहा कि तू हमारे साथ करदे देखें कौन हमसे छीन लेजाता है आखिरकार लाचार होकर पचास स्त्री उसने साथ करदीं जब वहां से चले और रात्रि को एक स्थानपर सोये तो वहांसे पचीसस्त्रियोंको कोई उठालेगया जब प्रातःकालदेखा तो बड़े संदेह में हुये कि इया हम लेआये दूसरी रात्रिको जब सोने लगे तो दोनों लड़कों ने सब स्त्रियों के कमर में रस्सी लगाकर अपने पैरों में बांध ली तो रात्रि को सीमुर्गकी स्त्री जो वहांकी रक्षकथी रात्रिको आई और सब स्त्रियोंको लड़कों समेत उड़ाकर भागी कि इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि कोई सब स्त्रियोंको उड़ा लेजाता है और नीचे लड़के भी लटके जाते हैं अमीर ने अपने दिलमें विचारा कि शायद कोई देव है इस विचार से एक तीर ऐसा मारा कि सीमुर्ग की जोरू घायल होगई और स्त्रियों समेत उतरपड़ी और अमीर से आकर कहा कि ऐसाहर्विकुरां मैंने आपका क्या अपराध किया था कि आपने मुझे तीरमारा और मेरे पुरुष ने जो आपके साथ नेकी की थी यह उसकाबदला है मैं तो यहां इन्हीं स्त्रियों की रक्षा के लिये ईश्वर से आज्ञा पाकर रहतीहूं कि कोई इन स्त्रियोंको बाहर न लेजाने पावे अमीर सीमुर्ग की जोरू को देखकर अति लज्जित हुआ और कहने लगा कि मैंने तुझ को नहीं पहचाना था सौगन्ध खाता हूं कि मैंने तुझको नहीं जाना ईश्वर के लिये अपने पुरुषसे यह न कहना अबकी बार मेरा अपराध क्षमा करना क्योंकि उसने मेरे साथ बड़ी नेकीकीहै तब अमीरने ईश्वरका स्मरण करके उसके घावको अच्छाकर दिया तब वहस्त्रियों समेत अमीरसे आज्ञा लेकर रवाना हुई॥

वृत्तान्त अमह अमीर जमीनी के पुत्र का॥

नौशेरवां को करआन पश्चिमीके लिखने से पीरान मशरकी ने नामसे तवल

जंग बजवाकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तो इतनेमें सामने से गरद उठो और जब गरद बन्द होगई तो दो सौ झण्डे दिखाई पड़े तो अमरू को विदित हुआ कि दो लाख सवारोंकी सेना आरही है जब समीप क़िलेके आपहुंची तो विदितहुआ कि क़ौरवां मग़रबी अपने सेनापति पीरान मग़रबीको साथ लेकर अपना सेना समेत आता है तब नौशेरवां ने जोपीन और बेचन को अगवानीके लिये भेजा तो उसने आकर बादशाह के तख़तपर बोसा देकर इसप्रकारसे बादशाहको समझाया और पीरान मग़रबी को क़िलेपर धावा करनेकीआज्ञादी और कहा कि जिसतरहसे होसके क़िलेको अमरूसे छीन लेना जिससमय पीरान मग़रबी अपने दोलाख सवार लेकर क़िलेकी तरफ आरूढ़हुआ तो अमरू अपनी सेना थोड़ी देखकर डरा और ईश्वरका ध्यान करनेलगा तो इतनेमें जंगलकी ओर गरद उठी तो नक़ाबदार नारंजी पोश अपने चालीसहस्र सवारलेकर आखड़ाहुआ तो अमरू अति आनन्दहुआ बख़ तयारकने उसको देखकर नौशेरवां से कहा कि यही नक़ाबदार सदैव मुसलमानी सेना की सहायता को आता है और इसी की सहायता से मुसलमानी सेनाकी विजय होताहै इतनेमें नक़ाबदारने पीरान मग़रबी के सामने आकर ऐसी डाट लगाई कि उसका घोड़ा पीछे को हट गया तो उसने क्रोध करके नक़ाबदार के सिर पर एक तलवार मारी नक़ाबदारने घोड़े का आसन दबाकर तलवार कूदकर छीनली और एक हाथ से उसकी कमर पकड़ कर ऊपर को उछाला और जब नीचे को आने लगा तो एक तलवार ऐसी मारी कि दो भाग होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा तबतो उसकी सेना ने नक़ाबदार को आकर घेर लिया और नौशेरवां की सेनाने भी सहायता की परन्तु नक़ाबदार अपने चालीस सहस्र सवारों से मारता हुआ जंगल की तरफ चला गया और अमरू क़िले में विजय का डंकाब-जवाने लगा तब बादशाह नौशेरवां पराजय पाकर अपनी सेना समेत खेमेमें जाकर क़ौरवां मग़रबी को मातमपुरसी की खिलअत देकर हर प्रकार से समझाया इतने में उसी दिन सकालशाह बादशाह क़िलेतेश मग़रबी का नौशेरवां के समीप आया तो बादशाह से समझ कर कहा कि कल मैं इस क़िले को छीन लेताहूं और इनलोगों से आपका बदला लेता हूं परन्तु आज रात्रिकोमेरी मेहमानदारी स्वीकार कीजिये तब बादशाहने कहा कि अच्छा तब वह नौशेरवां के खेमे के समीप खेमा गाड़कर उतरा और मेहमान-दारी की तैयारी करने लगा और जिस समय अमरू ने सुना कि सिकाल शाह नौशेरवां की मेहमानदारी के लिये उत्तम २ भोजन बनवा रहा है तो सब अपनेसरदारोंको बुलाकरकहा कि आजजो तुमलोग थोड़ा श्रमकरो तो मैं तुमको चलकर उत्तम २ भोजन खिलाऊं सिकालशाह ने नौशेरवां की मेहमानदारी के लिये भोजन बनवाया है रात्रिको क़िले से निकल कर लन्धौर और असीर और सहराम का नामलेकर उसकी सेनापर धावा करो

तो सबने उसकी आज्ञा स्वीकार की तब अमरू ने सिपाहियों से कहा कि तुमलोग दिन भरमें पांचसौ देव कागज के चार सौ गजके लंबे तैयार करो पहिये उनके पैर में लगाओ और जिस समय मेरे सुपेद मोहरे का शब्द तुम रे कानों में पहुंचे तो तुम उसी समय उनको लेकर आना तब सिपाहियों ने अमरू की आज्ञानुसार दिनभरमें देवों को बनाया और जब रात्रि को नौशेरवां सिमकालशाह की सेना में गया संयोग से वह रात्रि शुक्लपक्ष की थी और चारों तरफ रोशनी भी हो रही थी बादशाह नाच देखने लगे जब पहर रात्रि व्यतीत हुई तो अमरू ने मुक़बिल को स्याह क़ैताम पर सवार करके कहा कि अमीर का नाम लेना और आदीसे कहा कि तू अपने को लन्धौर कहना और सुलतान बखतक मग़रबीसे कहा कि तू बहरामके नामसे शोर गुल करना इसी प्रकार से सेना को समुझाकर क़िले से बाहर निकला और सिमकालशाह और नौशेरवां की सेनापर जागिरा तब मुक़बिलने तो कहा किमैं हमज़ाहूं और आदीनेकहा कि मैं लन्धौर पुत्र सादान हूं और सुलतान बखत मग़रबीने चिल्लाकर कहा कि मैं बादशाह ख़ाकान चीन का बहरामनामी हूं इनके पश्चात् तीनों सेना में तलवार चलने लगी तब अमरूने विचारा कियह तो युद्धकरनेलगे परन्तु सेनामेरी थोड़ीहै कहीं ऐसानहो कि पराजयपाऊं कि लज्जितहूं सपेदमोहरा बजाके शत्रुकीसेना को ललकारा कि माहबक़िरां आज्ञा देते हैं कि क़ाफके देवोंको अतिशीघ्रही दौड़आकर शत्रुओंको खाजाओ सिपाही अमरू का शब्द सुनकर देवोंको लेकरआये और उनकेमुखसे आतशबाजी छोड़नेलगे तोशत्रु की सेनानेजाना कि देवोंकी सेना अमीरके साथ आईहै वह अब लोगोंको पराजय देगी इस विचारसे डरकर भागखड़े हुये हरबन्द बखतकने कहा कियह सब अमरू का जालहै परन्तु किसीने न सुना सब सिरपर पांवरखकर जो भागेतो बारह कोसतक चलेगये और कहीं एकमायतभी नठहरे बादशाहोंनेदखाकि जो हम बिनासेनाके यहां रहे तो अवश्य शत्रुके हाथसे क़ैदहोंगे वहभी अपनी सेनाकेपीछे भागे तब अमरूने सब असबाब दोनों बादशाहोंका उठाकरजनबीलमें रक्खामानो अपना असबाब है और सेनाको पेट भरकर भोजनकरवाया तब मुक़बिलसे कहा कि तुम क़िले में जाकर स्त्रियों को सवार करके सब असबाब ऊंटोंपर लादकर अति शीघ्रही आवो कोई वस्तु वहां रहने न पावे कि यहां से सब वस्तु लेकर क़िले तंजमगरब को चलें तबवह आज्ञा पातेही जाकर सब मालस्त्रियों समेत क़िलेसे निकालकर बाहर आयावहां कोई वस्तु न रहनेपाई तब अमरू सेनासमेत क़िले तंजमगरब की तरफचला और जिससमय क़िलेपर पहुंचा तो सिमकालशाहका जालीपत्र सेनापतिको दिखलाकर क़िलेमें निस्सन्देह जाकर बैठा तब काफ़िरोंको मारने लगा और जो मुसलमान हुये उनका प्राण छोड़कर शेषको मारडाला और क़िलेको अपने तौर पर करके दरवाजे पर अतलसका शामियाना खड़ा करके कुरसी

जहाज बिछाकर आराम से बैठा और क़िलेका दरवाजा बन्दकरलिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि उसने प्रातःकाल होते ही अपने सिपाहियों को आज्ञादी कि तुम जाकर देखआवो कि क़ाफके देवोंकी सेना कहांहै यहां अमरूकागनके देवोंको पहाड़ के नीचे बराबर से खड़ाकर गया था सिपाहियोंने दूरसे देखकर बादशाहसे कहा कि देवोंकी सेना पहाड़केनीचे खड़ीहै बखतकने नेकहा विष्ठाखाते हैं जोझूठ बोलते हैं यह सब अमरूका जालहै इतनेमें सिपाहियोंने आकर खबरदीकि अमरूक़िले तंग मगरिब में जाकर दाखिल हुआ और सब सामान बादशाही भी उठाकर लेगया यहहालसुनकर बादशाह अति व्याकुलहुआ और पीछे को सेनासमेत जाकर क़िले तंगमगरिब को घेरकर पड़ा अब अमरूका हालसुनिये कि अपने सरदारोंको इकट्ठाकरके कहा कि अब हमजाको अठारह वर्ष से अधिक व्यतीत होगये और अब तक न आये सो अब हम सबको केवल आधी खुराक देवेंगे जिसकी खुशी हो वह रहे नहीं अपने घरकी राहलेवे तब सबोंने तो स्वीकारकिया परन्तु आदीनेकहा कि मुझसेतो नरहा जायगा क्रोधित होकर वहांसे निकला और बादशाह नौशेरवां से आकर प्रार्थना की कि आप मुझको नौकर रख लेवें उसने सबवृत्तान्त पूछकर रखलिया और आज्ञादी कि तुम दरवाजेपर बैठेरहो कोई भीतर न आनेपावे तब वह जाकर दरवाजे पर बैठा तो रात्रिको एकस्त्रीआई उसके हाथपकड़कर ऐसे प्रकारसे भोगकिया कि वह मरगई तब वहांसे डरकर नौशेरवां के घोड़ेपर सवारहोकर भागा और मार्गमें जाकर क्षुधाकेमारे उसको भी मारकर खालिया तबफिर वहांसे चलकर एक साधुकी जमातमें पहुंचा वहांसे भी निकाला गया तो जाकर नगरमें भिक्षामांगते एक नानवाई की दूकान पर पहुंचा उसने दो रोटियां दीं आदी और मांगने लगा तो उसने कहा कि मियांअच्छे तो बनेहो मेहनत करके नहींखाते तब फिर आदीने कहा कि तुमको नौकर रखलो उसने लकड़ी चीरनेपर रखलिया और कहा कि पेटभर तुमको भोजनदूंगा जब आदी उसकी लकड़ी चीरचुका तो उसने उसेपांच रोटियांदीं तब आदीने कहा कि इसप्रकारसे मेरापेटन भरेगा तुम उठकर अलगबैठो हमखालेवेंगे जबउसने स्वीकार न किया तो उसकीगरदन पकड़कर नीचेकरदिया और सब रोटियां खालीं इसी तरहसे कई नानवाई की रोटी खागया पीछेको इसकीखबर बादशाह को पहुंचीतो प्रथम कोतवालआया परन्तु उसके सिपाहियोंके कहनेसे आदीने नमाना आखिरको बादशाह आपहीआया और आदीसेबुलाकर कहा कि जो तुम मुसल्मानों से युद्ध करना स्वीकार करो तो हम तुमको नौकर रखकर अपनी बेटी के साथ विवाह कर देंगे और बड़ी प्रतिष्ठासे रक्खें परन्तु हमारेयहां की यह रीतहै जबस्त्रीपुरुष

मेंसे एककी मृत्युहोजावे तो दोनों गाड़ेजाते हैं आदी ने सब स्वीकार किया तब बादशाहने लेजाकर अपनी बेटीके साथ विवाह करदियातो जब रात्रिको आदीने उसकेसाथ भोगकिया तो वह मरगई प्रातःकाल बादशाहने देखकर आदीसे कहा कि स्त्री अब मरगई चलोअब तुम भी गाड़ेजावोगे पीछेको जब सबलोगोंने स्त्रीको गोरमें धरके आदीको भी उसीकेसाथ गाड़नेकी युक्तिकररहेथे कि इतनेमें उसीसमय अमीरपरदे क्राफसे आकर उसी नगर में उतरे उस स्थान पर भीड़ भाड़ देख कर ख़ाजे बहलोलसे कहा किदेखो तो यह क्याहोरहा है लड़कों ने जाकर जो देखा तो एकमनुष्य को जीतालोग गोरमें गाड़ने को ठेलते हैं और वह नहींजाता आकर यहीहाल अमीर से कहा तो अमीरभी गये तो देखा कि आदीहै उससेपूछा कि तूकौनहै और यह क्याहोरहाहै उसने कहा कि मैं हमज़ा अरबीके सेनामें नौकरथा सो वह अमरूको स्वामी सेनाका बनाकर परदेक्राफको चलागयाहै सोअठारह तक तो अमरूने आधापेट भोजनदिया करताथा वहीखाकर रहताथा अब उसने चौथा-ईपेट करदिया है तब वहां से चलकर भिक्षा भवन करता हुआ यहां पहुंचा यहांके बादशाहने अपनी बेटीके साथमेरा विवाहकर दिया सो वह मृत्युसे मरगई तो अबमुझकोभी उसीकेसाथ गाड़नेकी इच्छाकरते हैं अमीरने पूछाकितू अमीरको पहचानताहै उसने कहा क्योंनहीं तब अमीरने मुखपरसे मुकुट हटादिया देखतेही आदी दौड़कर अमीर के कदमोंपर गिरपड़ा अमीरनेआदीको छातीसेलगाकर कहा कि अब तू नडर कोई अबतुझको न पासकेगा यहकहकर एकबड़े जोरसेशब्दकिया तो बादशाह शवीदशाहने सेनासमेत आकरअमीरको घेरलिया अमीर ने सबको मारडाला पीछेकोशवीदशाहके सेनापतियोंने मुसलमानहो-कर अमीरको साथ सुलहकरके अपने स्थान पर लेजाकर कईदिनों तक मेहमानदारी करके अमीरको रुखसत किया वहां से सब लोगों समेत चलकर दोपहर के समय एक नदीके निकट पर पहुंचकर उतरे आदी गरमी से जाकर नदीमें कूदकर स्नानकरनेलगा तो एकसंदूक बहताहुआ निकला आदीने सन्दूक को पकड़कर खोला तो उसमें एक देव बन्द था उठकर आदीसे लिपटगया तो आदीचिल्लाकर अमीरको पुकारने लगा अमीरने जाकर देवको सन्दूकमें बन्दकरके आदीको सौंपदिया आदीने इस विचारसेकि अमरूनेमुझको यह दुःखदियाहै मैंभी उसको चलकर दुःख दूंगा सन्दूकको अपने पास रखलिया तब अमीरने आदीसेकहा कितुम सबको साथलेकर आवो मैं पहिलेसे चलकर क़िलेका हालदेखूं किअमरू उसी क़िलेमेंहै या और कहींगया और आदीसे यह पहिलेही विदित होचुकाहै कि किलेतंग मग़रिबमें अमरू मेहरनिगार समेत है वहां से अशकरपर सवार होकर अमीर जब चले तो थोड़ीही समय में आकर

क़िले के समीप पहुंचे तो देखा कि क़िला अतिपुष्ट बनाहै किसी प्रकार भीतरजाने कीगमीनहींहै तब उसी क़िलेकेनिकट चर्म बिछाकर बैठगये और अश्वकरको बनमें चरनेकेलिये छोड़कर भेजदिया और आपफकीरों की तरह दीवालके सहारेसे बैठगये अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसदिन अठारहबर्ष पूर्ण होनेपर भी अमीरके न आनेसे सबलोग अति व्याकुलथे उससमय अमरूमलिका मेहरनिगारको समुझाकर कोठेपर लेगयाथा संयोगसे तीनपक्षी बराबरसे उड़तेदिखाईपड़े मेहरनिगारने अपने चित्तमें यह विचारकरके कि जो अमीर आजआतेहों तो बीचके पक्षीके तीरलगै संयोगसे उसीकेलगा और वह पक्षी और तीर आकर अमीरके आगेगिरा अमीर ने तीरको उठाकर चूमकर रख लिया तब अमरूने दूरसे देखकर कहा कि तू कौनहै जो यहां आकर बैठाहै और मलिका के तीरको क्यों उठाकर रख लिया लातीर हमको दे अमीरने कहा कि मैं साधूहूं परदेक़ाफसे आताहूं परदेक़ाफ का नाम सुनकर अमरू समीप आकर पूछने लगा कि तूने हमजा कोभी देखाहै अमीरने कहा कि मैं उसीके पाससे आताहूं और उसने मुझसे कहाथा कि जब मक्केकीतरफ जाना तो हमारेपितासे प्रणाम कहदेना और कुछ सन्देसा मेहरनिगारसेभी कहने को कहा है सो हम उसीके कानमें कहेंगे तब अमरूने अनेक प्रकार से अमीर को लोभ दिखलाकर कहा कि तू मुझे बतलादे तो बहुत कुछ दूंगा परन्तु अमीरने सदैव यही उत्तर दिया कि हम उसीके कानमें कहेंगे पीछेको लाचार होकर मलिका के पास जो गया तो वहां सब प्रकारसे प्रसन्नता होरहीहै मेहरनिगारने कहा कि आज मैंने सगुन उठाकर देखा सो निश्चयहै कि आज अमीर आवेंगे हमारा तीरदीवारके नीचे गिराहै तुम जाकर लेआओ अमरूने कहा कि आज एकसाधू आकर क़िलेके नीचे बैठाहै उसीके पास तीरहै और कहताहै कि मैं परदेकाफसे आताहूं सो हमजाने कुछ सन्देसा कहाहै वहभी मैं मेहरनिगार के कानमें कहूंगा अनेक प्रकार से मैंने उसको लोभ देकर कहा परन्तु न वह तीर देताहै न सन्देसा कहता है और कहता है कि मैने हमजाके प्रताप से हजारों रुपये अशरफी मंगनों को बांट दिये हैं मुझ को अब कुछ रुपये अशरफीकी अवश्यकता नहीं है ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होता जाताहै त्यों त्यों अधिक दुःख होता है मेहरनिगारने आज्ञादी कि अति शीघ्रही जाकर उसको लाओ अमरू ने फिर आकरकहा कि सहस्रअशरफी मैं तुझकोदूंगा बतादे अमीरने कहाजो पहिले मैंने कहा है वही अब भी कहता हूं तब बहुतही लाचार होकर अमरू ने अमीर से कहा अच्छा आओ तब अमीर ने पक्षी तो अमरू को दे दिया और तीर और चर्म अपने हाथ में लेकर चला जब क़िलेके भीतर गया तो अमरूने कहा कि मेहरनिगार इसी

परदेके आड़में बैठीहै अब जो कहा हो कहो अमीरने कहा कि मैं तो कानहीमें कहूंगा जो सुनना हो तो आवे नहीं मैं जाताहूं लाचार होकर फितना को लाकर अमीर के सन्मुख बैठाल दिया तब अमीरने जो मुख खोलकर देखा तो कहा कि यह मेहरनिगार नहीं है यहतो फितनाहै अमीरने मुझे सबकी तसवीरें दिखाईहैं जो सुनना हो तो मेहरनिगार आवे नहींमें जाताहूं तब अमरूने क्रोधित होकर मुक़बिल को बुलाकर आज्ञादी कि जब यह क़िलेसे बाहर जानेलगे तो इसका शिर काटकर फेंक दो यह बड़ा दुष्ट है इतनेमें मेहरनिगारने आकर संदेशा सुननेके के लिये कानझुकादिया और अमीरनेचुपकेसे कहा कि मैं साधु नहीं हूं मैं हमज़ाहूं यह कह कर दोनों चिल्ला कर बेहोश होगये अमरू ने जो विचार करके देखा तो पहचाना कि हमज़ा है दौड़कर क़दमों पर गिर पड़ा और गुलाब आदि छिड़ककर दोनोंको सावधान करकेनाचरंगकिया और मंगनोंकोरुपया पैसाअशरफ़ीलुटानेलगे यहां तक कि उस दिन अमरूने भी दो पैसा पुण्य किया और नक्कारखानेमें जाकर नौबत बजनेकी आज्ञादी तत्पश्चात् अमीर महल से निकलकर बाहरआये और सब छोटेबड़ोंसे मिलकर यथा उचित सबको खिलअत देकर प्रसन्नकरके महलमें आकर मेहरनिगारके पास बैठे और मलिका भी स्नान करके पोशाक बदलकर बैठी लिखने वाला लिखता है कि जब नौशेरवांके कानमें नौबत आदिबाजों के बजनेका शब्दपहुंचा तो उसने अपने सिपाहियोंको बुलाकरपूछा कि यहक्या होरहाहै सिपाहियोंने कहा कि क़िलेमें नौबत बजरही है शब्दसुनाई पड़ताहै सुनते हैं कि हमज़ाक़ाफ़से ईश्वरकी कृपासे कुशलानन्द से आया बख़ुतकने कहाकि अमरू को फिर कोई जालसूझा होगा तब बादशाह ने बुजरुच मेहर से पूछा कि आपके विचार में क्या आताहै उन्होंने कहा कि हिसाबसे तो विदित होता है कि हमज़ा आया होगा और इसी विचार से मैं भी बसरेसे आयाहूं कि चलकर अमीरहमज़ा से मुलाक़ात करके क़ाफ़का सब वृत्तान्त उनसे सुनूं अब अशक़र देवके पुत्रका हाल सुनिये कि जिस समय वह बनमें चरनेको गया तो वहां नौशेरवां के घोड़ेभी चररहे थे तो अशक़रने क्रोधित होकर बहुतसे घोड़ोंको टापोंसे मारडाला और शेषजो बचरहे वे सायंकाल को अपनी सेनाकी तरफ भागे तो अशक़र भी उनकेपीछे दौड़ा जो व्याकुलहोकर गये तो तोड़ते फांदते अपनेथान पर पहुंचे तब लोग अशक़र के तरफ पकड़ने को दौड़े तो जोही उसके सामनेआता था उसीको पकड़कर मारडालता इसीप्रकारसे हजारहों काफिरों को अशक़रने मारा नौशेरवां की सेनाने जानाकि मुसल्मानों ने छापामारा है आरूढ़होकर अपनीही सेनाको शत्रुकी सेना जानकर प्रातःकाल तक युद्धकिया किये जब प्रातःकाल हुआ तो देखा कि सब

आपही मरेहुये पड़े हैं शत्रु का कहीं नाम नहीं नौशेरवां अशकर को देखकर मोहित होगया और आज्ञादी कि किसी युक्तिसे इस घोड़ेको पकड़ो तब जो उसके पकड़ने के लिये जाता तो वह घाव लेकर पलट आता किसीने क़ाबू न पाया अमीरने अमरूसे कहा कि रात्रिसे अबतक नौशेरवां की सेना में शोरगुल होरहा है जाकर देखो तो क्या कारण है क्यों शोर गुल होरहा है इतने में एकसिपाही ने आकर सब हाल अमीर से कहा तब अमीरने अमरू से कहा कि वह घोड़ा मेरा है तुम जाकर उससे कहो कि ऐ पुत्र आरनाइस व लानिसा तुझको साहबक़िरां ने बुलाया है मैं तेरे बुलाने के लिये आयाहूं तो वह उसीदम तुम्हारे साथ चलाआवेगा तुम निस्सन्देह होकर उसको यहां लेआना अमरूने अमीर की आज्ञानुसार जाकर घोड़ेसे अमीरका संदेसा कहा तब वह अमरूके साथ हुआ तब अमीर आ क़िलेसे नीचे आकर अशकर को गलेसे लगाकर क़िलेमें लेआकर अमरूका सब हाल उससे सुनाकर कहा कि यही तुमारी सेवा किया करेगा किसीप्रकार से तुमको दुःख न होनेपावेगा और अमरूको आज्ञादी कि अशकरको सब घोड़ोंके आगे बांधना और खाने पीने की ख़बरदारी रखना उसके दूसरे दिन आदी जहर मिस्री बहलोल व ख़ाजे आशोब समेत आया जहर मिस्रीको तो अमीरने मेहर निगार के पास महलमें भिजवा दिया और आज्ञादी कि सदैवमलिका के पासरहै और ख़ाजेआशोब और बहलोल कोअपनेसाथ रहने की आज्ञादी आदीने चुपके से अमरू को बुलाकर कहा कि इस संदूक में बहुतसा जवाहिर है इसको तुमले जावो अपने पास रक्खो तब तो अमरू अतिप्रसन्नता के साथ उस संदूकको लेकर एक कोठरीमें जाकर ज्योंही संदूकखोलातो उसमेंसे एक देव निकला और अमरू के ऊपर मारने को दौड़ा तब अमरू डरकर भागा और एक कोनेमें खड़ा होकर जहरमोहरा बजानेलगा जब अमीरने जहरमोहरे का शब्द सुना तो उससमय में मेहरनिगारके साथ लेटाथा सुनतेही उठकरदौड़ाकि अमरू पर क्या आफ़तआई कि वह सपेदमोहरा बजारहा है मेहरनिगारको साथलेकर सहन में आकर खड़ाहुआ मुक़बिल भी जहरमिस्री के साथ लेटा था अमीरकी आहटपाकर निकलआया तो वह भी अति व्याकुलहुआ अमीरनेजो कानलगाकर सुना तो विदितहुआकि फलानी कोठरीसे जहर मोहरेका शब्द आरहाहै अमीर उसकोठरी के तरफ जो गये तो दरवाज़ा भीतरसे बन्दपाया एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़ भीतर जोगये तो देखा कि वही देव जिसको अमीरने क़ैदकरके आदी को दिया था तलवार लिये अमरू के मारने को आरूढ़ है और अमरू एक कोनेमें खड़ा जहरमोहरा बजारहा है जाकर उसदेवको कमन्दसे बांधकर पृथ्वी पर गिरादिया और बाहरलाकर मेहरनिगार के सामने

पकड़कर चीरडाला तब सब लोग अमीर के बलकी प्रशंसा करने लगे और मलिका ने बहुतसी अशरफी रुपया पुण्य किया और अमरू जो उसके डरसे बेहोशहोगया था जब लोगोंने गुलाबछिड़क कर सावधान किया तब आदीसे अमरूने कहा कि यह तूने मेरे साथ क्या किया कि मुझको इतना दुःखमिला अच्छामैंभी इसका बदलालूंगा आदी ने हंस कर कहा कि ख्वाजे मैं तुमारे कहनेसे जिन्दागार में गाड़ा गया था मैं कुछ उसका बदलालूं या नहीं फिर सुलह कराके अमीर ने दोनों को मिलवा दिया अमरू अतिप्रसन्न हुआ और अमीर को आशीर्वाद देने-लगा अमीरने कहा कि अमरू तूनडर आसमानपरी तेरे लिये बहुतसी वस्तु लावेगी ॥

इति तीसरा भाग सम्पूर्ण ॥

—o—

चौथा भाग॥

साहब क़िरां अर्थात् हमज़ा का बृतान्त॥

लेखक लोग अति तेज लेखनीसे स्वच्छ क़ागज़ पर यों लिखते हैं कि जब नौशेरवां और बखतक आदिको अमीरका आना विदित हुआ तो बखतक ने बादशाह से कहा कि हमजा अठारह वर्ष के पश्चात् परदेकाफ़से आया परन्तु आपके समीप न आया तो इस्से विदित होताहै कि बादशाह स्वदेशीकी बेटीको बलात्कार सेलेनेकी इच्छारखताहै ऐसेमें तबलजंग बजवाकर उससे युद्ध करनेको आरूढ़ हूजिये कि वह थका मांदाहै और आपकी सेना युद्ध करनेको आरूढ़है आसानी से उसको मारकर मलिका को छीन लेवेंगे नौशेरवांभी उसके जालमें आगया और तबलजंग बजवाने की आज्ञा देकर युद्धपर आरूढ़ हुआ जब यह खबर अमीरको पहुंची तो उसनेभी तबलजंग बजवानेकी आज्ञादी तब वहचीनी व क़ज़ाब चीनीने अठारह मनकी चोब उठाकरतबल सिकन्दरीपर दैमारा तो उसकेशब्दसे नौशेरवांके सिपाहियों के कानके परदे फट गये औार रुधिर बहनेलगा और बहुतसे सिपाही बहिरे होगये इसी प्रकार से रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्ध का डंका बजा किया और प्रातःकाल होतेही जो पहलवान कि सदैव युद्ध करनेके लिये आरूढ़ होतेथे अपनासब सामानकरके शस्त्र आदिक लेकर घोड़ों को दोहरी तंगसे कसकर और सबसेमिलकर ईश्वरका ध्यानकरनेलगे और बहुतसे मनुष्यताना देनेलगे कि देखें कल किसकासिर घोड़के नीचेआताहै और किसकी तलवार बहादुरी दिखातीहै और इसीके लिये सालोंसे बैठेखातेथे अब वहदिन आपहुंचा और जोलोग सदैव घरमेंबैठेढोल औरसितार बजायाकरतेथे युद्धके डंकेकाशब्दसुनकर व्याकुलहोगये और अपनेसाईसोंसे कहाकि रात्रिकोघोड़ों को कसकर तैयार रखना हम तो अपनी घरकीराह लेवेंगे हमसे तोयह न होगा कि वृथाप्राणदेवें आजहीमें तैयारी होतीहै कलतोलाखों मारेजावेंगे सईसों ने कहा कि ऐसा क्याहै जिसकी मत्यु होतीहै वही मारा जाता है और जो ऐसाचित्तहै तो सिपाहियोंमें नौकरीक्योंकीथी वेश्याके पीछेतबला बजाया करते या घरमें बैठे मलारेंगाते तबतो उसने झुलझुलाकर कहा कि ओउल्लू तू बड़ा बुद्धिमानहै जो नसीहतकर रहाहै हमने अपनी खुशी से सिपाहियों में चेहरानहीं लिखवावा है ईश्वर ईमान राय बेलवालेचीनीका नाशकरे कि उसने खरचीबटोर कर एक घोड़ा मोल लेकर मुझको

इस बलामें बखशीको खेतमें मरवाकर मेरानाम सवारोंमें लिखवा दिया है नहींतो हम कब इसबलामें पड़तेथे कि हम रुधिरदेखनेसे व्याकुल होजाते हैं कि एकदिन पिताने फस्त अपनी खुलवाई थी तो हम रुधिर देखकर पहरभर तक बेहोश पड़े रहे और कहीं एक कांटाभी गड़जावेतो एकपैसे की भांगखिलाकर निकालतेथे नहींतो ऐसेरोते कि निकटवासी लोग रात्रि भरन सोनेपाते और जबसे इस सेनामें नौकरहुये हैं सदैव भागने में आगे और मारनेमें पीछे रहेहैं हमने कभी युद्ध नहीं किया तूअभी थोड़ेदिनोंका नौकर है तू हमारा हाल क्याजाने आज सुनते हैं कि बादशाह सबदेशी सबको युद्ध में परीक्षालेवेगा इसलिये हमपहिलेही से अपना प्राणलेकर भागते हैं यही न कि पन्द्रहदिन की तनखाह काट लेवेंगे यानौकरी से छुड़ादेवेंगे तो बलासे अपनादिया सलाई बेंचकर खायेंगे परंतु युद्ध करने न जांयगे परंतु नौशेरवांका चित्त उसदिन ऐसा बढ़ाथा कि दोघड़ीरात्रि रहे मशाल बराबर से जलवाकर सब सरदारों और सेना समेत युद्धके खेतमें आकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ अमीर ने भी यह हाल सुनकर मुक़ाबिलसे संदूकमंगवाकर ज़िरह पहिनकर सबशस्त्र धारणकरके अशकर पर सवारहोकर युद्ध करने को आरूढ़हुआ तो सबसेनापति अपनी२ सेना लेकर अमीरके साथ नौशेरवां की सेनाके साथ युद्ध करनेको आरूढ़ हुये और कई सहस्र पंखे और महताबियां अमीर के घोड़े के आगे२ जलाये हुये और कदम २ पर महताबी छोड़ाते थे और असद चारसौ सिपाहियों समेत अर्धमुकट सिरपररक्खे और सोसुर्गका पर ऊपरसेखोंसे अमीर के घोड़े की बाग पकड़े हुये आगे२ चलाजाता था और सरदारों ने इस प्रकारसे अमीर को बीचमें करलिया था जिसतरह से अमीर मानो दूल्हा थे और सब सरदार लोग बराती विदित होते थे देखकर लोग अतिप्रसन्न होतेथे इसीप्रकार से बड़ी धूमधाम से जाकर युद्ध के खेतमें पहुंचे तो हर एक सरदारों ने अपनी सेना को युद्ध करने पर आरूढ़ किया तब मजदूरों ने झाल झाखर कांटा और बेलदारों ने फरुहेसे पृथ्वी को बराबर किया तब भिश्तियों ने मशक लेकर पानी से पृथ्वी को स्वच्छकिया तो यमराज ने आकर खेतमें डेराकियातो हर एकके डरके मारे प्राण निकलनेलगे और मंगलग्रह हर एक के मस्तक पर चमकनेलगा और भांड नरदार बड़े ज़ोरसे पुकारनेलगे कि जिसको आज बहादुरी दिखानाहो वह आकर युद्ध पर आरूढ़ होवे और मैदानमें अपनी बहादुरी दिखावेदोनों सेनाकेसिपाही व्याकुल होगये मृत्यु का बाजार प्रचण्ड हुआ और सब ने एकबारगी सन्नाटा मारलिया इतनेमें नौशेरवांकी ओरसे एकपहलवान सासानी कोहपैकर नाम अपनीसेनासे घोड़ाकुदाकर निकला और बादशाहके तखत को बोसादेकर आज्ञामांगी तब नौशेरवांने अति प्रसन्नताके साथ एक गिलास शराबदेकर पीठ ठोकर आज्ञादी मानो वह गिलास अखिरी था पीकर

मैदानमें आकर ललकार२ कर कहनेलगा कि ऐ मुसलमानों तुममें जिसको यमपुरी में मेरे हाथ से जानेकी इच्छा होवे वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे साहबकिरांने मंत्र पढ़कर अशकरको उसके घोड़े के बराबर लाकर एक डाट ऐसी मारी कि उसका घोड़ा डरकर पीछे हट गया और डरके मारे उसका रंग बदलगया तो अमीरसे कहनेलगा कि हमजा तू ऐसा बुद्धिवान और बहादुर होकर बादशाह से शत्रुता रखताहै उचित है कि चलकर बादशाहके पैरोंपर गिरकर अपना अपराध क्षमाकरा अमीर ने कहाकि तू युद्धकरने आया है या मुलहकराने युद्धकरने के लिये आया हो तो सीधे युद्धकरनहींतो अपनी सेनाकी राहले मैं ऐसापागलनहींहूं कि तेरी बातोंमें आऊं तबतो उस सिपाहीने बल्छी लेकर घोड़े को फेरा और अमीर ने भी बल्छी लेकर अशकर को चुचकारके उसके सम्मुख किया तो उसने एक बल्छी अमीर के ऊपर चलाई अमीरने उसको रोकलिया और दो दो हाथ चलाये कि अमीर ने घोड़े को फेरकर दाहिनी तरफ करके बल्छी मारनेकी इच्छाकी परन्तु वह भी सिपाहगरी की विद्यामें निपुणथा अपने घोड़ेको बाई तरफ फेरकर अमीर के ऊपर एक बल्छी चलाई तो अमीर कूदकर अशकरकी काठी से पीछे होरहे और उसके वारको रोककर फिर जीनपर होकर घोड़ेको फेरकर जो मारा तो उसकी बल्छी टूटकर आधी पृथ्वी पर गिरपड़ी और आधी उसके हाथमें रहगई अमीर की इस फेरको देखकर मित्र या शत्रु सबने प्रशंसा की अमरू ने जवाहिर लगे हुये उसनेजेमें देखकर दौड़कर उठालिया और चूमकर अपने झोरेमें रखकर कोहपैकरसे कहनेलगा कि वह टुकड़ाभी मुझको दे दे तू क्या करेगा मेरे काम आवेगा उसने जवाहिर की लालचसे कहा कि हे पापी एक तो तूने लेलिया और दूसरा भी मांगता है अमरूने कहा कि तू नहीं जान्ता कि गिरेपड़े का मैंस्वामीहूं तू खुशीसे दे देगा तो अच्छाही है नहीं तो मैं छीनकर तुझको लज्जित करूंगा तब वह क्रोधित होकर कहने लगा कि देखेंगे किसतरह से तू लेताहै यह कहकर उसी टुकड़े से चाहा कि अमरूको मारे इतनेमें अमरूने ढेलवास में एक पत्थर रखकर घुमाकर उसके हाथ में इस जोरसे मारा कि उसका हाथ सुन्न होगया और वह टुकड़ा पृथ्वी पर गिर पड़ा अमरू ने दौड़कर उसको उठालिया और अपने झोरे में रखकर कहनेलगा कि देख इसप्रकार से अहमकों को धोखादेकर लेतेहैं यह कहकर अपनी सेनामें जाकर खड़ा हुआ तब उसने लज्जितहोकर अमीर से कहा कि मैं तेरेसाथ बल्छीमें विजय न पासकूंगा इसमें तो धोखेकी बात होजाती है अब हमारी तुमारी तलवार से युद्धहो और इसमें अपनी २ बहादुरी दिखावें तब अमीर ने कहा कि इससे क्या उत्तम है यह तो मैं चाहताही था कि तेरी तलवार की भी बहादुरी देखूं इतनेमें उसने तलवार मियान से

निकाल कर चलाया तब अमीर ने उसको अपनी ढाल पर रोक कर अपनी तलवार खींचकर ललकारा कि ख़बरदार हो अब मैं भी वार करता हूं यह न कहना कि मुझको धोखा देकर मारा देख तलवार और वार इसको कहतेहैं यह कहकर एकतलवार उसके ऊपरचलाई हरचन्द उसने भी बहादुरी से रोका परन्तु वह ऐसी तलवार न थी कि वार खाली जावे ढालको काटतीहुई सिर से घोड़ेको काटकर पार होगई उसका पृथ्वी पर गिरना कि नौशेरवांने एक आहभार कर सेना से कहा कि ख़बरदार यह जाने न पावे जिसतरहसे बनपड़े मारडालो सेना आज्ञा पातेही टीड़ी के समान अमीर के ऊपर आगिरी तो मुसल्मानीसेनाभी ढालतलवार और बर्छी और तीरआदिकलेकर ईश्वरका नामलेकर टूटपड़ी और तलवार चलने लगी तो एकसायत में चालीस सहस्र सवार नौशेरवांके मारेगये शेष भागखड़े हुये कोई मुसल्मानीसेना का सामना न करसका अमीर ने उसीदिन चार कोसका पीछा किया था और कभी किसी सेना का पीछा न किया था और पलटती समय विजय का डङ्काबजवाते हुये बहुतसे शत्रुओंके सिपाहियों को पकड़ेहुये चले और उसदिन इतनामाल और असबाबपाया कि सबलोग धनवान होगये अमीर विजय पाकर अपने सरदारों समेत पलटकर अपनेक़िले में दाख़िल होकर नाचरंग करवाने लगे तत्पश्चात् अमीर से पूछा कि हमारे पीछे तुमपर क्या २ दुःखपड़ा है तब असरूने सब वृत्तान्त अमीर से कहा इतनेमें खाजे आशोब और बहलोलसे अमीरने बुलाकर पूछा कि तुमारी क्याइच्छाहै तुम किसकार्यको पसन्द करतेहो उन्होंने कहा कि हमलोगों कोसौदागरी करने की इच्छाहै तब अमीर ने कई सहस्र अशरफी देकर राहदारी का परवाना लिखकर जानेकी आज्ञादी तत् पश्चात् अमीरने असरूसेपूछा कि हमारे पीछेकभी लन्धौर और बहराम भी आयेथे या नहीं अमीर ने कहा कि मैंने कई पत्र उनको लिखा था परंतु न उत्तरही लिखा न कभी मेरी सहायताके लिये आये परंतु जब कोईशत्रु मुझपर सेनालेकर आता था तो एक नक़ाबदार नारंगी पोश आकर मेरी सहायताकरता था और उसमें हजारहोंमनुष्य मारेजाते थे और अनेकप्रकार से मैंने उससे पूछा कि तू कौनहै परंतु सदैवउसने यही उत्तरदिया कि अभीतक हमसे कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ कि अपना मुख किसीको दिखलावैं और जब मैंने अधिक हठ किया तो उसने कहा कि जब ईश्वर हमशा को लावेगा तो मेरा हाल उससमय तुमको विदितहोगा तब अमीर ने क्रोधितहोकर आज्ञादी कि आज से जो कोई लन्धौर और बहरामका नाम लेगा उसकी जबान निकलवा डालीजावेगी और उसको अतिलज्जितकरूंगा और जब अमीरके आने की ख़बर सब बादशाहों को पहुंची तो सब सौगातलेकर अमीरके पास

आकर हाज़िरहुये और अशरफी रुपये नेवछावर करके मंगनोंको बांट दिया और जो न आसके उन्होंने रुपये अशरफी सौगात समेत भेजकर अमीरको अतिप्रसन्न किया लन्धौर और बहराम भी सुनकर अतिप्रसन्न हुये लन्धौरने बहरामसे कहा कि हमको तुमको बीसबाईस वर्ष रहते व्यतीत होगये और अब तक इसदेश के शत्रुओं से निर्भय न हुये और अमरू के ऊपर बड़े २ शत्रुओं ने इसकाल में चढ़ाई की होगी परंतु हममेंसे कोई उसकी सहायता को न गया इससे निश्चयहै कि साहब क़िरां सुनकर अतिक्रोधित हुयेहोंगे इससे उचित है कि अब अमीर के क़दमों पर चलकर गिरैं और अपना अपराध क्षमाकरा कर प्रसन्नता प्राप्त करैं नहीं तो लोग नमकहराम कहैंगे संसार में लज्जित होंगे तब बहराम ने कहा कि यह तो अतिउत्तम है तुम आगेचलो मैं भी आता हूं और अमीर के चित्तको प्रसन्न करके आनन्द प्राप्त करता हूं यह कहकर बहराम तो चीन की तरफ चलेगये और लन्धौर अपनी सेनाको क़िलेपर स्थित करके अमीर के समीप जाकर हाज़िरहुआ तो अमीर ने बुलाकर अतिलज्जित किया तब लन्धौर ने अनेक प्रकार से अपने वृत्तान्त को वर्णन करके अपना अपराध क्षमाकराके बहराम की भी सिफारिश की पीछे को अमीर ने उसका अपराध क्षमा करके अपने समीप बैठाकर सेनापति का उपनाम देकर अतिप्रसन्न किया अमरूसे पूछा कि कुछ विदितहुआ कि नौशेरवां किस दिशाको गयाहै तब अमरूने कहा कि पूर्व की तरफ गया है वहांके अधिपतिने पांचलक्ष सेना समेत एक सेनापतिको नौशेरवांकी सहायताके लिये भेजा है सो ह वआकर आपके समीप पहुंच गया है थोड़ीसी सेना तलसा नदी के उसपारहै और कुछ इसपार उतरआईहैयह सुनकर अमीरनेभीआज्ञा दी कि हमारी सेनाभी चलकर नदी के समीप युद्धपर आरूढ़ होकरपड़े और नाच रंगका सामान इकट्ठा किया जावे यह आज्ञा पातेही सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर युद्ध करने को आरूढ़ होकर अमीर के साथ होकर बड़ीधूम धामसे जाकर नदीके किनारे उतरे और नाचरंग होनेलगा इतनेमें सिपाहियोंने आकर खबरदी कि मुक़बिल वफादार हरमुज़ ताजदार और बख़्तकको बांधकर लिये आताहै यह सुनकर अमीर अति प्रसन्न हुये विदित हो कि जिस दिन युद्ध अतितीक्ष्ण हुआ था उसी दिन हरमुज़ ताजदार और बख़्तक क़िलेको खाली जान-कर पांच सहस्र सवार समेत मलिका मेहरनिगारके लाने के लियेगये थे तो वहां मुक़बिल चालीस सहस्र सवार समेत किलेमें बैठाथा उसने पांच सहस्र सवारोंको मारकर उन दोनोंके हाथों को बांधकर अमीर के समीप पहुंचाया तो अमीर अति प्रसन्नहुये साहब क़िरांने हरमुज़ से कहा कि जो आप मुसल्मान होवें तो यह राज आपही के लिये है

प्रसन्नताके साथ मुसलमान होकर गद्दीपर बैठकर राजधानी कीजिय बख़्तक ने बिचारा कि हरमुज़ तो बचभी जावेगा परन्तु मेरा प्राण न बचेगा इस विचारसे हरमुज़को स्वीकार करनेकी सम्मत दी जिस समय हरमुज़ और बख़्तक प्राणकी रक्षाके लियेईर्षा चित्तमें रखकर मुसलमान हुयेतब साहब किरांने हरमुज़को राजगद्दी पर बैठाकर बख़्तक को सेनापति बनाकर अति प्रसन्न होकर प्रसन्नता के डंकेबजवाने लगे और नाचरंगकी सभाबन्द हुईतीन दिवसके पश्चात् चारघड़ी दिन रहे अमीरअति प्रसन्नताके साथबनकी हरियाली देख रहेथे कि आकाशसे तीन मोर आकर उसी बनमें उतरे अमीरने देखकरमुकाबिल बफ़ादार और अमरू यार को उनके देखने के लिये भेजा परन्तु वे जातेही लोप होगयेतो देखनेवाले इसहालको देखकर बड़े सन्देहमेंहुये लिखनेवाला लिखता है कि वे मोरनथे परन्तु आसमानपरी थी जोकि परदेक़ाफ़से सेना समेत आकर दो कोसकी दूरीपर उतरकर हरियाली देखकर चित्तप्रसन्न करनेको मोरकाभेष धारण करके आई थी उसीने अब्दुल रहमान आदिको अमीरके पता लेने को भेजाथा थोड़ी समय के बाद आकर अमीरने प्रसन्न होकर अपने समीप कुरसीपर बठालकर अति प्रसन्न करके सर्वव्रत्तान्त आसमान परीके आनेका पूछा और हरमुज़ ताजदार आदि सेनापतियों से आसमान परी के आनेका सर्वव्रत्तान्त कहकर अमरू से कहा कि अब प्रसन्न हो आसमानपरी तुम्हारे लिये बहुतसामान परदेक़ाफ़से लेआई होगीअमरू यह हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ और रात्रि भर नाचरंग हुआ किया प्रातःकाल होतेही अमीर तैयार होकर आसमानपरी के पास जाने को आरूढ़ हुये सब सेना के सरदारों समेत अब्दुल रहमान नें पहिलेही से सलासल परी जाद को आसमानपरी के पास भेज दिया था उसने जाकर आसमान परीसे कहा कि अमीर बड़ी धूम धाम से आपकी मुलाक़ातको आते हैं तब उसने अति प्रसन्न होकर अपने डेरे से क़िले तक बाग आराम बना कर रचदिया जिससमय अमीर बारगाह सुलेमानी पर पहुंचेतो सबको बाहर छोड़कर आप खेमेके भीतर गयेतो आसमानपरी क़रीशा को साथ लेकर सरदारों समेत अमीर की अगवानी को उठकर आई और हंसकर अमीर से कहा कि आपतो मुझको छोड़ कर चले आये थे परन्तु मैं आपही आई और मेहरनिगार के बिवाहका सामान भी साथ लेआईहूं तब अमीरने पूछा कि क्या २ लाईहो हमको दिखलाओ आसमान परीने कहा कि बारगाह सुलेमानी, नक़ारखाना सुलेमानी चार बाजार आदि और २ प्रकारके जवाहिर, अमीरने अतिप्रसन्न होकर करीशाको छातीसेलगाकर आसमानपरी कोभी प्यारकरके सबसरदारों से कुशल आनन्द पूछकर अति प्रसन्न किया तब आसमान परीने

अतिप्रसन्नहुई और एक कुरसी पर बैठकर बातें करनेलगे तब हमज़ा ने आसमानपरी से कहा कि अमरू जिसकी प्रशंसा हम आपसे कियाकरते थे वह भी आपके समीप आनेकी इच्छा रखता है आसमानपरी ने कहा कि अच्छा बुलवालेओ अमरू जब खेमेके अन्दर गया तो सिवा अमीर के और किसीको न देखा तो बड़े सन्देह में हुआ कि ऐसा खेमा है परन्तु सिवा अमीर के और कोई दिखाई नहीं पड़ता तब अमीर से पूछनेलगा कि कृपा करके मुझे भी मलिका का स्वरूप दिखलाइये कि जिसके स्नेह से आप अठारह वर्ष परदेक़ाफ़ में पड़ेरहे तब अमीर ने कहा कि तू सलाम क्यों नहीं करता आसमानपरी तख़्त पर बैठी है अमरू ने कहा कि मुझको तो दिखाई ही नहीं पड़ती क्या मैं कुरसियों और तख़्तको सलाम करूं मेरा ऐसा सलाम नहीं है तब आसमानपरी ने उसके दाहने नेत्र में सुलेमानी सुरमा लगा दिया विदित हो कि दाहने नेत्र में सुरमा लगाने से देव दिखाई पड़ते हैं और बायें नेत्र के लगाने से परी दिखाई पड़ती है अमरू के दाहिने आंख में सुरमा सुलेमानी जो लगाया तो अमरू को देवों का स्वरूप दिखाई पड़ने लगा तब अमरू ने अमीर से पूछा कि इसमें आपकी स्त्री कौन है कृपा करके दिखलादीजिये अमीर अमरू की बातों पर हंसनेलगा और मलिका भी हंसते २ तख़्तपर लोटगई और आज्ञा दी कि इसके बायें नेत्र में भी सुरमा लगा देवो अब इसको मेरा स्वरूप दिखादो तब बायें नेत्र में सुरमा लगा देने से परियों को देखने लगा तो देखा कि एक तख़्त पर एक स्त्री अति स्वरूपवान बैठी है और एक युवा लड़की अमीर के स्वरूप की उसकी गोद में है जिसके स्वरूप के देखने से लोग बड़े सन्देह में होते थे चित्त में विचार किया कि विदित होता है कि यह लड़की अमीर की है तख़्त के समीप जाकर मलिका को सलाम किया और साहब क़िरां से कहने लगा कि हे अमीर आसमानपरी यही है जिसके लिये अठारह वर्षतक आप दुःख में पड़े रहे मैं तो ऐसी स्त्री से जाजरूर का लोटा भी न रखवाता न इसके छुये बर्त्तन में भोजन करता यह सुनकर मलिका अति दुःखित हुई तब अमीर ने जिन्नीभाषा में कहा कि तुम दुःखी न हो यह तो इसकी एक छोटी सी हंसी है अभी जो आप इसको कुछ देवें तो देखिये कि कैसी २ बातें आपको सुनाता है और मैंने क़ाफ़ में इसका सब हाल पहिले ही कहा था यह बड़ा दुष्ट है कि जिसकी बातों से लोग बड़े सन्देह में होते हैं तब आसमानपरी ने आंसू पोंछकर एक सुनहली खिलअत और बहुतसा द्रव्य समेत अमरू को दिया उसने खिलअत को पहिनकर सलाम किया और चुटकी बजा बजाकर इस शेर को अपने मसखरापन से गाने लगा ॥

दोहा ॥

क्या तेरे हुस्न की तसवीर है अल्लाह । नूर हूर की तरफसीर है अल्लाह ॥

और अमीर की तरफ देखकर कहने लगा कि ये साहबक़िरां मैं पहलेहीसे जानताथा कि कोई अप्सरा आपको मिलगई है कि जिसको छोड़कर आप नहींआसक्ते थे पहिले मैं जानता था कि मेहरनिगारही केवल संसारमें स्वरूपवानहै परंतु इस मलिका के सामने उसकी सुन्दरता कुछ नहीं है फिर क्यों नहो कहां मनुष्य और कहां परीज़ाद आसमानपरी अमरू की बातों पर हंसने लगी और बहुतसा जवाहिर और उत्तम२ वस्तु ज़ाफ़का अमरूको देकर निहालकरदिया तत्पश्चात् आसमानपरी ने अमीर के सेना के सरदारोंको बहुतसी उत्तम २ वस्तु देकर अति प्रसन्नकिया और अमीरसे कहा कि मेहरनिगारके विवाह का सामान अतिशीघ्रही इकट्ठाकरो यद्यपिमैं परदेक़ाफ़से सब सामान लेकर विवाहके लिये आईहूं परंतु इसदेशकीनीतके सामान अवश्यहोना उचित है और मेरी इच्छा है कि विवाह विधिपूर्वक होवे मुझको हर प्रकार स्वीकारहै तब तीनदिनबसके पश्चात् चौथेदिन अमीर अपनीसेना में आये चारदिन तक आसमानपरी से न छूटनेपाये तब मेहरनिगारसे जाकर सबहाल कहा उसने सिरझुका लिया और कुछ उत्तर न दिया तब अमीर ने बाहर आकर हुरमुज़ ताजदार से सब हाल कह कर डंका विवाहका बजनेकी आज्ञादेकर सामान इकट्ठा करवानेलगे और एक विनयपत्र इस समाचार का बादशाह नौशेरवांको लिखकर भेजा कि आपतो मेहरनिगारको मुझको देचुके थे परंतु आजतक ऐसे उपद्रव रहे कि विवाह करनेकी विधि नहोसकी सो अब तक जोहुआ सो हुआ परंतु अब मैं विवाहका सामान करता हूं उचितहै कि आपभी आकर सेवकके स्थानको अपने पदोंसेपवित्रकरैं अमरू पत्रलेकर बादशाह के समीप गया जब बादशाह ने पत्रको पढ़ा तो अमरू से पूछा कि मैंने सुना है कि आसमानपरी परदेक़ाफ़ से मेहरनिगार के विवाह के लिये सामान लेआई है उसने कहा कि सत्यहै इतने में एक पत्रिका हुरमुज़ और बख़्तककी पहुंची कि आप विवाहकरनेकी आज्ञा अवश्य देदीजियेगा कि आपकी बातभी रहजावे और अमीर भी प्रसन्नहोजावेगा और जो आप न आज्ञा देंगे तोभी वह विवाहकरैगा और आपकी बात वृथा जावेगी तब बादशाह ने सब सरदारों को बुलाकर हुरमुज़की पत्रिका पढ़कर सुनाई तो सबने उसकी सम्मति को पसन्द किया नौशेरवां ने कलमदान मंगवा कर अमीरको पत्रिका के उत्तर में विवाह करने की आज्ञादी परंतु जाने से इनकार किया उससमयमें अकसर सेनापतियों ने कहा कि हमने तो ऐसा विवाह फ़क़ीरों का भी नहीं देखा न कि अमीर का विदितहोता है कि बड़े २ लोग अपने आपही विवाह कर लियाकरते हैं तब बुज़ुरचमेहर ने कहा कि जो आपलोग जावेंगे तो अमीर प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर तमाशा दिखावेंगे दोचार दिन

तमाशादेखकर चले आइयेगा बहुतदिन तक वहां न वासकीजिये और नैाशेरवांसे कहा कि जोआप तमाशादेखनेकी इच्छा रखतेहों तो अमरू को कुछ इनामदीजिये कि वह आपको अपने स्थानमेंबैठालकर तमाशा दिखावेगा बादशाहने इसको स्वीकार करके अमरूसे कहा कि हमसाधु का भेष धारणकरके आवेंगे तब अमरूने स्वीकार किया पीछे बादशाह ने अमरूको खिलअतदेकरबिदाकिया और बुजुरुचमेहरभी अमरूकेसाथ होकरगयालिखनेवालालिखताहैकिअमीरअपनेपत्रका उत्तर विधिपूर्वक पाकर अति प्रसन्न हुआ और हर एक मनुष्यको पत्र दिखला कर बुजु-रुचमेहर से मिलकर उनदोनों पत्तों का रस जो हजरतखिजर ने दिये थे अपने हाथसे नेत्रोंमें टपका कर नेत्रोंको तारागण के सामान रोशन करदिया तब बुजुरुचमेहर अमीरकी अतिप्रशंसाकरनेलगा और नैाबत विवाह की बराबर से बजने लगी और देव और परीजादों ने मलिका आसमानपरीकी आज्ञासे बारगाहसुलेमानी को एक बड़ेटीले पर स्थित करके सब सामान विवाहका इकट्ठा किया और अपने स्थान परजवा-हिर आदिक चुनकर अतिअपूर्व स्थान बनादिया और नक्कारखाने सुले-मानी में नैाबत विवाह की बजने लगी तब मलिका आसमानपरी ने मलिका मेहरनिगारको एकान्तमें लेजाकर दुलहिनबनाकर सब विवाह की सामग्री विधि पूर्वक मंगवाकर इकट्ठा किया तत्पश्चात् बरात के दिन अमीर खिलअत शाहाना पहिनकर अशकर देवजादे पर सवार हुये और सब सेनापति आदि साथ बराबरसे जवाहिर लुटातेहुये घोड़े के चारोंतरफ जुटकरचले और बारहसहस्र भिन्न पनशाखेऔरलालटेन आदि रोशन किये हुये घोड़े के आगे चलेजाते थे और चालीस सहस्र भिन्न कागजकी आतशबाजी छुड़ाते हुये और बीस सहस्र तख्त उड़ने वाले जिसपर परियां गाती बजाती थीं उड़ेचले जाते थे और ऊंटोंपर नैाबत सुलेमानी बजती थी इसीप्रकारसे ऐसीधूम धामथी कि नकिसी ने कभी पहिले देखी होगी न देखेगा और अमरू चार सहस्र चारसौ चैावालिस मक्कार साथ लिये सुनहली पोशाक पहिने सवारीका प्रबन्ध करते चले जाते थे और घोड़े इस प्रकार से कूदते जाते थे कि लोग देखकर अति अचंभित होते थे अशकरदेव जादा उस समय इसप्रकार से कूदता फांदता चारोंतरफसे चलताथा किकोईसुरङ्गउड़ाकताहै लोग देखकर बड़ी प्रशंसा करते थे पश्चात् को जब इस प्रकार से बरात बड़े धूम धामसे सुलेमानी बारगाह से पहुंची तो अमीर घोड़े पर से उतर कर हुरमुज ताजदार के तख्तपर बैठकर परियों का नाच देखने लगा मलिका आसमानपरीऔर करीशा अपने मुसाहबों समेत मेहरनिगार के समीपजाकर उसकोपाप और जवाहिर काफके जिसको शाहनशाह काफके सिवा और किसीने न देखाथा मेहरनिगारको पहिनाकर नेव-

छावरकिया उस शोभा को देखकर आसमानपरी ने मेहरनिगार का हाथ चूमकर दुलहिन बनाकर बहुतसा जवाहिर निछावरकरके बहुत सी जवाहिर की डालियां रखदिया उससमय की सुन्दरता को आसमानपरी देखकर अतिमोहितहोकर बिवाहके कारोबारमें प्रवेशितहुई अब नौशेरवां का वृत्तान्त सुनिये कि सात मनुष्यों समेत साधु का भेष धारणकरके बिवाहका तमाशा देखनेके लिये गया तबअमरूने नौशेरवां को पहचानकर कहाकि आपचलकर सभामें बैठिये और तमाशादेखिये नौशेरवां ने मंजूर न किया अमरू ने कहा कि मैं आपको ऐसे स्थानपर बैठालूंगा कि आप सबको देखें और आपको कोई न देखसके इसबातको बादशाह ने मानलिया और अति आनन्द के साथ बादशाह अमरूके साथहोकर बारगाह सुलेमानीमें आया तो अमरूने जवाहिर की कुरसियोंपर बड़ीप्रतिष्ठाके साथबैठाया और साकीअर्थात् शराब पिलानेवालों को मदिरा बांटनेकी आज्ञादी कि सबको अच्छीतरहसे पिलाओ नौशेरवां चार घड़ी के पश्चात् उठखड़ा हुआ और अमीर को आशीर्वाद देकर कहनेलगा कि बाबा हम साधुहैं सैरकरनेको आयेथे अब बिदाहोते हैं कृपाकरके प्रसन्नता के साथ बिदाकीजिये तब अमीरने अय्यारीभाषा में अमरू से कहाकि इनको चारताकके ऊपर लेजाकर बैठाओ और ऐसी युक्तिकरोकि प्रसन्नतासे बादशाह तमाशा देखें अमरूने नौशेरवां को चारताक के ऊपर बैठालकर जो सामान कि उचित थे रखकर उनके चित्तको अति प्रसन्नकिया तत्पश्चात् चार घड़ी रात्रिरहे ख्वाजे बुजुरुच-मेहरने अमीर का बिवाह मेहरनिगार के साथ मतानुसार करदिया प्रातःकाल होतेही महलमें दुलहे की पुकारहुई तो अमीर जो महल के पहिले दरवाजे पर पहुंचे तो आसमानपरी ने दरवाजा बन्दकर लिया और कहा कि दरवाजा उसी समय खुलेगा जिस समय मेहरनिगार की न्यवछावर दे लेओगे तब अमीर ने मुक़बिलवफ़ादारके चालीस हजार सवार जरीकम समेत मेहरनिगार के बदले में दियातब आसमानपरी ने दरवाजा खोला फिर दूसरा दरवाजा बन्दकिया इसी प्रकार से सात दरवाजों पर सातवस्तु आसमानपरी ने मेहरनिगार के लिये लीं और अमीर ने मिश्रदेश दीं तब आगे जाने पाये और अमीर मेहरनिगार को दुलहिन बनकर मसनंद पर बैठेदेख अति प्रसन्न हुये ईश्वर का धन्यवाद देनेलगे तत्पश्चात् मेहरनिगार का हाथ पकड़ कर छपरखट पर ले गये और गोदमें बैठाकर स्नेह की बातें करनेलगे एक घड़ीके पीछे दोनोंमें हाथ पैयांहोनेलगी तब अमीरने दमदिलासा देकर अपनी इच्छापूर्णकी और ईश्वरकीकृपासे उसीरात्रिकोगर्भरहगया प्रातःकाल स्नानकर वस्त्रधारणकरके बारगाहसुलेमानी में आकर बैठे और दिनभर आनन्दरूपी तमाशादेखतेरहे रात्रिको मलिका आसमान

परी के साथ भोगकरने को गये और उसके दूसरे दिन अलिका रैहान परी के साथ भोगकिया तीसरे दिन समनसीमापरी के साथ भोगकिया इसी प्रकारसे हरदिन सब स्त्रियों के साथ भोगकरने से आनन्द पाते रहे चालीस दिन तक नाचरङ्ग के सिवा और कुछ कार्य न हुआ एक दिन अमीर चारताककीसैरको सवार होकर अरदली समेत बाहरगये थेकि संयोगसे आकाश से एकदेव रदखातिर का आई जिसको अमीरनेमारा था आकर अमीरको अकेला देखकर मारनेको दौड़ा अमीरने मारदो-क उसको पकड़कर दोभागकर फेंकदिया इसबलको देखकर सबलोग बड़े आश्चर्य में हुये नौशेरवां बेहोश होकर बड़ी देरतक पड़ा रहा अमीर ने गुलाब आदि छिड़ककर चैतन्य किया अमीरके पास विदाहोने के लिये साधुकाभेष धारणकरकेगया तबअमीरने नौशेरवां से कहा कि अग्निका पूजनछोड़कर ईश्वरभक्त हो हमतुम्हारीबड़ीसेवाकरेंगे तबबादशाहनेकहा कि हमारे यहां ऐसीबात नहीं है कि अपना धर्मछोड़कर दूसरेकाधर्म स्वीकार करें पीछेसे अमरू ने बहुत सी सौग़ात बादशाह को सरदारों समेत देकर विदाकिया तब बादशाह ने अपनीसेनाको इकट्ठाकरकेदूसरे दिन लड़ायनकी थाकी तत्पश्चात् अलिकाआसमानपरीने भीसब सौ-ग़ात क़ाफकीअमीरकोदेकर विदामांगीतबअमीरनेगलेसे लिपटकर कहा कि जिसप्रकारकि हमतुमसे दुखितथे वैसेही अबप्रसन्नहुयेअबजिससमय तुमहमको बुलाओगी उसीसमय जो किसी युद्धमें नहोंगे तो चलेआवेंगे औरतुम्हारा तो यरहा है जबचित्तचाहे तभीचली आना और क़रीशा के सुखको बूझकर जो वस्तु उसके देनेके योग्यथी देकर विदाकिया और रैहानपरी और समनसीलापरी भी अमीरसे विदाहोकर अलिकाके साथ हुईं साहब किरां सब देश पूर्वी शाहतेग नग़रवी को देकर उसदेश का उसको स्वामी बनाया परंतु वह अपनाकारिन्दा देशमें छोड़कर अमीर के साथ हुआ अमीर दूसरे दिन अगवानी खेमा भेजकर मक्के की तरफ रवाना हुआ और अमरू बिनहमजा नामसे अपने पुत्र कोजोकि अलिका ना हिदमरहोम केतनसे उत्पन्न हुआथा अपनेस्थानापन्न करके सबकारो बारछोड़कर मेहरनिगार केसाथ भोगबिलास करनेलगे एकदिन अमरू बिनहमजा सभामें बैठा शराब पीरहा था अकस्मात् आदी अक़रब ने नेत्र उठाकर लन्धौर से कहा कि तुमको भी इतनी सामर्थ्य हुई कि मेरी कुरसी पर बैठने लगातब लन्धौरने कहा कि तू चारही प्याले में घबड़ा गया और मुझसे क्रोधित होकर बातें करताहै और मेरी युक्ति से नहीं डरताहै और मैं तो कुरसी पर अमीरकी आज्ञासे बैठाहूं आदीने फिर तड़ककर कहा कि नहीं अमीरने तुमको मेरी कुरसीपर बैठने की आज्ञा नहींदीहै तूझूठ कहताहै तब लन्धौरने कहा कि आदीतूदो तीन गिलास शराब पीने से पागल होगया इतना सुनतेही आदीने उठकर

एक घूसा लन्धौरके सिरपरमारा तब लन्धौरने हंसकर कहा कि आदी क्यों दुष्टपना करता है डाममें आ सूल न जा अमरू के पुत्र हमजा ने इस वृत्तान्त को देखकर आदी को ललकार कर कहा क्यों दुष्टपना करता है आदी ने नशे के कारण चिल्लाकर कहा तुमको इससे क्या प्रयोजन है मैं और लन्धौर समभालूंगा आपचुप रहिये यह सुनकर अमीरजादेने उठकर एकघूसा ऐसे जोरसे लगाया कि पृथ्वीमें लोट गया तब आदी अपनाशिर पीटकर कहनेलगा कि जब अमीरजादा इसप्रकारसे बेकुदरमती चाहैगा तब हम इस राज सभामें किसप्रकार रहि सकैंगे जो कि यह बात सबको पसन्दआई तब सभामें शोरकरनेलगे तब अमीर व्याकुलहोकर बाहर चलेआये और अतिदुखीहोकर अपने बेटेसे कहने लगे कि खबरदार ऐसी बात कभी न करना वे दोनों आपस में समझा लेते अमीरजादेने क्रोधित होकर कहा जो फिर कदाचित् आदी ऐसा काम करेगा तब फिर कालकोटि के नगरसे निकलवा देऊंगा अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि गालनमार नहीं तोमैं मार डालूंगा अमीर-जादेकी भी युवा अवस्था थी पिताकी बातों पर क्रोधित होकर कहने लगा कि किसको सामर्थ्यहै कि मुझेमारै तबतो अमीर अग्निके समान जल उठे और अमरू का हाथ पकड़कर युद्धके मैदान में बापबेटे दोनों घोड़े परसवार हो युद्ध करने को आरूढ़ हुये और सब लोग बाप बेटों का युद्ध देखने लगे तब अमीरने अमरूको आगेबुलाया उसने इच्छाकी कि चलकर युद्धकरें परन्तु उसका घोड़ा आगे न बढ़सका तब अमीर ने कहा कि हेनादान घोड़से उतरसीख तबतो वह घोड़े परसे उतर पड़ा और अमीर भी उतरपड़े कुश्ती लड़नेपर आरूढ़हुये अमरूने अमीर के कमरबन्दको पकड़कर यथाशक्ति घुमाया परन्तु अमीरकापैर न उठसका तब लाचार होकर छोड़दिया परंतु अमीरने अमरूके कमरमें हाथडाल कर सिरतक उठाकर धीरेसे पृथ्वीपर रखदिया और उसको मुखकाबोसालिया तब अमरूने भी अमीरके पैरोंपर सिर झुकाकर अपना अपराध क्षमा कराया अमीर ने उसको छाती से लगाकर कहा कि हे-पुत्र इनहीं सरदारोंहीसे मेरानाम है इनकी आज्ञामाननी उचित है और इनको अनेक प्रकार से प्रसन्न रखना उचित है तब अमीरजादा शरमिन्दा होकर फिर सभा में बैठा लिखने वाले लिखते हैं कि नवेंमास अमीर और अमीरजादेके स्त्रियोंके तनसे पुत्र उत्पन्नहुये इस हालको सुनकर अमीर अतिप्रसन्नहुये पोतेका नाम तो सादान रक्खा परंतु पुत्रका नाम नरक्खा और अमरूसेकहा कि तुम नौशेरवांसेजाकर खबरदेवो और उससे कहो किनाम भी आपही रक्खेंअमरू थोड़े दिनोंके पश्चात् मदायनमें पहुंचा औरनौशेरवांसे सलामकरके कहाकि नातीको ईश्वर कृपाकरे और अमीर ने विनय करके कहाहै कि आपहीनामभी

रक्खे बादशाह इसवृत्तान्त कोसुनकर अति प्रसन्नहुआ और अमरू को खिलअत देकर चालीसदिनका जलसाहोनेकी आज्ञादी और सामान सभाका सब इकट्ठा किया और उसका नाम कबाद रक्खागया और मेहरंगेजबानू ने इस वृत्तान्त को सुनकर अमरू को अपने समीप बुला कर अमीर और मेहरनिगार की कुशल और अपने नातीके स्वरूप को पूछकर अमरूको खिलअतदेकर बिदाकिया तब अमरूने अति प्रसन्नता के साथ वहांसे चलकरअमीरके समीप आकर सबवृत्तान्त आदिसेकहा जब सादान और कबाद चार२वर्षकेहुये तो अमीरनेउनदोनोंलड़कोंको अमरूको सौंपकर आज्ञादी कि इनदोनोंको अच्छीतरहसे अदब तमीज सिखावो और जिससमय पांचवर्षके हुयेतो देखनेवाले देखकर कहते थे ऐसेसुन्दर और तमीजदारलड़के कभीदेखनेमें नहींआयेकिअभीसे इनकी बहादुरी प्रसिद्ध होती जाती है प्रातःकाल और सायंकाल को लेकर खिलाते थे लिखनेवाला लिखताहै कि जिस समय जोपीनने कबाद के उत्पन्नहोनेका वृत्तासुना तो उसने नौशेरवांकोएकबिनयपत्र लिखा कि हमजानेजो अबतक आपकी गद्दीनहीं ली तो कोई पुत्र उसके न थाअबजो आपकीपुत्रीसेपुत्रहुआहै तो अवश्यहैकिहमजाआपकीगद्दीछीनकर अपने पुत्रको बैठावेगा इससे उचितहैकि आप बहमनके समीप जाकर उसको साथ लेकर हमजाको पराजयकरिये आगे आपकी बुद्धि प्रबल है जैसा उचित होवे सो कीजिये नौशेरवांने जोपीनके पत्रको पढ़कर कहाकि हमजा मुझसे ऐसा कभी नकरेगा बुजरुचमेहरने कहाकि सत्यहै ऐसा ही होगा परन्तु बख्तकने जानेकी सम्मति दी पीछेको नौशेरवां ने युद्ध का सामान इकट्ठाकरके बहमनके समीप जाने की यात्रा की जब वहां पहुंचे तो बहमनने अतिप्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहोकर सर्व वृत्तान्त नौशे-रवांसे पूछातो उसने सबकहकर अन्तको कहाकि किसी युक्ति से अति शीघ्रही युद्धका सामान इकट्ठाकरके चलो तब बहमनने स्वीकारकरके अमीरको लिखाकि तू बहादुरी लोगोंको देखाता फिरताहै सो आकर मुझको भी अपनी बहादुरीदिखा अमीर पत्रकोदेखकर जलउठा और कहनेलगाकि अबतक तो यह इच्छा न थी परन्तु अब किसी प्रकारसे न छोड़ूंगा तब अमीर ने शुभसायत पूछकर कबाद को गद्दीपर बैठाकर सब सेनापतियों और देशबासियोंसेनजरें दिलवाकर बहुतसा जवाहिर अशरफियां भिक्षुक आदि को देकर चालीस दिवसके नाच रंगके सभा कराने के पश्चात् बहमनके तरफ यात्राकी और पहाड़के समीप जाकर डेरा खड़ाकरके पड़े बहमन ने पहिलेही से हुमान नाम अपने पुत्रको बहुतसी सेना समेतपहाड़की रक्षाकरनेके लिये भेजाथा सो जब आदी-अकरबने पहुंचकर इच्छाकी कि पहाड़परचढ़जावे कि इतनेमेंहुमान पहाड़पर से पत्थरमारने लगा इसकारण आदीअकरब का पैर आगे न

बढ़सका कि इतनेमें असकू पुत्र हमजा सनिक और सेनापति समेत आकर पहुंचगये और देखाकि पहाड़परसे पत्थर गिरतेहैं और आदी चुपचाप नीचे खड़ाहै तब वेतीनोंमिलकरबड़ी बहादुरीसे ढालसे रोकते हुयेजाकर पहाड़पर पहुंचे सहस्रों सेना कोमारकर हुमानको उठाकर पृथ्वीपरदेमारकर छातीपर खंजररखकर कहनेलगाकि अबमुसल्मानहो नहीं मारडालता हूं तब उसने कहाकि दयाकरके इस समय मुझको छोड़दीजिये जब मेरापिता मुसलमानहोगा तोमैंभी हूंगाअसकू पुत्र हमजाने उसको छोड़दिया तो उसने जाकर सब हाल बहमन से कहा बहमनने क्रोधित होकर कहाकि बिदित होताहै कितुझे देवीर्य्यसे नहींहै जो तलवारसे डरताहै और लज्जितहोकर चुपनहींरहता फिर आकर सम्मुख होकर मुखदिखाता है कि इतनेमें सामने से एकसेना की गरद उड़ती हुई दिखाईपड़ी तत्पश्चात् बिदितहुआ कि साहबक्रिरां अपनी सेनालेकर आतेहैं औरसहस्रों झंडे दिखाईपड़े तब बहमनने कहा कि हे बखतक मैंनेअमीरका नामतो सुनाहै परन्तु स्वरूपआजतक नहींदेखा सो तूकिसीप्रकार से हमको दिखादे तब उसनेकहा कि आपसवार होकर मार्गमें खड़ेहूजिये मैं अमीर को दिखलादूंगा तब दोनों सवार होकर मार्गमें जाकर खड़े हुये तो इतने में पहिले झंडे के छायामें जिसमें सर्प की मूर्तिबनी थी आदीअकरबअपनी सेनासमेत आकर निकला तो बहमनने पूछा कि हमजा यही है तब बखतक ने कहा कि नहीं यह तो अमीर की सेनाका सेनापति है इसी प्रकार जितने सरदार निकले सब को बखतक ने बहमन से बतलाया सब सेनापतियों के पीछे अलम की सवारी निकली तब बखतक ने कहा कि जो अलक का नाम आपने सुनाहोगा वह यहीहै जिससे बादशाह समदेश्वी भी डरते हैं तत्पश्चात् शाहजादाक्रबाद का तख्त सूर्यके सदृश पृथ्वी पर आकर निकला तो बखतक ने बहमन से कहा कि कबादपुत्र हमजाका यही है तत्पश्चात् अमीर अशकर देवजादे पर सवार बड़ीधूमधाम से आकर निकला तो बखतकने बहमन से कहा कि अमीर यही है बहमन यह सुनकर बड़े सन्देहमें हुआ कि किसप्रकार से इसने इसीस्वरूप से परदेकाफके बड़े२ देवों और बलवानों को मारा है तब बख्तक ने कहा कि युद्ध के समय आपही बिदितहोजावेगा तब उसने कहा कि आज तो बड़ाथकामांदा आयाहै कलहमहैं या अमीर ऐसा लज्जितकरूं कि वहभी जाने अमीर ने दूसरेदिन एकपत्रमें सब वृत्तान्त लिखकर लिखाकि हम तुम्हारे बुलाने से आयेहैं सो तुम अतिशीघ्रही नौशेरवां बखतक और चोपीन को बांध कर हमारे पास भेजकर तुमभी कारलेकर हमारे समीप आकर हाजिर होकर मुसल्मानी स्वीकार करके सेवकाई करो नहीं तो आकर दण्ड दूंगा परंतु इसपत्रको असकूके हाथ इसकारण से न भेजाकि वह जाकर

बहमनको अतिलज्जितकरेगा इसविचारसे अपने पुत्र अमरूके साथ एक बुद्धिवान पुरुष को पत्र लेकर भेजा वह जब पत्रलेकर थोड़ीदूर गया तो मार्गमें देखा कि एक मनुष्य अमीर की दोहाईदेरहा है इसने पूछा तू कौनहै तो उसने कहा कि आपके घोड़ोंका रक्षकहूं सो घोड़ोंको यहां चरारहाथा बहमन के सिपाही घोड़ोंको लियेजाते हैं अमरूने पूछाकि कहां जातेहैं तब उसने बतलादिया तब वह घोड़ोंके टापके पतेसे दौड़ा समीपजाकर एक ऐसी डाटलगाई कि सब डरकर भागगये परंतुकेवल हुमान अमरू को अकेले देखकर खड़ाहोकर युद्धकरने पर आरूढ़ हुआ और जब अमरू समीप पहुंचा तो पूछने लगा कि तू कौनहै औरकहां से आताहै अमरूने कहा कि हमजा का पुत्र और तेरे प्राणका गाहक हूं हुमान यह सुनकर तलवार लेकर अमरू के ऊपर दौड़ा अमरू ने रोककर उसको पकड़ कर पृथ्वी पर दैमारा और खञ्जर पेट पर रख कर कहने लगा कि या तो मुसल्मान हो नहीं तो मार डालूंगा हुमान बहुत २ करके कहनेलगा कि हे अमीरके पुत्र इससमय तू मेरा प्राण छोड़ दे जिससमय मेरा पिता मुसल्मान होगा उसी समय मैं भी धर्म स्वीकार करके आपकी सेवकाई में रहूंगा आपकी आज्ञासे विरुद्ध कभी नहूंगा तब अमरू पुत्र हमजा उसकी छाती परसे उठकर खड़ा होगया उसने सलामकरके पूछा आप कहां को जाते हैं और कहां से आतेहैं उसने कहाकि अमीरका संदेसालेकर तेरेपिताके पासजाताहूं हुमानने कहाकि इससमयके युद्धको किसीसे प्रसिद्ध नकरना तब उसने स्वीकार किया तब हुमान अपने पिताके पास चलागया और अमीर का पुत्र अपने घोड़ोंको रक्षकको सौंपकर बहमनके पास चलागया तो उससमय बहमन अपनी सभामें नौशेरवां जोपीन बखतक बुजुरचमेहर समेत बैठाहुआ था अमरू पुत्र हमजाने बुजुरचमेहर से सलाम करके सलाम पत्रको फेंकदिया परंतु उससे कुछ बात्ती न किया तब बहमन पत्रको फाड़कर क्रोधितहुआ तब अमीर का पुत्र अमरू क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफसोसहै कि पिताने युद्धकरनेको मनाकियाहै तो पत्र की तरहसे तुमकोभी फाड़कर फेंकदेते तबतो बहमनने क्रोधितहोकर अपने पुत्रको आज्ञादी कि इसको दण्डदेव वह तलवारलेकर अमीर के पुत्रपर दौड़ा उसने तलवारछीनकर ऐसाचरखकीतरह घुमाकर फेंका कि वह व्याकुल होगया इतनेमें छोटाभाई दौड़ा उसकी भी यहीमति की तबतो बहमन ने प्रसन्न होकर कहा कि वाह शेरके शेरही होतेहैं यहकहकर खिलअत देकर उसको बिदाकिया अमरूने अमीर के पास आकर सब वृत्तान्त कहा तब अमीर ने अति प्रसन्न होकर बहुतसा जवाहिर लुटाकर प्रसन्नकिया दूसरेदिन बहमन सेनालेकर युद्धकेखेतमें आया और अमीरभी सेनालेकर गये तो अमरू पुत्र अमीर तखत को

चूमकर घोड़े को बढ़ाकर युद्धकरने को आरूढ़हुये और उधर से हुमान भी गदा लेकर आय अमरू ने हुमान को कमर पकड़कर दोतीन बार घुमाकर पृथ्वी पर दैमारा और मुश्कें बांधकर अमीर के पास लेगया अमीरने अमरू अय्यार को सौंपदिया बहमनने अपने दूसरे पुत्र को भेजा तो उसकी भी यही गतहुई अन्त कोडंका बजवाकर लौटगया और अमीर भी अतिप्रसन्नताकेसाथ डंकाबजवातेहुयेअपनासेनासमेतडेरेपरचलेआये सब लोगोंने जीतका भेंटदी और प्रातःकाल होते सभामें बैठकर बहमन के बेटोंको बुलाकर आज्ञादी कि मुसलमानी धर्म स्वीकार करके अग्निपूजन छोड़ देव लड़कों ने कहा कि हे अमीर जिस समय मेरा पिता मुसलमान होगा उसी समय हमलोग भी होंगे अभी कृपा करके क्षमा कीजिये तब अमीरने उनको छोड़ दिया तब उन लड़कों ने बहमन से सब वृत्तान्त वर्णन किया बहमनने अमीर की बड़ी प्रशंसाकी और दूसरेदिन प्रातःकाल दोनों सेना मैदानमें युद्धपर आरूढ़होकर आई और एक तरफ से बहमन और दूसरी तरफसे हमज़ा कापुत्र अमरू सेनासे निकलकर युद्ध करनेलगे परन्तु सबदिन युद्धहोता रहा दोनोंमें से कोई न हटा सायंकाल को दोनों अपनी सेना में चले गये तब अमीर ने अपने पुत्रपर से बहुतसा रुपया अशरफी न्यौछावर करके पूछा कि बहमन कैसा पहलवान है उसनेकहा कि आपके बादवही एक पहलवान है दूसरेदिन डंका बजवाकर दोनोंसेना मैदान में आई और बहमन और लन्धौर युद्ध करने पर आरूढ़ हुये तो बहमन ने लन्धौरसे पूछा कि तू कौनहै उसनेकहा कि मेरानाम लन्धौरहै मैंने बड़े२ बहादुरों को माराहै इतना कहकर लन्धौरने ऐसा शब्दकिया कि सेनाडर से कांपगई तबतो बहमनने कहा कि सत्यहै जैसा हम नाम सुनतेथे वैसाहीने तूहै तब दोनों से शाम तक युद्ध हुआ कि और कोई नहटसका सायंकाल को डंका बजवाकर चले गये तब अमीर ने पूछा कि कहो लन्धौर बहमन कैसा पहलवान है उसने कहा कि आपके पुत्रकी वाक्य सत्यहै दूसरे दिन जब सेना मैदानमें आई तो आदी अकरब बहमनके सन्मुख होकर युद्धकरने पर आरूढ़ हुआ तो बहमनने पूछा कि तू कौन है आदीने कहा कि मेरा आदीअकरब नामहै तब बहमनने कहाकि तेरापेटखाली होतो चलकरमेरे साथ भोजनकर पहलवान से युद्धनहोसकेगी तब आदीने कहा किहेबहमन कहाहै तेराचित्त क्या बकताहै (दृष्टान्त) (जो देगयेहैं वह आपही प्रसिध होजावेगा) देखअमीर कैसादंड देताहूं जो तेरा प्राण बचगया तो अपने प्राणकी मेहमानी करलेना और बहुतसा दानकरना इसके पश्चात् दोनों में गदासे युद्धहोनेलगी तब बहमन ने कमरबन्द पकड़कर आदीको उठालिया परंतु आदीने घूसे उसके सिरपर मारे कि उसने छोड़ दिया और डंका बजाकर पलट गये दूसरे दिन बहमन छःभाई आदी के पकड़ लेगया तब अमीर अतिदुःखित हुआ तो अमरूने कहा कि जो आज्ञा होतो मैं जाकर

सबको छोड़ाजाऊं तब अमीरने कहाकि इससे क्याउत्तमहै तब अमरू मक्कारी पोशागपहिनकर बहमनकी सभामेंगया उसरात्रिको बहमनने सबसे पूछाकि तुमलोगोंकी क्या सम्मतिहै इनसरदारोंको मारडाले या छोड़देतबनौशेरवांने कहाकि इनसबकोमारडालोकि जिससेहमजाकी सेनाके सरदारकम होजावें और बखतकनेकहा कि इनको शूलीदेना उचितहै इसी प्रकारसे हरएक ने मारनेकी सम्मतिदी पीछे को अपने बेटोंसे पूछा तो उन्होंने कहाकि इनको मारकर क़िलेकी दीवारपर लटकादेव कि अमीर की सेनाके लोग देख कर डरें तब बहमनने कहा कि तुमलोगोंको कहते लज्जानहीं मालूमहोतीकि अमीरने तुमको छोड़दिया और तुमउसके सरदारकेमारनेकी सम्मति देतेहो इतनाकहकर सबसरदारोंको बुलाकर छोड़कर अमीरके समीप भेजदिया तब अमरूने प्रसिद्ध होकर कहा कि वाह बहमन पहलवानों को ऐसाही उचितहै और जोतू नछोड़ता तो मैं अवश्यछोड़ा लेजाता और बखतक के सम्मुख होकर कहने लगा कि तू मुझे नहीं डरा और अमीर के सरदारोंके मारनेकी सम्मति देताथा अबदेखना मैंभी तेरी कैसीगत बनाताहूं तब तो बखतक हाथ जोड़ कर कहने लगा कि मैंने तो केवल बहमनके खुशहोने के लिये कहाथा परंतु चित्तसे मैं ऐसा नहीं चाहताथा और अबजो बहमन ने किया है इससे मुझे अति आनन्द हुआ परन्तु अमरूने कुछ उसकाकहना न माना और चलते समय उसकेसिरका मुकुट लेकर एक चपतसिरमें मार कर चलागया और कहा कि खबरदार अपनीदाढ़ीका बालभजदेना नहीं तो मैं तुमको अति लज्जित करूंगा और हथा मुझे तेरेखेमे में न आनापड़े ततपश्चात् अमीरके समीप आकर सब वृत्तान्त वर्णनकिया तब अमीरनेकहा कि अच्छा कि वह मुसल्मान होजावें क्योंकि वह बड़ा पहलवान है प्रात काल दोनों सेना फिरमैदानमें आकर युद्धकरने पर आरूढ़हुई तो बहमन ने अमीरसे कहा कि हमजा तू क्यों नहीं आकरयुद्ध करता तब तो अमीर अशकर देवजादे पर सवार होकर बहमनके सम्मुख आकर खड़ा हुआतो बहमनने कहा कि लावो वारचलावोतब अमीरने कहा कि पहिलेहमलोगों का यह धर्मनहीं है कि किसी कार्य्यमें शीघ्रताकरें तब बहमनने कहा कि युद्ध करना उचित नहींहै केवल लंगर उठाना उचित है जो हारे वह बल-वानकी आधीनता में रहै तब बहमनने अमीर का लंगर पकड़ कर उठाया परंतु हिल न सका तब अमीरने पकड़कर सातवार घुमाकर पृथ्वीपर रखकर मुशकेंबहमन की बांधकर अमरूके हवालेकरके डंकाबजवाकर पलट गया और सेना मेंजाकर बहमनको बुलाकर जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकरकहा कि तुमअब मुसलमान होकर हमारी आज्ञामें हो रहो उसने कहाकि मुझे सब आपकी आज्ञामाननी हरप्रकारसे उचितहै परंतु नौशेरवां और जोपीन आदिका भी अपराध क्षमाकीजिये तब अमीरने कहा कि जोवे लोग मुस-लमान होवें तो हम उनका अपराधक्षमाकरते नहीं उनको अपने हाथ से

हम बधकरैंगे तब बहमन ने कहा कि जो आज्ञा होवे तोहमजाकर उन सब लोगोंको समुझाकर आप के समीप लाकर अपराध क्षमा करावें तब अमीर ने खिलअ़त देकर बहमनको विदाकरके उनके लानेको भेजाबहमन ने जाकर नौशेरवां जोपीन और बख़्तकआदीसे कहाकि अब तुमलोग मिल कर अमीर से मिलो अब जो हमन बिजय हमजा से पासके तो निश्चय है कि कोई संसार में न जीत सकेगा इससे सब लोग चलकर उसकेसाथ मिल कर रहे तब सब लोग एक चित्त होकर अमीर के समीप आये अमीर ने यथा उचित सबको बैठालकर अतिप्रसन्न किया और खुशी की बाजा बजने लगा इसके पश्चात् सात दिन नाच रंग होनेकी आज्ञादी ॥

अमीर का मक्के की ओर जाना और पराजय देकर पकड़कर सादान अमरु हबशी का मुसल्मान करना ॥

लिखनेवाला लिखताहै कि सभाकेपश्चात्अमरू औरआदीअक़रबने अमरू से कहाकि अब यहां जीवजन्तुओं को भोजनकेलियेअतिदुःखहोता है इससे और कहीं चल कर वास कीजिये अमीर ने स्वीकार करके कहा कि अति उत्तम है कावसहिसार की ओर अगवानी खेमा भेजा जावे उसी समय में नौशेरवांने अमीर से कहा कि अबहमारी यह इच्छा होतीहै कि क़बादको गद्दी पर बैठालकर हम ईश्वर का भजनएकान्तमें बैठकरकरैं अमीरने कहा कि हमइसमें कुछ नहीं उत्तर देसक्ते जैसी आपकी इच्छा होवही कीजिये तब नौशेरवां ने क़बादको अपना स्थानापन्न करके बुजुरुचमेहर समेतमदायनकी तरफ यात्रा की और अमीर काविसहिसार में जाकर दिनको तो शिकार करते थे और रात्रि को हर प्रकार की वस्तुओं से चित्तको प्रसन्न करते रहे एक दिन एक दूतने आकर मक्के से अमीर के पिता का एक पत्र दिया अमीर ने पत्र को ले करपढ़ा तो उसमें लिखा था कि हे पुत्र जिस दिन से तू ने होश सम्हाला है तबसे किसी ने हमारे ऊपर चढ़ाईनहीं की थी परंतु अब शादाद अमरू हबशीने हमारे नगरको भी लूटलिया है और मक्केको भी नाशकरने की इच्छा रखताहै इससे उचित है कि अति शीघ्रही आकर उसकी कोई युक्तिकरो नहीं तो कोई मुसलमान न बचेगा अमीर ने उस पत्रको सब सरदारों को दिखलाकर बहमन से कहाकि जबतक हम न आवें तबतक तुम हमारे स्थानापन्न होकर राज गद्दी करो और हमारे मित्रोंको मित्र और पुत्रोंको पुत्र जानकर रक्खो और मैं ईश्वरकी कृपाहोगी तो अतिशीघ्रही पराजयकरकेमक्केसेआता हूं तब बहमन ने हाथ बांधकर कहाकिमैं आपके स्थानापन्नहोकर नहीं बैठसक्ता मेरा इतना बड़ामुंहकि आपकी गद्दीपर बैठूं परन्तु अमीरने समझाकर सब कारोबार उसकेहवाले करके आपमक्केकीओरअमरूको साथलेकर चलेतो जबमक्केके समीप पहुंचेतो अमीरनेअमरूसेपूछाकिअब क्या सामानकिया चाहियेअमरूनेकहाकि आपअशकरदेवजादेको इसी

वनमें चरनेके लिये छोड़दीजिये और पैदलमेरेसाथहोकर चलिये अमीर ने अश्वकर देवजादे को जिन्नी भाषा में समझा दिया कि तुम निस्सन्देह होकरइसी वनमें चरो जब हमशब्दकरैं तो सुनकर हमारेपासचलेआना और आप अमरूको साथलेकर पैदलचले जिससमय सेनाके समीप पहुंचे संयोगसे अमरूसे एक बाज़ीगर से मुलाक़ात होगई यहांतक कि दोनों साथहोकर शादान के समीप जाकर कलाबाज़ी करके शादान को इस प्रकारसे प्रसन्न किया कि उसने पारितोषिक देने की आज्ञादी परन्तु अमरूने न लिया और सन्मुखजाकर प्रार्थना की कि मुझको द्रव्यलेने की इच्छा नहीं परंतु आप इतनी कृपाकीजिये कि मेरे चचाका एककिंकर है सो वह टहलुईछोड़ कर पहलवान होगया रात्रिदिन मुझको दुःख दिया करताहै सो आप उसको डांटदेवें तो मेरादुःख छूटजावे शादान ने कहा कि अच्छा उसको बुलावो तब अमरू ने पुकारा कि फौलाद पहलवान इधरआवो अमीरआये परंतु जो शादानसे दण्डवत् न की तो उसने क्रोधित होकर कहा कि क्योंरे किंकर तू अपने मालिक को क्यों दुःख देताहै अमीर ने कहा कि मैं तो किंकर नहीं हूं तूहीहोगा तब अमरू ने शादान से कहा कि आप इसकी दुष्टता देखते हैं यह आपसे भी नहीं डरता तब तो शादान ने क्रोधित होकर एक पहलवान को अमीरके सिरकाटनेकी आज्ञादी परंतु जब वह समीप आया तो अमीर ने ऐसा घूसामारा कि वह पृथ्वी पर बैठगया तब शादान ने दूसरे को भेजा उसका भी वही हालकिया इसीप्रकारसे चालीस पहलवानोंको मारा पीछेको शादान जब शस्त्र लेकर उठा तो अमीर ने उठकर पृथ्वी पर देमारा और छातीपर सवारहोकर कहा कि तू नहीं जानता कि हम अमीर हमज़ा हैं तब तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि अब आप मेरा अपराध क्षमाकरैं मैं केवल नौशेरवांके बुलानेसे आया था अब कभी न आऊंगा तब अमीरने कहा कि अब तो हमतुमको बे मुसल्मान किये न छोड़ेंगे लाचारहोकर वह मुसल्मान हुआ तब अमीरने उसके ऊपरसे उतर कर गले लगाया और अमीरने जो शब्द शादान के उठातीसमय किया तो उसको सुनकर मक्केके सबलोग आकर हाज़िरहुये तब अमीर ने जाकर अपने पिताका पैरछुआ उन्होंने छातीसे लगया पीछे को सब लोग अमीरको साथलेकर मक्केकोआये तोअमीरने शादानको खिलअत देकर सब मक्कावासियोंको यथाउचित खिलअतदेकरप्रसन्नकिया और अमरू भी अपने पिताके समीप जाकर स्थित होकर रण खिखने वाला लिखताहै कि नाच रंगहोने के पश्चात् शादानने अमीरसे कहा कि जो आज्ञा होती तो जाकर अपने देशसे बालबच्चों को माल असबाब समेत लेकर आऊं तब अमीरने अति प्रसन्नता से खिलअतदेकर विदा किया जब शादान सदायन के समीप पहुंचा तो उसने अपने चित्तमें बिचारा

कि नौशेरवां ने हमको बड़ा दुःख दियाहै अब इसको भी कुछ दण्डदेना उचितहै दरवाजे पर जाकर द्वारपालकोंसे कहा कि बादशाहसे खबर करो कि शादान अपने देशको जाताहै बिदाहोने आया है नौशेरवां ने सुनकर बुलवालिया तब उसने आकर दण्डवत् करके बादशाह से कहा कि आपने तो मेरी खूबइज़्ज़तली इतना कहकर बादशाहको कमरबन्द पकड़ कर उठालिया और कहनेलगा कि जो कोई मेरे समीप आवेगा तो मैं बादशाहको ऊपरसे छोड़कर मारडालूंगा सब राज तुम्हारा नष्ट होजावेगा इसडर से कोई समीप न आसका और शादानने बादशाह को अपने नगरमें लेजाकर पैरोंमें जंजीरें डलवा कर चौराहे पर लटका दिया और एक ज्वारकी रोटी और जल उसके भोजनके लिये देनेलगा इसप्रकार से दुःखदेने लगा तो नौशेरवांने एकदिन शादानसे पूछा कि तूने क्यों मुझे ऐसे दुखमें डालरक्खाहै मैंने तेरे साथ कौनसी बुराईकीहै कि तू ईश्वरसे भी नहीं डरता शादान ने कहाकि जो तू मुझको बुला कर मक्केके बरबाद करनेके लिये न भेजाता तो मेरी यहगत क्योंहोती नौशेरवां ने कहा कि मैं इसे क्या जानूं बख़्तक ने बुलाकर भेजा होगा शादानने कहाकि जो बख़्तकने भेजाहोतो उसीको लाकर हमकोदेवो हम तुमको छोड़देवें उसी को इसमें क़ैद करूं बादशाह इस बात को सुनकर चुपहोरहे अब थोड़ासा हाल अमीरका सुनिये कि थोड़ेदिनके पश्चात् अपने पितासे बिदाहोनेकी इच्छाकी तब ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलब ने कहा कि ऐपुत्र बहुत दिनोंके पश्चात् जो देखाहै इससेअभी चित्तनहीं चाहता कि जानेदेवें एक वर्ष और रहो अमीर ने स्वीकार किया यह वृत्तान्त जब बख़्तक को पहुंचा कि अमीर अभी एक वर्ष मक्के में और अपने पिताके समीप रहेंगे विचारा कि मैदानखाली है किसी युक्ति से अमीरको लज्जित कियाचाहिये इसप्रकार से विचारकर नौशेरवां की ओरसे एक जालीपत्र जोपीन और हुरमुज़ के नामलिखकर एकदूत के हाथ भेजाकि हमने शादादको भेजकर मक्केके मुसल्मानोंका नाशकरवा डाला और उसने हमज़ा और अमरू को भी लेजाकर अपने देश में सूलीदीहै सो तुम हमज़ाकी मुसल्मानी सेना को मारकर मेहरनिगार को बहमन को देदो संयोग से उससमय जोपीनबनमें शिकार खेलने को जाता था मार्ग में दूतसे मुलाक़ातहुई उसने पत्रदेकर सबहाल ज़बानी भी सुनाया जिसप्रकार से कि बख़्तक ने समझा दिया था जोपीन पत्र को पढ़कर सीधा बहमनके समीप आकर उसपत्र को देकर सबवृत्तान्त सुनाया बहमन ने पत्रको पढ़कर जोपीन से कहा कि यह तेरा फरेबहै मैं तेरी बात कबमानताहूं पीछे को जब जोपीन सौगन्धें खानेलगा तो बहमन कोभी निश्चय हुआ कि जोपीन सत्य कहताहै और उस दूत को जब बुलाकर पूछा तो उसने भी उसीतरह से वर्णन किया तब तो बह-

मन अतिदुःखित होकर कहनेलगा कि अच्छा जोहुआ सो हुआ उसके लड़केको उसके स्थानप्रति करके इन्हींकी आज्ञानुसारकरेंगे इतनाकह कर दूतसे पूछनेलगा कि सत्यवता क्याहुआ दूतने सौगन्धें खाकर कहा कि मैं सत्य कहता हूं मेरे सामने दोनों सूली पर चढ़ाकर मारेगये हैं तब बखतक ने बहमनसे कहा कि हमचा की आज्ञा में होकर रहना तो उचित भीथा परन्तु ऐसा पहलवानहोकर छोकड़ोंके आधीनहोकर रहना उचित नहीं है तब उसने कहा कि आपभी बादशाह के दामाद हैं यह सुनकर बहमन का भी चित्तबहका और बखतक से कहने लगा कि जो तुमारीभी यही सम्मतिहै तो हमने स्वीकारकिया परंतु क्योंकर यह होसकेगा तब बखतकने कहा कि अभीइसबातको किसीसे नकहो मैं अतिशीघ्रही इसकार्यको करूंगा जोपीनने कहा कि मैं आजसभामें जाकर शाहजादों से कहूंगा कि मेरे पिताका कार्यहै जो आपलोग चलें तो मेरी बड़ीप्रतिष्ठाहोती है बखतक ने कहा कि यह तो अच्छायत्न है जोपीन जब रात्रिको सभामें गया तो हुरमुज और क़बाद आदि शाहजादों से कहा कि आपलोग कृपाकरके मेरी मेहमानी स्वीकारकरें तो मेरी बड़ीप्रतिष्ठाहोतीहै सबने स्वीकारकिया और दूसरेदिन सब शाहजादे पहलवानों समेतगये और जब भोजनकरनेके पश्चात् शराबपिलाने लगा तो जोपीन ने क़बाद और शहरयार से प्रार्थना की कि आपलोग तो आये परंतु मलिका जो आती तो मेरी अति प्रतिष्ठा होती शाहजादों ने स्वीकार करके मलिका कोभी सवारी भेजकर बुलवाया और जब मलिकाआकर तख़्तपर बैठी तो इतनेमें किसीके मुखसे बातनिकल गई कि अभी तो आकर तख़्तपर बैठी है परंतु यह नहीं जानती कि कौनसी गतिहोगी यहबात मलिकाके कानतक पहुंचगई तो उसीसमय क़बाद को बुलाकर उससे कहा उसने अति शीघ्रही बाहर से सवारी मंगाई और मलिकाको सवारकरा कर अपने क़िलेमें चला पीछेको जब बहमन और जोपीन ने सुना कि मलिका आई और चलीगई तो हाथ मलकर कहनेलगे कि बड़ेलज्जा की बात हुई कि हाथमें आकर निकल गई बखतकने आकर जो बहमन और जोपीनको दुःखी देखा तो कहने लगा कि दुःखित क्योंहोतेहो कहांजायगी एकदिन तो हाथआवेगी तब बहमन और बखतक दोनों कहनेलगे कि अफसोस है कि हुरमुज़ गद्दीपर न बैठे और क़बाद लड़काका पुत्रहोकर गद्दीपर बैठे अमीरहमजा ने बहमन से कहा कि तेरा क्या नुकसान है बहमनने कहा कि सत्य मैं कहता हूं कि क़बाद गद्दीपर बैठाने के योग्य नहीं है मलिक लन्धौर ने ऐसी बातें जो उसकी सुनी तो क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफसोस है कि अमीरने तुझको अपनी कुरसी पर बैठाला नहीं तो तू ऐसीबातें क्यों करता तब तो बहमन ने क्रोधित होकर एक तलवार लन्धौर को

मारी लन्धौर ने रोकर एक गदा बहमन पर ऐसी लगाई कि बहमन बेहोशहोगया और दोनोंके सिपाहियों से तलवार चलनेलगी बहुत से लोग दोनों तरफके घायल हुये पीछेको बहमन के लोग लेकर भाग गये संयोगसे यह खबर दूरवानो बहमनकी बहिनको जो अमरू पुत्र हमजा पर मोहित थी पहुंची कि मुसल्मानों को काफरोंने बड़ादुःख दिया है और घर से निकलकर इसप्रकार से लड़ीकि बहुतसे पहाड़ी मारे गये और अरबी पहलवानों को साथ लेकर क़िले में आई और खन्दक को पनियासोत कराकर क़िले के दरवाज़े को बन्द करके बैठरही और जब पहलवानोंका घावा अच्छाहुआ तो क़िलेकी दीवारों पर चढ़कर मारने लगे तो पहाड़ी क़िलेसे हटकर पड़े परंतु फिर एकदिन क़िलेपर चढ़ाई की तो क़बाद ने अपनी माता से कहा कि अब आज्ञा देो तो हम जाकर इनपापियों को मारकर भगादेवें मेहरनिगार ने कहा कि अभी तुमलड़केहो युद्धकरने के योग्य नहीं परंतु क़बादने न माना औरकहा कि जो नजाने देओगीतो हम पेटमार कर मरजावेंगे हमारे पिता तो हमसे भी छोटेथे तभी से युद्धकरने के लिये जाते थे तब दूरवानोंने कहा कि आप जानेदीजिये मैं साथ जाकर सहायता करूंगी लाचार होकर मेहरनिगारने क़बादको जानेकी आज्ञादी क़बाद हथियार लेकर पहाड़ियोंके सन्मुखजाकर ललकारा कि ऐ पापियो तुममेंसे जिसको मरनेकी इच्छा हो वह आकर सामने युद्धकरे मुझको अपनी बहादुरी दिखावे बहमन क़बाद को देखकर अतिप्रसन्न हुआ कि अब हम क़बादको पकड़ कर अपने पास रक्खेंगे तो अवश्य है कि मेहरनिगार अपने पुत्रके लिये मेरे पास आवेगी यह विचार कर क़बादके समीपगया और कहनेलगा कि लावार चला क़बादने कहाकि मेरापिता कोई कार्य पहिले नहीं करता था सो वैसाही मैं भी करताहूं पहिले तू वारचला जो मैं तेरे वारसे बचजाऊंगा तो मेरा तमाशा देखना तब बहमन ने पहिले वार मारी क़बाद ने ढालपर रोक कर ऐसे ज़ोरसे एक तलवार मारी कि बहमन घायल होकर भागा और चारकोसतक क़बाद पीछाकिये चला गया और जबदेखाकि सेना उसको वायुकेसमान उड़ालेगई तो लाचार होकर पलटआया और अपनी माताके समीप जाकर सबवृत्तान्त वर्णन किया तब मेहरनिगारने बहुतसा रुपयाअशरफी अपने पुत्रपरसे उतार कर कंगालोंको दिया कुछकाल व्यतीतहोनेके पश्चात् अमरू पुत्र हमजा और लन्धौर ने जाकर मलिका के समीप कहा कि विदितहोताहै कि इसमें बहमन का अपराध कुछ नहीं है परंतु बख़तक और ज़ोपीन ने उसको भी अपने साथ मिलालिया है तब अमीरके पुत्रने कहा कि फिर क्याकरें पहाड़ी लोग क़िले को घेरे हैं हमारे सब पहलवान घायल हैं इससे हम डरतेहैं क़बादने कहाकि क़िलेका दरवाज़ा खोलकर बाहर

बलकार युद्धकरने पर आरूढ़हो इतनी आज्ञादेतेही युद्धका डङ्काबजने लगा सब सेना क़िलेसे निकलकर मैदान में खड़ीहुई तो उस समय बह-मनने पुकारकर कहाकि हे अरबवासियो तुमलोग क्यों वृथा प्राणदेतेहो हमज़ाको मरे बहुत दिन होगया अब उत्तम इसीमें है कि मलिका को हमको देदो और तुमलोग अपनी राहलो नहीं तो अब की किसीका प्राण न बचेगा लन्धौर बहमन की सबबातें सुनकर अमरूपुत्र हमज़ा से बिदाहोकर उसके सामने आकर खड़ाहुआ तो दोनोंमें गदाचलनेलगी और सायंकाल तक बराबरयुद्ध करतेरहे शामको दोनों सेना पलटकर अपने स्थानोंपर चलीगईं दूसरे दिन प्रातःकाल होतेही दोनोंसेना मैदान में जाकर खड़ीहुईं कि इतनेमें एकतरफ से गरदउड़ती हुई देखाई पड़ी दोनों सेनाओं के दूतों ने जाकर देखा तो बिदित हुआ कि फरहाद जोपीन की सहायताके लिये आताहै अमीरके पुत्रने सुनकर कहा कि हमारी ईश्वर सहायता करेगा और जोपीन अगवानी मिलकर अपनी सेना में लेआया और सब वृत्तान्त उससे वर्णन किया इतने में फरहाद पुत्र लन्धौरका अमीरके पुत्र की आज्ञालेकर फरहादके साथ युद्ध करने के लिये आकर खड़ाहुआ तो उसने पूछा कितू कौनहै फरहादने कहा कि हम पुत्र खुसरो मलिकलन्धौर पुत्र सादान बादशाह हिन्द के पुत्रहैं जिसको संसार जानताहै उसनेपूछाकि तेराबाप कहांहैफरहादने कहा सेनामेंहै फरहादने कहा कि बिदितहोताहैकि उसनेअपना प्राणबचाया और तुझकोमरने के लिये भेजाहै तबफरहादने कहाकिओपापीक्याबकता है उसका कोई सामनाभी करसक्ताहै लातूबार चला तबतो उसनेसात सौमनकी गदाउठाकर फरहाद के शिरपर दैमारी फरहादने ढाल से रोककर कहा किदोबारअपनी ओरकरले फिरमेरीबाररोकना फरहाद नेदोबार फिरउसी तलवारसे किये परन्तु फरहादने उसीस्थान से रोककर कहाकि देखखबरदाररहो अबमैंभी बारचलाताहूं यहकहकर ऐसेजोरसे गदाचलाई कि अग्नि निकल आई तबतो बड़ी प्रशंसा करने लगा और इसी प्रकार से सायंकाल तक दोनों से युद्ध होता रहा और शाम को पलटकर अपने२स्थानपरचलेगये अबइन दोनोंको लड़नेदो थोड़ा साहाल अमीरका सुनो किएक दिनरात्रि कोअमीरनेस्वप्नमें देखा किपहाड़ियों ने हमारी सेना परछापामाराहै और बहुतसे पहलवान घायल हैं उठ कर अमरूसे स्वप्न का हाल सुनाया अमरूने कहा कि आपका स्वप्न झूठा नहीं होता आप यहांरहिये मैंजाकर देखआऊंतब अमीरने अमरू को समझायाअब फिरथोड़ासा वृत्तान्त युद्धकासुनियेकि फरहाद औरइसत-फतानोश में युद्ध होरहाथा कि अमरू आकर पहुंचा अमरू को देख-कर मुसलमानों में अति प्रसन्नता हुई और बहमन ने देखकर बखतक से पूछा कि तुमने तो कहाथा कि अमरू और हमज़ामारेगये अबयह

कहांसे आया बखतकने कहाकि मैंक्याजानूं मैंने नौशेरवांके लिखने से जानाथा तब तो बहमनने क्रोधितहोकर बखतकको उठाकर जोपीनके सिरपर देमारा परन्तु उनदोनों को मृत्युनथी इससे बचगये बहमन इस पर अति लज्जितहुआ अमरूसब हालजानकर आबाद आदिको समुझा कर घायलोंके घावोंपर नोशदारू रखकर रातदिन चलकर अमीर के पास जाकरपहुंचा तो सबहाल अमीरने सुनकर उसीसमय अपनेपिता से आज्ञालेकर बहुतसे लोगोंको साथलेकर अशकर देवजादे पर सवार होकर अमरूको लेकर काविसके तरफचले अब थोड़ाहाल युद्धस्थानका सुनिये कि दोनोंसेना मैदानमें खड़ीथीं कि सामनेसे गरद दिखाई पड़ी दोनों सेनाके दूतोंने जाकर देखातो विदितहुआ कि सरकोब तुर्कनामे नौशेरवां की सहायताके लिये आताहै और सेनाअधिक साथलाताहै जोपीन अगवानी मिलकर उसको अपनी सेनामें लेआयातो उसने भी अपना खेमाउन्होंके साथखड़ा करके जोपीनसे पूछाकिभला हमजाको तो हमको देखादो उसने कहा कि हमजातो नहींहै परन्तु उसके दो पुत्र लड़रहेहैं तबतो उसने प्रसन्नहोकर कहाकि आजतो सेना हमारी थकीहै प्रातःकाल हम उनको बहादुरी उनको दिखावेंगे इतनेमें फरहाद घोड़ा लेकर मैदान में निकलकर खड़ाहुआ और दूसरी तरफ से सादानपोता हमजा का अपने पिता से आज्ञा लेकर आया तो उसको देखकर सब हंसनेलगे कि यहतो बच्चाहै पहलवानोंसे यह क्या लड़ेगा सरकोबने बहमनसे पूछा कि यह किसका पुत्रहै जो लड़नेको आयाहै उसने कहा कि यह हमजाका पोताहै सरकोबने कहा कि भला यह फरहाद से क्योंकर लड़ैगा बहमन ने कहा कि देखिये क्या होता है यह बातेंहोरही रहीथीं कि इतनेमेंउसने ललकारा कि ओ पापियोतुम मेंसे जिसको मरनेकी इच्छाहो वह आकर मेरेसामने अपनी बहादुरी दिखावे तब फरहादनें घोड़े को बढ़ा कर एक गदा मारकर कहा कि देखो वह मारा सादानने पृथ्वीसे उठकरकहा कि पापी क्योंझूठबकता है किसको तूने मारा मैंतो तेरे प्राणका गाहक बैठाहूं यह कहकर एक तलवार ऐसीमारी कि फरहाद का एक हाथ कट कर गिर पड़ा और ज्योंही उसने भागने की इच्छाकी दौड़कर दूसरा भी हाथकाट लिया और सिपाहियों ने दौड़कर सिरकाट लिया इस प्रकारसे उस को मारडाला तब अमीरकी सेनामें तो विजयका डंकाबजनेलगा और काफिरों की सेनामें गमी पड़गई और सबका हंसना बन्दहोगया और सब बड़े सन्देहमेंहुये कि छोटेसे बच्चेने ऐसेबड़े पहलवानको मारडाला और उसके एक छोटासा भी घाव न लगा सरकोब ने बहमन से कहा कि बड़ी भाग्यहै इसके मातापिता की जिसके घरमें ऐसा बहादुर पुत्र उत्पन्नहुआ क्योंन उसका पिता उसका भरोसाकरे यह कहकर दोनों

सेना अपने२ स्थानपर चलीगई हरमुजने पहलवानों और सरदारों को साथलेकरभोजनकियातत्पश्चात्शराब और कबाबखानेपीने लगेऔरजब शराबप्रमाणसेअधिकहोगईतो सरकोबने बहमनकोहरमुज़के बगलमेंबैठे देखकर कहा किओपहाड़ी तेराइतनाबड़ामुंह कि मुझसेबढ़कर बैठाहै बहमनने कहा कि ऐसरकोब सिड़ी होगयाहै मुझसे निडरहोकर ऐसी बातें क्रोधित होकर करताहै सरकोबने उठकर घूसामारातब तोउसने मनमेंक्रोधितहोकर सरकोब कोउठाकर पृथ्वीपर देमारा परन्तुहरमुज़ ने दौड़करदोनोंको हटादिया और सभासमाप्तकरकेचलेगयेफिर प्रातः काल दोनोंसेनाआकर मैदानमें खड़ीहुई तो एक ओर से बनकी तरफ गर्द उड़ती दिखाई पड़ी दूतोंने जाकरदेखा तो विदितहुआ कि हमजा बहुतसी सेनालेकर अमरूसमेत आताहै इतना सुनकर मुसलमानलोग अति प्रसन्न हुये और प्रसन्नताके डंकेबजाने लगे और हरएक सरदार और पहलवान जाकरअमीरके पैरोंपर गिरे और अमीरने सबको छाती से लगाकर सबकीकुशल पूछी तत्पश्चात् अशकर देवजादे पर सवारहो- कर मैदान में आकर बहमन से पुकार कर कहा कि ओ पहाड़ो मैंने कौनसा दुःखतुझेदियाथा जिसके बदलेमें तूनेयहकियाहै अबबहादुरहो देतो आकर मेरेसाथ मैदानमेंलड़ इतनासुनकर बहमननेहरमुज़सेकहा कि मैं तो हमजाके सामने मुंह न दिखाऊंगा तुम जोचाहो वह करो उसने कहा मैं क्याजानूं बखतक जाने पीछेको सरकोबने आकरअमीर के सिरपर गदाचलाई अमीरने रोककर कहा कि दोबार और करले सरकोबने दूसरी बारचलाई अमीरने उसकोभी रोकलिया तबतीसरी बार ऐसेजोरसे मारी कि गदासे लौ निकली कि जिसके धुयें से दोनों सेनामें अंधियारी छागई और सरकोबने चिल्लाकर कहा कि देखोमार लिया और कहनेलगा कि यहतो मनुष्यथा जो पहाड़होता तो वहभी जलजाता इतनेमें अमीरने सामनेसे निकलकर कहा कि क्या बकताहै किसको तूने मारा मैं तो तेरे प्राणका घातक जीताहूं और कहाकि देखबार इसको कहतेहैं कि जो बचभीजावे तो भी छठी के दूधतक तो निकल आवेगा यह कहकर गदा जो उसके सिरपरमारीतो वह जीन परसे घोड़ेकी पीठपर चलागया केवल घोड़ा मारागया तब सरकोबने चाहा कि अमीरके घोड़ेको भी मारे कि इतनेमें अमीर कूदकर उसके सामने खड़े हुये और दोनोंसे गदा और तलवार चला की परन्तु कोई नहारा तब अमीरने कहा कि जो जिसका पैर उठालेवे वह दूसरे को आधीन करके रक्खे सरकोब स्वीकार करके अमीर का पैर उठाने लगा परन्तु नउठा तब अमीर ने उठालिया और सात बार घुमाकर अमरूके हवाले किया सायंकाल होनेके कारण दोनों सेना अपने २ स्थानोंपर जाकर उतरी मुसल्मानी सेनामेंतो शराब और कबाबकीसभा

ऊई और पहाड़ी अतिदुःखित होकर पड़ेरहे तत्पश्चात् अमीरनेसर-
कोबको बुलाकर अपने समीप बैठाकर पूछा किदेखहमने किसप्रकार
से तुसको पराजित कियाहै सरकोबने कहा कि आपका कोई सामना
नहीं करसक्ता ईश्वरने आधाबल आपको दिया है और आधा संसार
में बांटाहै अब कृपाकरके मुझे मुसल्मान कीजिये तब अमीर ने कलमा
पढ़ाकर उसको मुसल्मानकिया और खिलअतदेकर सोनेकी कुरसीपर
बैठाकर तीनदिन तक नाच रंगहोने की आज्ञादी तत्पश्चात् चौथेदिन
डंका बजवाकर अपनी सेनाको साथ लेकर चौदह परेट बांधकर खड़े
ऊवे और पहाड़ी सेनाभी आकर इस प्रकार से खड़ीऊई किमानों सि-
कन्दर और दाराका सामनाहै तबअमीरने ललकारकर बहमनसेकहा
कि बहमन जो बहादुरहै तो आकर सामनाकर परन्तु बहमननआया
और ऊरमुज़से कहा कि अब सेनाको एक बारगी लेकर धावा करदेव
इतना सुनतेहीसबसेना दौड़पड़ी और अमीर अकेला खड़ाहोकर यहां
तक लड़ा कि रुधिरकी नदी बहनेलगी तब बहमनने जोपीनसेकहा कि
अमीर इससमय व्याकुलहोगये हैं तुम किसी यत्न से अमरू को हटादो
तो आसानीमें हम अमीरको मारलेतेहैं जोपीन नेसातसौ हाथी लेकर
एक तरफसे जाकर अमीरके सिरपर एक तलवार ऐसीमारी कि चार
अंगुलका घाव होगया और चिल्लाकर कहनेलगा कि देखो हमजाको
मारलिया यह सुनकर अमीरकी सेना अतिदुःखितऊई तबतो अमीरने
अशकर से जिन्नी भाषामें कहा कि हमको सेनासे बाहर निकालकर
लेचलो तब वह लेकर भागा और जो कोई पास आताथा आगे मुहसे
काटता और पीछेलातोंसे मारताऊआ सेनासे निकलकर जंगलकीतरफ
चला कईकोस निकलकर एकनदीके समीपपऊंचा तो जाकर जबजल
पीनेलगा तो अमीर नदीमें गिरपड़ा जलरुधिर से लाल होगया परन्तु
अशकरने दौड़कर अमीरको नदीसे ऊपर निकाललिया डूबने से बचा
लिया संयोगसे सेगीरनामे गडरिया अपनी बकरियोंको पानी पीनेके
लिये लायाथा उसने देखा कि नदीका जललाल हो रहाहै और एक
मनुष्यघायल नदीकेतीर पड़ाहै और एक घोड़ादांतोंसे ऊपर खींचताहै
गड़रिये को देखकर दयाआई और यह भी अपने चित्तमें विचारा कि
यह कहींका बादशाह लड़ाईमें घायलऊआहै घोड़ालेकर भाग आयाहै
मैं जो इसकीसेवा करूंगा तो ईश्वर चाहेगा तो कुछ प्राप्त होगा यह
अपने चित्तमें विचार कर उसके समीपगया और अमीर को उठाकर
अशकर की पीठपर रस्सीसे बांधकर अपने स्थानपर लाया और अपनी
मातासे सबहाल कहकर अमीर की औषधी करनेलगा परन्तु अशकर
बराबर अमीर के समीप रात्रिदिन खड़ा रहताथा और जब कभी वह
बाहर लेजानेकी इच्छाकरता तो अशकर नेचोंसे डाटदेता तबवह डर

कर भागजाता इसीप्रकारसे सातदिवस व्यतीतहोनेके पश्चात् अमीरके नेत्र खुलगयेतो देखाकि अशकर देवज़ादा और एकमनुष्य समीप खड़ेहैं और हम चारपाईपर किसीके घरमें लेटेहैं इतना देखकर उसमनुष्य से पूछा कि तू कौनहै और यह किसका स्थानहै उसने कहा कि मैं गड़रियाहूं आपनदीके तीर पड़ेथे इसी घोड़ेपर सवारकराकर ले आयाहूं अबईश्वर आपकोअच्छाकरे तो मेरेभीकुछदिन अच्छे होवें तब अमीरने उससे कहा कि घोड़ेकी पीठपरसे जीन उतारलो और उसको चरने के लिये छोड़देव और जो तुमने मेरे साथ नेकी की है इसका फल मेरे अच्छे होनेपर मिलेगा और कहा कि एकबकरी अपने गल्लेमेंसे ला मैं उसकोहलालकरदूं तो तूउसकी कबाब और शुरवाबनाकर मुझको खिला इसीतरहसे तीनदिनतक उसको मार२ खिलाया चौथेदिन उसने अपनी माता से पूछा कि इसी तरह से यह सब बकरियों को समाप्त करदेगा अब हलाल करने देवें तब उसने जाकर अमीर से पूछा कि तू कौनहै अमीरने कहा कि हमजाका चचेरा भाईहूंसादसामी मेरानामहै तूमेरी सेवाकर मैं तेरीबड़ी सेवाकरूंगा एकबकरीके बदले दशबकरीदूंगाऔर इसके सिवाय और बहुत कुछदूंगा मेरे अच्छे होनेतक एक बकरी मार कर रोज खिलायाकर अमीरका नाम सुनकर वह भी अतिप्रसन्न हुई और कहनेलगी किमैं सबबकरियां तुमको खिलादूंगी यह कहकररोज एक बकरीमारकर खिलानेलगी अब अमीरके सेनाका हालसुनिये कि जब असकूने अमीरको सेनामें न देखा तो सब मुरदोंमें ढूंढ़कर सेनासे बाहर निकलकर अति व्याकुल होकर ढूंढता हुआ चला मार्ग में जो रुधिर सिरसे गिरतागया उसीके पतेसे नदीके तीरतक पहुंचा तो देखा कि जलनदीका लालहै तो जानाकि अशकर देवज़ादा यहांतक लेआयाहै वहांसे ढूंढतेहुये अशकर देवजादेके समीपपहुंचा तबवह अमीरकेपास लेगया असकू जाकर अमीरके पैरोंपर गिरा और सब वृत्तान्त कहकर अमीर से कहा कि आप अब चलिये तब अमीरने कहा कि तुम जाकर सबको यहां लेआवो तो हम चलेंगे उसी समयसेनामें आकर अमीरके कुशलका हाल सबसे कहकर सबको साथ लेकर अति शीघ्रहीमलिका समेत अमीरकेपास पहुंचा मेहरनिगारने जब जाकरदेखा किअमीरका घाव बहुतबड़ा है तबतो लपटकर रोनेलगी और इसी प्रकारसे सब पहलवान और सरदार आकर अमीर से मिले अमीरने सबको छाती से लगाया तत्पश्चात् अमीरने अपना सबहाल कहकर सब सरदारों और पहलवानों से कहा कि इस गड़रियेने हमारी बड़ी सेवा की है जिससे जो होसके वह इसको दे तब सब लोगोंने इतना रुपया और मालअसबाब दिया कि उसके घर में न आसका और मलिका मेहरनिगार ने भी बहुतसा जर नवाछिर देकर उसको धनवान करदिया तब वहां से

कूच करके फिर मैदान में आकर युद्ध करने पर आरूढ़ हुये अमीर ने
आज्ञादी कि अबहूनको चारोंओर से घेरकर मारो कोई बचकर जाने
नपावे अमीरकी आज्ञापातेही सब सेना इसप्रकारसे पहाड़ी सेना पर
टूट पड़ी जिसतरह व्याघ्र बकरीकेलिये दौड़ताहै चारों तरफसे घेरकर
ऐसा मारा कि बहुत थोड़ेही बचकर जाने पाये और जो भागे उनको
मंजिलोंतक खदेड़करमारा एकतरफसे बहलन निकला संयोगसे अमरहपुत्र
हमजा उसीतरफ खड़ाथा उसने पीछा किया जब थोड़ीदूर चलागयातो
इसविचारसे कियह अकेलाहै पलटकर खड़ाहोगया दोनोंसे लड़ाईहुई
आखिरको बहलन मारागया और सिरकाटकर अपने पिताके समीप
चलाआया और अपनी बहादुरीका हालकहकर सिरअमीर के समीप
रखदिया तब अमीर बहलनके सिरको देखकर कहनेलगा किऐसे पहलवान
और ऐसी २ वस्तु कहां मिलती हैं तत्पश्चात् जितने सरदारथे सबोंने जाकर
पहाड़ीसेनाके सरदारों के सिरोंको अमीरके पैरोंपर रखदिया इस प्रकारसे
अमीर विजयपाकर डंका बजवाते हुये सेनाको साथ लेकर अपने स्थान पर
आये और जिस समय अमीर घायल होकर बहलनके हाथसे बनकी ओर
जातेथे उसी समयमें एक परी आईथी उसने जाकर परदेकाफ में आस-
मानपरीसे यह सबहाल कहा आसमानपरी अति व्याकुल होकर उसी समय
करीबा और अबदुल रहमानको बुलाकर सब हाल कहकर बहुतसे परी-
जादों को साथलेकर दुनिया के तरफ चली जब आकर पहुंचगई दोकोस के
फासलेसे अबदुल रहमानको अमीरके हालजानने को भेजा उसने आकर जो
देखातो अमीर बैठे हैं अमीर देखकर बड़े हन्दहर्ष हुयेतो उसने सबहाल
पूछकर आसमानपरी और करीबाके आनेकी खबर दी तब अमीर अतिप्रस-
न्नताके साथ सरदारों समेत आसमानपरी की अगवानी के लिये गयेपहुंच
कर आसमानपरीसे मिलकर करीबाका मुख चूमकर अपने गोदमें बैठाकर
बहुत प्यारकिया परियां अमीरकीसवारीकीशोभादेखकर सब भूलगईं और
कहनेलगीं कि तब क्यों न अमीर परदेकाफ से दुनिया में आनेकी इच्छा
करैं और अमीर से प्रार्थना करने लगी कि आपके सरदारों और सेना को
भी आपने देखी परन्तु मलिकालेहर निगारके देखने की और इच्छा है तब
अमीरने कहा कि जिसप्रकार से तुम्हारी इच्छाहै उसी प्रकारसे हमारे सर-
दारों की इच्छा तुम्हारे देखने की है सोतुम परदाहटा कर उनके नेत्रों में
सुरमा सुलेमानी लगादेवो कि वे तुमको देखकर प्रसन्नहोवें परियोंने कहा
कि ऐसा नहो कि मोहितहोकर हमको दुःखदेवें अमीरने कहानहीं किस-
का मुंह है कि तुमसे बोलसके तब परियोंने परदा हटा कर अपना मुखसर-
दारों को दिखाया पहलवानों ने जो देखातो हरएक व्याकुल होगया और
जब होशमेंहुयेतो अमीरकोधन्यवाद देनेलगे कि आपकीकृपासे हमनेइनको
भी देखा नहीं कहां देखते तत्पश्चात् अमीर सबको साथलेकर मलिकाके-

हरनिगार के महलमें आकर चित्तको प्रसन्नकियातो पहिले मेहरनिगार मलिकासे मिली तब करीमा को गोदमें लेकर गोदमें बैठा लिया तत्पश्चात् सब परियों से यथा उचित मिलकर प्रसन्नकिया और तीन दिन रात्रि तक मलिका सबसे मेली और सरदारों समेत नाचरंग देखतीरही और सबकार्य बन्दरहा चौथेदिन जो सौगात आदि उत्तमवस्तु परदेशकाफ से लेकरआई थी मेहरनिगार को देकर बिदाहुई मलिका आसमानपरी के जानेके पश्चात् अमीर ने अपने सरदारों से पूछा कि मालूम नहीं होता कि पहाड़ी लोग किसतरफको गये हैं अमरू ने कहा कि सुनाहै कि काश्मीर की तरफजाकर जफ़रनामे खांको काश्मीर से सहायता मांगी है उसने उनको भरोसा दियाहै इस बातको सुनकर अमरूपुत्र हमजाने कहा कि आज्ञाहोतो मैंजा कर उसका नाशकर डालूं एकको भी जीता न छोडूं अमीरने कहा कि इस्से उत्तमक्याहै तब वह सात पहलवानोंको उनकी सेना समेत कासलीरक मीरवका अमरूआदी अकरबकरहादपुत्र लन्धौर इनतफतानीस आदिसर दार साथले सबको लेकर जब काश्मीर के समीप पहुंचा तोपहाड़ी सेनाडर कर किले में जाकर बन्द करके बैठरही तबमुसलमानी सेनाभी चारोंतरफ से किले को घेर कर उतर पड़ी और कईदिनोंतक घेरेपड़ी रहीएक दिन रात्रि को आबु पहाड़ से निकलकर सेना में आया और बहुत से सिपाहि- योंको घायलकरके चलागया यह हाल जब अमीर के पुत्रको पहुंचा तो वह हथियार लेकर उसके पीछे पहाड़ तक पीछाकिये परन्तु पहाड़ पर जाकर व्याघ्र लोपहोगया तब वह कई दिनोंतक उसीकी तलाशमें पड़ारहा परन्तु कहीं पता न मिला आखिरको पहाड़से उतरकर जब चारोंदिशाकी तरफ चला तो मार्गमें एक अपूर्व नगर देखकर चलितहुआ और लोगोंसेपूछा कि यहकिसका नगरहै तबलोगोंने बतलाया कि इसनगरका नाकपांरखारहै यहां की मालिकीगुलचेहरा नामजोपीनकी बहिनहै संयोगसे उसी समयमें वह झरोखेकी राहसे अमरूके पुत्रको देखकर मोहित होगई और एक ख्वाजेको भेजाकि जाकर उस मनुष्यको किसी प्रकार से मेरे पास ले आओ उसने जाकर अमरूसे कहा कि मेरी स्त्री आपको बुलाती है तब अमरू ने न माना दूसरी बार कहने सुननेसे उसके साथ गया जब उस स्त्रीके पासपहुंचा तो उसनेअतिप्रतिष्ठाके साथबैठाकर अपनेसाथ भोजन कराकर शराबपिलाया तत्पश्चात् उसके साथ भोगकरने की इच्छा की तब अमरूनेकहा कि अभीमैं तेरे साथ भोग न करूंगा क्योंकि तेरी एक बहिन मेरेपासहै हमअपने सर- दारों सेपूछ लेवें जैसावे कहेंगे तब वैसाहमकरेंगे इतनासुनकर उसने उस समय दूत भेजकर अमरू के सरदारों को बुलवा लिया और उनसे अपना प्रयोजन कहा उसी समय में एक मनुष्य उसी नगरमें रहता था उसने जब सुनाकि अमीर का पुत्र जोपीन की बहिनके पास बैठा है अपने दो पुत्रोंको बुलाकर कहाकि तुम जाकर उसको पकड़लावो वे दोनों लट्ठ बांधकर

असरूके पास आये और असरूकेमारनेके लिये लाठी चलाई उसनेदोनोंकी लाठी छीनकर ऐसा घूमामारा कि दोनों बेहोशहोकर थोड़ी देर तक पड़े रहे फिरउठकर अपने पिताके पासआकर सब हालसुनाया तब फरखारसर गमने कहाकि मुझसे तो हमजासे प्रयोजन है दूसरे क्या करना है परन्तु हमजा का मैं कुछकरन संकूगा तत्पश्चात् दूसरे दिन सब सरदार असरू केपासआयेतब उसकी गुलचेहराने सबकी मेहमानी करके अतिप्रसन्नकिया तबअपना मोहित होना असरू परसब सरदारों से कहा आदीने असरू से कहाकि तुमक्यों इसको बेमौतके मारतेहोइसके मनोर्थ कोपूरा करोअमीर आदैने कहाकि किसतरहहम शास्त्रकेविरुद्ध करसक्तेहैं तबआदीने कहाकि करना और नकरना तो तुमारे अधीन है परन्तु मुझे इसके कहने पर दया आती है इसकारण तुमसे कहते हैं जब रात्रि हुई तो दोनों नशे में भूलकर एकही पलंगपर सोगयेतब गुलचेहराने कामकेकारण असरूसेलपट करभोग करने कीइच्छा कीअसरूने जाग कर उसको एक चपतमार कर हटा दिया तबतो उसने अति दुखित होकर अपने चित्त से विचाराकि यह मेरी वांछन परमोहित है औरमुझसे भोगकरने की इच्छा नहींकरता इससे इसकोमार डालनाउचितहै एकबारगीतलवारलेकर असरूकासिर काटकरचिल्लानेलगी को देखियारो कोई बैरी चलोरके पुत्रकोमारगया यारोंने जबजाकर देखा कि असरू मरापड़ाहै सब देखकर रोनेलगे तब आदीने कहा कि यहां इसीपापिनीने अपने इच्छा पूर्बक न होनेके कारण मारडालाहै इस बातको सबोंने स्वीकार करके उसे बांधकर जो पूछा तो उसनेकहा कि नशे में मैंने मार डाला अब जो चाहोसो करोतब सब पहलवान बड़े सन्देहमें हुये कि स्त्रीको मारना उचितनहीं इसीसमयमें अमीरनेस्वप्नमेंदेखा कि असरूरुधिरमेंपड़ाहै उसीसमय असरूमक्कारको बुलाकर कश्मीरको भेजा जब असरूकश्मीर में पहुंचा तो मालूम हुआ कि असरू पुत्रहमजा फरखार नगरमें जोपीन की बहिनके महलमेंहै तबवहांसे चलकर उसमहलमें जब पहुंचा तो सरदारने उसके पैरोंपर गिरकर सबहालसुनाया असरूने सुनकर रोतापीटता अमीर के पासआकर कहा कि आपका पुत्र फरखार जोपीनके घरमें घायल पड़ाहै और आपकोअतिशीघ्रही बुलायाहैमें आपकोलेने आयाहूं अमीरउसीसमय उठकर देवजादे पर सवार होकर असरू समेत फरखार में जापहुंचे तब असरूने इस विचार से कि एकबारगी जो अमीर को पुत्रका मरना बिदित होजावेगा तो अतिदुःखहोगा इन्हें कुछ खिलालेवे इस प्रकारसे विचारकर अमीरसे कहाकि किसीबागमें चलकर कुछ भोजन करलेवें तो उसके स्थान परचलें अमीर स्वीकार करके एकबाटिका मेंजाकर उतरे संयोग से उसमें बकरियां चरती थीं एक बकरी को मारकर कबाब बनाया रक्षकने बागमें धुवांदेख जब बागमें आया तो देखा कि दो मनुष्य एकबकरी मारकरकबाब बनारहेहैं यहदेखकर अतिव्याकुल होकर सरदारसे जो बकरियोंऔर

बागका स्वामीया जाकर खबरदी फरखार सरमवां यह सुनतेही वहां से दौड़कर दोनों लड़कोंसमेत जब बागमें आया तो देखताहै कि दोनोंकवाब भूनर खारहेहैं और किसी को डरते नहीं अपने लड़कों से कहा कि जाकर इनदोनोंको पकड़लाओ वे उनदोनोंको जाकर पहुंचतेही अमीरके ऊपरलटूचलाया अमीरने बैठेही लट्ठछीनकर दोनोंको पृथ्वीपर देमारा यह देखकर फरखारा जलकर आगहोगया तुरन्तही सातसौ मनकी गदालेकर अमीरके ऊपर दौड़ा और कहनेलगा कि विदित होताहै कि तुमदोनोंकी मृत्युयहां लाईहै तबतो यमराज की बकरी मारकर खाई है यह कहकर अमीर के ऊपर गदामारी तब अमीरने बैठेहुये गदा पकड़कर खींचली कितनाही उसने जोरकिया परन्तु न छोड़ा तब उसने गदाछोड़कर अमीरके कमर से हाथलगाया तब अमीरने उठाकर पृथ्वीपर देमारा फिर वह उठनसका तब पूछा किऐ जवानतेरा क्यानामहै अमीरने कहा कि अबदुलमुत्तलब का पुत्र हमजा लोगमुझे कहतेहैं सब लोगमुझसेडरतेहैं फरखारने कहाकिहमजा के सिवा और किसीको ऐसीशक्तिनहीं है जोमेरी पीठलगादेवे तब अमीरने उसको मुसल्मानकिया और अनेक प्रकारसे प्रसन्नकरके अपने साथरहनेको आज्ञादी तब उसनेचाहा कि अमरूके मरनेकीखबर सुनाऊंपर अमरूमक्कार ने नेत्रोंकेद्वारा निषेधकिया अमीरवहांसे उठकरसबको साथलेकरआगेचले जबनगरमेंपहुंचे यारोंने अमीरकोदेखकर शोरगुलमचाया तबअमीरनेपूछा कि कुशलतोहै इसप्रकारसे दुःखीक्योंहो तब यारोंने कहा कि अमीरजादा जोपीनकी बहिनकेहाथसे मारागया तबअमीरने आज्ञा की उसको उसीके माताकेपास लेजावो और उसस्त्रीको भी साथले जावोउससे कहना किसीने तुम्हारे पुत्रकोमाराहै अमरूने गुलचेहराको बांधकेमलिकाके हवाले किया औरकहा कि इसीने आपके पुत्रको माराहै वह इसे सुनतेही पुत्र२ कहकर मरगई तब अमीरको दूना दुःखहुआ चालीसदिन तक पुत्रके मरनेकी गमी मानी औरअमरूकी लोथगुलचेहरा समेतकाविशहिसामेंसादानके पास भेजदी उसने अपनी बहिनको अपने हाथ से मारा इस प्रकारसे बदला लिया तत्पश्चात्अमीरने कहा कि इसअशुभस्थानको नाशकरके उजाड़देना उचित है कि यहां मेरापुत्र मारा गयाहै यह कहकर गदासे दरवाजों को टुकड़े२ करडाला और क़िलेमें घसकर सबको मारडाला हरमुज केवल चोर दरवाजेसे निकलकर चलागया और सब उसकेसाथी अमीरके हाथसे मारेगये और बहुतसे मुसलमान हुये तब कशमीर वासियोंको मारनेलगे तबवहांके स्वामीनेअमीरसे सहायताचाही अमीरने उसकोमुसलमान करके छोड़दिया और आप कूचकरके काविसहिसार को चलेआये ॥

मदायन में पहुंचकर हरमुज़ और नौशेरवांका पतालगाना और अमीरहमज़ा का नौशेरवांके छोड़ाने के लिये जाना ॥

लिखनेवालालिखताहै कि जिससमय हरमुज क़िले कशमीरसे भागकर

असद्के पास आये और असद्केमारनेके लिये लाठी चलाई उसनेदोनोंकी लाठी छीनकर ऐसा घूसामारा कि दोनों बेहोशहोकर थोड़ी देर तक पड़े रहे फिरउठकर अपने पिताके पासआकर सब हालसुनाया तब फरखारसरशमने कहाकि मुझसे तो हमज़ासे प्रयोजन है इससे क्या करना है परन्तु हमज़ा का मैं कुछकरन संकूगा तत्पश्चात् दूसरे दिन सब सरदार असद्केपासआयेतब उसकी गुलचेहराने सबकी मेहमानी करके अतिप्रसन्नकिया तबअपना मोहित होना असद् परसब सरदारों से कहा आदीने असद् से कहाकि तुमक्यों इसको वेमौतके मारतेहोइसके मनोर्थ कोपूरा करोअमीरज़ादेने कहाकि किसतरहहम शास्त्रकेविरुद्ध करसक्तेहैं तबआदीने कहाकि करना और नकरना तो तुमारे अधीन है परन्तु मुझे इसके कहने पर दया आती है इसकारण तुमसे कहते हैं जब रात्रि हुई तो दोनों नशे में मतवाले एकही पलंगपर सोगयेतब गुलचेहराने कामकेकारण असद्सेलपट करभोग करने कीइच्छा कीअसद्ने जाग कर उसको एक चपतमार कर हटा दिया तबतो उसने अति दुखित होकर अपने चित्त से विचाराकि यह मेरी बहिन परमोहित है औरमुझसे भोगकरने की इच्छा नहींकरता इससे इसकोमारडालनाउचितहै एकबारगीतलवारलेकर असद्कासिरकाटकरचिल्लानेलगी कि देखियारो कोई बैरी अमीरके पुत्रकोमारगया यारोंने जबजाकर देखा कि असद् मरापड़ाहै सब देखकर रोनेलगे तब आदीने कहाकि यहां इसीपापिनीने अपने इच्छा पूर्वक न होनेके कारण मारडालाहै इस बातको सबोंने स्वीकार करके उसे बांधकर जो पूछा तो उसनेकहा कि नशे में मैंने मार डाला अब जो चाहोसो करोतब सब पहलवान बड़ेसन्देहमें हुये कि स्त्रीको मारना उचितनहीं इसीसमयमें अमीरनेस्वप्नमेंदेखाकि असद्रुधिरमेंपड़ाहै उसीसमय असद्नक्कारको बुलाकर कशमीरको भेजा जब असद्कशमीर में पहुंचा तो मालूम हुआ कि असद् पुत्रहमज़ा फरखार नगरमें जोपीन की बहिनके महलमेंहै तबवहांसे चलकर उसमहलमें जब पहुंचा तो सरदारने उसके पैरोंपर गिरकर सबहालसुनाया असद्ने सुनकर रोतापीटता अमीर के पासआकर कहा कि आपका पुत्र फरखार जोपीनके घरमें घायल पड़ाहै और आपकोअतिशीघ्रही बुलायाहैमैं आपकोलेने आयाहूं अमीरउसीसमय उड़कर देवज़ादे पर सवार होकर असद् समेत फरखार में जापहुंचे तब असद्ने इस विचार से कि एकबारगी जो अमीर को पुत्रका मरना विदित होजावेगा तो अतिदुःखहोगा इन्हें कुछ खिलालेवे इस प्रकारसे विचारकर अमीरसे कहाकि किसीबागमें चलकर कुछ भोजन करलेवें तो उसके स्थान परचलें अमीर स्वीकार करके एकवाटिका मेंजाकर उतरे संयोग से उसमें बकरियां चरती थीं एक बकरी को मारकर कवाब बनाया रक्षकने बागमें धुवांदेख जब बागमें आया तो देखा कि दो मनुष्य एकबकरी मारकरकबाब बनारहेहैं यहदेखकर अतिव्याकुल होकर सरपनासे जो बकरियोंऔर

बागका खामीथा जाकर खबरदी फरखार सरश्वां यह सुनतेही वहां से दौड़कर दोनों लड़कोंसमेत जब बागमें आया तो देखताहै कि दोनोंकबाब भूनर खारहेहैं और किसी को डरते नहीं अपने लड़कों से कहा कि जाकर इनदोनोंको पकड़लाओ वे उनदोनोंको जाकर पहुंचतेही अमीरके ऊपरलटूचलाया अमीरने बैठेही लटूछीनकर दोनोंको पृथ्वीपर देमारा यह देखकर फरखारा जलकर आगहोगया तुरन्तही सातसौ मनकी गदालेकर अमीरके ऊपर दौड़ा और कहनेलगा कि विदित होताहै कि तुमदोनोंकी मृत्युयहां लाईहै तबतो यमराज की बकरी मारकर खाई है यह कहकर अमीर के ऊपर गदामारी तब अमीरने बैठेहुये गदा पकड़कर खींचली कितनाही उसने जोरकिया परन्तु न छोड़ा तब उसने गदाछोड़कर अमीरके कमर से हाथलगाया तब अमीरने उठाकर पृथ्वीपर देमारा फिर वह उठनसका तब पूछा किऐ जवानतेरा क्यानामहै अमीरने कहा कि अबदुलमुत्तलब कापुत्र हमज़ा लोगमुझे कहतेहैं सब लोगमुझसेडरतेहैं फरखारने कहाकिहमज़ा के सिवा और किसीको ऐसीशक्तिनहीं है जोमेरी पीठलगादेवे तब अमीरने उसको मुसल्मानकिया और अनेक प्रकारसे प्रसन्नकरके अपने साथरहनेकी आज्ञादी तब उसनेचाहा कि अमरूके मरनेकीखबर सुनाऊंपर अमरूमक्कार ने नेत्रोंकेद्वारा निषेधकिया अमीरवहांसे उठकरसबको साथलेकरआगेचले जबनगरमेंपहुंचे यारोंने अमीरकोदेखकर शोरगुलमचाया तबअमीरनेपूछा कि कुशलतोहै इसप्रकारसे दुःखीक्योंहो तब यारोंने कहा कि अमीरज़ादा जोपीनकी बहिनकेहाथसे मारागया तबअमीरने आज्ञा की उसको उसीके माताकेपास लेजावो और उसस्त्रीको भी साथले जावोउससे कहना किसीने तुम्हारे पुत्रकोमाराहैअमरूने गुलचेहराको बांधकेमलिकाके हवाले किया औरकहा कि इसीने आपके पुत्रको माराहै वह इसे सुनतेही पुत्र२ कहकर मरगई तब अमीरको दूना दुःखहुआ चालीसदिन तक पुत्रके मरनेकी ग़मी मानी औरअमरूकी लोथगुलचेहरा समेतकाविशहिसामेंसादानके पास भेजदी उसने अपनी बहिनको अपने हाथ से मारा इस प्रकारसे बदला लिया तत्पश्चात्अमीरने कहा कि इसअशुभस्थानको नाशकरके उजाड़देना उचित है कि यहां मेरापुत्र मारा गयाहै यह कहकर गदासे दरवाजों को टुकड़े२ करडाला और (क़िलेमें घसकर सबको मारडाला हरमुज़ केवल चोर दरवाजेसे निकलकर चलागया और सब उसकेसाथी अमीरके हाथसे मारेगये और बहुतसे मुसलमान हुये तब कशमीर वासियोंको मारनेलगे तबवहांके खामीनेअमीरसे सहायताचाही अमीरने उसकोमुसलमान करके छोड़दिया और आप कूचकरके काविसहिसार को चलेआये ॥

मदायन में पहुंचकर हरमुज़ और नौशेरवांका पतालगाना और अमीरहमज़ा का नौशेरवाके छोड़ाने के लिये जाना ॥

लिखनेवालालिखताहै कि जिससमय हरमुज़ क़िले कशमीरसे भागकर

क़िलेसदायनमें गयातबउसकोविदितहुआ कि नौशेरवांको शहादपकड़कर लेगयाहै और बांधकर दण्डदेरहा हैयुनसकुलेहरमें जाकर छोड़ानेकी यत्न पूछी तो उसनेकहा कि बिनाहमज़ाके गये वहनहीं छूटसकेगा मातुमजाकर अपनीमातासे एकपत्र हमज़ाके पासभेजवादो वह जाकर छोड़ालावेगा तब उसने जाकर अपनी मातासे एक पत्र इससमाचार का लिखवाके भेजा कि बड़े लज्जा की बातहै कि तुम्हारेहोते बादशाहको इसतरह दुःखदे शहाद पकड़कर लेगया है तुम खबर नहीं लेते अमीर ने पत्रको पढ़कर कहा कि हरचन्द नौशेरवां मेरेसाथ बदीकरता है परंतु मैं उसकेसाथ नेकीही करूंगा इसबार अवश्य छोड़ाऊंगा यहकहके मना किया और मुक़बिलको साथलेकर हबशकी तरफ़ चला और वहां पहुंच कर एकबाग में उतर कर घोड़े को चरनेके लिये छोड़कर नौशेरवां के निकालने की युक्ति करनेलगा रात्रि को मुक़बिलसे कहा कि यार बनकर शाहानके सभामेंजाकर नौशेरवांको छुड़ा लेआओ उसनेकहा कि जैसीआपकी इच्छा होवे तबअमीर खिजरकी कमंद लेकर घरलथारणकरके कमन्दके द्वारा दीवार पर चढ़करशाहादके पासपहुंचे तो देखा कि शहाद सोरहाहै और उसकेसमीप नौशेरवां एकलोहे के पिंजड़े में बन्दहै और बहुतसा मेवा आदि शादादके पलंगके नीचे रक्खाहै अमीर मेवा शराबपीकर पहरेवालोंको मारकर नौशेरवांको पिंजड़े समेतउठाकर मुक़बिलके समीपले आया और आते समय एकपरदेमें लिखा कि मैं आया और तेरे क़ैदीको छोड़ाले जाताहूं नौशेरवां को मुक़बिलके पास रखकर उससेकहा कि तुम इसकी रक्षा करो मैंकोई घोड़ा ढूंढ़ कर उसकेलिये ले आताहूं अमीरतो घोड़ा ढूंढ़नेगये उधर शहाद जागातोदेखे कि नौशेरवां पिंजड़े समेत नहीं और रक्षक मरेपड़े हैं बड़ेसंदेह में था कि उस परदे पर दृष्टिपड़ी उसको पढ़कर क्रोधकेमारे जलने लगा और उसी समय चार सहस्र सवारसाथ लेकर अमीर की खोजमेंचला फिरते२ बागमें जोगया तो देखा कि नौशेरवांका पिंजड़ा रक्खाहै पूछा कि हमज़ा कहांहै उसने कहा कि मैं नहीं जानता कि कहां गया परन्तु कहीं घोड़े की खोजमें गया है शहाद नौशेरवांको कैदमेंछोड़ाकर अमीरकी खोजमेंचला थोड़ीदूरजा-कर देखा कि मुक़बिल घोड़ा लियेआताहै उसने जानकर उसको पकड़कर बांधा तब उसनेकहा कि मेरानाम हमज़ा नहीं है मैं मुक़बिलहूं तबतो शहाद को निश्चय हुआ कि अमीर बालूमें हवा के मारे फंसकर कहीं मरगया होगा यह विचारकरके नौशेरवांको साथलेकर काबिसहिसारको चला कि वहां चलकर अमीरके लड़कोंको मारकर मेहरनिगार को छीनलेवे और जोपीन और हरमुजको भी लिखा कि हमज़ा मरगया नौशेरवांको हम साथलेकर आतेहैं तुमभीआवोकि मुसलमानीसेनाको मारकर मे-हरनिगारको छीनलेवें वे सुनतेही सेनाको लेकर दौड़धाये और अमीर का वहीहालहुआ जिसतरह शहाद के दिलमेंआयाथा अमरूनेरात्रिको

उसनेदेखाकि अमीर बालूके मैदानमें प्यासकेमारे बेताबपड़ेहैं यह हाल सबसेकहकर वहांसे अमीरकी खोजमेंचले मार्गमें जबआये तो देखाकि शहाद अपनी सेनालिये मालिकाकेलेनेके लियेजाताहै और सुनाकि अमीरबालूके मैदानमें प्यासकेमारे मरगयेतबतो औरही व्याकुलहुआ अति शिघ्रहीजाकर पहुंचे सातदिनतक इधर उधर ढूंढाकिये कहींपता न मिला आठवेंदिन अमीरके हथियारमिले तबतोचित्त कुछठिकानेहुआ और जोरसे हमजाहमजाकहकर पुकारनेलगेतो हमजासुनताथा परन्तु बोल न सक्ते थे आखिरकार अमीरके पासपहुंचा देखकर बहुत रोया और अति शीघ्रही एकगिलास मिष्टपानीका झोरेसे निकालकरअमीरको पिलाया तबनेत्रखुलगये और कुछहोशआया एकगिलास शरबत और पीकर हथियारलेकरहोशमेंआये देखाकि मुकबिलऔर अशकर बंधेहैं अमकारने देखतेही सबछोड़डाले अमीर अशकरपर सवारहोकर और मुकबिलको साथलेकर नगरमेंजानेकी इच्छाकी तबरक्षकोंनेजाकर शहादसे पुत्रसेखबरकी वह सहस्र सवारलेकर अमीरकेसामने युद्धकरने को आया तब अमीरनेकहाकि पापी एकबारतेरा पिताहारगयाहै अबतू क्यों दुष्टपनाकरताहै परन्तु उसने न माना और एकतलवारलेकर अमीरके ऊपरदौड़ा अमीरनेछीनकर पृथ्वीपरदेमारा तबवह मुसलमान हुआ और तीनदिनतक अमीरकी मेहमानीकरके चौथेदिन बिदाकिया अबशहादका हालसुनियेकि इधरसे वहपहुंचा और उधरसेजोपीन और हरमुज इसके लिखनेपर आकरनौशेरवांसे मिलकर उन्हींकेसाथ सेना लेकर उतरे तबउसीदिन शहादने डंकायुद्धका बजवाकर उसघोड़ेपरजिसके पैरमेंएक सौ बीसमन का जालबंधतीथी सवार होकर शत्रुके सामने खड़ाहोकर कहनेलगाकि वो अरबवासियो मैं अमीरकोमारकर नौशेरवांकीआज्ञा से मेहरनिगार के लेनेके लिये आयाहूं मेरा नामशहादहै इससे उत्तम हैकि तुमलोग छोड़कर अपनेघरकी राहलेवोनहींतो आकर हमसे लड़ो तबलन्धौर उसकेसामने आया उसने एक गदा ऐसे जोरसेमारी कि लन्धौर उरकर भागजावे परन्तु लन्धौरनेरोककरएकहाथऐसामाराकि उसका घोड़ापृथ्वीमें दलदलके समान धसगया शहाद घोड़ेपरसे उतरकर पैदलहोकर लड़नेलगा जबगदासे जीत न सका तब तलवारसे लन्धौरको घायलकर दिया परन्तु लन्धौरघायलहोनेपरभी बराबरशामतक लड़ता रहा शामको शहाद डंकाबजवाकरचलागया और दूसरेदिन फिर फरहादपुत्र लन्धौरनेआकर सामनाकिया वहभी घायलहुआ इसीतरह से उसदिनकई पहलवान घायलहुये तबशहादमारे खुशीके फूलगया फरखारनेदेखाकि शहादको बड़ाघमंडहोगयाहैकिसीको अपने सामने नहीं समझता अपने घोड़ेको मैदानमें लड़नेकेलिये निकाला तबशहादने पूछा किओमनुष्यतूकौनहै तेराक्यानामहै फरखारबोलाकि मेरानाम फरखार

खारसरथवां है संसारमें मेरा कोई सामनानहीं करसका लागारचला शद्दादनेगदासे मारा उसनेरोककर सातसौमनकीगदाइसज़ोरसे मारी कि दोनोंसेना चौंकउठी और सबबड़ी प्रशंसाकरनेलगे और जो शद्दाद खाली न देतातोहड्डियांभीन उसकी मिलतीं शामतकयुद्धहुआकी परन्तु कोईजीतनसका तबदोनोंसेनालौटगईं दूसरेदिन फिरउन्हींदोनोंका सामनाहुआदोतीनदिनयुद्धहोनेपर एक दिनफरखारने शद्दादका एकहाथ काटलिया उसीदिनसेयुद्धकाहोनाबन्द होगयासंयोगसेएकसिपाहीगहीमनासेने एकदिन नोशेरवांसेकहाकि जो आज्ञाहोतोमैं जाकर सबअरब के सिपाहियोंका सिरकाटलाऊं नोशेरवांने कहाकि इससे क्या उत्तमहै उसीदिन अर्धरात्रि को वह सिपाही अरबियों की सेनामेंगया देखाकि दो सिपाहीक़बादके खेमेकेपास टहलरहेहैं उनसेनेत्रछिपाकर एक तरफ का परदाकाटकर खेमेमेंजाकर क़बाद का शिरकाटकर निकलकर चल दिया तब अमरूके सिपाहियोंने जो पहराफिरतेथे पकड़ा उसकेहाथमें क़बादका सिर देखकर सबचिल्लाने लगे सेनाके सरदारों ने जब उसखेमे मेंजाकरदेखातो क़बाद बेसिरकापलंगपर पड़ाहै सबदेखकर सिरपीट २ कररोनेलगे मेहरनिगार ने सुनकर ऐसा दुःखउठाया कि और किसी माताने पुत्रकेलिये न कियाहोगा प्रातःकाल गर्द्दमकेटुकड़े २ किये गये नोशेरवांने जबसुनाकि क़बादमारागयातो उसकोभी बड़ादुःखहुआ और चालीस दिनतक दोनों सेनाओं में गमीपड़ीरही चालीस दिनके पश्चात् दोनोंसेनाआकर मैदानमेंखड़ीहुई औरउसदिनभी फरखार और शद्दाद का सामनाथाकि उसीसमयमें बनकीतरफसे गरद दिखाई पड़ी दूतोंने जाकर देखातो मालूम हुआ कि अमीर अमरू के साथ बड़े धूमधाम से आतेहैं फरखारतोलड़ाईमेंसे बहुतसेसरदारोंको साथलेकर अमीरसेअगवानीमिलनेके लियेगया और शद्दाद अमीरका नामसुनतेही सेनामें से भागगया अमीरनेसबसे मिलमिलाकर पूछाकि शद्दादकहांहै आज क्यों नहीं पुकारताफरखारने कहाकि मैं तो मैदानमें छोड़आयाहूं तब अमीरने चारोंतरफदेखा परन्तुकहीं दिखाई न पड़ातो अमीरनेजानाकि वह भागगया अशकरपर सवारहोकर थोड़ीदूरगये जबपता न मिलातो जिन्नोंभाषामें उससे कहाकि बेटेजल्दशद्दादके पासपहुंचावो अशकर जो उड़ातो थोड़ीहीदेरमें पहुंचादियाउसनेदेखाकि हमजाआकरपहुंचगया अब किसीतरहसे प्राणनहीं बचसकेगा नेत्रोंमें अंधियारीछागई चाहता थाकि भागकर निकलजावेकि इतने में अमीर ने कमंद डालकर पकड़ लियाकिइतनेमें लन्धौरभीआपहुंचा अमीरने कमन्दउसके हाथमेंदेकर कहाकि खुसरो इसको खींचालन्धौरने कमन्दपकड़के खींचा तो शद्दाद काप्राण निकल गयातब उसके अपूर्व घोड़ेकोलन्धौर कोदियाउसनेकहा कि यहघोड़ा आपही केयोग्य है इतनेही में अमरू भी आपहुंचा उसने

शहादका शिर काटकर एकबल्ली परटांगदिया तत्पश्चात् अमीरअपने
मित्रोंके साथबातें करते हुये धीरेधीरे इसबिचारसे अपनेस्थानकी तरफ
चले कि ऐसानहो कि कोई आकर फिर युद्धकरनेको आरूढ़ हो उधर
जो जोपीनने देखा कि किला खालीहै चलकर मेहरनिगार को लेआवें
इसविचार से मुसल्मानी सेनामें गया और बहुत से द्वारपालकों को
मारता हुआ मलिका मेहरनिगारके समीपपहुंचा तब मेहरनिगार ने
उसको देखकर एकतीर उसकेपेटमें ऐसामारा कि वहघायलहोकर गिर
पड़ा तब जोपीनने जानाकि मुझसे यह रानीनहीं है तब उठकर उसके
शरीरमेंमारा कि वह बेहोशहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ी फिरवहचाहताथा
कि दूसरी तलवारचलावैकि इतनेमें अमीर आपहुंचातब जो जोपीन ने
भागने की काबू न पाई तब अमीर पर वार लगाई अमीर ने रोककर
मारतेहुये एकतलवार ऐसीमारी कि जोपीन दोभाग होकर पृथ्वीपर
गिरपड़ा वहांसे अमीर जब जल्दआये तो देखाकि मलिका बेहोशपड़ीहै
उसको देखकर बेताबहोकर सेनामें जाकर अमरको ख्वाजेबुजुर्चमेहर
के बुलानेकेलिये भेजा इधर मेहरनिगारका प्राणनिकलगया तब अमीर
एकआहमारकर बेहोशहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा थोड़ीसमयपर जबहोश
हुईतो बौरहे की तरह से कभी हंसे और रोते थे अमरू ख्वाजेबुजुर्च-
मेहरको लेकरआयातो मलिकाको मरीपाया और अमीर को दीवाना
देखकरब्याकुलहोगया और बुजुर्चमेहर सेकहनेलगा कि ऐसाजोकिसी
युक्तिसे अमीरको अच्छाकरो ख्वाजेनेकहाकि आजसे इक्कीसवेंदिन अमीर
आपही अच्छे होजावेंगे तब अमीर तीनताबूतबनवाकर सब सखासमेत
मक्केकीतरफचले समीप पहुंचकर एकपवित्रस्थानपर उतरकरवहीं तीनों
कीकबर खोदवाकर ताबूतोंको रखकर उमराचियोंको वहींपर ठहरे रहे
लिखनेवालालिखताहै कि इक्कीसदिनके पश्चात्बाईसवीं रात्रिकोअमीरने
स्वप्नदेखा कि हजरत खिजर आये हैं और एक गिलास शराबदेकर
कहनेलगेकि ऐ हमजा एकस्त्रीकेलिये तूऐसादुःख सहताहै तुझे तो
बहुत ऐसी स्त्री मिलजावेंगी इतना देखकर नेत्रखुलगये तो घबराकर
अमरूने पूछनेलगा कि सत्यबताओ अमरूमेरा क्याहालथा अमरूने सबहाल
अमीरसे कहा तबअमीरने अपनेस्वप्नदेखनेका हालसबसेकहा सबसुनकर
अतिप्रसन्न हुये और कहनेलगे कि आपतो उनके पुत्र हैं सिवाय उनके
और कौनआपको समुझासक्ता है बिनाउनके समुझाये और किसीका
कहनाभी आपनहीं मानते हैं परन्तु अमीरने न माना कहनेलगा कि
कुछहो परन्तु मैं मेहरनिगार से वादाकरचुका हूं उसीकी कबर पर
रहूंगा तुम सबलोग अपने २ घरकी राहलो ईश्वरकेलिये अब मुझेदुःख
नदो अमरूने अनेक प्रकार सेसमुझाया परन्तु किसीका कहना नमानाह
हमजाकेपुत्र सादानको गद्दीपर बैठाकर मिस्र की तरफ रवाना किया

तब अमरूने कहा कि ऐ अमीर मुझको तो अपने पास रहनेदे मुझे क्यों अपने पाससे जुदाकरताहै अमीरने कहा कि मेरेपास मुक़बिलके सिवा और किसीका कामनहींहै जब सब चलेगये तब अमरूने कहाऐ अमीर मुझको तो अपने पास रहनेदे मुझे अपने पाससे पृथक् न कर अमीर ने कहा कि मुक़बिल तो रहसक्ताहै परन्तु और कोई मेरेपास नहीं रह-सक्ता मुझेदूसरे मनुष्य की कुछ अवश्यकता नहींहै आखिरकार अमरूभी चलागया तत्पश्चात् अमीरने सिर मुड़ा कर साधूका भेष धारण किया और एक लंगोट बांधकर मेहरनिगार की क़बपर रहनेलगे जब नींद-आतीतो उसी क़बपर सो रहते ॥

पहुंचना क़ारूंनपुत्र फरहादपक और कयात पुत्र गर्दम सिपाहीका अमीरके पास और बांधकर लेजाना अमीर और मुक़बिल को ॥

लेखकलोग मोतीरूपी कागज़पर अपनी तेजलेखनीसे योंलिखतेहैं कि मलिकामेहरनिगारकी क़बपरअमीरकेरहनेकी खबरदेशभरमें फैलगई तब हरएकशत्रुचारोंतरफ से अमीरके मारनेकी युक्तिमें हुये जिसमें से क़ारून पुत्र फरहाद जो अपने सामने दूसरे को बलवान न समझता था मनुष्य तो क्या देवोंसे भी नहीं डरताथा बहुतसी सेना साथ लेकर अमीरके मारनेकेलिये स्थानसे निकलकरचला तो मार्गमें कयातपुत्रगर्दम से जिसने कबादको माराथा मुलाक़ातहुई तो उससे पूछा कितू कहां जाताहै क्योंदुःख उठाताहै उसने कहा कि मेरे पिताको हमज़ाके सर-दारोंने मारडाला था सो अजकल सुनाहै कि हमज़ा मेहरनिगार की क़ब परहै सो उसीके मारनेके लिये जातेहैं तब क़ारून ने कहा कि मैं भी वहीं जाताहूं इससे उत्तम होगा कि हम तुम साथही चलें उसने स्वीकारकिया तब दोनोंसेना साथहोकर कईदिनोंके बादमक्केके समीप जाकर पहुंचकर एक स्थानपर उतरी तब कयात ने क़ारूनसे कहा कि तुमहीं रहो मैं जाकर अमीरके पकड़नेकी युक्तिकरूं जो तुमको इसी भीड़भाड़से देखेगा तो वह भी खबरदार हो जायगा तब क़ारून वहीं रहगया कयात साधूबनकर अमीरके पासगया अमीरको सलाम करके बैठगया अमीरने पूछा कि तू कौनहै उसने कहा कि साधूहूं अबआप हीकेसमीप रहकर दिनकाटूंगा अमीरने कहाकि मेरी सेवाकेलियेतो मुक़बिलहै उसने कहाकि अबतो मैं कहींजाता नहीं तब अमीरचुपहो रहे थोड़ीदेरमें जब मुक़बिल भोजन लेआया तब अमीर ने उसको भी साथ बैठाकर भोजन करवाया जब अमीर ने जल मांगा तो कयात ने उठकर दारूबेहोशी मिलाकर अमीर और मुक़बिलको पिलाकर दोनों को अपनी चालाकी से बेहोशकर दिया और आप पेशाब के बहाने से वहांसे उठकर चलाआया और क़ारूनसे कहाकि मैं दोनोंको बेहोश कर आया हूं अति शीघ्रही सवार होकर मेरे साथचलिये तबक़ारूनने

कायातके साथहोकर मेहरनिगार की कब्र पर जाकर अमीरके मारने के लिये तलवारनिकाली तो सुक्रबिल देखकर क्राकूनके मारनेकोदौड़ा परन्तु नशाके कारण पृथ्वी पर गिरपड़ा अमीर का भी यही हालहुआ आखिरको दोनोंको बांधकर क्राकूनने अपनी सेनामें लाकर दोनों को चैतन्य करके क़ैदकरके पूछा कि ऐ अरबवासियो तुम्हारा इतनाबड़ा मक़दूर कि मेरे बापको तूने मारडाला और नौशेरवां का दामाद बन कर आपही बादशाह बनकर राजकरताहै अब बताक्योंकर तेरा प्राण बचेगा अमीरने कहाकि सलहै जो मुझसेलड़ा और हारकर मुसल्मान होनेसे इनकार कियाहै उसको मैंने माराहै परन्तु मेरा मरना ईश्वर के हाथहै तूतो मेराकुछनहींकरसक्ता विदितहोताहै कि तूबड़ा अज्ञान है इसपर क्राकून अति क्रोधित होकर अमीर को कोड़े मारने लगा अमीर ने कहा कि इतने कोड़े तू मुझको मारता है तुझै कोई मारै तो क्याहो उसने कहा कि मुझको कौन मारसक्ता है यह कहकर अमीर को नंगा करके कोड़ों से मारने लगा और ऊंट की खालखिचवा कर निमक छिड़कवा कर एक बड़े ऊंचे खंभेमें लटका दिया इसीप्रकार से सदैव सायंकालको उसीखंभेमें लटका देता और सवेरे उतारकर कोड़े मारता इसप्रकार से अपने पुरुषोंका बदलालेता रहा तत्पश्चात् नौशेरवां को इसहालकी खबरदी उसने सुनकर अपने हमराहियोंसे पूछा कि अमीर को मरवाडालें या छोड़ादेवें उन्होंने कहा कि अब तो मेहरनिगारभी नहीं है कि उसकी मोहब्बतहै अब मारहीडालना उचित है आखिरकार नौशेरवांने अपने सरदारोंकी बातें स्वीकारकीं और वहां जाकर अपने सामने अमीरको दण्डदिलानेलगा संयोगसे यहखबर अमरू को पहुंची तब असरू सबको इकट्ठाबटोरकर नौशेरवांपर चढ़ाईकरके गया कि जाकर नौशेरवांको विजयकरके अमीरको छोड़ा लेआवे परंतु वहां बहुत दिनों तक रहे कोई ऐसी युक्ति न लगी कि जिसे अमीरको छोड़ाते पीछेको क़िलेके अन्दर जाकर कपड़े की दूकान रखकर दूकानदारीकरने लगा अमीर का हाल सुनिये कि उसीप्रकार से सदैव दण्ड पाता था कि एकदिन क्राकूनकी बहिन फराजबानोंने स्वप्नमें देखा कि हजरतखिजरने आकर उसको मुसल्मान किया और कहा कि तू अति शीघ्रही जाकर अमीरको इसदुःखसे छोड़ाकर अपनेपास लाकर उसके साथ भोगकरो तुम्हारे उससे पुत्र पैदाहोगा वह यह सुनतेही अमीरके पास दौड़आई और बहुतसा मालअसबाब रक्षकों को देकर अमीरको छोड़ालेजाकर अपने स्थान में रखकर भोगविलास करनेलगी अमीर के लोपहोजाने की खबर क्राकून को पहुंची उसने अपने वजीर से पूछा कि रमल से विचारो कि हमजा कहां गया है उसने विचार कर बतलाया कि आपकी बहिन के पासहै तब उसने एक मनुष्य उसके पास

भेजा कि जाकर देखआवो कि हमज़ा वहांहै या नहीं उसने जब करा-
जवानोंके स्थानपर जाकर पूछा तो वह जलकर आगहोगई और कहने
लगी कि वज़ीर ऐसा प्रबल होगया कि मुझको झूठमूठ चोरीलगाताहै
कारन ने जब सुना कि यह झूठहीकहता है उसीसमय वज़ीरको मार
डाला और अमीरकी खोजमें लोगोंको इधर उधर भेजा तब अमीर ने
फरहादसे कहकर एकसहेलीको असद्की सूरतका सबपतावतलाकर
भेजा कि तुमजाकर इसरूपका मनुष्यदेखो तो लेआओ वह जबबाजार
में गई तो असद्को कपड़ा बेचते देखा उससे जाकर कहा कि हमारी
बेगमसाहबा ने कुछकपड़ा मांगाहै लेचलो असद्सुनतेही कपड़ोंका
गट्ठर बांधकर सिरपररखकर उसके साथहोकरगया औरकपड़ाखोलकर
करदिखलानेलगा अमीरअसद्का शब्दसुनकर बाहरनिकलआया असद्
दौड़करअमीरके पैरोंपरगिरा अमीरने उठाकर छातीसे लगाकर सब
हालपूछा उसनेकहाकि सेनासबतैयारहै आपहीका आसरादेखरहीहै
तब अमीरनेकहाकि यहांसे निकलनेकीभी कोई युक्तिहै असद्नेकहाकि
हमारी दुकानपर चलकरबैठिये वहांसे किसीप्रकारसे निकलचलेंगे अ-
मीरनेकहानहीं वहांक्याकरेंगे किसीलोहारकी दुकानपर चलोकिवहां
कोईमसल्भी मिलेगा तब दोनों एकलोहारकी दूकानपर गये अमीर बैठ
कर मट्ठीचलारहे थे कि इतने में बख़्तक और कारन ने आकर कहा
कि अबवतला हमजा क्योंकर बचकरजायगा यहकहकरकारनने अमीर
के ऊपर तलवारचलाई अमीरने उसीहथौड़े से मारकर तलवार छीन
कर कारनको पकड़कर असद्को सौंपकर एकशब्द ऐसाकिया किसब
नगरवासी व्याकुलहोगये और अमीरकीसेना सुनकर दौड़कर क़िलेमें
दाख़िलहुई उधर बख़्तकने जब नौशेरवां से अमीर के छूटनेका हाल
कहा तो वह चोरदरवाज़ेसे भागखड़ा हुआ सेनाने पहुंचकर लूटनामा-
रना शुरूकिया और उसदिन मुसल्मानीसेनाके हाथ इतना माल अस-
बावलगा कि किसीको रखनेकी जगह नहीं मिली और बहुतों कोजो
मुसल्मानहुये उनको नहीं मारा तत्काल गद्दी पर बैठकर अमीर ने
कारनकोबुलाकर पूछाकि बताअबतेरी कौनसीगतकीजावे तब वहरोने
लगा आख़िरको अमीरने कहा कि हमतेरा सब अपराध क्षमाकरतेहैं
तू मुसल्मानहोकर हमारेपास रह उसने उत्तरदिया कि यहतो मुझसे
नहींहोगा इतनासुनतेही अमीरने आदीअक़रबको सौंपदियाउसनेकुत्ते
की मौत मारकर जलादिया और शिर को क़िलेके दरवाजेपर लटका
दिया सबमनोर्थ ईश्वरने पूर्णकिया अब असद्का हालसुनिये किवहां
से भागा मदायन को चलाजाता था कि राह में दोपहलवान जिनका
नाम शिरबरहना तपशी और दीवान तपशी था जो नौशेरवांही की
सहायता के लिये आतेथे मुलाक़ातहुई तो उनसे अतिप्रतिष्ठा के साथ

सन्मुख होकर सब वृत्तान्त कहा उन दोनों ने हाथ जोड़कर कहा कि हमशा तो क्या जो सातों देवों के शत्रु आवें तो हम सबको मारडालेंगे बादशाह इसपर अति प्रसन्नहुये और बड़ीभारी खिलअत देकर अपने साथ शराबपिला कर उत्तम २ पदार्थ मंगवा कर अपने साथही भोजन करवाने लगे अमीर का हाल सुनिये कि फरजानबानों के साथ एक अच्छी सायत में विवाह करके चालीस दिनतक भोग विलासमें पड़े रहे इकतालीसवेंदिन सभामें बैठकर पूछा कि नौशेरवां का भी कुछ हाल किसीको मालूमहै अमरूने कहाकि दो शाहजादे तपशदेशकेवासी बड़ी सेनालेकर मार्गमें नौशेरवां से आकरमिले हैं आपका आसरादेखते हैं अमीर ने यह सुनकर उसीसमय आदीअकारब को आज्ञादी कि धावा उसदिशाकी करो और सेनाको आज्ञादी कि युद्धकरने पर आरूढ़होवे आदीने उसीसमयआकर अमीरकी आज्ञानुसार प्रबन्धकिया दूसरेदिन अमीर वहांसे चलकर तीसरेदिन जाकर उस सेनासे थोड़ीदूर उतरपड़े और डंका बजवाकर चौदह पलटनें मैदान में बराबर से खड़ी कीं तब तपशवासियोंने भी अपनी पलटन जमाई और प्रथम सिरवरहनातपशी ने घोड़ेको मैदानमें कुदाया उसके पीछेलन्धौर भी आकर मैदानमें खड़ा हुआ तब उसने कहा कि ओनपुंसक नाम बतलावेगा या बेनाम मारा जायगा लन्धौर नेकहा कि ऐ पापी जन्तु मेरानाम लन्धौरपुत्र सादान है संसारमें मेरी प्रबलता प्रसिद्धहै लावारचला यहसुनकर उसने गदा चलाई लन्धौर ने उसकोरोककर सातसौ मनकी गदा ऐसे जोरसेमारी कि जो पहाड़पर लगती तोटूटजाता परंतु उसका एकबाल भी नटेढ़ा हुआ इसी तरह से शामतक दोनों लड़ाकिये सायंकालको डंका पल-टनेका बजा दोनोंसेना अपने स्थानपर गईं अमीरने लन्धौरसे पूछा कि तुमनेइस पहलवानको कैसापाया उसनेकहाकि यहांतोक्या परदेशों में देवोंकाभी मैंनेऐसानहींदेखा अमीरनेहंसकर कहा कि इसकाबदन फौलादकाहै इसपरहथियार नहीं लगेगा दूसरेदिन सिरवरहना और आदी अकारबका सामनाहुआ तो जब आदीगदामारता तो वहसिरपर रोकलेता यहांतक कि आदी मारते २ थकगया परंतु उसके एक घावभी न लगा इतनेमें बनकीतरफसे गरद दिखाईपड़ी दूतोंने जाकर जब देखा तो विदित हुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये अलजोस बरबरी चालीससहस्र सवारसमेत आयाहै नौशेरवांने कईबादशाहोंको उसकी अगुवानीके लिये भेजा जिससमय वहआया तो देखाकि नौगजकाडील है देखने से डरमालूम होताहै नौशेरवां देखकर अति प्रसन्नहुआ और अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुखहोकर अमीर और अमरूका हाल उसको सुनाकर डंका पलटने का बजवाकर उसको अपने खेमे में लाकर अपूर्व प्रकारकी शराबपिलाकर भोजनकरवाया और नाचरंगकी सभाकरवा

के दूसरेदिन सिरबरहनातपसीने मैदानमें आकर ललकारा कि ओ हमजा
तू क्यों प्राणबचाताहै आकर सामनाकर पहलवानोंको भेजकरदिन क्यों
काटताहै यहबातें होहीरहीथीं कि वनकीतरफसे गरदंदिखाईपड़ी और
गरदमिटनेके बाद चालीस निशाननारंगीपोशदिखाईपड़े अमरूने देखकर
अमीरसेकहा कि यहवहीनक़ाबदारहै जिसनेमेरी कईबारसहायताकी
थी जबआप परदेशाफको गये थे इतनेमें नक़ाबदार ने आकर एकओर
अपनीसेनाका पराजमाया और शत्रुसे पुकार कहाकि तुममेंसे जिसका
जोचाहै वहपहिले मुझसेलड़े तब मुसलमानीसेनासे लड़ने की इच्छा करै
तब अमीरने कहाकि तुम जाकरनक़ाबदारसे कहोकि यहहमको लल-
कार चुकाहै हमको जानेदेवे आप खड़ेहोकर तमाशादेखें और जाती
समय हमसे बेमिले न जावे अमरूने जाकर कहा तो उसने स्वीकार
किया अमीर अशकर देवजादे पर सवारहोकरआये और सिरबरहना
से कहाकि तुमसे युद्धकरना वृथाहै तुम हमारी कमरपकड़कर उठाओ
हम तुम्हारी जो उठावे वह दूसरेको आधीनकरके रक्खे उसने कहा
कि बहुत अच्छा अमीर घोड़ेपरसे उतरपड़े वह भी उतरा और अमीर
का कमरबन्द उठाते २ उसके पैर पृथ्वीमें धसगये परन्तु अमीर न हिले
लाचार होकर छोड़ दिया तब अमरू ने सेना से पुकार कर कहा कि
यारो खबरदारहोजाओ अमीर अभी ऐसाशब्दकरेंगे कि हजारहों शत्रु
मरजावेंगे अमरू की इसबात को सुनकर सब बड़े सन्देहमें हुये कि यह
क्या बकताहै हमजाशब्द काहेकरै कहीं पहलवानके शब्द से लोगमरते
हैं इतनेमें अमीरने ऐसा शब्दकिया कि शत्रुकी सेनामें बहुतों के कानके
परदेफटगये आखिरकार अमीरने उसको उठाकर मुशकेंबांधकर अमरू
के हवालेकिया उसका दूसराभाई यह हाल देखकर तलवार खींचकर
दौड़ा अमीरने यही गत उसकी भी की तब नौशेरवांने दुःखित होकर
डंका बजवाकर अपने स्थानकी राहली तब अमीर भी सेनासमेत अपने
खेमेमें आकर बैठे और नक़ाबदारने भी अपनी सेनाको अमीर की सेना
के समीपबासकरनेकी आज्ञादी और आपसीधा अमीरके खेमेमेंजाकर
दाखिलहुआ तो अमीर अति प्रतिष्ठाकेसाथ सन्मुखहोकर बहुतसी वस्तु
परदेशाफकी दिखलाकर अमरूकी सहायताका धन्यवाद देनेलगे तब
उसनेकहा कि अबअधिकलज्जित न कीजिये कि इतनेदिन आपकोपरदे
शाफसे आयेहुयेहुआ और मैंन पासका और आपनेबड़े२ दुःखसहे अमीर
ने उसके बातचीतसे अपनेचित्तमें विचारा कि यह स्त्रीहै हाथ पकड़कर
दूसरेखेममें लेजाकर कहा कि अबकासने बहुत दुःखदिया यह कहकर
नक़ाब मुखपरसे उतारलिया तो देखतेही बेहोशहोकर गिरपड़ा अमरू
की आंखोंमें भी चकाचौंधी आगई परंतु उसने सम्हलकर अमीरके मुख
पर गुलाबआदिक छिड़ककर नक़ाबदारसे कहा कि अपराधक्षमाकरके

अमीर से मुख मिलाइये कि आपकी सुगन्ध से अमीर को होश होजावे नारंजीपोश जो बहुतदिनों से विरहमें मरती थी उसी समय अमीर के मुखसे मुखमिलाया उनके चित्तको आनन्ददिया अमीरने नेत्रखोलदिया तब असकूने लाकर दोदोगिलासअतिउत्तमशरावपिलाकर चैतन्यकिया अमीरने नारंजीपोशको बगलमें बैठाकर सब हालपूछा उसने कहा कि मेरा नारंजपरी नाम है बहुत दिनों से परदेकाफ को छोड़ कर आपके विरहमें इधरउधर घूमती थी जिसदिन आपशुतरहमसे लड़तेथे मेरातख़्त वायुपर उड़ताजाताथा आपके सूर्यरूपी मुखकोदेखकर मैं बेहोश होगई थी तोमेरीवजीरजादीने मुझको उत्तमस्थानपरलेजाकर चैतन्य कियाथा तबमैंफिर उसीस्थानपर आपके देखनेकेलिये आईथी और बहुत से लोग मेरेसाथथे अपने सेवकों को आपके ढूंढ़नेके लिये भेजाथा तो मालूमहुआ कि आपअबदुलरहमानकेसाथ परदेकाफकोचलेगये क्याकहूं किजो इतने दिनोंमें मैंनेदुःख सहेहैं परन्तु लाचार होकर रातदिन आपके आनेके लिये ईश्वरसेमनातीथी और जिससमयसे मुझकोविदितहुआ कि आप अपनीस्त्रीको असकूको सौंपगयेहैं और नौशेरवां उसकेलेजानेकी घातमें है उसीसमयसे मैंनेपरीजादोंकी डाकबैठाईथी कि जबकोई शत्रु आकर असकूपर चढ़ाईकरै तोहमको खबरकरो इसीप्रकारसे जब कोई आता थातोमैं चढ़दौड़तीथी और आपकीकृपासे विजयपातीरही यहबातेंसु-नकरअमीरने उसकामुख चूमलिया और उसीसमय विवाह करके सब रातिदोनोंने भोगविलास करके एकनेदूसरेको आनन्ददिया प्रातःकाल होते अमीरने उठकरस्नानकिया और पोशाकपहिनकर सभामें बैठकर दोनोंतपस्वियोंसेबुलवाकरपूछाकि तुमनेकिसतरहसे तुमलोगोंको पकड़ा उन्होंनेकहा कि जिसप्रकारसे पहलवान लोगोंकाधर्महै अबआपहमारे स्वामीहुये और हमआपकेसेवक तब अमीरने दोनोंको कलमा पढ़ाकर मुसलमानकरके बड़ीभारी खिलअतदेकर अपने समीप जड़ाऊकुरसीपर बैठाकर अतिप्रसन्नकिया और अनेक प्रकारसे उनको समुझाकर आप महलमें जाकर मलिका नारंजपरीके साथभोगविलास करनेलगे तत्प-श्चात् एकदिन फिर शत्रुकीसेनामेंडंकाबजा अमीरने शब्दसुनकर अपनी सेनामेंभीडंका बजनेकी आज्ञादी डंकेकाशब्द सुनतेही सबसेना हथियार बांधकर अमीरकेपास आकरखड़ीहुई तब अमीरनेमैदानमें जाकरशत्रुके सामने चौदहपलटनों का परेटबराबरसे जमाया अलजोस शत्रुकीतरफ से खड़ाहुआ और अमीर की तरफसे सरकोबगया तोसामना होतेही अलजोस घोड़ेपरसे कूदपड़ा और ऐसीदोलत्ती सरकोबके सिरपरमारी कि वहबेताबहोकर गिरपड़ा और अलजोसफिर घोड़ेकीपीठपर होरहा फिर जबसरकोबउठा तोफिर यहीगतकिया लोगदेखकर हंसनेलगेऔर सरकोबको बड़े आश्चर्यमेंहुआ कि कौनसीयुक्ति इसकेसाथकरैं कि इतनेमें बन

कीतरफसे एकसेना दिखाईपड़ी दूतोंने जाकर देखातो विदितहुआ कि नौशेरवांकी सहायताकेलिये चारभाई धूमधामसेमसूआदी सिलादीवक बादआदी और मियादजरादी अलबुर्जसे आतेहैं नौशेरवांने कईसरदारोंको उनकी अगुवानीकेलिये भेजकर बुलवाकर अति प्रतिष्ठा केसाथ सन्मुखहोकर उनको बैठाकर सब कुशलक्षेम पूछरहेथे कि एकबारगी मुसल्मानी सेनामें चिल्लाहटमची कि एकगोरखर बनसे आकर बहुतोंको घायलकिया अमीरउसकी तरफदौड़े आगे२ वह और पीछे२ अमीरअशकर देवजादे पर सवार शामतक पीछाकिये जाकर दूसरे देशमें पहुंचे तो वहलोप होगया अमीर लाचार होकर एक शिकार करके कबाब बनवा करखाकर उसरात्रिको वहीं एक वृक्षके नीचे सोरहे प्रातःकाल होते फिर वह गोरखर दिखाईपड़ा अमीरने उठकर उसकापीछाकिया वह भागते २एकबागमें पहुंचा अमीरभी उसकेपीछे २ बागमेंगये और सर्वत्र बढ़कर भूखकेमारे बेताब होकर बैठकर इधर उधर देखनेलगे तो एक तरफ बकरियां दिखाईं पड़ीं तो अमीर उसमें से एक बकरी को मार भूनकर खारहे थे कि इतनेमें कन्दर जिसकी बकरियांथीं सातसौ मनकी गदा लेकर अमीर के सिर पर गिरा अमीर ने उसको उठाकर तालाब में फेंक दिया तब तो वह बड़े सन्देह हुआ कि यह कौन है जिसने मुझे उठाकर फेंकदिया तालाब से निकलकर अमीर के सामने आकर पूछने लगा कि आप कौन हैं अमीर ने कहा कि हमसाहेब अमीरहमजाकेभाईहैं वहहमजाका नामसुनतेही अमीरके पैरोंपरगिर पड़ाऔर कहनेलगाकि अबमैं आपहीकेसाथ रहूंगा आखिरकार अमीर ने उसको मुसलमानकरके अपने साथरहनेकी आज्ञादी तब उसने कई दिनोंतक अमीरकी मेहमानीकी तत्पश्चात् अमीरने उससे पूछाकि यह कौनदेशहै उसनेकहाकि करनेसाकायहदेशहै और इसकीएकबेटीऐसी खूबसूरतहै किसीकेसाथ वह बिवाहनहींकरती अमीरनेकहाकिअच्छा हमको उसनगरमेंलेचलो उसनेकहा बहुत अच्छाचलियेमैं लेचलूंगा आखिरकार अमीरवहांसे उठकरचले जबथोड़ीदूरगयेतो उसने कहाकि हे अमीरअबतो कुछखापी लीजियेतब चलिये अमीरउसीजगह उतरपड़े और दो बकरियोंको भूनकर खाकर चले थोड़ीही दूरगयेथे कि उसने कहाकि क्षुधाकेमारे चलानहींजाता तबतो अमीर हैरानहुये कि इस को यहां क्या खिलावेंजाते २ एक सौदागर उतरा था उसीके समीप जाकरउतरेतो अमीरनेजाकर उससौदागरसे कहाकि थोड़ासा भोजन दीजिये उससौदागरने कहाकि आकरखाइये सब आपहीका है अमीरने लेजाकरउसको बैठाकरखूबखिलवाया तबअमीरने सौदागर से पूछाकि आपकहांसे आतेहैंऔर कहांजाइयेगा कारवांने कहाकि हम लोगोंकी इच्छातो खमनजानेकीथी परन्तुसुनाहैकि फौलादशनीर औसरकाबकैती

करताहै इससेवहां जाते डरतेहैं अमीरनेकहाकि जब हम लोग तुमारे साथहैंतो तुमकोकुछ डरनहींहै उन्होंनेपूछाकि आप कौनहैं अमीर ने कहाकि अमीरहमजाके भाईहैं गोरखर हमको उठाले आयाहै तबतो सौदागर अति प्रसन्नहुआ कि तुम अबदुलमुतलब के बेटेहो वह मेरा मित्रहैतो तुममेरेभीपुत्रहो आखिकार वे सौदागर अमीरके साथहोकर चले मार्गमें फौलादडाकू से मुलाक़ात हुई अमीर ने उसको मारडाला और वहां से सीधेआकर खरसनाकी सरायमेंउतरेतो चलतीसमय सौदागरों ने अमीर से कहा था कि आप हमको वहां पहुंचा दीजिये तो पांचवां हिस्सा अपनेमालका आपको देंगेसो पहुंचनेपर लाकर अमीरके आगे रखदिया परंतुअमीरने नलिया और उसीसरायमें रहकरदानपुण्य करनेलगा यहांतककि बहुतसेफ़कीर धनवानहोगये यहखबरउसजाको पहुंची तो उसने अपनी एकसहेलीको भेजाकिजाकर देखआवोकि वह मनुष्य कैसाहै उसने देखकरजाकर कहा कि यह तो वही मनुष्यमालूम होता है जिसकी तसवीर आपके पासहै वही दानपुण्य कररहाहै यह सुनकर वहमारेखुशीके फूलगई और पण्डितों ने पहिलेही बिचार कर कहा था कि हमजा आपही इसनगरमें आकर तेरेसाथ बिबाहकरैगा संयोगसे नसाईनामे पुत्रबादशाहफरंगका बहुतसी सेना के साथआकर नगर लूटनेलगा अमीर ने शोरगुल सुनकर लोगोंसे पूछा कि यह क्यों चढ़कर आयाहै लोगोंनेकहा कि बादशाहकी एकबेटीहै उसीकेलिये आयाहैयह सुनकर अमीरने अशकरकी पीठपरज़ीन रक्खी और कान्दजको साथ लेकरफाटकपर पहुंचकर कोतवालसे कहा कि फाटक खोलदेव कि हम बाहरजावें उसनेनमाना आखिरको उसकोमारकर फाटक तोड़डाला अमीर कान्दजपर नाराज़हुये कि इसबिचारेको क्योंमारायहखबर बादशाहको पहुंची उसनेआकर अमीरसेकहा कि तूक्यों ऐसी मेहनत उठाताहै अमीर ने कहा कुछ मेहनत नहीं आप जाकर तमाशा देखिये उसने कहा किजोआपनहींमानते तोजोमेरीसेनाहै उसीकोसाथलीजिये अमीर नेकहाकि सेनाकी कुछआवश्यकतानहींपरन्तु जबशत्रुकीसेनाभागे तब लूटनेकेलिये सेनालेकर आनाआखिरकार अमीरनेजाकर फिरंगियों कीसेनाके चालीस पहलवानोंको मारकर भगादिया और चारकोसतक पीछाकरके बहुतेरोंको घायलकिया बादशाहकी लड़कीकोभी यहखबर मालूमहुई तब एक कोठेपर बैठकरबाल खोलकर ईश्वरसे मनाने लगी कि यहदूसरेकेलिये लड़ताहै बचाओ और दूरबीन लगाकर अमीर की लड़ाईकातमाशा देखनेलगी और बादशाहनेजबदेखा कि दोनोंमनुष्योंने शत्रुको हल्लाकरकेभगादिया तबतो अतिप्रसन्नहोकर अपनेवज़ीरसे पूछनेलगे कि येदोनोंकौनहैं उसनेकहा कि एकसौदागर सरायमेंटिकाहै येदोनोंभी उन्हींकेसाथहैं तब बादशाहने उनसौदागरोंको बुलाकरपूछा

कि येदोनोंकौनहैं उन्होंनेमार्गका सब हालकहकर कहाकि यहजो घोड़े परसवारहै यहतो अमीरहमज़ाका भाईहै और शद्दसामी इसकानाम है दूसरामनुष्य इन्हींकेसाथहै और कुछ मैंनहींजानताहूं बादशाहअफ़सोसकरनेलगे कि इतनेदिनोंसे यह मेरेनगरमेंहै और मुझको मालूम हुआ नहींतो इनकीमेहमानदारी करते और कहनेलगाकि निश्चयकरके यहहमज़ाहै दूसरेमेंऐसी शक्तिनहींहै अच्छा अब देखलिया जावेगा तत्पश्चात् जब अमीरने फिरंगियोंको मारकर हटादिया तब बादशाह अमीरकी आज्ञानुसार सेनासमेतजाकर सब मालअसबाब शत्रुका लूट लिया और अपनीसेनासे कहा कि इसमेंसेकोई न छूनायह सबमालशद्दसामीकाहै राबेपलासपोशने भी बहुतसारुपया पैसासाबू और कंगलों को लुटाया यहांतक दानकिया कि कोई उसनगरमें दुःखी न रहगया जिससमयअमीरशत्रुको पराजितकरनगरकीतरफफिरेतोफतेनोशअमीर कोसाथलेकर क़िलेमेंआकर अतिप्रसन्नताके साथबैठे तब फतेनोशनेबड़ी धूमधामसे अमीरकी मेहमानदारीकरकेअपनेसाथशराब कबाबखिलाया कन्हज जोनशेमेंआयातो पलेपनानामसे एकपहलवानसे लड़नेलगा अमीर नेडाटकर मनाकर दिया और कईदिनके विलासके पश्चात् बादशाहने अपने वज़ीरसेकहा कि जोराबपमानती तो इसी केसाथ विवाह करदेते इससेउत्तम कोई नमिलेगावज़ीरनेजयजाकर राबपासेपूछा तोउसने सिर झुकाकेकहा किपिताजीकीजैसीइच्छाहोमैंउनकीआज्ञासे बाहरनहींहूं बादशाहने यहसुनकर अमीरसे अपनीदामादी स्वीकारकरनेकी प्रार्थना की अमीरने स्वीकार किया तब बादशाह एक शुभसायत पूछकर उसी दिन विवाहकासामानइकट्ठाकरनेलगा अमीने उससमय अपने चित्तमें विचाराकिइससमयजोअमरूहोता तोअतिहीप्रसन्नहोताअमरूकाहाल सुनिये कि जिसदिनसे अमीर गोरखरके पीछे निकलेथे उसीदिन अमरू भी बराबर पतालेता हुआ वहांसे चला यहांतक कि एकदिन अमीरके विवाहके पहिले अमरूने बादशाह के फाटकपर पहुंचकर दरबानों से कहाकि बादशाह से जाकर कहो कि शद्दशालीनामे मेरा गुलामभाग कर आया है उसको अभी हमारे पास लाकर हाज़िर करैं नहीं तो अच्छा न होगा दरबानने जाकर बादशाहसे उसका संदेसाकहा अमीर सुनकर अतिव्याकुल हुये कि कौन है दरबान से पूछा कि उसका डील डौल कैसाहै उसने कहाकि तेरहगज़ का तो लंबाहै और पांचगज की टोपीलालबनातकी दियेहै और उसपर दोपरलगे हैं वे वायुसे हिलतेहैं और व्याघ्रके चर्मकी क़बा गलेमें है और बहुतसे तीर और कागज़ की ढाल सिरपर रक्खेहै और अठारह मनका सोंटा हाथ में लियेहुये ऐसे ठाठसे अड़ाखड़ा है कि देखनेसे डरमालूम होताहै अमीर इसहालको सुनकर बाहर निकल आये सब लोग सुनकर बड़े आश्चर्य में हुये अमरू

अमीर को देखतेही दौड़कर पैरोंपर गिरपड़ा अमीरने उठकर छातीसे लगाया और हाथपकड़कर लेआकर अपने समीप बैठाकर सब वृत्तान्त उनकी चालाकी का सुना बादशाह ने कहा कि यहतो बतलाइये कि ये कौनहैं अमीरने कहा कि नौशेरवां का मसखराहै अमरूने कहा कि साहब मसखरेतो बादशाह और अमीर होतेहैं मुझको यह कहांमयस्सरहै यहसुनकर सब सभाकेलोग हंसनेलगे तत्पश्चात् विवाह के समय अमीरने अमरूसे कहा कि जाकर तुम एक काजी मुसल्मान को विवाह कराने के लिये लेआवो अमरू वहांसे उठकर बाहर आया और काजी का भेषधारणकरके एकबड़ा आमामाथमें लेकरलंगमारताहुआ जाकर बादशाहके सामनेखड़ाहुआ लोगोंने उठकर बैठाया और सबलोग कहने लगे कि आजतक हमनेतो ऐसावृद्ध मनुष्य कभीनहीं देखाथा नमालूम हजरत कहांसे आयेहैं अतिप्रसन्नकरके विवाहकरानेकी आज्ञादी अमरू ने इसप्रकारसे पढ़ाकि लोगसुनकर घबरागये बादशाहने विवाहकराने के पश्चात् हजार अशरफियां अमीर के आगेरखदीं तब अमरूने कहाकि इसको मैं क्या करूंगा पांचहजार अशरफीसे काम नहीं मैं लेताकन्दज ने कहाकि मौलवी साहब जो आप नलें तो इसको मुझको देदीजिये तब अमरूने उसको उठाकर झोरेमें रखलिया और कन्दज को एक आसा ऐसा मारा कि वह पृथ्वी पर गिरकर लोटनेलगा और अमरूने अपनी राहली कन्दज कहनेलगा कि अच्छा काजीजी कहींतो मिलोगे तो मैं समझलूंगा बादशाहने पूछा कि यह कहांसे आया था अमीर ने कहा कि ईश्वरने इसको भेजदिया था फिर कन्दज ने पूछा कि वह मसखरा कहां गया ऐसे काजी को लाया जिसने बे अपराध मुझे मारा है कि अब तक मेरे शरीर में पीड़ा है जो वह काजी न मिलैगा तो उसी से समझूंगा बड़ा दुःख दूंगा इतने में अमरू फिर दरबार में आया और कन्दजके सिर पर सिर रखकर ऐसा नाचा कि लोग देखकर हंस हंस कर लोट २ गये बादशाहभी अमरूकी चालाकीसे अति प्रसन्न हुये और अपने वजीरसे कहनेलगे कि ऐसा मनुष्य तो हमने कभी नहीं देखा यह हर बातमें अति प्रबलहै तत् पश्चात् शराब पीकर सब बदमस्त होगये और कूद २ नाचनेलगे सब दुःख सुख भूल गया तब बादशाहने बहुतसा इनाम अमरू को दिया और सबको यथा उचित प्रसन्न किया इसी प्रकार से सात दिन रात्रि नाचरङ्ग हुआ किया आठवें दिन अमीर ने अमरूसे कहा कि तुम चलकर सेनाको हमारा हाल सुनाओ हम कुछ दिन यहांकी सैरकरके आतेहैं तब अमरू तो सेनाकी तरफ चला और अमीर महलमें जाकर रावेमलाल पोशके साथ भोग विलास रात्रिदिन करनेलगे थोड़े दिनों के बाद एक महलवालेने आकर खबरदी कि मलिकाके अवधान है अमीर सुनकर अति प्रसन्न हुये और कहने लगे कि

अब जबतक लड़का न होगा तब तक हमभी यहीं रहेंगे रावयाने कहा कि यही मेरीभी इच्छाहै कि मैंने आपके विरहमें बहुत दुःख उठायाहै अब तो कुछ दिन सुख दीजिये ॥

जाना अमीर का फतेहयार भाई फतेनोश के देश में और मारना अजदहे का और उत्पन्न होना अलमशेर रूमी का ॥

लेखकलोग लिखतेहैं कि जब अमीरका विवाह रावयाके साथ हुआ तो एक फतेनोश के भाई फतेयार नामे ने जिसका देश वहां से मिला था उसने इस बात को सुनकर कि फतेनोशने अपनी बेटी का विवाह एक मुसाफिरके साथ कर दियाहै अपने भाईको लिखा कि मैंने सुनाहै कि रावयाका विवाह कियाहै सो दामादके देखनेकी मेरीभी इच्छाहै कृपा करके भेज दीजिये फतेनोशने उस पत्रको अमीर के हाथमें देदिया अमीर ने पत्र पढ़कर कहा कि अच्छा हम जांयगे आखिर कार दूसरे दिन अमीर गये जब समीप पहुंचे तो फतेयार अगुवानी मिल कर लेजाकर अपने स्थान पर अति प्रतिष्ठाके साथ सन्मुख होकर बातें कर रहेथे कि एकबारगी शोर गुलगुनाई पड़ा अमीरने पूछा कि यह शोर क्यों होता है उसने कहा कि इस नगरके समीप एक अजदहा है वह जब स्वास लेताहै तो बहुतसे मनुष्य जीव जन्तु भस्म होजातेहैं उसीने सांस लियाहै अमीरने कहा कि अफसोसहै कि आजतक कभी इसका हाल फतेनोशने मुझसे नहीं कहा नहीं तो अब तक कभी मार डालते अच्छा अब आप किसी को मेरे साथ कर दीजिये कि वह दूर से उसके रहनेका स्थान दिखा देवे फतेयारने कहा कि मैं आपही आपके साथ चलूंगा तब अमीरने अशकरको तैयार करवाया और सवार होकर कन्दनको साथ लेकर जानेके लिये आरूढ़ हुये और फतेयारभी अपनी सेना साथ लेकर अमीर के साथ हुये कि हर एक अपने चित्तमें आश्चर्य करता था कि यह मनुष्य अजदहे को किसतरह मारेगा आखिरकार अमीर ने उसको मारकर दो भाग कर दिये तब उसके मुख से ऐसा धुआं निकला कि कोसोंतक अंधियारा होगया जब धुआं बन्द होगया तब अमीरने फतेयारको लेजाकर दिखलाया वह देखकर अति प्रसन्न हुआ और जितनेलोगथे देखकरअमीरकीसब प्रशंसाकरनेलगे तत्पश्चात् थोड़े दिनतक वहां वासकरके नगरखरसनाशेमें आये और इतनेदिनोंमें गर्भ के दिनभी पूरेहुये और एक अच्छी सायत एक पुत्र पैदाहुआ तो अमीर ने उसका नाम अलमशेर रूमी रक्खा और फतेहनोशने इतना पुण्यकिया कि बहुतसे लोगधनवान होगये जिसनेजो चाहावह लिया जबअलमशेररूमी चालीसदिनकाहुआ तबअमीरबादशाह और रावया पलास पेशसे बिदाहुये जाती समय कहा कि जिस समय यह लड़का युवाहो तो इसको हमजा की सेनामें भेजदेना तब फतेनोशने अमीर से

सौगन्धदेकर पूछाकि सत्यकता वो तुम्हारा नाम शादग्मीहै या हमजा अमीरनेकहा कि हमजानहींहूं फतेहनोश अतिप्रसन्नहुआ और कन्दज बगलबजा२ कर कहनेलगा कि मेरी बाततो रहगई कि आधीन हुआ तो केवल हमजाकेहुआ दूसरा मुझसे न जीतसका रादपा नेभी सुनकर ईश्वरका धन्यवाद किया कि हमजा ऐसा पुरुष मिलाजो संसारमेंप्रसिद्ध है तत्पश्चात् अमीर वहांसे कन्दज को साथलेकर अपनी सेना में पहुंचे तो सब सरदारों ने दौड़कर सलामकिया अमीर ने सबको छातीसेलगा कर सब हाल पूछकर कन्दज को अलजोस के साथ लड़नेको भेजा अल-जोसने सदैवकी तरह उसको भी लातोंसे मारा वह बड़े सन्देहमें पड़ा रहा कि किसतरहसे इसको मारूं आखिर कार शामतक दोनोंसे युद्ध हुआ दूसरे दिन उसने अमीरको ललकारा तो अमीर अशकर देवजादे पर सवारहोकर गये और अलजोस से वार चलानेको कहा उसने दो वार चलाकर तीसरी वार चाहा कि दोलत्ती मारे अमीर ने उसके पैरपकड़कर घुमाकर देमारा और बांधकरअमरूके हवालेकिया अमरूने उससे कहा कि उठचल उसनेकहाकिबलहो तोउठालेचल अमरूने दो तीनकोड़े मारे तबतो वह कूदताहुआ अमरूके आगे २ भागा लोगदेख कर हंसनेलगे तत्पश्चात् अमीर डंकाबजवाके चलेआये रात्रिकोअमीरने अलजोसको बुलाकरपूछाकि अबक्याइच्छाहै उसनेकहा कि सेवकको क्या जैसीआज्ञाहो वहीकरूं जबतकप्राणहैं आपकी सेवकाई करूंगातब अमी-रने उसको मुसल्मान करके अतिप्रतिष्ठा से जड़ाऊ कुरसी पर बैठाकर सब से अधिक प्रतिष्ठादी तत्पश्चात् अमरू ने बाला गुलामी का उसके कानमें डालकर नाचरङ्ग कराने की तैयारी की लेखक लिखता है कि अपनी सभामें महलोंने आकर खबरदी कि नारंजपरीके पुत्रउत्पन्नहुआ अमीर ने सुनकर डंका बजने की आज्ञादी और सब को यथा उचित इनामदेकर एक मनकी सुवर्णकी हसुली बनवाकर अमीरजादेके गलेमें पहिनाकर तोकजंरी नाम रखकर रक्षाकरनेवाली को सौंपदिया और बहुतसे सिपाही उसकी रक्षाकेलिये मुकर्ररकिया तत्पश्चात् आपसवार होकर मैदानमेंगये तो एकदिन सेनासे निकलकर अमीरको ललकारा तब इस्लफतानोश ने जाकर उसका सामना किया इतनेमें वनकीतरफ से एकसेनादिखाईपड़ी दूतोंनेजाकर खबरली तो विदितहुआ कि शाह-जादाहुस दोनोंसेनाओंसे युद्धकरनेकेलिये आताहै इतनेमें आकर दोनों सेनाओंके बीचमें परेटजमाकर शाहजादे नौशेरवांकी सेनाकीतरफघोड़ा लेजाकर ललकाराकि जिसको बहादुरीकाघमण्डहो वह आकर हमारे सामनेदिखावे तब नौशेरवांकी ओरसे एकादी सामनेआकर गदाचलाने की इच्छाकी थी कि इतने में शाहजादेहुस ने गदा छीनकर फेंक दी और एकादीको घोड़ेसमेत उठाकर पृथ्वीपर पटकदियाकि वहमरगया

इसीप्रकारसे थोड़ेहीकालमें बहुतसे नौशेरवांके सरदारोंको मारकर
सेनाकाजीतोड़दिया तब अमीरकी सेनाके सरदारोंको ललकारा तब
फरहादने जाकरसामनाकिया तबउसने एकबार ऐसीमारीकि हाथी
जिसपर फरहादसवारथा गिरकरमरगया इसीप्रकारसे कईपहलवानों
के सामनाकरनेके पश्चात् शाहकूमनेकहाकि हमजाक्योंनहीं आताआ-
खिरकार हमजाने सामनाकरके कमरपकड़कर चाहतायाकि उठाकर
पृथ्वीपर पटकेकिइतनेमें आकाशवाणी हुईकि खबरदारहमजा यहतेरा
पुत्रहै यहसुनकर अमीरनेधीरेसे रखदिया तबवह उठकर अमीरकेपैरपर
गिरा अमीरने उसकोछातीसे लगायाऔर हाथपकड़कर सेनामेंलेआ-
कर सबसरदारोंसे उसका अपराधक्षमाकरवाया अमीर का पुत्रजान-
कर सब लोग अति प्रसन्नहुये और सातदिन तक नाचरंगहुआ किया
आठवेंदिन शत्रुकीसेनासे डंकेकाशब्दसुनाई दिया अमीरनेभीडंका बज-
वायाऔर मैदानमेंजाकर अपनीसेनाका परेटजमाकर खड़ेहुयेतबनौशे-
रवांकी सेनासे एक पहलवान आदी नाम खड़ाहोकर ललकारने लगा
रुस्तमपीलतन उसके सामनेगयातो तीनबार रोककर एकतलवार ऐसी
लगाईकि उसका प्राणनिकलगया लिखनेवालालिखताहैकि उससमय
रुस्तमपीलतनने पचासपहलवानोंको मारकरनौशेरवांकी सेनामेंजाकर
बहुतेरे पहलवानोंको मारकरसेनाको भगादिया अमीरने देखाकि पुत्र
अकेलाहैसेनालेकरदौड़करउसीकेसाथमारते२ चारकोसतकखेदकरछोड़
दियालौटकरइतनामालवअसवाबपायाकिउसकोइतनाकभीनमिलाथा
किकोई आपसेउठाकरनलेजासका तत्पश्चात्रुस्तमआकरअमीरकेकदमों
परगिरा अमीरने उठाकर छातीसे लगाकर बहुतसा रुपया अशरफी
पुण्यकिया तत्पश्चात् नाचरंगकरानेकी आज्ञादीऔर सबकारोबार बन्द
रहानौशेरवांने बख्तकसेकहाकि बड़ीपराजयहुई अबकोईसामानयुद्धका
नहींरहासेनासबव्याकुलहै अबकौनयत्नकरनीउचितहै बख्तकनेकहाकि
यहांसे निकटखादर नगरहैवहांका स्वामीकैमाजशाहकादरी बड़ाबहा-
दुर और स्वभाव का अति उत्तमहै उसीके निकट चलकर शरणलीजिये
ईश्वरचाहेंगेतो वहआपकानाम सुनकरअतिप्रतिष्ठाके साथसन्मुखहोगा
नौशेरवां उसनगरकी तरफचलकर दूसरे दिन जाकर पहुंचातो दूतोंने
उसको जाकरखबरदी कि नौशेरवां सात देशोंका बादशाह हमजासे
हारकर आपके निकटसहायताके लिये आयाहै वहबड़े धूमधामसे स-
वारहोकर नौशेरवांकी अगवानीके लियेगयाऔर अपनेस्थानपरलाकर
तख्तपर बैठालकर सबहाल पूछनेके बाद उसको बड़ी आसादी कि जो
हमजायहां आवेगातो अपनेकियेहुये का फलपावेगा बख्तकनेकहाकि
जो ऐसा न होतातो काहेको बादशाह आपके पास आते ॥

जाना अमीरका नौशेरवांका पीछाकरके खावरनगर की तरफ और मुसलमान करना कैमाज बादशाह खावरको ॥

लिखनेवाला लिखताहै जिससमय अमीरसभासे उठेतो अमरूसेपूछा कि कुछमालूमनहींहैताकि नौशेरवां किसदिशाकोगया अमरूनेकहा कि सुनाहैकि कैमाजशाह खावरीके पासजाकर शरणली है उसनेशरण देकरवचनदियाहैकि तुमयहांरहो अमीरजबआवेगातोहम उसकोआने काफलदिखावेंगे अमीरने हंसकरकहाकि हमाराखेमाखावरकी तरफ रवानाहो उसकी आज्ञानुसार कियागया तब अमीरदूसरेदिन सेनास-मेतखावरकी तरफचले जिससमयखावरकेनिकटपहुंचेकहमाजशाहको एकपत्र इससमाचार का लिखकर अमरूके हाथभेजाकि नौशेरवांऔर बखतक को हमारेपत्र तुम्हारेपासहैं उनको बांधकर हमारेपासभेजदेव नहीं तो हमआकर बड़ाटण्टाटेंगे अमरूने पत्रलेकर दरवानोंसे कहाकि बादशाहसे अतिशीघ्रही हमारी खबरकरो दरवानोंने कहा तब बाद-शाहने अमरूकोसभामें बुलाकरपत्रमांगाअमरूनेकहा किसेंतमेत मैं इस पत्रकोनदूंगा तुमनहीं जानतेकि यह पत्रबड़ेनामीमनुष्यकाहै आखिर-कार कैमाजने बहुतसी अशरफियां देकरउसपत्रको लेकरचूमकर खोल कर पढ़करपत्रको नोचडाला और कहनेलगा कि जोहमजा लिखताकि नौशेरवां और बखतकको मेरेपासबांधकरभेजदेवनहीं तोहमारे तखतके पटरोंसे ताबूतबनावेंगे तोक्याहम उसकेनौकरहैं या उससे डरतेहैं अ-मरूनेकहा कि लाचारहैं कि अमीरनेमनाकियाहै नहींतो जिसतरहसे तूनेपत्रफाड़डालाहै उसीतरहसे हमतेरेपेटको फाड़तेकहमाजने क्रोधित होकर अपनेगुलामोंसे जोहाथबांधकर खड़ेथेआज्ञादी कि इसकोपकड़ लोजबवे दौड़ेतब अमरूने खंजरनिकालकर बहुतोंको मारकर बादशाह के सिरपर एकचपतमारकर मुकुट लेकर चलदियाबहुतोंने पीछाकिया परन्तु अमरूको कौनपाताहै आखिरकार अमरूने आकर अमीरसे सब वृत्तान्तकहा दूसरेदिन कैमाजशाह डंका बजाकर युद्धकरने पर आरूढ़ हुआ अमीरनेभी अपनीसेनाको परेहनमाया तो सबसे पहिले खुरशेद खुबरीबख्तिन कहमाजशाह कि जो अपनेसामने किसीकोनसमझती थी मैदानमेंखड़ी होकरललकारा तब अमीरकी सेनामें से शेरमार नामीने जाकरसामना किया तोउसने एकही बल्छी मारकर घोड़ेको घायल किया इसीतरहसे थोड़ेहीकालमें बहुतसे पहलवानों को घायल किया आखिरकार बसमपीलतनसे न रहागया उसनेभी जाकेसामना किया तब उसने एकबादशाहजादे परभी चलाईउसमने बल्छी पकड़करखींच लिया कितनाही उसनेबलकिया लेकिनबल्छी नछूटी और थोड़ीदेरमें घोड़ेपरसे कूदकर उसकोघोड़ेसे गिराकरचाहा कि बांधलेवेलेकिन जब मालूमहुआ कि स्त्रीहै तो गोदमें उठाकर अमीर के पास लाकर डाल

दिया अमीर ने उससे पूछाकि तू कौन है तू क्यों लड़ने आई उसने कहा किमैं कहमान की बहिन हूं खुरशैदखबरी मेरा नाम है तब अमीरने आज्ञादी की इसको रुस्तम की माता के पास लेजावो आखिरकार खुरशैदखबरी तो उधरभेजीगई इधरकहमान शाहकेभाई से रुस्तमकी सामनाहुआ तो रुस्तमने उसकोभीबांधा और पुकार कर कहाकि खोकोलड़ाकर तमाशा देखतेहो जो मर्द होतो खुदआकर लड़ो तबनीमतन पिता कहमानशाह खबरीने आकरसामनाकिया रुस्तमने उसकोभी एकही बारमें बांधलिया तत्पश्चात् हमानखबरी आया तो उसकोआतेही बांधलिया इसीतरहसे थोड़ेकालमें बहुतसेपहलवानोंको बांधलियाआखिरकारकहमानडरकरपलटनेकाडंकाबजवाकरभागगया तबअमीरभीअपनीसेनासमेत अपनेस्थानपरचलेआयेरुस्तमनेआकरअमीर के कदमछुये अमीरने गलेसे लगाकर बहुतसा रुपया अपरफ़ीपुष्यकरके रात्रिको सभामेंबैठकर नीमतन और हुमानसे बुलाकर पूछाकितुम्हारी अब क्या इच्छाहै उन्होंने कहा कि जबतक कहमान मुसल्मान न होवे तब तक हमलोगोंको कैदरखिये अमीरने स्वीकारकरके आदीकेहवाले किया और आप नाचरंग देखनेलगे उसीसमयमें खुरशैदखबरी से पुछवायाकि तुझको रुस्तमके साथविवाहकरना स्वीकारहै उसने उत्तरदिया कि मेरीभाग्यमेंयहकहांहैकि ऐसापुरुष मुझेमिले तबअमीरनेएकअच्छी सायत पूछकर दोनों का विवाहकरदिया तब रुस्तम सात दिन रात्रि बराबरमहलमें रहकरभोगबिलास करतारहा आठवेंदिन डंकेकाशब्द सुनकरमहलसे बाहरआया और शस्त्रधारणकरके अमीरके साथहोकर मैदानमें जाकर सेनाका परेट जमाकर खड़ाहुआ तब कहमानशाहने घोड़ेको मैदानमेंलाकर ललकाराकि ऐशाहजादे तू लड़नानहीं जानता आमैंसिखलाऊं यहसुनकर रुस्तम घोड़ेकोलेकर उसकेसामनेगया तब उसनेआठसौमनकीगदाउठाकर रुस्तमकेऊपर मारीतोरुस्तमनेतोढाल से रोकलिया लेकिन घोड़ा घायलहोगया तब शाहजादे ने घोड़ेपर से कूदकर एकतलवार ऐसीलगाईकि उसके घोड़ेकेचारों पैरकटकर गिर पड़े फिरदोनों दूसरे घोड़ोंपर सवारहोकर लड़नेलगे रुस्तमनेहजारमन का गदाइसजोर से कहमनके शिरपर मारीकि जो पहाड़होतातो वह भी हरजाता लेकिन कहमानका एकबालभी न टेढ़ाहुआहंसकर कहनेलगाकि ऐ हमजाके पुत्र इसीबलपर मुझसेलड़नेआयाहै जा अपनेपिता को भेजदेवह आकर मुझसेलड़े रुस्तमनेकहाकि तूनेमेराक्याकिया जोमेरे पिताको बुलाताहै ऐसी बातमतबक आखिरकार शामतक दोनों लड़ा किये देखनेवाले बड़े आश्चर्यमेंहुये शामको कहमानडंका बाजगपत बजवाकरचलागया दूसरेदिन फिरदोनों सेनाआकर परेटपर खड़ीहुईउस दिनशामतकबल्औरऔरकहमानकासामनारहा आखिरकारसायंकाल

को दोनोंसेना अपने २ स्थानोंपर गई तब अमीर ने लन्धौर और रुस्तम से पूछाकि यह कैसा पहलवानहै उन्होंने कहाकि आपकेबाद संसारमें यहीहै दूसरेदिन दोनों सेना मैदानमें आकर खड़ीहुई और कोई सेना से न निकला था कि एक जवान चालीस गज़का लंबा बनकी तरफ से आकर दोनों सेनाओंके बीचमें खड़ा हुआ और नौशेरवां की सेना के तरफ मुखकरके ललकारा नौशेरवांने एकादीको उससे सामना करनेको भेजा उसने एक घूंसा ऐसा मारा कि उसकी हड्डियां चूर मूर होगईं उठनेके योग्य न रहा तब दूसरे आदीने आकर सामना किया उसका भी वही हाल किया तब तो सब का जी टूट गया कोई सामने न आ सका थोड़ी देर रहकर मुसल्मानी सेनाकी ओर मुख करके ललकारा तो सरकोबने पहिले जाकर सामना किया फिर कन्दजने उसनेदोनोंको उठा २ कर पृथ्वीपर छोड़कर कहाकि तुमजाओ दूसरेको भेजो जबयेदोनों हारकर आये तो अमीरने कन्दजसे कहा कि यह तुम्हारा पुत्र हमको मालूम होताहै कन्दजने कहा कि जो यह मेरा पुत्रहोगा तोमैं बेमारे न छोडूंगा तत्पश्चात् रुस्तमनेजाकर सामनाकिया उसने चाहाकि इसको भी उठाकर फेंके लेकिन रुस्तम ने भी उसकी कमरपकड़ी थोड़ीदेर तक दोनों जोरकरतेरहे आखिर रुस्तम ने एकबारगी उठाकर पृथ्वीपर धीरे से रखकर पूछाकि सत्यबता तू कौनहै तेरा क्या नामहै उसने कहा कि मेरा शवानताजफीनामहै और कन्दज सरशानका पुत्रहूं तब शाहजादे ने उसको अपनेसाथ अमीरके पास लाकर अमीर के कदमोंपर गिराया अमीर ने उठाकर गले से लगाकर सब वृत्तान्त पूछकर अपने समीप बैठाकर सब सरदारों से बड़ाअधिकारदिया तत्पश्चात् सातदिवस तक सभाकी और यथोचित लोगोंको पारितोषिका दिया आठवेंदिन फिर दोनोंसेना आकर मैदानमें खड़ीहुईं तब शवानताजफी कैमाजशाहका सामनाहुआ सबदिन लड़ाईहुआकी लेकिनजीतहार नसका सायंकाल को दोनों सेना अपने २ खेमेमेंगई दूसरेदिन प्रातःकाल मैदानमें आकर कैमाजने घोड़ानिकालकर ललकारा कि ओहमजा जो लड़ने आयाहो तो तू आकरसामनाकर लड़केकोभेजकर दिनक्यों काटताहैतुझकोलज्जा नहींआती तेरीसेना पराजित होजातीहै इतनासुनकर अमीर अशकर पर सवारहोकर मैदानमेंखड़ेहुये तो दोनोंसेहथियार लेकर लड़ाकिये परन्तु किसीकी जीतहार नहुई तो आखिरकार अमीरने कन्दजसे कहा कि हे बादशाह हमारी तुमारी हथियार की लड़ाई होचुकी अब पग उठाईहो जो हारै वह दूसरेकी सेवाकरै आखिरकार दोनोंकी कमर पकड़ौवलहुई तो कन्दजशाहने अमीरकी कमरपकड़कर उठाया लेकिन न उठासका तो हारकर छोड़दिया तब अमीरने कमर पकड़कर एक-बारगी उठाकर पृथ्वीपर रखकर असरुके हवालेकिया और डंका खुशी

का बजवाते हुये खेमेमें आकर आज्ञादी कि खाबरियों को लेआओ तो अमरूने लाकरमौजूदकिया तब अमीर ने कैमाजशाह से कहा कि हम जीते तुमहारे अब हमारी सेवकाई करो उसने कहा कि मुसल्मान तो मैं नहींहूंगा और सब करनेको आरूढ़हूं तब अमीर ने क्रोधित होकर आदीअक़रबसेआज्ञादीकि इसकोगदासेमारडालोउसने लेजाकर मारने की आज्ञादी परन्तु कैमाज़ के शरीर में कुछ दुःखभी न होताथा यह देखकरअमीरकहनेलगेकि बड़ेअफसोसकीबातहैकि ऐसापहलवान हाथ सेनिकलाजाताहै और मेराकहना नहींमानता आज्ञादीकिइसकोआदी के हवालेकरो कैमाज़नेकहा कबतक बांधरक्खोगा अमीरने कहाजिन्दगी भर न छोड़ूंगा इतने में कैमाज़ शाहने अमरूसे जलपीने को मांगा तब अमीरने शरबत बनाकर मंत्र पढ़कर फूंककर कैमाज को दिया उसने ज्योंहीं शरबत पिया त्योंही उसके चित्तमें मुसलमानी धर्म्म का मर्म्म आगया तब तो अमीर के पास आकर कहने लगा कि अब मुझ को सब स्वीकार है जो आपका चित्तचाहे वह कीजिये तब अमीरने उसके भाई पुत्रपिता समेत मुसलमान करके बड़ी भारी खिलअत देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकरबड़े धूमधामकी सभानाचरङ्ग करवाई नौशेरवां और बखतकने कहाकि अबतो यहांसे भागना चाहिये नहीं थोड़ी देरमें बांधे जावेंगे बखतकने कहा कि यहां से कौसुर्जनगर अति-निकटहै वहां का स्वामी बड़ा बहादुरहै उसके डरसे कैमाज पहाड़ में भाग जाताथा आखिरकार नौशेरवां बखतकसमेत जाकर वहांप हुंच-कर सहायता मांगी तो अगवानी लेकर अति प्रतिष्ठा के साथ बैठाकर सब आदरभाव करके सब हाल नौशेरवां का सुनकर कहा कि आप यहां चैन से वास कीजिये वह हमारा क्या कर सक्ता है नौशेरवां उसकी बातपर प्रसन्न हुये और उसके यहां रहकर आसरा देखने लगे अमीरका हाल सुनिये कि सभामें बैठेथे कि एक बारगी अमरूसे पूछ उठे कि नौशेरवां किसकेपास गयाहै अमरूने कहा कि कौसुर्जनेजो ना-मावरोंमें अतिप्रचण्डहै उसीने रक्खाहै और कहताहै कि जो हमजा यहां आवे तो उसकी मृत्युआवे अमीर ने सुनकर हंसकर खेमा अगवानीजाने की आज्ञादेकर दूसरेदिन कूचकरके बड़ीधूमधामसे उसके नगरकेसमीप उतरकर कौसुर्जशाह को अपने आने की खबरदेकर अति प्रसन्नता से सभाबिलासकरनेलगे उधर कौसुर्ज युद्धपर आरूढ़होकर मैदानमेंखड़ा होकर डंका बजवानेलगा तब अमीर भी डङ्काबजवाकर युद्धकी तैयारी करके उसकी तरफ चला जब समीप पहुंचा तो कौसुर्ज़ बखतकके साथ देखनेके लिये चलाआया तो जब अमीर की सेनानिकली और बखतक कौसुर्ज से नाम लेकर बतलाने लगा तो अमीर की सेना का प्रमाण न करसका तब कौसुर्ज बखतकसे कहनेलगा कि हमको यह नहीं मालूम

था कि अमीर हमज़ा के साथ इतनी सिपाह और बड़े पहलवान हैं आख़िरकार दोनोंमें बड़ा युद्धहुआ पहिले तो कौसुर्जने अमीरके बहुत से पहलवानों को घायल किया लेकिन आख़िर को अमीरहमज़ा ने पकड़कर बांधकर अलक्के हवाले करदिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि जब उसनेदेखाकि कौसुर्ज अमीरके कारागारमेंगया तो उसने बख़्तकसे कहाकि अब तो कौसुर्ज पकड़ागया अब यहांसे निकलचलने की कोई यत्नकरनी चाहिये नहीं तो क़ैदहोंगे बख़्तक ने कहा कि यहां से थोड़ीदूर पर गैला नगर है वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है कि उससे कोईहथियार चलानेमें सामना नहीं करसक्ताकि उसको प्रशंसाकोंमें नहीं होसक्ती और हमज़ा उसके सन्मुख तिनके के समान है सो वहीं चलकर वासकीजिये तब नौशेरवांने दूसरेदिन यात्राकरके गैलाके समीप पहुंचकर उतरकर बादशाह गैलाको अमीरके दुःखदेने का हाललिख-कर भेजा उसने पत्र को पढ़कर नौशेरवां के अगवानी मिलकर अपने स्थान पर बैठाकर अतिप्रसन्नकिया और वचनदिया कि हमज़ा यहां न आनेपावेगा तबतो नौशेरवां निःशङ्कहोकर अमीरकाआसरादेखनेलगा उधर अमीरने कौसुर्ज से पूछा कि अब तुम्हारी क्याइच्छाहै उसनकहा कि अब सेवकाई आपकी मुसल्मान होकर करनेकी इच्छा है अमीर ने उसीसायत मुसल्मानकरके खिलअ़तदेकर कुर्सीपर बैठाकर अपने साथ भोजन कराकर प्रसन्नकिया तत्पश्चात् एकदिन कौसुर्ज ने हाथबांधकर अमीरसे कहा कि अबतो कृपाकरके नगरमेंचलकर वासकरतेतो अति-उत्तमहोता अमीरने स्वीकारकिया और दूसरेदिन उसकेमहलमें जाकर अतिप्रसन्नतासे तख़्तपरबैठे और कौसुर्ज रूमाल लेकर मक्खियांहटाने लगा अनेक प्रकार से अमीर और सरदारों की सेवाकरने लगा ॥

जाना अमीरका गैलानगर की ओर और वहांके अधिपति गुनजालशाह को मुस-ल्मान करके उसकी बेटी गैलीसवारके साथ विवाह करना ॥

लेखकलिखताहै कि उसनगर के समीप तराई बहुत थी अमीर दिन को शिकारखेलते और रात्रिको सभाबिलास में चैनकरते बहुत दिनोंके पश्चात् एकदिन अमरूसे पूछाकि कुछ मालूम नहीं होता कि बख़्तक नौशेरवांको कहां लेगया अमरूनेकहा कि सुनाहै कि नौशेरवांने नगर गैलान के स्वामी शाहगुनजाल के समीप जाकर सहायता मांगीहै सो उसने अतिप्रतिष्ठाके साथ वासदेकर इक़रारकियाहै कि अमीरहमज़ा यहां किसीप्रकार से न आवेगा अमीरने अपना खेमा उसीदिन भेजकर दूसरेदिन सेनासमेत उसीओर को पयान किया दूसरे दिन चलकरकई दिनोंके पश्चात् उसनगर के समीप खेमा गाड़कर उतरपड़े तब जासूसों ने शाहगुनजाल से अमीर के आनेकी ख़बरदी तो नौशेरवांने उसीदिन डङ्का बजवाया और शाहगुनजाल आदि की सेनालेकर मैदान में परेट

जमाकर खड़ाहुआ अमीरने भी अपनी सेनाको उसकी बराबर लेजाकर खड़ाकिया परन्तु कोई अभीसेनासे निकला न था कि बलकीतरफसे एक सवार आया और दोनों सेनाके मध्यमें खड़ाहोकर मुसलमानी सेनाके तरफ मुखकरके ललकारनेलगा उसको देखकर मनउरे आखिरकोअमीर के दोतीन पहलवानोंसे सामनाहुआ सबको उसने उठा २ कर पृथ्वीपर रखकर कहाकि तुमजावो दूसरे को भेजो इतनेमें शामहोगई तब वह जिधर से आयेथे उसीतरफ को गयेअमीर उसकेहाल पूछनेके लिये कि कौनहै अमरुको साथलेकर उसके पीछेचले जब थोड़ी दूरगये तो उसने देखाकि दो सवार आतेहैं देखकर खड़ी होगई और जब अमीर समीप पहुंचे तो वह एक बागमें चलीगई अमीर भी उसके पीछे बागमें गया वहां जाकर देखाकि बहुतसी स्त्रियांहैं और वह सवार जाकर एककोने में घोड़ेपरसे उतरकर खड़ाहै अमरूने देखकर अमीरसे कहाकि विदित होता है कि यह सवार स्त्रीहै कि इतने में उसकी भी दृष्टि अमीर पर पड़ी अपने खानेसराय को बुलाकर कहाकि जाकर पूछो कि ये दोनों सवार कहांसे आतेहैं किसप्रयोजनसे आयेहैं उसनेजाकर अमीरसे पूछा कि आपका क्या नामहै और किसप्रयोजन से आयेहैं अमीरने कहा कि हमजा मेरानामहै और यह अमरू मेरायारहै इसकी चालाकीसंसार में प्रसिद्धहै तब अमीरने पूछाकि ऐखोजे तू यहतो बता कि इस शाह-जादीका क्यानामहै वह बोलीकि मेरीशाहजादीका गैबीसवार नामहै यह कहकर शाहजादीके पासजाकर खबरदी तब उसनेजाकर लिबास मरदानाउतारा और स्त्रीकीपोशाकपहिनकर अमीरकोअगवानीलेकर-बारहदरी में लेजाकर मसनदपर बैठाकर अतिप्रसन्न करके अपनेसाथ भोजन करवाकर शराबमंगवा कर दोनों साथबैठकर पीनेलगे दोतीन गिलास पीनेके पश्चात् शाहजादी लज्जाछोड़कर अमीरके गोदमेंबैठी सब लज्जा भूलगई तब अमीर ने उससे विवाह करने की इच्छा की उसका चित्त तो पहिलेही से चाहताथा सुनतेही स्वीकार करलिया अमरू ने उसीसमय मंत्रपढ़ कर उसके साथ विवाह कर दिया तत्पश्चात् दोनों छपरखट पर जाकर भोग बिलास करने लगे गुनजालशाह को यह खबर पहुंची यह सुनतेही जलकर आग होगया और चार सहस्र सवारलेकर अमीरके ऊपर दौड़आया और चारों तरफसे बागको घेर-लिया तब शाहजादीने अमीरसे कहाकि आज्ञाहो तो जाकर बादशाह का सिरकाट लाऊं अमीरने कहा लाखहो पिताके ऊपर हाथ न चल सकेगा लेकिन मैं जाकरउसको पकड़लाताहूं आखिरकार अमीरबाहर आये दोनोंसे सामनाहुआ तब अमीरने गुनजालशाहको पराजयदेकर मुसलमान करलिया वह अपनी बेटीके पास आया और अपने मुसल-मानहोनेका कारण उससे कहा तबयह खबर देशमें प्रसिद्ध होगई एक

दिनराचिको अमीर गैलीसवार को बगलमें लिये लिपटे सोरहे थे कि इतनेमें जरंगेज़ नौशेरवां की स्त्री जिसने अमीरको पहिले भी लेजाकर खन्दकमें तीनदिन तक बांधरक्खा था आकर अमीरके समीप पहुंचगई देखकर अपनेचित्तमेंकहनेलगीकि इसनेमुझे न स्वीकारकिया और इसके साथ विवाहकरके भोगविलास कररहा है इससे दोनोंको मारडालना उचितहैयही विचाररहीथी कि शाहज़ादीके नेत्रखुलगये और उठकर हथियारलेकर उसको खेदलिया वह थोड़ी दूर जाकर फिरकर खड़ी होगईऔर कहनेलगीकि वहांसेहमज़ाके डरसेभागीथी तुझसेक्याडरहै यहकहकर एकतीर चलाया।शाहज़ादीने रोककरएकतलवारऐसीमारी कि वह दोभागहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ी अमीरने पुकारकरकहाकि ऐ गैलीसवार तूनेयहक्याकिया नौशेरवांजानेगा कि हमजाने माराहै वृथा लज्जितहोगा उसनेकहा कि अबतोजोहोनाथा सोहुआ तबअमीरगैली सवारको साथलेकर बाग़में आकर आरामकरनेलगे और उधर प्रातः-काल नौशेरवांको खबरहुईकि जरंगेज़की लोथमैदानमेंपड़ीहै तबसेवकों से लोथ उठवा मंगवाई और अफसोस करके कहनेलगा कि विदितहो ताहै कि यह हमज़ाकेपास गईथी उसनेइसकोमाराहै अफसोसहमऐसे होगये कि हमारीबगलसे स्त्री उठकर दूसरेकेपास जावे अब हमलोगों को क्योंकर मुखदिखावेंगे इससेतो हमकोबड़ी लज्जाहुई अपने सरदारों सेकहाकि हमनेगद्दी बहुतदिनकी अबइच्छाहोतीहै कि देशपर्यटन करें सरदारोंनेहाथजोड़करकहाकिजैसीआज्ञाहोहमलोगआपहीकी इच्छा चाहतेहैं आखरकार नौशेरवां आधीराचिको हजार सरदारको साथ लेकर बहुत सा माल असबाब लेकर बाहर निकल करतबनको चला और जो कोईपूछता तो अपनेको सौदागर बतलाता अपनानामकिसी से नकहताथा उनकेजानेके पश्चात् प्रातःकाल सेनामेंशोरहुआ कि नौ-शेरवां लोपहोगया बहुतेरे कहनेलगे कि अमीरनेमारडाला औरबहुतेरे कहतेथे कि अमरूअय्यारी करकेउठालेगयाहोगालेकिन बुज़ुरुचमेहर ने कहाकि अमीर मारडालते या अमरू उठालेजाता तो हजार जवान क्याहोतेबादशाहअपनीस्त्री जरंगेज़कीइसबातकोदेखलज्जितहोकरकहीं चलेगयेहैं पीछेको हरमुजलोगोंको बादशाहकी खोजमें भेजकरआपसब लोगोंकी सलाहसे नौशेरवांकी गद्दीपर बैठकर सबकारोबारकरनेलगा नौशेरवां का हालसुनिये कि अपनेको सौदागरके नामसे प्रसिद्धकरता हुआ चलाजाताथा जासूसोंने यहखबर बहरामनामे एकडाकूको पहुं-चाईवह कोई सहस्रडाकूलेकर नौशेरवां के समीपआकर सबमाल लूट कर नौशेरवांसमेत अपने स्थानपर लेकरचलागया वहां लेजाकर उससे पूछाकि तूसत्यबता कौनहै नौशेरवांनेकहामैं नौशेरवां कबादका पुत्रहूं लेकिनउसको यक़ीन न आयादोतीन बारपूछकर नौशेरवां को फकीर

करके छुटादिया तबनौशेरवां साधूबनकर वहांसेचला और जोकोई पूछताथा उससेअपनानाम बतलाताथा लेकिनसुननेवाला झूठजानछुटादेता था जाते२ खतन नगरमेंपहुंचा वहांभी जो पूछताथा उससे अपना नाम बतलाताथा आखिरकोयह खबरबादशाहको पहुंचीकि एकसाधूआया है उससेजोकोई पूछताहैकि तू कौनहै वहकहताहैकिमैं नौशेरवां बादशाह कबादकापुत्रहूं बादशाहनेभी बुलवाकरपूछातो नौशेरवांने अपना नाम बतलाया तबउसने झूठाजानकर अपनेनगरसे निकलवादिया आखिरको फिरते२आतिशकुन्दान समुद्रपर पहुंचा वहांका यह प्रबन्धथा किजोकोई नवीनमनुष्यआताथा वहतीनदिनतक भोजनपाता था चौथे दिन बिदाकरदिया जाताथा और जो सदैवरहने की इच्छाकरता था उसेप्रतिदिन बनसेलकड़ी लानीपड़तीथीं तबभोजनमिलताथा इसकारण तीनदिनतक नौशेरवांको भोजनमिला चौथेदिन लकड़ी लानेकी आज्ञा हुई तबबादशाह लाचारहोकर रोजलकड़ीलानेलगा और जब लकड़ी कमलाताथातो आधीरोटीपाताथा और जब अधिकले आतातो एक इसीप्रकारसे वहां रहकरदिन काटनेलगा अबथोड़ासाहृतान्तनौशेरवां की सेना कासुनिये किएकदिन हुरमुज़ने बुजुरचमेहर से कहा कि मैंने लोगोंसेबहुतढुंढ़वाया लेकिनकहींपताबादशाह कानहींमिलताअबतो विचारिये किकहांहैंख़्वाजेनेकहाकिहम पहिलेहीसे विचार चुकेहैं कि बादशाह आतिशकुन्दानमरूदमें बड़ेदुःखमें पड़ेहैंजोशीघ्रहीकोई न जायगातो उनकाप्राण न बचेगा शाहज़ादेनेकहा कि फिर आपही जाकर ले आइये तबख़्वाजेनेकहाकि वेहमज़ाके गये बादशाह न आवेंगेसोतुम जाकर अपनी मातासे कहोकि वे अमीर को पत्रलिखें तो निश्चयहै कि हमज़ाजाकर बादशाहको लेआवेगातब हुरमुज़नेआकर अपनी माता से सबहालकहा उसने उसीसमय अमीरको पत्रलिखाकि ऐ पुत्र बादशाह बड़ेदुःखमें आतिशकुन्दानमरूदमें पड़ाहै सो वे तुम्हारेगये बहुनहीं प्रसन्नहोगेकि मेहरनिगारके मरनेसे सम्बन्ध टूटगया है औरसदैव नौशेरवां बख़्तकऐसे लोगोंकेकहनेसे तुमकोदुःखही देतारहा लेकिनजो तुम लावोगेतो बड़ानाम और पुण्यहोगा अमीरने पत्रपढ़कर अमरूकोख़्वाजे बजरचमेहरके पास भेजा कि पूछआवो नौशेरवां कहांहै उसनेजब जाकर ख़्वाजेसे पूछा तो उन्होंने कहाकि बादशाहआतिशकुन्दानमरूदमें बड़ेदुःखमें पड़ाहै जो अति शीघ्रही जाओगे तो मिलेगा नहीं तो मरने चाहता है ॥

अमीर हमज़ा का आतिशकुन्दा नमरूद की तरफ नौशेरवां केलानेकोजाना और आने पर नौशेरवां की दूसरी बेटी के साथ बिवाह करना ॥

लिखनेवाला लिखताहैकि अमीरसाधूका भेषधारण करके आतिशकुन्दा नमरूदकी तरफचले मार्गमें जबबहरामके स्थानके समीप आये तो मालूम हुआ कि इसीने प्रथम नौशेरवांको लूटकर फ़क़ीर कर दियाहै उसके क़िले

के समीप जाकर ऐसा शब्द किया कि वृक्ष पहाड़ सब हिल गये बहराम व्याकुल होकर क़िले से हज़ार जवान साथ लेकर बाहर आया तो उसने अमीरको देखाकि अकेला एकमनुष्यखड़ाहै दौड़करएक बल्छी चलाई अमीरनेवहीबल्छीछीनकर एकबल्छीऐसीमारीकिवहघोड़ेपरसे नीचेगिरपड़ा अमीरदौड़करउसकी छातीपरचढ़बैठा औरखंजरनिकालकरकहाकियातो मुसल्मानहोनहीं तोइसीसे मारडालतेहैं उसने कहाकिपहिले आपअपना नाम बतलाइयेफिरजो कहियेगावहीकरूंगा अमीरने कहाकिमेरा हमज़ा नामहै वहहमज़ाकानामसुनतेही डरगयाऔरकलमापढ़करमुसलमानहोकरकई दिनअमीरकी मेहमानीकरके हज़ारअशरफी कमरमेंबांधकर साथ हुआ अमीर ढूंढ़ते २ कई दिनों के पश्चात् आतिशकुन्दानमहूदमें जाकर पहुंचे तब साधुओं ने भोजन लाकर अमीर को दिया अमीर और बहराम दोनोंने भोजनकिया और बैठकर नौशेरवांकी खोजमेंहुये आखिरकारशाम को जबसब लकड़ीलेकर आये तो पीछेको नौशेरवांभी थोड़ीसी लकड़ीलेकर आया अमीर देखकर रोनेलगा आखिरकार अमीर कई दिनतक वहां रहे फिर अपनेको और प्रसिद्धकरके बहुतसी सेना साथ लेकर वहांसे नौशेरवां को साथ लेकर कूच किया उसी दिन नौशेरवांने अमीरसे वादा किया जो तू हमज़ा को बांधकर मेरे पास लावेगा तो हम अपनी छोटी बेटीका विवाह तेरे साथ करदेंगे अमीर ने कहा कि हम तुम अकेले सेना में चलें देखें कोई पहचानता है या नहीं तब वे दोनों जाकर सेना की बाजारमें एक नानबाई की दुकानपर बैठकर रोटी मोललेकर खानेलगे संयोगसे मुकबिल अथवा देवज़ादे को पानी पिलानेके लिये जाताथा अथवा अमीरको सुगन्ध पाकर खड़ा होगया इतनेमें असकूभी पहुंचा देखा कि अमीर और नौशेरवां एक नवीन मनुष्यके साथ भोजनकर रहाहै असकूने सलाम करके कहा कि हे अमीर अच्छीसायत आये तब नौशेरवांने उससमय अमीरको पहिचाना और अपने चित्तमें कहनेलगा कि इतने दिनोंसे मैं अमीरकेसाथ रहा लेकिनमैंने इसको न पहचाना और सदैव हमज़ाकी बुराई उसमे की निश्चय है कि अमीर मुझसे नाराज़ होंगे यह विचारकर वहां से उठकर अपनी सेनामेंगया सरदार लोगदेखकर अतिप्रसन्न होकर सब भेंटलेलेकर और तख़तपर बैठाकर डंकाबजनेकी आज्ञादी अमीरभी अपनी सेनामेंगये और सब सरदारों से मिलकर अपना सबहाल कहकर शादादसे कहाकि हमकोबांधकर नौशेरवांके पासलेचलो असकूने सुनकर मनाकिया लेकिन अमीरने नमाना और शादादसेहाथ अपना बंधवाकर नौशेरवांके पासगया नौशेरवां ने देखकर पूछा कि अमीर को क्यों तूने बांधाहै अमीर ने कहा कि मैंनेतुमसे वादाकियाथा कि हमज़ाको बांधकरतुमको सौंपदेवेंगेसो मैंने अपनावादा पूराकिया अबआप अपना वादापूरा करके अपनी बेटीका मेरे साथविवाह करदीजिये बख़तकने उठकर नौशेरवां के कानमें धीरेसे कहा

कि हमज़ा इससमय बेप्रयासमारा जासक्ताहै आप इसको मारलीजिये तब बादशाहने कुछ उत्तरनदिया लेकिन अमीरको विदितहोगया कि नौशेरवां का चित्तमुझसे साफ़नहींहै हाथखालकर शादादसे कहा कि बखतकपापी को पकड़कर खूबपीटो उसनेतुरन्तहीअमीरकी आज्ञानुसारकियानौशेरवां बखतकका हालदेखकर महलमेंचलागया उसीसमय जिसनेबखतक की सहायताकी वही अमीर के हाथसे मारागया आखिरकार वहां से अमीर अपनीसेनामें चलेआये और यहांसे एकपत्र लिखकर अलक़ैशायनौशेरवां केपासभेजा कि हमने अपनीबातपूरीकी आपभी अपनीबातको पूर्णकीजिये नौशेरवां ने लोगों से पूछा कि तुमलोगोंकी इसमें क्या सलाहहैलोगोंनेकहा कि हमारी बुद्धिमें तो उसकेसाथ विवाहकरना अनुचित है लेकिन नौशेरवांने नमाना और सामानकरके अपनीबेटीका विवाह हमज़ाके साथकरदिया तब हमज़ातोलेकर अपने स्थानपर आकर उसके साथ भोग विलासकरने लगा उधरबखतकने इधर उधर पत्रभेजा कि बड़े अफ़सोसकी बातहै कि तुमलोगोंके होते हमज़ाने नौशेरवकीदोबेटियोंके साथ विवाह करलिया और बादशाहका दामाद कहलाताहै लेकिन अबभी इतनी हिम्मतकरो कि आकर इस अरबवासी से मेहरअफ़रोज़को छीनलो तौभी अच्छाहै और सब नगरवासियोंने इकट्ठे होकर हरमुज़सेकहा कि बादशाह की बुद्धितो अवस्थाके साथकम होगईहै परन्तु जो तुम यत्नकरो तो हमज़ा आसानीसे माराजासक्ताहै शाहज़ादेने पूछा कि वहकौनसी युक्तिहै सबोंने कहा कि जो बादशाहकोह अलबुर्ज़में आदीके पास जाकर पनाह लेवे तो हमज़ा वहां के जानेसे अवश्य है कि माराजाय आखिर बादशाह सबकी सलाह से कोहअलबुर्ज की तरफगये ॥

जाना अमीरका कोहअलबुर्ज की तरफ ॥

लिखनेवालालिखताहैकिजबअमीरकोमालूमहुआ किनौशेरवांने पहाड़ेअलबुर्जमें जाकर आदीसेइसविचारसे पनाहलीहै कि यहांजो हमज़ा आवेगा तो जीता बचकर न जावेगा उसीसमय लैलडोरी भेजकर दूसरे दिनकूचकरके कईदिनोंके चलनेके पीछेजाकर देखाकि नौशेरवां पहाड़ केकोहमें सेनासमेतपड़ाहै और चारोंतरफसे सेनाआरहीहै यहतमाशा देख अमीरभी थोड़ी दूरपर उतरपड़े इसीतरह कईदिनतक दोनोंसेना पड़ीरहीं जिससमय बहराम और आदी चालीस सहस्र सवार समेत आये उसी दिन नौशेरवांने डंका बजवाकर सेना को लाकर परेट पर जमाया तब अमीरभी सेना लेकर सामने गये अभी दोनों सेनाओंमेंसे कोई न निकलाथा कि बनकी तरफसे एक सवार आकर दोनोंके बीच में खड़ाहोकर नौशेरवांकी सेनाको ललकारा तो आदीने आकर सामना किया तो उसने एक कारगो उठाकर ऐसा देमारा कि हड्डियां आदीकी चूरहोगईं बहराम चोब अपने भाईका हाल देखकर मैदानमें

आयातो उसकाभी यहीहालकिया तबतो नौशेरवांकी सेनामें से किसी ने सिर उसकीतरफ ने उठाया वह थोड़ीदेर खड़ारहा फिर मुसल्मानी सेनाकी तरफ मुखकरके ललकारनेलगा रुस्तमपीलतनने आकर उसकी कमरपकड़ी उसनेभी कमरपकड़ी दोनोंने ऐसा ज़ोर किया कि घोड़ोंके पैर पृथ्वीमेंधंस२ गयेआखिरको सवारने रुस्तमको छोड़कर कहाकि तुम जाओ किसीदूसरेको भेजो इसीप्रकारसे सबबारी २ आये लेकिन कोई उससे जीत न सका तो आखिरको अमीर जब आये तो उसने दौड़कर अमीरकी कमर पकड़ी तब अमीरने कमर उसकी पकड़कर अब्दकरके उठाकर कहा कि बता तू कौनहै वह बोला कि कैसकैसाज खावरी मेरा नामहै कैमाजशाह का मैं पुत्रहूं तब तो अमीरने उसको धीरे से पृथ्वीपर रखकर गलेसे लगाया और कैमाज़शाहसे पुकारकर कहा कि ईश्वर आपको पुत्र मुबारककरै यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ अमीर डंका बजवाकर सेना में आये बड़ी धूम धाम से उसकी मेहमानी की दूसरे दिन जब फिर दोनोंसेना मैदानमें आईं तो उसदिन आदी चोब और सरआवां दोनों का शामतक सामना रहा कोई किसीसे जीत न सका रात्रि को दोनों सेनाने आराम किया प्रातःकाल फिर सामना हुआ तो उसदिन आदीचोबने अमीरकोललकारा अमीरने आकर दोनों भाइयोंको बांधकर अमरूके हवालेकरदिया और विजयका डंका बजवाकर अपने खेमेमें रात्रिको बैठकर दोनोंसेबुलवाकर पूछाकि अब क्या इच्छाहै उन्होंने कहा कि सेवकाईके सिवा और कुछ नहीं तबअमीरने उनको कलमापढ़ाकर मुसलमानकिया और अमरूने गुलामीकाबरला उनके कानोंमें डालकर अपने साथ बैठाकर बड़ी प्रतिष्ठाकी ततपश्चात् उनदोनोंने अपनी सेनाकोलिखा कि तुमलोग शाहको छोड़कर हमारे पास चलेआओ ॥

शाहज़ादे बदीउलज़मां गैलीसवार का लड़कीगुनजालशाहके पेटसेपैदाहोना और बहादेना शाहज़ादे को संदूकमें बन्दकरके नदी में और हज़रतख़िजर की आज्ञानुसार करीशा बेटी आसमानपरी का लेजाकर रचाकरना ॥

लेखक लिखताहै कि जब अमीर कोहअलबुर्ज की तरफ जानेलगे तो गैली सवार को जो उनदिनों में अवधान से थी गुनजालशाह के पास एक धरोहर के तौरपर रखगये थे उसपापी का हाल सुनिये कि जब उसके पुत्र पैदाहुआ तो उसने अपने समीप मंगवाकर दाईसे कहा कि इसको मारडालो उसको दयाजोआई तो उसने कहाकि आज्ञाहो तो जीताफेंकआऊं उसने कहाकि अच्छा आखिरकार उसने नदीकेकिनारे जाकर एक संदूक में रखकर ईश्वर को सौंपकर बहादिया वह संदूक बहते २ उसी स्थान पर जहां आसमानपरी और करीशा स्नान करती थी लगाकरीशा ने संदूक पकड़वा कर खोला तो उसमें देखा कि एक

लड़का अति स्वरूपवान बेटाहै इतने में हज़रतख़िज़र ने प्रकटहोकर क़रीशासे कहाकि यह हमज़ाका पुत्रहै इसको तुम लेजाकर रक्षाकरो जब बड़ा हो तो हमज़ा के पास इसको भेजदेना और बदीउज़्ज़मानी इसकानामरखना हज़रतख़िज़र यहकहकर अन्तरध्यानहोगये क़रीशा गोद में लेकर क़ाफ़में आई और परियों का दूधपिला कर बड़ीरक्षा करने लगी और जबसे सातबर्ष का हुआ तभीसे सिपाहगरी सिखलाने लगी जहां कहीं युद्धकरने को जाती उसको अपने साथमें जाती ग्यारहवेंबर्ष एक दिन उसने क़रीशा से पूछा कि मेरे माता पिता कहां हैं उसने कहाकिमाताको तोमैं नहींजानती लेकिन पिता हमारातुम्हारा एकहीहै दुनियांमें राजकर रहाहै हमज़ा उसका नामहै उसने कहा कि फिर हमको कृपाकरके पिता की सेनामें भेजदो तब आसमानपरी और क़रीशाने बहुतसी उत्तम२ वस्तुरखकर परियोंको बुलाकर आज्ञादी कि इसकोलेजाकर कोहअलबुर्ज़पर इस्लामी सेनामें पहुंचादोकिसी प्रकार से मार्ग में दुःख न होनेपावे और चलती समय उससे दोचार आदमियों का नाम बतलाकर कहा कि तुम पहिले लड़ाईकरके अपने को प्रसिद्धकरना सब तुम्हारेभाई लड़कर अमीरसे आकरमिलेहैं आखिर कार वह आसमानपरी और क़रीशासे बिदाहोकर चला परियोंने कई दिनकेबाद जाकर अलबुर्ज़केसमीप उतरकर दोनोंसेनाओंका पताबतला कर उसको सेनाकी तरफ भेजा आप छिपकर तमाशा देखनेलगी बदीउज़्ज़मां जाकर दोनोंसेना के बीचमें खड़ाहोकर कुफ़्फ़ारकी सेना की तरफमुखकरके पुकारनेलगा कि तुममेंसे जिसको मरनेकी इच्छाहो वह आकर मेरा सामनाकरै सब लोग देखकर बड़ेसंदेहमेंहुये कि यहकहां से आया इतनेमें उसने फिरपुकारा कि जो मृत्यु से प्राणबचाना था तो ओढ़नीओढ़कर घरमें बैठेरहते मैदानमें क्योंआयेहो यहसुनकर कौसुर्ज नेआकर सामना किया उसने आतेही कौसुर्जसे वार मांगी कौसुर्जने कहा कि पहिले तू वार करले तो फिर हम करैंगे तब तो उसने हाथ पकड़कर घोड़ेसे उठाकर पृथ्वीपर रखकर कहा कि तुमजाओ दूसरेको भेजदो और दूसराआयातो उसकोभी उठाकररक्खा तीसरेको बुलाया इसीप्रकार से सबको हराकर आखिर को जब साद आया तो उसको भी उठाकर पृथ्वीपर रखदिया और उससे कहाकि जाकर अब अमीर हमज़ाको भेजदो उसने जाकर अमीरसे कहा तब अमीर मैदानमें आये तब बदीउज़्ज़मां देखतेही बिजलीके समान घोड़े को चमकाकर अमीर समीपलाकर कमर पकड़कर उठानेलगा तब अमीरने भी उसकीकमर पकड़ी और दोनोंनेऐसाज़ोरकिया कि घोड़े व्याकुलहोगये लेखकलिखता है कि जो घोड़ोंपरसे उतर न पड़ते तो घोड़ोंकी कमर टूटजाती और अमीर ने चाहा कि इसको सिर तक उठालेवें लेकिन वह हिलताभी

न था तब तो बख़्तक नौशेरवां से कहने लगा कि आज महज़ा इसके हाथसे माराजावे तो कुछआश्चर्य नहींहै आख़िरकार जब अमीर पैर न उठासका तो क्रोधित होकर तलवार निकाल कर खड़ा होगया कि इसको मारे इतने में ज़रीफ़ा ने आकर हाथपकड़ लिया और कहने लगी कि यह आपका पुत्रजेठा भाई है अमीर बड़े आश्चर्य में हुये कि यह किसके पेटसे पैदा हुआ है तब ज़रीफ़ा ने सबहाल अमीर से कहा अमीर सुनकर अतिप्रसन्न हुये और अमरू से पुकारकर कहा कि यह हमारा पुत्रहै ईश्वरने हमारी सहायता के लिये भेजा है यह कहकर उसको गलेसे लगाकर उल्लासवाले हुये ख़ेमेमें आकर चालीसदिनतक नाचरङ्गहोनेकी आज्ञादी लेखकलिखताहै कि समुन्ददेव जिसने अमीर की डरसे परदेक़ाफ़ छोड़कर कोहअलबुर्जमें आकर ठिकाना पाया था जब उसने सुना कि हमज़ा यहांआयाहै तब वह अपने स्थानसे रात्रिको निकलकर अमीर की सेना में आकर अमीरको ढूंढ़ने लगा यहां तक-सादके ख़ेमेमेंपहुंचा उसको सोतादेखकर बेहोशकरके अपने स्थानपरकउठा लेजाकर नदीपार क़ैदकिया प्रातःकाल होते सेनामें गुलमचा कि साद को ख़ेमेसे कोई उठालेगया अमीर सुनकर अतिदुःखी हुये और अमरूसे बुलाकर कहा कि तुमजाकर बुज़ुर्चमेहर से पूछो कि सादको कौन ले गया ख़्वाजेने विचारकर बतलाया कि देवसमुन्द ने लेजाकर अलबुर्जनदी के पार क़ैदकिया है जो अमीर अकेले जावेंगे तो उसको पावेंगे अमीर अमरूसे यह ख़बर सुनकर उसीसमय यारों से बिदाहोकर अशकर को नदीपैराकर पारउतरे वहांजाकर अशकरको तो चरनेकेलिये छोड़दिया और एक जानवर भूनकर भोजन करके रात्रिको एक वृक्षकेनीचे सोरहे प्रातःकाल सवारहोकर बुज़ुर्चमेहर के बतानेकी पतालेचले जबक़िले के समीपपहुंचे तो समुन्ददेव अमीर का नाम सुनकर हजारदेव लेकर क़िलेसे निकलआया तबअमीरने देखकरकहा कि ओपापीअबतेराप्राण क्योंकरबचेगा देखनातेरा कौनहाल होताहै तबतो समुन्ददेवने एकदेव को आज्ञादी कि इसपापीको पकड़लावो अमीरने आतेही उसकोमार-डाला इस प्रकारसे सातदेवोंको उसनेबारी२ भेजा और अमीरने मार डाला आख़िरको समुन्ददेवने क्रोधितहोकर हजारमनका पत्थर अमीर केसिरपर फेंका अमीरने तलवारपर रोक कर एकवार ऐसामारा कि उसकेसात हाथकटकर अलगपड़े तबतो सब देवदेखकर भागगये और वहदेवफिर थोड़ीदेरकेबादअच्छाहोकर अमीरकेसाथलड़नेको खड़ाहुआ यहीहाल सब दिनरहा सायंकाल को देव अपने क़िलेमें चलेगये और अमीर एक वृक्षकेनीचे सोरहे तब स्वप्नमें हज़रत ख़िज़रने आकर कहा कि क़िलेकेभीतर एकअमृतका कुण्डहै जबतक उसको न पाटोगेतबतक यहदेव किसीतरह से न माराजावेगा अमीर स्वप्नके देखतेही जागउठे

और क़िलेके भीतर जाकर उसकुंडको कूदकरकाटके हजरत ख़िज़रकी आज्ञानुसार पाटकर इसकेनीचे आकर सोरहे प्रातःकाल को फिर समुन्ददेव अपनी सेनालेकर क़िलेसेबाहर आकर खड़ाहुआ और पहिले दिनकीतरह एकपत्थर हजारमनका अमीरके ऊपरफेंका अमीरने उस को रोककर एकतलवार ऐसी मारी कि आधीगरदन उसकी कटकर गिरपड़ी तब अमीरके आगेसेभागा अमीरनेभी उसका पीछाकिया तो वहां जाकरदेखा कि जबउसनेकुंडको न पायातो सिरपटकर अपनेको मारडाला तब अमीरनेउसका सिरकाटलिया और कोयबल की तरफ फेंकदी और वहांसे ढूंढते २ खादकेपास पहुंचेदेखा कि बेरोयएकपिंजड़ेमें पड़ाहै उसको चैतन्यकरके साथलेकर बाहर आकर कबाबबनाकर दोनों ने खाया तत्पश्चात् दोनों साथ होकर समुन्ददेव के सिरको लेकरनदीसे उतरकरअपनीसेनामें पहुंचकर देवकेसिरको शत्रुकीसेनामें फेंकदिया शत्रुकीसेना देखकर बड़ेआश्चर्यमें हुई कि जिसकासिर इतना बड़ाहै उसका डीलतो औरही बड़ाहोगा जब हमजाने इसकोमारडाला तो कौनमनुष्य उससे जीत सक्ताहै यह बातेंहोही रहीथीं कि बनकी तरफसे एकसेना आती दिखाईपड़ी दूतोंनेजाकर देखातो मालूम हुआ कि बखियामुतरवान और मलिकअख़तर नौशेरवांकी सहायता केलिये आतेहैं तबतो हरमुज़ने जाकर अगुवानीकी और अपनी सेनामें लाकर अतिप्रतिष्ठासे सन्मुख होकर टिकवाया ॥

वृतान्त अनल पुत्र अबदुलमुतलिब भाई हमज़ा का ॥

लेखकलोग लिखतेहैं कि अमीर हमज़ाके जानेके पश्चात् अबदुलमुत्तलिबके एकपुत्रपैदाहुआ ख़्वाजेने उसकानामअनलरक्खाविधिपूर्वकउसकी रक्षाकिया बारहवर्ष की अवस्था में जिससमय कलमातशाह ने मक्केपर चढ़ाईकी थी और नगरबासी डरके क़िलाबन्दहोकर बैठेथे उससमय अनलनेजाकर अपने पितासेकहाकि जोआप एकघोड़ा और हथियार देवें तो मैं जाकर कलमातशाहको पराजय करदूं ख़्वाजेने हंसकर कहा कि अभी तुम इससे युद्ध करने के योग्य नहीं हो और मेरे पुत्रोंमें केवल हमज़ाहीको यह शक्तिहै कि उससे कोई न जीतसके अनलने कहा कि ईश्वर हमारा सहायक है आख़िर हमभी तो हमज़ाहीके भाईहैं जब उसने बहुत हठकिया तब लोगों ने अबदुलमुत्तलिब से कहा कि आप क्यों नहीं इसको जाने देते विदित होताहै कि यह बड़ा बहादुर और प्रतापी होगा आख़िरकार ख़्वाजे ने एक घोड़ा और हथियार देकर ईश्वरके भरोसे पर छोड़कर भेजा अनल हथियार लेकर घोड़ेपर सवार होकर अपने यारोंसमेत क़िलेसे बाहर निकलकर कलमातकी सेनाकी तरफ चला कलमातशाह ने देखकर जाना कि सुलहके लिये आता है एक सवारको भेजाकि जाकरदेखो यहसवार क्योंआताहै उसनेजाकर

अजलसे पूछाकि जो सुलहके लिये आयाहो तो चलहम सुलह करादेवें अजलने तलवार निकालकर ललकारा दोनों का सामना हुआ सवार मारागया इसीप्रकारसे कलमातशाहने चालीससवार भेजे सबोंको अजल ने मारा आखिरको कलमातशाह ने आकर सामना किया उसको भी अजलने उठाकर पृथ्वीपर दैमारा और छातीपर चढ़कर कहा कि मुसल्मानहो नहीं तो मारडालता हूं उसने कहा कि जो तू इकरार करै कि हमको हमजाके पास भेजदेवे तो जो तू कहे वहींकरैं उसने कहा कि यहतो होनाहीहै आखिरकार वह मुसलमानहुआ अजलने उसको छोड़कर गलेसेलगाया और अपने पिताके पासलेगया अबदुलमुत्तलिबने दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठा की और बहुतसारुपया अशरफी निवछावरकरके मंगतोंको दिया और कलमातशाहकी बड़ीमेहमानदारी की दूसरेदिन अजलने अबदुलमुत्तलिबसे कहाकि अबहमारी इच्छाहैकि भाई हमजा के पास जाकर अपना सब हाल उसको सुनावैं उन्होंने अतिप्रसन्नताके साथ जानेकी आज्ञादी तबवेदोनों सेनासमेत वहांसेचले मार्गमेंआकर करबमादी पुत्रआदी करब से मुलाक़ातहुई तो मालूम हुआ कि वह भी अमीर के पास जाता है तब अजल ने कहा कि हमभी वहीं चलते हैं इससे दोनों आदमी साथही चले उसने कहा कि आप यहां ठहरिये मैं जाकर मक्केको धावाकर आऊं तो चलें तब अजल तो उसी स्थानपर सेनासमेत उतरपड़ा और करबमादी मक्केकी तरफजाकर चौथेदिन वहां से आया तब दोनों साथ होकर अमीर के तरफ चले मार्ग में अजलने करबमादी से कहा कि अमीर के सबलड़के जब पहिले अमीरके पास गयेहैं तब लड़करसेनामें दाखिलहुये इससे हमलोगोंको भी यहीकरना उचितहै आखिरको पहिलेअजल जाकर दोनों सेनाके बीचखड़ाहोकर लड़कर अमीरकी सेनामें गया फिर करबमादी ने भी ऐसाकिया तत् पश्चात् कलमातशाह सेना समेत जाकर अमीर से अति नम्रताके साथ मिला तब अमीर ने तीनों पहलवानों को साथ लेकर खीमे में लेजा कर बड़ीधूमधाम से मेहमानदारी की प्रातःकाल डंकेका शब्द सुनकर मैदानमें गया तो उसदिन बखिया मुतरवास और शाबानतालफी का सामनाहुआ शाबानतालफी घायलहोगया इसीप्रकारसेकैवलबखिया मुतरबासने अमीरकेकईसरदार पहलवानोंको घायलकिया तीसरेदिन बदीउज्ज़मां मे जाकर सामना किया दोनोंसे लड़ाई हुई आखिर को बदीउज्ज़मां ने उठाकर मुशकें बांधकर अमरू के हवाले करदिया वह बांधकर अपने खीमेमेंलाया मलिकअशतरने जब अपनेचचाकी यह गत देखी तो नौशेरवांसे कहनेलगा कि हमजाके पुत्रबड़ेबहादुर और पहलवानहैं देखो किसबहादुरी से मेरेचचाको क़ैदकिया नौशेरवांने कहा कि हमजाके सबपुत्र ऐसेहीहैं तब उसने कहा कि आजलड़ाई बन्दरो

कलमें इससे सामनाकरूंगा कि लोगयह नकहें कि अमीरका पुत्रथका था इसेबांधागया नौशेरवां लौटनेका डंकाबजवाकर अपने खीमेमें आया और अमीरभी अपने स्थानपरगये और बहुतसा रुपया अशरफी लुटवा कर सभामें बैठाकर बखियाको बुलाकर मुसल्मान होनेकेलिये कहाउ-सनेकहा कि जबतक मलिक अम्रतर न आवे तबतक मुसलमान करनेसे क्षमारखिये तब अमीरने उसकोमादीकरब के पहरेमें करदिया इतनेमें एकयार ने आकर विनय की कि एकदूत खुरसनासे पत्रलेकर आया है अमीरने उसकोबुलवाकर पत्रलेकर सबकेसामने चिल्लाकरपढ़ातोउसमें लिखाथा कि फिरंगियोंने ऐसाहमको दुःखदियाहै कि हम क़िलेबन्दहैं इसलिये यातो आपआइये या रुस्तमपीलतनको भेजिये नहींतो धर्मभी छूटेगा और देशभीहाथसे जायगा अमीरने पत्रसुनाके पश्चात्सरदारोंसे कहा कि तुमयहांकी खबरदारी करो हमजाकर उसको मारकर लाते हैं और हमारी जगहपर रुस्तमको जानना रुस्तमने हाथ जोड़करकहा कि मुझे आज्ञाहो तो मैं जाकर खुरसनामें उसकासिर काटलाऊं अमीरने कहा कि अच्छा पचास सहस्र सेना साथ लेकर जाओ रुस्तम ने कहा कि सेनाकी कुछ आवश्यकता नहींहै आपके प्रताप सेमैं अकेला जाकर उसका सिरकाट लाऊंगा कितनाही अमीर ने सेना साथ लेजाने को कहा लेकिनरुस्तम ने न माना अकेला घोड़े को दौड़ाकर उस नगर के समीप जाकर पहुंचा तो देखा कि फिरंगी सेना क़िले को चारों तरफ से घेरे पड़ी है रुस्तम ने जाते ही एक बारगी चिल्ला कर ललकारा माजूकशाहने मालियानामें अपने बड़ेपुत्रकोरुस्तमके सामनेभेजा रुस्तमने पहुंचतेही दोतीनवार उसेमांगकर एकबारगी उठाकर पृथ्वीपरदेमार कर मारडाला यहहालदेखकर माजूकशाहकी सब सेनाभागी रुस्तमने पीछा किया बराबर मारते चलेगये चारकोस पर फतेहनोश से सेना समेतमुलाक़ातहुई उसनेकहाकि अब आपपलटचलिये लेकिन रुस्तमने नमाना और कहाकि आपजाकर क़िलेकी खबरदारी कीजिये हमशत्रु को मारकर आते हैं रुस्तम तो शत्रु के पीछे गया फतेहनोश ने उसी स्थानपरसे सबहाललिखकर अमीरके पासभेजा आखिरकार जब रुस्तमने माजूकशाह का पीछा न छोड़ा तोवह खड़ाहोकर लड़नेलगा यहांतक लड़ा कि रुस्तमका घोड़ामारागया और आपभीघायलहोकर एकटीले परसे तीरमारनेलगा जबतीरभीसमाप्तहोगये तबतोईश्वरकाध्यानकरने लगाइतनेमें अमीर पहलवानों समेतआपहुंचे रुस्तमको घायलदेखकर शत्रुकी सेना परजाकर व्याघ्रकेसमान टूटपड़े और चिल्लाकर कहने लगे कि जिसने हमज़ाको नदेखाहो वहआजआकर देखलेवे हमज़ाकानाम सुनतेही माजूकशाह की सेना कांपगई किसी का पैर आगेको न बढ़ा और सबभागकर क़िलेमें चलेगये अमीरवहांसे रुस्तमकेपास आयेउसके

घावोंपर नोशदार के फाहे लगाकर क़िलेकी तरफचले माजूकशाह ने देखाकि अमीर क़िलेमें आकर सबको मारडालैंगे तो वह आपबीवाल बच्चोंको सायलेकर अमीरके कदमोंपर गिरा अमीरने कहा किजोबाल बच्चोंसमेत आकर मुसलमानहुआ तो अपनीबेटीभी रुस्तमको देताहम तेरा अपराध क्षमाकरैं उसने मानलिया आखिरको रुस्तमका बिवाह उसकीबेटीके साथहुआ और कुछदिन वहां रहकर सबको साथ लेकर अमीरकोह अलबुर्जमें आये सेनाके सरदार अमीर को देखकर दौड़कर अमीरके कदमोंपरगिरे अमीरने सबको छातीसेलगाया और अपनासब हाल सबसेसुनाया इतनेमें मलिक अशतरने अमीर को ललकार कहा कि हमपहलेतेरे डरसे भागगया था लेकिन तेरी मृत्युफिर घसीटलाई तब अमीरने जाकर सामनाकिया ऐसीलड़ाईहुई कि कईहथियारटूट गये और कोईजीत नसका और जो हथियारटूटताथा उसेअमरू उठा कर अपनेओरमेंरख लेताथा आखिरको अमीर ने कहाकि अबहमारी तुम्हारी हथियारकी लड़ाई होगई अबपैर पकड़कर उठावो जोजिस-का पैर उठालेवे दूसरा उसकी आज्ञामें होकररहे उसने कहा बहुत अच्छातबदोनों कमरपकड़कर बलकरनेलगे आखिरको अमीरने उस कीकमर पकड़ कर उठाकर पृथ्वीपर देमार कर अमरूको सौंपदिया अमरू ने झटपट बांधलिया मलिकने कहा आप मुझे क्यों बांधते हैं मैं आपकीआज्ञामेंरहूंगातब अमीरनेउसकोमुसलमानकरके गलेसेलगाया और अमरू ने उसी स्थान पर गुलामीबाला उसके कानमें डालदिया तब अमीर डंकाबजवातेहुये खेमेमें आकर बखिया को बुलाकर मुसल-मानकिया और दोनोंको अतिप्रतिष्ठाके साथ सन्मुख होकर खिलअत देकर अपनेसाथ बैठाकर भोजनकरवाया और अनेक प्रकार से उसको प्रसन्नकिया प्रातःकालहोतेही एकमनुष्यने आकर खबरदी कि जोपीन फोलादी बड़ीसेनालेकरनौशेरवांकी सहायताकेलिये आयाहै अमीर सुन कर चुपहो रहे इतने में एक ने फिर आकर खबरदी कि एक मनुष्य दरवाजेपर खड़ाहै और कहताहै कि अमीरसे कहदेव कि तुम्हारेपिता बुलातेहैं अमीर सुनकर बड़ेसन्देहमें हुये कन्दजने कहाकि बिदितहोता है कि वहीसौदागर है किसीप्रयोजन से आयाहै अमीर ने कहा अच्छा जाकरदेखो वह होतो बुलालेआओ आखिरको वह आकर बुलालेगया अमीरने देखकर अतिप्रतिष्ठाके साथ बैठाकर पूछा कि आप यहां किस प्रयोजनसे आयेहैं उसने एक तसवीर निकालकर अमीर को दिखलाई और कहाकि जिसकी यहतसवीरहै वह हारदमकी बेटीहै वह कहताहै जोकोई मुझसे जीते वह इसकेसाथ विवाह करै सो मैंने उसको एक भ रोखेमें देखाहै तभीसे यह हालहुआ अब आपजो सहायताकरें तो व मिलसक्तीहै अमीरने उससे वादाकर भोजनकराके बिदा किया लिख

वालालिखताहैकिसादपुनअमकुउसतसवीरको देखतेहीमोहितहोगया और दोपहररात्रिव्यतीतहोनेपर सेनासेउठकर घोड़ेपर सवारहोबड़ोदा की राहली और नगीसऔर गौरनपहरेपरफिरतेथे उन्होंनेपूछाऐबादशाह इससमय कहांजातेहो उसनेकहा आना हो तो आओ नहीं चुप के चलेजाओ चलनेपर आप मालूमहोजायगा तब दोनोंभाई सादकेसाथ होकर चले थोड़े दिनोंके बाद बड़ोदाके समीपपहुंचे तो एकबागदेखकर उसीमें जाकर उतरपड़े एकतरफ उसीमें बकरियां चररहीथींपकड़कर दोतीन बकरियोंको हलालकरके भूनकर खाया जब इसकोखबर हरदमको हुई तो उसनेआकर लड़कर दोनोंसरदारोंको मारकर सादको भीपछाड़कर छोड़करकहाकि जाहमजाको भेजदेतब साद लज्जाकेमारे अमीरकेपास तो न गया लेकिन जाते २ हरदमके भानजेकेबागमें पहुंचा यहां तकिया लगाकर बैठकर ठंढ़ी वायु लेने लगा संयोग से बाग की मालिकन अपनी सहेलियों समेत उस बागमें टहलरही थी उसने आकरसाद से पूछा कि ऐ जवान तू कौन है साद ने उत्तर कुछ न दिया हथियार लेकर खड़ाहोगया उसने उठतेही एक गदा सादके सिर पर मारी साद ने उसीको छीनकर एकलकड़ी ऐसी मारी कि वह लोटपोट होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी साद ने छाती पर बैठकर चाहा कि इसको बांध लेवें इतने में स्तनपर हाथ पड़गयातो वह उठकर अलग खड़ीहुई और मुखपरसे बुरका उतारा उसका मुखदेखतेही साद मोहितहोगया आखिर वह अपने स्थानपरलेगई सादने उसके साथ विवाहकिया और चैनसे भोगविलास करनेलगे अमीरका हालसुनिये सादके लोपहोने का हाल सुनकर अति व्याकुल हुये जब कहीं पता न मिला तो लन्धौर ने कहा कि जिससमय सौदागरने उसस्त्री की तसवीर आपको दिखलाई थी सादको मैंने देखाथा कि उसका मुखलालहोगया था क्या आश्चर्यहै कि वहीं गयाहो इतने में खबर मिली कि बरग और नारंग भी नहीं तब तो अमीर के चित्तमें निश्चय हुआ कि वहीं गया रुस्तम को अपने स्थानपति करके अमरू को साथ लेकर जाकर उसी बाग में बकरियां भूनकर खानेलगा रखवारों ने आकर कहा कि ओ पपियो तुमको क्या हुआहै अभी कईदिनहुये हमजाका पोता दो मनुष्यों समेत आया था उसनेभी तीनबकरियां मारकर खाईं थीं हरदमने आकर दोनोंमनुष्यों को मारकर उसको निकालदिया था सो तुमारी भी आज वही गति होगी अमीरने उसको निकट बुलाकर पूछाकि हमजाका पोताकिधर गया उसने कहा यह तोमैं नहीं जानता लेकिन हरदमने मारा नहीं केवल निकालदिया था अमीरने ईश्वरका धन्यवादकरके कहाकि जाकर हरदम से कहदो कि हमजा आया है तुमको बुलाता है उसने जाकर हरदमसे अमीरका संदेसाकहा वह हमजाका नामसुनतेही हथियार

बांधकर अमीर के पास आया अमीर भी उसको देखकर उठकर अशकर पर सवारहुये हरदम हमजाको देख कर हंसकर कहनलगा ऐ हमजा जबसे मैंने तेरानाम सुना तबसे सदैव मेरे चित्तमें यहीइच्छा रही कि कबतुझसे मुलाक़ातहो और तेरी वहादुरी देखूं लावारचला अमीरने कहा कि पहिले तू चला फिर हम उत्तरदेंगे हरदमने गदाघुमा कर अमीरके सिरपरमारी अमीरने उसकोरोककर अपनीवारकीइसी प्रकारसे दोनोंमें ऐसा युद्धहुआ कि हरदम की गदाटूटगई और उसने एकदृक्ष उखाड़कर अमीरके ऊपरमारा अमीर ने उसकोभी रोका तब तो हरदम अमीर की बड़ी प्रशंसा करने लगा कि जैसा मैं सुनता था वैसाही तूहै अबतू कृपाकरके अपने मुखको दिखलादे अमीर ने नक़ाब हटाकर अपना मुख सूर्यके तुल्य उसको दिखलादिया वह देखकर अति प्रसन्नहुआ और कहने लगा कि अब शामहोगई कल्ल प्रातःकाल फिर आकर तेरा सामना करूंगा यह कहकर अपने स्थान को चला गया उसने अपने स्थानपर सबहाल अपनी बहिनसे वर्णन करके कईबकरियां और शराबअमीरके भोजनकेलिये भेजदिया और प्रातःकाल फिरआकर अमीरसे युद्धकरने लगा आखिर को अमीरने उठाकर पृथ्वी पर दैमारा तब उसने मुसल्मानहोकर अमीरकोअपने स्थानलेजाकरअपनी बहिन से अमीर का विवाह करदिया यह ख़बर सादको पहुंची वह सुनतेही हथियार बांधकर घोड़ेपर सवारहोकर हरदम के दरवाज़े पर जाकर चिल्लाया अमीरने उस शब्दको सुनकर हरदमसे कहा कि जाकरदेखो कौनहै हरदम अपनी गदा नौसौमनी लेकर बाहर आया सादने देख-तेही घोड़ेपर से कूदकर हरदम को उठाकर पृथ्वीपर देमारकर छाती पर खड़ा होगया तब हरदम ने कहा कि ऐ पहलवान तू अपना नाम तो बतला उसने कहा कि मेरा साद पुत्र अमरूनाम है हमज़ा का मैं पोताहूं हरदम ने कहा कि तू मुझको छोड़दे तो मैं तुझे तेरे दादा के पासलेचलूं साद उसकी छातीसे उतर कर उसके साथहोकर अमीरके समीपलेगयावह देखतेही पैरोंपर गिर पड़ा अमीरनेउठाकर छातीसे लगाया सब तरह से प्यार करके बैठाया तत्पश्चात् अमीरहरदम और सादको साथलेकर उससमयमें अपनी सेनामेंपहुंचे जबजोपीन फौलादी और मजूक से सामना था अमीर को देख कर सब सरदार दौड़ कर अमीरके कदम परगिरे जोपीन फौलादीने माजूकको उठाकर पृथ्वीपर दैमार कर कहा जा दूसरेको भेजदे इसीप्रकार से जोपीनने कईपहल-वानोंको हराया आखिरको अमीरने आकर उठा कर अमकके हवाले करदिया परन्तु ऐसा पहलवान था कि अमीर का भी बड़ी देर तक सामनाकिये अड़ा था बड़ी देरमें अमीर का बस इसपर मिला है तत् पश्चात् अमीरतो अपने महलमें डङ्का बजवाते चलेगये यहां सरदारों

अमरूसे कहाकि इसने हमलोगोंको बड़ा दुःखदिया है इसकोमारडालै तब अमरूने प्रथम तो न मानालेकिन जब सरदारोंने लोभ दिखायातब तो अमरूने स्वीकार करके कहा कि अच्छा मैं अमीरको समझालूंगा हरदम ने सीसागरम करके जोपीन को पिलादिया उसको समाप्तकर दिया अमीरने सभामें बैठकर जोपीनको बुलाया लेकिनलोगोंसे विदित हुआ कि हरदमने जोपनको सीसापिला कर मारडाला तब अमीर ने क्रोधितहोकर हरदमको बुलाकर पूछा तुमने जोपीनको क्यों मारडाला उसने उत्तर दिया कि मैंने अमरू की आज्ञानुसार मारा मैं बिना किसीकी आज्ञाके क्यों मारता तब अमीरने अमरूको बुलाकर पूछा ऐ पापी तूने क्यों जोपीनकोमारा उसने कहाकि वह इसीलायक था तब अमीरने कहाकि क्याकरूं तेरे समान और कोई दूसरा होतातो अभी तेरा शिरकटवा डालता लेकिन तिसपर भी सात कोड़े मारकर कहा कि अब फिर जो ऐसाकरैगा तो मरवाडालूंगा तब अमरू ने कहा ऐ अमीर सातकोड़े के बदले सत्तर कोड़े मारूंगा यह कहिकर नौशेरवां की सेनामें जाकर अपना सब वृत्तान्त कहिकर रहने लगा और सदैव अमीरके पकड़नेकी युक्तिमेंलगाआखिरकार एकदिन रात्रिको अमीरको उठालेजाकर वनमें एकवृक्ष में बांधकर चैतन्य करके एकलकड़ी तोड़कर सत्तर लकड़ी मारीअमीर ने हंसकरकहा कि अच्छा अबजो तेराप्राण बचगयातोमेरानाम हमजानहींतोनहींयह कहकरजोरकरकेबन्दको तोड़डाला तब अमरूजिसप्रकारसे बेनाथका ऊंटभागताहै वैसेहीअमीर के सामने से भागाअमीरने तीरकमानलेकर उसका पीछाकिया तबतो अमरू डरकरकिअमीर का तीरबेमार रहता नहीं दौड़कर अमीर के पासआया अमीरने कहाअबतेरा प्राणलिये न छोड़ूंगा अमरूने कहा जो यही इच्छाहै तोमैं हाजिर हूं जो इच्छा हो वह कीजिये तब तो अमीर ने केवल सौगन्ध उतारनेकेलिये नसतरदेकर रुधिरनिकाल कर अमरू को साथलेकर सेनामें आये ॥

आना मरज़ू कहकीम का वखतक के भेजने से और अमीर को सरदारों समेत अन्धा करना ।

लिखनेवालाविखताहैकि एकदिनमरज़ूकनाम हकीमजिसकेबहुतकाले बड़ी मित्रताथी उसनेकहा कि जोनौशेरवां आज्ञादेवै तोहमजाकरहमजाको सेनासमेतअन्धाकरदेवें बादशाहनेसुनकर उसकोबुलाकर खिलअतदेकर जानेकी आज्ञादी हकीमने अमीरकी सेनामें जाकर अमरू से मुलाकात करके कहाकि जो अमीर आज्ञादेते तोमैं सेनामें दवाकरता और सदैवखिदमतमें हाज़िररहता अमरूने जाकर अमीर से सबहाल कहातब अमीरने उसकोबुलाकर अपनीसेनामें वैद्यककरनेकी आज्ञादी तत्पश्चात् एकदिन अमीरके नेत्रोंमेंगर्दपड़ी उससे नेत्रोंमें दुःखहोनेलगा तब उसने एकअञ्जन ऐसादिया कि जिससे तुरन्तही अमीरके नेत्रअन्धे

होगये यह देखकर सबलोगोंने अतिप्रसन्न होकर उसको इनाम दिया तत्पश्चात् उसने एक सुरमा ऐसा दिया जिसके लगानेसे सब अन्धे होगये और जाकर नौशेरवांसे कहा कि मैं अमीरको सरदारोंसमेत अन्धाकर आयाहूं डंकाबजवाकर युद्ध की तैयारीकरके सबको मारलीजिये नौशेरवांने तबलजंग बजवाया अमीरने भी सुनकर डंकाबजवाकर सुख धोनेकेलिये जलमंगवाया तबतो सबको यहीमालूमहुआ कि हमसब अन्धेहैं बड़े अफसोस में हुये और कहनेलगे कि जो सामने नहीं जाते तो शत्रु की सेनाआकर सबलूटपाटलेगी इससे चलकर लड़ो जैसी ईश्वरकी कृपा होगी वहीहोगा सेनाकार सेनाकापरेट शत्रुकेसामने चलाया नौशेरवांनेकहा कि जो अन्धेहोतेतो काहेको लड़नेको आते बख़्तक़ने कहा कि किसीको लड़नेकेलिये भेजिये आपही विदितहोजायगा तब नौशेरवांने गाज़ीसवारकोभेजा उसनेजाकर अमीरकी सेनाकेसामनेआकरललकारा कि ऐ अरबवासियो तुमसब अन्धेहोगये इतनी देरसे पुकारता हूं कोई सुनतानहीं तबतो हरदम क्रोधसेजलउठा और आकरउसको सामना करके मारडाला तब नौशेरवांने बराबरसे पचास वीरभेजेसबोंको हरदमने मारा आखिरको नौशेरवांकी सेनामें घुसकर ऐसामारा कि इतने डिहियारेमें कभी नहीं मारा था तबतो नौशेरवां की सेना भाग खड़ी हुई और अति प्रसन्न होकर किलेमें आकर सुरचों पर सिपाहियोंको मुक़र्रर करके क़िले को बन्दकरके ईश्वरका भजनकरने लगे नौशेरवां ने पहिले जाकर क़िलेमें युद्धका सामान किया लेकिन जब क़िलेवालों ने तीरसेबहुतहीसेनाकोघायलकिया तबक़िलेसेहटकरघेरकर उतरपड़ा ॥

आना हाशम पुत्र हमज़ा और हारस पुत्र साद का अमीर के पास और अच्छाहोना अमीर के नेत्रोंका ख़्वाजा ख़िज़र की सहायता से

लेखकलिखताहै कि हरदम की बहिनकेपेटसे जो पुत्रहुआथा उसने उसका नाम हाशमरक्खा और सादकेपुत्रकानाम हारसरक्खा जबवह दोनों नौवर्ष के हुये तब दोनोंमें बड़ी मित्रता हुई ऐसी मित्रता थी कि साथही भोजनकरते और बनमें शिकारखेलने भी साथही जाते थे आख़िरको जब उनको ख़बरमिली कि अमीर बदाऊं क़िलेमें बंदहै तब दोनोंने आकर नौशेरवां की सेनाको मारकर भगादिया तब अमीर ने जानकर कि ईश्वरसेसहायक आयाहै क़िलेका दरवाज़ाखोलकरउनको भीतर करलिया उनकाहाल विदितहोनेपर अमीरऐसे प्रसन्नहुये कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता दोनोंको दोनों जांघों पर बैठालकर प्यार करनेलगे तब हाशमने कहा कि यहांपर हमारी सेनाको बड़ादुःख है इससे बरोदा में चलकर बास कीजिये वहां बड़ा सुखमिलेगा अमीर ने उसीसमय डंकाबजवा कर बरोदा की तरफ़ कूच करके क़िलेमें जाकर उतर पड़े और शत्रु की भी सेना पीछे २ जाकर क़िलेको घेरकर उतर

पड़ी अमीरदिन रात्रि ईश्वरका भजन कररहे थे कि एकदिन हजरत खिजरने आकर एकपत्तेका रस अमीरके नेत्रोंमें टपकाकर अच्छाकर दिया तब अमीरने हजरतखिजरसे सलामकरके कहा कि मैंतो अच्छा हुआलेकिन मेरेसरदार भी सब अन्धे हैं तब हजरत खिजर ने कईपत्ते देकरकहा कि इसीकारंग लेजाकर सबकेनेत्रों में छोड़देना सब अच्छे होजांयगे आखिरकार जब सबको दिखाई पड़नेलगातो अमरूनेअमीरसे कहा कि यहसब बखतकने किया है आज्ञाहोतो उसको इसके बदले में दण्डदूं अमीरने मनाकिया लेकिन उसने नमाना नौशेरवां की सेना मेंजाकरबावरची बनकर पहिले बखतकके पासरहा फिर बादशाहके बावरचीखानेका दारोगा होगया तब एक दिन घातपाकर बखतकको उठालाकर सिरकाट कर गाड़लिया और शेषधड़ का कबाब बना कर लेजाकर नौशेरवांके भोजनमेंदिया संयोगसे एकउंगली जिसमें बखतक मुंदरी पहिनेथा वहबादशाहके भोजनमें निकलआई बादशाहने अंगुठीसेजाना कि यहबखतक की उंगलीहै बावरचीसेपूछा कि यहउंगली किसकी है उसने कुछ उत्तर न दिया तब बखतक की खोजकराई जब उसका पतानमिलातो बुजुरचमेहरसे बुलाकर कहा कि आइये भोजन आपकेलिये रक्खाहै खाजेने कहा किमैं भोजनकरके आयाहूं तबबादशाहनेकहा मैंजानताहूं कि जिसकारण तुमभोजननहीं करतेहो निश्चय है कि तूने रमलसे विचाराहोगा लेकिन हमसे खबरनहीं की खाजेने कहा कि हमलोग बेपूछेकोईबात किसीसे नहींकहतेहैं इसे बादशाहने क्रोधितहोकरबुजुरचमेहर को अन्धाकरकेनिकालदिया और हरमुजको गद्दीपरबैठाकरआपमदायनकोचलागया और बुजरचमेहरने आकर अमीरसेसबअपनाहालकहा औरवहांसेमक्केमेंजाकर फिरउसके नेत्र अच्छे होगयेअबहरमुजका हालसुनिये कि बादशाहकेजानेकेबाद गद्दीपरबैठ करश्यावसपुत्रगर्जचमेहरकोतो सेनापति प्रधानबनाया और बखतियारक को दूसरावजीर बनाया परंतु बखतियारक थोड़े दिनोंकेबाद ऐसामुंहलगाहोगया कि वे उसकेपूछे हरमुजकोई कार्य न करता एकदिनहरमुजनेकहा कि कोईयुक्ति ऐसीकरनीचाहियेकि जिससेहमजामाराजावे बखतियारकने कहा कि गाबलंगी बादशाह खामका बड़ा बहादुर है और वहांकेलोग मनुष्यका भोजनकरतेहैं जो उसको आपलिखें तो वह आकरहमजाकी सेनासमेतनाशकरदेगा आखिरकार बखतकनेलिखकर बुलवायाजबउसने आकरअमीरकी सेनाका सामना किया तो प्रथमतो चालीसव्याघ्रसवार मारेगयेतत्पश्चात् जबउसनेआकरअमीरकासामना किया तो अमीरनेऐसीतलवार चलाई कि वहभागकर अपनीसेनामें खड़ा हुआ और हरमुजसेकहनेलगा कि हमहमजासे नहींजीतसक्तेहैं लेकिन जोतुमहमजाऐ बचाचाहतेहोतो कजाककदरमें सरपालपुत्र सलसालके

पासचलो वह तुमारी सहायता करेगा हरमुजने सब से सलाह पूछी सबोंनेतोजानेकी सलाहदी लेकिन ख्याविसने कहा कि वहां जाकरबड़ा दुःखप्राप्तहोगा वहां न जाइये परंतु उसने न मानाआखिरकार वहांजा करऐसीआपदामेंपड़ा कि उसकावर्णन न नहींहोसक्ता जबहमजानेआ-कर मुसलमानकरकेसहायताकी तबवहांसे छूटकरआनेपाये जबअमीरने हरमुजको वहांसेमदायनकी तरफभेजदियातबतो सरपाल अतिकोधित होकरसेनालेकर किलेसेनिकला अमीरनेजाकर सामनाकिया बड़ीभारी लड़ाई हुई आखिर को अमीरके हाथसे बांधा गया और मुसलमानी धर्मस्वीकारकरके अमीरकेगुलामोंमेंमिला और अमीरको अपनेनगरमेंले जाकरकईदिनोंतक मेहमानदारीकी तत्पश्चात् अमीरनेसरपालसेपूछा कि कोई और स्थानयहांदेखनेके योग्यहै उसनेकहा तीन मंजिलपरतिलस मातजमशेदीहै वहांचलदेखिये अमीरनेकहा जो तूनेउसको देखाहोतो पहिलेसबहाल वर्णनकरकिसने बनवायाहै उसनेकहा कि जमशेदमरने से पहिले नगरको उजाड़कर वहांसब तरहके मनुष्यजादूके बनारक्खे हैं और एककबरखोदाकर उसीमेंबैठकर सोरहादूसरा यहहै कि जंगलमें एकदामीप अलमनामजादूका बनाहै वहभी देखनेकेयोग्यहै तीसरे एक देवसपेदबड़ादुष्टहै उससेसबलोग डरतेहैं देवसपेदका नामसुनकरअमीर ने कहा कि विदितहोताहै कि वहवहीदेवहै जो क्राफसेयामहारेडरसे भागआयाआया है आखिरकार अमीरनेजाकर पहिलेतो जादूकेतिल-स्मातोंकोतोड़कर सरपाल और थमकको उसका तमाशादिखाया फिर कुंयेमेंजाकर देवसपेदको एकबारगी घेरकर सिरकाटकुयें से बाहरला कर लोगोंको दिखाया और देवजो उसकेसाथथे उनमेंसे बहुतेरेमारेगये और बहुतेरे भागगये और बहुतोंको अमीरने मुसल्मानकरके कहा कि तुमक्राफमें जाकरकरीमाके समीपहोतत्पश्चात् सपेदेवका शिरलेकरकुंये के बाहर आये और शिरपालको दिखाकर आखेटबन्द से लटका दिया और आपघोड़े परसवारहोकरवहांसे रवानाहुये थोड़ीदूर जाकर एक हरे मैदानमें शिकारखेलनेलगे और सबसन्देह मनके दूरबहानेलगे ॥

रुस्तम पीलतन का अहिरन से माराजाना ॥

लिखने वाले इस इतिहासको योंवर्णन करते हैं कि रुस्तमपीलतनने देखा कि अमीर को गयेहुये देरहुई अबतक कुछसमाचार नमिलासो अब हमयहां बैठकर क्या करैं इससे यह अच्छी बात है कि जमशेद से जाकर तिलस्मात की सैरकरै सरपालके पुत्रों को लेकर कजावकदर से सेना समेत चलकर कईदिनोंके बादतिलस्मात जमशेदमें पहुंचा उसको टूटा देखकर मालूम किया कि अमीर इसको तोड़कर और कहींगये तब वहांसे सेनालेकर नगरमें गये तोवहांदेखा किजमशेद की लोथएक तख्तपरपड़ीहै औरखजानेकीकोठरी जोखोलकरदेखीतोसर्पऔर बिच्छू

दिखलाईपड़े तबसरपाल केबेटों सेकहाकि अब बखतक को भीचल कर देखनाचाहिये उन्होंने कहाकि अहरनशेर गरदां वहां कावादशाह है उसकाएकसौपचीसगज डीलहै श्रौरसबसेना उसकी मनुष्यखातीहै इससे वहांजाना उचितनहो वहांसेकिसी काप्राण नहींबचता रुस्तमने कहा किमालूमहोताहै वहभीसरपाल केबराबर है उसनेकहा किवहसरपाल सेकहींबलवानहै जबवहहमारेदेशमें आताहै हमारेपिता उसकी धांका सेपहाड़परभागजातेहैंतबरुस्तमनेपूछा किसुरजवां कहांहै उन्होंनेकहा किवहभी वहींहै आखिरकार रुस्तमनेजाकर अहरन सेलड़ाईकी श्रौर कई सरदारों समेत आपमरागया उसके मारेजाने के बाद अहरन को मालूमहुआ कि हमजा सेनामें नहीं है तब तो अपने क़िलेमें चलागया श्रौर अमीरकी सेनामें रोनापीटना मचगया आखिरको रुस्तमको गाड़ कर अमीरका आसरा देखने लगे अमीरका हालसुनिये कि जब शिकार से छुट्टीपाकर जमशेदमें आये तो सेनाके उतरनेका पतापाकर अमरूसे कहाकि विदितहोताहैकि रुस्तम यहांतकआकर बखतककी तरफगया ईश्वरखैरकरै मेराचित्त व्याकुलहै यहकहकर बखतककी तरफचले जब समीपपहुंचे तोजितने सरदार श्रौर पुत्रथेसबदेखकरचिल्लार२कर अमीरके कदमोंपरगिरे अमीरभी देखकरघोड़ेपरसेपृथ्वीपर गिरपड़ेश्रौरइधर उधरलोटनेलगे सरदारोंने देखाकि अमीर अतिव्याकुलहै सबसरदारोंने अमीरसे समुझाकर कहाकि ईश्वरकी रचना अपरम्पारहै उसमें किसी कासाभानहीं इससे कुछदिन आपजंगलमें चलकर चित्तको स्थिरकीजिये फिर जैसा ईश्वरकरैगा वहीहोगा आखिर समुझा कर अमीरकोजंगलकीतरफ लेगये संयोग से उसी दिन सुरजवान अहरन से विदाहोकरखामको जाताथा उसनेमार्गमें सुनाकि हमजारुस्तमके दुःखसेजंगल में चित्त बहलानेकेलिये सबको साथलेकर शिकारखेलने आयाहै उसने एक जादूगरको बुलवाकर घोड़ाजीन समेत तैयारकराकर उसीमार्गमें खड़ाकरके आपलोगों समेत एकस्थानमें छिपकर बैठकर देखनेलगा इतनेमें सादउसीतरफसे घोड़ेपर सवारनिकला उसने घोड़ेकोदेखकर अपने घोड़ेपरसे कूदकर उसपर सवारहोकर एककोड़ामारा तोवहघोड़ा वहांसे वायुसे अधिकभागा आखिरको सादने तलवार निकालकरघोड़ेकोमारडाला तोघोड़ासाद समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा सुरजवान ने दौड़करसादको बांधलिया श्रौर खामकीतरफ चला जिससमय गवलोके समीपपहुंचा सादको हाजिरकरकेकहा कि देखिये यहहमजाकापोता श्रौर मुसलमानी सेनाका बादशाहहै किसतौरसे मैं बांधलायाहूं साद नेकहाऐगवली यहतो कहताहै कि मैंबांधलायाहूं सो हमारा इसका सामनाहो आपही झूठसत्य विदित होजायगा आखिर को दोनोंमें लड़ाईहुई सादने उठाकर सुरजवानको पृथ्वी परदेमारा तब सुरजवानने

फिर उठने की इच्छाकी इतने में गवलंगीनें उठकर मार डाला और
सादको गलेसेलगाकर अपनी बगलतखतपर बैठाया और कहा ऐ पुत्र
किसीप्रकारसे सन्देहनकरो मैं तुझको विदाकरदेता लेकिन इसकारण
मैं तुझको यहां रक्खूंगा कि हमजा तेरे लिये यहां आवे तो मुझसे भी
मुलाक़ात होजायगी साद गावलंगीकी मोहब्बत देखकर अतिप्रसन्नता
सेरहनेलगा बदीउज़्ज़मांने जो सादकेघोड़ेकोखाली और जादूकेघोड़े को
मुआदेखा तोअतिब्याकुलहोकर इधरउधरउठनेलगा जब कहींनपतान
मिला तोकहाकि विदितहोताहै किमरजबानने यहदुष्टपनाकियाहोगा
आखिरकार ढूंढ़तेरमार्गमें गावलंगीके दोदामादोंकोमारताहुआ गा-
वलगीकेनगरलेंपहुंचातो उसकोभीएकपत्रलिखा किसादहमाराभतीजा
तुम्हारेपासहैजो अपनाभलाचाहतेहोतो उसको हमारेपास भेजदो हरद-
मनेपत्रलेजाकरदेखा किगावलंगी और सादएकहीतखत परबैठेहैंहर
दमगावलंगीको देखकरबड़ाआश्चर्यमेंहुआकिईश्वरनेऐसामनुष्यभी संसार
में पैदाकिया है गावलंगी ने हरदम को देखकरअति नम्रतासे कहाकि
भाई अच्छेतोहो यहकहकर अतिनम्रतासे उससे कहाकि जैसेबदीउज़-
ज़मांने मेरे दोदामादोंकोमारा है परंतु मैं हमजासे वैसाबदला नहींले
सक्ता हूं हरदम गावलंगी की बातें सुनकर अपने चित्तमें अति लज्जित
हुआ कियहतो ऐसीबातें करता है और पत्रमें और तरह सेलिखा है
लेकिनलाचार होकर पत्रदेकर सब संदेसा उससे कहागावलंगीने पत्र
कोपढ़कर संदेसाकहा किमैंनेआप कोकौनसा दुःखदिया है जोआपके
चचासाहबने यहपत्रलिखाहै सादने कहाकि उनकोयह क्यामालूम कि-
सतरहसे आपमुझसे सन्मुखहोतेहैं गावलंगीने कहाहांयह भी आपसत्य
कहते हैं तब हरदमको खिलअत देकरकहा कि तुमजाकरबदीउज़्ज़मासे
हमारासलामऔरहमारीतरफसेकहनाकिसत्यहैमुरजबानसादकोदगा
देकरपकड़लायाथा सो हमनेउसको मारकर सादकोअमीरके आनेतक
मेहमानरक्खाहैसो आपभीउतरकर शिकारखेलियेऔर अमीरकेआनेतक
हमारेमेहमानरहिये औरजोलड़नेकीइच्छाकरोगेतो उसकाफलअच्छान
होगा लेकिनबदीउज़्ज़मांनेनमाना युद्धकाडंका बजवाकर सामनाकिया
आखिरको जबसिरवरहनातपशी दोनोंभाईमारेगयेतबगावलंगीने बड़ा
अफसोसकिया और दोनोंकी लोथ उठाकर बदीउज़्ज़मांके आगे लाकर
रखकेकहा कि अबजो हुआसो हुआ अबभीहमजाके आनेतक चुपचाप
बैठेरहो नहीं जोमुझको मारनेकी इच्छाहोतो मैं हाजिरहूं बदीउज़्ज़मां
ने कहा कि मैं जल्लादतो हूं नहीं कि तुझेमारूं हथियार बांधकरआ
हमारीतेरी लड़ाईहोतुभीमेराबल देखे गावलंगीहथियार लेकरशाहजादे
केसामने आयातबभी मनाकरतारहा लेकिन कौनमानताहै आखिरको
गावलंगीनेतीनवार बराबरकियेतीनोंकोअमीरजादेनेएकगदाऐसीमारी

कि गावलंगी की सवारी का बैल मरगया और गावलंगी भी व्याकुल हो-गया तबतो गावलंगी बदीउज्जमां की बड़ीप्रशंसा करने लगा और सायंका-लतक दोनों में गदा और तलवार चला की यह हाल अमीर को पहुंचा कि मरजवान सादको उठाले गया है और बदीउज्जमां उसकी खोज में खास तक पहुंचे यह सुनकर अमीर ने अमरूको बुलाकर कहा कि मैं तो वे अब लरके मारे यहां से कहीं हटल हीं सका तुम जाकर हाल लावो अमरू वायु के समान वहां से उड़कर अति शीघ्र ही खास में पहुंचा देखा कि गाव लंगी और बदीउज्जमां से लड़ाई होरही है सेना के सरदार देखकर दौड़ कर अमरू से मिले गावलंगी अमरू को देखकर लड़ाई से हटकर अमरू से बातें करने लगा अमरू ने कहा कि ईश्वर की कृपा से आप छोटे बहुत हैं इससे बातें नहीं सुनाई देतीं समीप आवो तो आपकी बातों को सुनूं यह कहकर कूदकर उसकी छाती पर जाबैठा और कहा कि मैंने तेरा बड़ा नाम सुना है लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि अमीर के लड़कों से लड़ते हो उसने कहा कि मैंने कुछ नहीं किया मेरी बातों की सब अमीर की सेना गवाह है अब तुम आये हो बदीउज्जमां को ईश्वर के लिये समुझादे कि वह अमीर के आने तक चुपचाप रहे मुझको अमीर से लज्जित न करावे तब अमरू ने अमीरजादे को समझाकर मैदान से फेरदिया और आप गावलंगी के साथ उसके क़िले में गया वहां जाकर गावलंगी से लौटने की इच्छा की परन्तु उसने न माना और कहा कि आज हमारे यहां मेहमान रहिये और अपना कुछ तमाशा दिखाओ मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है यह कहकर साद और अमरू को साथ लेकर भोजन किया और शराब और क़बाब खापीकर कहा कि तुम में सब अच्छा है केवल एक बुराई है कि तुम अपनी दाढ़ी क्यों मुड़ाते हो तुम को लोगों के साम्हने लज्जा नहीं आती है अमरू ने कहा कि सातसौ अशरफ़ी आप भी दाढ़ी की बन-वाई भेजदीजिये नहीं तो दाढ़ी आप के मुखपर न रहेगी गावलंगी ने कहा तब मैं तुझको मरद जानूं जो तू मेरी दाढ़ी मूंडले मैं किसीप्रकार से क्रोधित न हूंगा अमरू ने कहा कि आपकी दाढ़ी मूड़ना कुछ कठिन नहीं है बहुत अच्छा आज मैं रात्रि को आपकी दाढ़ी मूड़ूंगा ख़बरदार रहिये आख़िर को रात्रि को अमरू ने आधी दाढ़ी मूड़कर जगाकर दूर से सलाम करके कहा कि आईना लेकर मुख देखिये उसने जो देखा तो आधी दाढ़ी मुड़ी पाई अति लज्जित होकर कहने लगा कि कोई युक्ति ऐसी करो कि सब दाढ़ी बराबर होजावे तब अमरू ने वह भी आधी मूड़ कर झोरे से एक दाढ़ी निकाल कर जमा दी और कहा कि जब तक गरम जल से दाढ़ी न धोओगे तबतक इसीप्रकार से रहेगी गावलंगी ने आईना लेकर देखा तो असल में वैसही मालूम हुआ जब प्रातःकाल हुआ गावलंगी ने सातसौ अशरफ़ी ख़िलअ़त पर अधिकार के अमरू को देकर बिदा किया

असद्ने वहांसे आकर बदीउज़्ज़मां को अच्छीतरहसे समझादिया कि जबतक अमीरन आवें तबतक तुमगावलंगीसे सामना न करना यहकह कर अमीरके पास रवाना हुआ कईदिनों के बाद पहुंच कर सब हाल अमीर से कहा अमीर ने दोनों पहलवानों के लिये बड़ी गमीमनाई प्रातःकाल को अहरन शेरगरदांडंका बजवाकर मैदान में आया और ललकारनेलगा तब अमीरने भी जाकर मैदानमें उसका सामनाकिया उसनेअमीरपर एकबारचलाई अमीरनेउसको रोककर कहाकिदोवार और करले तबउसने झुंझलाकर दोवार ऐसेकिये कि अशकरव्याकुल होगया तब अमीरने एकही वारमें उसकेघोड़ेको मारा और आप भी अशकरपरसे कूदकर उसके सामनेगया थोड़ीदेरतक गदाचली जिससे पृथ्वी हिलगई फिर तलवार चलने लगी इसीप्रकार से तीन दिन तक युद्धहुआ चौथेदिन अमीरने शब्द करके सिरपर उठालिया और घुमा कर पृथ्वी पर देमारा और असद्से कहा कि इसको बांधलो असद् बांधकर लेगया और अमीर तलवार लेकरउसकीसेनामेंगया जो मुसल्मान हुये उनको छोड़ कर बाक़ियों को मारडाला लोगों ने असद् से कहा कि अमीर इसको न मारेंगे तुममारकर कस्स का बदलाले तब असद्ने लोगोंके कहने से उसके कान में शीशा गर्म करके डाल दिया वह मरगया इसी प्रकारसे सबतरहसे वहां का नाशकरके कईदिनोंके पश्चात् चलकरथाम मेंपहुंचेगावलंगीने अमीरके आनेकीखबर पाकरसाद कोख़िलअत औरबहुत सौगात देकरअमीरकेपासभेजदिया अमीरने सादकोगलेसे लगायाऔर गावलंगीकी कृपा करनेपर अतिप्रसन्न हुये प्रातःकालगावलंगी डंकाबजवाकर मैदानमेंआकर खड़ाहुआ अमीरभी आकेरसामने खड़ेहुये लेखकलिखताहै कि इक्कीसदिन रातऐसी लड़ाई दोनोंसेहुई किजिसका वर्णन नहींहोसक्ता बाईसवेंदिन अमीरनेगावलंगी सेकहाकिसब प्रकारकी लड़ाईहोचुकी अबतुमहमारा पैरउठावो हम तुम्हाराजोउठालेवेवह उसकेआधीन होकरदूसरारहै गावलंगीने अतिप्रसन्नताकेसाथस्वीकारकरकेकहाकि हमआइसमेंतुमबहुत थके अमीरने कहा अच्छादेखाजायगा देखेंकौन लज्जितहोताहै तबगावलंगी नेइसप्रकारसे बलकिया कि अंगुलियां टूटगईं औरकानों औरनेत्रोंसे रुधिरगिरनेलगा आख़िरको छोड़कर कहा कि मुझमें इससेअधिक बलनहीं है तबअमीर नेकहा अच्छा ख़बरदाररहो हमउठातेहैं यहकहकर एकशब्द ऐसा किया सोलहकोसतक केपहाड़आदिक हिलगये औरएकबारगी गावलंगीको उठाकरपृथ्वी पररख करअसद्से कहाबांधलो उसनेकहा मैंतो आपही बंधाहूं तब अमीरने उसकोमुसलमान करकेछातीसे लगाकरसेनामेंला-कर सबसरदारोंसे अधिकप्रतिष्ठाकी और सबसरदारोंसे मिलाकरअपने साथबैठाकरभोजनकराया तबगावलंगीनेअमीरकोपुत्रों और सरदारों

समेत अपने क़िलेमें लेजाकर चालीसदिन तक मेहमानदारी की ॥

जानाअमीरका बखतरको और वहांके बादशाहकाकारबबखतरकोमारना ॥

लिखनेवाला लिखताहै किअमीरने मेहमानदारीके बादगावलंगीसेपूछा कियहांसेनिकटकौननगरहै उसनेकहा कि बखतरनगरअतिसुशोभितस्थान है लेकिनवहांका बादशाहकारबबखतर बड़ापहलवान एकसौसाठगज काडीलहै और मनुष्योंकाआहारकरताहै जबवहमारेनगरमें आताहै हम उसके डरसे पहाड़पर भागजातेहैं और वह जादूगरभीहै अमीरने कहामैंतोजादूगरोंऔर मनुष्यभक्षी और अग्निपूजकोंकाशत्रुहूं अबवेइसके मारेसुभेचैन न होगीदुशमनसेहरकी कहावत मेरा पराशधर्मउपनाम है यहकहकरगावलंगीसे कहा किअच्छा अबहमजातेहैं गावलंगीनेकहा ऐअमीर जोतेमो अवआपअपने निकटसे अलगनकीजियेअमीरने कहा जो ऐसाहोतो मेरेसाथ चलोतबगावलंगी अपनेपुत्रमलगावलंगीको अपना स्थानपतिकरके अमीरकेसाथहुआ थोड़ेदिनोंमेंबखतरके समीपपहुंचकर चारकोसकेफासलेपर उतरकरबखतरको एकपत्रलिखाकि ऐकारबबखतर यहांआकर मुसलमानहोकर मेरेआधीनहो नहींतो ऐसीखराबीसे तुझकोमारूंगा कि जीवजन्तु तेरेलियेदुःखपावेंगे जबअमरूपुत्र अय्यारने पत्रलेजाकरदिया उसनेघोड़ासापढ़करआज्ञादीकियहजाने न पावेइसके कानेवालेकोपकड़लो अमरूनेटोपीफाड़कर सिरपररक्खीऔरकारबकेसिर पर एकथप्पड़मारकरटोपीसिरसेलेकरअमीरकेपासआकरसबहालवर्णन कियाअमीरने रात्रिकोशराबपीनेमेंकाटी प्रातःकाल कारबनेजबआकर मैदानमेंडंकाबजवायातोअमीरनेभीजाकरसामनाकियाआखिरकोकारबमारागयातत्पश्चात् उसकीसेनाको मारकरनगरकोलूटकरअराशनगर में आयेतो वहांके बादशाह आराशनेकिलेसे निकलकर अमीरकासामनाकिया अमीरने देखातो १८० गजकाउसकाकदहै और एकभयानकरूप है जिससमयउसने अमीरके ऊपरगदा चलाई अमीरकूदकर दूसरीतरफ चलेगयेतो गदाउसकी पृथ्वीपर जितनी दूरमेंगिरी उतनी पृथ्वी धसगई उसनेझुककरचाहा कि गदाउठाकरफिर अमीरकोमारै इतनेमें अमीर ने एकतलवार ऐसीमारी कि वहदोभागहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना उसकीयहहाल देखकरकिलेमें भागगईतब अमरूनेसुरंग लगाकर उस किलेकोभी उड़ादिया जितनेमनुष्यभक्षकथे सबकोयमपुरीमेंपहुंचाया ॥

अमीरका नेस्तान की तरफ़जाना और वहांके बादशाह को मारना ॥

लिखनेवाला लिखताहै कि अमीरने आराशकानाशकरके गावलंगी से पूछा कि अब इसके आगे कौननगर है उसनेकहा एकअति सुशोभित नगर नेस्तानहै और वहांके स्वामीकानाम सगंदाश खूनखार नेस्तानहै उसकाडील १९० गजकाहै और उसकी सेनाभी अधिक है और बड़े २ बहादुरसरदारहैं और क़िलाऐसापुष्टबनाहै कि जिसमें मनुष्य तो क्या

कोईजन्तु भी जानेकोरास्तानहीं पाते और पृथ्वीसेऐसी खबनिकलती है कि पहाड़ जलते हैं लेकिनअमीरने इनबातों का कुछ विचार न किया नेस्तानकीतरफ़ कूचकरकेचले जब उस स्थानपर पहुंचे तो अमीरकी सेना गरमीकेमारेआगेनबढ़सकी बहुतसेलोगमरनेलगे उससमयअमीरनेख्वाजे- खिजरकी कमन्दनिकालकर पृथ्वीपरफैलादी और कहा किइसीकोपकड़ कर सबलोग चलेआओ अबकुछनडरो लिखनेवालालिखता है कि सबसेना उसनदीमें जलकरमरगई केवलएक सरदारऊंटपर सवार और ३०० सौ सिपाही कमन्द पकड़कर नदीसे पारउतरे बड़े दुःखसहने के बादनगर नेस्तानके समीपपहुंचे वहांकाबादशाह अमीरकानाम सुनकर जातेही सेनालेकरसामनेआया और अमीरपर खड्गमारनेलगा यहांतक कि बहुत से जवानअमीरकेमारेगये तबतो अमीरव्याकुलहोकर दोनोंहाथोंमें तल- वारलेकर इसप्रकारसे उसकी सेनामें घुसकर मारनेलगे कि जिसतरह व्याघ्रबकरियोंकेझुण्डमें घुसकरमारताहै यहांतक कि खूनखार मारेगये कि उनकेरुधिरसेएकनदीबहचली आखिरकार नेस्तानसंगने आकर अमीरके सिरपरएकतलवार मारी अमीरनेउसकोरोका और जबवह गदाउठाने लगातो अमीरनेकूदकर एकतलवारऐसी मारी कि उसकेचारों पैरकाट करअलगहोगये तो एकतलवार दूसरीमारकरसिरकोकाटकर पूराकर दिया और जोकिलेमेंथे उनकोसुरंगलगवाकर उड़वादिया औरकहा कि मैंने बुजर्चमेहरसेसुनाथाकि जुलमातसे केवल१०सिपाहीबचकर आवें गे औरअब११हैं नहींमालूमकि कौनमरेगायहकहकर अतिदुःखित हुये लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने गावलंगीसे कहा किहेमिच लाख सवार हमारेसाथथे उनमेंसे केवल ११ हैं इनके मरनेसे मुझको बड़ादुःख हुआ अब बताओ कि इसकेआगे कौन नगर है उसने कहा कि यहां से थोड़ीदूरपर आरेविल्लासेनगरहै वहांके स्वामीकानाम आरदपीलदन्दां और सुरजबानपीलदन्दां और उसके आगे जरदेहस्ताजादूका तिलस्मात है वहां अपूर्व २ तरह की वस्तुहैं तब अमीर वहांसे चलकर आरदवेलमें पहुंचे वहांके स्वामी को सेनासमेत मारकर चलकर जरदस्तजादूगर के तिलिस्मातमें पहुंचे तो एकचारदीवारी दिखाई पड़ी और उसके भीतर एकगुम्बद दिखाई पड़ा तो उसमें से गाने बजाने का शब्द सुनाई पड़ा तब अमीरने गावलंगीसे कहा कि इसमें मनुष्य मालूम होतेहैं कि गाने बजानेका शब्द सुनाई देता है उसने कहा यहां मनुष्य नहीं है यहांसब जादूहै तब अमीरने कहा कि तुम सबसे बड़ेहो जाकर देखोतो क्याबात है गावलंगीने जाकर जो दीवारसे झुककरदेखातो एकबारगी चिल्लाकर दीवारके भीतर कूदपड़ा इसीतरहसे सब देख २ कर भीतर कूदगये तब अमीर अति दुःखितहोकर सोगये तो देखा कि आकाश से एक तख़्त उतरा उसपर एक वृद्धमनुष्य बैठा था उसने आकर अमीरसे कहा कि

ऐ पुत्र दुःखित क्यों होतेहो इस गुम्बद पर एक सफ़ेद मुर्ग बैठाहै उसको तीरसेमारो जादूकानाशहोजावेगायहकहकर तख़्तत्तोआकाशकीतरफ़ उड़गया और अमीरके नेत्र जो खुलगये तो देखा कि गुम्बदपर एकसफ़ेद मुर्ग बैठाहै अमीर ने तीरसे उसकोमारा उसकेगिरतेही तिलस्मात टूट गया लोगजो उसके भीतर थे सब आपही अमीर के क़दमों पर आकर गिरे अमीरने सबसेमिलकर ईश्वरकाधन्यवादकिया उनलोगोंसेजो वहां का हालपूछा तोउन्होंने कहाकि एक ऐसीस्वरूपवान युवास्त्री दिखाई पड़ीकि जिसके देखनेसेहमलोग व्याकुलहोकर कूदपड़े थे अमीरने कहा कि गुम्बदका दरवाजा खोलकर देखो तो इसके भीतरक्याहै परन्तुउनमें कोई न खोलसका तब अमीर ने जाकर दरवाजे को तोड़ा और भीतर जाकर देखा तो गुम्बदमें एक ताबूतलटकाथा उसको उतारकर खोला तो जर्दहिश्तजादू की लाश और एक किताबमिली अमीर ने उसको जलादिया लेकिन दोचार पन्ने असकूने चुरालिये थे वही जादू अबतक दुनियामें है तत्पश्चात् उसकी लोथकिताबसमेत जलाकर तिलिस्मातके किनारेआये तो यारोंसे कहाकि आज सबकोई पहरादोबारी२ सोना यह कहकर आदी को पहिले पहरपर बैठायातो सामनेसे एकहिरन आया उसको मारकर खानेके लिये पकानेलगा इतनेमें एक बुढ़ियास्त्री आकर दांतचबानेलगी तब आदीने कहा सत्यबतादू कौनहै उसने कहा कि मैं एकसौदागरकी स्त्रीहूं मेरे पुरुषको व्याघ्रने मारडालाहै मैं तीन दिनसे भूखीहूं थोड़ासामांस मुझकोभी दे उसको जो दयाआई तो उठ कर डेकचेसे मांसनिकालनेके लिये झुका इतनेमें बुढ़ियाने उठकर एक थप्पड़मारकरआदीको बेहोशकरदिया और मांसखाकर चलीगई यही हालअशतर और मक्सीरका भी हुआआखरी पहराजब अमीरकाहुआ तो अमीरने भी हिरनका शिकारकरके पकाया तब वहीबुढ़िया आकर मांगनेलगी तो अमीरने उसके मुखसेमांसकी सुगन्धपाकर जानाकि यह चुड़ैलहै उठकर एक हाथमें तलवारलेकर एकहाथसे मांस उसकेलिये निकालने लगे इतनेमें उसने चाहाकि मारकर बेहोशकरै कि अमीरने दूसरे हाथसे एक तलवार मारकर दोटुकड़े करदिये पृथ्वीपर गिरतेही वहएक तरफ़को भागी अमीरने उसका पीछाकिया देखा कि वह सिर एककूयेंमें गिरपड़ा अमीर उसीकूयें पर खड़ेहोगये इतनेमें सब लोगभी पहुंचगये अमीरने असकूसे कहाकि डोलमें कमन्दको बांधो हमइसकूयें में जावें असकूने कहा कि आप जगतपर खड़े रहिये मैं जाकर हालले आता हूं यह कहकर असकूकूयें में गया वहां जाकर देखाकि वह सिर एक सुवर्णके पात्रमें एक अतिस्वरूपवान स्त्रीके सामने रक्खाहै और वह स्त्री रोरो कहरही है कि मैंने मनाकिया था कि हमज़ाके पास न जा आखिर तूने अपना प्राणदिया और मुझको भी दुःखमें डाला असकू ने

यह सुनकर कमन्दको फेंककर उसको बांधलिया और अतिशीघ्रही फिर समेत लाकर अमीरके पास रखकर सब हालसुनाया अमीरने पूछा कि तू कौनहै और वहबुढ़िया कौनथी उसने कहा कि मैं जरदस्तकी बेटीहूं और वह माताथी तब फिर अमीरने पूछा कि तू अकेली क्यों है उसने कहा कि दो बहिन मेरी सेनासमेत तिलिस्मातमेंरहतीहैं वे इसकेमरने का हालसुनकर आकर तुमसे यथाशक्ति युद्धकरेंगी तब अमीरने उसको असद्को सौंपकर कहा कि इसको बड़ी खबरदारी से रक्खो इससे गाफ़िल न रहना वह रात्रि तो बीतगई प्रातःकाल होते उसीकूयें से जादूगरों की सेनानिकल कर मैदानमें उतरी और उससेनाके सरदार जरदहस्त की दो बेटियां थीं एकका नाम गुलरुख था और दूसरी का फर्रुखथा और उनकी एकदाई जादूमें प्रचण्ड थी उन्होंने उसीको जादू करनेकी आज्ञादी एकदिन अमीरने उसलड़की से पूछा कि तेरीबहिन मुझसे क्यालड़ेगी उसनेकहाकि वहलड़तो नहींसक्ती लेकिनजादूसे आप को खराबकरेगी तब अमीरने असद्से कहा कि तुम इसेलेजाकरकिसी प्रकारसे पूछो कि जादू क्याचीजहै और किसतरह से बनताहै असद्ने लेजाकर अनेकप्रकारसे उससे पूछा लेकिन उसने न बताया तब उसको मारडाला और अमीरसे आकर कहा कि मैंने तो उसको मारडाला लेकिन मैं जाकर किसीसे पूछ आताहूं यहकहकर जादूगरोंकी सेनाकी तरफ चला मार्गमें जादूगर की सेनाकाएकसवारमिला उसको मारकर अपनीसूरत उसीतरहकी बनाकर सेनामेंगया कि अपना कार्यसिद्ध करे जबरात्रिहुई तो चौकीके लोगोंकेसाथ फर्रुखके पलंगकी चौकी देनेगया संयोगसे एकजादूगरने फर्रुखसेआकर कहा कि आजकईदिनोंसे दाईह-सनाकीसेनापर जादूकररहीहै लेकिनकुछ मालूम नहींहोता फर्रुखने कहाकि कलशामतक जादूतैयारहोगा तबतमाशा देखना हमजाकीसेना में एकमनुष्यभी न बचैगा यहसुनकर असद्नेप्रातःकाल अमीरसेआकर कहा अमीरने कहाकिकोई ऐसीयुक्तिकरो कि उसीकी सेनापर जादूपड़े आखिरकार असद्नेजाकर उसदाईकोमारकर जादूगरोंकीसेनापर जादू फेंककर नाशकरदिया सबखेमे और असबाबजलादिया कोईवस्तु रहनेन पाई तत्पश्चात् थोड़ेदिनोंकेबाद अमीरने गावलंगीसे पूछा किअबकोईऔर स्थानबताओ उसनेकहाकि अबसबपापी मारेगये अबथोड़े दिनोंतक चल कर खाममें आरामकीजिये आखिरकार अमीरवहांसेचलकरखाससमें आये गावलंगीने कईदिनोंतक मेहमानदारीकी उसके पश्चात् एकदिनअमीर यारोंसमेत शिकारखेलनेगये तो एकहरिन बदीउज्जमांके आगेसेभागा उसने पीछाकिया भागते २ वह एकहौजमें कूदपड़ा बदीउज्जमांभी कूद पड़ा उसकेपीछे अमीरभी यारोंसमेत कूदे उसमें जाते अमीरने देखा कि एक बड़ाभारी मैदान है और न कहीं हरिन है न बदीउज्जमां अमीर

दुःखितहोकर कहनेलगे कि ७१ मनुष्यथे जिनमें से एक और गया अब सत्तरहैं यारों ने कहा कि यह ईश्वरकीरचनाहै इसमें सिवाय चुपरहने के कुछ चारा नहीं है ॥

अमीरका मक्केकीतरफ जाना और हज़रत सालिम से मिलकर एक स्त्रीके हाथमें अशकर समेत मारा जाना और वृत्तान्त का पूरा होना ॥

लेखकलोग इसअस्तकूपी वृत्तान्तको यों वर्णनकरतेहैं किजब अमीरका चित्तस्थिरहुआतो गावलंगीने कहाकि आपनेकहाथाकि तुमको मक्केमेंले चलकर पैग़म्बर अलेहुस्सालिमसेमुलाक़ातकरावेंगे सोअबचलिये तब अमीर सबको साथलेकर मक्केकीतरफचले जबाबक़ादरमें जबपहुंचे तो सिरपाल पुत्रदाराअमीरको यारोंसमेतअगुवानीमिलकरअपनेनगरमें लेजाकरकई दिनोंतकमेहमानदारीकी उसीसमयमें सिरपालके पिताका बैकुण्ठवास हुआतब अमीरनेउसकीसबक्रियाकर्म करवाकरसिरपालको समुझाकर तख़्तपर बैठाकर मक्केकी तरफचले थोड़ेदिनों में चलकर मक्केमें पहुंचे गावलंगी और सबयारपैग़म्बरकेक़दमोंपरगिरकरमुसलमानहुयेतत्पश्चात् एकदिन सबबैठेथे किएकदूतने आकरकहाकि मिस्र, रूम, और शामके बादशाहबड़ीसेनालेकर युद्धकरनेकी इच्छासे आयेहैं तबहज़रतनेहमज़ा को सेनासमेत बोहबुकबसीसपर भेजा. तत्पश्चात्आपभीगये शत्रुनेसेना की परेट जमाई अमीर ने गावलंगीको उनके सामने भेजा तब एकबड़े पहलवाननेआकरगावलंगीको ललकारागावलंगीने उसको पृथ्वीसे उठा करघुमाकरदेमारा तोवहमरगया इसीप्रकारसे कईवीरगावलंगीकेहाथ से मारेगये तबशत्रुकीसेना ऐसीलज्जितहुई कि कोईगावलंगीकेसामने न आयाआख़िर शहज़ादहिन्दने आकरगावलंगीका सामनाकरके समाप्त किया अमीरउसके लियेअति दुःखितहोकर आपही उसके सामनेगया और गावलंगीके बदलेमेंउसकोभीमारा और उसकीसेनामें व्याघ्रके समानधसकरसेनाकानाशकरदिया और जोबचेवेभागगयेतबपैग़म्बरअमीर को अतिप्रसन्नताकेसाथ लेकर मक्केमेंआये लेखक लिखताहैकि पुरहिन्दो कीमाताअपनेपुत्रकामरनासुनकरशाहनशाहहिन्दरूम, शाम, चीन, जबल जंगबार और तुर्किस्तानको बड़ीभारी सेनासमेत मदायनमें आकरहर- मुज़कोसाथलेकर मक्केमेंआई तबजनाबरिसालत पनाहमनेसुनकर कहाकिहमाराचचा हमज़ाइन सेनाओंकेलिये अकेलाबहुतहैयहकहना थाकिअहदियतको बुरामालूम हुआ जबजाकर शत्रुकेसामने खड़ेहुयेतो हरमुज़नेकहाकि इनसेएक २ लड़नेसे न जीतोगेएकबारगी घेरकरमार लो यहकहते हरमुज़कीसेना एकबारगी मुसलमानीसेनापर टूटपड़ीतो उसीमेंलन्धौरसादपोता हमज़ाआदीअक़रब आदिसरदारमारेगये और एकदांत जनाबरसालतपनाहका टूटगया यहसबखबर अमरूने जाकर अमीरकोदी अमीरसुनतेही घोड़ेपरसवारहुये और शत्रुओंको मारते २

हरमुनतकपहुंचे वहहमज़ाकोदेखकर तखतपरसेभागा अमीरनेउसका पीछाकियामार्गमें हजारोंकोमारतेहुये चारकोसतकचलेगये जिससमय लौटे सेनाकीतरफआतेथे मार्गमें हिन्दमारपुरने जोछिपी बैठीथीनिकल कर एकतलवार अशकरकेमारीकि चारोंपैरकटगयेअमीरअशकरसमेत पृथ्वीपरगिरे उसनेफिरकर एकतलवारसे अमीरकासिर अलगकरदिया औरपेटफाड़करकलेजानिकालकरखागईऔरलोथकेसत्तर७०भागकरदि- येतत्पश्चात्जबउसकोहोशआयाकिकरीशाहमजाकी बेटीजबअपनेपिता के मरनेकी खबरसुनेगी तोवहसब देवोंकीसेना साथलेकर आवेगीतोमैं क्याउसकोउत्तरदूंगी यहबिचारके हजरतसालिमके समीपजाकर उनके पैरोंपरगिरकेमुसलमानहोकर अपराधकोक्षमाकराके हजरतकोअमीर की लाशकेस्थानपरलाई हजरतसालिमने अमीरके शरीरके टुकड़ोंको इ- कट्ठाकरकेसबपरपृथक् २ निमाजपढ़ी और उससमयअंगूठोंके बलहज- रतखड़ेथे लोथगाड़नेकेपीछे लोगोंनेहजरतसे पूछाकि आपनिमाजपढ़ती समयअंगूठोंकेबलसे क्योंखड़ेथेउन्होंनेकहाकि फरिश्तोंकेमारे खड़ेहोनेको जगहनथीऔरसबकेसोलवीनेहरटुकड़ेपरसत्तरबारनिमाजपढ़करलोगों के सामने अमीरकी अतिप्रतिष्ठाकी आखिरको जब हमजा को गाड़कर हजरत और हिन्दाहजरतसालिमके पासआयेतोउन्होंनेहिन्दाकीतरफ से मुखफेरलियातबउसनेकहाकि आपआकाशपरतो देखियेहजरतनेसिर उठाकरदेखातो अमीरतख्तपरबहिश्तमेंबैठेहैं और गुलामसबहाथजोड़े खड़ेहैंतबतो हजरतसालिमने ईश्वरका धन्यबादकिया तत्पश्चात्करीशा सेनासमेत हजरतसालिमकेपास आकरअपनेपिताके मारनेवालेको बुला या हजरतसालिमने अमीरकातख्त बहिश्तमेंदिखलाकर कहाकिआपके पिताजोइसकेहाथसे न मारेजातेतो काहेकोइसप्रभुत्वको प्राप्तहोते इसे हमारेकहनेसे अबतुमबदला न लो लेखकलिखताहै कि उसीसमयमें १६ फरिश्तोंनेआकर करीशाकोसमुझायाथा आखिरकारहजरत सालिम की आज्ञानुसारकरीशा अपनेदेशको सेनासमेतपलटगई ॥

अमीरकेशरीरके ७० भागहोने और हजरतके दांतटूटनेके दो कारण लोग कहतेहैं ॥

१—जब कि हजरत ने बेकलमा पढ़े कहा था कि इस सेना के लिये मेरा चचा हमजा अकेला बहुत है ॥

२—एक रात्रिको आशियरजा अपने कपड़े सीरही थी हजरत उस तरफनिकलेसंयोगसे उसकीसुईसे तागानिकलगया हजरतहंसपड़ेउनके दांतोंकीचमकसे आशियरजाने सुईमेंतागा डालदियाहजरतने कहाकि मेरेदांतऐसेहैं कि उनकी चमकमें तुमनेसुईमें तागाडाललिया यहबात हजरतकोनापसंदआईइससेदांतउनहजरतकेटटगये उसीलड़ाईमें हज- रत अमीर के पैरमें तीर टूटकर रहगया था अनेक प्रकारसे जर्राहोंने

निकाला लेकिन निकलनहींसका जिससमय निमाजपढ़कर ध्यानकरने लगे हजरतश्रालिम ने पहलवानों से कहाकि अलीरजा के पैरसे सेतीर निकाललो पहलवानोंने जाकरनिकाललिया लेकिनहजरतको कुछमालूमनहुश्रा निमाज़ पढ़नेकेबाद रुधिरदेखकर पूछाकि यहरुधिर कैसाहै सेवकोंनेसबहाल कहकर पूछाकि क्याश्रापको नहींमालुम हजरतनेसौगन्दखाकर कहाकि मुझेसत्य नहींमालुम कियहतीर कबलगाहै ॥

ईश्वरइसलेखकका प्रभुत्वसंसारमेंबढ़ावे कभीकिसीकाश्राश्रित न करै श्रौर श्रपनी श्रनुग्रहसे सत्यश्रसत्यका श्रपराध क्षमाकरके श्रपनीसेवकाई में संयुक्त रक्खे ॥

इति चतुर्थ भाग: समाप्त: ॥